वर्ग - १

आदाबे ज़ियारत

यूं तो यह आदाब बहुत हैं लेकिन इस मकाम पर मुख़तसर तौर पर सिर्फ़ चंद आदाब का ज़िक्र किया जा रहा है।

(१) ज़ियारत के सफ़र पर निकलने से पहले गुस्ल करे।

(२) रास्ते में कोई बेहूदा गुफ़्तगू, फ़ालतू बात और झगडा न करे।

(३) जिस इमाम की ज़ियारत के लिए जा रहा है उसकी ज़ियारत का गुस्ल करे और वह दुआ पढ़े जो उस मौके पर वारिद हुई है। और जिसका ज़िक्र ज़ियारते वारेसा के शुरू में होगा।

(४) अपने को हर हदसे अकबर व असग़र से पाक रखे।

(५) पाक ओ पाकीज़ा कपड़े पहने और बेहतर यह है के कपड़े सफ़ैद हों।

(६) रौज़ा मुकद्दस की तरफ़ जाते समय आहिस्ता क़दम उठाए। सुकूनो वक़ार के साथ चले। खुज़ू ओ खुशू के साथ क़दम आगे बढ़ाए। सर झुका कर बग़ैर दाहिने बाएं देखे हुए रोज़ा-ए-मुबारक की तरफ़ आगे बढ़े।

(७) ज़ियारते हुसैन के अलावा हर ज़ियारत में खुशबू इस्तेमाल करे।

(८) हरमे मुतहहर की तरफ़ जाते समय तसबीह व तहलील व ज़िक्रे खुदा में मशग़ूल रहे और मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) पर सलवात भेजता रहे।

(९) हरम मुबारक के दरवाज़े पर पहुँच कर प्रवेश की आज्ञा मांगे। और कोशिश करे के एसे मौक़े पर दिल नर्म हो। खुज़ू व खुशू पैदा हो जाए। अज़मत ओ जलालत साहेबे मरकदे मुनव्वर के बारे में ग़ौर करे और यह याद रखे के साहेबे क़ब्र उसे देख रहा है और उसके कलाम को सुन रहा है। और उसको जवाब भी दे रहा है जिसकी वह खुद ज़ियारत के शब्दों में गवाही देता है। इसके बाद उस लुत्फ़ ओ मोहब्बत के बारे में ग़ौर करे के जो साहेबे क़ब्र को अपने शिओं और ज़ाएरीन से है।

फिर अपनी हालत की ख़राबी और उन बुज़ुर्गों के अहकामे अलैहेदगी को याद करे और उन तालीमात को याद करे जो नहीं सीख सका और उन तकलीफ़ो को याद करे जो उसकी तरफ़ से उन बुज़ुर्गों या उनके दोस्तों तक पहुँची हैं जिसके नतीजे में उन हज़रात को तकलीफ़ होती है। अगर इंसान वाक़ेअन इन बातों पर ग़ौर करे तो शायद उसके क़दम भी आगे न बढ़ सकें और दिल भी लरज़ जाएगा। और आँखों से आँसूं भी जारी हो जाएंगे और यही तमाम आदाब की रूह है। मुनासिब है के इस मकाम पर सख़ावी के उन अशआर का ज़िक्र किया जाए। उस रिवायत को नक़्ल किया जाए जिसको अल्लामा मजलिसी ने बिहार में किताबे ओयूनल मोजिज़ात से नक़्ल किया है। सख़ावी के इन अशआर को ज़हेन में रखना इन्तेहाई मुनासिब है जो हर ज़ाएर की ज़बाने हाल है।

قَالُوا غَدًا نَاتِي دِيَارَ الْحِمَىٰ وَيَنْزِلُ الرَّكْبُ بِمَغْنَاهُمُ
فَكُلُّ مَنْ كَانَ مُطِيعًا لَهُمْ اصْبَحَ مَسْرُورًا بِلُقْيَاهُمُ
قُلْتُ فَلِي ذَنْبٌ فَمَا حِيلَتِي بِاَيِّ وَجْه اتَلَقَّاهُمُ
قَالُوا الَيْسَ الْعَفْوُ مِنْ شَانِهِمْ لَا سِيَّمَا عَمَّنْ تَرَجَّاهُمُ
فَجِئْتُهُم اسْعَىٰ اِلٰى بَابِهِمْ ارْجُوهُمُ طَوْرًا وَاخْشَاهُمُ

खुदा करे सफ़र जीस्त यूँ तमाम करे
जो आसताना हो उन का वहीं क़याम करे।
के जो भी उन का एताअत नेहाद होता है
वो उन की दीद से मसरूर शाद होता है।
मगर ये ख़ौफ़ है दिल मे, गुनहगार हैं हम
करेगें सामना क्यों कर के शर्मसार हैं हम।
सदा ये आती है फ़ित्रत है उनकी लुत्फ़ व करम
उम्मीदवारों पे करते हैं लुत्फ़ वो पैहम।
ये सून के हम ने किया पेश बारगाहे नाज़
उम्मीद व बीम के मबैन क़सदे राज़ो नियाज़।

अल्लामा मजलिसी की रिवायत है के जब इब्राहीम जम्माल (जो इमाम के चाहने वालों में थे) अली बिन यक़्तीन के पास आए और इब्राहीम उस समय

एक सारबान थे और अली बिन यक़तीन हारून रशीद के वज़ीर थे। तो ज़ाहिर है के इब्राहिम के हालात ऐसे नहीं थे के अली बिन यक़तीन की बज़्म में वारिद हो सकें। लेहाज़ा लोगों ने उनको रास्ता नहीं दिया और इत्तेफ़ाक़न उसी साल अली बिन यक़तीन हज के लिए गए।

और मदीने में इमामे मूसा काज़िम (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र हुए। तो हज़रत ने उनको आज्ञा नहीं दी। और दूसरे दिन घर के बाहर अली बिन यक़तीन से मुलाक़ात हो गई तो उन्होंने अर्ज़ की के सरकार मेरी क्या तक़्सीर है के मुझे आपने मुलाक़ात का मौक़ा नहीं दिया? फ़रमाया के तुमने अपने इमानी भाई इब्राहीम जम्माल को रास्ता नहीं दिया था। परवरदिगार तुम्हारी सई को क़ुबूल नहीं कर सकता जब तक के इब्राहीम तुमको माफ़ न कर दें। इब्ने यक़्तीन कहते हैं के मैंने अर्ज़ किया के हुज़ूर मैं इब्राहीम से कहाँ मुलाक़ात कर सकता हूँ? मैं मदीने में हूँ और वह कूफ़े में हैं। आपने फ़रमाया के जब रात हो जाए तो अकेले बक़ी तक जाना के तुम्हारे साथ कोई दूसरा आदमी न हो। उस वक़्त तुम्हें एक ऊँट नज़र आएगा। उस पर सवार हो जाना। वह तुम्हें कूफ़ा ले जाएगा। अली बिन यक़तीन रात में बक़ी में गए और उसी ऊँट पर सवार हो कर चंद लम्हों में इब्राहीम जम्माल के दरवाज़े पर पहुँच गए। ऊँट को बिठाया दक्कुल बाब किया। इब्राहीम ने पूछा कौन? कहा मैं अली बिन यक़्तीन। इब्राहीम ने कहा अली बिन यक़्तीन मेरे दरवाज़े पर क्यों आएंगे? कहा तुमसे एक बहुत ज़रूरी काम है और फिर उन्हें कसम दिलाई के घर में प्रवेश की आज्ञा दें। जब इजाज़त मिल गई तो अली बिन यक़्तीन ने कहा इब्राहीम मेरे आक़ा व मौला ने फ़रमाया है के मेरा कोई अमल उस समय तक क़ुबूल न होगा जब तक तुम मुझे माफ़ न कर दोगे। इब्राहीम ने कहा अल्लाह तुमको माफ़ कर दे। अली बिन यक़्तीन ने अपने चेहरे को ख़ाक पर रखा। और इब्राहीम को क़सम दी अपने पैर रूख़सार पर रख दें। इब्राहीम ने इन्कार किया। अली बिन यक़्तीन ने दोबारा क़सम दी। इब्राहीम ने अपना क़दम अली बिन यक्तीन के रूख़सार पर रख दिए और उस समय अली बिन यक़्तीन ने कहा: खुदाया गवाह रहना। इसके बाद बाहर आए तो उसी ऊँट पर सवार हो गए और उसी रात मदीने पहुँच गए। ऊँट को हज़रत इमाम मूसा

काज़िम (अ.स.) के दरवाज़े पर बिठाया। और हज़रत ने फ़ौरन इजाज़त दे दी। जब वारिद होकर वाक़ेआ बयान किया तो आप ने उसे क़ुबूल फ़रमा लिया जिससे अंदाज़ा होता है के बिरादराने ईमानी के हुक़ूक़ किस क़द्र अहमियत रखते हैं।

(१०) रौज़े की चौख़त को बोसा देकर शेख़ शहीद ने फ़रमाया है के अगर कोई ज़ियारत करने जाए तो सजदा शुक्र करे इस निय्यत से के परवरदिगार ने उसे इस मकाने मुक़द्दस तक पहुँचा दिया है।

(११) दाहिने पैर को दाख़िल होते समय और बाएं पैर को निकलते समय आगे बढ़ाए जिस तरह के मसजिदों में होता है।

(१२) ज़रीहे मुतह्हर के पास जाए और अगर मुम्किन हो तो खुद को ज़रीहे मुतह्हर से मिला दे। यह सोचना के दूर खड़ा होना ही अदब है यह ग़लत है। इसलिए के रिवायत में है के ज़री का बोसा देना और उस से टेक लगाकर खड़े होना बेहतरीन अमल है।

(१३) ज़ियारत के समय क़िबले को अपने पीछे रखे और रूख़ क़ब्रे मुतहहर की तरफ़ रखे के यह अदबे क़ब्रे मासूम से तअल्लुक रखता है। ज़ियारत ख़त्म करने के बाद दाहिने रूख़सार को क़ब्र पर रखे और ब कमाले खुज़ू दोआ करे। इसके बाद बाएं रूख़सार को ज़मीन पर रखे और परवरदिगार को साहेबे क़ब्र का वास्ता देकर गुज़ारिश करे के साहेबे क़ब्र की शफ़ाअत से महरूम न करे। उसके बाद दोआ ओ ज़ारी के साथ सरे अक़्दस की सिम्त जाए और रू ब क़िबला खड़े हो कर दुआ करे।

(१४) ज़ियारत पढ़ते समय अगर कोई उज़्र नहीं है और कमज़ोरी दर्द-ए-कमर या पैरों में तकलीफ़ नहीं है तो ख़ड़े होकर ज़ियारत पढ़े।

(१५) कब्रे मुतह्हर को देखने के बाद ज़ियारत शुरू करने से पहले तकबीर पढ़े जैसा के रिवायत में हैं के अगर कोई इमाम के सामने पहुंच कर तकबीर पढ़े और यह कहे के ला एलाह इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीक लहू तो परवरदिगार उसको अपनी अज़ीम रज़ा इनायत फ़रमाएगा।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ

(१६) उन ज़ियारात को पढ़े जो हज़रात मासूमीन (अ.स.) से नक़्ल की गई है।

और उन ज़ियारात से परहेज़ करे जिनको बेख़बर अवाम ने अपने पास से तय्यार कर लिया है और जाहिल लोग उन्हीं ज़ियारतों को पढ़ रहे हैं।
शेख़ कुलैनी ने अब्दुर रहीम कसीर से रिवायत की है के मैं इमामे सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र हुआ और मैंने कहा मेरी जान आप पर क़ुरबान मैंने एक दुआ इजाद की है। तो फ़रमाया के अपनी दुआओं को दूर रखो अगर ज़रूरत तुम्हारे सामने आ जाए तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो और उसको रसूले अकरम (स.अ.व.व.) को हदिया करो और दोआ करो।
(१७) नमाज़े ज़ियारत बजा लाए जो कमसे कम दो रकअत है और शेख़ शहीद ने फ़रमाया है के ज़ियारते पैग़ंबर की नमाज़ को रौज़े के अंदर पढ़ना चाहिए और अगर किसी इमाम के हरम में है तो नमाज़ को बालाए सर अंजाम दे और अगर हरम की मसजिद में अदा करना चाहे तो वह भी हो सकता है।
अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के नमाज़े ज़ियारत वग़ैरह को मेरे ख़याल से पुश्ते क़ब्र या बालाए सर पढ़ना बेहतर है।
अल्लामा बहरूल ओलूम ने भी दुसरा ने यही फ़रमाया है।

وَمِنْ حَدِيثِ كَرْبَلَا وَالْكَعْبَةْ لِكَرْبَلَا بَانَ عُلُوُّ الرُّتْبَةْ
हदीस कर्बला व काबा से कर्बला के लिए बुलंदी रूतबह व मोकाम ज़ाहिर हो गया है
وَغَيْرُهَا مِنْ سَائِرِ الْمَشَاهِدِ امْثَالُهَا بِالنَّقْلِ ذِى الشَّوَاهِدِ
और इस के अलावा तमाम मशाहीद इस के मिस्ल हैं नक़ल और शवाहीद के साथ
وَرَاعِ فِيهِنَّ اقْتِرَابَ الرَّمْسِ وَآثِرِ الصَّلَاةَ عِنْدَ الرَّاسِ
इस मे रियायत करो क़ब्र के नज़दीक जाने की और नमाज़ को सर के पास बजा लाओ
وَصَلِّ خَلْفَ الْقَبْرِ فَالصَّحِيحُ كَغَيْرِهِ فِي نَدْبِهَا صَرِيحُ
और नमाज़ पढ़ो पुश्ते क़ब्र पर यही सही है और नस्से सरीह इस के बारे मे वारिद हुई है
وَالْفَرْقُ بَيْنَ هٰذِهِ الْقُبُورِ وَغَيْرِها كَالنُّورِ فَوْقَ الطُّورِ
उन क़ब्रों और दुसरी क़ब्रों के दरमियान फ़र्क़ नूर बालाए तुर का है
فَالسَّعْيُ لِلصَّلَاةِ عِنْدَها نُدِبْ وَقُرْبُهَا بَلِ اللُّصُوقُ قَدْ طُلِبْ
लेहाज़ा कोशिश करना नमाज़ के लिए उस के नज़दीक मुसतहब है और उसके क़रीब होना बल्के क़बर से जिस्म मिला कर खड़ा होना मतलूब है।

(१८) नमाज़े ज़ियारत में पहली रकत में सूरह यासीन और दूसरी में सूरह

रहमान पढ़े और अगर इसके अलावा कोई मख़सूस कैफ़ियत वारिद न हुई हो। नमाज़ के बाद जो दुआएं वारिद हुई हैं उन दुआओं को पढ़े। और जो कुछ भी दीन-ओ-दुनिया के लिए मुफ़ीद हो और अपनी दुआ को दीगर लोगों के लिए आम बनाए के क़ुबूलियत से ज़्यादा क़रीब है।

(१९) शेख़ शहीद ने फ़रमाया है अगर कोई व्यक्ति हरम में दाख़िल हो और देखे के नमाज़े जमात हो रही है तो ज़ियारत से पहले नमाज़ अदा करे यानी अगर नमाज़ का समय हो गया है तो पहले नमाज़ अदा करे वरना आम हालात में पहले ज़ियारत पढ़े इस लिए के अस्ल मक़्सद वही है। लेकिन अगर ज़ियारत के दौरान नमाज़ शुरू हो जाए तो ज़ाएरीन के लिए बेहतर यही है के ज़ियारत को रोक दे और नमाज़ को अदा करें। इस लिए के नमाज़ को तर्क करना नामुनासिब है और हरम के ज़िम्मेदारों को भी चाहिए के लोगों को नमाज़ की तरफ मुतवज्जे करें।

(२०) शेख़ शहीद ने आदाबे ज़ियारत में तिलावते क़ुरआन को भी शामिल किया है जिसका सवाब उस इमाम की पाक रूह को हदिया किया जाएगा और इसका फ़ायदा बहर हाल उसी को होगा जो ज़ियारत करने वाला है।

(२१) नामुनासिब बातें और बेहुदा कलेमात से परहेज़ करे और दुनिया की बातों में मशग़ूल न हो के यह दीगर मक़ामात पर भी मुनासिब नहीं है। चे ज़ाएके इस मोहतरम और मुक़द्दस मकाम पर जिसकी जलालत ओ बुज़ुर्गा की ख़बर सूरह नूर में दी गई है। फ़ी बुयूतिन अज़ेनल्लाहो अन तुरफ़अ। उनकी बलंदी का हुक्म परवरदिगार ने दिया है।

(२२) ज़ियारत के समय आवाज़ को ज़्यादा बुलंद न करे जैसा के हदियतुज़ ज़ाएरीन में ज़िक्र किया गया है।

(२३) हरम से बाहर जाते समय जो दुआएं मनक़ूल हैं उन्हीं दुआओं के ज़रिए इमाम को विदा करें।

(२४) अपने गुनाहों के लिए तौबा व इस्तेगफार करे और ज़ियारत के बाद अपने किरदार को पहले से बेहतर बनाने की कोशिश करें।

(२५) जहाँ मुम्किन हो आस्ताने मुबारक के ख़ादिमों पर माल ख़र्च करे और मुनासिब यह है के खुद्दाम साहेबाने ख़ैर व इसलाह और साहेबाने दीन व

शराफ़त हों। और जो कुछ भी ज़ाएरीन की तरफ़ से ज़्यादतियां या कोताहियाँ हो उन्हें बरदाश्त करें और अपने ग़ुस्से को ज़प्त करें और किसी प्रकार की सख़्ती और दुरूश्ती से काम न लें बल्के जो मोहताज हैं उनकी हाजतों को पूरा करें और जो अजनबी हैं उनकी रहनुमाई करें। और अगर कोई रास्ता गुम कर गया है तो उसे मंज़ल तक पहुँचाने की कोशिश करें। और हक़ीक़तन जैसे खुद्दाम होने चाहिए वैसे ख़ादिम बने। और जो हरम की ज़रूरियात हैं सफ़ाई, हिफ़ाज़त और ज़ाएरीन की हिफ़ाज़त, उन तमाम फ़राएज़ को अंजाम दें।

(२६) फ़ाक़रा व मसाकीन जो इमाम के शहर में आबाद हैं खुसूसन सादात और अहले इल्म वह लोग जो ग़ुर्बत व तंगदस्ती में मुब्तेला हैं और वतन छोड़ कर मुसलसल शआएरूल्लाह की ताज़ीम का परचम उठाए हुए हैं उन पर माल ख़र्च करे और उनके साथ अच्छा बरताव करें।

(२७) शेख़ शहीद ने फ़रमाया है के आदाबे ज़ियारत में एक यह भी है के वापस जाने में जल्दी करें और जब ज़ियारत में अपना हिस्सा हासिल कर लिया तो मज़ीद एहतेराम के पेशे नज़र फ़ौरन वापस हो जाए। ताके दोबारा आने का शाक़ बाक़ी रहे खुसूसियत के साथ जब औरतें ज़ियारत करना चाहें तो उन्हें चाहिए के अपने को मर्दों से अलग रखें और तनहाई में ज़ियारत करें। और अगर रात का समय हो तो ज़्यादा बेहतर है। और उन्हें यूँ भी चाहिए के अपनी वज़ा को बदल कर यानी बेहतरीन और खुबसूरत लिबास के बजाए मामूली लिबास पहेन कर जाएं ताके लोगों की निगाह न पड़े और ख़ामोशी से बाहर आ जाएं ताके कम से कम लोग उनको देखें या पहचाने। मर्दों के मजमे में ज़ियारत करना जाएज़ है लेकिन बहर हाल उसका सवाब यक़ीनन कम हो जाएगा।

लेखक: शेख़ के इन कलेमात से अंदाज़ा होता है के दौरे हाज़र में किस क़द्र बदतरीन सूरते हाल पैदा हो गई है। औरतें ज़ियारत के बहाने अपने को आरास्ता करके बेहतरीन लिबास पहन कर घरों से बाहर निकलती हैं और उसके बाद हरमे मुतहहर में नामहरमों के शाना ब शाना दाख़ल होती हैं के एक का जिस्म दूसरे से टकराता है। या ज़रीह केपास चिपक कर खड़ी हो जाती हैं या जहाँ लोग मशग़ूले ज़ियारत होते हैं वहां सामने खड़ी हो जाती हैं।

और वह लोग जो अल्लाह के इबादत गुज़ार बंदे हैं उनकी तवज्जोहात को अपनी तरफ़ जज़्ब कर लेती हैं। ज़ाएरीन व नमाज़ी और गिरया व ज़ारी करने वाले अफ़राद अपने काम से रह जाते हैं। और इस प्रकार उन औरतों का शुमार उन लोगों के गरोह में हो जाता है जो राहे खुदा से रोकने वाले हैं। हक़ीक़ते अम्र यह है के इस प्रकार की ज़ियारत को मुनकेरात में शुमार होना चाहिए न के इबादात में और इसको मोहलेकात में शामिल होना चाहिए न के असबाबे क़ुर्बते इलाही में। इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से नक़्ल किया गया है के अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने अहले इराक से फ़रमाया था के:

يَا أَهْلَ الْعِرَاقِ نُبِّئْتُ أَنَّ نِسَاءَكُمْ يُوَافِقْنَ الرِّجَالَ فِي الطَّرِيقِ أَمَا

ऐ एराक वालों। मुझे ये ख़बर मिली है के तुम्हारी औरतें रास्ते मे मर्दो से मिलती हैं क्या इस से तुम

تَسْتَحْيُونَ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ لَا يَغَارُ.

को शर्म व हया नही आती है। खुदा की लानत है उस पर जिसको ग़ैरत नही आती है

رَوَى الْأَصْبَغُ بْنُ نُبَاتَةَ عَنْ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ ع قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ

और असबग़ बिन नुबातह ने अमीरूल मोमिनीन (अ) से रिवायत की है के मै ने सुना के वो

يَظْهَرُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ وَ اقْتِرَابِ السَّاعَةِ وَ هُوَ شَرُّ الْأَزْمِنَةِ نِسْوَةٌ

फ़रमाते थे के आख़िर ज़माने मे और क़यामत के क़रीब जो बदतरीन ज़माना होगा ऐसी औरतें

كَاسِفَاتٌ عَارِيَاتٌ مُتَبَرِّجَاتٌ مِنَ الدِّينِ دَاخِلَاتٌ فِي الْفِتَنِ

ज़ाहिर होंगी जो बेहिजाब होंगी, उरयॉ होंगी, जीनत करने वाली होंगी, दीन से ख़ारिज होंगी,

مَائِلَاتٌ إِلَى الشَّهَوَاتِ مُسْرِعَاتٌ إِلَى اللَّذَّاتِ مُسْتَحِلَّاتٌ

फ़ितनो मे दाख़िल होंगी और ख़्वाहिशात की तरफ़ माएल होगी, लज़्ज़तों की जानिब जलदी करने

لِلْمُحَرَّمَاتِ فِي جَهَنَّمَ خَالِدَات

वाली होंगी, हराम को हलाल समझने वाली हांगी, जहन्नम मे हमेशा रहने वाली हांगी।

(२८) बेहतर यह है के जिस ज़माने में ज़ाएरीन ज़्यादा हों जो अफ़राद ज़रीह तक पहुँच जाएं वो अपनी ज़ियारत को मुख़तसर करके फ़ौरन बाहर चले जाएं ताके दूसरे लोग भी ज़रीह तक पहुँचने का शरफ़ हासिल कर सकें।
हम इस सिलसिले में ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के ज़ैल में उन आदाब का भी ज़िक्र करेंगे जो मज़ीद ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के ज़ैल में नक़्ल किए गए हैं।

वर्ग - २

पाक हरमों में प्रवेश की आज्ञा

यहाँ हम सिर्फ़ दो प्रकार की आज्ञा का वर्णन कर रहे हैं।
(१) शेख़ कफ़अमी ने फ़रमाया है के जब मस्जिदे पैग़ंबर में या मासूमीन (अ.स.) के मशाहिदे मुकद्देसा में दाख़ल होना चाहे तो पहले यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ وَقَفْتُ عَلٰی بَابٍ مِنْ اَبْوَابِ بُیُوْتِ نَبِیِّكَ

खुदाया मै तेरे नबी, तेरी सलवात हो उन पर और उन की आल पर, के घर के दरवाज़ों मे से एक

صَلَوَاتُكَ عَلَیْهِ وَ آلِهٖ وَ قَدْ مَنَعْتَ النَّاسَ اَنْ یَّدْخُلُوْا اِلَّا

दरवाज़े पर खड़ा हूँ और तू ने लोगों को बेग़ैर उन की इजाज़त के दाख़िल होने से रोक दिया है

بِاِذْنِهٖ ؕ فَقُلْتَ يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ

और फ़रमाता है ऐ ईमान वालों नबी के घर मे दाख़ल न होना मगर ये के तुम को इजाज़त मिल

اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعْتَقِدُ حُرْمَةَ صَاحِبِ هٰذَا

जाए। खुदाया मै साहेबे मशहद शरीफ़ की हुरमत का एतेक़ाद रखता हूँ उन की ग़ैयबत मे जिस

الْمَشْهَدِ الشَّرِيْفِ فِيْ غَيْبَتِهٖ ؕ كَمَآ اَعْتَقِدُهَا فِيْ حَضْرَتِهٖ ؕ وَ

तरह के मै ये अक़ीदा रखता हूँ उन के हुज़ूर मे और मै जानता हूँ के तेरे रसूल और तेरे खुलफ़ा

اَعْلَمُ اَنَّ رَسُوْلَكَ وَ خُلَفَآئَكَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَحْيَآءٌ

(अ) ज़िन्दा हैं और तेरे पास से रिज़्क ले रहे है। वो मेरे मकाम को देख रहे हैं। वो मेरे कलाम को

عِنْدَكَ يُرْزَقُوْنَ يَرَوْنَ مَقَامِيْ وَ يَسْمَعُوْنَ كَلَامِيْ وَ يَرُدُّوْنَ

सून रहे हैं और मेरे सलाम का जवाब दे रहे हैं, और तू ने हमारे कान से उनके कलेमात को रोक

سَلَامِيْ وَ اَنَّكَ حَجَبْتَ عَنْ سَمْعِيْ كَلَامَهُمْ وَ فَتَحْتَ بَابَ فَهْمِيْ

दिया है और मेरी समझ के दरवाज़े को उन की मुनाजात की लज़्ज़त के खोल दिया है और मै ऐ

بِلَذِيْذِ مُنَاجَاتِهِمْ وَ اِنِّيْ اَسْتَاذِنُكَ يَا رَبِّ اَوَّلًا وَّ اَسْتَاْذِنُ

परवरदेगार इजाज़त चाहता हूँ पहले तुझ से और फिर तेरे रसुल से अल्लाह का दुरूद हो उन पर

رَسُوْلَكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ ؕ ثَانِيًا وَ اَسْتَاذِنُ خَلِيْفَتَكَ

और उन की आल पर और इजाज़त चाहता हूँ तेरे ख़लीफ़ा से जो इमाम हैं जिसकी इताअत फ़र्ज़

الْاِمَامَ الْمَفْرُوْضَ عَلَيَّ طَاعَتُهٗ

है हम पर यान फ़लाँ इमाम

(इस मकाम पर उस इमाम का नाम ले जिसकी ज़ियारत पढ़ रहा है। बल्के इमाम के पिदरे बुज़ुर्गवार का नाम भी ले। मसलन ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) है तो कहे: हुसैन इब्ने अली (अ.स.) और अगर ज़ियारते इमाम रज़ा (अ.स.) है तो कहे अली इब्ने मूसा (अ)।

وَ الْمَلٰئِكَةَ الْمُوَكَّلِيْنَ بِهٰذِهِ الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ ثَالِثًا ءَاَدْخُلُ يَا

और तेरे मलाएका से जो इस मुबारक रौज़े पर मौक्कील हैं। क्या मै दाख़िल हो जाऊँ। ऐ अल्लाह के

رَسُوْلَ اللّٰهِ ءَاَدْخُلُ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ ءَاَدْخُلُ يَا مَلٰئِكَةَ اللّٰهِ الْمُقَرَّبِيْنَ

रसूल क्या मै दाख़िल हो जाऊँ, ऐ अल्लाह की हुज्जत क्या मै दाख़ल हो जाऊ, ऐ अल्लाह के मुक़र्रब

الْمُقِيْمِيْنَ فِيْ هٰذَا الْمَشْهَدِ فَاْذَنْ لِيْ يَا مَوْلَايَ فِي الدُّخُوْلِ اَفْضَلَ مَآ

मलाएका जो मुक़ीम है इस कब्रे मुतह्ह के, तो मुझको दाख़ल होने की इजाज़त दें, ऐ मेरे मौला,

اَذِنْتَ لِاَحَدٍ مِّنْ اَوْلِيَآئِكَ فَاِنْ لَّمْ اَكُنْ اَهْلاً لِذٰلِكَ فَاَنْتَ اَهْلٌ

बेहतरीन इजाज़त जो आप ने अपने दोस्तों मे से किसी को दी हो अगर मै इसका अहेल नही हूँ तो

لِذٰلِكَ-

आप कम से कम उसके बहेरहाल अहेल हैं।

इसके बाद आस्ताने मुबारेका को बोसा दे और दाख़ल होते समय यह कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ عَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

खुदा के नाम से खुदा की ज़ात से और राहे खुदा मे और रसूल (स) की मिल्लत पर, खुदाया मुझको

وَ اٰلِهٖ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ وَ تُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ

बख़्श दे मुझ पर रहेम कर और मेरी तौबा क़ुबूल कर ले बेशक तू तौबा क़ुबूल करने वाला रहेम

الرَّحِيْمُ-

करने वाला है,

(२) वो इज़्ने दाख़ूल पढ़े जिसको अल्लामा मजलिसी ने ओलमा के क़दीम किताबों से नक़्ल किया है। सरदाबे मुकद्देसा के लिए और अईम्मा के हरमे मुतहहर के लिए जिसका अंदाज़ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذِهِ بُقْعَةٌ طَهَّرْتَهَا وَعَقْوَةٌ شَرَّفْتَهَا وَمَعَالِمُ زَكَّيْتَهَا

खुदाया ये वो बुक़्क़ा है जिसको तू ने पाकिज़ा किया है और वो मकाम है जिस को तू ने शरफ़ अता किया

حَيْثُ اظْهَرْتَ فِيهَا ادِلَّةَ التَّوْحِيدِ وَاشْبَاحَ الْعَرْشِ الْمَجِيدِ

है और वो माक़ामात हैं जिन को तू ने पाकीज़ा बनाया है जब तू ने उस मे तौहीद की दलीलें ज़ाहिर कीं और

الَّذِينَ اصْطَفَيْتَهُمْ مُلُوكًا لِحِفْظِ النِّظَامِ وَاخْتَرْتَهُمْ رُؤَسَاءَ

अर्शे मजीद की मिसालें ज़ाहिर कीं जिन लोगों को तू ने मुनताख़िब किया है, निज़ामे ख़ल्क की हिफ़ाज़त

لِجَمِيعِ الانَامِ وَبَعَثْتَهُمْ لِقِيَامِ الْقِسْطِ فِي ابْتِدَاءِ الْوُجُودِ اِلٰى

के लिए और तू ने उन को इख़्तियार किया है तमाम मख़लूक़ की रियासत के लिए और उन को मबअूस

يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ مَنَنْتَ عَلَيْهِمْ بِاسْتِنَابَةِ انْبِيَائِكَ لِحِفْظِ

किया है अद्ल क़ाएम करने के लिए, इबतेदाए ख़िलक़त से ले कर राज़े क़यामत तक के लिए फिर तू ने

شَرَايِعِكَ وَاحْكَامِكَ فَاكْمَلْتَ بِاسْتِخْلَافِهِمْ رِسَالَةَ الْمُنْذِرِينَ

उन पर एहसान किया है अपने नबीयों की जानशीनी के साथ अपनी शरीअतों और एहकाम की हिफ़ाज़त

كَمَا اوْجَبْتَ رِيَاسَتَهُمْ فِي فِطَرِ الْمُكَلَّفِينَ فَسُبْحَانَكَ مِنْ اِلٰهٍ مَا

के लिए, पस तू ने उन की ख़िलाफ़त के ज़रिए डराने वाले पैग़ामबरों की रिसालत को मुकम्मल किया जिस

ارْاَفَكَ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا انْتَ مِنْ مَلِكٍ مَا اعْدَلَكَ حَيْثُ طَابَقَ صُنْعُكَ

तरह तू ने मुकल्लिफ़ीन की फ़ितरत पर उनकी रियासत के क़ुबूल करने को वाजिब किया है, पस तू पाक

مَا فَطَرْتَ عَلَيْهِ الْعُقُولَ وَوَافَقَ حُكْمُكَ مَا قَرَّرْتَهُ فِي الْمَعْقُولِ

खुदा है कितना तू महेरबान है, कोई खुदा नही है सिवाए तेरे, तू कितना आदिल बादशाह है के तेरी सनअत

وَالْمَنْقُولِ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى تَقْدِيرِكَ الْحَسَنِ الْجَمِيلِ وَلَكَ الشُّكْرُ

मुताबिक़े फ़ितरते उक़ूल है, और तेरा हुकूम उस के मुताबिक़ है जिस को तू ने अक़्ल व नक़्ल मे मुक़र्रब

عَلٰى قَضَائِكَ الْمُعَلَّلِ بِاَكْمَلِ التَّعْلِيلِ فَسُبْحَانَ مَنْ لَا يُسْاَلُ

किया है, पस तेरे लिए हमद है, तेरी हसीन व जमील तक़दीरे निज़ाम पर और तेरा शुक्र है तेरे फैसले पर

عَنْ فِعْلِهٖ وَلَا يُنَازِعُ فِي اَمْرِهٖ وَسُبْحَانَ مَنْ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ

जिस की तअलील बेहतरीन वज्ह के साथ है, पस पाक है वो ज़ात जिस के काम के बारे मे सवाल नही

قَبْلَ ابْتِدَاءِ خَلْقِهٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ مَنَّ عَلَيْنَا بِحُكَّامٍ يَقُوْمُوْنَ

किया जा सकता है और जिस के अम्र के बारे मे निज़ा नही की जा सकती है और पाक है वो खुदा जिस ने

مَقَامَهٗ لَوْ كَانَ حَاضِرًا فِي الْمَكَانِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الَّذِیْ شَرَّفَنَا

अपने ऊपर रहमत को लाज़िम किया है मख़लूक़ की पैदाइश से क़ब्ल और हम्द खुदा के लिए हैं जिस ने हम

بِاَوْصِيَاءَ يَحْفَظُوْنَ الشَّرَايِعَ فِيْ كُلِّ الْاَزْمَانِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ الَّذِیْ

पर एहसान किया है उन हाकिमा के ज़रिए जो उसके क़ाएम मकाम (ख़लीफ़-अल्लाह) हैं अगर वो हाज़र

اَظْهَرَهُمْ لَنَا بِمُعْجِزَاتٍ يَعْجَزُ عَنْهَا الثَّقَلَانِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

होता किसी मकान मे, उस मअबूद के अलावा कोई खुदा नही है जिसने हम को शरफ़ बख़्शा उन औसिया

بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ الَّذِیْ اَجْرَانَا عَلٰى عَوَائِدِهِ الْجَمِيْلَةِ فِي الْاُمَمِ

के जरिए जो शरीअतों की हिफ़ाज़त करते हैं हर ज़माने मे और अल्लाह बड़ा है जिसने रसूलोंको ज़ाहिर

السَّالِفِيْنَ اَللّٰهُمَّ فَلَكَ الْحَمْدُ وَالثَّنَاءُ الْعَلِيُّ كَمَا وَجَبَ لِوَجْهِكَ

किया हमारे लिए ऐसे मोजेज़ात के साथ जिस से जिन व इनस आजिज़ हैं और कोई क़ुव्वत व ताक़त

الْبَقَاءُ السَّرْمَدِيُّ وَ كَمَا جَعَلْتَ نَبِيَّنَا خَيْرَ النَّبِيِّيْنَ وَمُلُوْكَنَا

नही है। सिवाए खुदाए अली व अज़ीम के जिसने हमको रखा अपने सेफ़ात जमीला पर गुज़श्ता उम्मता

اَفْضَلَ الْمَخْلُوقِينَ وَاخْتَرْتَهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ وَفَّقْنَا

मे, खुदाया तेरे लिए हम्द और बुलंद सना है जैसा के तेरी ज़ात के लिए सरमदी बक़ा है और जैसा के तूने

لِلسَّعْيِ اِلٰى اَبْوَابِهِمُ الْعَامِرَةِ اِلٰى يَوْمِ الدِّينِ وَاجْعَلْ اَرْوَاحَنَا

हमारे नबी को अंबीया मे सब से बेहतर क़रार दिया है और हमारे बादशाहों यानी औलीया को सअई करने

تَحِنُّ اِلٰى مَوْطِئِ اَقْدَامِهِمْ وَنُفُوسَنَا تَهْوٰى النَّظَرَ اِلٰى مَجَالِسِهِمْ

की उन के दरवाज़ो की तरफ़ जो रोज़े क़यामत तक आबाद हैं और हमारी रूहों को क़रार दे उन के क़दमों

وَعَرَصَاتِهِمْ حَتّٰى كَاَنَّنَا نُخَاطِبُهُمْ فِي حُضُورِ اَشْخَاصِهِمْ فَصَلَّى

के महेल की जानिब मुशताक़ और हमारे नफ़सों को उन की मजलिसो और उन की बारगाहों की जानिब

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سَادَةٍ غَائِبِينَ وَمِنْ سُلَالَةٍ طَاهِرِينَ وَمِنْ اَئِمَّةٍ

शाक़ से भर दे, यहा तक के गोया हम उनको ख़िताब कर रहे हैं उन के हुज़ूर के आलमीन मे पस अल्लाह

مَعْصُومِينَ اَللّٰهُمَّ فَاذَنْ لَنَا بِدُخُولِ هٰذِهِ الْعَرَصَاتِ الَّتِي

का दुरूद हो उनपर जो सरदारे ग़ाएब और पाकीज़ा नस्ल और आइम्मए मासूमीन (अ) हैं, खुदाया हम को

اسْتَعْبَدْتَ بِزِيَارَتِهَا اَهْلَ الاَرَضِينَ وَالسَّمَاوَاتِ وَارْسِلْ

इजाज़त दे दे के उन मोहतरम बारगाह मे दाख़ल हों जिस की ज़ियारत को तूने आसमान व ज़मीन वालों

دُمُوعَنَا بِخُشُوعِ الْمَهَابَةِ وَذَلِّلْ جَوَارِحَنَا بِذُلِّ الْعُبُودِيَّةِ

के लिए ज़रिए इबादत क़रार दिया है और हमारे आँसुओं को ख़ाफ़े जलालत से खुज़ू व खुशू के साथ जारी

وَفَرْضِ الطَّاعَةِ حَتّٰى نُقِرَّ بِمَا يَجِبُ لَهُمْ مِنَ الاَوْصَافِ وَنَعْتَرِفَ

फ़र्मा और हमारे आज़ा व जवारे को उबूदियत की ज़िल्लत के साथ हमवार करदे और इताअत के फ़र्ज़ के

بِاَنَّهُمْ شُفَعَاءُ الْخَلَايِقِ اِذَا نُصِبَتِ الْمَوَازِينُ فِي يَوْمِ الاعْرَافِ

साथ ताके मै उनके वाजिब और ज़रूरी औसाफ़ का इक़रार करूँ और एतेराफ़ करूँ के वो मख़लूक के

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

लिए शिफ़ाअत करने वाले हैं जब मिज़ान नसब कर दिए जाएगें रोज़े एराफ़ क़यामत मे और हम्द खुदा के

الطَّاهِرِينَ

लिए है और सलाम है उस के उन बनदों पर जो मुनताख़िब हैं मोहम्मद और उनकी पाकीज़ा आल पर।

उसके बाद डयिड़ी का बोसा देकर दाख़ल हां इस हालत में खुज़ू व खुशू बरक़रार रहे।

वर्ग - ३

ज़ियारते रसूले अक्रम (स.अ.व.व.), जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) व आइम्मए बक़ी (अ.स.)

वाज़ेह रहे के तमाम साहेबाने ईमान बिलखुसूस हुज्जाजे केराम के लिए मुस्तहब है के वो रौज़ा मुतह्हरे हज़रत सय्यदुल मुरसलीन ख़ातेमुन नबीय्यीन की ज़ियारत से मुशरफ़ हों के इस ज़ियारत का तर्क कर देना रोज़े क़यामत आं हज़रत के हक़ में ज़ुल्म शुमार किया जाएगा।

शेख़ शहीद ने फ़रमाया है के अगर लोग आं हज़रत की ज़ियारत करना तर्क कर दें तो इमामे वक़्त की ज़िम्मेदारी है के उन्हें इस ज़ियारत पर मजबूर करे इस लिए के आपने ज़ियारत के तर्क कर देने को अपने हक़ में ज़ुल्म क़रार दिया है जो किसी क़ीमत पर जाएज़ नहीं है। शेख़ सदूक़ ने इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जब भी तुम में से कोई व्यक्ति हज करे उसको चाहिए के अपने हज का इख़्तेताम हमारी ज़ियारत पर करे के यही हज की तकमील का सबब है।

इसके अलावा अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की गई है के आप (अ.स.) ने फ़रमाया के अपने हज को तमाम करे ज़ियारते रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) पर क्योंकि आपकी ज़ियारत को हज के बाद तर्क कर देना ज़ुल्म है और ख़िलाफ़े अदब है। इस ज़ियारत का हुक्म दिया गया है। लेहाज़ा इस ज़ियारत के लिए जाओ के परवरदिगारे आलम ने आं हज़रत (स.अ.व.व.) का ये हक़ क़रार दिया है। और वहाँ जा कर क़ब्रे मुतहहर के पास परवरदिगारे आलम से रोज़ी तलब करो।

अबू सल्त हरवी से रिवायत है के मैं इमामे रज़ा (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र हुआ तो मैंने अर्ज़ किया के यबना रसूलल्लाह इस हदीस के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं जो नक़्ल की जाती है के मोमिनीन बेहिश्त में अपने परवरदिगार की ज़ियारत करेंगे - अगर इस हदीस के माने सहीह हैं तो किस प्रकार सहीह हैं? जबके इसका मज़मून ज़ाहिरी एतेबार से सही एतेकादात के अनुसार नहीं है। तो हज़रत ने फ़रमाया के अबू सल्त परवरदिगारे आलम ने अपने पैग़म्बर को तमाम मख़्लूक़ात और तमाम पैग़ंबरों और फ़रिश्तों से अफ़ज़ल क़रार दिया है। उनकी इताअत को अपनी इताअत और उनकी बयअत को अपनी बयअत क़रार दिया है।

लेहाज़ा उनकी ज़ियारत को भी अपनी ज़ियारत क़रार दिया है। जैसा के इर्शाद होता है: मन योतेइर रसूल फ़क़द अताअल्लाह। या इन्नल लज़ीन योबायेऊनक इन्नमा योबायेऊनल्लाह यदुल्लाह फ़ौक अयदीहिम (यानी जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की या पैग़ंबर जो लोग तुम्हारे हाथ पर बैअत करते हैं दर हक़ीक़त यह अल्लाह की बैअत है और उनके हाथों पर

अल्लाह का हाथ है।)
रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया है के जो व्यक्ति ज़िन्दगी में या मरने के बाद मेरी ज़ियारत करे वह ऐसा ही है जैसे उसने परवरदिगार के दीदार का शरफ़ हासिल किया है।
हिमयरी ने क़ुर्बुल अस्नाद में इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया है के जो व्यक्ति ज़िंदगी में या मरने के बाद मेरी ज़ियारत करे मैं क़यामत के दिन उसकी शफ़ाअत करूँगा।
एक हदीस में है के इमामे सादिक़ (अ.स.) ईद एक दिन मदीने में थे। आप (अ.स.) ज़ियारते रसूल के लिए तशरीफ़ ले गए और जाकर सलाम किया। उसके बाद फ़रमाया के हम तमाम अहले शहर पर फ़ज़ीलत रखते हैं चाहे वह मक्के में हां या गैरे मक्का में हों इस बुनियाद पर के हमें पैग़म्बर की ज़ियारत और आप पर सलाम करने का शरफ़ हसिल हुआ है।
शेख़ तूसी ने तहज़ीब में यज़ीद बिन अब्दुल मलिक से रिवायत की है और उन्होंने अपने बाप के हवाले से अपने दादा से रिवायत की है के मैं जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) की ख़िदमत में मुशरर्फ़ हुआ तो आप ने सलाम में इब्तेदा फ़रमाई फ़िर पूछा के किस लिए आए हो? मैंने अर्ज़ की के मैं बरकत ओ सवाब हासिल करने की गर्ज़ से हाज़र हुआ हूँ। फ़रमाया के मुझे मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने ख़बर दी है के जो व्यक्ति भी मुझपर और उन पर तीन दिन तक सलाम करेगा परवरदिगार बेहिश्त उसके लिए वाजिब कर देगा। मैंने अर्ज़ की के यह आपकी या उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा है? फ़रमाया यक़ीनन, बल्के मरने के बाद भी।
अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के हदीसे मोतबर में अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से मनक़ूल है के रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया जो व्यक्ति भी इमाम हसन (अ.स.) की बक़ी में ज़ियारत करे उसके क़दम सिरात पर उस दिन साबित रहेंगे जिस दिन सारे क़दम लगिज़श खा जाएंगे।
इब्ने कूलूवय ने कामेलुज़ ज़ियारात में एक तूलानी हदीस हिशाम इब्ने सालिम से इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जिसके शब्द यह हैं: एक व्यक्ति इमाम सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र हुआ और उसने अर्ज़ की

के क्या आपके वालिद की ज़ियारत करनी चाहिए? फ़रमाया यक़ीनन - अर्ज़ की ज़ियारत करनेवाले को क्या अज्र मिलने वाला है? फ़रमाया के बेहिश्त उसके लिए है। अगर आपकी इमामत का एतेक़ाद भी रखता हो और आपके अहकाम की इताअत भी करता हो। अर्ज़ किया के अगर कोइ व्यक्ति इस ज़ियारत से किनारा कशी कर ले तो उसका अंजाम क्या होगा? फ़रमाया उसके मुक़द्दर में क़यामत के दिन हसरत ही हसरत है।

मुक़न्ना में इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो व्यक्ति हमारी ज़ियारत करेगा उसके गुनाह बख़्श दिए जाएंगे और वह फ़क़ीर ओ परेशान दुनिया से नहीं जा सकता।

शेख़ तूसी ने तहज़ीब में इमाम हसन अस्करी (अ.स.) से रिवायत की है के जो इमामे सादिक़ (अ.स.) की ज़ियारत करे और उनके पिदरे बुज़ुर्गवार इमामे बाक़र (अ.स.) की ज़ियारत करे वह किसी बिमारी दर्द और तकलीफ़ में मुब्तेला नहीं हो सकता।

ग़र्ज़ इस बाब में अहादीस बहुत हैं और मेरी नज़र में इतनी ही मिक़दार काफ़ी है।

रसूले अकरम (स.अ.व.व.) की ज़ियारत का तरीक़ा

रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की ज़ियारत का तरीक़ा इस प्रकार है:

जिस समय भी मदीने में वारिद हो गुस्ल करे ज़ियारत के लिए। उसके बाद जब मस्जिद में दाख़ल होना चाहे तो दरवाज़े के पास खड़े हो कर इज़्ने दुख़ूले अव्वल पढ़े। इसके बाद दरे जिब्रईल से दाख़िल हो कर अपने दाहिने पैर को आगे बढ़ाए और कहे: اللهُ اكْبَرُ इसके बाद दो रकत नमाज़े मस्जिद अदा करे और हुजरे शरीफ़ के नज़दीक जाकर हुजरे को हाथों से मस कर के और हुजरे मुबारक को बोसा देकर यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

सालाम हो तुम पर ऐ रसूले खुदा, सलाम हो तुम पर ऐ अल्लाह के नबी, सलाम हो तुम पर ऐ

عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ بْنَ عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ اَشْهَدُ

मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह, सलाम हो तुम पर ऐ ख़ातेमुल अंबीया, मै गवाही देता हूँ के आप ने पैग़ाम

اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَاَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَآتَيْتَ الزَّكَاةَ وَاَمَرْتَ

को पहुँचा दिया, नमाज़ को क़ाएम किया ज़कात अदा की अम्र बिल मारूफ़ और नही अनील

بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَعَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا حَتّٰى اَتَاكَ

मुनकर किया और खुलूस के साथ अल्लाह की इबादत की यहां तक के मक़ामे यक़ीन पर पहुँच

الْيَقِينُ فَصَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ الطَّاهِرِينَ

गए, पस अल्लाह का दुरूद और रहमत हो आप पर और आपके अैहलेबैते ताहेरीन पर।

इसके बाद उस सुतून के पास खड़ा हो जो क़ब्र की दाहनी तरफ़ है रू बाक़िबला के बाएं कंधा क़ब्रे मुबारक की तरफ़ हो और दायां कांधा मिम्बर की तरफ़ हो। और यह वह जगह है के जहाँ रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) का सरहाना है। उसके बाद कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

मै गवाही देता हूँ के खुदा के अलावा कोई माबूद नही है। वो अकेला है कोई शरीक नही है

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَاشْهَدُ انَّكَ رَسُولُ اللهِ وَانَّكَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ

और मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उस के बन्दे और रसूल हैं और मै गवाही देता हूँ के आप

اللهِ وَاشْهَدُ انَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ رِسَالَاتِ رَبِّكَ وَنَصَحْتَ لِاُمَّتِكَ

अल्लाह के रसूल हैं और आप मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं और मै गवाही देता हूँ के आप ने अपने

وَجَاهَدْتَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَعَبَدْتَ اللهَ حَتّٰى اتَاكَ الْيَقِينُ

रब के पैग़ाम को पहुँचा दिया और अपनी उम्मत को नसीहत कर दी और राहे खुदा मे जेहाद

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَادَّيْتَ الَّذِي عَلَيْكَ مِنَ الْحَقِّ

किया और अल्लाह की इबादत की यहां तक के मौत आ गई हिकमत और मोअज़्ए हसनह

وَانَّكَ قَدْ رَؤُفْتَ بِالْمُؤْمِنِينَ وَغَلُظْتَ عَلَى الْكَافِرِينَ فَبَلَّغَ اللهُ

के साथ और आप ने इस हक़ को अदा कर दिया जो आप पर था और आप ने मोमिनीन पर

بِكَ افْضَلَ شَرَفِ مَحَلِّ الْمُكَرَّمِينَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي اسْتَنْقَذَنَا

महेरबानी की और काफ़रों के लिए सख़्ती की तो अल्लाह ने आप को मुकर्रेमीन के शरीफ़तरीन

بِكَ مِنَ الشِّرْكِ وَالضَّلَالَةِ اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ صَلَوَاتِكَ وَصَلَوَاتِ

मकाम तक पहुँचा दिया, खुदा की हम्द है जिस ने हमको आप के ज़रिए शिर्क और गुमराही से

مَلَائِكَتِكَ الْمُقَرَّبِينَ وَانْبِيَائِكَ الْمُرْسَلِينَ وَعِبَادِكَ

नजात दी, खुदाया अपना दुरूद और अपने मलाएका मुक़र्रबीन का दुरूद और अपने अंबीया,

الصَّالِحِينَ وَاهْلِ السَّمَاوَاتِ وَالارَضِينَ وَمَنْ سَبَّحَ لَكَ يَا

मुरसलीन और नेक बन्दों का और आसमान व ज़मीन के लोगों का दुरूद और जो तेरी तसबीह

رَبَّ العَالَمِينَ مِنَ الاوَّلِينَ وَالآخِرِينَ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ

करते हैं, ऐ परवर दिगार आलमीन अव्वलीन व आख़ेरीन से, क़रार दे अपने बन्दे और रसूल

وَرَسُوْلِكَ وَنَبِيِّكَ وَامِينِكَ وَنَجِيِّكَ وَحَبِيبِكَ وَصَفِيِّكَ

मोहम्मद (स) पर जो तेरे नबीए अमीन बरगज़ीदा, हबीब, मुंतिख़ब और ख़ास और चुने हुए

وَخَاصَّتِكَ وَصَفْوَتِكَ وَخِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ اعْطِهِ

हैं और तेरी मख़लूक मे सब से बेहतर हैं, खुदाया उन को बुलंद दरज़ा अता कर और वसिला

الدَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَآتِهِ الوَسِيلَةَ مِنَ الْجَنَّةِ وَابْعَثْهُ مَقَامًا

जन्नत अता कर और उनको मक़ामे महमूद पर मबअूस करके उनपर अव्व-लीन व आख़ेरीन

مَحْمُودًا يَغْبِطُهُ بِهِ الاوَّلُونَ وَالآخِرُونَ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ: «وَلَوْ

वाले ग़बता करें, खुदाया बेशक तू ने कहा है के अगर लोग अपने नफ़सों पर ज़ुल्म कर के तेरी

انَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوا انْفُسَهُمْ جَاؤُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ

बारगाह की तरफ़ आए और अल्लाह से इसतेग़फ़ार करें और उन के लिए रसूल भी इसतेग़फ़ार

لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَحِيمًا.» وَاِنِّي اتَيْتُكَ مُسْتَغْفِرًا

करे। तो खुदा को तौबा क़ुबूल करनेवाला रहेमदिल पाएगें और बेशक आप के पास आया हूँ

تَائِبًا مِنْ ذُنُوبِي وَإِنِّي اتَوَجَّهُ بِكَ إِلَى اللهِ رَبِّي وَرَبِّكَ لِيَغْفِرَ لِي

इसतेग़फ़ार करते हुए और गुनाहों से तौबा करते हुए और मै आप के वासते से अल्लाह की तरफ़

ذُنُوبِي

मुतवज्ञे हूँ जो मेरा और आप का परवरदिगार है के वो मेरे गुनाह बख़्श दे

उसके बाद अगर कोई हाजत है तो रू ब क़िबला होकर और हाथों को उठा कर अपनी हाजत तलब करे के इन्शाअल्लाह पूरी होगी।
इब्ने क़ूलूवय ने सनदे मोतबर के साथ मोहम्मद बिन मसऊद से रिवायत की है के मैने इमाम सादिक़ (अ.स.) को रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की क़ब्र के पास देखा के आपने अपने हाथ को क़ब्र पर रखा और कहा:

اسْأَلُ اللهَ الَّذِي اجْتَبَاكَ وَاخْتَارَكَ وَهَدَاكَ وَهَدَىٰ بِكَ انْ

मै अल्लाह से विनती करता हूँ जिसने आप को चुना है, हिदायत की है और दूसरों को आप के

يُصَلِّيَ عَلَيْكَ

ज़रिए हिदायत की के आप पर रहमत नाज़ल करे।

उसके बाद कहे:

إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا

बेशक अल्लाह और उसके मलाएका नबी पर सलवात पढ़ते हैं। ऐ ईमानवालों तुम भी उनपर

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا.

सलवात भेजते रहो और सलाम करते रहो।

शेख़ ने मिस्बाह में फ़रमाया है के जब क़ब्रे मुतह्हर के पास दुआ से फ़ारिग़ हो जाओ तो मिम्बर के पास जाओ उस पर हाथ फेर कर क़ब्र के पास जाओ जो मिम्बर के करीब है। और वहाँ अपनी आँखों को और चेहरे को मलो के यह अमल आँख के लिए शिफ़ा है। इसके बाद मिम्बर के पास ख़ड़े हो कर हम्दो सनाए परवरदिगार बजा लाओ और अपनी हाजतों को तलब करो। रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया है के मेरी क़ब्र और मिम्बर के दरमियान जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। और मेरा मिम्बर जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है। जाओ माक़मे मिम्बर के पास नमाज़ अदा करो। और उसके बाद मस्जिदे पैग़म्बर में जिस क़द्र नमाज़ मुम्किन हो अदा करो के उस मस्जिद में नमाज़ हज़ार नमाज़ों के बराबर है। और जब मस्जिद में प्रवेश करो या बाहर जाओ तो सलवात पढ़ो। इसके बाद हज़रते फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) के घर में नमाज़ अदा करो। और मक़ामे जिब्रईल पर जाओ जो परनाले के नीचे है के यह वह जगह है जहाँ जिब्रईल खड़े हो कर पैग़म्बर से प्रवेश की आज्ञा मांगते थे। उसके बाद कहो:

اَسْاَلُكَ اَیْ جَوَادُ اَیْ كَرِیمُ اَیْ قَرِیبُ اَیْ بَعِیدُ اَنْ تَرُدَّ عَلَیَّ

मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ जवाद ऐ करीम ऐ क़रीब ऐ बईद के तू मुझ पर नेमत नाज़ल

نِعْمَتَكَ

फ़र्मा।

फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) की ज़ियारत

इसके बाद जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) की ज़ियारत पढ़ो रौज़ए मुतह्हर के

पास। अगरचे आपकी क़ब्रे मुतहहर के बारे में इख़्तेलाफ़ है और बाज़ लोगों ने कहा है के आपकी क़ब्र क़ब्रे पैग़ंबर और मिम्बर के दरमियान उसकी जगह पर है जो जन्नक का बाग़ है और बाज़ लोगों ने कहा है के आपकी क़ब्र खुद आपके घर में हैं। एक जमात का ख़याल यह है के आपको बक़ी में दफ़्न किया गया है। मगर आम तौर से ओलमा का ख़याल यही है के आपकी ज़ियारत रौज़े के पास होनी चाहिए और अगर कोई व्यक्ति भी इन तीन मक़ामात पर ज़ियारत करेगा तो वह यक़ीनन ज़्यादा फ़ज़ीलत का हामिल होगा।
बहर हाल उन मक़ामात पर ज़ियारत के लिए खड़ा होने के बाद इस प्रकार कहे:

يَا مُمْتَحَنَةُ امْتَحَنَكِ اللهُ الَّذِى خَلَقَكِ قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَكِ

ऐ आज़माई हुई बीबी अल्लाह ने आप का ईम्तेहान ले लिया आपकी ख़िलक़त से क़ब्ल तो आप

فَوَجَدَكِ لِمَا امْتَحَنَكِ صَابِرَةً وَزَعَمْنَا اِنَّا لَكِ اَوْلِيَآءٌ

को इम्तेहान मे साबेरा पाया और हम ये ख़याल करते हैं के आप के दोस्त हैं और तसदीक़ करने

وَمُصَدِّقُونَ وَصَابِرُونَ لِكُلِّ مَا اَتَانَا بِهٖ اَبُوكِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

वाले और सब्र व इताअत करने वाले हैं हर उस अम्र पर जो हमारे पास आप के पीदरे बुज़ुर्गवार

وَآلِهٖ وَاٰتٰى بِهٖ وَصِيُّهٗ فَاِنَّا نَسْاَلُكِ اَنْ كُنَّا صَدَّقْنَاكِ اِلَّا

(स) लाए और जो उन के वसी लाए तो हम आप से दरख़्वास्त करते हैं के अगर हम ने आप की

الْحَقْتِنَا بِتَصْدِيقِنَا لَهُمَا لِنُبَشِّرَ انْفُسَنَا بِاَنَّا قَدْ طَهُرْنَا

तसदीक़ की है तो हम को मुलहक़ कर लीजिए हमारी उन दोनो की तसदीक़ की वजह से ताके

بِوِلَايَتِكِ

हम अपने नफ़्स को बशारत दें के हम आपकी दोस्ती की वजह से पाक हो गए।

और मुस्तहब है के इस प्रकार ज़ियारत पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ نَبِيِّ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा की दुख़्तर, सलाम हो आप पर ऐ नबीए खुदा की दुख़्तर,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ حَبِيبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ خَلِيلِ

सलाम हो आप पर ऐ हबीबे खुदा की दुख़्तर, सलाम हो आप पर ऐ ख़लीले खुदा की

اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ صَفِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ اَمِينِ

दुख़्तर सलाम हो आप पर ऐ सफ़ीए अल्लाह की दुख़्तर, सलाम हो आप पर ऐ अमीने खुदा

اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ خَيْرِ خَلْقِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ

की दुख़्तर, सलाम हो आप पर ऐ मख़लूक़े खुदा मे सब से बेहतर की दुख़्तर, सलाम हो

اَفْضَلِ اَنْبِيَاءِ اللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَمَلَائِكَتِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ خَيْرِ

आप पर ऐ अल्लाह के नबियों, रसूलों और मलाएका मे सब से बेहतर की दुख़्तर, सलाम

الْبَرِّيَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ مِنَ الْاَوَّلِينَ

हो आपपर ऐ बेहतरीन मख़लूक़ की दुख़्तर, सलाम हो आप पर ऐ आलमीन की औरतों

وَالآخِرِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَازَوْجَةَ وَلِيِّ اللهِ وَخَيْرِ الْخَلْقِ بَعْدَ رَسُوْلِ

की सरदार अव्वलीन व आख़ेरीन में से, सलाम हो आप पर ऐ वलीए खुदा की ज़ौजा और

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا اُمَّ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ سَيِّدَيْ شَبَابِ اَهْلِ

रसूल अल्लाह के बाद बेहतरीन मख़लूक़ की हमसर, सलाम हो आप पर ऐ हसन व हुसैन

الْجَنَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الصِّدِّيقَةُ الشَّهِيدَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ

(अ) की माँ जो जन्नत के जवानो के सरदार हैं, सलाम हो आप पर ऐ सिददीक़ा ताहेरा जो

اَيَّتُهَا الرَّضِيَّةُ الْمَرْضِيَّةُ اَلسلَامُ علَيْكِ اَيَّتُهَا الْفَاضِلَةُ الزَّكِيَةُ

राहे खुदा मे शहीद हुई, सलाम हो आप पर ऐ बीबी आप खुदा से खुश और खुदा आप से

اَلسلَامُ علَيْكِ اَيَّتُهَا الْحَوْرَاءُ الاِنْسِيَّةُ اَلسلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا

खुश, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़गी और फ़ज़ीलत वाली बीबी, सलाम हो आप पर ऐ

التَّقِيَّةُ النَّقِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الْمُحَدَّثَةُ الْعَلِيمَةُ اَلسَّلَامُ

इन्सीयए हुरा, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़ा और मुत्तक़ी, सलाम हो आप पर ऐ मोहददेसा

عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الْمَظْلُومَةُ الْمَغْصُوبَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا

और अलीमह सालमा हो आप पर ऐ मज़लूमा जिस का हक़ छीना गया, ऐ फ़ातेमा बिन्ते

الْمُضْطَهَدَةُ الْمَقْهُورَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ رَسُوْلِ اللهِ

रसूल अल्लाह और अल्लाह की रहमत और बरकत हो अल्लाह का दुरूद हो आप पर और

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْكِ وَعَلٰى رُوحِكِ وَبَدَنِكِ اَشْهَدُ

आप की रूह और बदन पर, मै गवाही देता हूँ के आप ने अपने परवरदिगार की दलील पर

اَنَّكِ مَضَيْتِ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكِ وَاَنَّ مَنْ سَرَّكِ فَقَدْ سَرَّ رَسُولَ

ज़िंदगी गुज़ारी, बेशक जिस ने आपको खुश किया उसने रसूल अल्लाह को खुश किया और

اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَنْ جَفَاكِ فَقَدْ جَفَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ

जिस ने आप पर ज़ुल्म किया उसने रसूले खुदा (स) पर ज़ुल्म किया और जिस ने आप को

عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَنْ آذَاكِ فَقَدْ آذٰى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

अज़ियत दी उसने रसुल अल्लाह (स) को आज़ियत दी और जो आप से मिला वो रसूले खुदा

وَمَنْ وَصَلَكِ فَقَدْ وَصَلَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَنْ

से मिला और जो आप से जुदा हुआ वो रसूल खुदा से जुदा हुआ इस लिए के आप उन का

قَطَعَكِ فَقَدْ قَطَعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ لِاَنَّكِ بِضْعَةٌ مِنْهُ

टुकड़ा और वो रूह हैं जो उनके पहलुओं के दरमियान हैं। मै अल्लाह और उस के रसूल

وَرُوحُهُ الَّذِي بَيْنَ جَنْبَيْهِ اُشْهِدُ اللهَ وَرُسُلَهُ وَمَلَائِكَتَهُ اِنِّي رَاضٍ

और मलाएका को गवाही बनाता हूँ के मै राज़ी हूँ उस से जिस से आप राज़ी हैं और उस से

عَمَّنْ رَضِيتِ عَنْهُ سَاخِطٌ عَلٰى مَنْ سَخِطْتِ عَلَيْهِ مُتَبَرِّئٌ مِمَّنْ

नाराज़ हूँ जिस से आप नाराज़ हैं। उस से बरी हूँ जिस से आप बरी हैं, उस का दोस्त हूँ जिस

تَبَرَّاتِ مِنْهُ مُوَالٍ لِمَنْ وَالَيْتِ مُعَادٍ لِمَنْ عَادِيْتِ مُبْغِضٌ لِمَنْ

की आप से दोस्ती है उसका दुश्मत हूँ जिस की आप से दुश्मनी है और उस से नाराज़ हूँ

ابْغَضْتِ مُحِبٌّ لِمَنْ احْبَبْتِ وَ كَفَىٰ بِاللّٰهِ شَهِيدًا وَحَسِيبًا وَجَازِيًا

जिस से आप नाराज़ हैं, उस से मोहब्बत है जिस से आप को मोहब्बत है और अल्लाह गवाह

وَمُثِيبًا

है, हिसाब सवाब व जज़ा के लिए काफ़ी है।

उसके बाद रसूले अक्रम (स) और आईम्मे अत्हार (अ.स.) पर सलवात पढ़े:
लेखक: मैने ३ जमादिउल आख़िर के ज़ैल में जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) की एक और ज़ियारत नक़्ल की है और इसके अलावा ओलमा ने एक मुफ़स्सल ज़ियारत भी नक़्ल की है जो तक़रीबन उसी ज़ियारत से मिलती जुलती है जिसको हमने शेख़ से नक़्ल किया है। उस ज़ियारत का आगाज़ है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा की दुख़तर, सलाम हो आप पर ऐ नबी खुदा की दुख़तर, सलाम

نَبِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ حَبِيبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا

हो आप पर ऐ हबीबे खुदा की दुख़तर, सलाम हो आप पर ऐ ख़लीले खुदा की दुख़तर सलाम हो

بِنْتَ خَلِيلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ صَفِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ सफ़ी अल्लाह की दुख़तर, सलाम हो आप पर ऐ अमीने खुदा की दुख़तर, सलाम हो

عَلَيْكِ يَا بِنْتَ امِينِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ خَيْرِ خَلْقِ

आप पर ऐ मख़लूके खुदा में सब से बेहतर की दुख़तर, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के नबियों

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ افْضَلِ انْبِيَاءِ اللهِ وَرُسُلِهِ

रसूलों और मलाएका मे सब से बेहतर की दुख़तर, सलाम हो आपपर ऐ बेहतरीन मख़लूक़ की

وَمَلَائِكَتِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ خَيْرِ الْبَرِّيَةِ اَلسَّلَامُ

दुख़तर, सलाम हो आप पर ऐ आलमीन की औरतों की सरदार अव्वलीन व आख़ेरीनमे से,

عَلَيْكِ يَا سِيِّدَةَ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ مِنَ الاوَّلِينَ وَالآخِرِينَ

सलाम हो आप पर ऐ वलीए खुदा की ज़ौजा और रसूल अल्लाह के बाद बेहतरीन मख़लूक़ की

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا زَوْجَةَ وَلِيِّ اللهِ وَخَيْرِ الْخَلْقِ بَعْدَ رَسُوْلِ اللهِ

हमसर, सलाम हो आप पर ऐ हसन व हुसैन की माँ जो जन्नत के जवानो के सरदार है, सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا اُمَّ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ سَيِّدَيْ شَبَابِ اهْلِ

आप पर ऐ सिद्दीक़ा ताहेरा जो राहे खुदा मे शहीद हुं, सलाम हो आप पर ऐ बीबी आप खुदा से

الْجَنَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ ايَّتُهَا الصِّدِّيقَةُ الشَّهِيدَةُ اَلسَّلَامُ

खुश और खुदा आप से खुश, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़गी और फ़ज़ीलत वाली बीबी, सलाम

عَلَيْكِ ايَّتُهَا الرَّضِيَّةُ الْمَرْضِيَّةُ اَلسلَامُ علَيْكِ ايَّتُهَا

हो आप पर ऐ इनसीयए हुरा, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़ा और मुत्तक़ी, सलाम हो आप पर ऐ

اَلْفَاضِلَةُ الزَّكِيَةُ اَلسلَامُ علَيْكِ ايَّتُهَا الْحَوْرَاءُ الاِنْسِيَّةُ

मोहद्देसा और अलीमा सालम हो आप पर ऐ मज़लूमा जिस का हक़ छीना गया, ऐ फ़ातेमा बिन्ते

اَلسلَامُ عَلَيْكِ ايَّتُهَا التَّقِيَّةُ النَّقِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ ايَّتُهَا

रसूल अल्लह और अल्लह की रहमत और बरकत हो अल्लह का दुरूद हो आप पर और आप की

الْمُحَدَّثَةُ الْعَلِيمَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ ايَّتُهَا الْمَظْلُومَةُ

रूह और बदन पर, मै गवाही देता हूँ के आप ने अपने परवरदेगार की दलील पर ज़िंदगी गुज़ारी,

الْمَغْصُوبَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ ايَّتُهَا الْمُضْطَهَدَةُ الْمَقْهُورَةُ

बेशक जिस ने आपको खुश किया उसने रसूल अल्लाह को खुश किया और जिस ने आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ رَسُوْلِ اللهِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

ज़ुल्म किया उसने रसूले खुदा (स) पर ज़ुल्म किया और जिस ने आप को अज़ियत दी उसने रसूल

صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْكِ وَعَلٰى رُوحِكِ وَبَدَنِكِ اشْهَدُ انَّكِ مَضَيْتِ

अल्लाह (स) को अज़ियत दी अल्लाह उनपर और उनकी आल पर रहमत नाज़िल करे। जिसने

عَلٰى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكِ وَانَّ مَنْ سَرَّكِ فَقَدْ سَرَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّىٰ

आप की इज़्ज़त की उसने अल्लाह के रसूल की इज़्ज़त की अल्लाह उनपर और उनकी आल पर

اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَنْ جَفَاكِ فَقَدْ جَفَا رَسُولَ اللهِ صَلَّىٰ اللهُ

रहमत नाज़िल करे। और जो आप से मिला वो रसूले खुदा से मिला और जो आप से जुदा हुआ

عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَنْ آذَاكِ فَقَدْ آذَىٰ رَسُولَ اللهِ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْهِ

वो रसूले खुदा से जुदा हुआ। इस लिए के आप उन का टुकडा और वो रूह हैं जो उनके पहलुओं

وَآلِهِ وَمَنْ وَصَلَكِ فَقَدْ وَصَلَ رَسُولَ اللهِ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

के दरमियान है। मै अल्लह व रसूल और मलाएका को गवाह बनाता हूँ। मै खुदा को गवाह बनाता

وَمَنْ قَطَعَكِ فَقَدْ قَطَعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ لانَّكِ

हूँ और उसके मलाएका को उस का दोस्त हूँ जो आप का दोस्त है और उसका दुश्मन हूँ जो आप

بِضْعَةٌ مِنْهُ وَرُوحُهُ الَّذِي بَيْنَ جَنْبَيْهِ أُشْهِدُ اللهَ وَمَلائِكَتَهُ

का दुश्मन है उस से मेरी जंग है जिस से आप की जंग है ऐ मेरी शहज़ादी मे आप, आप के वालिद

انِّي وَلِيٌّ لِمَنْ وَالاكِ وَعَدُوٌّ لِمَنْ عَادَاكِ وَحَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكِ

माजिद, आप के शौहर और आप की औलाद मे अईम्मा पर यक़ीन रखने वाला हूँ और उन की

انَا يَا مَوْلَاتِي بِكِ وَبِابِيكِ وَبَعْلِكِ وَالائِمَّةِ مِنْ وُلْدِكِ مُوقِنٌ

विलायत पर ईमान रखता हूँ और उनकी इताअत का पाबंद हूँ मै गवाही देता हूँ के दीन सिर्फ़ उन्ही

وَبِوَلَايَتِهِمْ مُؤْمِنٌ وَلِطَاعَتِهِمْ مُلْتَزِمٌ اشْهَدُ انَّ الدِّينَ

का दीन है और हुकुम बस उन्हीका हुकुम है और उन्होंने अल्लाह के हुकुम को पहुँचा दिया और

دِينُهُمْ وَالْحُكْمَ حُكْمُهُمْ وَهُمْ قَدْ بَلَّغُوا عَنِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

खुदा की राह की जानिब दावत दी हिकमत और मौज़ए हसना के ज़रिए उन्हे अल्लाह की राह मे

وَدَعَوْا اِلٰى سَبِيلِ اللهِ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ لَا تَاخُذُهُمْ

मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नही होती है और अल्लाह का दुरूद हो आप पर और

فِي اللهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ وَصَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكِ وَعَلٰى اَبِيكِ وَبَعْلِكِ

आप के वालिदे माजिद और शौहर नामदार और आपकी औलाद मे अईम्मए ताहेरीन पर खुदाया

وَذُرِّيَّتِكِ الْاَئِمَّةِ الطَّاهِرِينَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ بَيْتِهِ

दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद और उन के एहलेबैत पर और दुरूद नाज़ल कर बतूल, ताहेरा,

وَصَلِّ عَلَى الْبَتُولِ الطَّاهِرَةِ الصِّدِّيقَةِ الْمَعْصُومَةِ التَّقِيَّةِ

सिद्दीक़ा, मासूमा, पाकीज़ा, नेक किरदार, खुदा से राज़ी, पाक गौहर, रश्दार हिदायत की मालिक,

النَّقِيَّةِ الرَّضِيَّةِ الْمَرْضِيَّةِ الزَّكِيَّةِ الرَّشِيدَةِ الْمَظْلُومَةِ

मज़लूमा, मकबूरा, जिनका हक़ छीना गया, जिस को मीरास से महरूम रखा गया जिस की पसली

الْمَقْهُورَةِ الْمَغْصُوبَةِ حَقُّهَا الْمَمْنُوعَةِ اِرْثُهَا الْمَكْسُورَةِ

शिकस्ता की गई, जिस के शौहर पर ज़ुल्म किया गया, जिस की औलाद को क़त्ल किया गया,

ضِلْعُهَا الْمَظْلُومِ بَعْلُهَا الْمَقْتُولِ وَلَدُهَا فَاطِمَةَ بِنْتِ

फ़ातेमा पर जो तेरे रसूल की बेटी और उनके जिस्म का टुकडा, बातिने क़ल्ब और जिगर गोशा

رَسُولِكَ وَبَضْعَةِ لَحْمِهِ وَصَمِيمِ قَلْبِهِ وَفِلْذَةِ كَبِدِهِ وَالنُّخْبَةِ

है तेरे नबी के लिए मुंताख़िब और तेरा वो तोहफ़ा जिस से तूने अपने वसी को मख़सूस किया

مِنْكَ لَهُ وَالتُّحْفَةِ خَصَصْتَ بِهَا وَصِيَّهُ وَحَبِيبَةِ الْمُصْطَفٰى

है और पैग़ंमबरे मुस्तफ़ा की महबूब, मुतर्ज़ा की शरीके ज़िन्दगी और औरतों की सरदार और

وَقَرِينَةِ الْمُرْتَضٰى وَسَيِّدَةِ النِّسَاءِ وَمُبَشِّرَةِ الاوْلِيَاءِ

वलियों की बशरत देने वाली पाबंदे वरा ज़ोहद, सेब बागे फ़िरदोस व खुल्द जिनकी विलादत को

حَلِيفَةِ الْوَرَعِ وَالزُّهْدِ وَتُفَّاحَةِ الْفِرْدَوْسِ وَالْخُلْدِ الَّتِى

मुशरर्फ़ किया है जन्नत की औरतों से और अनवारे अईम्मए ताहेरीन (अ) को उनकी नस्ल मे

شَرَّفْتَ مَوْلِدَهَا بِنِسَاءِ الْجَنَّةِ وَسَلَلْتَ مِنْهَا انْوَارَ الاِئِمَّةِ

क़रार दिया है और उनके सामने सबूत के हिजाब को डाल दिया है। खुदाया उन पर दुरूद नाज़ल

وَارْخَيْتَ دُونَهَا حِجَابَ النُّبُوَّةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهَا صَلاةً تَزِيدُ

कर ऐस दुरूद जो उनके मकाम को तेरे नज़दीक़ ज़्यादा कर दे और उन के शरफ और मनिज़लते

فِي مَحَلِّهَا عِنْدَكَ وَشَرَفِهَا لَدَيْكَ وَمَنْزِلَتِهَا مِنْ رِضَاكَ وَبَلِّغْهَا

रज़ा मंदी को ज़्यादा करे और हमारी तरफ़ से उन को सलाम और तहय्यत पहुँचा दे और हमको

مِنَّا تَحِيَّةً وَسَلَامًا وَآتِنَا مِنْ لَدُنْكَ فِي حُبِّهَا فَضْلًا وَاِحْسَانًا

अपनी जानिब से फ़ज़्ल व एहसान और रहमत और गुफ़रान उनकी मोहब्बत मे अता कर बेशक

وَرَحْمَةً وَغُفْرَانًا اِنَّكَ ذُو الْعَفْوِ الْكَرِيمِ

तू माफ़ी और करम वाला है।

लेखक: शेख़ ने तहज़ीब में फ़रमाया है के जो कुछ भी फ़ज़्ल व फ़ज़ीलत जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) में नक़्ल किया गया है वह शुमार से ज़्यादा है। अल्लामा मजलिसी ने मिस्बाहुल अन्वार से नक़्ल किया है के जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) से यह रिवायत है के मेरे पिता ने फ़रमाया है के जो व्यक्ति भी तुम पर सलवात पढ़ेगा परवरदिगारे आलम उसके गुनाहों को माफ़ कर देगा। और मैं जन्नत में जहाँ भी रहूँगा उसको मुझसे मिला देगा।

रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की ज़ियारत दूर से

अल्लामा मजलिसी ने ज़ादूल माद में १७ रबीउल अव्वल के आमाल में फ़रमाया है के शेख़ मुफ़ीद, शहीद और सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया के जब मदीने तय्यबा से बाहर कोई शख़्स रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की ज़ियारत करना चाहे तो अपने सामने रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की क़ब्र की शबीह बनाकर हज़रत का नाम लिखे और दिल से मुतवज्जे हो कर रूख़ हज़रत की तरफ़ कर के यूँ कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है वो एक है उस का कोई शरीक नही है।

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَاَنَّهُ سَيِّدُ الاَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ وَاَنَّهُ سَيِّدُ

मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं और वो अव्वलीन व आख़ेरीन के सरदार

الاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِينَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهِ

हैं और वो नबियों और रसूलों के सरदार हैं, खुदाया दुरूद भेज उन पर और उनके एहलेबैते

الاَئِمَّةِ الطَّيِّبِينَ

ताहेरीन व अईम्माए तय्यबीन पर।

पिर उसके बाद:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيلَ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के रसूल, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के दोस्त, सलाम हो आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

पर ऐ अल्लाह के नबी, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के मुंतखिब बन्दे, सलाम हो आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا رَحْمَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ

रहमते खुदा, सलाम हो आप पर ऐ मुख़तारे खुदा, सलाम हो आप पर ऐ हबीबे खुदा, सलाम हो

عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَجِيبَ اللهِ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ नजीबे खुदा, सलाम हो आप ऐ ख़ातेमुन नबीईन, सलाम हो आप पर ऐ सय्यदुल

عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِينَ

मुर्सलीन सलाम हो आप पर ऐ अद्ल के साथ क़याम करने वाले, सलाम हो आप पर ऐ हर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَائِمًا بِالْقِسْطِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا فَاتِحَ الْخَيْرِ

नेकी के खोलने वाले, सलाम हो अप पर ऐ मादने वही व तनज़ील, सलाम हो आप पर ऐ खुदा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَعْدِنَ الْوَحْيِ وَالتَّنْزِيلِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

की जानिब से तबलीग़े एहकाम करने वले, सलाम हो आप पर ऐ रोशन चराग़, सलाम हो आप

مُبَلِّغًا عَنِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السِّرَاجُ الْمُنِيرُ اَلسَّلَامُ

पर ऐ बशारत देने वाले, सलाम हो आप पर ऐ डराने वाले, सलाम हो आप पर ऐ मख़लूक़ को

عَلَيْكَ يَا مُبَشِّرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَذِيرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

डराने वाले, सलाम हो आप पर ऐ नूरे खुदा जिस से रौशनी हासिल की जाती है, सलाम हो आप

مُنْذِرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُورَ اللهِ الَّذِى يُسْتَضَاءُ بِهِ اَلسَّلَامُ

पर आप के एहलेबैत तय्यबीन व ताहेरीन पर जो हादी और मेहदी हैं, सलाम हो आप पर और

عَلَيْكَ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ الْهَادِينَ

आपके जददे बुज़ुर्गवार अब्दुल मुत्तलीब पर और आप के पिदरे नामदार जनाबे अब्दुलाह पर,

الْمَهْدِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى جَدِّكَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَعَلٰى

सलाम हो आप की वालदए माजेदा आमिना बिन्ते वहब पर, सलाम हो आपके अम्मे बुज़ुर्गवार

اَبِيكَ عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اُمِّكَ آمِنَةَ بِنْتِ وَهَبٍ اَلسَّلَامُ

हमज़ा सय्यदुशोहदा पर, सलाम हो आप के चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब पर, सलाम हो

عَلٰى عَمِّكَ حَمْزَةَ سَيِّدِ الشُّهَدَاءِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَمِّكَ الْعَبَّاسِ

आप के अम्मे नामदार और कफ़ील जनाब अबूतालिब पर, सलाम हो आप के चचा ज़ाद भाई

بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَمِّكَ وَكَفِيلِكَ اَبِى طَالِبٍ

जफ़र पर जो जन्नते खुलद मे परवाज़ कर रहे हैं। सलाम हो आप पर ऐ मोहम्मद (स) सालाम हो

اَلسَّلَامُ عَلٰى ابْنِ عَمِّكَ جَعْفَرٍ الطَّيَّارِ فِي جِنَانِ الْخُلْدِ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ अहमद, सलाम हो आप पर ऐ अव्वलीन व आख़ेरीन पर हुज्जते खुदा और आलमीन

عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَحْمَدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ

के परवरदिगार की इताअत की जानिब सबक़त करने वाले और उसके रसूलों मे बरतर और उस

اللهِ عَلَى الاَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ وَالسَّابِقَ اِلٰى طَاعَةِ رَبِّ

के नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले और उसकी मख़लूक़ पर गवाह और उसकी तरफ़

الْعَالَمِينَ وَالْمُهَيْمِنَ عَلٰى رُسُلِهِ وَالْخَاتِمَ لاَنْبِيَائِهِ وَالشَّاهِدَ

शिफ़ाअत करने वाले और उसकी निगाह मे साहेबे मनिज़लत और मुतीए मलकूत बेहतरीन

عَلٰى خَلْقِهِ وَالشَّفِيعَ اِلَيْهِ وَالْمَكِينَ لَدَيْهِ وَالْمُطَاعَ فِي

पसंदीदा सिफ़तों के रखने वाले जिस के तमाम शरफ़ की तारीफ़ की गई है, निगाहे खुदा मे करीम,

مَلَكُوتِهِ الاَحْمَدَ مِنَ الاَوْصَافِ الْمُحَمَّدَ لِسَائِرِ الاَشْرَافِ

हिजाबों के पीछे से बात किए हुए, कामयाबी मे सबक़त रखने वाले, किसी के मुलहिक होने से

الْكَرِيمَ عِنْدَ الرَّبِّ وَالْمُكَلَّمَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُبِ الْفَائِزَ

दूर तेरे हक़ के पहचानने वाले का सलाम जो गुनाह व कोताही का मोतरिफ़ है तेरे वाजिब हक़ के

بِالسِّبَاقِ وَالْفَائِتَ عَنِ اللِّحَاقِ تَسْلِيمَ عَارِفٍ بِحَقِّكَ

अदा करने मे और जो तेरा फ़ज़्ल उस तक पहुँचा है उसका इम्कान नही किया है और तेरे रब की

مُعْتَرِفٍ بِالتَّقْصِيرِ فِي قِيَامِهِ بِوَاجِبِكَ غَيْرِ مُنْكِرٍ مَا انْتَهَىٰ

तरफ़ से मज़ीद फ़ज़्ल का यक़ीन किए है। ईमान लाया है उस किताब पर जो तुझ पर नाज़ल हुई

اِلَيْهِ مِنْ فَضْلِكَ مُوْقِنٍ بِالْمَزِيدَاتِ مِنْ رَبِّكَ مُؤْمِنٍ

है। तेरे हलाल को हलाल और तेरे हराम को हराम जानता है। मै गवाही देता हूँ ऐ अल्लह के रसूल

بِالْكِتَابِ الْمُنْزَلِ عَلَيْكَ مُحَلِّلٍ حَلَالَكَ مُحَرِّمٍ حَرَامَكَ اشْهَدُ

तमाम गवाहों के साथ और मै उसका मुतहमिल हूँ हर मुनकर से के आप ने अपने परवरदिगार के

يَارَسُولَ اللهِ مَعَ كُلِّ شَاهِدٍ وَاتَحَمَّلُهَا عَنْ كُلِّ جَاحِدٍ انَّكَ قَدْ

पैग़ाम को पहुँचा दिया है और अपनी उम्मत की नसीहत की है और अपने रब की राह मे जिहाद

بَلَّغْتَ رِسَالَاتِ رَبِّكَ وَنَصَحْتَ لِاُمَّتِكَ وَجَاهَدْتَ فِي سَبِيلِ

किया है और उसके हुकुम को पहुँचाया है और उसकी राह मे अज़ीयत को बरदाश्त किया है।

رَبِّكَ وَصَدَعْتَ بِاَمْرِهِ وَاحْتَمَلْتَ الاذَىٰ فِي جَنْبِهِ وَدَعَوْتَ

और उसकी राह की तरफ़ हिकमत और मोअज़ह हसना के साथ बुलाया है और आप ने उस

اِلَىٰ سَبِيلِهِ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ الْجَمِيلَةِ وَادَّيْتَ الحَقَّ

हक़ को अदा किया है जो आप के ऊपर था और आप ने मोमिनो के साथ महेरबानी की है और

الَّذِي كَانَ عَلَيْكَ وَانَّكَ قَدْ رَؤُفْتَ بِالْمُؤْمِنِينَ وَغَلُظْتَ عَلَىٰ

काफ़िरो के साथ सख़्ती की है और अल्लाह की इबादत की है खुलूस के साथ यहाँ तक के मौत आ

الْكَافِرِينَ وَعَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا حَتّٰى اتَاكَ الْيَقِينُ فَبَلَّغَ اللهُ

गई, तो खुदा ने आपको पहुँचा दिया मुकर्रमीन के शरीफ़ तरीन मकाम और मुक़र्रबीन की बुलंद

بِكَ اشْرَفَ مَحَلِّ الْمُكَرَّمِينَ وَاعْلٰى مَنَازِلِ الْمُقَرَّبِينَ وَارْفَعَ

तरीन मनिज़ल और मुरसलीन के आला तरीन दरजे तक उस मनिज़ल पर के कोई उस मकाम

دَرَجَاتِ الْمُرْسَلِينَ حَيْثُ لَا يَلْحَقُكَ لَاحِقٌ وَلَا يفُوقُكَ

तक नही पहुँचा और कोई आप से बुलंद नही हुआ और कोई आप पर साबिक़ नही हुआ और

فَائِقٌ وَلَا يَسْبِقُكَ سَابِقٌ وَلَا يَطْمَعُ فِي إِدْرَاكِكَ طَامِعٌ الْحَمْدُ

आप को पाने के किसी लालच वाले ने लालच न की, हम्द उस खुदा के लिए है जिस ने आप के

لِلّٰهِ الَّذِي اسْتَنْقَذَنَا بِكَ مِنَ الْهَلَكَةِ وَهَدَانَا بِكَ مِنَ الضَّلَالَةِ

वास्ते से हलाकत से नजात दी और हमारी हिदायत की आप के ज़रिए गुमराही से और हमको

وَنَوَّرَنَا بِكَ مِنَ الظُّلْمَةِ فَجَزَاكَ اللهُ يَا رَسُولَ اللهِ مِنْ مَبْعُوثٍ

तारीकी से निकाल कर रौश्नी मे लाया, पस ऐ खुदा के रसूल अल्लाह आपको जज़ा दे हमारी तरफ़

افْضَلَ مَا جَازَى نَبِيًّا عَنْ اُمَّتِهِ وَرَسُولًا عَمَّنْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ

से बेहतरीन जज़ा जो किसी नबी को उसकी उम्मत की तरतीब मे मिली हो और रसूल को जिस

بِاَبِي انْتَ وَاُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ زُرْتُكَ عَارِفًا بِحَقِّكَ مُقِرًّا

की तरफ़ भेजा गया है ऐ अल्लाह के रसूल मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मै ने आप की ज़ियारत

بِفَضْلِكَ مُسْتَبْصِرًا بِضَلالَةِ مَنْ خَالَفَكَ وَخَالَفَ اهْلَ

की आप के हक़ को पहचानते हुए आप के फ़ज़्ल का इक़रार करते हुए आप के मुख़ालिफ़ और

بَيْتِكَ عَارِفًا بِالْهُدَىٰ الَّذِي انْتَ عَلَيْهِ بِابِي انْتَ وَاُمِّي وَنَفْسِي

आप के एहलेबैत के मुख़ालिफ़ की गुमराही को पहचानते हुए इस हिदायत को जानते हुए जिस

وَاهْلِي وَمَالِي وَوَلَدِي انَا اُصَلِّي عَلَيْكَ كَمَا صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْكَ

पर आप हैं। मेरे मॉ बाप, मेरा नफ़स, मेरे घर वाले और माल व औलाद क़ुर्बान हो जाएं मै आप

وَصَلَّىٰ عَلَيْكَ مَلائِكَتُهُ وَانْبِيَاؤُهُ وَرُسُلُهُ صَلاةً مُتَتَابِعَةً

पर दुरूद भेजता हूँ जैसा के अल्लाह ने दुरूद भेजा है आप पर और उस के मलाएका और अंबीया

وَافِرَةً مُتَوَاصِلَةً لَا انْقِطَاعَ لَهَا وَلَا امَدَ وَلَا اجَلَ صَلَّىٰ اللهُ

और रसूलों ने दुरूद भेजा है मुसलसल, मुतवातिर, कसीर और ग़ैर मुनक़ता दुरूद जो ख़त्म ना

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ اهْلِ بَيْتِكَ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ كَمَا انْتُمْ

हो और जिस की मुद्दत और हदबन्दी न हो अल्लाह का दुरूद हो आप पर और आप के पाक व

اهْلُهُ

पाकीज़ा एहलेबैत (अ) जिस के आप लोग अहेल हैं।

फिर अपने हाथ बुलंद करे और कहे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ جَوَامِعَ صَلَوَاتِكَ وَنَوَامِيَ بَرَكَاتِكَ وَفَوَاضِلَ

खुदाया क़रार दे अपने तमाम दुरूद को और राज़ अफ़ज़ू बरकतों को और अपनी बेहतरीन

خَيْرَاتِكَ وَشَرَائِفَ تَحِيَّاتِكَ وَتَسْلِيمَاتِكَ وَكَرَامَاتِكَ

नेकियों को और अपने शरीफ़ तरीन तहय्या और सलाम को और करामत व रहमत को और

وَرَحَمَاتِكَ وَصَلَوَاتِ مَلَائِكَتِكَ الْمُقَرَّبِينَ وَاَنْبِيَائِكَ

मलाएका मुक़र्रबीन की सलवात और अंबीया मुरसलीन की सलवात और अईम्मए मुनतख़ेबीन

الْمُرْسَلِينَ وَاَئِمَّتِكَ الْمُنْتَجَبِينَ وَعِبَادِكَ الصَّالِحِينَ وَاَهْلِ

की सलवात और तेरे नेक बन्दा ंकी सलवात और आसमान व ज़मीन के लोगा ंकी सलवात

السَّمَاوَاتِ وَالاَرَضِينَ وَمَنْ سَبَّحَ لَكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ مِنَ

और जो तेरी तसबीह करते हैं ऐ अव्वलीन व आख़ेरीन मे तमाम आलम के परवरदिगार मोहम्मद

الاَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَشَاهِدِكَ

पर जो तेरे बन्दे, तेरे रसूल, गवाह, नबी, और डरानेवाले और अमानतदार, रूतबावाले, नजात

وَنَبِيِّكَ وَنَذِيرِكَ وَاَمِينِكَ وَمَكِينِكَ وَنَجِيِّكَ وَنَجِيبِكَ

देहिंदा, हबीब, ख़लील, बरगुज़ीदा, मुनताख़िब, ख़ास, ख़ालिस, रहमत, तेरी मख़लूक़ मे नेक

وَحَبِيبِكَ وَخَلِيلِكَ وَصَفِيِّكَ وَصَفْوَتِكَ وَخَاصَّتِكَ

लोगों मे सब से नेक नबीए रहमत, ख़ाज़ने मग़िफ़रत और नेकी व बरकत के क़ाएद और तेरे

وَخَالِصَتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَخَيْرِ خِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ

हुकुम से बन्दो को हलाकत से नजात दिलानेवाले और तेरे दीने मोहकम की जानिब लोगों को

وَخَازِنِ الْمَغْفِرَةِ وَقَائِدِ الْخَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَمُنْقِذِ الْعِبَادِ مِنَ

दावत देनेवाले हैं, तेरे हुकुम से, मिसाक़ के एतेबार से बएत से पहले नबी और बेसत के एतेबार

الْهَلَكَةِ بِإِذْنِكَ وَدَاعِيهِمْ إِلٰى دِينِكَ الْقَيِّمِ بِأَمْرِكَ اَوَّلِ

से सब से आख़िर नबी जिनको तू ने फ़ज़ीलत, मनिज़ले ज़लील और बुलंद दरजा और बुज़ुर्ग

النَّبِيِّينَ مِيثَاقًا وَآخِرِهِمْ مَبْعَثًا الَّذِى غَمَسْتَهُ فِى بَحْرِ

मरतबा के दरयाओं मे गोता दिया है और जिन को तूने पाकीज़ा सुल्ब मे वदीअत किया है और

الْفَضِيلَةِ وَالْمَنْزِلَةِ الْجَلِيلَةِ وَالدَّرَجَةِ الرَّفِيعَةِ وَالْمَرْتَبَةِ

उस से अरहाम मुतहेरा की जानिब मुन्तिक़ल किया है अपने लुत्फ़ के ज़रिए और अपनी एयनायत

الْخَطِيرَةِ وَاوْدَعْتَهُ الاصْلَابَ الطَّاهِرَةَ وَنَقَلْتَهُ مِنْهَا إِلٰى

के सबबसे जब तूने मुवक्किल किया उनकी हिफ़ाजत, बचाओ और निगरानी और निगेहबानी

الارْحَامِ الْمُطَهَّرَةِ لُطْفًا مِنْكَ لَهُ وَتَحَنُّنًا مِنْكَ عَلَيْهِ إِذْ وَكَّلْتَ

के लिए अपनी क़ुदरत से ग़ैबी निगराँ को जिनके ज़रिए उन से तमाम बुराई और बदकारी और

لِصَوْنِهِ وَحِرَاسَتِهِ وَحِفْظِهِ وَحِيَاطَتِهِ مِنْ قُدْرَتِكَ عَيْنًا

ख़राबियों की राहों को बन्द कर दिया। यहाँ तक के तूने उनके ज़रिए बन्दों की निगाहों को बुलंद

عَاصِمَةً حَجَبْتَ بِهَا عَنْهُ مَدَانِسَ الْعَهْرِ وَمَعَائِبَ السِّفَاحِ حَتّٰى

किया और मरदगाने शहेर व दयार को ज़िन्दा कर दिया तूने उनकी विलादत के नूर से पर्दा की

رَفَعْتَ بِهِ نَوَاظِرَ الْعِبَادِ وَاحْيَيْتَ بِهِ مَيِّتَ الْبِلَادِ بِاَنْ كَشَفْتَ

तारिकी को ख़त्म कर दिया और नूर के हुल्ले हरम व नामूसे इलाही को पिन्हां कर दिए। खुदाया

عَنْ نُورِ وِلَادَتِهِ ظُلَمَ الاسْتَارِ وَالْبَسْتَ حَرَمَكَ بِهِ حُلَلَ

जिस तरह तूने उनको महफ़ूज़ किया है इस मरतबा करीम के शरफ़ से और अज़ीम मनक़बत के

الانْوَارِ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا خَصَصْتَهُ بِشَرَفِ هٰذِهِ الْمَرْتَبَةِ الْكَرِيمَةِ

जख़ीरा से अब तू सलवात नाज़ल फ़र्मा उन पर जैसा के उन्होनें तेरे अहद को पूरा किया और तेरे

وَذُخْرِ هٰذِهِ الْمَنْقَبَةِ الْعَظِيمَةِ صَلِّ عَلَيْهِ كَمَا وَفٰى بِعَهْدِكَ

पैग़ाम को पहुँचाया और इंकार करने वालों से तेरी तौहीद परसती के पर जंग की और कुफ़्फ़ार से

وَبَلَّغَ رِسَالَاتِكَ وَقَاتَلَ اهْلَ الْجُحُودِ عَلٰى تَوْحِيدِكَ وَقَطَعَ رَحِمَ

क़त्ए रहेम किया तेरे दीन के एज़ाज़ मे और लिबासे ज़हमतो तकलीफ़ को पहन लिया तेरे दुश्मनो

الْكُفْرِ فِي اِعْزَازِ دِينِكَ وَلَبِسَ ثَوْبَ الْبَلْوٰى فِي مُجَاهَدَةِ

से जंग करने के लिए और तू ने उनके लिए हर पहुँची हुई अज़ीयत और उस गारोह की जानिब से

اَعْدَائِكَ وَاَوْجَبْتَ لَهُ بِكُلِّ اَذًى مَسَّهُ اَوْ كَيْدٍ احَسَّ بِهِ مِنَ

हर महसूस मक्कारी के मुक़ाबले मे जिसने उनके क़त्ल का इरादा किया फ़ज़ीलत लाज़िम क़रार

الفِئَةِ الَّتِي حَاوَلَتْ قَتْلَهُ فَضِيلَةً تَفُوقُ الفَضَائِلَ وَيَمْلِكُ بِهَا

दी है जो तमाम फ़ज़ीलता ं से बुलंद है और इस वजह से वो तेरे कसीरूल इनाम के मालिक हो

الْجَزِيلَ مِنْ نَوَالِكَ وَقَدْ اسَرَّ الْحَسْرَةَ وَاخْفَىٰ الزَّفْرَةَ وَتَجَرَّعَ

गए और उन्होंने हसरत को छुपाया और ग़म को पोशिदा रखा और ग़ुस्से का घूँट पिए लेकिन तेरी

الغُصَّةَ وَلَمْ يَتَخَطَّ مَا مَثَّلَ لَهُ وَحْيُكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلٰى

वही के निशाना से हरगिज़ एक क़दम आगे न बढ़े खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा उन पर और उन के

اهْلِ بَيْتِهِ صَلاةً تَرْضَاهَا لَهُمْ وَبَلِّغْهُمْ مِنَّا تَحِيَّةً كَثِيرَةً

एहलेबैत (अ) पर ऐसा दुरूद जो तू उनके लिए पसंद करता है और हमारी जानिब से उनको ज़्यादा

وَسَلَامًا وَآتِنَا مِنْ لَدُنْكَ فِي مُوَالَاتِهِمْ فَضْلًا وَإِحْسَانًا وَرَحْمَةً

तहय्यत और सलाम पहुँचा दे और हम को अता कर अपनी जानिब से उन की मोहब्बत में फ़ज़्ल

وَغُفْرَانًا إِنَّكَ ذُو الفَضْلِ العَظِيمِ

व एहसान और रहमत और बख़शिश बेशक तू अज़ीम फ़ज़्ल व करम वाला है।

उसके बाद दो दो रकत कर के चार रकत नमाज़ अदा करे और जो सूरह चाहे पढ़े। और नमाज़ के बाद तसबीहे जनाबे फ़ातेमा पढ़े और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ قُلْتَ لِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ: «وَلَوْ

खुदाया तूने अपने नबी मोहम्मद (स) से फ़रमाया है के अगर लोग अपने नफ़्स पर ज़ुलम करें और

اَنَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوا اَنْفُسَهُمْ جَاؤُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

तुम्हारे पास आएं और अल्लह से इसतेग़फ़ार करें और रसूल भी उनके लिए ईस्तेग़फ़ार करे तो वो

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَحِيمًا.» وَلَمْ

खुदा वन्दे आलम को तौबा का क़ुबूल करनेवाला और रहम करने वाला पाएंगे और मै ज़माने रसूले

اَحْضُرْ زَمَانَ رَسُوْلِكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ وَقَدْ زُرْتُهُ

खुदा मे हाज़िर न था उनपर और उनकी आल पर सलाम, खुदाया मैने उनकी ज़ियारत की है रग़बत

رَاغِبًا تَائِبًا مِنْ سَيِّءِ عَمَلِي وَمُسْتَغْفِرًا لَكَ مِنْ ذُنُوبِي وَمُقِرًّا

के साथ और अपने बुरे अमल से तौबा करते हुए और तुझ से अपने गुनाह से इस्तेग़फ़ार करते हुए

لَكَ بِهَا وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِهَا مِنِّي وَمُتَوَجِّهًا اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ نَبِيِّ

और गुनाहों का तेरे सामने इक़्रार करते हुए जबके तू मुझ से ज़्यादा जानने वाला है और तेरी तरफ़

الرَّحْمَةِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ فَاجْعَلْنِي اللّٰهُمَّ بِمُحَمَّدٍ وَاَهْلِ

मुतवज्जे हूँ तेरे नबी के ज़रिए जो नबिए रहमत है तेरा दुरूद हो उनपर और उनकी आल पर खुदाया

بَيْتِهِ عِنْدَكَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ يَا

मुझको अपने नज़दीक आबरूमंद दुनिया व आख़िरत मे क़रार दे दे मोहम्मद और उनके एहलेबैत

مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ بِاَبِي اَنْتَ وَاُمِّي يَا نَبِيَّ اللّٰهِ يَا سَيِّدَ خَلْقِ اللّٰهِ

(अ) के और मुक़र्रबीन मे से, ऐ मोहम्मद ऐ अल्लह के रसूल मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। ऐ अल्लाह

اِنِّی اتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰی اللهِ رَبِّكَ وَرَبِّی لِیَغْفِرَ لِی ذُنُوبِی وَیَتَقَبَّلَ

के नबी, ऐ मख़लूक़े खुदा के सरदार मै आप के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ मुतवज्ञे हूँ जो आप का और

مِنِّی عَمَلِی وَیَقْضِیَ لِی حَوَائِجِی فَكُنْ لِی شَفِیعًا عِنْدَ رَبِّكَ

मेरा परवरदिगार है के मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे अमल को क़ुबूल कर ले और मेरी हाजत को

وَرَبِّی فَنِعْمَ الْمَسْؤُولُ الْمَوْلٰی رَبِّی وَنِعْمَ الشَّفِیعُ انْتَ یَا

पूरा कर दे तो आप मेरे शिफ़ाअत करने वाले हों अपने और मेरे रब के पास क्योंके मेरा परवरदिगार

مُحَمَّدُ عَلَیْكَ وَعَلٰی اهْلِ بَیتِكَ السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ وَاوْجِبْ لِی

बेहतरीन मौला और वो है जिस से सवाल किया गया औ□र बेहतरीन शिफ़ाअत करने वाले हैं, ऐ

مِنْكَ الْمَغْفِرَةَ وَالرَّحْمَةَ وَالرِّزْقَ الوَاسِعَ الطَّیِّبَ النَّافِعَ

मोहम्मद आप पर और आप के एहलेबैत (अ) पर सलाम हो। खुदाया मेरे लिए अपनी तरफ़ से रहमत

كَمَا اوْجَبْتَ لِمَنْ اتٰی نَبِیَّكَ مُحَمَّدًا صَلَوَاتُكَ عَلَیْهِ وَآلِهِ

और मग़िफ़रत और वसी पाकीज़ा और नफ़ाबख़्श रिज़्क़ को वाजिब कर दे जैसा के तूने लाज़िम

وَهُوَ حَیٌّ فَاقَرَّ لَهُ بِذُنُوبِهِ وَاسْتَغْفَرَ لَهُ رَسُولُكَ عَلَیْهِ وَآلِهِ

किया है उसके लिए जो तेरे नबी मोहम्मद के पास आया (तेरा दुरूद हो उन पर और उन की आल

السَّلَامُ فَغَفَرْتَ لَهُ بِرَحْمَتِكَ یَا ارْحَمَ الرَّاحِمِینَ اَللّٰهُمَّ وَقَدْ

पर) जब के वो ज़िन्दा थे पस उसने उन के पास इक़रारे गुनाह किया और तेरे रसूल ने उस के लिए

اَمَّلْتُكَ وَرَجَوْتُكَ وَقُمْتُ بَيْنَ يَدَيْكَ وَرَغِبْتُ اِلَيْكَ عَمَّنْ

इस्तेग़फ़ार किया उन पर और उनकी आल पर सलाम हो तो तूने उस को अपनी रहमत से बख़्श

سِوَاكَ وَقَدْ اَمَّلْتُ جَزِيلَ ثَوَابِكَ وَاِنِّي لَمُقِرٌّ غَيْرُ مُنْكِرٍ

दिया। ऐ सब से बड़े रहेम करने वाले खुदाया मैने तुझसे उम्मीद लगाई है और तुझ से आरज़ू की है

وَتَائِبٌ اِلَيْكَ مِمَّا اقْتَرَفْتُ وَعَائِذٌ بِكَ فِي هٰذَا الْمَقَامِ مِمَّا

और तेरे सामने खड़ा हूँ और सब को छोड़ कर तेरी तरफ़ राग़ब हूँ और मै ने उम्मीद लगाई है तेरे

قَدَّمْتُ مِنَ الاَعْمَالِ الَّتِي تَقَدَّمْتَ اِلَيَّ فِيهَا وَنَهَيْتَنِي عَنْهَا

ज़्यादा सवाब की और मै इक़रार कर रहा हूँ मुनकर नही हूँ और जो गुनाह किया है इस से तेरी तरफ़

وَاَوْعَدْتَ عَلَيْهَا الْعِقَابَ وَاَعُوذُ بِكَرَمِ وَجْهِكَ اَنْ تُقِيمَنِي

त्ाबा कर रहा हूँ और तेरी पनाह चाहता हूँ इस मकाम मे उन गुज़श्ता आमाल से जो मैने किए हैं और

مَقَامَ الْخِزْيِ وَالذُّلِّ يَوْمَ تُهْتَكُ فِيهِ الاَسْتَارُ وَتَبْدُو فِيهِ

तूने मेरी तरफ़ तवज्जो फ़र्मा कर मुझको उन से रोका है और उन पर अज़ाब का वादा किया है और मै

الاَسْرَارُ وَالْفَضَائِحُ وَتَرْعَدُ فِيهِ الْفَرَائِصُ يَوْمَ الْحَسْرَةِ

तेरी ज़ाते करीम की पनाह चाहता हूँ के तूँ मुझको खड़ा करे ज़िल्लत व रूसवाई के मकाम मे जिस दिन

وَالنَّدَامَةِ يَوْمَ الاٰزِفَةِ يَوْمَ التَّغَابُنِ يَوْمَ

तमाम पर्दे उठा दिए जाएगें और तमाम राज़ व नसीहत ज़ाहिर हो जाएंगे और जोड़ो बन्द काँपने लगेंगे

الفَصْلِ يَوْمَ الْجَزَاءِ يَوْمًا كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ اَلْفَ سَنَةٍ

जो हसरत और निदामत का दिन है , बुराईयों के ज़ाहिर होने का दिन है, आमाल के पहचान्ने का दिन

يَوْمَ النَّفْخَةِ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ يَوْمَ

है, हार जीत का दिन, नुक़सान का दिन, फ़ैसले और जज़ा का दिन है, ऐसा दिन है जिसकी मिक़दार

النَّشْرِ يَوْمَ الْعَرْضِ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

पचास हज़ार साल के बराबर है, सूर फुकने का दिन है और लरज़ा पैदा करने वाला दिन है और उस

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيهِ وَاُمِّهِ وَاَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ يَوْمَ

के पीछे दूसरा सूर फुकता है, नामए आमाल के फैलाने का दिन है, परवरदिगार के पास पेश होने का

تَشَقَّقُ الْاَرْضُ وَاَكْنَافُ السَّمَاءِ يَوْمَ تَاْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ

दिन है, जब लोग खुदा के सामने खड़े होंगे, जिस दिन आदमी अपने भाई, माँ बाप, बीवी और औलाद

عَنْ نَفْسِهَا يَوْمَ يُرَدُّونَ اِلَى اللهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ لَا

से भाग रहा होगा, जिस दिन ज़मीन और आसमान के एतेराफ़ शिगाफ़ता हो जाएंगे, जिस रोज़ हर

يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ اِلَّا مَنْ رَحِمَ اللهُ

शख़्स खुद अपने से जदाल व दिफा करता होगा, जिस दिन लोग अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो

اِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ يَوْمَ يُرَدُّونَ اِلَى عَالِمِ الْغَيْبِ

जो अमल किया है वो उन्हें बता दिया जाएगा, जिस दिन दोस्त दोस्त के कुछ काम न आएगा और न

وَالشَّهَادَةِ يَوْمَ يُرَدُّونَ اِلَى اللهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ يَوْمَ يَخْرُجُونَ

कोई मदद की जाएगी सिवाए इस के जिस पर ख़ुदा रहेम कर दे। बेशक, वो ग़ालिब और रहम करने

مِنَ الاجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلَى نُصُبٍ يُوفِضُونَ وَكَاَنَّهُمْ

वाला है जिस दिन लोग वापस किए जाएंगे पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले खुदा की तरफ़ जिस

جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ مُهْطِعِينَ اِلَى الدَّاعِى اِلَى اللهِ يَوْمَ الوَاقِعَةِ

दिन लोग लौटए जाएंगे अल्लाह की तरफ़ जो उनका वाक़ई मौला व हाकिम है जिस दिन लोग जिस्मो

يَوْمَ تُرَجُّ الارْضُ رَجًّا يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ وَتَكُونُ

के साथ क़ब्रों से तेज़ी से निकलेंगे गोया के वो मरकज़ की तरफ़ भागे जा रहे होंगे और गोया वो ठिड्डी

الْجِبَالُ كَالعِهْنِ وَلَا يَسْاَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا يَوْمَ الشَّاهِدِ

की तरह मुन्तशिर होगें और जलदी जलदी खुदा की जानिब दावत देनेवाले की तरफ़ जाएंगे, जिस

وَالْمَشْهُودِ يَوْمَ تَكُونُ الْمَلَائِكَةُ صَفًّا صَفًّا اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ

दिन ज़मीन ज़लज़ले मे होगी जिस दिन आसमान तांबे की तरह पिघल जाएगा और पहाड़ मिस्ले रोटी

مَوْقِفِى فِي ذٰلِكَ اليَوْمِ بِمَوْقِفِى فِي هٰذَا اليَوْمِ وَلَا تُخْزِنِى فِي

के होगें और दोस्त को दोस्त न पूछेगा, शहिद और मशहूद का दिन जिस दिन मलाएका सफ़ दर सफ़

ذٰلِكَ الْمَوْقِفِ بِمَا جَنَيْتُ عَلَى نَفْسِى وَاجْعَلْ يَارَبِّ فِي ذٰلِكَ

खड़े होंगे, खुदाया उस दिन के सख़्त मोक़फ़ मे मुझ पर रहेम करना मेरे उस दिन के मोक़फ़ के बदले

الیَوْمِ مَعَ اوْلِیَائِكَ مُنْطَلَقِی وَفِی زُمْرَةِ مُحَمَّدٍ وَاهْلِ بَیْتِهِ

मे और मुझको उस मोक़फ़ मे रूसवा न करना उस चीज़ की वजेह से जो मैने अपने लिए ज़्यादती

عَلَیْهِمُ اَلسَّلَامُ مَحْشَرِی وَاجْعَلْ حَوْضَهُ مَوْرِدِی وَفِی الغُرِّ

और गुनाह किया है और क़रार दे ऐ परवरदिगार उस रोज़ अपने दोस्तों के साथ मेरे मकाम को और

الكِرَامِ مَصْدَرِی وَاعْطِنِی كِتَابِی بِیَمِینِی حَتّٰی افُوزَ

मेरे महशर को मोहम्मद और उनके अहलेबैत के ज़ुमरे मे, और मेरे वरूद की जगह उसके हौज़ को

بِحَسَنَاتِی وَتُبَیِّضَ بِهِ وَجْهِی وَتُیَسِّرَ بِهِ حِسَابِی وَتُرَجِّحَ بِهِ

क़रार दे और मेरा मकाम इज़्ज़त व करामत मे क़रार दे और मेरा नामए आमाल दाहिने हाथ मे अता

مِیزَانِی وَامْضِیَ مَعَ الفَائِزِینَ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِینَ اِلٰی

कर ताके मै अपनी नेकीयों के ज़रिए छुटकारा हासिल करूँ और कामयाब हूँ और मेरा चेहरा नूरानी

رِضْوَانِكَ وَجِنَانِكَ اِلٰهَ العَالَمِینَ اَللّٰهُمَّ اِنِّی اعُوذُ بِكَ مِنْ

हो और मेरा हिसाब आसान हो और मेरा मिज़ान वज़नी हो और मै तेरे नेक बन्दों मे से कामयाब

اَنْ تَفْضَحَنِی فِی ذٰلِكَ الیَوْمِ بَیْنَ یَدَی الخَلَائِقِ بِجَرِیرَتِی او

लोगों के साथ तेरी मर्ज़ा की तरफ़ जाऊं और तेरी जन्नत की तरफ़ ऐ आलमीन के परवरदिगार मै तेरी

اَنْ الْقَیٰ الْخِزْیَ وَالنَّدَامَةَ بِخَطِیئَتِی اوْ اَنْ تُظْهِرَ فِیهِ سَیِّئَاتِی

पनाह चाहता हूँ उस से के तू मुझको उस रोज़ मख़लूक़ के सामने मेरे गुनाह की वजह से रूस्वा करे

عَلٰى حَسَنَاتِي اَوْ اَنْ تُنَوِّهَ بَيْنَ الْخَلَائِقِ بِاسْمِي يَا كَرِيمُ يَا

या मै रूस्वाई और शर्मिंगी का सामना करूँ अपने गुनाह की वजह से या मेरे गुनाह को मेरी नेकी के

كَرِيمُ الْعَفْوَ الْعَفْوَ السِّتْرَ السِّتْرَ اَللّٰهُمَّ وَاعُوذُبِكَ مِنْ اَنْ

मुक़ाबले मे ग़लबा हासिल हो या मख़लूक़ के दरमियान ज़लील हो जाऊँ, ऐ करम करने वाले, ऐ

يَكُونَ فِي ذٰلِكَ الْيَوْمِ فِي مَوَاقِفِ الْاَشْرَارِ مَوْقِفِي اَوْ فِي مَقَامِ

करम करने वाले तू माफ़ कर दे, माफ़ कर दे तू छुपा ले छुपा ले, खुदाया मै तेरी पनाह चाहता हूँ इस

الْاَشْقِيَاءِ مَقَامِي وَاِذَا مَيَّزْتَ بَيْنَ خَلْقِكَ فَسُقْتَ كُلًّا

बात से के उस राज़ बुरे लोगों के मकाम मे मेरी जगह हो या बदबख़्त लोगों की जगह मे मेरी जग्ह हो

بِاَعْمَالِهِمْ زُمَرًا اِلٰى مَنَازِلِهِمْ فَسُقْنِي بِرَحْمَتِكَ مَعَ عِبَادِكَ

और जब तू उस रोज़ अपनी मख़लूक़ के अच्छे बूरे के दरमियान जुदाई करे और हर एक को उनके

الصَّالِحِينَ وَفِي زُمْرَةِ اَوْلِيَائِكَ الْمُتَّقِينَ اِلٰى جَنَّاتِكَ يَا رَبَّ

आमाल के एतेबार से उनके ज़ुमरे मे ले जाए तू मुझको अपनी रहमत से अपने सालेह बन्दों मे और

الْعَالَمِينَ

अपने मुत्तक़ी दोस्तों के जुमरे मे ले जाना अपनी जन्नत की तरफ़ ऐ आलमीन के परवरदिगार।

उसके बाद हज़रत को विदा करे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْبَشِيرُ النَّذِيرُ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा सलाम हो आप पर ऐ बशारत देने वाले डराने वाले, सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السِّرَاجُ الْمُنِيرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السَّفِيرُ

आप पर ऐ रोशन चिराग़, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह और उसके दरमियान सफ़ीर, मै गवाही

بَيْنَ اللهِ وَبَيْنَ خَلْقِهِ اَشْهَدُ يَا رَسُولَ اللهِ اَنَّكَ كُنْتَ نُورًا فِي

देता हूँ अल्लाह के रसूल (स) पर के आप नूर थे बुर्ज़ुग सुलबों मे और पाकीज़ा अरहाम मे आप तक

الاَصْلَابِ الشَّامِخَةِ وَالاَرْحَامِ الْمُطَهَّرَةِ لَمْ تُنَجِّسْكَ الْجَاهِلِيَّةُ

जाहिलयत अपनी नजासतों के हमराह नही आई और न जाहिलयत के लिबास ने आपके जिस्म को

بِاَنْجَاسِهَا وَلَمْ تُلْبِسْكَ مِنْ مُدْلَهِمَّاتِ ثِيَابِهَا وَاَشْهَدُ يَا رَسُولَ اللهِ

मस किया और मै गवाही देता हूँ ऐ रसूले खुदा के मै आप पर ईमान लाया हूँ और आप के अहलेबैत

اَنِّي مُؤْمِنٌ بِكَ وَبِالاَئِمَّةِ مِنْ اَهْلِ بَيْتِكَ مُوقِنٌ بِجَمِيعِ مَا اَتَيْتَ بِهِ

मे से हर एक पर यक़ीन रखने वाला हूँ और जितनी चीज़ें आप लाए हैं उन से राज़ी हूँ और ईमान

رَاضٍ مُؤْمِنٌ وَاَشْهَدُ اَنَّ الاَئِمَّةَ مِنْ اَهْلِ بَيْتِكَ اَعْلَامُ الْهُدَىٰ

रखता हूँ और मैं गवाही देता हूँ के आप के अहलेबैत मे से आइम्मए हिदायत की निशानियाँ और

وَالْعُرْوَةُ الْوُثْقَىٰ وَالْحُجَّةُ عَلَىٰ اَهْلِ الدُّنْيَا اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ

खुदा के मोहकम रिश्ते और दुनिया वालों पर हुज्जत हैं। खुदाया उसको अपने रसूल की ज़ियारत का

مِنْ زِيَارَةِ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ السَّلَامُ وَإِنْ تَوَفَّيْتَنِي فَإِنِّي اشْهَدُ فِي

आख़री दौर न क़रार देना और अगर तू मुझको मौत देदे तो मै गवाही देता हूँ अपनी मौत के बाद भी

مَمَاتِي عَلٰى مَا اشْهَدُ عَلَيْهِ فِي حَيَاتِي انَّكَ انْتَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا انْتَ

उन चीजों की जिन की गवाही दी है अपनी ज़िंदगी मे के तू खुदा है तेरे अलावा कोई खुदा नही है तू एक

وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ وَانَّ الاَئِمَّةَ مِنْ

है, तेरा कोई शरीक नही है और मोहम्मद तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं और उनके अहलेबैत मे आईम्म

اهْلِ بَيْتِهِ اوْلِيَاؤُكَ وَانْصَارُكَ وَحُجَجُكَ عَلٰى خَلْقِكَ وَخُلَفَاؤُكَ فِي

तेरे वली, नासिर और तेरी मख़लूक़ मे तेरी हुज्जत और तेरे बन्दों मे तेरे ख़लीफ़ा और तेरे शहरों मे तेरी

عِبَادِكَ وَاعْلَامُكَ فِي بِلَادِكَ وَخُزَّانُ عِلْمِكَ وَحَفَظَةُ سِرِّكَ

निशानियाँ और तेरे इल्म के ख़ज़ीनेदार और तेरे राज़दाँ और तेरे वही के तरजुमान हैं। खुदाया दुरूद

وَتَرَاجِمَةُ وَحْيِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَلِّغْ رُوحَ نَبِيِّكَ

नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और पहुँचा दे मेरे तरफ़ से तहय्यत और सलाम अपने नबी

مُحَمَّدٍ وَآلِهِ فِي سَاعَتِي هٰذِهِ وَفِي كُلِّ سَاعَةٍ تَحِيَّةً مِنِّي وَسَلَامًا

मोहम्मद और उनकी आल की रूह पर उस वक़्त और हर वक़्त और सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह

وَاَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ لَا جَعَلَهُ اللهُ آخِرَ

के रसूल और अल्लाह की रहमत और बरकत हो आप पर। अल्लाह इस सलाम को आप पर आख़री

تَسْلِيمِي عَلَيْكَ

सलाम न क़रार दे दे।

शेख़ ने मिस्बाह में और सय्यद ने जमालुल उस्बूअ में जुमा के दिन के आमाल में फ़रमाया है के रोज़े जुमा रसूले अक्रम (स) और आइम्मा (अ.स.) की ज़ियारत मुस्तहब है। जनाबे इमामे सादिक़ (अ.स.) की रिवायत भी है के जो व्यक्ति पैग़ंबर की क़ब्र या अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की क़ब्र या फ़ातेमा (अ.स.) की क़ब्र व हसनो हुसैन (अ.स.) की क़ब्र और आइम्मा (अ.स.) की क़ब्रों की ज़ियारत करना चाहे और अपने शहेर में हो उसे चाहिए के जुमे के दिन गुस्ल करे पाक साफ़ लिबास पहन कर सहरा में निकल जाए या छत के उपर चला जाए और चार रकत नमाज़ जिस सूरह के साथ चाहे अदा करे और सलाम के बाद क़िबले की तरफ़ हो कर यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। सलाम हो आप पर ऐ नबी

النَّبِيُّ الْمُرْسَلُ وَالْوَصِيُّ الْمُرْتَضٰى وَالسَّيِّدَةُ الْكُبْرٰى وَالسَّيِّدَةُ

मुरसल और वसीए मुरतुज़ा और सय्यदए कुबरा, सय्यदा ज़हरा (स.अ.) और दोनो मुन्तिख़ब

الزَّهْرَاءُ وَالسِّبْطَانِ الْمُنْتَجَبَانِ وَالاَوْلَادُ الاعْلَامُ وَالْاُمَنَاءُ

नवासों (अ) पर और उन की औलाद पर जो हक़ की निशानियाँ हैं और अमीन और मुनताख़िबे

الْمُنْتَجَبُونَ جِئْتُ انْقِطَاعًا اِلَيْكُمْ وَاِلٰى آبَائِكُمْ وَوَلَدِكُمُ الْخَلَفِ

खुदा हैं, मै सबसे कट कर आपकी जानिब आया हूँ और आप के आबा की तरफ़ और आप के

عَلٰى بَرَكَةِ الْحَقِّ فَقَلْبِى لَكُمْ مُسَلِّمٌ وَنُصْرَتِى لَكُمْ مُعَدَّةٌ حَتّٰى يَحْكُمَ

फ़रज़ंदो की तरफ़ खुदा की बरकत हासिल करने के लिए तो मेरा दिल आप के साथ हो, आप के

اللّٰهُ بِدِيْنِهٖ فَمَعَكُمْ مَعَكُمْ لَا مَعَ عَدُوِّكُمْ اِنِّى لَمِنَ الْقَائِلِيْنَ

दुश्मनो के साथ नही, आप की फ़ज़ीलत का ब्यान करनेवाला आपकी रजअत का इक़रार करने

بِفَضْلِكُمْ مُقِرٌّ بِرَجْعَتِكُمْ لَا اُنْكِرُ لِلّٰهِ قُدْرَةً وَلَا اَزْعُمُ اِلَّا مَا شَاءَ

वाला हूँ मै अल्लाह की क़ुदरत का मुनकीर नही हूँ और नही गुमान करता हूँ मगर उसी का जो

اللّٰهُ سُبْحَانَ اللّٰهِ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ يُسَبِّحُ اللّٰهَ بِاَسْمَائِهٖ جَمِيْعُ

मसियते खुदा है बादशाहत वाला है उसकी तमाम मख़लूक़ उस के नाम के साथ उसकी तसबीह

خَلْقِهٖ وَالسَّلَامُ عَلٰى اَرْوَاحِكُمْ وَاَجْسَادِكُمْ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

करती है और सलाम हो आप की रूहों और आप के जिस्मों पर और सलाम हो आप सब पर

وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

लेखक: रिवायात में यह बात वारिद हुई है के जहाँ से भी रसूले अक्रम (स) को सलाम किया जाए वह सलाम आप तक पहुँच जाता है। बलके एक रिवायत में है के परवरदिगारे आलम ने एक मलक को मोअय्यन कर दिया है के जब कोई मोमिन सल्लल्लहो अला मोहम्मदिन व सल्लम कहे तो मलक फ़ौरन कहे व अलैक यानी यही रहमत तुम्हारे वास्ते भी है। और उसके बाद पैग़ंबर तक यह ख़बर पहुँचाए के फ़लां व्यक्ति ने आपको सलाम कहा है तो हज़रत फ़रमाते हैं व अलैहिस सलामो। और मोअतबर रिवायात में है के आं हज़रत

(स) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति मेरे मरने के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे वह ऐसा ही है जैसे ज़िन्दगी में मेरे पास आया हो लेहाज़ा अगर यहाँ तक आने की इस्तेताअत नहीं है तो जहाँ भी रहो मुझे सलाम करो। सलाम मुझ तक पहुँच जाएगा।

इस मज़मून की बेशुमार रिवायतें हैं और भाग एक में हफ़ते के दिन के आमाल में ज़ियारते रसूले खुदा (स) सनीचर के दिन नक़्ल की जा चुकी है। अगर चाहें तो उसे भी देख सकते हैं और उसके फ़ैज़ को भी हासिल कर सकते हैं। मुनासिब है के आं हज़रत (स) पर इस प्रकार सलवात भेजी जाए जिस प्रकार अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने जुमा के खुत्बे में इशारा फ़रमाया है। जिसका ज़िक्र रौज़ए काफ़ी में है।

«اِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا

बेशक, अल्लाह और उसके मलाएका नबी पर सलवात भेजते हैं, ऐ ईमान वालों तुम भी दुरूद व

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا.» اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ

सलाम भेजो नबी पर जो सलाम का हक़ है खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَتَحَنَّنْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ

और बरकत मोहम्मद व आले मोहम्मद को और महेरबानी फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

وَآلِ مُحَمَّدٍ كَافْضَلَ مَا صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ وَتَرَحَّمْتَ وَتَحَنَّنْتَ

सलाम भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर उस से बेहतर जो तू ने रहमत नाज़ल की है, बरकत दी है,

وَسَلَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيمَ وَآلِ اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اَللّٰهُمَّ

रहेम किया हे और महेरबानी की है और सलाम भेजा है इब्राहीम (अ) और आले इब्राहीम पर बेशक

اعْطِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالشَّرَفَ وَالْفَضِيلَةَ وَالْمَنْزِلَةَ الْكَرِيمَةَ

तू सतूदा सिफ़ात और बुर्ज़ुग है। खुदाया मोहम्मद को वसीला, शरफ़ और फ़ज़ीलत और करीम

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ مُحَمَّدًا وَآلَ مُحَمَّدٍ اعْظَمَ الْخَلَائِقِ كُلِّهِمْ شَرَفًا يَوْمَ

मनिज़लत अता फ़र्मा, खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद को तमाम मख़लूक़ मे सबसे अज़ीम शरफ़

الْقِيَامَةِ وَاقْرَبَهُمْ مِنْكَ مَقْعَدًا وَاوْجَهَهُمْ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

के एतेबार से क़रार दे क़यामत के राज़ और उन का मकाम अपने से सब से ज़्यादा क़रीब क़रार दे

جَاهًا وَافْضَلَهُمْ عِنْدَكَ مَنْزِلَةً وَنَصِيبًا اَللّٰهُمَّ اعْطِ مُحَمَّدًا

और सब से ज़्यादा आबरू मंद क़रार दे, राज़े क़यामत और सब से अफ़ज़ल मनिज़ल व मरतबेवाला

اشْرَفَ الْمَقَامِ وَحِبَاءَ السَّلَامِ وَشَفَاعَةَ الْاِسْلَامِ اَللّٰهُمَّ

क़रार दे अपने नज़दीक। खुदाया तू मोहम्मद को अता कर बेहतरीन मकाम और सलाम का तोहफ़ा

وَالْحِقْنَا بِهٖ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا نَاكِثِينَ وَلَا نَادِمِينَ وَلَا مُبَدِّلِينَ اِلٰهَ

और शफ़ाअते इस्लाम खुदाया हम को उनसे मिला दे इस तरह के न रूसवा व ज़लील होउँ न अहेद

الْحَقِّ آمِينَ

के तोड़ने वाले और न शमाAदा और न बदले हुए। ऐ माबूदे बरहक़ इस दुआ को क़ुबूल कर ले।

इसके बाद ज़ियारात के अंत में एक सलवात का ज़िक्र और उसे भी पढ़ा जा सकता है।

आइम्मए बक़ी की ज़ियारत

यानी हज़रत इमामे हसने मुजतबा, इमामे ज़ैनुल आबेदीन, इमामे मोहम्मदे बाक़र और इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.)।

जब आप इन बुज़ुर्गों की ज़ियारत करना चाहें तो आप उन आदाब को बजा लाएं जो ज़ियारात के ज़ैल में नक़्ल किए जा चुके हैं। यानी गुस्ल करें। तहारत करें, पाको पाकीज़ा कपड़े पहनें खुश्बू इस्तेमाल करें, दरे हरम पर जाकर आज्ञा लें और प्रवेश की आज्ञा के बाद यूँ कहें:

يَا مَوَالِيَّ يَا اَبْنَاءَ رَسُوْلِ اللهِ عَبْدُكُمْ وَابْنُ اَمَتِكُمُ الذَّلِيلُ بَيْنَ

ऐ मेरे मौला ऐ फ़रज़ंदाने रसूले खुदा मै आप का ग़ुलाम और आपकी ककनीज़ का फ़रज़ंद हूँ आप

اَيْدِيكُمْ وَالْمُضْعِفُ فِي عُلُوِّ قَدْرِكُمْ وَالْمُعْتَرِفُ بِحَقِّكُمْ جَاءَكُمْ

के सामने ज़लील हूँ और आप की बुलंद क़द्र के सामने हक़ीर हूँ और आप के हक़ का मोतरिफ़ हूँ

مُسْتَجِيرًا بِكُمْ قَاصِدًا اِلٰى حَرَمِكُمْ مُتَقَرِّبًا اِلٰى مَقَامِكُمْ

और आप के पास आया हूँ आप की पनाह चाहता हूँ, आप के हरम का क़सद किए हुए और आप

مُتَوَسِّلًا اِلَى اللهِ تَعَالٰى بِكُمْ اَاَدْخُلُ يَا مَوَالِيَّ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَوْلِيَاءَ

के मकाम से क़ुर्ब तलब करते हुए अल्लह की तरफ़ वसीला बनाते हुए आप को क्या मै दाख़िल हो

اللهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا مَلَائِكَةَ اللهِ الْمُحْدِقِينَ بِهٰذَا الْحَرَمِ الْمُقِيمِينَ

जाऊँ, ऐ मेरे मौला क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ अल्लाह के औलिया क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ अल्लाह

بِهٰذَا الْمَشْهَدِ؟

के मलाएका जो इस हरम के गिर्द हैं जो इस आसताने मुबारक के पास मुक़ीम हैं।

इसके बाद इन्तेहाई खुज़ू व खुशू के साथ दाख़िल हो और दाहने पैर को आगे बढ़ाए और कहे:

اللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً

अल्लाह बड़ा है और अल्लाह के लिए ज़्यादा हम्द है और अल्लाह की तसबीह है सूबह व शाम और

وَاصِيلًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الْفَرْدِ الصَّمَدِ الْمَاجِدِ الاَحَدِ

हम्द है उस खुदा के लिए जो एक है, बे नियाज़ है, इज़्ज़त वाला है, अकेला है, फ़ज़्ल व एहसान

الْمُتَفَضِّلِ الْمَنَّانِ الْمُتَطَوِّلِ الْحَنَّانِ الَّذِی مَنَّ بِطَوْلِهِ

वाला है, नेमत वाला और महेरबान है जिस ने अपनी नेमत से एहसान किया है और अपने

وَسَهَّلَ زِيَارَةَ سَادَاتِي بِاِحْسَانِهِ وَلَمْ يَجْعَلْنِی عَنْ زِيَارَتِهِمْ

एहसान से मेरे मौलाओं की ज़ियारत को आसान किया है और कोई रूकावट नही क़रार दी उन

مَمْنُوعًا بَلْ تَطَوَّلَ وَمَنَحَ

की ज़ियारतों मे बल्कि एहसान व अता किया है।

उसके बाद क़ब्रे मुतह्हर के पास जाकर पुश्त ब क़िबला क़ब्र का रूख़ कर के यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَئِمَّةَ الْهُدٰی اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ التَّقْوٰی

सलाम हो आप पर ऐ हिदायत के इमामो। सलाम हो आप पर ऐ तक़वे वालों। सलाम हो आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَيُّهَا الْحُجَجُ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا اَلسَّلَامُ

ऐ दुनिया वालों पर हुज्जते खुदा, सलाम हो आप पर ऐ मख़लूक़ के निगेहबान अदल के साथ सलाम

عَلَيْكُمْ اَيُّهَا الْقُوَّامُ فِي الْبَرِيَّةِ بِالْقِسْطِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

हो आप पर ऐ अहले सफ़ा व इख़लास, सलाम हो आप पर ऐ आले रसूल अल्लाह, सलाम हो आप

اَهْلَ الصَّفْوَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ آلَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

पर ऐ राज़े खुदा वालों, मैं गवाही देता हूँ के आप ने तबलीग़े दीन की नसीहत की और सब्र किया

عَلَيْكُمْ اَهْلَ النَّجْوٰى اَشْهَدُ اَنَّكُمْ قَدْ بَلَّغْتُمْ وَنَصَحْتُمْ

राहे खुदा मे और आपको झुटलाया गया और आप के साथ बुरा सुलूक किया गया तो आप ने बख़्श

وَصَبَرْتُمْ فِي ذَاتِ اللّٰهِ وَ كُذِّبْتُمْ وَاُسِيءَ اِلَيْكُمْ فَغَفَرْتُمْ

दिया और मै गवाही देता हूँ के आप अईम्मए हिदायत और राहनुमायाने ख़ल्क हैं और आप की

وَاَشْهَدُ اَنَّكُمُ الاَئِمَّةُ الرَّاشِدُونَ الْمُهْتَدُونَ وَاَنَّ طَاعَتَكُمْ

इताअत वाजिब और आप का क़ौल सच्चा है, आप दीन के सुतून और ज़मीन के रूक्र हैं आप लोगों

مَفْرُوضَةٌ وَاَنَّ قَوْلَكُمُ الصِّدْقُ وَاَنَّكُمْ دَعَوْتُمْ فَلَمْ تُجَابُوا

को बराबर खुदा की इनायत ने पाक व पाकीज़ा सुल्ब व रहेम से दूसरी पास व पाकीज़ा सुल्ब व रहेम

وَاَمَرْتُمْ فَلَمْ تُطَاعُوا وَاَنَّكُمْ دَعَائِمُ الدِّيْنِ وَاَرْكَانُ

से मुन्ताक़िल किया आपको जोहला की जाहिलियत ने गन्दा नही किया और ख़्वाहीशाते नफ़सानी

الارْضِ لَمْ تَزَالُوا بِعَيْنِ اللهِ يَنْسَخُكُمْ مِنْ اصْلَابِ كُلِّ

के फ़ितने आप मे शरीक नही हो सके आप भी पाक और मनशाए वजूद भी पाक अल्लाह ने आप

مُطَّهَرٍ وَيَنْقُلُكُمْ مِنْ ارْحَامِ الْمُطَهَّرَاتِ لَمْ تُدَنِّسْكُمْ

के ज़रिए हम पर एहसान किया है आप को ऐसे घरों मे क़रार दिया है जो खुदा के हुकूम से बुलंद हैं

الْجَاهِلِيَّةُ الْجَهْلَاءُ وَلَمْ تَشْرَكْ فِيكُمْ فِتَنُ الاهْوَاءِ طِبْتُمْ

और जिन मे खुदा का तज़केरा होता रहता है और हमारी सलवात को आप पर रहमत क़रार दिया

وَطَابَ مَنْبَتُكُمْ مَنَّ بِكُمْ عَلَيْنَا دَيَّانُ الدِّينِ فَجَعَلَكُمْ فِي

और कफ़्फ़ारा हमारे गुनाहों का बनाया जब अल्लाह ने आप को हमारे लिए मुनतिख़ब किया और

بُيُوتٍ اذِنَ اللهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَجَعَلَ صَلَاتَنَا

हमारी ख़िलक़त को पाकीज़ा बनाया आपके ज़रिए के हम पर एहसान किया है के आप की मोहब्बत

عَلَيْكُمْ رَحْمَةً لَنَا وَ كَفَّارَةً لِذُنُوبِنَا اِذِ اخْتَارَكُمُ اللهُ لَنَا

का और हम खुदा के नज़दीक आप के इलम से मौसूम हैं अपनी तसदीक़ के मोतरिफ़ हैं आप के

وَطَيَّبَ خَلْقَنَا بِمَا مَنَّ عَلَيْنَا مِنْ وِلَايَتِكُمْ وَ كُنَّا عِنْدَهُ

लिए और ये उस शख़्स का मकाम है जिस ने इसराफ़ किया ग़लती की और मिसकीन है और अपने

مُسَمِّينَ بِعِلْمِكُمْ مُعْتَرِفِينَ بِتَصْدِيقِنَا اِيَّاكُمْ وَهٰذَا مَقَامُ

गुनाह का इक़रार किया है और अपने मकाम पर उम्मीद लगाए है नजात की के खुदा उसको आप के

مَنْ اسْرَفَ وَاخْطَا وَاسْتَكَانَ وَاقَرَّ بِمَا جَنَىٰ وَرَجَا بِمَقَامِهِ

वासते से हलाकत मे पड़ने से नजात अता करे तो आप अब मेरे लिए शिफ़ाअत करने वाले हो जाएं

الْخَلَاصَ وَانْ يَسْتَنْقِذَهُ بِكُمْ مُسْتَنْقِذُ الْهَلْكَىٰ مِنَ الرَّدَىٰ

के मै आप की तरफ़ आया हूँ जब के दुनिया के लोग आप से दूर हैं और उन्होंने खुदा की आयतों

فَكُونُوا لِي شُفَعَاءَ فَقَدْ وَفَدْتُ اِلَيْكُمْ اِذْ رَغِبَ عَنْكُمْ اهْلُ

का इस्तेहज़ा किया है और उन से सरकशी की है। ऐ वो ज़ात जो क़ाएम है और भूलता नही है और

الدُّنْيَا وَاتَّخَذُوا آيَاتِ اللهِ هُزُوًا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا يَا مَنْ هُوَ

दाएम है जो ल नही करता है और हर शैए को घेरे हुए है तेरा एहसान है के तू ने मुझको तौफ़िक़ दी

قَائِمٌ لَا يَسْهُو وَدَائِمٌ لَا يَلْهُو وَمُحِيطٌ بِكُلِّ شَيْءٍ لَكَ الْمَنُّ

है और तूने मुझको पहुँचवाया है उसको जिस पर तू ने मुझको क़ाएम किया है जब के उस से तेरे बन्दे

بِمَا وَفَّقْتَنِي وَعَرَّفْتَنِي بِمَا اقَمْتَنِي عَلَيْهِ اِذْ صَدَّ عَنْهُ عِبَادُكَ

रूके रहे और उसकी मग़्फ़िरत से जाहिल रहे और उसके हक़ को हलका समझा और उसके ग़ैर की

وَجَهِلُوا مَعْرِفَتَهُ وَاسْتَخَفُّوا بِحَقِّهِ وَمَالُوا اِلَىٰ سِوَاهُ فَكَانَتِ

तरफ़ माएल हो गए तो मुझ पर तेरा एहसान है उन अक़वाम के साथ जिनको तू ने मख़सूस किया है

الْمِنَّةُ مِنْكَ عَلَيَّ مَعَ اقْوَامٍ خَصَصْتَهُمْ بِمَا خَصَصْتَنِي بِهِ

उस नेमत से जिस से मुझको मख़सूस किया है पस तेरे ही लिए हम्द है जब मै तेरे नज़दीक अपने उस

فَلَكَ الْحَمْدُ اِذْ كُنْتُ عِنْدَكَ فِي مَقَامِي هٰذَا مَذْكُورًا مَكْتُوبًا

मकाम मे मज़कूर और लिखा हुआ था तू मुझको उससे महरूम न करना जिसकी मैने उम्मीद लगाई

فَلَا تَحْرِمْنِي مَا رَجَوْتُ وَلَا تُخَيِّبْنِي فِي مَا دَعَوْتُ بِحُرْمَةِ مُحَمَّدٍ

है और मुझको नाउममद न करना इसमे जिस की मैने दुआ की है मोहम्मद और उन की आले पाक

وَآلِهِ الطَّاهِرِينَ وَصَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

की हुरमत के वास्ते से और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर।

इसके बाद जो चाहें दुआ करें।

शेख़ तूसी ने तहरीर फ़रमाया है के आठ रकत नमाज़े ज़ियारत पढ़े यानी हर इमाम के लिए दो रकत। इसके बाद शेख़ तूसी और सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के जब आइम्मए बक़ी (अ.स.) को विदा करना चाहें तो यह कहें:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَئِمَّةَ الْهُدٰى وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ

सलाम हो आप पर हिदायत के इमामों और अल्लाह की रहमत व बरकात हो मै आप को अल्लाह

وَاَقْرَاُ عَلَيْكُمُ السَّلَامَ آمَنَّا بِاللهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَبِمَا جِئْتُمْ بِهِ

को सौंपता हूँ और आप पर सलाम भेजता हूँ हम अल्लाह और उस के रसूल और जो वा लाए हैं

وَدَلَلْتُمْ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ

उन सब पर ईमान लाए और जिन की आपने हिदायत की, खुदाया हम को गवाहों मे लिख ले।

उसके बाद दुआ करें और खुदा से सवाल करें के दोबारा फिर ज़ियारत से शरफ़याब हों और अल्लामा मजलिसी ने बिहार में एक मुफ़स्सल ज़ियारत बाज़ क़दीम नुस्ख़ों से नक़्ल की है मगर क्योंके उनके और दूसरे हज़रात के बयान के अनुसार ज़ियारते जामेआ सबसे बेहतर है जिसका ज़िक्र इसके बाद किया जाएगा लेहाज़ा हमने इसी ज़ियारत को काफ़ी क़रार दिया है।

इसके अलावा पहले वर्ग में हफ़्ते के दिनों में ज़ियारते मासूमीन (अ.स.) के ज़ैल में एक ज़ियारत इमाम हसन (अ.स.) की और नक़्ल हो चुकी है और एक ज़ियारत बाक़ी तीन इमामों की भी नक़्ल हो चुकी है। उसे भी पढ़ना मुनासिब होगा। वाज़ेह रहे के आइम्मए बक़ी (अ.स.) के अलावा दीगर मासूमीन (अ.स.) की ज़ियारत के ज़ैल में हम एक सलवात भी नक़्ल करेंगे उन बुज़ुर्गों के बारे में भी काफ़ी क़रार दे रहे हैं जो इस बाब बाबे ज़ियारत के अंत में ज़िक्र की जाएगी और उसी सलवात के ज़रिए इंसान अपने नेकियों के पल्ले को भारी बना सकता है।

हक़ीर के दिल में मशाहिदे मुशरफ़ा का बेपनाह शौक़ मुझे आमादा कर रहा है के मैं मद्दाए आले अहमद फ़ाज़ल आले अहमद जनाब शेख़ अज़री रिज़वानुल्लाहे अलैह के क़सीदे हाईया को भी नक़्ल कर दूँ। जिसको ख़ातेमुल मुजतहेदीन साहेबे जवाहेरूल कलाम शेख़ मोहम्मद हसन (र) ने नक़्ल किया है और उनकी तमन्ना थी के इस क़सीदे को उनके नामे आमाल में लिख दिया जाए। और जवाहेर को अज़री के नामे आमाल में लिख दिया जाए। हम इस मकाम पर सिर्फ़ चंद अशआर नक़्ल कर रहे हैं जो इस जगह के लिए मुनासिब है।

إِنَّ تِلْكَ الْقُلُوبَ اقْلَقَهَا الْوَجْدُ
उनके ग़म ने दिल को जख़्मी कर दिया,

وَادْمٰى تِلْكَ الْعُيُونَ بُكَاهَا
अश्क ने आँखो को खून से भर दिया,

كَانَ انْكَى الْخُطُوبِ لَمْ يُبْكِ مِنِّى
हादसे हम को रूला सकते नही,

مُقْلَةً لٰكِنِ الْهَوٰى ابْكَاهَا
फिर भी क़ाबू दिल पे पा सकते नही,

كُلَّ يَوْمٍ لِلْحَادِثَاتِ عَوَادٍ
आते हैं हर रोज़ ऐसे हादसात,

لَيْسَ يَقْوٰى رَضْوٰى عَلٰى مُلْتَقَاهَا
सामना जिन का नही आसान बात,

كَيْفَ يُرْجَى الْخَلَاصُ مِنْهُنَّ اِلَّا — بِذِمَامٍ مِنْ سَيِّدِ الرُّسْلِ طٰهٰ

हादेसों से बचना मुम्कीन ही नही , — महेरबान गर हूँ न ख़त्मुल मुरसलीन,

مَعْقِلُ الْخَائِفِينَ مِنْ كُلِّ خَوْفٍ — اَوْفَرُ الْعُرْبِ ذِمَّةً اَوْفَاهَا

ख़ाफ़ मे देते हैं वो सब को पनाह, — सब की ख़ातिर है वही एक ख़ैर ख्वाह,

صَدْرُ الْعِلْمِ لَيْسَ اِلَّا لَدَيْهِ — خَبَرُ الْكَائِنَاتِ مِنْ مُبْتَدَاهَا

इल्म का मसदर उन्हीं की ज़ात है, — उन की हसती मसदरे ख़ैरात है,

فَاضَ لِلْخَلْقِ مِنْهُ عِلْمٌ وَحِلْمٌ — اخَذَتْ مِنْهُمَا الْعُقُولُ نُهَاهَا

हिल्म व इल्म खुल्क उनके दम से है, — अक़ल की दानिश इसी इक्राम से है,

نَوَّهَتْ بِاسْمِهِ السَّمَاوَاتُ وَالارْضُ — كَمَا نَوَّهَتْ بِصُبْحٍ ذُكَاهَا

बाईसे अर्ज़ व समा है वो जनाब, — जैसे दिन की है वसीला आफ़ताब

وَغَدَتْ تَنْشُرُ الْفَضَائِلَ عَنْهُ — كُلُّ قَوْمٍ عَلَى اخْتِلَافِ لُغَاهَا

नर्श दुनिया मे हुए उन के सिफ़ात, — उनके ताबीरे सना जुमला लुग़ात,

طَرِبَتْ لِاسْمِهِ الثَّرَى فَاسْتَطَالَتْ — فَوْقَ عُلْوِيَّةِ السَّمَا سُفْلَاهَا

उनकी निसबत से ज़मीन है बहरामंद, — इस लिए है अर्श से पाया बुलंद,

جَازَ مِنْ جَوْهَرِ التَّقَدُّسِ ذَاتًا — تَاهَتِ الانْبِيَاءُ فِي مَعْنَاهَا

ज़ाते अक़दस मे है वो हुस्न व ज़िया, — जिसके मानी मे हैं हैराँ अंबिया,

لَا تُجِلْ فِي صِفَاتِ احْمَدَ فِكْرًا — فَهِيَ الصُّورَةُ الَّتِي لَنْ تَرَاهَا

ज़ाते अहमद पर नज़र दुशवार है, — लन तरानी की यहाँ ललकार है,

ايُّ خَلْقٍ لِلّٰهِ اعْظَمُ مِنْهُ — وَهُوَ الْغَايَةُ الَّتِي اسْتَقْصَاهَا

उन से बाला होती कैसे कोई ज़ात, — जब के वो हैं जाने कुल काएनात,

قَلَّبَ الْخَافِقَيْنِ ظَهْرًا لِبَطْنٍ — فَرَآىٰ ذَاتَ احْمَدٍ فَاجْتَبَاهَا

हक ने शर्क़ व ग़र्ब को परखा है जब, — तब हुई ज़ाते मोहम्मद मुनताख़िब,

لَسْتُ انْسَى لَهُ مَنَازِلَ قُدْسٍ — قَدْ بَنَاهَا التُّقَى فَاعْلَى بِنَاهَا

उन की मनिज़ल को कोई समझेगा क्या,
وَرِجَالًا اعِزَّةً فِي بُيُوتٍ
उन मनाज़िल मे है वो एहले शरफ़,
سَادَةٌ لَا تُرِيدُ اِلَّا رِضَىٰ اللهِ
मर्ज़ाए माबूद उन का मुददआ,
خَصَّهَا مِنْ كَمَالِهِ بِالْمَعَانِي
खास उन पर हक़ का ये इनाम है,
لَمْ يَكُونُوا لِلْعَرْشِ اِلَّا كُنُوزًا
कन्जे मख़फ़ी थे ये अर्शे पाक के,
هِيَ اَقْلَامُ حِكْمَةٍ قَدْ بَرَاهَا
है लेसाने मारेफ़त उनकी ज़ुबान,
كُلَّ عَيْنٍ مَكْفُوفَةٍ عَيْنَاهَا
वो बसीरत ख़ैज है उनकी निगाह,
كَمْ لَهُمُ السُّنَّ عَنِ اللهِ تُنْبِي
साहेबाने इल्म व हिकमत मुक़तदा,
قَادَةٌ عِلْمُهُمْ وَرَاىٰ حِجَاهُمْ
उन का इल्म व फ़ज़्ल है इतना अयाँ,
مَا اُبَالِي وَلَوْ اُهِيلَتْ عَلَى الْاَرْضِ
उनकी उलफ़त दिल मे अपने कम नही,

कुल तक़वा है जहाँ सनगे बिना,
اِذِنَ اللهُ اَنْ يُعَزَّ حِمَاهَا
???
كَمَا لَا يُرِيدُ اِلَّا رِضَاهَا
और रज़ा माबूद की उन की रज़ा,
وَبِاَعْلَىٰ اسْمَائِهِ سَمَّاهَا
नाम भी उनका खुदा का नाम है,
خَافِيَاتٍ سُبْحَانَ مَنْ اَبْدَاهَا
हुकूमे ख़ालिक से ज़मीन पर आ गए,
وَهُمُ الاَعْيُنُ الصَّحِيحَاتُ تَهْدِي
ये क़लम है सनअते रब्बे जहान,
عُلَمَاءٌ اِئِمَّةٌ حُكَمَاءٌ
जो देखाती है ज़माने भर को राह,
يَهْتَدِي النَّجْمُ بِاتِّبَاعِ هُدَاهَا
पूछते हैं जिन से तारे रासता,
مَسْمَعًا كُلِّ حِكْمَةٍ مَنْظَرَاهَا
जैसे हर हिकमत मे है उनका निशाँ,
السَّمَاوَاتُ بَعْدَ نَيْلِ وِلَاهَا
गिर पड़े अब चर्ख़ भी तो ग़म नही

मदीने तय्यबा में दीगर ज़ियारात

ज़ियारते इब्राहीम बिन रसूलिल्लाह क़ब्र के पास खड़े हो कर पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی نَبِیِّ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی حَبِیبِ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा, सलाम हो आप पर ऐ नबीए खुदा, सलाम हो अल्लाह के हबीब

اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی صَفِیِّ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی نَجِیِّ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی مُحَمَّدِ

पर, सलाम हो अल्लाह के मुन्ताख़िब बन्दे पर, सलाम हो बरगुज़ीदा खुदा पर, सलमा हो मोहम्मद

بْنِ عَبْدِ اللّٰہِ سَیِّدِ الانْبِیَاءِ وَخَاتَمِ الْمُرْسَلِینَ وَخِیَرَۃِ اللّٰہِ مِنْ

बिन अब्दुल्लाह पर जो अंबीया के सरदार और ख़ातेमुल मुर्सलीन हैं और अल्लाह की बेहतरीन

خَلْقِہٖ فِی اَرْضِہٖ وَسَمَائِہٖ اَلسَّلَامُ عَلٰی جَمِیعِ انْبِیَائِہٖ وَرُسُلِہٖ اَلسَّلَامُ

मख़लूक़ हैं उसकी ज़मीन और उसके आसमान मे, सलाम हो उसके तमाम अंबिया व मुरसलीन

عَلَی الشُّھَدَاءِ وَالسُّعَدَاءِ وَالصَّالِحِینَ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ

पर सलाम हो शहीदों, नेक लोगों और सालेहीन पर, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दां

اللّٰہِ الصَّالِحِینَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیَّتُھَا الرُّوحُ الزَّاکِیَۃُ اَلسَّلَامُ

पर, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़ा रूह सलाम हो आप पर ऐ नफ़्से शरीफ़, सलाम हो आप पर

عَلَيْكَ اَيَّتُهَا النَّفْسُ الشَّرِيفَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيَّتُهَا السُّلَالَةُ

पाकीज़ा ज़ुर्रियत, सलाम हो आप पर ऐ पाकीज़ा सिफ़ात बन्दे, सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे

الطَّاهِرَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيَّتُهَا النَّسَمَةُ الزَّاكِيَةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ख़ैरूलवरा, सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे नबी मुसतफ़ा, सलाम हो आप पर ऐ नबी के फ़रज़ंद

بْنَ خَيْرِ الْوَرَىٰ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ النَّبِيِّ الْمُجْتَبَىٰ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

जो तमाम मख़लूक़ के लिए मबऊस किया गया, सलाम हो आप पर ऐ बशारत देने वाले, डराने

يَا بْنَ الْمَبْعُوثِ اِلَىٰ كَافَّةِ الْوَرَىٰ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ الْبَشِيرِ

वाले नबी के फ़रज़ंद, सलाम हो आप पर ऐ रोशन चिराग़ के फ़रज़ंद, सलाम हो आप पर ऐ उस के

النَّذِيرِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ السِّرَاجِ الْمُنِيرِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ

फ़रज़ंद जिसकी ताईद क़ुअरान से की गई है सलाम हो आप पर ऐ उस के फ़रज़ंद जो जिन्नात और

الْمُؤَيَّدِ بِالْقُرْآنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ الْمُرْسَلِ اِلَى الْاِنْسِ وَالْجَانِّ

इंसान की तरफ़ भेजा गया, सलाम हो आप पर ऐ साहेबे अलामत व रायत के फ़रज़ंद, सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ صَاحِبِ الرَّايَةِ وَالْعَلَامَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ राज़े क़यामत शिफ़ाअत करने वाले के फ़रजंद, सलाम हो आप पर ऐ उसके फ़रज़ंद

بْنَ الشَّفِيعِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ مَنْ حَبَاهُ اللّٰهُ

जिसको अल्लाह ने करामत दी, सलाम हो आप पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो मै

بِالْكَرَامَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اشْهَدُ انَّكَ قَدِ

गवाही देता हूँ के आप के लिए खुदा ने अपनी नेमत का घर मुनतिख़ब किया है अपने अहकाम

اخْتَارَ اللهُ لَكَ دَارَ اِنْعَامِهِ قَبْلَ اَنْ يَكْتُبَ عَلَيْكَ احْكَامَهُ اوْ

के फ़र्ज़ करने से क़ब्ल या अपने हलाल व हराम की तकलीफ़ देने से क़ब्ल पस आप को मुन्तिक़ल

يُكَلِّفَكَ حَلَالَهُ وَحَرَامَهُ فَنَقَلَكَ اِلَيْهِ طَيِّبًا زَاكِيًا مَرْضِيًّا طَاهِرًا

किया अपनी तरफ़ पाक व पाकीज़ा, पसंदीदा, हर नजासत से पाक और हर नापाकी से साफ़

مِنْ كُلِّ نَجَسٍ مُقَدَّسًا مِنْ كُلِّ دَنَسٍ وَبَوَّاكَ جَنَّةَ الْمَاوٰى وَرَفَعَكَ

हालत मे और आप के लिए जन्नतुल मावा मे मनिज़ल क़रार दी और आप को बुलंद दरजा की

اِلَى الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى وَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ صَلَاةً تَقَرُّ بِهَا عَيْنُ رَسُوْلِهِ

तरफ़ बुलंद किया और अल्लाह की रहमत हो आप पर ऐसी रहमत जिस से उस के रसूल की आँखे

وَتُبَلِّغُهُ اَكْبَرَ مَامُوْلِهِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ وَاَزْكَاهَا

ठंडी हो जाएं और उसको बुज़ुर्ग तरीन आरज़ू तक पहुँचा दे खुदाया अपनी बेहतरीन रहमत से

وَاَنْمٰى بَرَكَاتِكَ وَاَوْفَاهَا عَلٰى رَسُوْلِكَ وَنَبِيِّكَ وَخِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ

और पाकीज़ा रहमत से और बढ़ने वाली बरकत और मुकम्मल उनकी नस्ल मे पाक व पाकीज़ा

مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَعَلٰى مَنْ نَسَلَ مِنْ اَوْلَادِهِ الطَّيِّبِيْنَ وَعَلٰى

अफ़राद पर और उनकी इत्रते पाक पर अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहमत अता करनेवाले

مَنْ خَلَّفَ مِنْ عِتْرَتِهِ الطَّاهِرِينَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ اَللّٰهُمَّ

खुदाया मै तुझ से दरख़ास्त करता हूँ तेरे ख़ास बन्दे मोहम्मद के हक़ के वासते से और तेरे नबी

اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ صَفِيِّكَ وَاِبْرَاهِيمَ نَجْلِ نَبِيِّكَ اَنْ تَجْعَلَ

के फ़रज़ंद इब्राहीम के वासते से के मेरी कोशिश को क़ाबिले शुक्रिया क़रार दे और मेरे गुनाह को

سَعْيِي بِهِمْ مَشْكُورًا وَذَنْبِي بِهِمْ مَغْفُورًا وَحَيَاتِي بِهِمْ سَعِيدَةً

बख़्श दे और मेरी ज़िन्दगी को नेक बना और मेरी आक़ेबत को बेहतर क़रार देदे और मेरी हाजतों

وَعَاقِبَتِي بِهِمْ حَمِيدَةً وَحَوَائِجِي بِهِمْ مَقْضِيَّةً وَافْعَالِي بِهِمْ مَرْضِيَّةً

को पूरा कर दे और मेरे कामो से राज़ी हो जा और मेरे उमूर को उन के ज़रिए मसऊद बना दे और

وَاُمُورِي بِهِمْ مَسْعُودَةً وَشُؤُونِي بِهِمْ مَحْمُودَةً اَللّٰهُمَّ وَاحْسِنْ لِيَ

मेरे हालात को पसंदीदा कर खुदाया मुझको तौफ़ीक़े नेक अता कर और हर ग़म और तंगी को

التَّوْفِيقَ وَنَفِّسْ عَنِّي كُلَّ هَمٍّ وَضِيقٍ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنِي عِقَابَكَ

मुझ से दूर कर दे। खुदाया मुझको अपने अज़ाब से बचा ले और मुझको अपना सवाब देदे और

وَامْنَحْنِي ثَوَابَكَ وَاسْكِنِّي جِنَانَكَ وَارْزُقْنِي رِضْوَانَكَ وَاَمَانَكَ

मुझको अपनी जन्नत मे साकिन कर और मुझको रज़ामंदी अता कर और अपनी अमान और मेरी

وَاشْرِكْ لِي فِي صَالِحِ دُعَائِي وَالِدَيَّ وَوُلْدِي وَجَمِيعَ الْمُؤْمِنِينَ

बेहतरीन दुआ मे मेरे वालेदैन और मेरी औलाद और तमाम मोमिनीन व मोमिनात जो ज़िंदा हों

وَالْمُؤْمِنَاتِ الاحْيَاءَ مِنْهُمْ وَالامْوَاتَ اِنَّكَ وَلِيُّ الْبَاقِيَاتِ

या मर चुके हों सब को शरीक कर दे। बेशक तू बाक़यात सालेहात का वली है दुआ क़ुबूल कर

الصَّالِحَاتِ آمِينَ رَبَّ الْعَالَمِينَ

ले ऐ आलमीन के परवरदिगार।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे और दो रकत नमाज़े हाजत बजा लाए।

ज़ियारते जनाबे फ़ातेमा बिन्ते असद, वालेदा अमीरूल मोमिनीन (अ.स.)

क़ब्र के पास खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

सलाम हो नबीए खुदा पर, सलाम हो रसूले खुदा पर, सलाम हो मोहम्मद पर जो मुर्सलीन के सरदार

مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الاوَّلِينَ

हैं, सलाम हो मोहम्मद पर जो अव्वलीन के सरदार हैं, सलाम हो मोहम्मद पर जो आख़िरीन के

اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الآخِرِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ بَعَثَهُ اللهُ

सरदार हैं, सलाम हो उन पर जिसको खुदा ने आलमीन के लिए रहमत बनाया है, सलाम हो आप

رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और बरकात हों, सलाम हो फ़ातेमा बिन्ते असद पर जो हाशमी

اَلسَّلَامُ عَلٰى فَاطِمَةَ بِنْتِ اَسَدٍ الْهَاشِمِيَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ

हैं, सलाम हो आप पर ऐ सिद्दीक़ा, मरज़ीया, सलाम हो आप पर ऐ साहेबे तक़वा व पाकीज़गी,

اَيَّتُهَا الصِّدِّيقَةُ الْمَرْضِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا التَّقِيَّةُ

सलाम हो आप पर ऐ साहेबे मक़ामे करामत व रज़ा व तसलीम, सलाम हो आप पर ऐ मोहम्मद

النَّقِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الْكَرِيمَةُ الرَّضِيَّةُ اَلسَّلَامُ

ख़ातेमुन नबीईन की किफ़ालत करने वाली सलाम हो आपपर ऐ सय्यादुल वसीईन की वालदए

عَلَيْكِ يَا كَافِلَةَ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا وَالِدَةَ

गिरामी, सलाम हो आप पर ऐ वो जिस की शफ़कत रसूले खुदा ख़ातमुन नबीईन के लिए ज़ाहिर

سَيِّدِ الْوَصِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا مَنْ ظَهَرَتْ شَفَقَتُهَا عَلٰى

हुई, सलाम हो आप पर ऐ वो ज़ात जिसकी तरबीयत ज़ाहिर हुई अल्लाह के अमीन वली के लिए,

رَسُوْلِ اللّٰهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا مَنْ تَرْبِيَتُهَا

सलाम हो आप पर और आप की रूह पर और आप के जिस्म ज़ाहिर पर, सलाम हो आप पर

لِوَلِيِّ اللّٰهِ الْاَمِينِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ وَعَلٰى رُوحِكِ وَبَدَنِكِ الطَّاهِرِ

और आप के फ़रज़ंदों पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। मै गवाही देता हूँ के आप ने

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ وَعَلٰى وَلَدِكِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ اَشْهَدُ اَنَّكِ

अच्छी तरह किफ़ालत की और अमानत को अदा किया और अल्लाह की रज़ा की राह मे कोशिश

احْسَنْتِ الْكِفَالَةَ وَادَّيْتِ الامَانَةَ وَاجْتَهَدْتِ فِي مَرْضَاتِ

की और रसूले खुदा की हिफ़ाज़त मे बहुत कोशिश की उन के हक़ को पहचानते हुए ईमान

اللهِ وَبَالَغْتِ فِي حِفْظِ رَسُوْلِ اللهِ عَارِفَةً بِحَقِّهِ مُؤْمِنَةً بِصِدْقِهِ

रखते हुए उनकी सदाक़त पर और उनकी नबुव्वत का एतेराफ़ करते हुए और उन की नेमत से

مُعْتَرِفَةً بِنُبُوَّتِهِ مُسْتَبْصِرَةً بِنِعْمَتِهِ كَافِلَةً بِتَرْبِيَتِهِ مُشْفِقَةً

वाक़फ़ होते हुए उनकी तरबियत की किफ़ालत करते हुए उन पर शफ़क़त करने हुए और उनकी

عَلٰى نَفْسِهِ وَاقِفَةً عَلٰى خِدْمَتِهِ مُخْتَارَةً رِضَاهُ وَاشْهَدُ انَّكِ

ख़िदमत बजा लाते हुए उन की मर्ज़ा को इख़तियार करते हुए। मै गवाही देता हूँ के आप ने ईमान

مَضَيْتِ عَلَى الْاِيْمَانِ وَالتَّمَسُّكِ بِاشْرَفِ الادْيَانِ رَاضِيَةً

पर ज़िंदगी गुज़ारी और बेहतरीन दीन से तमस्सुक किया राज़ी रहते हुए पाक व पाकीज़ा, साफ़

مَرْضِيَّةً طَاهِرَةً زَكِيَّةً تَقِيَّةً نَقِيَّةً فَرَضِيَ اللهُ عَنْكِ وَارْضَاكِ

सुथरा, मुत्तक़ी व परहेज़गार रहते हुए तो खुदा आप से राज़ी हो जाए और आप को राज़ी कर दे

وَجَعَلَ الْجَنَّةَ مَنْزِلَكِ وَمَاوَاكِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

और जन्नत को आप की मनिज़ल और मकाम क़रार दे दे। खुदाया रहमत नाज़ल कर मोहम्मद

مُحَمَّدٍ وَانْفَعْنِي بِزِيَارَتِهَا وَثَبِّتْنِي عَلٰى مَحَبَّتِهَا وَلَا تَحْرِمْنِي

व आले मोहम्मद पर और हम को उन की ज़ियारत का नफ़ा दे और उनकी मोहब्बत पर हम को

شَفَاعَتَهَا وَشَفَاعَةَ الاَئِمَّةِ مِنْ ذُرِّيَّتِهَا وَارْزُقْنِي مُرَافَقَتَهَا

साबित रख और हम को उनकी रिफाक़त अता कर और हमारा हश्र उनके साथ कर और उनकी

وَاحْشُرْنِي مَعَهَا وَمَعَ اَوْلَادِهَا الطَّاهِرِينَ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ

औलादे ताहेरीन के साथ खुदाया इस को मेरी आख़री ज़ियारत न क़रार देना और मुझको उन की

الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِي اِيَّاهَا وَارْزُقْنِي الْعَوْدَ اِلَيْهَا اَبَدًا مَا اَبْقَيْتَنِي

तरफ़ लौटने की हमेशा तौफ़िक़ देते रहना जब तक के मै बाक़ी रहूँ और जब तू मुझको मौत दे तो

وَاِذَا تَوَفَّيْتَنِي فَاحْشُرْنِي فِي زُمْرَتِهَا وَادْخِلْنِي فِي شَفَاعَتِهَا

मुझको उन के ज़ुमरे मे महशूर कर और मुझको दाख़िल कर उनकी शिफ़ाअत मे अपनी रहमत

بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ اَللّٰهُمَّ بِحَقِّهَا عِنْدَكَ وَمَنْزِلَتِهَا

से ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले खुदाया तेरे नज़दीक उनके हक़ और उनकी मनिज़लत का

لَدَيْكَ اِغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيعِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

वास्ता जो तेरे नज़दीक है मुझको और मेरे वालेदैन और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को माफ़

وَآتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا بِرَحْمَتِكَ

कर दे और दुनिया मे नेकी और आख़िरत मे नेकी अता कर और जहन्नम के अज़ाब के बचा ले

عَذَابَ النَّارِ

अपनी रहमत से।

इसके बाद दो रकत नमाज़े ज़ियारत पढ़े और जो चाहे दुआ करे और वापस आ जाए।

मैदाने ओहद में जनाबे हमज़ा की ज़ियारत

इसके बाद रू बिक़बला दो रकत नमाज़े ज़ियारत अदा करे और क़ब्र से लिपट कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा (स) के चचा, सलाम हो आपपर ऐ बेहतरीन शहीद, सलाम हो आप

عَلَيْكَ يَا خَيْرَ الشُّهَدَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَسَدَ اللّٰهِ وَاَسَدَ

पर ऐ खुदा के शेर और रसूले खुदा के शेर मै गवाही देता हूँ के आपने जेहादे राहे खुदा किया और जान

رَسُوْلِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ وَجُدْتَ

निसारी की और रसूले खुदा की मदद की और अल्लाह सुबहानहु की बारगाह मे जो अज्र था उस की तरफ़

بِنَفْسِكَ وَنَصَحْتَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَكُنْتَ فِي

राग़ाब हुए। मेरे माँ बाप आपपर क़ुर्बान हों मै आप के पास आया हूँ रसूले खुदा की तरफ़ क़ुरबत चाहते

مَا عِنْدَ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ رَاغِبًا بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ اَتَيْتُكَ مُتَقَرِّبًا اِلٰى

हुए उस के साथ आप की तरफ़ रग़बत करते हुए शिफ़ाअत मे आप की ज़ियारत के ज़रिए अपने लिए

اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ بِزِيَارَتِكَ وَمُتَقَرِّبًا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

छुटकारा चाहता हूँ आप की पनाह चाहता हूँ उस आगसे जिस का मुस्तहक़ हो गया है हर मेरा जैसा इस

وَآلِهِ بِذٰلِكَ رَاغِبًا اِلَيْكَ فِي الشَّفَاعَةِ ابْتَغِي بِزِيَارَتِكَ خَلَاصَ

वजह से के मै ने गुनाह किया है अपने नफ़्स पर अपने उन गुनाहों से भागते हुए जिस को मै ने लाद लिया

نَفْسِي مُتَعَوِّذًا بِكَ مِنْ نَّارٍ اسْتَحَقَّهَا مِثْلِي بِمَا جَنَيْتُ عَلٰى

है अपनी पीठ पर आपकी तरफ़ फ़रयाद करते हुए अपने रब की रहमत की उम्मीद लगाते हुए मै आप के

نَفْسِي هَارِبًا مِنْ ذُنُوبِيَ الَّتِي احْتَطَبْتُهَا عَلٰى ظَهْرِي فَزِعًا اِلَيْكَ

पास आया हूँ दूर से अपनी गुलु ख़लासी तलब करते हुए जहन्नम की आग से दारॉ हालाके मेरे गुनाहों ने

رَجَاءَ رَحْمَةِ رَبِّي اتَيْتُكَ مِنْ شُقَّةٍ بَعِيدَةٍ طَالِبًا فَكَاكَ رَقَبَتِي

मेरी पीठ को झुका दिया है और मै वो काम बजा लाया जिस से मेरा खुदा नाराज़ हो और मै ने किसी को

مِنَ النَّارِ وَقَدْ اوْقَرَتْ ظَهْرِي ذُنُوبِي وَاتَيْتُ مَا اسْخَطَ رَبِّي

नही पाया के जिस की तरफ़ फ़रयाद करूँ जो मेरे लिए तुम से बेहतर होवे एहलेबैते रहमत तो तुम मेरे लिए

وَلَمْ اجِدْ احَدًا افْزَعُ اِلَيْهِ خَيْرًا لِي مِنْكُمْ اهْلَ بَيْتِ الرَّحْمَةِ

शिफ़ाअत करनेवाले हो जाओ फ़क्र व हाजत के राज़ क्योंके मै आप की तरफ़ आया हूँ महज़ून व मग़ामूम

فَكُنْ لِي شَفِيعًا يَوْمَ فَقْرِي وَحَاجَتِي فَقَدْ سِرْتُ اِلَيْكَ مَحْزُونًا

और कर्ब व ग़म के आलम मे आया हूँ और अपने आँसू बहाए हैं आप के नज़दीक और आप के पास

وَاتَيْتُكَ مَكْرُوبًا وَسَكَبْتُ عَبْرَتِي عِنْدَكَ بَاكِيًا وَصِرْتُ

अकेला आया हूँ और मै आप से मिलने के लिए खुदा की तरफ़ से मामूर हूँ और मुझको उभारा है आपसे

اِلَيْكَ مُفْرَدًا وَاَنْتَ مِمَّنْ اَمَرَنِيَ اللّٰهُ بِصِلَتِهِ وَحَثَّنِي عَلٰى بِرِّهِ

नेकी पर और मेरी रहनुमाई की है आप की फ़ज़ीलत पर और मेरी हिदायत की है आप की मोहब्बत के

وَدَلَّنِي عَلٰى فَضْلِهِ وَهَدَانِي لِحُبِّهِ وَرَغَّبَنِي فِي الْوِفَادَةِ اِلَيْهِ

लिए और मुझको तरग़ीब दी है आपकी तरफ़ जाने की और मुझको हाजतों के तलब का इलहाम किया

وَاَلْهَمَنِي طَلَبَ الْحَوَائِجِ عِنْدَهُ اَنْتُمْ اَهْلُ بَيْتٍ لَا يَشْقٰى مَنْ

है आप वो एहलेबैत हैं के जिस ने आप से मोहब्बत की वो शक़ी नही हुआ और जो आप के पास आया

تَوَلَّاكُمْ وَلَا يَخِيبُ مَنْ اَتَاكُمْ وَلَا يَخْسَرُ مَنْ يَهْوَاكُمْ وَلَا

वो नाउम्मीद नही हुआ और जो आपसे मोहब्बत करता है वो घाटे मे नही हुआ और वो नेक बख़्त नही

يَسْعَدُ مَنْ عَادَاكُمْ

हुआ जिसने आप से दुश्मनी की।

फिर अपना रूख़ काबे की तरफ़ करे और दो रकत नमाज़ पढ़े। इसके बाद अपने आप को क़ब्र पर गिरा दे और कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّي تَعَرَّضْتُ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर खुदाया मैने अपने को तेरे लुत्फ़ व कर्म के लिए

لِرَحْمَتِكَ بِلُزُومِي لِقَبْرِ عَمِّ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

पेश किया है तेरे नबी के चचा की क़ब्र से मुलतिज़म होते हुए अल्लाह का दुरूद हो उन पर और उन की

لِيُجِيرَنِي مِنْ نِقْمَتِكَ وَسَخَطِكَ وَمَقْتِكَ فِي يَوْمٍ تَكْثُرُ فِيهِ

आल पर ताके वो मुझको तेरे अज़ाब से बचा लें उस रोज़ जिस में आवाज़ें ज़्यादा हो जाएँगी और हर नफ़्स

الاصْوَاتُ وَتُشْغَلُ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا قَدَّمَتْ وَتُجَادِلُ عَنْ

अपने किए हुए मे मशग़ूल रहेगा और अपने से जदाल करेगा पस अगर तू मुझ पर आज रहेम कर दे तो मेरे

نَفْسِهَا فَإِنْ تَرْحَمْنِي الْيَوْمَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيَّ وَلَا حُزْنٌ وَإِنْ

लिए कोई ख़ाफ़ और हुज़्न न होगा और अगर तू ईक़ाब करे तो मौला है तुझे क़ुदरत है अपने बन्दे पर और

تُعَاقِبْ فَمَوْلَايَ لَهُ الْقُدْرَةُ عَلٰى عَبْدِهِ وَلَا تُخَيِّبْنِي بَعْدَ الْيَوْمِ

मुझे आज के बाद नाउम्मीद न करना और मुझको बग़ैर हाजत पूरी हुए वापस न करना क्योंके मैं तेरे नबी

وَلَا تَصْرِفْنِي بِغَيْرِ حَاجَتِي فَقَدْ لَصِقْتُ بِقَبْرِ عَمِّ نَبِيِّكَ

के चचा की क़ब्र से मुलहक हुआ हूँ और उसी के ज़रिए तेरी तरफ़ क़ुरबत की है तेरी मर्ज़ा हासिल करने

وَتَقَرَّبْتُ بِهِ اِلَيْكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ وَرَجَاءَ رَحْمَتِكَ

के लिए और तेरी रहमत की उम्मीद लगाए तो तू क़ुबूल कर ले और अपने हिल्म को लौटा दे मेरी जेहालत

فَتَقَبَّلْ مِنِّي وَعُدْ بِحِلْمِكَ عَلٰى جَهْلِي وَبِرَافَتِكَ عَلٰى جِنَايَةِ

की तरफ़ और अपनी महेरबानी के साथ मेरे नफ़्स की ग़लती पर क्योंके मेरा जुरम अज़ीम है और मै नही

نَفْسِي فَقَدْ عَظُمَ جُرْمِي وَمَا اخَافُ اَنْ تَظْلِمَنِي وَلَكِنْ

डरता हूँ के तू मुझ पर ज़ुल्म करेगा लेकिन मै हिसाब की बुराई से डरता हूँ तो आज मेरी हालत पर रहम कर

اَخَافُ سُوءَ الْحِسَابِ فَانْظُرِ الْيَوْمَ تَقَلُّبِى عَلٰى قَبْرِ عَمِّ

के तेरे नबी के चचा की कब्र पर आया हूँ, पस उन दोनो के वासते से मुझको जहन्नम से छुड़ा दे और मेरी

نَبِيِّكَ فَبِهِمَا فُكَّنِى مِنَ النَّارِ وَلَا تُخَيِّبْ سَعْيِى وَلَا يَهُونَنَّ

कोशिश को ना उम्मीदी मे न बदलना और मेरी दुआ को अपनी बारगाह मे हक़ीर व ज़लील न शुमार करना

عَلَيْكَ ابْتِهَالِى وَلَا تَحْجُبَنَّ عَنْكَ صَوْتِى وَلَا تَقْلِبْنِى بِغَيْرِ

और मेरी आवाज़ को अपने से न रोक देना और मुझको बग़ैर मेरी हाजतों के पुरा किए हुए न लौटाना ऐ हर

حَوَائِجِى يَا غِيَاثَ كُلِّ مَكْرُوبٍ وَمَحْزُونٍ وَيَا مُفَرِّجًا عَنِ

महज़ून व ग़मज़दा के फ़रयादरस और ऐ हसरत, अंदोह व हैरानी वालों को कशाईश अता करने वाले जो

الْمَلْهُوفِ الْحَيْرَانِ الْغَرِيقِ الْمُشْرِفِ عَلَى الْهَلَكَةِ فَصَلِّ

डूब कर क़रीब हुआ हलाकत से तो रहमत नाज़िल फ़र्मा, मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी जानिब

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَانْظُرْ اِلَىَّ نَظْرَةً لَا اَشْقٰى بَعْدَهَا اَبَدًا

नज़रे लतीफ़ फ़र्मा के उस के बाद मै कभी अबद तक शक़ी न हूँ और रहेम कर मेरी ज़ारी, गिरया और मेरी

وَارْحَمْ تَضَرُّعِى وَعَبْرَتِى وَانْفِرَادِى فَقَدْ رَجَوْتُ بِرِضَاكَ

तन्हाई पर क्योंके मैने तेरी मग़्फ़िरत की उम्मीद लगाई है और उस ख़ैर का तालिब हूँ जिस को तेरे अलावा कोई

وَتَحَرَّيْتُ الْخَيْرَ الَّذِى لَا يُعْطِيهِ اَحَدٌ سِوَاكَ فَلَا تَرُدَّ اَمَلِى

अता नही कर सकता तो मेरी उम्मीद को न ख़त्म करना खुदाया अगर तू इक़ाब करेगा तो मौला है जिस

اَللّٰهُمَّ اَنْ تُعَاقِبَ فَمَوْلٰى لَهُ الْقُدْرَةُ عَلٰى عَبْدِهٖ وَجَزَاؤُهُ سُوْءُ

को क़ुदरत है अपने बन्दे पर और उस की सज़ा उस के बुरे आमाल की वज्ह से है तो खुदाया आज मुझको

فِعْلِهٖ فَلَا اخِيبَنَّ الْيَوْمَ وَلَا تَصْرِفْنِى بِغَيْرِ حَاجَتِى وَلَا

रहमत से महरूम न करना और मुझको बग़ैर मेरी हाजत के न वापस करना और मेरे दरबार मे आने और

تُخَيِّبَنَّ شُخُوصِى وَوِفَادَتِى فَقَدْ انْفَدْتُ نَفَقَتِى وَاتْعَبْتُ

खड़े होने को ना उम्मीदी मे न बदल देना क्योंके मै ने तमाम ज़ादे राह ख़र्च कर दिया है और अपने जिस्म

بَدَنِى وَقَطَعْتُ الْمَفَازَاتِ وَخَلَّفْتُ الاهْلَ وَالْمَالَ وَمَا

को मुसीबत मे डाला है और जंगलों को तय किया है और घर वालों और माल को छोड़ा है और जो तू ने

خَوَّلْتَنِى وَآثَرْتُ مَا عِنْدَكَ عَلٰى نَفْسِى وَلُذْتُ بِقَبْرِ عَمِّ

अता किया है उसे भी छोड़ा है और जो तेरे पास है उसको इख़तेयार किया है अपने लिए और तेरे नबी के

نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَتَقَرَّبْتُ بِهٖ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ

चचा की क़ब्र की पनाह मे आया हूँ उनपर और उनकी आल पर दुरूद हो और मैने उस से क़ुर्बत चाही है

فَعُدْ بِحِلْمِكَ عَلٰى جَهْلِى وَبِرَافَتِكَ عَلٰى ذَنْبِى فَقَدْ عَظُمَ جُرْمِى

तेरे मर्ज़ा के हासिल करने मे तो तू अपने हिल्म के साथ जेहालत पर रहेम कर और अपनी महेरबानी से मेरे

بِرَحْمَتِكَ يَا كَرِيمُ يَا كَرِيمُ

गुनाह पर क्योंके मेरा जुर्म अज़ीम है अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

लेखक: जनाबे हमज़ा के फ़ज़ाएल और उनकी ज़ियारत के फ़ज़ाएल बयान से बाहर हैं। फ़ख़रूल मोहक़्क़ेक़ीन ने अपने रिसाले फ़ख़रिया में फ़रमाया है के जनाबे हमज़ा और बाक़ी शोहदा-ए-ओहद की ज़ियारत मुस्तहब है। इसके लिए रसूले अक्रम (स) की रिवायत है के जो शख़्स मेरी ज़ियारत करे और मेरे चचा हमज़ा की ज़ियारत न करे उसने मुझ पर ज़ुल्म किया है। हक़ीर ने भी बैतुल अहज़ान में नक़्ल किया है के जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) वफ़ाते पैग़ंबर के बाद हर सनीचर, सोमवार, गुरूवार के दिन जनाबे हमज़ा और शोहदाए ओहद की ज़ियारत के लिए जाती थीं। और ज़िन्दगी भर आपने इस तरीक़े को जारी रखा था। महमूद बिन लबीब का बयान है के जनाबे फ़ातेमा (अ.स.) जनाबे हमज़ा की क़ब्र के पास जाकर गिरया करती थीं। और जब मैं एक दिन ज़ियारते जनाबे हमज़ा से मुशरर्फ़ हुआ तो मैंने आपको क़ब्रे हमज़ा के पास मशग़ूले गिरया देखा। मैंने इंतेज़ार किया। जब आपका गिरया ठहर गया तो मैंने जाकर सलाम अर्ज़ किया और कहा ऐ सय्यदतुन निसा खुदा की क़सम आप के गिरया ने मेरे दिल की रगों को तोड़ दिया है। फ़रमाया ऐ अबू अम्र मेरे लिए यह गिरया बहुत मुनासिब है के मैं ग़मे पैग़ंबर में ग़मज़दा रहूँ। मुझे किस क़द्र इश्तेयाक़े रसूल है और इसके बाद आपने यह शेर पढ़ा:जब कोई शख़्श किसी रोज़ मर जाता है तो उस का ज़िक्र कम हो जाता हे और मेरे वालिद का ज़िक्र मरने के दिन बखुदा ज़्यादा होता जा रहा है।

शेख़ मुफ़ीद ने फ़रमाया है के:रसूले खुदा हुकूम दिया करते थे अपनी ज़िंदगी मे जनाबे हमज़ा (अ.स.) की ज़ियारत का और खुद उनकी और दूसरे शोहदा की ज़ियारत को जाते थे और जनाबे फ़ातेमा भी बरारबर वफ़ात रसूले खुदा (स.अ.व.व.) के बाद जनाबे हमज़ा की क़ब्रर पर जाती थी और मुसलमान भी मुसलसल उन की क़ब्र की ज़ियारत को जाते थे और वहाँ रहते थे।

ज़ियारते कुबूरे शोहदा-ए-ओहद (रिज़वानुल्लाहे अलैहिम)

उनकी ज़ियारत इस प्रकार पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلٰی رَسُول اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی نَبِیِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی

सलाम हो रसूल अल्लाह पर सलाम हो नबी ख़ुदा पर सलाम हो मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर,

مُحَمَّدٍ بنِ عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی اَهْلِ بَیْتِهِ الطَّاهِرِینَ اَلسَّلَامُ

सलाम हो उन के अहलेबैत (अ) ताहेरीन पर, सलाम हो तुम पर ऐ शहीदाने बा ईमान सलाम हो

عَلَیْکُمْ اَیُّهَا الشُّهَدَاءُ الْمُؤْمِنُونَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَهْلَ

तुम पर अहलेबैते ईमान व तौहीद, सलाम हो तुम पर ऐ अनसार दीने खुदा और अनसार रसूले

بَیْتِ الْاِیْمَانِ وَالتَّوْحِیدِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَنْصَارَ دِینِ اللهِ

खुदा (उन पर और उन की आल पर सलाम) सलाम हो तुम पर के तुमने सब्र किया और बेहतरीन

وَاَنْصَارَ رَسُوْلِهِ عَلَیْهِ وَآلِهِ السَّلَامُ سَلَامٌ عَلَیْکُمْ بِمَا

मक़ामे आख़िरत पाया मै गवाही देता हूँ के अल्लाह ने आप लोगों को इख़तियार किया अपने दीन

صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَیٰ الدَّارِ اَشْهَدُ اَنَّ اللهَ اخْتَارَکُمْ لِدِینِهِ

के लिए और आप को मुनतिख़ब किया अपने रसूल के लिए और मै गवाही देता हूँ के आप ने राहे

وَاصْطَفَاکُمْ لِرَسُوْلِهِ وَاَشْهَدُ اَنَّکُمْ قَدْ جَاهَدْتُمْ فِی اللهِ حَقَّ

खुदा मे जिहाद किया जो हक़्क़े जिहाद था और दीने खुदा, नबीए खुदा से दिफ़ा किया और उसके

جِهَادِهِ وَذَبَبْتُمْ عَنْ دِینِ اللهِ وَعَنْ نَبِیِّهِ وَجُدْتُمْ بِاَنْفُسِکُمْ

लिए अपनी जानें क़ुर्बान कार और मै गवाही देता हूँ के आप लोग क़त्ल किए गए रसूल अल्लाह

دُونَهُ وَاشْهَدُ انَّكُم قُتِلْتُمْ عَلٰى مِنْهَاجِ رَسُوْلِ اللهِ فَجَزَاكُمُ اللهُ

के तरीक़े पर तो खुदा आप को जज़ा दे अपने नबी की तरफ़ से इसलाम की तरफ़ से और अहले

عَنْ نَبِيِّهِ وَعَنِ الإِسْلَامِ وَاهْلِهِ افْضَلَ الْجَزَاءِ وَعَرَّفَنَا

इसलाम की तरफ़ से बेहतरीन जज़ा और हम को आप को पहचनवादे अपनी रज़ा मंदी के मकाम

وُجُوهَكُمْ فِي مَحَلِّ رِضْوَانِهِ وَمَوْضِعِ إِكْرَامِهِ مَعَ النَّبِيِّينَ

और करामत के महेल मे नबियों, सिद्दिक़ीन और शहीदों और सालेहीन के साथ मे जो बेहतरीन

وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيقًا

रफ़ीक़ हैं मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह का गोरोह हैं और जिस ने आप से जंग की उसने उसने

اشْهَدُ انَّكُمْ حِزْبُ اللهِ وَانَّ مَنْ حَارَبَكُمْ فَقَدْ حَارَبَ اللَّهَ

खुदा से जंग की और आप मुक़र्रेबीन और कामयाब लोगों मे से हैं जो अपने रब के पास ज़िन्दा

وَانَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ الْفَائِزِينَ الَّذِينَ هُمْ احْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ

हैं और रिज़्क़ पा रहे हैं तो जिसने आप लोगों को क़त्ल किया है, उस पर खुदा की, मलाएका की

يُرْزَقُونَ فَعَلٰى مَنْ قَتَلَكُمْ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ

और तमाम लोगों की लानत है मै आप के पास ऐ एहले तौहीद ज़ियारत के ालिए आया हूँ और

اجْمَعِينَ اتَيْتُكُمْ يَا اهْلَ التَّوْحِيدِ زَائِرًا وَبِحَقِّكُمْ عَارِفًا

आप के हक़ को पहचान कर आया हूँ और आप की ज़ियारत के ज़रिए खुदा की क़ुरबत चाहता

وِبِزِيَارَتِكُمْ اِلَى اللهِ مُتَقَرِّبًا وَبِمَا سَبَقَ مِنْ شَرِيفِ الاعْمَالِ

हूँ और बेहतरीन आमाल और पसंदीदा अफ़आल का जानने वाला हूँ तो आप पर अल्लाह का

وَمَرْضِيِّ الافْعَالِ عَالِمًا فَعَلَيْكُمْ سَلَامُ اللهِ وَرَحْمَتُهُ وَبَرَكَاتُهُ

सलाम और उस की रहमत व बरकत हो और जिसने आपको क़त्ल किया उसपर अल्लाह की

وَعَلٰى مَنْ قَتَلَكُمْ لَعْنَةُ اللهِ وَغَضَبُهُ وَسَخَطُهُ اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِى

लानत, ग़ज़ब और नाराज़गी हो खुदाया मुझको उनकी ज़ियारत से नफ़ा दे और मुझको उनके

بِزِيَارَتِهِمْ وَثَبِّتْنِى عَلٰى قَصْدِهِمْ وَتَوَفَّنِى عَلٰى مَا تَوَفَّيْتَهُمْ

क़सद पर साबित क़दम रख और मुझको उसी पर मौत दे जिस पर तू ने उन को मौत दी है और

عَلَيْهِ وَاجْمَعْ بَيْنِى وَبَيْنَهُمْ فِى مُسْتَقَرِّ دَارِ رَحْمَتِكَ اشْهَدُ اَنَّكُمْ

अपने रहमत के घर मे मुझको और उन्हें जमा कर मै गवाही देता हूँ के आप ने हम पर सबक़त

لَنَا فَرَطٌ وَنَحْنُ بِكُمْ لَاحِقُونَ

हासिल कर ली है और हम आप से मुलहक़ होने वाले हैं।

उसके बाद सूरह क़द्र जितना मुम्किन हो पढ़े।
और बाज़ लोगों ने कहा है के हर शहीद के पास दो रकत नमाज़ अदा करे और उसके बाद वापस आ जाए।

मदीने मुनव्वरा की मस्जिदों का बयान

उन्ही मसाजिद में से एक मस्जिदे क़ुबा है जिसकी बुनियाद रोज़े अव्वल से

तक़वे पर रखी गई है।
और रिवायत में है के जो व्यक्ति इस मस्जिद में जाकर दो रकत नमाज़ अदा करेगा वह जब वापस होगा तो एक उमरा का सवाब वापस लेकर आएगा। लेहाज़ा इस मसजिद में जाकर दो रकत नमाज़े तहीय्यत बजा लाएं। इसके बाद तसबीहे जनाबे फ़ातेमा पढ़ें। उसके बाद वह ज़ियारते जामेआ पढ़ें जिसकी इब्तेदा अस सलामो अला औलियाअल्लाहे से है और जिसको हमने ज़ियारते जामेआ क़रार दिया है और आाख़िरे किताब में मज़कूर है। इसके बाद यह दुआ पढ़े:

يَا صَرِيخَ الْمَكْرُوبِينَ وَيَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ وَيَا مُغِيثَ

ऐ फ़रयाद करने वालों के फ़रयादरस ऐ बेचारों की दुआ के क़ुबूल करने वाले, ऐ ग़म ज़दों के दादे

الْمَهْمُومِينَ اِكْشِفْ عَنِّي ضُرِّي وَهَمِّي وَ كَرْبِي وَغَمِّي كَمَا كَشَفْتَ

रस मेरे गम, तकलीफ़ मुसीबत और हुज़्न को दूर कर दे जैसे के तूने अपने नबी (स) से उनके ग़म

عَنْ نَبِيِّكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ هَمَّهُ وَ كَفَيْتَهُ هَوْلَ عَدُوِّهِ وَا كْفِنِي

को दूर कर दिया है और उन के दुश्मन के ख़ौफ़ के लिए काफ़ी हुआ है और केफ़ालत कर मेरे

مَا اهَمَّنِي مِنَ امْرِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ يَا ارْحَمَ الرَّاحِمِينَ

लिए दुनिया व आख़िरत के अहेम उमूर मे ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

इसके बाद इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के मकान मस्जिदे सलमान और मस्जिदे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) में जो क़ब्रे जनाबे हमज़ा के सामने है और मस्जिदे मुबाहेला में जिस क़द्र मुम्किन

हो नमाज़ें अदा करें और अपनी हाजतों को तलब करें।

ज़ियारते विदाए पैग़ंबर

इसके बाद जब मदीने से बाहर जाना चाहें तो ग़ुस्ल कर के क़ब्रे पैग़ंबर के पास आएं। और सारे आमाल को अंजाम देने के बाद हज़रत को इस प्रकार विदा करें:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ اسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ وَاسْتَرْعِيكَ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा मे आप को अल्लह को सौपंता हूँ और आप की तवज्ञो चाहता हूँ

وَاقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامُ آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَبِمَا جِئْتَ بِهِ وَدَلَلْتَ عَلَيْهِ

और आप पर सलाम भेजता हूँ मै अल्लाह पर ईमान लाया और जो आप लाए उस पर ईमान लाया

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّي لِزِيَارَةِ قَبْرِ نَبِيِّكَ فَإِنْ تَوَفَّيْتَنِي

और जिस पर आप ने रहनुमाई की खुदाया उस को मेरा आख़ेरीन अहेद अपने नबी की क़ब्र की

قَبْلَ ذٰلِكَ فَإِنِّي اَشْهَدُ فِي مَمَاتِي عَلٰى مَا شَهِدْتُ عَلَيْهِ فِي حَيَاتِي

ज़्यारत का न क़रार देना अगर तू ने मुझको मौत दे दी इसके क़ब्ल तो मै गवाही दूंगा अपनी मौत

اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

मे भी उसकी जिस की मैने गवाहीदी है अपनी ज़िंदगी में के तेरे अलावा कोई माबूद नही है और

وَآلِهِ

मोहम्मद (स) तेरे बंदे और रसूल हैं। खुदा उनपर और उनकी आल पर पर रहमत नाज़ल करे।

इमाम सादिक़ (अ.स.) ने यूनुस बिन याक़ूब से फ़रमाया के पैग़ंबर को इस प्रकार विदा करो:

صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ لَآ جَعَلَهُ اللهُ آخِرَ تَسْلِيمِي

अल्लाह की रहमत हो आप पर और सलाम हो उसका खुदा मेरा आप पर आख़री सलाम न क़रार

عَلَيْكَ

दे।

लेखक: हमने किताबे हदियतुज़ ज़ाएरीन में ज़व्वारे मदीना की ज़िम्मेदारियों का ज़िक्र करते हुए यह बयान किया है के इंसान जब तक मदीने मुनव्वरा में रहे उस माक़े को ग़नीमत समझे और ज़्यादा नमाज़ें अदा करने के लिए मस्जिद में जाए के वहाँ की हर नमाज़ दस हज़ार नमाज़ों के बराबर है जो दूसरी जगह पर अदा की जाएं। और मस्जिद में भी बेहतरीन जगह वह रौज़ा है जो मेहराब और मिम्बर के दरमियान है। मोहद्दिस नूरी ने तहीया में फ़रमाया है के जिस जगह पर जसदे पाके पैग़ंबर या अजसामे आइम्मा (अ.स.) हैं वह ज़मीन बा इत्तेफ़ाक़ तमाम फ़ाक़हा काबे मोअज़्ज़मा से बेहतर है जैसा के शहीद ने क़वाएद में इसकी तशरीह की है। और एक रिवायते हसन में हज़रमी से मनक़ूल है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने मुझे हुक्म दिया के मस्जिदे रसूले अक्रम (स) में ज़्यादा नमाज़ें अदा करूं जहां तक मुम्किन हो। और फ़रमाया के हमेशां यह मौक़ा हासिल नहीं होता।

शेख़ तूसी ने तहज़ीब में मोतबर सनद के साथ मराज़म से नक़्ल किया है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के मदीने में रोज़ा रखना और सुतूनो के पास नमाज़ें अदा करना वाजिब नहीं है। बल्के वाजिब सिर्फ़ नमाज़े पंजगाना और माहे रमज़ान के रोज़े हैं। लेकिन जो व्यक्ति रोज़ा रखना चाहे उसके लिए बेहतरीन अमल है। और फ़रमाया के इस मस्जिदे शरीफ़ में बाकसरत नमाज़ें

अदा करे जहाँ तक मुम्किन हो के यह तुम्हारे लिए बेहतरीन अमल है।
और याद रखो के कभी कभी आदमी दुनिया के कामों में होशियार होता है और लोग उसकी तारीफ़ करते हैं के क़दरे होशियार है। लेकिन वाक़ेअन बेहतरीन होशियार वह है जो अम्रे आख़रत में होशियार हो। लेहाज़ा जहाँ तक मुम्किन हो कब्रे पैग़ंबर की ज़ियारत करो। और इस क़द्र बक़दरे इमकान आइम्मए बक़ी की ज़ियारत करो और जब भी हुजर-ए-रसूल पर निगाह पड़े आं हज़रत को सलाम करो। जब तक मदीने में रहो इसकी पाबंदी करो और अपने को तमाम गुनाहों और ग़लतियों से महफ़ूज़ रखो। और इस मुक़द्दस जगह की शराफ़त ओ अज़मत के बारे में ग़ौर करते रहो खुसूसन मस्जिद में बैठ कर के यह वह सरज़मीन है जिस पर हज़रत के क़दम पड़े हैं और आपने उसके कूचा ओ बाज़ार में आमदो रफ़्त फ़रमाई है। इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ो के यह वह जगह है जहाँ वही का नुज़ूल होता था और जिब्रईल और मलाएकए मुक़र्रबीन हाज़र हुआ करते थे। शायर ने बेहतरीन बात कही है:

اَرْضٌ مَشٰی جِبْرِیلُ فِی عَرَصَاتِهَا　　وَاللّٰهُ شَرَّفَ اَرْضَها وَسَمَاءَهَا

अर्श से ऊंची न हो क्योंके ये ज़मीन	चलते थे उस जा पे जिब्रईल अमीन

जहाँ तक मुम्किन हो मदीने में और बिन खुसूस मस्जिद में सदक़ा दे और खुसूसियत के साथ सादात और ज़ुर्रायते पैग़ंबर को जिसमें अज़ीम अज्र सवाब रखा गया है।
अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के मोतबर रिवायात में वारिद हुआ है के मदीने में एक दिरहम सदक़ा दूसरे मकाम पर दस हज़ार दिरहम के बराबर है।
और अगर मुम्किन हो तो मुजावेरत इख़्तयार करो के यहाँ मुजावेरत मुस्तहब है और इसकी फ़ज़ीलत में बा कसरत अहादीस वारिद हुई हैं।

سَقَی اللّٰهُ قَبْرًا بِالْمَدِینَةِ غَیْثَهُ　　فَقَدْ حَلَّ فیهِ الاَمْنُ بِالْبَرَکَاتِ
نَبِیُّ الْهُدٰی صَلَّی عَلَیْهِ مَلِیکُهُ　　وَبَلَّغَ عَنَّا رُوحَهُ التُّحَفَاتِ
وَصَلَّی عَلَیْهِ اللّٰهُ مَا ذَرَّ شَارِقٌ　　وَلَاحَتْ نُجُومُ اللَّیْلِ مُبْتَدِرَاتِ

ऐ खुदा इस क़ब्र पर बाराने नूर	जिस से है हर अमन व बरकत का ज़ुहूर
वो नबी जिस पर है मालिक का सलाम।	भेजते हैं हम भी रहमत का पैयाम।
रहमते हक इस पे ता राज़े शुमार।	जब तलक बाक़ी है ये कील व नेहार।

वर्ग - ४

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत की फ़ज़ीलत और उसका तरीक़ा

मतलबे अव्वल - अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत की फ़ज़ीलत

शेख़ तूसी ने सनदे सहीह के साथ मोहम्मद बिन मुस्लिम से इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) का यह बयान नक़्ल किया है के खुदावंदे आलम ने मलाएका से ज़्यादा कोई मख़लूक़ नहीं पैदा की है। और यह मलाएका सत्तर हज़ार की तादाद में नाज़ल होकर बैतुल मामूर का तवाफ़ करते हैं और वहाँ से फ़ारिग़ होने के बाद ख़ाने काबा को जाते हैं और तवाफ़े ख़ाने काबा को तमाम करने के बाद क़ब्रे पैग़ंबर पर आकर सलाम करते हैं। इसके बाद क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) पर सलाम करने के लिए हाज़र होते हैं। और इस सबके बाद क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) पर आकर सलाम करते हैं और आसमान की तरफ़ वापस चले जाते हैं। और इसके बाद दूसरा गरोह नाज़ल होता है और यह सिलसिला क़यामत तक यूँही बाक़ी रहेगा। फिर फ़रमाया के जो शख़्स अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत करे और आपके हक़ को पहचानता हो यानी आपको इमामे वाजिबुल इताअत और ख़लीफ़ए बिला फ़स्ल पैग़ंबर मानता हो और किसी ग़ुरूर व तकब्बुर की बिना पर ज़ियारत के लिए न आया हो तो परवरदिगार उसके लिए एक लाख शहीदों का अज्र इनायत फ़रमाता है।

और उसके तमाम पिछले और आइंदा गुनाहों को माफ़ कर देता है। और रोज़े क़यामत उसे इस हाल में महशूर करता है के हौले क़यामत से महफ़ूज़ रहे और उसका हिसाब आसान हो जाए और मलाएका रहमत उसका इस्तेक़बाल करें और जब ज़ियारत से वापस हो तो मलाएका उसकी मशायत कर के उसे उसके घर तक पहुँचाएं और अगर बीमार हो जाए तो उसकी अयादत करें और अगर मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ चलें। और उसके लिए तलबे मग़फ़ेरत करते रहें।

सय्यद अब्दुल करीम बिन ताऊस ने फ़रहतुल ग़ुर्रा में आं हज़रत (अ.स.) से रिवायत की है के जो व्यक्ति पैदल ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) को जाए परवरदिगार हर क़दम पर एक हज या उमरे का सवाब लिख देता है। और अगर पैदल ही वापस आ जाए तो दो हज और दो उमरे का सवाब अता फ़रमाता है।

उन्हीं हज़रत से रिवायत है के आपने इब्ने मारिद से फ़रमाया के जो व्यक्ति हमारे जद अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत उनके हक़ को पहचानते हुए करे खुदा उसके लिए हर क़दम पर हज्जे मक़बूल और उमरह-ए-पसंदीदा का अज्र देता है।

और याद रखो के आतिशे जहन्नम उन क़दमों तक नहीं पहुँच सकती जो राहे ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) में गुबार आलूदा हो गए हों चाहे इंसान प्यादा ज़ियारत के लिए जाए चाहे सवार होकर। अय इब्ने मारिद इस हदीस को आबे ज़र से लिख लो। नीज़ इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के पुश्ते कूफ़ा पर एक क़ब्र है जहाँ कोई भी रंजीदा और दर्दमंद इंसान अगर पनाह हासिल कर तो खुदा उसको शिफ़ा देगा।

रिवायात से ज़ाहिर होता है के खुदा ने क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और क़ोबूरे औलादे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) को ख़ाफ़ज़दा लोगों की पनाहगाह मुज़तर अफ़राद का सहारा और रूए ज़मीन के लिए अमान क़रार दिया है के जो ग़मज़दा वहाँ पहुँच जाए उसका ग़म ज़ाएल हो जाता है और जो दर्द का मारा अपने को उस जगह मस कर दे उसे शिफ़ा हासिल हो जाती है। और जो वहां पनाह लेगा उसे अमान मिल जाती है।

सय्यद अब्दुल करीम बिन ताऊस ने मोहम्मद बिन अली शाबानी से रिवायत की है के मेरे वालिद और मेरे चचा ख़ामोशी से रात में ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के लिए २६० हिजरी में गए। उस समय मैं बच्चा था। मगर जब हमलोग हज़रत की क़ब्र के पास पहुँचे तो देखा के क़ब्र के चारो तरफ़ सियाह पत्थर लगे हुए हैं। और वहाँ कोई तामीर नहीं है। करीब जाने के बाद हम में से किसी ने क़ुरआन पढ़ना शुरू किया, कोई नमाज़ और कोई ज़ियारत पढ़ने लगा। उस हाल में हमने देखा के एक शेर हमारी तरफ़ आ रहा है। जब वह एक नैज़े के फ़ासले तक आ गया तो हम उस जगह से दूर हो गए तो वह शेर क़ब्रे मुतह्हर के पास गया और अपने को क़ब्र से मस करना शुरू कर दिया। हममे से एक व्यक्ति क़रीब गया और इस मंजर को देखा मगर शेर उसकी तरफ़ मुतवज्जे नहीं हुआ और वापस चला गया। उसने आकर हमको इन हालात की ख़बर दी जिसकी बिना पर हमारा ख़ाफ़ दूर हो गया। और हम सब क़रीब गए और हमने उस मंज़र को अपनी आंखों से देखा के उसके हाथों में ज़ख़्म है और वह उस ज़ख़्मी हाथ को आपकी क़ब्र से मस कर रहा है। एक साअत तक यही सूरत बरक़रार रही। इसके बाद वह चला गया और हम फिर नमाज़ व ज़ियारत व ाक़िरअते क़ुरआन में मशग़ूल हो गए।

शेख़ मुफ़ीद ने नक़्ल किया है के एक रोज़ हारून रशीद शिकार के लिए कूफ़े से गया और गरीईन व सुवैद की तरफ़ कुछ हिरन देखे। हुक्म दिया के बाज़ और शिकारी कुत्तों को छोड़ दिया जाए। जब हिरनों ने इस हमले को देखा तो एक बुलंदी पर पनाह ली। बाज़ भी एक जगह पर जा कर ठहर गए। शिकारी कुत्ते भी आगे नहीं बढ़े। हारून हैरत में पड़ गया।

जब वह हिरन नीचे आए तो फिर जानवरों ने हमला किया और हिरनों ने दोबारा बुलंदी पर पनाह ली और शिकारी जानवर फिर अपने इरादे से बाज़ आ गए। तीसरी बार फिर यही सूरते हाल पेश आई और हारून को सख़्त हैरत हुई। उसने ग़ुलामों को हुक्म दिया के फ़ौरन जाएँ और किसी ऐसे व्यक्ति को लाएं जो उस जगह के हालात से वाक़िफ़ हो।

ग़ुलाम गए और बनी असद के एक ज़इफ़ व्यक्ति को लेकर आए। हारून ने पूछा यह बुलंदी क्या है और यहाँ यह क्या कैफ़ियत है? उसने कहा के अगर

मेरे लिए अमान हो तो मैं क़िस्सा बयान करूँ। हारून ने खुदा से अहद किया के कोई अज़ीयत न देगा और वह व्यक्ति अमान में रहेगा। तो उसने कहा के मुझे मेरे बाप ने अपने आबाओ अजदाद के हवाले से बताया है के उस बुलंदी पर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की क़ब्र है और परवरदिगारे आलम ने उसको हरमे अम्नो अमान बना दिया है। जो व्यक्ति भी उस जगह पनाह ले लेगा वह अमान में रहेगा।

अरब में यह मसल राएज है के अहम्मा बिल बहीरल जरात - यानी फलाँ व्यक्ति उससे ज़्यादा हिफ़ाज़त करने वाला है जितनी पनाह उस व्यक्ति ने दी थी जो टिीयों की हिफ़ाज़त करने वाला था। उसका क़िस्सा यह है के क़बीला बनी ताई का एक सहरानशीन जिसका नाम मदलज बिन सुवैद था एक दिन अपने ख़ेमें में बैठा हुआ था के उसने देखा के बनी ताई की एक जमाअत आई है जो अपने साथ मुख़्तलिफ़ बरतन लिए हुए थे। तो उसने पूछा के ख़ैरियत है? कहा के यहाँ टिीयां आपके ख़ैमें के अतराफ़ बहुत आ गई है। हम उन्हें पकड़ने आए हैं। उसने यह सुना तो फ़ौरन सवार हो गया और अपना नैज़ा उठा कर सामने खड़ा हो गया। कहा के खुदा की क़सम अगर किसी ने उन टिीयों को हाथ भी लगाया तो मैं उसको ज़िब्ह कर दूंगा। यह टिीयां जो मेरी पनाह में आई हैं तुम उन्हें पकड़ना चाहते हो? यह नहीं हो सकता। यहाँ तक के आफ़ताब बुलंद हो गया और टिीयां उड़ गईं। उसने कहा के अब यह मेरे जवार से चली गईं है,अब तुम लोग उन्हें पकड़ सकते हो।

साहेबे कामूस का बयान है के ज़ुल आबाद एक बाईज़्ज़त व्यक्ति था जिसके बारे में बाज़ लोगों का कहना है के वह अक़सम बिन सैफ़ी का दादा था और ताएफा मुज़र हर साल उसको ख़िराज देते थे। जब वह बूढ़ा हो गया तो तमाम क़बाएल के दरमियान उसे ख़िराज जमा करने के लिए ले जाते थे। वह इस क़दर अज़ीज़ व मोहतरम था के जो शख़्स भी ख़ौफज़दा होकर उसके तख़्त के पास आ जाता था वह महफ़ूज़ हो जाता था। भूखा आकर सेर हो जाता था। तो अगर एक मर्दे आराबी के तख़्त में यह इज़्ज़त की बात हो तो क्या हैरत की बात है के परवरदिगार अपने वली की क़ब्र को तमाम ख़ाफ़ ज़दा लोगों की पनाहगाह बना दे। जहाँ बेचारों की फ़रयाद रसी और बीमारों को

शिफ़ा दी जाए। लेहाज़ा जहां भी रहो अगर मुम्किन है तो अपने को उस जगह पहुँचा दो और क़ब्रे अक़दस से लिपट कर फ़रयाद करो ताके परवरदिगार दुनिया व आख़िरत की हलाकत से बचा ले।
शायर ने क्या ख़ूब कहा है:

بِنَجَاةِ الْعُصَاةِ يَوْمَ لِقَاهَا　　لُذْ اِلٰى جُودِهٖ تَجِدْهُ زَعِيمًا

उसकी पनाह ढूँड अगर होशियार है।　जो रोज़े महशर आसियों का ज़िम्मेदार है।

سَامِعٌ مَا تُسِرُّ مِنْ نَجْوَاهَا　　عَائِذٌ لِلْمُؤَمِّلِينَ مُجِيبٌ

फ़ित्रत का इसकी लुत्फ़ोकरम एक शआर है।　हर हर्फ़े राज़दार का भी वही राज़दार है।

दारूस्सलाम में शेख़ दैलमी से नक़्ल किया गया है के नजफ़ के बुज़ुर्गों की एक जमाअत ने रिवाय की है के किसी व्यक्ति ने ख़्वाब में देखा के इस शहरे मुक़द्दस में जितनी क़बरें हैं सब से एक रस्सी का सिरा निकला हुआ है जो कुब्बए अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मिला हुआ है तो उसने बरजस्ता यह शेर कहा:

اِبِی شَبَّرٍ اَکْرِمْ بِهٖ وَشُبَیْرٍ　　اِذَا مُتُّ فَادْفِنِّی اِلٰی جَنْبِ حَیْدَرٍ

दफ़नाना मुझको रूए नजफ़ के दयार मे।　हसनैन ज़ी शरफ़ के पिदर के जवार मे।

وَلَا اتَّقِی مِنْ مُنْکَرٍ وَنَکِیرٍ　　فَلَسْتُ اَخَافُ النَّارَ عِنْدَ جِوَارِهٖ

इस बारगाह मे ख़ाफ़ नही है सईर का।　होता नही यहाँ गुज़र यहाँ मुनकिर नकीर का।

اِذَا ضَلَّ فِی الْبَیْدَا عِقَالُ بَعِیرِ　　فَعَارٌ عَلٰی حَامِی الْحِمٰی وَهُوَ فِی الْحِمٰی

इस वास्ते के होता है बादनाम पासबान।　हो जाए गुम ऊंट के गर्दन की रीसमान।

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत का तरीक़ा

वाज़ेह रहे के आं हज़रत (अ.स.) के लिए जो ज़ियारतें नक़्ल की गई हैं उनकी दो किस्में हैं। एक ज़ियारते मुतलक़ा है जिसका कोई समय मोअय्यन नहीं है। और एक ज़ियारते मख़सूसा है जिसका समय मोअय्यन है। लेहाज़ा उन ज़ियारात का ज़िक्र दो मक़ासिद के ज़ैल में होगा।

पहला मक़सद

ज़ियारते मुतलक़ा जो बहुत हैं और हम इस मकाम पर सिर्फ़ चंद ज़ियारतों का ज़िक्र कर रहे हैं:

पहली ज़ियारत

(१) वह ज़ियारत है जिसको शेख़ मुफ़ीद, शहीद, सय्यद इब्ने ताऊस और दूसरे बुज़ुर्गों ने नक़्ल किया है जिसका तरीक़ा यह है के जब हज़रत की ज़ियारत का इरादा हो तो पहले गुस्ल करो। पाक लिबास पहनो, खुश्बू इस्तेमाल करो और अगर मुम्किन न हो तो कोई हर्ज नहीं है। इसके बाद घर से बाहर निकलो और यह कहो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ خَرَجْتُ مِنْ مَّنْزِلِیْ اَبْغِیْ فَضْلَكَ وَ اَزُوْرُ وَصِیَّ نَبِیِّكَ

खुदाया मै अपने घरसे निकला हूँ तेरे फ़ज़्ल का तलबगार हूँ और तेरी नबी के वसी की ज़ियारत

صَلَوَاتُكَ عَلَیْهِمَا اَللّٰهُمَّ فَیَسِّرْ ذٰلِكَ لِیْ وَ سَبِّبِ الْمَزَارَ لَهٗ وَ

का इरादा है तेरी रहमत हो उन दोनो पर खुदाया उनको मुझ पर आसान कर दे और उन की

اخْلُفْنِیْ فِیْ عَاقِبَتِیْ وَ حُزَانَتِیْ بِاَحْسَنِ الْخِلَافَةِ یَا اَرْحَمَ

ज़ियारत के लिए सबब फ़राहम कर और मेरे अंजामे कार मे मेरा जानशीन हो और बेहतरीन

الرَّاحِمِيْنَ.

जानशीन ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले

उसके बाद इस शान से आगे बढ़ो के तुम्हारी ज़बान पर यह ज़िक्र रहें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए। अल्लाह ताला पाक है। कोई माबूद नही सिवा अल्लाह के।

उसके बाद जब ख़ंदके कूफ़ा के पास पहुँचो तो ठहर कर यूँ कहो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَهْلَ الْكِبْرِيَآءِ وَ الْمَجْدِ وَ الْعَظَمَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, किब्रयाई और इज़्ज़त और अज़मत वाला है अल्लाह बड़ा है तकबीर,

اَهْلُ التَّكْبِيْرِ وَ التَّقْدِيْسِ وَ التَّسْبِيْحِ وَ الْاَلَآءِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ مِمَّا

तक़दीस, तसबीह और नेमतोंवाला है अल्लाह बड़ा है उन सब से जिन से ख़ाफ़ करता हूँ और डरता

اَخَافُ وَ اَحْذَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ عِمَادِيْ وَ عَلَيْهِ اَتَوَكَّلُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَجَآئِيْ

हूँ अल्लाह बड़ा है उसी पर मेरा एतेमाद है और असी पर मै तवक्कुल करता हूँ अल्लाह बड़ा है वो मेरी

وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ وَلِيُّ نِعْمَتِيْ وَ الْقَادِرُ عَلٰى طَلِبَتِيْ تَعْلَمُ

उम्मीद है और असी की तरफ़ तौबा करता हूँ खुदाया तू मेरा वलीए नेमत है और मेरे मतलूब पर

حَاجَتِیْ وَ مَا تُضْمِرُهٗ هَوَاجِسُ الصُّدُوْرِ وَ خَوَاطِرُ النُّفُوْسِ

क़ादिर है मेरी हाजत को जानता है और जो ज़मीरों मे छुपा हुआ है और सिनों और नफ़सों मे मख़फ़ी

فَاَسْئَلُكَ بِمُحَمَّدٍ الْمُصْطَفَى الَّذِیْ قَطَعْتَ بِهٖ حُجَجَ الْمُحْتَجِّیْنَ وَ

है पस मै तुझ से दरख़्वास्त करता हूँ मोहम्मद मुस्तफ़ा के वासते से जिस के ज़रिए तू ने कज बहसी

عُذْرَ الْمُعْتَذِرِیْنَ وَ جَعَلْتَهٗ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِیْنَ اَنْ لَا تَحْرِمَنِیْ ثَوَابَ

करने वालो की दलील को तोड़ दिया है और उज़्र करनेवालों के उज़्र को काट दिया है और तूने उनको

زِیَارَةِ وَلِیِّكَ وَ اَخِیْ نَبِیِّكَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ قَصْدَهٗ وَ تَجْعَلَنِیْ

रहमतुल आलमीन बनाया है के मुझको अपने नबी के भाई अमीरूल मोमिनीन (अ) की ज़ियारत के

مِنْ وَفْدِهِ الصَّالِحِیْنَ وَ شِیْعَتِهِ الْمُتَّقِیْنَ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ

सवाब से महरूम न करना और उसके हिस्से से महरूम न करना और तू मुझको क़रार दे नेक वारिद

الرَّاحِمِیْنَ.

होने वालों मे और उस के मुत्तक़ी शिओं मे अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

उसके बाद जब क़ब्रे मुबारक दूर से नज़र आए तो यूँ कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی مَا اخْتَصَّنِیْ بِهٖ مِنْ طِیْبِ الْمَوْلِدِ وَ اسْتَخْلَصَنِیْ

हम्द खुदा के लिए है के तूने मुझको तय्यबुल विलादत होने से मख़सूस किया और ख़लिस किया

اِكْرَامًا بِهٖ مِنْ مُوَالَاةِ الْاَبْرَارِ السَّفَرَةِ الْاَطْهَارِ وَ الْخِيَرَةِ

मुझको इक्राम के साथ नेक सफ़ीर पाक और बरगुज़ीदा और बेहतर लोगों की मोहब्बत की वजह से

الْاَعْلَامِ اَللّٰهُمَّ فَتَقَبَّلْ سَعْيِیْ اِلَيْكَ وَ تَضَرُّعِیْ بَيْنَ يَدَيْكَ وَ

खुदाया तू मेरी कोशिश को अपनी तरफ़ क़ुबूल कर ले और मेरे तजर्रो को अपनी बारगाह मे क़ुबूल

اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ لَا تَخْفٰی عَلَيْكَ اِنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْمَلِكُ

कर ले और बख़्श दे मेरे उन गुनाहों को जो तुझ पर मख़फ़ी नही हैं बेशक तू अल्लाह और बादशाह व

الْغَفَّارُ.

बख़शनेवाला है।

लेखक का बयान है के क़ुब्बे मुबारक को देखते समय ज़ाएर में एक ख़ास खुशी और शौक़ पैदा होता है और उसकी तमाम तर तवज्जो आं हज़रत (अ.स.) की तरफ़ होती है। और चाहता है के जिस ज़बान ओ बयान से मुम्किन हो आं हज़रत (अ.स.) की मदह व सना करे। खुसूसन अगर साहेबे इल्म ओ कमाल हो तो चाहता है के उसकी नज़र में अगर फ़सीह व बलीग अशआर हों तो उन्हीं के ज़रीए अपने हालात की तरजुमानी करे इस लिए ज़रूरत के तहत मैंने चाहा के क़सीदे हाईया अज़रिया में से चंद शेर इस मकाम पर और ज़िक्र कर दिए जाएं उम्मीद है के इस बंदे हक़ीर की तरफ़ से भी जिसका नामए आमाल सियाह है उस इमाम तक सलाम पहुँच जाएगा जिसका क़ुब्बा सफ़ैद है। और लोग दुआए ख़ैर से फ़रामोश नहीं करेंगे। वह अशआर यह हैं:

اَيُّهَا الرَّاكِبُ الْمُجِدُّ رُوَيْدًا — بِقُلُوْبٍ تَقَلَّبَتْ فِیْ جَوَاهَا

महवे तवाफ़ दिल है अभी बारगाह मे, — ऐ शैसवार चल ज़रा आहिसता राह मे।

اِنْ تَرَاءَتْ اَرْضُ الْغَرِيَّيْنِ فَاخْضَعْ
अर्ज़ नजफ़ जो आए तुझे दूर से नज़र।

وَاخْلَعِ النَّعْلَ دُوْنَ وَادِي طُوَاهَا
नालैन को उतार दे और ख़ाक पर उतर,

وَاِذَا شِمْتَ قُبَّةَ الْعَالَمِ
आए अगर वो काबए आली निगाह मे

الاَعْلٰى وَاَنْوَارُ رَبِّهَا تَغْشَاهَا
अनवारे हक़ का जलवा है जिस बारगाह मे,

فَتَوَاضَعْ فَثَمَّ دَارَةُ قُدْسٍ
लाज़िम है सर झुका दे इस दर के रूबरू

تَتَمَنَّى الاَفْلَاكُ لَثْمَ ثَرَاهَا
बोसा की जिस के चश्मे फ़लक को है आरज़ू

قُلْ لَهُ وَالدُّمُوْعُ سَفْحُ عَقِيْقٍ
क़ुरबान कर के अश्कों के दूरहाऐ आबेदाअ,

وَالْحَشَا تَصْطَلِي بِنَارِ غَضَاهَا
कलबे तपॉ के रोज़ को यू करना आशकार,

يَابْنَ عَمِّ النَّبِيِّ اَنْتَ يَدُ اللّٰهِ
ऐ इबने अम मुर्सले आज़म तेरे निसार

الَّتِي عَمَّ كُلَّ شَيْءٍ نَدَاهَا
दसते करम हुज़ूर का है दसते किरदेगार।

اَنْتَ قُرْآنُهُ الْقَدِيْمُ وَاَوْصَا
है ज़ाते पाक मुसहफ़े ख़ैराते किब्रिया

فُكَ آيَاتُهُ الَّتِي اَوْحَاهَا
औसाफ़े हक़ है सूरते आयाते किब्रिया

خَصَّكَ اللّٰهُ فِي مَآثِرَ شَتّٰى
मालिक ने तुझको बख़्शे वो औसाफ़ ला ज़वाल,

هِيَ مِثْلُ الاَعْدَادِ لَا تَتَنَاهٰى
जिनकी नही ज़मान मे मुमकिन कोई मिसाल,

لَيْتَ عَيْنًا بِغَيْرِ رَوْضِكَ تَرْعٰى
ऐ काश जो निगाह भी देखते तेरे सिवा,

قَذِيَتْ وَاسْتَمَرَّ فِيْهَا قَذَاهَا
पेवस्त इसमें ख़ारे अदावत रहे सदा

اَنْتَ بَعْدَ النَّبِيِّ خَيْرُ الْبَرَايَا
बादे रसूल तो था ज़माने मे इंतेख़ाब,

وَالسَّمَا خَيْرُ مَا بِهَا قَمَرَاهَا
यानी के जेबे चर्ख़ थे दो महेरो माहताब

لَكَ ذَاتٌ كَذَاتِهِ حَيْثُ لَوْلَا
जब अपना मिस्ल अहमदे मुरसल ने पा लिया,

اَنَّهَا مِثْلُهَا لَمَا آخَاهَا
हुक्मे खुदा से तुझ को बरादर बना लिया

قَدْ تَرَاضَعْتُمَا بِثَدْيِ وِصَالٍ
कलबे तपॉ के रोज़ को यू करना आशकार,

كَانَ مِنْ جَوْهَرِ التَّجَلِّي غِذَاهَا

यानी ग़िज़ा थी जौहरे अनवारे किब्रिई — दोनो ने पाई सिनए इसलाम में ग़िज़ा,

هِیَ عَیْنُ الْقَذَا وَاَنْتَ جَلَاهَا — یَا اَخَا الْمُصْطَفٰی لَدَیَّ ذُنُوبٌ

काँटा है मेरी आँख का और तू पनाह गाह — ऐ इबने मुरसले आलम मेरे गुनाह,

دَرَجَاتٌ لَا یُرْتَقٰی اَدْنَاهَا — لَكَ فِی مُرْتَقَی الْعُلٰی وَالْمَعَالِی

आगात तक भी जिस के रसाई है एक मोहाल — क़ुदरत ने तुझको बख़्शा है वो औज ला जवाल,

جَعَلَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ فِدَاهَا — لَكَ نَفْسٌ مِنْ مَعْدَنِ اللُّطْفِ صِیغَتْ

क़दमो पे तेरे दहेर को क़ुरबान कर दिया। — लुत्फ़े खुदा ने तुझको वो जिशान कर दिया,

उसके बाद जब दरवाज़ए नज़फ़ पर पहोंचे तो यूं कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَا اَنْ

हम्द है उस खुदा की जिस ने हम को हिदायत दी उस की दीन की अगर वो हमारी हिदायत न

هَدٰینَا اللّٰهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَیَّرَنِیْ فِیْ بِلَادِهٖ وَ حَمَلَنِیْ عَلٰی

करता तो हम हिदायत न पाते हम्द खुदा है जिस ने हम को अपने शहरो की सैर कराई। और अपने

دَوَآبِّهٖ وَ طَوٰی لِیَ الْبَعِیْدَ وَ صَرَفَ عَنِّیْ الْمَحْذُوْرَ وَ دَفَعَ عَنِّیْ

चारपाय पर हमको उठाया और दूरी को मेरे लिए लपेट दिया और ख़तरे को मुझसे दूर कर दिया

الْمَكْرُوْهَ حَتّٰی اَقْدَمَنِیْ حَرَمَ اَخِیْ رَسُوْلِهٖ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ

और नापसंदीदा को दफ़ा किया यहाँ तक के मुझको रसूले खुदा (स) के भाई के हरम मे दाख़ल

اٰلِهٖ.

किया।

उसके बाद शहर में दाख़िल होते समय यह कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَدْخَلَنِیْ هٰذِهِ الْبُقْعَةَ الْمُبَارَكَةَ الَّتِیْ بَارَكَ اللّٰهُ فِیْهَا

हम्द खुदा के लिए है जिस ने मुझको दाख़ल किया है उस मुतबर्रिक घर मे जिसको अल्लाह ने

وَاخْتَارَهَا لِوَصِیِّ نَبِیِّهٖ اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْهَا شَاهِدًا لِیْ.

बरकत दी है और उसको इख़तियार किया है अपने नबी (स) के भाई के हरम मे दाख़िल किया।

उसके बाद जब दरगाहे मुक़द्दस तक पहुँचे तो कहे:

اَللّٰهُمَّ لِبَابِكَ وَقَفْتُ وَ بِفِنَآئِكَ نَزَلْتُ وَ بِحَبْلِكَ اعْتَصَمْتُ وَ

खुदाया तेरे दरवाज़े पर खड़ा हूँ वली से मुतवस्सील हूँ उस पर तेरी रहमत हो तो उस को ज़ियारते

لِرَحْمَتِكَ تَعَرَّضْتُ وَ بِوَلِیِّكَ صَلَوَاتُكَ عَلَیْهِ تَوَسَّلْتُ فَاجْعَلْهَا

मक़्बूला और मुस्तेजाब दुआ क़रार दे दे।

زِیَارَةً مَقْبُوْلَةً وَدُعَآءً مُسْتَجَابًا.

उसके बाद दरे सहेन पर पहुँच कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْحَرَمَ حَرَمُكَ وَالْمَقَامَ مَقَامُكَ وَاَنَا اَدْخُلُ اِلَيْهِ

खुदाया हरम तेरा हरम है और मकाम तेरा मकाम है और मै उस मे दाख़िल हुआ हूँ और मै तुझसे

اُنَاجِيكَ بِمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّي وَمَنْ سِرِّيْ وَنَجْوَايَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

मुनाजात कर रहा हूँ उस चीज से के जिसका तू मुझसे ज़्यादा जानने वाला है और मेरे राज़ और

الْحَنَّانِ الْمَنَّانِ الْمُتَطَوِّلِ الَّذِي مِنْ تَطَوُّلِهِ سَهَّلَ لِي زِيَارَةَ

मुनाजात का जानने वाला है हम्द है खुदाए महेरबान, एहसान करनेवाले के लिए जिसने अपने

مَوْلَايَ بِاِحْسَانِهِ وَلَمْ يَجْعَلْنِي عَنْ زِيَارَتِهِ مَمْنُوعًا وَلَا عَنْ وِلَايَتِهِ

एहसान से मेरे लिए मौला की ज़ियारत को आसान कर दिया और मुझको उनकी ज़ियारत से नही

مَدْفُوعًا بَلْ تَطَوَّلَ وَمَنَحَ اَللّٰهُمَّ كَمَا مَنَنْتَ عَلَيَّ بِمَعْرِفَتِهِ

रोका है। और उनकी विलायत से दफ़ा नही किया है बल्कि एहसान किया है और अता किया है

فَاجْعَلْنِي مِنْ شِيعَتِهِ وَاَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ بِشَفَاعَتِهِ يَا اَرْحَمَ

खुदाया जिस तरह तूने उनकी मारेफ़त के ज़रिए मुझपर एहसान किया है तो मुझको उनके शियों मे

الرَّاحِمِينَ

क़रार देदे और मुझको उन की शिफ़ाअत से जन्नत मे दाख़िल कर ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले

उसके बाद सहन में दाख़िल हो कर कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَكْرَمَنِیْ بِمَعْرِفَتِهٖ وَ مَعْرِفَةِ رَسُوْلِهٖ وَ مَنَّ

हम्द है खुदा के लिए जिसने मुझको मुकर्रम किया है अपनी मारेफ़त से और अपने रसूल की मारेफ़त

فَرَضَ عَلَیَّ طَاعَتَهٗ رَحْمَةً مِنْهُ لِیْ وَ تَطَوُّلًا مِنْهُ عَلَیَّ وَ مَنَّ عَلَیَّ

से और जिसकी मुझ पर इताअत फ़र्ज़ की है ये उसकी रहमत है मेरे लिए और ये उसका एहसान है मेरे

بِالْاِیْمَانِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَدْخَلَنِیْ حَرَمَ اَخِیْ رَسُوْلِهٖ وَ اَرَانِیْهِ

ऊपर और उसने एहसान किया है मुझ पर ईमान के ज़रिए हम्द है उस खुदा के लिए जिसने दाख़िल किया

فِیْ عَافِیَةٍ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ جَعَلَنِیْ مِنْ زُوَّارِ قَبْرِ وَصِیِّ رَسُوْلِهٖ

है मुझको अपने रसूल के भाई के हरम मे और मुझको आफ़ीयत दी है हम्द है उस खुदा के लिए जिसने

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

मुझको अपने रसूल के वसी की क़ब्र के ज़ाएरीन मे क़रार दिया है। मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा

عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ جَآءَ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ عَلِیًّا عَبْدُ

कोई माबूद नही है वो एक है, उसका कोई शरीक नही है मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दे और

اللّٰهِ وَ اَخُوْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

रसूल हैं हम को अल्लाह के पास लाए और मै गवाही देता हूँ के अली अल्लाह के बन्दे और रसूल अल्लाह के

وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی هِدَایَتِهٖ وَ تَوْفِیْقِهٖ لِمَا دَعَا اِلَیْهِ

भाई हैं। अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह के अलावा कोई खुदा नही है, अल्लाह बड़ा

مِنْ سَبِيْلِهٖ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ اَفْضَلُ مَقْصُوْدٍ وَ اَكْرَمُ مَاْتِيٍّ وَ قَدْ

है और हम्द खुदा के लिए है उस की हिदायत और तौफ़िक़ देने पर के राहे दीन की तरफ़ बुलाया। खुदाया

اَتَيْتُكَ مُتَقَرِّبًا اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَ بِاَخِيْهِ اَمِيْرِ

तू बेहतरीन मक़सूद है। और करीमतरीन वो है जिस के पास आया जाता हे और मै तेरे पास आया हूँ तेरी

الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْطَالِبٍ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

तरफ़ तक़र्रूब हासिल करते हुए तेरे नबीए रहमत के वासते से और उनके भाई अमीरूल मोमिनीन अली

وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَلَا تُخَيِّبْ سَعْيِيْ وَ انْظُرْ اِلَيَّ نَظْرَةً رَّحِيْمَةً تَنْعَشُنِيْ

इब्ने अबी तालिब के वास्ते से पस तू रहमत नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी कोशिश

بِهَا وَ اجْعَلْنِيْ عِنْدَكَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ

को नाकाम न कर और मेरी तरफ़ निगाहे रहमत डाल के उस से अपने काम को अंजाम दे लूँ और मुझको

الْمُقَرَّبِيْنَ.

अपने पास दुनिया और आख़िरत मे इज़्ज़तदार और मुक़र्रबीन मे क़रार दे

उसके बाद रवाक़ के दरवाज़े पर पहोंचे तो यूं कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ اَمِيْنِ اللّٰهِ عَلٰى وَحْيِهٖ وَ عَزَآئِمِ اَمْرِهٖ

सलाम हो रसूल अल्लाह पर जो अल्लाह के अमीन हैं उस की वही पर और उस के अज़ाएम उमूर पर और

اَلْخَاتِمِ لِمَا سَبَقَ وَ الْفَاتِحِ لِمَا اسْتُقْبِلَ وَ الْمُهَيْمِنِ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهٖ

साबिक़ के ख़त्म करनेवाले और आईंदा के लिए उलूम के दरवाज़े खोलनेवाले हैं और सब से आला व

وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ السَّكِيْنَةِ اَلسَّلَامُ عَلَى

रफ़ा हैं और अल्लाह की रहमत और बरकात हो सलाम हो साहेबे विक़ार व सकीना पर। सलाम हो मदीना

الْمَدْفُوْنِ بِالْمَدِيْنَةِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَنْصُوْرِ الْمُؤَيَّدِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

मे मदफ़ून पर, सलाम हो मनसूर और मुवि□हद पर, सलाम हो अबुल क़ासिम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर

اَبِي الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद रवाक़ में दाख़िल हो और दाख़ल होते हुए दाहने पैर को आगे बढ़ाएं, हरम के दरवाज़े पर खड़े होकर यह कहें:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है वो एक है उसका कोई शरीक नही है

عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ جَآءَ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِهٖ وَ صَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ

और मे गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं और हक उस के पास से लाए हैं और

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ وَ

मुर्सलीन की तसदीक़ की है, सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा सलाम हो आप पर ऐ हबीबे खुदा

خِيَرَتَهٗ مِنْ خَلْقِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبْدِ اللّٰهِ وَ

और खुदा की बेहतरीन मख़लूक, सलाम हो अमीरूल मोमिनीन (अ) पर जो अल्लाह के बन्दे और

اَخِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ يَا مَوْلَايَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبْدُكَ وَ ابْنُ

रसूले खुदा के भाई हैं। ऐ मेरे मौला ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) आपका ग़ुलाम और ग़ुलाम का

عَبْدِكَ وَ ابْنُ اَمَتِكَ جَآئَكَ مُسْتَجِيْرًا بِذِمَّتِكَ قَاصِدًا اِلٰى

फ़रज़ंद आपकी कनीज़ का बेटा आप के पास आपकी पनाह मे आया है आप के हरम का क़सद

حَرَمِكَ مُتَوَجِّهًا اِلٰى مَقَامِكَ مُتَوَسِّلًا اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِكَ اَ

किया है आप के मकाम की जानिब मुतवज्ञे है आप के तवस्सुल से अल्लाह की तरफ़ आया है क्या

اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ؟ اَاَدْخُلُ يَا حُجَّةَ

मै दाख़िल हो जाऊँ मेरे मौला। क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अमीरूल मोमिनीन क्या मै दाख़िल हो

اللّٰهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَمِيْنَ اللّٰهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا مَلَآئِكَةَ اللّٰهِ الْمُقِيْمِيْنَ

जाऊँ, ऐ हुज्ञते खुदा क्या मै दाख़िल हो जाऊँ, ऐ अमीने खुदा क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मलाएका

فِيْ هٰذَا الْمَشْهَدِ؟ يَا مَوْلَايَ اَتَاْذَنُ لِيْ بِالدُّخُوْلِ اَفْضَلَ مَا

खुदा जो इस रौज़े मे मुक़ीम हैं, ऐ मेरे मौला क्या आप इजाज़त देते हैं दाख़ल होने की वो बेहतरीन

اَذِنْتَ لِاَحَدٍ مِّنْ اَوْلِيَآئِكَ؟ فَاِنْ لَّمْ اَكُنْ لَّهٗ اَهْلًا فَاَنْتَ اَهْلٌ

इजाज़त जो आप ने अपने दोस्तो मे से किसी को दी हो, पस अगर मै उसका अहेल नही हूँ तो

لِذٰلِكَ.

आप तो उस के अहेल हैं।

उसके बाद आस्ताने को बोसा दे और दाहने पैर को आगे बढ़ाते हुए दाख़ल हो और दाख़ल होते समय यह कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

अल्लाह के नाम से और ज़ाते खुदा से और राहे खुदा मे और मिल्लते रसूले खुदा (स) पर खुदाया

وَ اٰلِهٖ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ وَ تُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ

मुझको बख़्श दे और मुझ पर रहम कर और मेरी तौबा क़ुबूल कर ले, बेशक तू तौबा का क़ुबूल

الرَّحِيْمُ.

करने वाला और रहेम करने वाला है।

उसके बाद क़ब्रे मुतहहर के पास पहुँच कर तवक्कुफ़ करे और क़ब्र का रूख़ कर के यूं कहे:

اَلسَّلَامُ مِنَ اللّٰهِ عَلٰى مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَمِيْنِ اللّٰهِ عَلٰى وَحْيِهٖ وَ

सलाम हो अल्लाह की तरफ़ से मोहम्मद रसूल अल्लाह पर जो अल्लाह के अमीन हैं। इस की वही

رِسَالَاتِهٖ وَعَزَآئِمِ اَمْرِهٖ وَمَعْدِنِ الْوَحْيِ وَالتَّنْزِيْلِ اَلْخَاتِمِ لِمَا

और पैग़ामात पर और उस के अहेम उमूर पर और वही और नुज़ूले हक़ का मअदन है, साबिक़

سَبَقَ وَ الْفَاتِحِ لِمَا اسْتُقْبِلَ وَ الْمُهَيْمِنِ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهِ الشَّاهِدِ

पैग़म्बरो के सिलसिले को ख़त्म करनेवाले और आईंदा के लिए उलूमे आसमानी के दरवाज़े

عَلَى الْخَلْقِ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ

खोलने वाले हैं और सब पर बुलंद हैं। मख़लूक पर गवाह हैं रौशन चिराग़ हैं और सलाम हो

بَرَكَاتُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهِ الْمَظْلُوْمِيْنَ اَفْضَلَ

उन पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और उन

وَ اَكْمَلَ وَ اَرْفَعَ وَ اَشْرَفَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَنْبِيَآئِكَ وَ

के मज़लूम अहलेबैत (अ) पर बेहतरीन, कामिल तरीन, बुलंद तरीन और शरीफ़ तरीन दुरूद

رُسُوْلِكَ وَ اَصْفِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبْدِكَ

जो तूने अपने अंबिया और रसूल मुनतिख़ब बंदो मे से किसी पर भेजा है। खुदाया दुरूद भेज

وَ خَيْرِ خَلْقِكَ بَعْدَ نَبِيِّكَ وَ اَخِيْ رَسُوْلِكَ وَ وَصِيِّ حَبِيْبِكَ الَّذِيْ

अमीरूल मोमिनीन पर जो तेरे बंदे और तेरे नबी के बाद बेहतरीन मख़लूक हैं और तेरे रसुल

انْتَجَبْتَهٗ مِنْ خَلْقِكَ وَ الدَّلِيْلِ عَلٰى مَنْ بَعَثْتَهٗ بِرِسَالَاتِكَ وَ

के भाई और तेरे हबीब के वसी हैं जिनको तूने अपनी मख़लूक मे मुनतिख़ब किया है और

دَيَّانِ الدِّيْنِ بِعَدْلِكَ وَ فَصْلِ قَضَآئِكَ بَيْنَ خَلْقِكَ وَ السَّلَامُ

रहनुमा बनाया है उसकी तरफ़ जिस को तूने मबऊस किया है अपनी रिसालत के साथ और

عَلَيْهِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِهٖ

दीन के हाक़म हैं तेरी अदालत और तेरे मोहकम फ़ैसले के साथ मख़लूक के दरमियान और

الْقَوَّامِيْنَ بِاَمْرِكَ مِنْ بَعْدِهٖ الْمُطَهَّرِيْنَ الَّذِيْنَ ارْتَضَيْتَهُمْ

सलाम हो उनपर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो खुदाया दुरूद भेज उन की औलाद मे

اَنْصَارًا لِدِيْنِكَ وَحَفَظَةً لِسِرِّكَ وَشُهَدَآءَ عَلٰى خَلْقِكَ وَاَعْلَامًا

आइम्मा पर जो तेरे अम्र के साथ क़याम करने वाले हैं उनके बाद जो पाक व पाकीज़ा हैं जिन

لِعِبَادِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَمِيْرِ

को तू ने पसंद किया है अपने दीन की मदद के लिए और अपने राज़ की हिफ़ाज़त के लिए और

الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْطَالِبٍ وَصِيِّ رَسُوْلِ اللهِ وَ خَلِيْفَتِهٖ وَ

अपनी मख़लूक़ पर गवाही और अपने बंदो पर निशानी बना कर। सारी सलवात हो उन सब

الْقَآئِمِ بِاَمْرِهٖ مِنْ بَعْدِهٖ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

के ऊपर सलाम हो अमीरूल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ) पर जो रसूले खुदा के

اَلسَّلَامُ عَلٰى فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ

वसी और ख़लीफ़ा हैं और उनके बाद उनके अम्र के क़ाएम करने वाले और वसीयों के सरदार

سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ

हैं और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। सलाम हो फ़ातेमा बिन्ते रसूल अल्लाह (स) पर जो

سَيِّدَیْ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى

आलमीन की औरतों की सरदार हैं। सलाम हो हसन व हुसैन (अ) पर जो तमाम मख़लूक़ मे

الْاَئِمَّةِ الرَّاشِدِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ اَلسَّلَامُ

जन्नतवालों के जवानो के सरदार हैं। सलाम हा रहबरी करने वाले इमामो पर सलाम हो नबियां

عَلَى الْاَئِمَّةِ الْمُسْتَوْدَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى خَآصَّةِ اللهِ مِنْ خَلْقِهٖ

और रसूलों पर। सलाम हो आइम्मा पर जिनके पास नबी की अमानतें हैं। सलाम हो अल्लाह

اَلسَّلَامُ عَلَى الْمُتَوَسِّمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ

के मख़सूस बंदो पर मख़लूक़ मे। सलाम हो अहले अक़्ल व फ़िरासत पर। सलाम हो उन

قَامُوْا بِاَمْرِهٖ وَ وَازَرُوْا اَوْلِيَآءَ اللهِ وَ خَافُوْا بِخَوْفِهِمْ اَلسَّلَامُ

मोमिनीन पर जो उस के अम्र के साथ क़ाएम हुए और औलीयाए खुदा की मदद की और उनके

عَلَى الْمَلَآئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ عَلٰى عِبَادِ اللهِ

ख़ाफ़ से ख़ाएफ़ हुए। सलाम हो मलाएका मुक़र्रबीन पर, सलाम हो हमपर और अल्लाह के नेक

الصَّالِحِيْنَ.

बंदो पर।

फिर नज़दीके क़ब्र जाके खड़ा हो व क़ब्र की तरफ़ रूख व क़िबले की तरफ़ पुश्त कर के पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ

सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के हबीब, सलाम हो आप पर ऐ

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفْوَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ

अल्लाह के ख़ालिस बंदे, सलाम हो आप पर ऐ वलिए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह की हुज्जत, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْهُدٰى

हो आप पर ऐ हिदायत के इमाम, सलाम हो आप पर ऐ तक़वे की निशानी, सलाम हो आप पर ऐ वसी, नेक,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلَمَ التُّقٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ

मुत्तक़ी, पाकीज़ा और वफ़ादार, सलाम हो आप पर ऐ हसन व हुसैन (अ) के वालिद, सलाम हो आप पर

التَّقِيُّ النَّقِيُّ الْوَفِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ

ऐ दीन के सुतून, सलाम हो आप पर ऐ वसियों के सरदार और आलमीन के परवरदिगार के अमीन और

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمُوْدَ الدِّيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ

रोज़े जज़ा के हाकिम और मोमिनीन मे सब से बेहतर और सिद्दिक़ीन के सरदार और ख़ालिस बंदे नबियों

الْوَصِيِّيْنَ وَ اَمِيْنَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ دَيَّانَ يَوْمِ الدِّيْنِ وَ خَيْرَ

की नस्ल मे से और रब्बुल आलमीन की हिकमत के दरवाज़े और उस की वही के ख़ज़ीनादार, और उस

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ سَيِّدَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الصَّفْوَةَ مِنْ سُلَالَةِ النَّبِيِّيْنَ

के इल्म का गंजीना और उम्मते नबी को नसीहत करने वाले और रसूल के बाद आने वाले और उस पर

وَ بَابَ حِكْمَةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ خَازِنَ وَحْيِهٖ وَ عَيْبَةَ عِلْمِهٖ وَ

अपने नफ़्स से मवासात करने वाले और उसकी हुज्जत के ज़रिए कलाम करनेवाले और उसकी शरीअत

النَّاصِحَ لِاُمَّةِ نَبِيِّهٖ وَ التَّالِيَ لِرَسُوْلِهٖ وَ الْمُوَاسِيَ لَهٗ بِنَفْسِهٖ وَ

की तरफ़ बुलानेवाले और उसकी सुन्नत पर चलने वाले, खुदाया मै गवाही देता हूँ के अमीरूल मोमिनीन

النَّاطِقَ بِحُجَّتِهٖ وَ الدَّاعِيَ اِلٰى شَرِيْعَتِهٖ وَ الْمَاضِيَ عَلٰى سُنَّتِهٖ

(अ) तेरे रसूल की तरफ़ से दिए गए बार को पहुँचा दिया और रियायत की उसकी जिस की हिफ़ाज़त चाही

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَشْهَدُ اَنَّهٗ قَدْ بَلَّغَ عَنْ رَسُوْلِكَ مَا حُمِّلَ وَ رَعٰى مَا

गई और महफ़ूज़ किया उसको जिस को अमानत मे दिया गया और तेरे हलाल को हलाल और हराम को

اسْتُخْفِظَ وَ حَفِظَ مَا اسْتُوْدِعَ وَ حَلَّلَ حَلَالَكَ وَ حَرَّمَ حَرَامَكَ

हराम रखा और तेरे अहकाम को क़ाएम किया और नाकेसीन (असहाबे तलहा व जुबेर) के साथ तेरी राह

وَ اَقَامَ اَحْكَامَكَ وَ جَاهَدَ النَّاكِثِيْنَ فِيْ سَبِيْلِكَ وَ الْقَاسِطِيْنَ

मे जिहाद किया और क़ासितीन के साथ तेरे हुक्म के लिए और मारेक़ीन के साथ तेरे हुक्म से सब्र और

فِيْ حُكْمِكَ وَ الْمَارِقِيْنَ عَنْ اَمْرِكَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا لَا تَاْخُذُهٗ

तहम्मुल के साथ जिहाद किया और तेरी राह मे मलामत करने वाले की मलामत की कोई परवा नही की,

فِيْكَ لَوْمَةُ لَآئِمٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ

खुदाया बेहतरीन दुरूद नाज़ल फ़र्मा जो तूने अपने वलियों और ख़ालिस बंदों और नबियों के औसीया मे

مِّنْ اَوْلِيَآئِكَ وَ اَصْفِيَآءِ وَ اَوْصِيَآءِ اَنْبِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ هٰذَا قَبْرُ

से किसी पर नाज़ल फ़रमाया। खुदाया ये तेरे वली की क़ब्र है जिस की इताअत को तूने फ़र्ज़ किया है और

وَلِيِّكَ الَّذِىْ فَرَضْتَ طَاعَتَهٗ وَ جَعَلْتَ فِىْ اَعْنَاقِ عِبَادِكَ

जिसकी बयत को अपने बंदों की गर्दन पर क़रार दिया है। और ये तेरे ख़लीफ़ा की क़ब्र है जिसके ज़रिए तू

مُبَايَعَتَهٗ وَ خَلِيْفَتِكَ الَّذِىْ بِهٖ تَاْخُذُ وَ تُعْطِىْ وَ بِهٖ تُثِيْبُ وَ

अहदे वलायत लेता है और अता करता है और सवाब देता है इक़ाब करता है और मैने उनकी ज़ियारत का

تُعَاقِبُ وَ قَدْ قَصَدْتُهٗ طَمَعًا لِمَا اَعْدَدْتَهٗ لِاَوْلِيَآئِكَ فَبِعَظِيْمِ

इरादा किया है उस सवाब के लालच मे जो तूने अपने औलीया के लिए मोहय्या किया है अपनी निगाह मे

قَدْرِهٖ عِنْدَكَ وَ جَلِيْلِ خَطَرِهٖ لَدَيْكَ وَ قُرْبِ مَنْزِلَتِهٖ مِنْكَ صَلِّ

उनकी अज़्मते क़द्र की वजह से और अपने नज़दीक़ जलालत व इज़्ज़त की वजह से और अपने से उनकी

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ افْعَلْ بِىْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَاِنَّكَ اَهْلُ الْكَرَمِ

मनिज़लत के क़रीब होने की वजह से तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे साथ वो

وَ الْجُوْدِ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَاىَ وَ عَلٰى ضَجِيْعَيْكَ اٰدَمَ وَ نُوْحٍ

बरताओ कर जिसका तू अहेल है तू करम व जूद वाला है, सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला और आप के

وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

पहलू मे आराम करनेवाले जनाबे आदम व नूह पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हां।

फिर ज़री को बोसा देकर सर की जानिब खड़े होकर पढ़े:

يَامَوْلَایَ اِلَيْكَ وُفُوْدِیْ وَبِكَ اَتَوَسَّلُ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ بُلُوْغِ مَقْصُوْدِیْ

आप की तरफ़ आय हूँ और आप का वसीला इख़्तियार किया है अपने रब की तरफ़ अपने मक़सूद को

وَ اَشْهَدُ اَنَّ الْمُتَوَسِّلَ بِكَ غَيْرُ خَآئِبٍ وَ الطَّالِبَ بِكَ عَنْ

हासिल करने मे और मै गवाही देता हूँ के आप से तवस्सुल करनेवाला नाउम्मदी नही है और आप की

مَعْرِفَةٍ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ اِلَّا بِقَضَآءِ حَوَائِجِهٖ فَكُنْ لِیْ شَفِيْعًا اِلَی اللّٰهِ

मारेफ़त के साथ आप के ज़रिए तलबे हाजत करने वाला बग़ैर हाजत के पूरा हुए नही लौटाया जाता तो

رَبِّكَ وَ رَبِّیْ فِیْ قَضَآءِ حَوَآئِجِیْ وَ تَيْسِيْرِ اُمُوْرِیْ وَ كَشْفِ شِدَّتِیْ وَ

आप मेरे लिए शिफ़ाअत करने वाले हो जाईए अल्लाह की तरफ़ जो मेरा और आप का रब है मेरी हाजत के

غُفْرَانِ ذَنْبِیْ وَسَعَةِ رِزْقِیْ وَ تَطْوِيْلِ عُمْرِیْ وَ اِعْطَآءِ سُؤْلِیْ فِیْ

पूरा होने मे और मेरे उमूर की आसानी मे और मेरी सख़्ती के ख़त्म होने मे और मेरे गुनाह की बिख़्शश मे

اٰخِرَتِیْ وَدُنْيَایَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ

और मेरे रिज़्क़ की वुसअत मे और मेरी उम्र के तवील होने मे और मेरी हाजत के आख़िरत और दुनिया

قَتَلَةَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ الْاَئِمَّةِ وَ عَذِّبْهُمْ

मे अता करने मे। खुदाया लानत कर अमीरूल मोमिनीन (अ) के कातिलां पर। खुदाया लानत कर इमाम

عَذَابًا اَلِيْمًا لَا تُعَذِّبُهٗ اَحَدًا مِنَ الْعَالَمِيْنَ عَذَابًا كَثِيْرًا لَا

हसन व हुसैन (अ) के क़ातिलां पर। खुदाया लानत कर आइम्मा के क़ातिलों पर और उनको दर्दनाक

انْقِطَاعَ لَهٗ وَلَا اَجَلَ وَلَا اَمَدَ بِمَا شَآقُّوْا وُلَاةَ اَمْرِكَ وَاَعِدَّ لَهُمْ

अज़ाब दे जो अज़ाब आलमीन मे से किसी एक को न दिया हो। ऐसा अज़ाब जो ख़त्म होने वाला न हो

عَذَابًا لَمْ تُحِلَّهٗ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ وَاَدْخِلْ عَلٰى قَتَلَةِ اَنْصَارِ

जिस की कोई मुद्दत और वक़्त न हो इस वजह से के उन्होंने तेरे वलीए अम्र पर ज़ुल्म किया है और उनके

رَسُوْلِكَ وَ عَلٰى قَتَلَةِ الْاَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ عَلٰى قَتَلَةِ الْحَسَنِ وَ

लिए ऐसा अज़ाब मोहय्या कर जिसमे किसी एक मख़लूक को भी दाख़िल न किया हो खुदाया अपने रसूल

الْحُسَيْنِ وَ عَلٰى قَتَلَةِ اَنْصَارِ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ قَتَلَةِ مَنْ

के अनसार के क़ातिलां और अमीरूल मोमिनीन के क़ातिलों और इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ)

قُتِلَ فِيْ وِلَايَةِ اٰلِ مُحَمَّدٍ اَجْمَعِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا مُضَاعَفًا فِيْ اَسْفَلِ

के क़ातिलों और इमाम हसन व हुसैन (अ) के अनसार के क़ातिलां व विलायते आले मुहम्मद मे क़त्ल

دَرَكٍ مِّنَ الْجَحِيْمِ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ هُمْ فِيْهِ

होनेवाले के क़ातिलो मे सब को दर्दनाक अज़ाब मे दाख़िल कर जो बराबर प□ड़ता रहता हो जहन्नम के

مُبْلِسُوْنَ مَلْعُوْنُوْنَ نَاكِسُوْا رُؤُسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَدْ عَايَنُوْا

बदतरीन तबके मे उन के अज़ाब मे तखफ़ीफ़ न की जाए और वो उसी मे पड़े रहें, लानत की हालत मे सर

النَّدَامَةَ وَ الْخِزْيَ الطَّوِيْلَ لِقَتْلِهِمْ عِتْرَةَ اَنْبِيَآئِكَ وَ رُسُلِكَ وَ

को झुकाए हुए अपने रब की बारगाह मे निदामत और शमाAगी और तूलानी रूसवाई को देखें अंबीया व

اَتْبَاعَهُمْ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْهُمْ فِيْ مُسْتَسِرِّ

मुरसलीन की औलाद को क़त्ल करने की वजह से और तेरे नेक बन्दों मे मासूमीन का इत्तेबा करने वाला

السِّرِّ وَ ظَاهِرِ الْعَلَانِيَةِ فِيْ اَرْضِكَ وَ سَمَآئِكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ

के क़त्ल की वजह से खुदाया उनपर लानत कर अपने आलमे ग़ैब मे और ज़ाहिर मे अपनी ज़मीन और

قَدَمَ صِدْقٍ فِيْ اَوْلِيَآئِكَ وَ حَبِّبْ اِلَيَّ مَشَاهِدَهُمْ وَ مُسْتَقَرَّهُمْ

आसमान में खुदाया मेरे लिए सदाक़त का क़दम अपने औलिया के बारे मे क़रार दे और उनके मशाहीदे

حَتّٰى تُلْحِقَنِيْ بِهِمْ وَ تَجْعَلَنِيْ لَهُمْ تَبَعًا فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ يَا

मुशरफ़ा को और मक़ामे क़याम को महबूब क़रार दे दे यहाँ तक के तू मुझको उन से मुलहक करदे और तू

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

मुझको उन का ताबे क़रार दे दुनिया और आख़िरत मे ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

फिर ज़रीका बोसा दे व पुश्त बिक़बला खड़ा होकर क़ब्रे इ. हुसैन (अ.स.) का रूख़ करके पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ अबु अब्दुल्लाह, सलाम हो आपपर ऐ फ़रज़ंदे रसूल अल्लाह, सलाम हो आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ فَاطِمَةَ

पर ऐ फ़रज़ंदे अमारूल मोमिनीन (अ), सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा ज़हरा जो आलमीन

الزَّهْرَاءِ سَيِّدَةِ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابَا الاَئِمَّةِ

की औरतों की सरदार हैं, सलाम हो आप पर ऐ अबुल आइम्माह जो हादी और हिदायत याफ़ता

الْهَادِينَ الْمَهْدِيِّينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَرِيعَ الدَّمْعَةِ السَّاكِبَةِ

हैं, सलाम हो आप पर ऐ आँसू बहाने वाले, सलाम हो आप पर ऐ दाएमी मुसीबत वाले, सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْمُصِيبَةِ الرَّاتِبَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आप पर और आपके दादा और आप के वालिद पर, सलाम हो आप पर और आप की वालेदा

وَعَلَى جَدِّكَ وَابِيكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلَى اُمِّكَ وَاخِيكَ اَلسَّلَامُ

और भाई पर, सलाम हो आप पर और आप की ज़ुर्रrयत और औलाद के आईम्मा पर, मै गवाही

عَلَيْكَ وَعَلَى الاَئِمَّةِ مِنْ ذُرِيَّتِكَ وَبَنِيكَ اشْهَدُ لَقَدْ طَيَّبَ اللّٰهُ بِكَ

देता हूँ के अल्लाह ने आप की वजह से मिट्टी को पाकीज़ा किया और आप के ज़रिए किताब को

التُّرَابَ وَاوْضَحَ بِكَ الْكِتَابَ وَجَعَلَكَ وَابَاكَ وَجَدَّكَ وَاخَاكَ

वाज़ेह किया और आप को आप के वालिद, दादा, भाई और औलाद को अक़लमंदो के लिए

وَبَنِيكَ عِبْرَةً لاُولِى الالْبَابِ يَا بْنَ الْمَيَامِينِ الاَطْيَابِ التَّالِينَ

सरमायए इब्रत बना दिया है। ऐ फ़रज़ंदगाने नेक ज़ात और तिलावते किताब करने वाले मैने आप

اَلْكِتَابَ وَجَّهْتُ سَلَامِي اِلَيْكَ صَلَوَاتُ اللهِ وَسَلَامُهُ عَلَيْكَ

की तरफ़ अपने सलाम से तवज्जो की है अल्लाह का दुरूद और सलाम हो आप पर और लोगों के

وَجَعَلَ اَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي اِلَيْكَ مَا خَابَ مَنْ تَمَسَّكَ بِكَ

दिलों को अपनी तरफ़ झुका दे जो आप से मुतमस्सिक हुआ वो नाकाम नही हुआ हो जिसने आप

وَلَجَا اِلَيْكَ

की पनाह ली वो भी ना काम नही हुआ।

फिर क़ब्र के पांयती जाकर खड़ा हो और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِي الْاَئِمَّةِ وَخَلِيلِ النُّبُوَّةِ وَالْمَخْصُوصِ بِالْاُخُوَّةِ

सलाम हो अबुल आइम्मा पर नबुव्वत के ख़लील पर और भाईचारगी के लिए जो

اَلسَّلَامُ عَلٰى يَعْسُوبِ الدِّينِ وَالْاِيْمَانِ وَكَلِمَةِ الرَّحْمٰنِ اَلسَّلَامُ

मख़सूस है। सलाम हो सरदार और कलमए रहमान पर सलाम हो मीज़ाने आमाल

عَلٰى مِيزَانِ الْاَعْمَالِ وَمُقَلِّبِ الْاَحْوَالِ وَسَيْفِ ذِي الْجَلَالِ وَسَاقِي

पर, सलाम हो मोमिनीन मे सालेह पर और नबियों के इल्म के वारिस पर और रोज़े

السَّلْسَبِيلِ الزُّلَالِ اَلسَّلَامُ عَلٰى صَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ وَوَارِثِ عِلْمِ

जज़ा के हाकिम पर, सलाम हो तक़वे के दरख़त पर और पोशिदा और मख़फ़ी

النَّبِيِّينَ وَالْحَاكِمِ يَوْمَ الدِّينِ اَلسَّلَامُ عَلٰى شَجَرَةِ التَّقْوٰى وَسَامِعِ

मुनाजात के सुनने वाले पर, सलाम हो अल्लाह की हुज्जते बालिग़ा और साबिक़ए नेमत

السِّرِّ وَالنَّجْوٰى اَلسَّلَامُ عَلٰى حُجَّةِ اللهِ الْبَالِغَةِ وَنِعْمَتِهِ السَّابِغَةِ

पर और अज़ाबे मग़्ज़ शिकन पर, सलाम हो रौशन रासते पर और रौशन सितारों

وَنِقْمَتِهِ الدَّامِغَةِ اَلسَّلَامُ عَلَى الصِّرَاطِ الْوَاضِحِ وَالنَّجْمِ اللَّائِحِ

पर और नासेह इमाम पर और दिलों के रौशनी बख़्शने वाले पर व खुदाकी रहमतो

وَالْاِمَامِ النَّاصِحِ وَالزِّنَادِ الْقَادِحِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

बरकात हो

फिर कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيِّ بْنِ ابِي طَالِبٍ اخِي نَبِيِّكَ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर अमीरूल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब पर जो तेरे नबी के भाई और उसके

وَوَلِيِّهِ وَنَاصِرِهِ وَوَصِيِّهِ وَوَزِيرِهِ وَمُسْتَوْدَعِ عِلْمِهِ وَمَوْضِعِ سِرِّهِ

वली, नासिर और वसी और वज़ीर और उस के इल्म के मख़ज़न और उसके राज़ का गनजीना और

وَبَابِ حِكْمَتِهِ وَالنَّاطِقِ بِحُجَّتِهِ وَالدَّاعِي اِلٰى شَرِيعَتِهِ وَخَلِيفَتِهِ

दरवाज़ए हिकमत और उसकी हुज्जत के साथ बोलने वाले और उसकी शरिअत की तरफ़ बुलाने वाले

فِي أُمَّتِهِ وَمُفَرِّجِ الْكَرْبِ عَنْ وَجْهِهِ قَاصِمِ الْكَفَرَةِ وَمُرْغِمِ

और उसकी उम्मत पर उस के ख़लीफ़ा और उस से मुसीबत को दूर करने वाले कुफ़्र की कमर के तोड़ने

الْفَجَرَةِ الَّذِي جَعَلْتَهُ مِنْ نَبِيِّكَ بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَىٰ اَللّٰهُمَّ

वाले और फ़ाजिरों की नाक रगड़ने वाले हैं जिन को तूने अपने नबी के लिए वैसा ही क़रार दिया है जैसे

وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُ وَاخْذُلْ مَنْ

हारून मूसा के लिए खुदाया उसको दोस्त रख जो उनको दोस्त रखे उसको दुश्मन रख जो उन से दुश्मनी

خَذَلَهُ وَالْعَنْ مَنْ نَصَبَ لَهُ مِنَ الاَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ وَصَلِّ عَلَيْهِ

करे और उस की मदद कर जो उन की मदद करे और उसको रूसवा कर जो उन्हें रूसवा करे और

افْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى احَدٍ مِنْ اوْصِيَاءِ انْبِيَائِكَ يَا رَبَّ

लानत कर उस पर जो औवलीन व आख़िरीन मे उन से अदावत करे और उन पर बेहतरीन दुरूद नाज़ल

الْعَالَمِينَ

कर जो तूने अपने नबी के औसिया मे से किसी एक पर नाज़ल किया है ऐ आलमीन के परवरदिगार।

बाला-ए-सर मुड़कर जनाबे आदम और जनाबे नूह (अ.स.) की ज़ियारत करे और ज़ियारते आदम के लिए कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के बरगुज़ीदा, सलाम हो आप पर ऐ हबीबे खुदा, सलाम हो आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِينَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

नबीए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ अमीने खुदा, सलाम हो आप पर ऐ ख़लीफ़ए खुदा ज़मीन पर सलाम

خَلِيفَةَ اللهِ فِي اَرْضِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْبَشَرِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

हो आप पर ऐ अबुल बशर, सलाम हो आप पर और आप की रूह और आप के बदन और आप की

وَعَلٰى رُوحِكَ وَبَدَنِكَ وَعَلَى الطَّاهِرِينَ مِنْ وُلْدِكَ وَذُرِّيَّتِكَ وَصَلَّى

औलाद और ज़ुर्रrयत मे पाकीज़ा लोगों पर और अल्लाह का दुरूद हो आप पर जिस को कोई इसके

اللهُ عَلَيْكَ صَلَاةً لَا يُحْصِيهَا اِلَّا هُوَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

अलावा अहसा न कर सके और अल्लाह की रहमत और बरकात हो।

और फिर जनाबे नूह (अ.स.) की ज़ियारत इस प्रकार पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ नबिए खुदा, सलाम हो आप ऐ बरगुज़ीदए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

वलीए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ खुदा के हबीब, सलाम हो आप पर ऐ रसूलों के बुज़ुर्ग, सलाम

شَيْخَ الْمُرْسَلِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِينَ اللهِ فِي اَرْضِهِ صَلَوَاتُ اللهِ

हो आप पर ऐ अल्लाह के अमीन उस की ज़मीन पर अल्लाह का दुरूद, सलाम हो आप पर और

وَسَلَامُهُ عَلَيْكَ وَعَلٰى رُوحِكَ وَبَدَنِكَ وَعَلَى الطَّاهِرِينَ مِنْ وُلْدِكَ

आप की रूह व बदन पर और आप की औलाद मे पाकीज़ा अफ़राद पर और अल्लाह की रहमत

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

और बरकात हो।

फिर चार रकत नमाज़ पढ़े जिसमें से दो रअकत अमीरुल मोअमेनीन (अ.स.) के लिए हो और पहलि रकअत में सूरह फ़ातेहतुल किताब केबाद सूरह रहमान और दूसरी रकअत में सूरह यासीन पढ़े और नमाज़ के बाद तस्बीहे फातेमह ज़हरा (स.अ.) और ख़ुदा से तलबे मग्फ़ेरत और अपने लिए दुआ करे और यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي صَلَّيْتُ هَاتَيْنِ الرَّكْعَتَيْنِ هَدِيَّةً مِنِّي اِلٰى سَيِّدِي

खुदाया मै ने दो रकतें पढ़ीं जो मेरी तरफ़ से हदया है मेरे सरदार और मौला की तरफ़ से जो तेरे

وَمَوْلَايَ وَلِيِّكَ وَاخِي رَسُوْلِكَ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ وَسَيِّدِ الْوَصِيِّينَ

वली और तेरे रसूल के भीई अमीरूल मोमिनीन और सय्यदुल वसीन अली बिन अबी तालीब

عَلِيِّ بْنِ اَبِي طَالِبٍ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى

हैं अल्लाह का दुरूद हो उन पर और उन की आल पर खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي وَاجْزِنِي عَلٰى ذٰلِكَ جَزَاءَ الْمُحْسِنِينَ

मोहम्मद पर और मेरी नमाज़ को क़ुबूल कर ले और मुझको नेकू कारां की जज़ा अता कर खुदाया

اَللّٰهُمَّ لَكَ صَلَّيْتُ وَلَكَ رَكَعْتُ وَلَكَ سَجَدْتُ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

मैने तेरे लिए नमाज़ पढ़ी और तेरे लिए रूकूअ और सजदा तेरे अलावा किसी के लिए नही है

لِاَنَّهُ لَا تَكُونُ الصَّلَاةُ وَالرُّكُوعُ وَالسُّجُودُ اِلَّا لَكَ لِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا

इस लिए के तू वो खुदा है के तेरे अलावा कोई खुदा नही है। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَتَقَبَّلْ مِنِّي زِيَارَتِي

आले मोहम्मद पर और मेरी ज़ियारत को क़ुबूल कर ले और मेरी हाजत को अता कर मोहम्मद

وَاعْطِنِي سُؤْلِي بِمُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّاهِرِينَ

और उन की आले ताहेरीन के वासते से।

फिर चार रकत नमाज़ दो दो रकत करके जनाबे आदम व नूह (अ.स.) को हदिया करे और फिर सजदा शुक्र करे और ये पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَبِكَ اعْتَصَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَللّٰهُمَّ

खुदाया मै तरी तरफ़ मुतवज्ञे हुआ और तुझ से मरबूत हुआ और तुझ पर तवक्कुल किया तू मेरा मोतमिद

اَنْتَ ثِقَتِي وَرَجَائِي فَاكْفِنِي مَا اَهَمَّنِي وَمَا لَا يُهِمُّنِي وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ

है और मेरी उम्मीद है तू तो मेरे अहेम उमूर में काफ़ी हो जा और इसी तरह ग़ैर अहेम मे और जिस को तू

بِهِ مِنِّي عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

मुझ से ज़्यादा जानने वाला है तेरी पनाह चाहने वाला अज़ीज़ है और तेरी सना जलील है और तेरे अलावा

مُحَمَّدٍ وَقَرِّبْ فَرَجَهُمْ

कोई खुदा नही है दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनके ज़हूर को क़रीब कर।

फिर दायां रूख़सार ज़मीन पर रखकर कहे:

اِرْحَمْ ذُلِّی بَیْنَ یَدَیْكَ وَتَضَرُّعِی اِلَیْكَ وَوَحْشَتِی مِنَ النَّاسِ وَاُنْسِی

खुदाया रहेम कर अपने सामने मेरी ज़िल्लत पर और अपनी तरफ़ मेरी ज़ारी पर और लोगों से मेरी वहशत

بِكَ یَا كَرِیمُ یَا كَرِیمُ یَا كَرِیمُ

पर और मेरे तुझ से उन्स पर ऐ करीम ऐ करम वाले ऐ करम वाले।

फिर बायां रूख़सार ज़मीन पर रखकर कहे:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبِّی حَقًّا حَقًّا سَجَدْتُ لَكَ یَا رَبِّ تَعَبُّدًا وَرِقًّا

कोई खुदा नही है सिवाए तेरे तू मेरा हक़ीक़ी रब है तेरा सजदा मैने किया ऐ परवर-दिगार इबादत

اَللّٰهُمَّ اِنَّ عَمَلِی ضَعِیفٌ فَضَاعِفْهُ لِی یَا كَرِیمُ یَا كَرِیمُ یَا

और बंदगी के साथ खुदाया मेरा अमल कमज़ोर है तू उसको ज़्यादा कर दे मेरे लिए, ऐ करीम ऐ

كَرِیمُ

करम वाले ऐ करम वाले।

फिर सजदे में जाए और सौ बार شُكْرًا शुक्रन कहे और दुआ की कोशिश करे के यह हाजतों के तलब करने का मकाम है। और ज़्यादा इस्तेग़फ़ार भी करे के यह गुनाहों की मग़िफ़रत का मकाम है। और हाजत खुदा से तलब करे के यह दुआओं के क़ुबूल होने का मकाम है।

और सय्यद इब्ने ताऊस ने मज़ार में और उनके अलावा दूसरे हज़रात ने फ़रमाया है के वाजिब या मुस्तहब्बी नमाज़ जो भी नजफ़े अशरफ़ में क़याम के दौरान पढ़ी जाए उसके बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ لَا بُدَّ مِنْ اَمْرِكَ وَلَا بُدَّ مِنْ قَدَرِكَ وَلَا بُدَّ مِنْ قَضَائِكَ

खुदाया तेरा अम्र साबित है और तेरी क़ज़ा व क़द्र हत्मी और लाज़म है और कोई कुव्वत व ताक़त नही

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ اَللّٰهُمَّ فَمَا قَضَيْتَ عَلَيْنَا مِنْ قَضَاءٍ

है मगर तेरे ज़रिए, खुदाया तूने जो भी मेरे लिए क़ज़ा मे रखा है और जो तूने अपनी क़ुद्रत मे मेरे लिए

اَوْ قَدَّرْتَ عَلَيْنَا مِنْ قَدَرٍ فَاَعْطِنَا مَعَهُ صَبْرًا يَقْهَرُهُ وَيَدْمَغُهُ

मुक़तदर किया है उस के साथ मुझको ऐसा सब्र अता कर जो मुसीबत पर ग़ालिब आ जाए और उस

وَاجْعَلْهُ لَنَا صَاعِدًا فِي رِضْوَانِكَ يُنْمِي فِي حَسَنَاتِنَا وَتَفْضِيلِنَا

का ज़ोर तोड़ दे और उसको हमारे लिए क़रार दे अपने रिज़वान की तरफ़ बुलंद होने वाला जो हमारी

وَسُؤْدَدِنَا وَشَرَفِنَا وَمَجْدِنَا وَنَعْمَائِنَا وَكَرَامَتِنَا فِي الدُّنْيَا

नेकिया मे ज़्यादती करे और हमारी फ़ज़ीलत मे और हमारी सरदारी और हमारे शरफ़ और मज्द और

وَالْآخِرَةِ وَلَا تَنْقُصْ مِنْ حَسَنَاتِنَا اَللّٰهُمَّ وَمَا اَعْطَيْتَنَا مِنْ

नेमतों और करामतों मे दुनिया व आख़िरत मे और हमारी नेकीया मे कमी न कर खुदाया जो तूने मुझको

عَطَاءٍ اَوْ فَضَّلْتَنَا بِهٖ مِنْ فَضِيلَةٍ اَوْ اَكْرَمْتَنَا بِهٖ مِنْ كَرَامَةٍ

अता किया है और जो तूने मुझको फ़ज़ीलत अता की है और जिस करामत से तूने मुझको मुकर्रम किया

فَاَعْطِنَا مَعَهُ شُكْرًا يَقْهَرُهُ وَيَدْمَغُهُ وَاجْعَلْهُ لَنَا صَاعِدًا فِي

है तू उस के साथ मुझको ऐसा शुक्र अता कर जो उस पर ग़ालिब रहे और उसके ऊपर क़ाहिर रहे और

رِضْوَانِكَ وَفِي حَسَنَاتِنَا وَسُؤْدَدِنَا وَشَرَفِنَا وَنَعْمَائِكَ

उसको हमारे लिए अपने रिज़वान मे बुलंदी का ज़रिए क़रार दे दे और हमारी नेकियां मे और सरदारी

وَكَرَامَتِكَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَلَا تَجْعَلْهُ لَنَا شَرًّا وَلَا بَطَرًا وَلَا

और शराफ़त और नेमतों और करामत मे दुनिया और आख़िरत मे और उस को हमारे लिए ग़ुरूर व

فِتْنَةً وَلَا مَقْتًا وَلَا عَذَابًا وَلَا خِزْيًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ

तकब्बुर और फितना क़रार न देना और न अज़ाब व इकाब क़रार देना और न रूसवाई देना व आख़िरत

اِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ عَثْرَةِ اللِّسَانِ وَسُوءِ الْمَقَامِ وَخِفَّةِ الْمِيزَانِ

में, खुदाया मै तेरी पनाह चाहता हूँ ज़ुबान की लगिज़श से और बुरे मकाम से और मिजानकी सुबकी से।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِ مُحَمَّدٍ وَلَقِّنَا حَسَنَاتِنَا فِي الْمَمَاتِ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और हमको तलक़ीन कर नेकियों की सूरत मे

وَلَا تُرِنَا اَعْمَالَنَا حَسَرَاتٍ وَلَا تُخْزِنَا عِنْدَ قَضَائِكَ وَلَا تَفْضَحْنَا

और हमारे आमाल को हसरत के साथ न रखना और हम को अपने फ़ैसले के वक़्त रूसवा न करना

بِسَيِّئَاتِنَا يَوْمَ نَلْقَاكَ وَاجْعَلْ قُلُوبَنَا تَذْكُرُكَ وَلَا تَنْسَاكَ

और हम को फ़ज़ीहत न देना हमारी बुराईयो के मुक़ाबले मे जब हम तुझ से मुलाक़ात करें और हमारे

وَتَخْشَاكَ كَأَنَّهَا تَرَاكَ حَتّٰى نَلْقَاكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

दिलों को कर दे के वो तेरा ज़िक्र करें और तुझको न भुलें और तुझ से डरें गोया के वो तुझे देख रहा है।

وَبَدِّلْ سَيِّئَاتِنَا حَسَنَاتٍ وَاجْعَلْ حَسَنَاتِنَا دَرَجَاتٍ وَاجْعَلْ

यहाँ तक के हम तुझ से मिलें और दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और हमारी बुराइयां

دَرَجَاتِنَا غُرُفَاتٍ وَاجْعَلْ غُرُفَاتِنَا عَالِيَاتٍ اَللّٰهُمَّ وَاوْسِعْ

को नेकियों मे बदल दे और हमारी नेकीयां को दरजरात दे दे और हमारे दरजों के बदले मे जन्नत के

لِفَقِيرِنَا مِنْ سَعَةِ مَا قَضَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ग़ुरफ़े क़रार दे दे और हमारे ग़ुरफ़े को बुलंद कर दे। खुदाया हमारे फ़क़र के लिए वुसत दे जो तूने अपने

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَمُنَّ عَلَيْنَا بِالْهُدٰى مَا اَبْقَيْتَنَا وَالْكَرَامَةِ مَا

ऊपर फ़ैसला किया है। खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और हमारे ऊपर हिदायत का

اَحْيَيْتَنَا وَالْمَغْفِرَةِ اِذَا تَوَفَّيْتَنَا وَالْحِفْظِ فِي مَا بَقِيَ مِنْ عُمُرِنَا

एहसान कर जब तक तू मुझको बाक़ी रखे और करामत के साथ एहसान कर जब तक तू मुझको ज़िन्दा

وَالْبَرَكَةِ فِي مَا رَزَقْتَنَا وَالْعَوْنِ عَلٰى مَا حَمَّلْتَنَا وَالثَّبَاتِ عَلٰى مَا

रखे और मग़िफ़रत के ज़रिए जब तू मुझको मौत दे और हिफ़ाज़त के साथ जब तक मेरी उमर बाक़ी रहे

طَوَّقْتَنَا وَلَا تُؤَاخِذْنَا بِظُلْمِنَا وَلَا تُقَايِسْنَا بِجَهْلِنَا وَلَا

और बरकत के साथ उसमे जो तूने मुझको रिज़्क़ दिया है और मदद के साथ जिस की तूने मुझको ताक़त

تَسْتَدْرِجْنَا بِخَطَايَانَا وَاجْعَلْ احْسَنَ مَا نَقُولُ ثَابِتًا فِي قُلُوبِنَا

दी है और सिबात के साथ जो तूने मेरी गरदन मे डाला है और हम से मवाख़ेजा न करना हमारे ज़ुल्म पर

وَاجْعَلْنَا عُظَمَاءَ عِنْدَكَ وَاذِلَّةً فِي انْفُسِنَا وَانْفَعْنَا بِمَا عَلَّمْتَنَا

और हमारी जेहालत का मोहासेबा न करना और हम को हमारी ग़लतियों का अज़ाब न देना और हमारी

وَزِدْنَا عِلْمًا نَافِعًا وَاعُوذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَمِنْ عَيْنٍ لَا

बेहतरीन बात को हमारे दीन मे साबित कर और हम को अपने नज़दीक अज़ीम मुफ़ीद मे ज़्यादती कर

تَدْمَعُ وَمِنْ صَلَاةٍ لَا تُقْبَلُ اجِرْنَا مِنْ سُوءِ الْفِتَنِ يَا وَلِيَّ الدُّنْيَا

और मै पनाह चाहता हूँ तेरे इस दिल से जो खुज़ू नही करता और उस आँख से जो आँसू नही बहाती

وَالْآخِرَةِ

और उस नमाज़ से जो क़ुबूल नही होती मुझको पनाह दे बुरे फ़ितने से ऐ दुनिया व आख़िरत के वली।

सय्यद ने मिसबाहुज़ ज़ाएर में एक दूसरी दुआ भी लिखी है जिसे नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के बाद पढ़ना मुस्तहब है: या अल्लाहो या अल्लाहो या अल्लाह या मोजीबुद दअवतिल मुज़तर्रीन। फ़क़ीर कहता है के यह वही दुआ सफ़वान है जो दुआ अलक़मा के नाम से मशहूर है। और ज़ियारते आशूरा के ज़ैल में बयान होगी।

يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ...

वाज़ेह रहे के सरे इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत भी क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन

(अ.स.) के नज़दीक़ मुस्तहब है और वसाएल व मुस्तदरक में एक बाब वारिद हुआ है और मुस्तदरक में मिरज़ा मोहम्मद बिन मशहदी से नक़्ल किया गया है के हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) ने सरे इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत पढ़ी।

इसके बाद अमीरूल मोमेनीन (अ.स.) के सरहाने चार रकत नमाज़ अदा करे। वह ज़ियारत यह है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ اَمِيرِ

सलाम हो आप पर ऐ फ़रजंदे रसूले खुदा, सलाम हो आप पद ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) के

الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ الصِّدِيقَةِ الطَّاهِرَةِ سَيِّدَةِ نِسَاءِ

फ़रज़ंद, सलाम हो आप पर ऐ सिद्दीक़ा ताहेरा आलमीन की औरतों की सरदार के फ़रज़ंद, सलाम

الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ وَرَحْمَةُ اللهِ

हो आप पर ऐ मौला अबु अब्दुल्लाह अल्लाह की रहमत और बरकत हो मै गवाही देता हूँ के आप

وَبَرَكَاتُهُ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَآتَيْتَ الزَّكَاةَ وَاَمَرْتَ

ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर किया

بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتَلَوْتَ الْكِتَابَ حَقَّ تِلَاوَتِهِ

और किताब की तिलावत की जो तिलावत का हक़ था और राहे खुदा मे जेहाद किया जो हक़े

وَجَاهَدْتَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ وَصَبَرْتَ عَلَى الْاَذَىٰ فِي جَنْبِهِ مُحْتَسِبًا

जेहाद था और राहे हक़ मे अज़ीयतों पर सब्र किया सिर्फ़ बराए खुदा यहाँ तक के मौत आ गई और

حَتّٰى اتَاكَ الْيَقِينُ وَاشْهَدُ انَّ الَّذِينَ خَالَفُوكَ وَحَارَبُوكَ وَانَّ

मै गवाही देता हूँ के जिन लोगों ने आपकी मुख़ालेफ़त की और जंग की और जिन लोगों ने आप

الَّذِينَ خَذَلُوكَ وَالَّذِينَ قَتَلُوكَ مَلْعُونُونَ عَلٰى لِسَانِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

को रूसवा किया जिन लोगों ने आप को क़तल किया वो मलऊन हैं पैग़ांम्बर उम्मी की ज़ुबान

وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى لَعَنَ اللهُ الظَّالِمِينَ لَكُمْ مِنَ الاوَّلِينَ

पर और वो नाकाम हुआ जिसने इफ़तरा किया अल्लाह की लानत हो अव्वलीन व आख़िरीन

وَالآخِرِينَ وَضَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الاَلِيمَ اتَيْتُكَ يَا مَوْلَايَ يَا

के ज़ालिमों पर और उनपर दर्द नाक अज़ाब मे ज़्यादती हो मै आप के पास ऐ मौला ऐ फ़रज़ंदे

بْنَ رَسُوْلِ اللهِ زَائِرًا عَارِفًا بِحَقِّكَ مُوَالِيًا لاوْلِيَائِكَ مُعَادِيًا

रसूल आया हूँ ज़ाएर बन कर आपके हक़ को पहचानते हुए आप के वलियों का दोस्त और आप

لاعْدَائِكَ مُسْتَبْصِرًا بِالْهُدٰى الَّذِي انْتَ عَلَيْهِ عَارِفًا بِضَلَالَةِ مَنْ

के दुश्मन का दुश्मन हूँ इस हिदायत से जिस पर आप हैं पहचानते हुए आप के मुख़ालिफ़त की

خَالَفَكَ فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ رَبِّكَ

गुमराही को तो मेरी शिफ़ाअत कीजिए अपने खुदा के पास।

लेखक: अगर इसी ज़ियारत को मसजिदे हन्नाना में पढ़े तो भी मुनासिब है। इस लिए के शेख़ मोहम्मद अल मशहदी ने रिवायत की है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने मस्जिदे हन्नाना में भी इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत इसी तरह

की है।
और फिर चार रकत नमाज़ पढ़े। वाज़ेह रहे के मस्जिदे हन्नाना नजफ़े अशरफ़ की फ़ज़ीलत वाली मस्जिदों में से एक है। और एक रिवायत में है के इमाम हुसैन का सरे मुबारक वहीं रखा गया था। और हदीस में है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने वहां दो रकत नमाज़ पढ़ी तो लोगों ने पूछा के यह कौन सी नमाज़ है? फ़रमाया के यह मेरे जद इमाम हुसैन (अ.स.) के सर की जगह है। जहाँ उसे रखा गया था। ज़ालिम उसे करबला से लाए थे और उसको उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद के पास ले गए थे। और रिवायत में है के आं हज़रत ने फ़रमाया के इस जगह यह दोआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَرَىٰ مَكَانِي وَتَسْمَعُ كَلَامِي وَلَا يَخْفَىٰ عَلَيْكَ شَيْءٌ مِنْ

खुदाया तू मेरी मनिज़ल को देख रहा है और मेरे कलाम को सुन रहा है और तुझ पर मेरा अम्र पोशिदा नही है और कैसे

اَمْرِي وَ كَيْفَ يَخْفَىٰ عَلَيْكَ مَا اَنْتَ مُكَوِّنُهُ وَبَارِئُهُ وَقَدْ جِئْتُكَ

मख़फ़ी हो सकता है तुझ पर वो जिस का तू बनाने वाला है और पैदा करनेवाला है और मै तेरे पास तलबे शिफ़ाअत

مُسْتَشْفِعًا بِنَبِيِّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَمُتَوَسِّلًا بِوَصِيِّ رَسُوْلِكَ فَاَسْاَلُكَ

करता हुआ तेरे नबी के पास आया हूँ जो नबीए रहमत है और तेरे रसूल के वसी से तवस्सुल करते हुए तो मै तुझ से

بِهِمَا ثَبَاتَ الْقَدَمِ وَالْهُدَىٰ وَالْمَغْفِرَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

उन दोनो के वास्ते से सवाल करता हूँ सेबाते क़दम और हिदायत और दुनिया व आख़िरत मे मग़फ़ेरत का।

दूसरी ज़ियारत

जो ज़ियारते अमीनुल्लाह के नाम से मशहूर है और निहायत दर्जा मोतबर है और तमाम कुतुबे मज़ार और मसाबीह में नक़्ल हुई है और अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के यह मत्न और सनद के एतेबार से बेहतरीन ज़ियारत है और तमाम रौज़ों में इसकी पाबंदी करना चाहिए।

और इसका तरीक़ा वही है जो मोतबर सनदों के साथ जाबिर के वास्ते से इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) और उनके वास्ते से इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से नक़्ल की गई है के दोनों हज़रात ने क़ब्र के पास खड़े हो कर गिरया किया और इस तरह ज़ियारत पढ़ी:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْنَ اللّٰهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَ حُجَّتَهٗ عَلٰى عِبَادِهٖ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह की ज़मीन मे उस के अमीन और अल्लाह की हुज्जत उस के बंदो पर सलाम हो

عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَشْهَدُ اَنَّكَ جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ

आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन मै गवाही देता हूँ के आपने राहे खुदा मे जिहाद किया जो जिहाद का हक़ था

جِهَادِهٖ وَ عَمِلْتَ بِكِتَابِهٖ وَ اتَّبَعْتَ سُنَنَ نَبِيِّهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ

और उस की किताब पर अमल किया और अल्लाह के नबी की सुन्नता का एत्तेबा किया अल्लाह का दुरूद हो

اٰلِهٖ حَتّٰى دَعَاكَ اللّٰهُ اِلٰى جِوَارِهٖ فَقَبَضَكَ اِلَيْهِ بِاِخْتِيَارِهٖ وَ اَلْزَمَ

उनपर और उनकी आल पर यहाँ तक के अल्लाह ने आप को अपने जवार मे बुलाया और अपने इरादे से

اَعْدَآئَكَ الْحُجَّةَ مَعَ مَالَكَ مِنَ الْحُجَجِ الْبَالِغَةِ عَلٰى جَمِيْعِ خَلْقِهٖ

आप की रूह को क़ब्ज कर लिया और आप के दुश्मनो पर हुज्जत को लाज़म कर दिया अलावा इस के आप

اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ نَفْسِیْ مُطْمَئِنَّةً بِقَدَرِكَ رَاضِيَةً بِقَضَآئِكَ

के वजूद मे हुज्जते बालिग़ा को तमाम मख़लूक़ पर मुकम्मल किया है खुदाया मेरे नफ़्स को अपनी क़दर पर

مُوْلَعَةً بِذِكْرِكَ وَ دُعَآئِكَ مُحِبَّةً لِصَفْوَةِ اَوْلِيَآئِكَ مَحْبُوْبَةً فِيْ

मुतमईन कर दे और अपने कज़ा पर राज़ी कर दे अपने ज़िक्र व दुआ का शैदाई बना दे और अपने ख़ालिस

اَرْضِكَ وَ سَمَآئِكَ صَابِرَةً عِنْدَ نُزُوْلِ بَلَآئِكَ شَاكِرَةً لِفَوَاضِلِ

व बरगुज़ीदा औलिया को मोहब्बत करने वाला बना दे और अपने आसमान व ज़मीन मे महबूब कर दे

نَعْمَآئِكَ ذَاكِرَةً لِسَوَابِغِ اٰلَآئِكَ مُشْتَاقَةً اِلٰى فَرْحَتِ لِقَآئِكَ

और अपनी बला के नुज़ूल पर साबिर और अपनी बेहतरीन नेमता पर शाद बना दे अपनी तमाम नेमतों

مُتَزَوِّدَةً التَّقْوٰى لِيَوْمِ جَزَآئِكَ مُسْتَنَّةً بِسُنَنِ اَوْلِيَآئِكَ

का याद करने वाला और अपनी मुलाक़ात की खुशी का मुश्ताक़ बना दे और तक़े को ज़ादे सफ़र बनाने

مُفَارِقَةً لِاَخْلَاقِ اَعْدَآئِكَ مَشْغُوْلَةً عَنِ الدُّنْيَا بِحَمْدِكَ وَ

वाला अपने राज़े जज़ा के लिए और अपने औलया की सुन्नत पर अमल करने वाला और अपने दुश्मनो के

ثَنَآئِكَ.

अख़लाक़ से दूर रहने वाला दुनिया से बेज़ार होने वाला क़रार दे अपनी हम्द और सना के तुफ़ैल।

फिर आपने अपना रूख़सारे मुबारक क़ब्र पर रखा और फ़रमाया:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ قُلُوْبَ الْمُخْبِتِيْنَ اِلَيْكَ وَالِهَةٌ وَسُبُلَ الرَّاغِبِيْنَ اِلَيْكَ

खुदाया खुदा तरस लोगों के दिल तेरी तरफ़ वालेहाना तौर पर मुतवज्ञे हैं और मुश्ताक़ीन की राह तेरी तरफ़

شَارِعَةٌ وَ اَعْلَامَ الْقَاصِدِيْنَ اِلَيْكَ وَاضِحَةٌ وَ اَفْئِدَةَ الْعَارِفِيْنَ

खुली हुई है और तेरी तरफ़ क़सद करने वालों की निशानियाँ वाज़ेह हैं और तेरी मारेफ़त रखने वालों के

مِنْكَ فَازِعَةٌ وَاَصْوَاتَ الدَّاعِيْنَ اِلَيْكَ صَاعِدَةٌ وَاَبْوَابَ الْاِجَابَةِ

दिल हेरासॉ हैं और तेरी तरफ़ दावतवालों की आवाज़ें बुलंद हैं और उनके लिए क़ुबूलियत के दरवाज़े

لَهُمْ مُفَتَّحَةٌ وَدَعْوَةَ مَنْ نَاجَاكَ مُسْتَجَابَةٌ وَتَوْبَةَ مَنْ اَنَابَ اِلَيْكَ

खुले हुए हैं और जो तुझ से मुनाजात करे उस की दुआ क़ुबूल है और जो तुझ से तौबा करे उस की तौबा

مَقْبُوْلَةٌ وَ عَبْرَةَ مَنْ بَكٰى مِنْ خَوْفِكَ مَرْحُوْمَةٌ وَ الْاِغَاثَةَ لِمَنِ

क़ुबूल है और जो तेरे ख़ाफ़ से रो उसके आँसू मक़ामे रहेम मे हैं और जो तुझ से फ़रयाद करे उस के लिए

اسْتَغَاثَ بِكَ مَوْجُوْدَةٌ وَ الْاِعَانَةَ لِمَنِ اسْتَعَانَ بِكَ مَبْذُوْلَةٌ وَ

फ़रयाद रस मौजूद है और जो तुझ से मदद चाहे उस के लिए मदद हासिल है और तेरे वादे तेरे बंदो के

عِدَاتِكَ لِعِبَادِكَ مُنْجَزَةٌ وَ زَلَلَ مَنِ اسْتَقَالَكَ مُقَالَةٌ وَ اَعْمَالَ

लिए पूरे हैं और जो तुझ से उज्र तलब करे उसकी लगिज़शों को बख़शा गया है और अमल करनेवालों

الْعَامِلِيْنَ لَدَيْكَ مَحْفُوْظَةٌ وَ اَرْزَاقَكَ اِلَى الْخَلَآئِقِ مِنْ لَدُنْكَ

के आमाल तेरी बारगाह मे महफ़ूज़ हैं और तेरी रोज़ी तेरी जानिब से मख़लूक पर नाज़ल होती रही है और

نَازِلَةٌ وَ عَوَآئِدَ الْمَزِيْدِ اِلَيْهِمْ وَاصِلَةٌ وَ ذُنُوْبَ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ

मज़ीद नेमतें उनको मिलती रहती हैं और इस्तेग़फ़ार करने वालों के गुनाह बख़शे हुए हैं और तेरी मख़लूक़

مَغْفُوْرَةٌ وَ حَوَآئِجَ خَلْقِكَ عِنْدَكَ مَقْضِيَّةٌ وَ جَوَائِزِ السَّائِلِيْنَ

की हाजतें तेरी बारगाह मे पूरी हो चुकी हैं और सवाल करने वाला के इनाम तेरे पास ज़्यादा हैं और मज़ीद

عِنْدَكَ مُوَفَّرَةٌ وَ عَوَائِدَ الْمَزِيْدِ مُتَوَاتِرَةٌ وَ مَوَآئِدَ الْمُسْتَطْعِمِيْنَ

अताया मुतवातिर मिलते रहते हैं और रोज़ी तलब करने वालों के लिए ख़्वाने एहसान मोहय्या है और

مُعَدَّةٌ وَ مَنَاهِلَ الظِّمَآءِ مُتْرَعَةٌ اَللّٰهُمَّ فَاسْتَجِبْ دُعَآئِيْ وَ اَقْبِلْ

प्यासों के लिए सर चश्मए आब भरा हुआ है। खुदा मेरी दुआ को क़ुबूल कर और मेरी सना को क़ुबूल कर

ثَنَآئِيْ وَاجْمَعْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اَوْلِيَآئِيْ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ عَلِيٍّ وَّ فَاطِمَةَ وَ الْحَسَنِ

और मुझको मेरे महबूब अफ़राद के साथ जमा कर मोहम्मद, अली, फ़ातेमा, हसन, हुसैन (अ) के वासते

وَ الْحُسَيْنِ اِنَّكَ وَلِيُّ نَعْمَآئِيْ وَ مُنْتَهٰى مُنَايَ وَ غَايَةُ رَجَآئِيْ فِيْ

से बेशक तू मेरा वलीए नेमत है और मेरी आरज़ू की इन्तेहा और उम्मीद की मनिज़ल है इस दुनिया मे व

مُنْقَلَبِيْ وَ مَثْوَايَ.

आख़िरत में।

और कामेलुज़ ज़ियारात में इसके बाद यह फ़िक़रे भी लिखे हुए हैं:

اَنْتَ اِلٰهِیْ وَ سَیِّدِیْ وَ مَوْلَایَ اِغْفِرْ لِاَوْلِیَآئِنَا وَ کُفَّ عَنَّا

तू मेरा माबूद और मेरा सरदार और मेरा मौला है मेरे दोस्तों को बख़श दे और हम से हमारे दुश्मनो

اَعْدَآئَنَا وَ اشْغَلْهُمْ عَنْ اَذَانَا وَ اَظْهِرْ کَلِمَةَ الْحَقِّ وَ اجْعَلْهَا

को रोक दे और उन को हमें तकलीफ़ देने से दूर रख और कलमए हक़ को ज़ाहिर कर दे और

الْعُلْیَا وَ اَدْحِضْ کَلِمَةَ الْبَاطِلِ وَ اجْعَلْهَا السُّفْلٰی اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ

उसको बुलंद क़रार दे और कलमए बातिल को रौन दे और उसको पस्त कर दे बेशक तू हर चीज

شَیْءٍ قَدِیْرٌ.

पर क़ादिर है।

उसके बाद हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) ने फ़रमाया के हमारे शियों में से जो भी इस दुआ और ज़ियारत को क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास पढ़ेगा या आइम्मा (अ.स.) में से किसी की क़ब्र के पास पढ़ेगा खुदावंदे आलम इस ज़ियारत और दुआ को उसके नामए आमाल में हरफ़े नूर से दर्ज केरगा और उस पर पैग़ंबरे इसलाम की मोहर होगी और वो इस तरह महफ़ूज़ होगा के उसे इमामे ज़माना क़ाएमे आले मोहम्मद के हवाले कर दिया जाएगा और वह इस अमल के करने वाले का इस्तेक़बाल करेंगे बशारत और तहीय्यत व इक्राम के साथ इन्शाअल्लाह:

लेखक कहता है के यह ज़ियारत ज़ियारते मुतलक़ा में भी शुमार होगी और ज़ियारते मख़सूसा ईदे ग़दीर के दिन में भी और ज़ियारते जामेआ में भी जो उसके बाद हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) ने फ़रमाया के हमारे शियों में से जो भी इस दुआ और ज़ियारत को क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास पढ़ेगा या आइम्मा (अ.स.) में से किसी की क़ब्र के पास पढ़ेगा खुदावंदे आलम इस ज़ियारत और दुआ को उसके नामए आमाल में हरफ़े नूर से दर्ज

केरगा और उस पर पैग़ंबरे इसलाम की मोहर होगी और वो इस तरह महफ़ूज़ होगा के उसे इमामे ज़माना क़ाएमे आले मोहम्मद के हवाले कर दिया जाएगा और वह इस अमल के करने वाले का इस्तेक़बाल करेंगे बशारत और तहीय्यत व इक्राम के साथ इन्शाअल्लाह:

लेखक कहता है के यह ज़ियारत ज़ियारते मुतलक़ा में भी शुमार होगी और ज़ियारते मख़सूसा ईदे ग़दीर के दिन में भी और ज़ियारते जामेआ में भी जो तमाम रौज़ों में पढ़ी जाती है।

तीसरी ज़ियारत

सय्यद अब्दुल करीम ताऊस ने सफ़वान जम्माल से रिवायत की है के हम इमाम सादिक़ (अ.स.) के साथ कूफ़े में वारिद हुए। जब इमाम अबू जाफ़र मनसूरे दवानेकी के पास जा रहे थे तो आप (अ.स.) ने फ़रमाया के ऐ सफ़वान ऊंट को बिठाओ के यह मेरे जद अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की क़ब्र के नज़दीक का इलाक़ा है और आप ने गुस्ल किया और लिबास तबदील किया और जूतियाँ उतार दीं और कहा के तुम भी एसा करो। फिर नजफ़ की तरफ़ रवाना हुए और फ़रमाया के आहिस्ता क़दम बढ़ाओ और सर को झुका लो के खुदावंदे आलम तुम्हारे लिए हर क़दम पर एक लाख नेकियाँ लिखेगा और एक लाख गुनाह मिटा देगा और एक लाख दरजात बुलंद करेगा और एक लाख हाजतों को पूरा करेगा और तुम्हारे लिए सिद्दीक़ व शहीद का सवाब लिखेगा। चुनांचे मैं हज़रत के हमराह इतमिनानो सुकून के साथ तसबीह व तहलील करते हुए जा रहा था। यहाँ तक के आप एक बुलंदी पर पहुँचे और दाए बाएं निगाह डालकर लकड़ी से एक लकीर खींची और फ़रमाया के तलाश करो। मैंने तलाश किया तो एक क़ब्र का निशान नज़र आया। आपकी आंखों में आँसू जारी हो कर चेहरे पर आ गए और फ़रमाया:

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ التَّقِيُّ

हम खुदा के लिए है और खुदा की तरफ़ लौटेगें, सलाम हो तुम पर ऐ वसी, नेक और मुत्तक़ी,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبَاُ الْعَظِيمُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

सलाम हो तूम पर ऐ ख़बरे अज़ीमे आलम (इमामत) सलाम हो आप पर ऐ सिद्दीक़ और

الصِّدِّيقُ الرَّشِيدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْبَرُّ الزَّكِيُّ اَلسَّلَامُ

रशीद, सलाम हो आप पर ऐ नेक व पाकीज़ा, सलाम हो आप पर ऐ आलमीन के परवरदिगार

عَلَيْكَ يَا وَصِيَّ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ

के रसूल के वसी, सलाम हो आप पर ऐ तमाम मख़लूक़ मे अल्लाह की बेहतरीन मख़लूक़ मै

عَلَى الْخَلْقِ اجْمَعِينَ اشْهَدُ انَّكَ حَبِيبُ اللهِ وَخَاصَّةُ اللهِ وَخَالِصَتُهُ

गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के हबीब और ख़ास व ख़ालिस बन्दे, सलाम हो आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ وَمَوْضِعَ سِرِّهِ وَعَيْبَةَ عِلْمِهِ وَخَازِنَ

वलीए खुदा और उस के राज़ के मकाम और उसके इल्म के मख़ज़न और उसकी वही के

وَحْيِهِ

ख़ाज़िनादार।

फिर अपने को क़ब्र से मस करके फ़रमाया:

بِابِي انْتَ وَاُمِّي يَا امِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بِابِي انْتَ وَاُمِّي يَا حُجَّةَ الْخِصَامِ بِابِي

मेरे माँ बाप आपपर क़ुर्बान हों ऐ हर मक़सूद के दरवाज़े मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों ऐ

انْتَ وَاُمِّی یَا بَابَ الْمَقَامِ بِاَبِی انْتَ وَاُمِّی یَا نُورَ اللهِ التَّامَّ اشْهَدُ

मुकम्मल नूरे खुदा। मै गवाही देता हूँ के आप जिस अम्र पर खुदा और रसूल (स) की जानिब

انَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ عَنِ اللهِ وَعَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ مَا

से मामूर थे उसको पहुँचा दिया और जिस की हिफ़ाज़त पर मामूर थे उसकी रेआयत की और

حُمِّلْتَ وَرَعَيْتَ مَا اسْتُحْفِظْتَ وَحَفِظْتَ مَا اسْتُوْدِعْتَ وَحَلَّلْتَ

जिस की अमानत रखी गई थी उसको महफ़ूज़ किया और आप ने हलाले खुदा को हलाल

حَلَالَ اللهِ وَحَرَّمْتَ حَرَامَ اللهِ وَاَقَمْتَ اَحْكَامَ اللهِ وَلَمْ تَتَعَدَّ حُدُوْدَ

और हरामे खुदा को हराम बाक़ी रखा आपने अहकामे खुदा को क़ाएम किया और हुदूदे खुदा

اللهِ وَعَبَدْتَ اللّٰهَ مُخْلِصًا حَتَّىٰ اَتَاكَ الْيَقِيْنُ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ

से तजावुज़ नही किया और खुलूस से अल्लाह की इबादत की यहाँ तक के मौत आ गई अल्लाह

الْاَئِمَّةِ مِنْ بَعْدِكَ

का दुरूद हो आप पर और आप के बाद के तमाम आईम्मए ताहेरीन पर।

फिर इमाम उठे और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के बालाए सर चंद रकत नमाज़ अदा की और फ़रमाया: ऐ सफ़वान जो व्यक्ति अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की यह ज़ियारत पढ़ेगा और यह नमाज़ अदा करेगा वह अपने घर वालों में इस तरह वापस होगा के उसके गुनाह बख़्शे हुए होंगे और उसका अमल मक़बूलो पसंदीदे खुदा होगा और उसके लिए वह सवाब होगा जो मलाएका को उनकी ज़ियारत का सवाब मिलता है। सफ़वान ने ताज्जुब से पूछा ऐसा सवाब है? फ़रमाया हाँ। हर शब में मलाएका के सत्तर क़बीले इमाम

(अ.स.) की ज़ियारत करते हैं। पूछा के हर क़बीले में कितने फ़रिश्ते होते हैं? फ़रमाया के एक लाख फ़रिश्ते। फिर इमाम (अ.स.) उल्टे पैर वापस हुए और वापस होते हुए ज़बान से कह रहे थे:

يَا جَدَّاهُ يَا سَيِّدَاهُ يَا طَيِّبَاهُ يَا طَاهِرَاهُ لَا جَعَلَهُ اللّٰهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْكَ

ऐ मेरे दादा ऐ मेरे सरदार ऐ पाक व पाकीजा ऐ ज़ाहिर व मुनजा खुदा उस को मेरे लिए आप का

وَرَزَقَنِي الْعَوْدَ إِلَيْكَ وَالْمَقَامَ فِي حَرَمِكَ وَالْكَوْنَ مَعَكَ وَمَعَ

आख़री दीदार न क़रार दे और मुझको आप की तरफ़ वापसी की तौफ़िक़ दे और आप के हरम मे

الْاَبْرَارِ مِنْ وُلْدِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَعَلَى الْمَلَائِكَةِ الْمُحْدِقِينَ

मक़ामे करामत करे और आप के साथ रहना और आप की औलाद मे नेक लोगों के साथ रहना

بِكَ

नसीब करे अल्लाह का दुरूद हो आप पर और आप की क़ब्र के गिर्द रहने वाले मलाएका पर।

सफ़वान ने कहा के मैंने इमाम (अ.स.) से बयान किया के अगर आप इजाज़त दें तो मैं कूफ़े के लोगों को इस क़ब्र का निशान बता दूँ। तो आपने फ़रमाया हाँ बता दो और चंद दिरहम भी दिए के क़ब्र की मरम्मत करा दो।

चौथी ज़ियारत

जो मुस्तदरक में मज़ारे क़दीम से नक़्ल हुई है। और जिसकी रिवायत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) से है। के मैं अपने पिदरे बुज़ुर्गवार के साथ अपने जद अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत के लिए नजफ़ गया तो मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार क़ब्र के क़रीब ख़ड़े हुए और गिरया फ़रमाया:

اَلسَّلَامُ عَلٰی اَبِی الاَئِمَّةِ وَخَلِیلِ النُّبُوَّةِ وَالْمَخْصُوصِ بِالْاُخُوَّةِ

सलाम हो आइम्मा के पिदरे बुज़ुर्गवार और नबूवत के दोस्त और रसूले खुदा के

اَلسَّلَامُ عَلٰی یَعْسُوبِ الاِیمَانِ وَمِیزَانِ الاَعْمَالِ وَسَیْفِ ذِی

मख़सूस भाई पार, सलाम हो ईमान के सरदार और मीज़ान आमाल और खुदा वन्दे

الْجَلَالِ اَلسَّلَامُ عَلٰی صَالِحِ الْمُؤْمِنِینَ وَوَارِثِ عِلْمِ النَّبِیِّینَ

आलम की तलवार पर, सलाम हो सालेह मोमिनीन पर और नबियों के इल्म के वारिस

الْحَاکِمِ فِی یَوْمِ الدِّینِ اَلسَّلَامُ عَلٰی شَجَرَةِ التَّقْوٰی اَلسَّلَامُ عَلٰی حُجَّةِ

पर जो राज़े जज़ा के आलिम हैं, सलाम हो तक़्वे के शजरे पर सलाम हो अल्लाह की

اللّٰهِ الْبَالِغَةِ وَنِعْمَتِهِ السَّابِغَةِ وَنِقْمَتِهِ الدَّامِغَةِ اَلسَّلَامُ عَلٰی

हुज्जते बालिग़ा और नेमते वासेअ और मग़्ज़े शिकन क़हेरे इलाही पर, सलाम हो वाज़ेह

الصِّرَاطِ الوَاضِحِ وَالنَّجْمِ اللاَّئِحِ وَالاِمَامِ النَّاصِحِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

रासते पर और दरख़शंदा सितारे पर और इमामे नासेह पर और अल्लाह की रहमत और

وَبَرَکَاتُهُ

बरकात हो।

फिर कहा:

اَنْتَ وَسِيلَتِيْ اِلَى اللهِ وَذَرِيْعَتِيْ وَلِيْ حَقُّ مُوَالَاتِيْ وَتَأَمِيلِيْ فَكُنْ لِيْ

आप मेरा ज़रिया हैं अल्लाह की जानिब और वसीला हैं और मेरे लिए दोस्ती और उम्मीदवारी का हक़ है तो आप

شَفِيعِيْ اِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ فِي الْوُقُوفِ عَلٰى قَضَاءِ حَاجَتِيْ وَهِيَ فَكَاكُ

मेरे लिए खुदाए अज़्ज़ जल्ल की बारगाह मे शिफ़ाअत करने वाले हो जाएं मेरी हाजत के पूरा होने की मनिज़ल मे

رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ وَاصْرِفْنِيْ فِيْ مَوْقِفِيْ هٰذَا بِالنُّجْحِ وَبِمَا سَأَلْتُهُ كُلِّهِ

और वो हाजत ये है के मेरी गुलु ख़लासी हो जाए जहन्नम की आग से और मुझ को मेरे मुवक़्क़ीफ़ मे कामयाबी

بِرَحْمَتِهِ وَقُدْرَتِهِ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ عَقْلًا كَامِلًا وَلُبًّا رَاجِحًا وَقَلْبًا زَكِيًّا

और हाजतरवाई के साथ वापस करे अपनी रहमत और क़ुदरत से खुदाया मुझको मुकम्मल अक़्ल और

وَعَمَلًا كَثِيرًا وَادَبًا بَارِعًا وَاجْعَلْ ذٰلِكَ كُلَّهُ لِيْ وَلَا تَجْعَلْهُ عَلَيَّ

मुमताज़ दिमाग़ और पाकीज़ा दिल और ज़्यादा अमल बुलंद अदब अता फ़र्मा और उन सब को मेरे फ़ाएदे का

بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

ज़रिया क़रार दे और मेरे लिए ज़रर का बाएस न क़रार दे अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

पाँचवी ज़ियारत

शेख़ कुलैनी ने रिवायत की है के अबुल हसन सालिस इमाम नक़ी (अ.स.) से के वह क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास यह ज़ियारत पढ़ते थे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ انْتَ اوَّلُ مَظْلُومٍ وَاوَّلُ مَنْ

सलाम हो आप पर ऐ वलीए खुदा, आप पहले मज़लूम हैं आप ही पहले वो शख़्स हैं जिन का हक़

غُصِبَ حَقُّهُ صَبَرْتَ وَاحْتَسَبْتَ حَتّٰى اتَاكَ الْيَقِينُ فَاشْهَدُ

ग़ज़ब किया गया तो सब्र किया आप ने और बरदाशत किया। यहाँ तक के मौत आ गई, पस मै

انَّكَ لَقِيتَ اللّٰهَ وَانْتَ شَهِيدٌ عَذَّبَ اللهُ قَاتِلَكَ بِاَنْوَاعِ

गवाही देता हूँ के आप ने अल्लाह से मुलाक़ात की दर हालाँके आप शहीद हुए खुदा आपके क़ातिलां

الْعَذَابِ وَجَدَّدَ عَلَيْهِ الْعَذَابَ جِئْتُكَ عَارِفًا بِحَقِّكَ

को मुख़तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब मे मुबतेला करे और नए नए अंदाज़ का अज़ाबदे मै आपके पास

مُسْتَبْصِرًا بِشَانِكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَائِكَ وَمَنْ ظَلَمَكَ الْقَىٰ عَلٰى

आया हूँ आपके हक़ को पहचानते हुए आप की शान से वाक़फ़ होते हुए आपके दुश्मनो और आप पर

ذٰلِكَ رَبِّيْ اَنْ شَاءَ اللّٰهُ يَا وَلِيَّ اللهِ اِنَّ لِيْ ذُنُوبًا كَثِيرَةً فَاشْفَعْ لِيْ

ज़ुल्म करने वालों से दुश्मनी करते हुए और इसी हाल मे अपने खुदासे मुलाक़ात करूँगा इन्शाअल्लाह

اِلٰى رَبِّكَ فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللهِ مَقَامًا مَعْلُومًا وَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللهِ

ऐ अल्लाह के वली मेरे गुनाह बहुत हैं। आप खुदा की बारगाह मे मेरी शफ़ाअत करें क्योंके आप का

جَاهًا وَشَفَاعَةً وَقَدْ قَالَ اللهُ تَعَالٰى: "وَلَا يَشْفَعُونَ اِلَّا لِمَنِ

मकाम खुदा के नज़दीक बुलंद है और आप को इज़्ज़त और हक़्क़े शफ़ाअत हासिल है खुदा के

ارْتَضَىٰ."

नज़दीक़ और खुदा ने फ़रमाया है वो लोग शफ़ाअत नही करते हैं मगर उस की जिस से खुदा राज़ी हो।

छटी ज़ियारत

वह ज़ियारत है जिसकी रिवायत ओलमा के एक गरोह ने की है जिनमें से शेख़ मोहम्मद बिन मश्हदी ने फ़रमाया है के मोहम्मद बिन ख़ालिद तयालेसी ने सैफ़ बिन उमरा से रिवायत की है के:

मैं सफ़वान जम्माल के साथ और बाज़ असहाब के साथ नजफ़ की तरफ़ गया और हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत की उसके बाद जब फ़ारिग़ हो गया तो अपने रूख़ को इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र की तरफ़ किया और कहा के मैं इस जगह से ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) करता हूँ और सफ़वान ने बताया के हम इमाम सादिक़ (अ.स.) के साथ यहाँ आए थे। और इमाम ने इसी प्रकार ज़ियारत और नमाज़ो दुआ पढ़ी थी। जैसे मैं पढ़ता हूँ और फ़रमाया के सफ़वान इस ज़ियारत को याद रखो और हमेशा अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत इसी तरह किया करो। मैं इस बात का ज़ामिन हूँ के जो व्यक्ति इस प्रकार ज़ियारत करेगा और यह दुआ पढ़ेगा नज़दीक या दूर से तो उसकी ज़ियारत मक़बूल होगी। और उसका अमल हक़दारे जज़ा होगा और उसका सलाम उनको ज़रूर पहुँचेगा और पसंदीदा होगा। और उसकी हाजतें पूरी होंगी चाहे वह कितनी ही अज़ीम हां।

लेखक कहता है के एक ख़बर का ततीम्मा फ़ज़ीलते अमल के बारे में दुआ-ए-सफ़वान के अंत में ज़ियारते आशूरा में बयान किया जाएगा। और ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) यह है के क़ब्र की तरफ़ रूख़ कर के कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفْوَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदा, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के मुनताख़िब बन्दे, सलाम

عَلَيْكَ يَا اَمِينَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اصْطَفَاهُ اللّٰهُ وَاخْتَصَّهُ وَاخْتَارَهُ

हो आप पर ऐ अमीने खुदा, सलाम हो आप पर जिस को खुदा ने बरगुज़ीदा किया और

مِنْ بَرِيَّتِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيلَ اللّٰهِ مَا دَجَى اللَّيْلُ وَغَسَقَ وَاَضَاءَ

उसको मख़सूस किया और अपनी मख़लूक़ मे मुनताख़िब किया, सलाम हो आप पर ऐ

النَّهَارُ وَاَشْرَقَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مَا صَمَتَ صَامِتٌ وَنَطَقَ نَاطِقٌ وَذَرَّ

ख़लीले खुदा जब तक रात तारीक रहे और दिन रौशन व मुनव्वर रहे, सलाम हो आप पर

شَارِقٌ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَوْلَانَا اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيِّ

जब तक ख़ामोश रहने वाला ख़ामोश रहे और बोलने वाला बोले और सितारा ताबानी

بْنِ اَبِي طَالِبٍ صَاحِبِ السَّوَابِقِ وَالْمَنَاقِبِ وَالنَّجْدَةِ وَمُبِيدِ

देता रहे और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों, सलाम हो मौलाना अमीरूल मोमिनीन

الْكَتَائِبِ الشَّدِيدِ الْبَاسِ الْعَظِيمِ الْبِرَاسِ الْمَكِينِ الاَسَاسِ

अली बिन अबी तालिब (अ) पर जो फ़ज़ाएल व मनाक़िब वाले हैं और बुज़ुर्गा वाले हैं

سَاقِي الْمُؤْمِنِينَ بِالْكَاسِ مِنْ حَوْضِ الرَّسُولِ الْمَكِينِ الاَمِينِ

और सख़्त लश्करों को दरहम बरहम करने वाले हैं और क़वी पन्जा बहादुरां और मोहकम

اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ النُّهٰى وَالْفَضْلِ وَالطَّوَائِلِ وَالْمَكْرُمَاتِ

पाया क़ुदरत वालों के ख़त्म करने वाले हैं। मोमिनीन के साकी हैं जामे शराबे तहूर से

وَالنَّوَائِلِ اَلسَّلَامُ عَلٰى فَارِسِ الْمُؤْمِنِينَ وَلَيْثِ الْمُوَحِّدِينَ وَقَاتِلِ

हौज़े कौसर के जो रसूले क़ादीर व अमीन का है। सलाम हो सहेबे अक़ल व फ़ज़्ल और

الْمُشْرِكِينَ وَوَصِيِّ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

नेमत, मुकरमत और अताया पर, सलाम हो मोमिनीन के शहसवार पर और वहदानियत

اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَيَّدَهُ اللهُ بِجِبْرَئِيلَ وَاعَانَهُ بِمِيكَائِيلَ وَازْلَفَهُ فِي

का इक़रार करनेवालों के शेर पर और मुशरिकों के क़ातिल पर और रब्बील आलमीन

الدَّارَيْنِ وَحَبَاهُ بِكُلِّ مَا تَقَرُّ بِهِ الْعَيْنُ وَصَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ

के रसूल के वसी पर और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों, सलाम हो उस पर जिस की

الطَّاهِرِينَ وَعَلٰى اَوْلَادِهِ الْمُنْتَجَبِينَ وَعَلَى الاَئِمَّةَ الرَّاشِدِينَ الَّذِينَ

खुदा ने ताईद की है जिब्रईल के ज़रिए और जिस की मदद की है मिकाईल के ज़रिए और

امَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَفَرَضُوا عَلَيْنَا الصَّلَوَاتِ

दोनो आलम मे जिस को मुक़र्रब किया है और उसको हर वो चीज अता की है जिस से

وَامَرُوا بِاِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَعَرَّفُونَا صِيَامَ شَهْرِ رَمَضَانَ وَقِرَاءَةَ الْقُرْآنِ

आँख को ठंठक हासिल हो और अल्लाह का दुरूद हो उन पर और उनकी आले पाक पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ وَيَعْسُوبَ الدِّينِ وَقَائِدَ الْغُرِّ

और उनकी औलाद व ताहेरीन पर और आइम्मा राशेदीन पर जिन्हों ने अम्र बिल मारूफ़

الْمُحَجَّلِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَابَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَيْنَ اللهِ

और नही अनिल मुनकर किया और हम पर नमाज़ों को फ़र्ज़ क़रार दिया और ज़कात अदा

النَّاظِرَةَ وَيَدَهُ الْبَاسِطَةَ وَاُذُنَهُ الْوَاعِيَةَ وَحِكْمَتَهُ الْبَالِغَةَ وَنِعْمَتَهُ

करने का हुकुम दिया और हमको माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े पहुँचवाए और क़ुआर्न

السَّابِغَةَ وَنِقْمَتَهُ الدَّامِغَةَ اَلسَّلَامُ عَلٰى قَسِيمِ الْجَنَّةَ وَالنَّارِ

का पढ़ना बताया। सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन सरदारे दीन और अमीरे

اَلسَّلَامُ عَلٰى نِعْمَةِ اللهِ عَلَى الابْرَارِ وَنِقْمَتِهِ عَلَى الْفُجَّارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

नेक किरदारान। सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह का दरवाज़ा। सलाम हो आप पर ऐ चश्मे

سَيِّدِ الْمُتَّقِينَ الاخْيَارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اخِي رَسُوْلِ اللهِ وَابْنِ عَمِّهِ

बीनाऐ खुदा और उसके फैले हुए हाथ और उसके गोशे शनवा और हिकमते बाल्ग़ा

وَزَوْجِ ابْنَتِهِ وَالْمَخْلُوقِ مِنْ طِينَتِهِ اَلسَّلَامُ عَلَى الاصْلِ الْقَدِيمِ

और मुकम्मल नेमत और हलाक करने वाले खुदा के ग़ज़ब। सलाम हो जन्नतो जहन्नम के

وَالْفَرْعِ الْكَرِيمِ اَلسَّلَامُ عَلَى الثَّمَرِ الْجَنِيِّ اَلسَّلَامُ عَلٰى ابِي الْحَسَنِ

तक़सीम करनवाले पर। सलाम हो नेकियों पर अल्लाह की नेमत पर और बुरों पर अल्लाह

عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلٰى شَجَرَةِ طُوبٰى وَسِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى اَلسَّلَامُ عَلٰى آدَمَ

के अज़ाब पर। सलाम हो मुत्तक़ी और नेक लोगों के सरदार पर। सलाम हो रसूल अल्लाह

صَفْوَةِ اللهِ وَنُوحٍ نَبِيِّ اللهِ وَاِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللهِ وَمُوسَىٰ كَلِيمِ اللهِ

के भाई और चचा के फ़रज़ंद, दामाद और रसूल की तीनत से पैदा होने वाले पर, सलाम

وَعِيسَىٰ رُوحِ اللهِ وَمُحَمَّدٍ حَبِيبِ اللهِ وَمَنْ بَيْنَهُمْ مِنَ النَّبِيِّينَ

हो असल क़दीम और फ़रे क़रीम पर, सलाम हो दरख़ आफ़नश के रसीदा मेवा पर, सलाम

وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيقًا اَلسَّلَامُ

हो अबुल हसन अली पर, सलाम हो शजरए तूबा और सिदरह मुंतहा पर, सलाम हो आदम

عَلٰى نُورِ الاَنْوَارِ وَسَلِيلِ الاَطْهَارِ وَعَنَاصِرِ الاَخْيَارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

(अ) पर जो अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दे हैं और नूह नबी खुदा और इब्राहीम ख़लीले खुदा

وَالِدِ الاَئِمَّةِ الاَبْرَارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى حَبْلِ اللهِ الْمَتِينِ وَجَنْبِهِ الْمَكِينِ

और मूसाए कलीमे खुदा और ईसा रूहे खुदा और मोहम्मद हबीबे खुदा पर और जो उन के

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَمِينِ اللهِ فِي اَرْضِهِ وَخَلِيفَتِهِ

दरमियान मे नबी सिद्दीक़ शहीद और सालेह अफ़राद गुज़रे हैं और उनके नेक रफ़ीक़ों पर,

وَالْحَاكِمِ بِاَمْرِهِ وَالْقَيِّمِ بِدِينِهِ وَالنَّاطِقِ بِحِكْمَتِهِ وَالْعَامِلِ بِكِتَابِهِ

सलाम हो नूरो के नूर पर जिसको खुदाने अपनी मोहकम आयतों मे ज़िक्र किया है और

اَخِي الرَّسُولِ وَزَوْجِ الْبَتُولِ وَسَيْفِ اللهِ الْمَسْلُولِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

फ़रमाया है के वो उम्मुल किताब मे है मेरे पास जो बुलंद और हिकमत वाला है, सलाम

صَاحِبِ الدَّلَالَاتِ وَالآيَاتِ الْبَاهِرَاتِ وَالْمُعْجِزَاتِ الْقَاهِرَاتِ

हो खुदा के पसंदीदा नाम पर और उस के रौशन चेहरे और उसके बुलंद जंब पर और

وَالْمُنْجِي مِنَ الْهَلَكَاتِ الَّذِي ذَكَرَهُ اللهُ فِي مُحْكَمِ الآيَاتِ فَقَالَ تَعَالَىٰ

अल्लाह की रहमत और बरकात हो, सलाम हो अल्लाह की हुज्जतां और उसके वसीयों पर

"وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ." اَلسَّلَامُ عَلٰى اسْمِ اللهِ

और अल्लाह के मख़सूस और बरगुज़ीदा बन्दों पर और उसके ख़ालिस और अमीन बन्दे

الرَّضِيِّ وَوَجْهِهِ الْمُضِيءِ وَجَنْبِهِ الْعَلِيِّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ

पर और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों मै ने आपकी बारगाह का क़सद किया है ऐ

عَلٰى حُجَجِ اللهِ وَاوْصِيَائِهِ وَخَاصَّةِ اللهِ وَاصْفِيَائِهِ وَخَالِصَتِهِ وَاُمَنَائِهِ

मौला ऐ अमीने खुदा और उसकी हुज्जत, ज़ियारत करने के लिए आप के हक़ को पहचानते

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ قَصَدْتُكَ يَا مَوْلَايَ يَا اٰمِينَ اللهِ وَحُجَّتَهُ زَائِرًا

हुए आप के दोस्तों का दोस्त और दुश्मनो का दुश्मन हो कर अल्लाह से तक़रर्रूब हासिल

عَارِفًا بِحَقِّكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَائِكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَائِكَ مُتَقَرِّبًا اِلَى اللهِ

करते हुए आप की ज़ियारत के ज़रिए तो मेरी शिफ़ाअत कीजिए अल्लाह के पास जो मेरा

بِزِيَارَتِكَ فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ اللهِ رَبِّي وَرَبِّكَ فِي خَلَاصِ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ

और आपका रब है जहन्नम से मेरी नजात के लिए और दुनिया-आख़ेरत की सब हाजतें

وَقَضَاءِ حَوَائِجِی حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ

पूरा करने के लिए।

फिर जिस्म को क़ब्र से मस करके बोसा दे और कहे:

سَلَامُ اللهِ وَسَلَامُ مَلَائِكَتِهِ الْمُقَرَّبِينَ وَالْمُسَلِّمِينَ لَكَ

अल्लाह का सलाम और मलाएका मुक़र्रबीन का सलाम हो और उनका सलाम जो तेरे सामने

بِقُلُوبِهِمْ يَا امِيرَ الْمُؤْمِنِينَ وَالنَّاطِقِينَ بِفَضْلِكَ وَالشَّاهِدِينَ

सरे तसलीम ख़म किए है अपने दिल के साथ ऐ अमीरूल मोमिनीन और जो तेरी फ़ज़ीलत को

عَلٰى انَّكَ صَادِقٌ امِينٌ صِدِّيقٌ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اشْهَدُ

बयान करते हैं और गवाह हैं के आप सादिक़ और अमीन और सिद्दीक़ हैं और अल्लाह की रहमत

انَّكَ طُهْرٌ طَاهِرٌ مُطَهَّرٌ مِنْ طُهْرٍ طَاهِرٍ مُطَهَّرٍ اشْهَدُ لَكَ يَا وَلِيَّ اللهِ

और बरकात हो। मै गवाही देता हूँ के आप पाक व पाकीज़ा मुतहहर हैं और पाक व पाकीज़ा

وَوَلِيَّ رَسُوْلِهِ بِالْبَلَاغِ وَالادَاءِ وَاشْهَدُ انَّكَ جَنْبُ اللهِ وَبَابُهُ

और मुतहहर नस्ल से हैं। मै गवाही देता हूँ आप के लिए ऐ अल्लाह के वली और उसके रसूल

وَانَّكَ حَبِيبُ اللهِ وَوَجْهُهُ الَّذِی يُؤْتَىٰ مِنْهُ وَانَّكَ سَبِيلُ اللهِ

के वली के आप ने पैग़ामे खुदा पहुँचाया और अदा किया और मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह

وَاَنَّكَ عَبْدُ اللهِ وَاَخُو رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ اَتَيْتُكَ مُتَقَرِّبًا

के मुकम्मल तरफ़दार हैं ओर उसका दरवाज़ा हैं आप अल्लाह के हबीब और वो रूख़ हैं जिस

اِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ بِزِيَارَتِكَ رَاغِبًا اِلَيْكَ فِي الشِّفَاعَةِ اَبْتَغِي

की तरफ़ आया जाता है और मै आप की बारगाह मे आया हूँ आपकी ज़ियारत के ज़रिए अल्लाह

بِشَفَاعَتِكَ خَلَاصَ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ مُتَعَوِّذًا بِكَ مِنَ النَّارِ

से क़ुर्ब हासिल करते हुए और आपकी पनाह चाहता हूँ जहन्नम से अपने गुनाहों से भागते हुए

هَارِبًا مِنْ ذُنُوْبِيَ الَّتِي احْتَطَبْتُهَا عَلَى ظَهْرِي فَزِعًا اِلَيْكَ رَجَاءَ

जिसको मैने अपनी पीठ पर लाद रखा है। अज़ाब से डरते हुए अपने रब की रहमत की उममीद

رَحْمَةِ رَبِّي اَتَيْتُكَ اَسْتَشْفِعُ بِكَ يَا مَوْلَايَ وَاَتَقَرَّبُ بِكَ اِلَى اللهِ

लगाए हुए मै आपके पास आया हूँ ऐ मौला मै आप से शिफ़ाअत चाहता हूँ और अल्लाह की

لِيَقْضِيَ بِكَ حَوَائِجِي فَاشْفَعْ لِي يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اِلَى اللهِ فَاِنِّي

तरफ़ आप के ज़रिए तक़र्ररूब चाहता हूँ ता के वो आप के वास्ते से मेरी हाजतों को पूरा कर दे

عَبْدُ اللهِ وَمَوْلَاكَ وَزَائِرُكَ وَلَكَ عِنْدَ اللهِ الْمَقَامُ الْمَحْمُودُ

तो आप मेरे लिए शिफ़ाअत करने वाले हो जाईए। ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) अल्लाह की तरफ़

وَالْجَاهُ الْعَظِيمُ وَالشَّانُ الْكَبِيرُ وَالشَّفَاعَةُ الْمَقْبُولَةُ اَللّٰهُمَّ

क्योंके मै अल्लाह का बन्दा आपका दोस्त और ज़ाएर हूँ और खुदाकी निगाह मे आप का पसंदीदा

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَصَلِّ عَلٰى امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَبْدِكَ

मक़ामे अज़ीम मनज़ेलत और बड़ी शान और मक़बूल शफ़ाअत है, खुदा दुरूद नाज़ल फ़र्मा

الْمُرْتَضٰى وَامِينِكَ الاَوْفٰى وَعُرْوَتِكَ الْوُثْقٰى وَيَدِكَ الْعُلْيَا

मोहम्मद और आले मोहम्मद पर और दुरूद कर अमीरूल मोमिनीन (अ) पर जो तेरे पसंदीदा

وَجَنْبِكَ الاَعْلٰى وَكَلِمَتِكَ الْحُسْنٰى وَحُجَّتِكَ عَلَى الْوَرٰى وَصِدِّيقِكَ

बन्दे और वफ़ादार अमीन मुसतह-कम रस्सी और तेरे बुलंद हाथ और तेरे आला तरफ़दार और

الاَكْبَرِ وَسَيِّدِ الاَوْصِيَاءِ وَرُكْنِ الاَوْلِيَاءِ وَعِمَادِ الاَصْفِيَاءِ

तेरे बेहतरीन कलमे और मख़लूक पर तेरी हुज्जत और तेरे तसदीक़े अकबर और वसियों के

امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ وَيَعْسُوبِ الدِّينِ وَقُدْوَةِ الصَّالِحِينَ وَاِمَامِ

सरदार और सालेहीन के क़ाएद और मुख़लेसीन के इमाम हैं जो ख़ता से महफ़ूज़ लगिज़शों से

الْمُخْلِصِينَ الْمَعْصُومِ مِنَ الْخَلَلِ الْمُهَذَّبِ مِنَ الزَّلَلِ الْمُطَهَّرِ

बरी, ओयूब से पाकीज़ा शुकूक से मुनज़्ज़ह तेरे नबी के भाई, तेरे रसूल के वसी हैं उस के बिसतर

مِنَ الْعَيْبِ الْمُنَزَّهِ مِنَ الرَّيْبِ اخِي نَبِيِّكَ وَوَصِيِّ رَسُولِكَ

पर सोने वाले अपने नफ़्स से उनके लिए ईसार करनेवाले और उनसे मुसीबत को दूर करनेवाले

الْبَائِتِ عَلٰى فِرَاشِهِ وَالْمُوَاسِي لَهُ بِنَفْسِهِ وَكَاشِفِ الْكَرْبِ عَنْ

हैं जिन को तूने नबूव्वा की तलवार, रिसालत की निशानी और उम्मत पर गवाह और हक़्क़ानियत

وَجْهِهِ الَّذِی جَعَلْتَهُ سَیْفًا لِنُبُوَّتِهِ وَآیَةً لِرِسَالَتِهِ وَشَاهِدًا عَلٰی

की दलील और अलमदार परचमे इसलाम, हयाते पैग़ंबर का निगेहबान और उम्मत का रहनुमा

اُمَّتِهِ وَدَلَالَةً عَلٰی حُجَّتِهِ وَحَامِلًا لِرَایَتِهِ وَوِقَایَةً لِمُهْجَتِهِ وَهَادِیًا

और दोस्ते तवाना और ताज सार शरफ़ व इफ़तेख़ार राज़ का दरवाज़ा और कामयाबी की कलीद

لِاُمَّتِهِ وَیَدًا لِبَاسِهِ وَتَاجًا لِرَاسِهِ وَبَابًا لِسِرِّهِ وَمِفْتَاحًا لِظَفَرِهِ

बनाया है। यहाँ तक के उन्होंने शिर्क की फ़ौजां को तेरे हुकूम से शिकस्त दे दी और कुफ़्फ़ार के

حَتّٰی هَزَمَ جُیُوْشَ الشِّرْكِ بِاِذْنِكَ وَاَبَادَ عَسَاكِرَ الْكُفْرِ بِاَمْرِكَ

लश्कर को तेरे हुकुम से निसतो नाबूद कर दिया और अपनी जान तेरे रसुल की मर्ज़ा की राह मे

وَبَذَلَ نَفْسَهٗ فِیْ مَرْضَاتِ رَسُوْلِكَ وَجَعَلَهَا وَقْفًا عَلٰی طَاعَتِهِ

क़ुर्बान कर दी और उसको उसकी इताअत के लिए वक़्फ़ कर दिया। खुदाया दुरूदे रहमत नाज़ल

فَصَلِّ اللّٰهُمَّ عَلَیْهِ صَلَاةً دَائِمَةً بَاقِیَةً

फ़र्मा उन पर हमेश बाक़ी रहने वाला दुरूद।

फिर ये पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَلِیَّ اللّٰهِ وَالشِّهَابُ الثَّاقِبُ وَالنُّوْرُ الْعَاقِبُ یَا

सलाम हो आप पर ऐ वलीए खुदा, ऐ शहाबे साक़ब और नूरे साबित, ऐ पाकीज़ा लोगों की अस्ल। ऐ

سَلِيلَ الاَطَائِبِ يَا سِرَّ اللهِ اِنَّ بَيْنِي وَبَيْنَ اللهِ تَعَالَىٰ ذُنُوبًا قَدْ

राज़े खुदा। मेरे और खुदा के दरमियान गुनाह हैं जिन्होने मेरी पुश्त को भारी कर दिया है और उनकी

اثْقَلَتْ ظَهْرِى وَلَا يَاتِي عَلَيْهَا اِلَّا رِضَاهُ فَبِحَقِّ مَنِ ائْتَمَنَكَ عَلٰى

माफ़ी तेरी मर्ज़ा के बग़ैर मुमकीन नही है तो उसके हक़ का वास्ता जिस ने आपको आपने राज़ का

سِرِّهِ وَاسْتَرْعَاكَ امْرَ خَلْقِهِ كُنْ لِي اِلَى اللهِ شَفِيعًا وَمِنَ النَّارِ

अमीन बनाया है और आपको अपनी मख़लूक़ के अम्र का मुहाफ़िज़ बनाया है आप मेरे लिए अल्लाह

مُجِيرًا وَعَلَى الدَّهْرِ ظَهِيرًا فَاِنِّي عَبْدُ اللهِ وَوَلِيُّكَ وَزَائِرُكَ صَلَّى اللهُ

की बारगाह मे शिफ़ाअत करनेवाले हो जाईए और जहन्नम से पनाह देने वाले और सख़्तिए ज़माना पर

عَلَيْكَ

मददगार, मै बन्दाए खुदा और आप का दोस्त हूँ और आप का ज़ाएर हूँ अल्लाह का दुरूद हो आप पर।

फिर छे रकत नमाज़े ज़ियारत पढ़े और जो दुआ चाहे करे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَيْكَ مِنِّي سَلَامُ اللهِ اَبَدًا مَا

सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) आप पर मेरा सलाम हो हमेशा के लिए जब तक

بَقِيتُ وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ

मै बाक़ी रहूँ और ये शब व रोज़ बाक़ी रहें।

फिर इशारा कर के क़ब्रे इमामे हुसैन (अ.स.) की जानिब रूख़ करे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ

सलाम हो आप पर ऐ अबु अब्दुल्लाह, सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा मै आप दोनो

اللهِ اَتَيْتُكُمَا زَائِرًا وَمُتَوَسِّلًا اِلَى اللهِ تَعَالَىٰ رَبِّي وَرَبِّكُمَا

बुज़ुर्गवार की ज़ियारत के लिए आया हूँ और अल्लाहने आपको अपनी तरफ़ वसीला बनाया है

وَمُتَوَجِّهًا اِلَى اللهِ بِكُمَا وَمُسْتَشْفِعًا بِكُمَا اِلَى اللهِ فِي حَاجَتِي

और आप दोनो के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ मुतवज्ञे हुआ हूँ और आप दोनो के ज़रिए अल्लाह की

هٰذِهِ...

तरफ़ शिफ़अत चाहता हूँ अपनी इस हाजत मे।

और आख़िर तक اِنَّهُ قَرِيبٌ مُجِيبٌ दुआए सफ़वान पढ़े। फिर रू ब क़िबला होकर दुआ को शुरू से पढ़े:

يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ يَا كَاشِفَ كُرَبِ

ऐ खुदा, ऐ खुदा, ऐ खुदा ऐ परेशान हाल लोगां की दुआ को क़ुबूल करने वाले और ऐ ग़मज़दा

الْمَكْرُوبِينَ وَاصْرِفْنِي بِقَضَاءِ حَوَائِجِي وَ كِفَايَةِ مَا اهَمَّنِي هَمُّهُ مِنْ

लोगों के ग़म के दूर करने वाले मुझको हाजत पूरी करके लौटा और मेरी किफ़ालत कर जो

امْرِ آخِرَتِي وَدُنْيَايَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

अहेमतरीन उमूर हों दुनिया और आख़िरत के उमूरमे से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

फिर मुतवज्जे हो क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की तरफ़ और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ وَاَلسَّلَامُ عَلَى اَبِي عَبْدِ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन, सलाम हो अबु अब्दुल्लाह हुसैन (अ) पर जब तक मै

الْحُسَيْنِ مَا بَقِيتُ وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ لَا جَعَلَهُ اللهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّي

बाक़ी रहूँ और शब व राज़ बाक़ी रहें अल्लाह उस को मेरे लिए आप दोनो की ज़ियारत का आख़री

لِزِيَارَتِكُمَا وَلَا فَرَّقَ اللهُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمَا

ज़माना न क़रारदे और न मेरे और आप दोनो के दरमिया जुदाई डाले।

मोअल्लिफ़ कहता है के इसके पहले यह ज़िक्र हो चुका है के दुआ सफ़वान वही है जो दुआ अलक़मा के नाम से मशहूर है और उसका ज़िक्र ज़ियारते आशूरा के ज़ैल में आएगा।

सातवीं ज़ियारत

वह ज़ियारत है जिसकी सय्यद इब्ने ताऊस ने मिसबाहुज़ ज़ाएर में नक़्ल किया है के बाबुस सलाम पर यानी दरगाह रौज़ा मुक़ेद्दसा अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) पर चौंतीस बार اللهُ اَكْبَرُ कहे और फिर पढ़े:

سَلَامُ اللهِ وَسَلَامُ مَلَائِكَتِهِ الْمُقَرَّبِينَ وَانْبِيَائِهِ الْمُرْسَلِينَ

खुदा का सलाम हो और मलाएका मुक़र्रबीन और अंबीआए मुर्सलीन और उस के नेक

وَعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ وَجَمِيعِ الشُّهَدَاءِ وَالصِّدِّيقِينَ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ

बन्दों और तमाम शोहदा और सिद्दीक़ों का सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन।

الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى آدَمَ صَفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى نُوحٍ نَبِيِّ اللهِ

सलाम हो आदम खुदाके बरगुज़ीदा पर सलाम हो नूह (अ) खुदा के नबी पर। सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلٰى اِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُوسٰى كَلِيمِ اللهِ

खुदा के ख़लील इब्राहीम पर सलाम हो अल्लाह के कलीम जनाबे मूसा पर। सलाम हो रूहे

اَلسَّلَامُ عَلٰى عِيسٰى رُوحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَبِيبِ اللهِ وَرَحْمَةُ

खुदा जनाबे ईसा (अ) पर। सलाम हो अल्लाह के हबीब मोहम्मद पर और अल्लाह की रहमत

اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلٰى اسْمِ اللهِ الرَّضِيِّ وَوَجْهِهِ الْعَلِيِّ وَصِرَاطِهِ

और बरकतें हों। सलाम हो अल्लाह के पसंदीदा नाम और बुलंद नूर और सिराते मुस्तक़ीम

السَّوِيِّ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمُهَذَّبِ الصَّفِيِّ اَلسَّلَامُ عَلٰى ابِي الْحَسَنِ عَلِيٍّ

पर। सलाम हो बरगुज़ीदा ख़ालिस और मोहिज़्ज़ब बन्दे पर सलाम हो अबुल हसन अली

بْنِ ابِي طَالِبٍ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلٰى خَالِصِ الاخِلَّاءِ

बिन अबि तालिब पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। सलाम हो ख़ालिस तरीन

اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَخْصُوصِ بِسَيِّدَةِ النِّسَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَوْلُودِ فِي

दोस्त पर, सलाम हो उसपर जो औरतों की सरदार ज़हरा की हमसरी के लिए मख़सूस हुआ।

الْكَعْبَةِ الْمُزَوَّجِ فِي السَّمَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى اسَدِ اللهِ فِي الْوَغٰى اَلسَّلَامُ

सलाम हो काबे के मौलूद पर जिसका रिश्ताए अक़्द आसमान मे हुआ, उसपर सलाम हो जो

عَلَى مَنْ شُرِّفَتْ بِهِ مَكَّةُ وَمِنًى اَلسَّلَامُ عَلَى صَاحِبِ الْحَوْضِ وَحَامِلِ

मैदाने जंग मे खुदा का शेर था, सलाम हो उस पर जिस के ज़रिए मक्के और मिना को शरफ़

اللِّوَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى خَامِسِ اَهْلِ الْعَبَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْبَائِتِ عَلَى

मिला। सलाम हो मालिके हाज़े कौसर पर और हामिले लिवाए शिफ़ाअत पर सलाम हो

فِرَاشِ النَّبِيِّ وَمُفْدِيهِ بِنَفْسِهِ مِنَ الاَعْدَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى قَالِعِ بَابِ

पाँचवी आले अबा पर सलाम हो नबी के बिस्तर पर सोने और दुश्मनों के मुक़ाबले मे रसूल

خَيْبَرَ وَالدَّاحِي بِهِ فِي الْفَضَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى مُكَلِّمِ الْفِتْيَةِ فِي كَهْفِهِمْ

के लिए अपनी जान फ़िदा करने वाले पर, सलाम हो बाबे ख़ैबर के उखाड़ने वाले पर और

بِلِسَانِ الاَنْبِيَاءِ اَلسَّلَامُ عَلَى مُنْبِعِ الْقَلِيبِ فِي الْفَلَا اَلسَّلَامُ عَلَى

उसको फ़िज़ा मे लश्कर के गुज़रनेके लिए रखने वाले पर, सलाम हो उस पर जिस ने नबियों

قَالِعِ الصَّخْرَةِ وَقَدْ عَجَزَ عَنْهَا الرِّجَالُ الاَشِدَّاءُ اَلسَّلَامُ عَلَى مُخَاطِبِ

की ज़ुबान मे अफ़सहो कहेफ़ से बात की। सलाम हो जिस ने जंगल मे खुश्क कुवें मे पानी

الثُّعْبَانِ عَلٰى مِنْبَرِ الْكُوْفَةِ بِلِسَانِ الْفُصَحَاءِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُخَاطِبِ

पैदा किया। सलाम हो पत्थर के तोड़ने वाले पर जिस से तमाम ताक़त वर लोग आजिज़ थे

الذِّئْبِ وَمُكَلِّمِ الْجُمْجُمَةِ بِالنَّهْرَوَانِ وَقَدْ نَخِرَتِ الْعِظَامُ بِالْبِلٰى

सलाम हो मिंबरे कूफ़ा पर अशदहे से फ़सीह ज़ुबान मे गुफ़तगु करने वाले पर, सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ الشَّفَاعَةِ فِي يَوْمِ الْوَرٰى وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

भेड़ीये से कलाम करने वाले और नहेरवान मे बोसीदा खोपड़ी से कलाम करने वाले पर जब

اَلسَّلَامُ عَلَى الْاِمَامِ الزَّكِيِّ حَلِيفِ الْمِحْرَابِ اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ

के हडियाँ बिलकुल बोसीदा हो गई थीं, सलाम हो रोज़े महशर की शिफ़ाअत वाले पर और

الْمُعْجِزِ الْبَاهِرِ وَالنَّاطِقِ بِالْحِكْمَةِ وَالصَّوَابِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ

अल्लाह की रहमत और बरकात हो, सलाम हो पाकीज़ा इमाम शहीदे मेहराब पर, सलाम हो

عِنْدَهُ تَاوِيلُ الْمُحْكَمِ وَالْمُتَشَابِهِ وَعِنْدَهُ اُمُّ الْكِتَابِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

ज़ाहेरी मोजेज़ात वाले पर उस पर जिस के पास मोहकम और मोताशाबे की तावील है और

مَنْ رُدَّتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ حِينَ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحْيِي

जिस के पास असल किताब है और सलाम हो उस पर जिस के लिए सूरज पर्दो मे छुप जाने

اللَّيْلِ الْبَهِيمِ بِالتَّهَجُّدِ وَالِاكْتِئَابِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ خَاطَبَهُ

के बाद लौट आया। सलाम हो तारीक़ रात मे नमाज़े शेब व तहज्जुद के ज़रिए अश्कबार

جَبْرَئِيلُ بِإِمْرَةِ الْمُؤْمِنِينَ بِغَيْرِ ارْتِيَابٍ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

होकर रात भर बेदार रहनेवाले पर। सलाम उसपर जिसको जिब्रईल ने अमीरूल मोमिनीन

اَلسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ السَّادَاتِ اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ الْمُعْجِزَاتِ

(अ) कहकर ख़िताब किया बग़ैर किसी शक के और अल्लाह की रहमत और बरकत हो,

اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ عَجِبَ مِنْ حَمَلاتِهِ فِي الْحُرُوبِ مَلائِكَةُ سَبْعِ

सलाम हो सरदारों के सरदार पर, सलाम हो मोजेज़ात के मालिक पर, सलाम हो उसपर जिस

سَمَاوَاتٍ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ نَاجَى الرَّسُولَ فَقَدَّمَ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَاهُ

के मैदाने जंगमे हमलों से सातवें आसमान के मलाएका को तअज्जुब हुआ, सलाम हो उस

صَدَقَاتٍ اَلسَّلَامُ عَلٰى امِيرِ الْجُيُوشِ وَصَاحِبِ الْغَزَوَاتِ اَلسَّلَامُ

पर जिस ने रसूल से नजवा करने मे फ़क़ीरो को सदक़ा दिया, सलाम हो लश्करों के अमीर

عَلٰى مُخَاطِبِ ذِئْبِ الْفَلَوَاتِ اَلسَّلَامُ عَلٰى نُورِ اللهِ فِي الظُّلُمَاتِ

और जंग मे फ़तेह करने वाले पर, सलाम हो बयाबानो के भेड़ीयो से ख़िताब करने वाले

اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ رُدَّتْ لَهُ الشَّمْسُ فَقَضَىٰ مَا فَاتَهُ مِنَ الصَّلَاةِ

पर, सलाम तारिकीया मे अल्लाह के नूर पर, सलाम हो उस पर जिस के लिए सूरज पलटा तो

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه اَلسَّلَامُ عَلٰى امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ

उन्होंने फौत शुदा नमाज़ को अदा किया और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। सलाम

اَلْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى اِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى وَارِثِ عِلْمِ

हो अमीरूल मोमिनीन (अ) पर, सलाम हो वसियों के सरदार पर सलाम हो मुत्तिक़यों के

النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى يَعْسُوْبِ الدِّيْنِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عِصْمَةِ

इमाम पर, सलाम हो अंबिया के इल्म के वारिस पर, सलाम हो दीन के सरदार पर, सलाम हो

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى قُدْوَةِ الصَّادِقِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

मोमिनीन के निगेहबान पर, सलाम हो सिद्दिक़ीन के क़ाएद पर और अल्लाह की रहमत और

اَلسَّلَامُ عَلٰى حُجَّةِ الاَبْرَارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِي الاَئِمَّةِ الاَطْهَارِ اَلسَّلَامُ

बरकात हो, सलाम हो नेकुकारों की हुज्जत पर, सलाम हो पाकीज़ा इमामों के पिदरे बुज़ुर्गवार

عَلٰى الْمَخْصُوْصِ بِذِى الْفَقَارِ اَلسَّلَامُ عَلٰى سَاقِي اَوْلِيَائِهِ مِنْ

पर, सलाम हो उसपर जो ज़ुल्फ़ेक़ार से मख़सूस किया गया, सलाम हो अपने दोस्तों को नबी

حَوْضِ النَّبِيِّ الْمُخْتَارِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ مَا اطَّرَدَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ

मुख़तार के हौज़ से सेराब करनेवाले पर। अल्लाह का दुरूद हो नबी और उनकी आल पर

اَلسَّلَامُ عَلٰى النَّبَإِ الْعَظِيْمِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ: "وَاِنَّهُ

जबतक शब व राज़ बाक़ी रहें। सलाम हो बुज़ुर्ग ख़बर पर। सलाम हो उसपर जिसके बारे

فِي اُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ." اَلسَّلَامُ عَلٰى صِرَاطِ اللّٰهِ

मे खुदाने नाज़ल फ़रमाया है के वो असल किताब मे हमारे पास अली व हकीम है सलाम

الْمُسْتَقِيمِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَنْعُوتِ فِي التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ

हो अल्लाह के सिराते मुस्तक़ीम पर। सलाम हो उसपर जिस की सिफ़त तौरेत, इंजील और

الْحَكِيمِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

क़ुआर्ने हकीम मे बयान की गई है और अल्लाह की रहमत और बरकात हो।

फिर अपने को ज़रीह से मिलाए और बोसा देकर कहे:

يَا اَمِينَ اللهِ يَا حُجَّةَ اللهِ يَا وَلِيَّ اللهِ يَا صِرَاطَ اللهِ زَارَكَ عَبْدُكَ

ऐ अमीने खुदा ऐ हुज्जते खुदा ऐ वलीए खुदा, ऐ राहे खुदा, तेरे बनदा ने तेरी ज़ियारत की और तेरे

وَوَلِيُّكَ اللَّائِذُ بِقَبْرِكَ وَالْمُنِيخُ رَحْلَهُ بِفِنَائِكَ الْمُتَقَرِّبُ

दोस्त ने तेरी क़ब्र की पनाह ली है और अपने सामाने सफ़र को रख दिया है तेरे दरवाज़े पर, क़ुरबत

اِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَالْمُسْتَشْفِعُ بِكَ اِلَى اللهِ زِيَارَةَ مَنْ هَجَرَ

चाहने वाला है अल्लह की तरफ और तेरे ज़रिए शिफ़ाअत तलब करनेवाला है अल्लाह की तरफ़ और

فِيكَ صَحْبَهُ وَجَعَلَكَ بَعْدَ اللهِ حَسْبَهُ اَشْهَدُ اَنَّكَ الطُّورُ

ज़ियारत के लिए तमाम मुसाहेबीन को छाड़ दिया है और आप को अल्लाह के बाद काफ़ी क़रार दिया

وَالْكِتَابُ الْمَسْطُورُ وَالرَّقُّ الْمَنْشُورُ وَبَحْرُ الْعِلْمِ الْمَسْجُورُ

है। मै गवाही देता हूँ के आप तूर और किताबे मसतुर और सहीफ़ए मनशूर और दरयाए इल्म फ़ेरूजौ

يَاوَلِيَّ اللهِ اِنَّ لِكُلِّ مَزُوْرٍ عِنَايَةً فِي مَنْ زَارَهُ وَقَصَدَهُ وَاتَاهُ وَاَنَا

हैं ऐ वलीए खुदा, बेशक साहेबे मज़ार की इनायत ज़ाएरीन के लिए हुई है जिसने ज़ियारत की क़सद

وَلِيُّكَ وَقَدْ حَطَطْتُ رَحْلِي بِفِنَائِكَ وَلَجَاتُ اِلٰى حَرَمِكَ

किया और आया मै आप का दोस्त हूँ और आप की बारगाह मे मुक़ीम हूँ और आप के हरम की पनाह

وَلُذْتُ بِضَرِيحِكَ لِعِلْمِي بِعَظِيمِ مَنْزِلَتِكَ وَشَرَفِ حَضْرَتِكَ

ली है और आपकी ज़रीह की पनाह मे हूँ, मै आप की मनिज़लत की अज़मत को और आप के शरफ़

وَقَدْ اثْقَلَتِ الذُّنُوبُ ظَهْرِي وَمَنَعَتْنِي رُقَادِي فَمَا اجِدُ

को दर हालाँकि गुनाहों ने मेरी पुश्त को बोझल कर दिया है और मेरी नींदने मुझको रोक दिया है अब

حِرْزًا وَلَا مَعْقِلًا وَلَا مَلْجَا الْجَأُ اِلَيْهِ اِلَّا اللهُ تَعَالٰى وَتَوَسُّلِي

मै कोई पनाहगाह अमन की जगह और छिपने का मकाम नही पाता हूँ सिवाए खुदावन्दे आलम के

بِكَ اِلَيْهِ وَاسْتِشْفَاعِي بِكَ لَدَيْهِ فَهَا انَا نَازِلٌ بِفِنَائِكَ وَلَكَ

और उसकी तरफ़ अपने लिए आप के वसीले के और आप से उसकी तरफ़ शिफ़ाअत तलब करने

عِنْدَ اللهِ جَاهٌ عَظِيمٌ وَمَقَامٌ كَرِيمٌ فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ اللهِ رَبِّكَ

तो मै आप के पास आ गया हूँ और आप के लिए खुदावन्दे आलम की बारगाह मे अज़ीम मनज़ेलत

يَامَوْلَايَ

और करीम मकाम है तो आप मेरी शिफ़ाअत कीजिए अपने रब अल्लाह के नज़दीक ऐ मेरे मौला।

फिर ज़रीहे मुबारक को बोसा दे और रू ब ाक़िबला हो कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَتَقَرَّبُ اِلَیْكَ یَا اَسْمَعَ السَّامِعِینَ وَیَا اَبْصَرَ النَّاظِرِینَ

खुदाया मै तेरी जानिब तक़र्रूब तलाश करता हूँ ऐ सबसे ज़्यादा सुनने वाले और ऐ देखने वालों मे

وَیَا اَسْرَعَ الْحَاسِبِینَ وَیَا اَجْوَدَ الاَجْوَدِینَ بِمُحَمَّدٍ خَاتَمِ

सबसे ज़्यादा देखनेवाले और ऐ सबसे जलदी हिसाब करने वाले और ऐ सख़ीयों मे सबसे ज़्यादा सखी,

النَّبِیِّینَ رَسُوْلِكَ اِلَی الْعَالَمِینَ وَبِاَخِیهِ وَابْنِ عَمِّهِ الاَنْزَعِ

मोहम्मद के वास्ते से जो ख़ातमुल नबीईन और तेरे रसूल हैं आलमीन की तरफ़ और उनके चचाज़ात

الْبَطِینِ الْعَالِمِ الْمُبِینِ عَلِیِّ اَمِیرِ الْمُؤْمِنِینَ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ

भाई अनजअ बतीन और आलमे मुबीन अली (अ) के वास्ते जो अमीरूल मोमिनीन हैं और इमाम

الاِمَامَیْنِ الشَّهِیدَیْنِ وَبِعَلِیِّ بْنِ الْحُسَیْنِ زَیْنِ الْعَابِدِینَ

हसन व हुसैन (अ) के वास्ते से जो शहीदे राहे खुदा हैं और अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबेदीन (अ) के

وَبِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِیِّ بَاقِرِ عِلْمِ الاَوَّلِینَ وَبِجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ زَكِیِّ

वास्ते से और मोहम्मद बिन अली के वास्ते से जो औव्वलीन के इल्म के ज़ाहिर करनेवाले हैं और

الصِّدِّیقِینَ وَبِمُوسَی بْنِ جَعْفَرٍ الْكَاظِمِ الْمُبِینِ وَحَبِیسِ

जाफ़र बिन मोहम्मद के वास्ते से जो पाकीज़ा और सिद्दिक़ हैं और मूसा बिन जाफ़र के वास्ते से जो

الظَّالِمِينَ وَبِعَلِيِّ بْنِ مُوسَى الرِّضَا الامِينِ وَبِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ

कज़मे ग़ैज की वाजेह निशानी हैं और अली बिन मूसा रज़ा (अ) अमीन के वास्ते से और मोहम्मद बिन

الْجَوَادِ عَلَمِ الْمُهْتَدِينَ وَبِعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ الْبَرِّ الصَّادِقِ سَيِّدِ

अली जवाद (अ) के वासते से जो तालिबाने हिदायत के लिए अलामत हैं और अली बिन मोहम्मद के

الْعَابِدِينَ وَبِالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ الْعَسْكَرِيِّ وَلِيِّ الْمُؤْمِنِينَ وَبِالْخَلَفِ

वास्ते से जो नेक सादिक़ और आबिदों के सरदार हैं और हसन बिन अली असकरी (अ) के वास्ते से

الْحُجَّةِ صَاحِبِ الامْرِ مُظْهِرِ الْبَرَاهِينِ انْ تَكْشِفَ مَا بِي مِنَ

जो मोमिनीन के वली हैं और ख़लीफ़ए खुदा, हुज्ज़ते ज़माना साहेबे अम्र (अ) के वासते से जो दलीलों

الْهُمُومِ وَتَكْفِيَنِي شَرَّ الْبَلَاءِ الْمَحْتُومِ وَتُجِيرَنِي مِنَ النَّارِ ذَاتِ

के ज़ाहिर करने वाले हैं के तू मेरे ग़मां को ख़त्म कर दे और मेरे लिए काफ़ी होजा हत्मी बलाओं के शर

السَّمُومِ بِرَحْمَتِكَ يَا ارْحَمَ الرَّاحِمِينَ

से और मुझको ज़हरीली आग से बचा ले अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहम करनेवाले।

फिर जो चाहे दुआ करे और आं हज़रत से रूख़सत होकर वापस हो।
लेखक: सय्यद अब्दुल करीम बिन ताऊस ने फ़रहतुल गारी में रिवायत की है के हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) वारिदे कूफ़ा होकर दाख़िले मस्जिद हुए उस समय मस्जिद में अबू हमज़ा सुमाली मौजूद थे। जो कूफ़ा के ज़ाहिदों और मशाएख़ में थे। इमाम (अ.स.) ने दो रकत नमाज़ अदा की तो अबू हमज़ा कहते हैं के इससे बेहतर लहजा नहीं सुना था। मैं क़रीब गया ताके सुन सकूं के वो क्या कह रहे हैं। तो इमाम (अ.स.) कह रहे थे:

اِلٰهِی اَنْ کُنْتُ قَدْ عَصَیْتُکَ فَاِنِّی قَدْ اَطَعْتُکَ فِی اَحَبِّ الاَشْیَاءِ

खुदाया अगर तेरी कोई ना फ़रमानी हो गई है तो मैने तेरी मेहबूब तरीन चीज मे तेरी इताअत भी

اِلَیْکَ...

की है।

यह मशहूर दुआ है, लेखक के अनुसार इस दुआ का तज़केरा आमाले कूफ़ा के ज़ैल में आएगा। अबू हमज़ा कहते हैं के फिर इमाम सातवें सुतून के पास तशरीफ़ लाए और नालैन उतार कर खड़े हुए और हाथों को कान के बिल मुक़ाबिल बुलंद किया और इस तरह अल्लाहो अकबर कहा के दहशत से मेरे जिस्म के तमाम रोएं खड़े हो गए। फिर उन्होंने चार रकत नमाज़ निहायत खुलूस के रूकू और सुजूद के साथ अदा की। फिर यह दुआ पढ़ी। इलाही इन कुन्तो क़द असैतोक आख़िरे दुआ तक और साबिक़ की रिवायत के अनुसार इमाम खड़े हुए और चले गए। अबू हमज़ा कहते हैं, के मैं उनके साथ मनाख़े कूफ़ा तक गया। यह वह जगह है जहाँ ऊंटों को बिठाया जाता था। मैंने वहां एक सियाफ़ाम ग़ुलाम को देखा उसके साथ एक ऊंट और एक नाक़ा था। मैंने पूछा ए सियाहफ़ाम व्यक्ति यह कौन है? उसने कहा तुम उन्हें ख़साएल व अलामात से नहीं पहचानते हो? यह अली इब्नुल हुसैन हैं। अबू हमज़ा कहते हैं के मैंने अपने को उनके क़दमों में डाल दिया और बोसा दिया। फिर उन्होंने खुद मेरे सर को उठा कर फ़रमाया: मस्जिदे कूफ़ा खुदा के लिए है। मैंने कहा फ़रज़ंदे रसूल आप यहाँ किस लिए आए हैं? फ़रमाया के उसी के लिए जो तुमने देखा यानी मस्जिदे कूफ़ा में नमाज़ पढ़ने के लिए। अगर लोगों को मालूम हो जाए उसकी फ़ज़ीलत तो लोग यहाँ आएंगे चाहे बच्चों की तरह ज़मीन पर घिसड़ कर याने चाहे सफ़र में उनको कितनी भी तकलीफ़ हो जैसे के बच्चे रास्ता चलने के बजाए बैठ कर चलते हैं।

क्या तुम चाहते हो के मेरे साथ मेरे दादा अली मुरतज़ा की ज़ियारत करो? मैंने कहा जी हाँ। इमाम चले और मैं उनके नाक़े के साए में जा रहा था। वह

मुझ से बात कर रहे थे। यहाँ तक के ग़रीईन में पहोंचे। एक सफ़ैद बुक्का था जिस से नूर निकल रहा था। आप ऊँट से उतर कर पैदल हो गए और फिर अपने रूख़सारों को ज़मीन पर रख कर फ़रमाया: ऐ अबू हमज़ा यह मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार अलीए मुरतज़ा की क़ब्र है। इमाम ने वही ज़ियारत जिसकी इब्तेदा है। उस सलामो अलस मिल्लोह रज़ी व नूरे वजहील मोज़ीअ पढ़ी।

اَلسَّلَامُ عَلٰی اسْمِ اللّٰهِ الرَّضِیِّ وَنُورِ وَجْهِهِ الْمُضِیءِ...

फिर उस क़ब्रे मुतह्हर से रूख़सत होकर मदीने की तरफ़ रवाना हो गए और मैं कूफ़ा चला गया।

लेखक के अनुसार सय्यद के इस ज़ियारत को फ़राहमे ज़िक्र न करने से ताज्जुब है। मैं उसकी तलाश में था। यहाँ तक के एक ज़ियारत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की देखी मगर उसके आगाज़ में मज़कूरा दोनो जुमले नहीं थे। अलबत्ता उस में पहला जुमला था। और दूसरा जुमला मुख़तलिफ़ है। शायद यह वही ज़ियारत हो और इतना इख़्तेलाफ़ कोई ख़ास बात नहीं है। और अगर यह कहे के इस ज़ियारत की शुरूआत सलामुल्लाहे व सलामो मलाएकतेही है न के उस सलामे अलस मिल्लाहे तो मैं कहूँगा के ज़ियारत की शुरूआत जुमले अस सलामो अलस मिल्लाहीर रज़ी और सलामे साबिक़ इज़ने दुख़ूल और तलबे रूख़सत की मंज़ल में हैं और शायद इसी तरह की मुताबेक़त है। ज़ियारते रोज़े मौलूद से जो बहुत ज़्यादा मुशाबेहत रखती है और यह भी वाज़ेह रहे के छटी ज़ियारत और ज़ियारते रोज़े मौलूद में यह दो जुमले बग़ैर लफ़्ज़े नूर के हैं। लेकिन ज़ियारत के शुरू में नहीं हैं और अल्लाह बेहतर जानता है। मुख़तसर यह के ज़ियारते मुतलक़ा में से हमारे लिए यही सात ज़ियारतें काफ़ी हैं। और अगर किसी को ज़्यादा की ख़्वाहिश हो तो ज़ियारते जामेआ पढ़े और तूलानी ज़ियारत जो इसके बाद ग़दीर के दिन के लिए नक़्ल कर रहे हैं वह पढ़े।

इस लिए के रिवायत में वारिद हुआ है के इस ज़ियारत को हर वक़्त और जहाँ कहीं भी हों पढ़ सकते हैं। और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत पढ़ने को ग़नीमत समझना चाहिए और इस हरमे मुतह्हर में नमाज़ पढ़ना दो लाख नमाज़ों के बराबर है और इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति इमाम मुफ़तरज़ुत ताअ की ज़ियारत करे और नमाज़ पढ़े क़ब्र के नज़दीक चार रकत तो उसके लिए हज और उमरे का सवाब लिखा

जाएगा। और हमने हदियतुज़्ज़ाएरीन में क़ब्रे इमाम अली (अ.स.) की मुजावेरत की फ़ज़ीलत लिख दी है लेकिन इस शर्त के साथ के आपके हक़्क़े जवार का लेहाज़ रखे और यह बेहद मुश्किल काम है और यह हर एक के लिए मुम्किन नहीं है और यहाँ उसके ज़िक्र का मकाम भी नहीं है। ख़्वाहिश्मंद अफ़राद को कलमए तय्यबा की तरफ़ रूजू करना चाहिए।

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की विदा का ज़िक्र

जब इमाम (अ.स.) को विदा करना चाहे तो यह दुआ पढ़े जो पाँचवीं ज़ियारत के बाद लिखी है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ وَاَسْتَرْعِيْكَ وَ

सलाम व अल्लाह की रहमत व बरकात हो आप पर मै आप को खुदा के सुपुर्द करता हूँ व आप

اَقْرَءُ عَلَيْكَ السَّلَامُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُلِ وَ بِمَا جَآئَتْ بِهٖ وَدَعَتْ

की रियायत तलब करता हूँ व आप को सलाम भेजता हूँ हम ईमान लाए अल्लाह व रसूल पर व

اِلَيْهِ وَ دَلَّتْ عَلَيْهِ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ

जो रसूल लाए व जिस की तरफ़ बुलाया व जिस की रहनुमाई की है तो हम को गवाहों मे लिख

الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِيْ اِيَّاهُ فَاِنْ تَوَفَّيْتَنِيْ قَبْلَ ذٰلِكَ فَاِنِّيْ اَشْهَدُ فِيْ مَمَاتِيْ

लिजिए, खुदाया इस को मेरी आख़री ज़ियारत का वक़्त न क़रार देना और अगर तूने मुझको

عَلٰى مَا شَهِدْتُ عَلَيْهِ فِيْ حَيٰوتِيْ اَشْهَدُ اَنَّ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيًّا وَ

मौत दे दी तो मै गवाही देता हूँ अपनी मौत के बाद भी उसी की जिस की मैने गवाही दी है अपनी

اَلْحَسَنَ وَ الْحُسَيْنَ وَ عَلِيَّ بْنَ الْحُسَيْنِ وَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ وَ جَعْفَرَ بْنَ

ज़िन्दगी मे। मै गवाही देता हूँ के अमीरूल मोमिनीन व इमाम हसन व हुसौन और अली बिन

مُحَمَّدٍ وَ مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ وَ عَلِيَّ بْنَ مُوْسٰى وَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ وَ عَلِيَّ بْنَ

हुसैन व मोहम्मद बिन अली और जाफ़र बिन मोहम्मद और मूसा बिन जाफ़र और अली बिन

مُحَمَّدٍ وَ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ وَ الْحُجَّةَ بْنَ الْحَسَنِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ

मूसा और मोहम्मद बिन अली और अली बिन मोहम्मद और हसन बिन अली और हुज्जत बिन

اَجْمَعِيْنَ اَئِمَّتِيْ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مَنْ قَتَلَهُمْ وَ حَارَبَهُمْ مُشْرِكُوْنَ وَ مَنْ

हसन उन पर सारी रहमत हो मेरे इमाम हैं और मै गवाही देता हूँ के जिस ने उन से जंग की या

رَدَّ عَلَيْهِمْ فِيْ اَسْفَلِ دَرَكٍ مِنَ الْجَحِيْمِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مَنْ حَارَبَهُمْ

क़त्ल किया वो मुशरिक है और जिसने उन का इंकार किया वो जहन्नम के बदतरीन तबक़े मे है

لَنَا اَعْدَآءٌ وَ نَحْنُ مِنْهُمْ بُرَئَآؤُ وَ اَنَّهُمْ حِزْبُ الشَّيْطَانِ وَ عَلٰى مَنْ

और मै गवाही देता हूँ के जिसने उनसे जंग की वो हमारा दुश्मन है और हम उससे बरी हैं और

قَتَلَهُمْ لَعْنَةُ اللهِ وَ الْمَلَآئِكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ وَ مَنْ شَرِكَ فِيْهِمْ

वो शैतान का गोरोह है जिस ने उनको क़त्ल किया उसपर अल्लाह व मलाएका और तमाम लोगों

وَ مَنْ سَرَّهٗ قَتْلُهُمْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بَعْدَ الصَّلٰوةِ وَ التَّسْلِيْمِ اَنْ

की लानत है और उनपर जो उनके क़त्ल मे शरीक रहा और क़त्ल से खुश हुआ खुदाया मै तुझसे

تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلِیٍّ وَ فَاطِمَةَ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَیْنِ وَ عَلِیٍّ وَّ مُحَمَّدٍ وَّ

सवाल करता हूँ दुरूद व सलाम के बाद के तू मोहम्मद, अली, फ़ातेमा, हसन व हुसैन (अ) और

جَعْفَرٍ وَّ مُوْسٰی وَ عَلِیٍّ وَّ مُحَمَّدٍ وَّ عَلِیٍّ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُجَّةِ وَ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ

अली (अ) और मोहम्मद (अ) और जाफ़र (अ) और मूसा (अ) और अली (अ) व मोहम्मद (अ)

الْعَهْدِ مِنْ زِیَارَتِهٖ فَاِنْ جَعَلْتَهٗ فَاحْشُرْنِیْ مَعَ هٰؤُلَآءِ الْمُسَمَّیْنَ

और अगर क़रार दे दे तो मुझे अन्हें अईम्मह बुज़ुर्गवार के हमराह महशूर करना खुदाया हमारे

الْاَئِمَّةِ اَللّٰهُمَّ وَ ذَلِّلْ قُلُوْبَنَا لَهُمْ بِالطَّاعَةِ وَ الْمُنَاصَحَةِ وَ الْمَحَبَّةِ وَ

दिलों का इताअत और क़ुबूले नसीहत और मोहब्बत और हुस्ने ख़िदमत और सलाम के लिए

حُسْنِ الْمُوَازَرَةِ وَ التَّسْلِیْمِ.

हमवार कर दे।

दूसरा मक़्सद

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की मख़्सूस ज़ियारत

यह चंद ज़ियारतें हैं (१) ज़ियारते रोज़े ग़दीर - इमामे अली रज़ा (अ.स.) से रिवायत है के आपने अबू नस्र से फ़रमाया के ऐ इब्ने अबी नस्र जहां कहीं भी हो ग़दीर के दिन अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की क़ब्र के पास हाज़र हो के खुदावंदे आलम उस रोज़ मोमिनीन और मोमिनात के साठ साल के गुनां को बख़्श देता है। और आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर देता है उसके दो गुना लोगों को जितनों का माहे मुबारके रमज़ान शबे क़द्र और शबे ईदुल फ़ित्र में

बख़्शता है।
उस रोज़ के लिए चंद ज़ियारते हैं।
(१) ज़ियारते अमीनुल्लाह - जो दूसरी मुतलका ज़ियारत में गुज़र चुकी है।

ग़दीर के दिन की ज़ियारत

(२) वह ज़ियारत जो मोतबर नक़्ल के साथ इमाम अली नक़ी (अ.स.) से मनक़ूल है के आपने अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के लिए वह ज़ियारत पढ़ी ग़दीर के दिन उस साल जब मोतसिम ने आप को तलब किया था। और उसका तरीक़ा यह है के जब ज़ियारत का इरादा करे तो दरवाज़ए क़ुब्ब-ए-मुनव्वरा पर बैठे और इज़ने दुख़ूल पढ़े। और शेख़ शहीद ने फ़रमाया है के गुस्ल करे पाकीज़ा लिबास पहने और इज़्ने दुख़ूल तलब करे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ وَقَفْتُ عَلٰی بَابٍ مِنْ اَبْوَابِ بُیُوْتِ نَبِیِّكَ صَلَوَاتُكَ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ...

यह वही इज़्ने दुख़ूल है जिसको हमने बाब के शुरू में लिखा है। फिर दाहने पैर को आगे बढ़ाए और ज़री के नज़दीक पहुँच कर ज़री के बराबर पुश्त ब क़िब्ला खड़ा हो कर पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلٰی مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰهِ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ وَ سَیِّدِ

सलाम हो मोहम्मद पर जो अल्लाह के रसूल ख़ातमुन नबीईन और सय्यदुल मुर्सलीन और मुनताख़िबे

الْمُرْسَلِیْنَ وَ صَفْوَةِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ اَمِیْنِ اللّٰهِ عَلٰی وَحْیِهٖ وَ

परवरदिगारे आलम हैं और उसकी वही के अमीन और उसके ऊमूरे अज़ीमा के अमीन हैं साबिक़ के

عَزَآئِمِ اَمْرِهٖ وَ الْخَاتِمِ لِمَا سَبَقَ وَ الْفَاتِحِ لِمَا اسْتُقْبِلَ وَ

ख़त्म करनेवाले और मुस्तक़बिल के फ़ातेह और उस सबके निगेहबान हैं और अल्लाह की रहमत और

الْمُهَيْمِنِ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهٖ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ صَلَوَاتُهٗ وَ

बरकात व सलवात और तहय्यात हो, सलाम हो अल्लाह के अंबीया और रसूलों पर और उसके मुक़र्रब

تَحِيَّاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلٰٓى اَنْبِيَآءِ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ مَلَآئِكَتِهِ

मलाएका और नेक बंदो पर सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) और सय्यदुल वसीईन

الْمُقَرَّبِيْنَ وَ عِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ

और इल्मे अंबिया के वारिस और आलमीन के परवरदिगार के वली और मेरे आक़ा और मोमिनीन

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ سَيِّدَ الْوَصِيِّيْنَ وَ وَارِثَ عِلْمِ النَّبِيِّيْنَ وَ وَلِيَّ

के मौला और अल्लाह की रहमत और बरकात हो, सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला ऐ मोमिनीन के

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ مَوْلَايَ وَ مَوْلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ

अमीर, ऐ अल्लाह के अमीन उसकी ज़मीन मे और उसके सफ़ीर उसकी मख़लूक़ पर और उसके बन्दों

بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ يَا اَمِيْنَ

पर उसकी मुकम्मल हुज्जत, सलाम आपा पर ऐ अल्लाह के दीने मोहकम और उसके सिराते मुसतक़ीम,

اللّٰهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَ سَفِيْرَهٗ فِيْ خَلْقِهٖ وَ حُجَّتَهُ الْبَالِغَةَ عَلٰى عِبَادِهٖ

सलाम आप पर ऐ ख़बिर बुज़ुर्ग अलम जिन के बारे मे उम्मत के लोगों ने इख़्तेलाफ़ किया और उनसे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا دِيْنَ اللّٰهِ الْقَوِيْمَ وَ صِرَاطَهُ الْمُسْتَقِيْمَ

उनके बारे मे सवाल किया जाएगा। सलाम आप पर ऐ मोमिनो के अमीर आप अल्लाह पर ईमान लाए

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبَاُ الْعَظِيْمُ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ

जब के और लोग मुश्रिक थे आप ने हक़ की तसदीक़ की जब के दूसरे लोग तकज़ीब कर रहे थे@

وَ عَنْهُ يُسْئَلُوْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اٰمَنْتَ

आपने जिहाद किया दर हालाँके लोग डर रहे थे आप ने अल्लाह की इबादत की दीन मे खुलूस के साथ

بِاللّٰهِ وَ هُمْ مُشْرِكُوْنَ وَ صَدَّقْتَ بِالْحَقِّ وَ هُمْ مُكَذِّبُوْنَ وَ

सब्र व बुरदबारी के साथ यहाँ तक के आपको मौत आगई आगाह हो जाओ खुदा की लानत हो

جَاهَدْتَ وَ هُمْ مُحْجِمُوْنَ وَ عَبَدْتَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّيْنَ صَابِرًا

ज़ालीमो पर, सलाम आप पर ऐ मुसलमानो के सरदार और मोमीनो के सरदार और मुत्तक़ीयों के इमाम

مُّحْتَسِبًا حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظَّالِمِيْنَ

और नूरानी चेहरे वालों के क़ाएद और अल्लाह की रहमत और बरकात हो। मै गवाही देता हूँ के आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ يَعْسُوْبَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

रसूले खुदा के भाई और उनके जानशीन और उनके इल्म के वारिस और उनकी शरीअत के अमीन

اِمَامَ الْمُتَّقِيْنَ وَ قَآئِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

और उनकी उम्मत मे उनके ख़लीफ़ा हैं और आप ही वो पहले शख़्स हैं जो ईमान लाए खुदा पर और

اَشْهَدُ اَنَّكَ اَخُوْ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ وَصِيُّهٗ وَ وَارِثُ عِلْمِهٖ وَ اَمِيْنُهٗ

जो उसके नबी पर नाज़ल किया गया उसकी तसदीक़ की और मै गवाही देता हूँ के उन्होंने अल्लाह की

عَلٰى شَرْعِهٖ وَ خَلِيْفَتُهٗ فِيْ اُمَّتِهٖ وَ اَوَّلُ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ صَدَّقَ بِمَآ

तरफ़ से जो नाज़ल हुआ उसे पहुँचा दिया और खुदा के अम्र को बा आवाज़े बुलंद पहुँचाया और उन्हाने

اُنْزِلَ عَلٰى نَبِيِّهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّهٗ قَدْ بَلَّغَ عَنِ اللّٰهِ مَا اَنْزَلَهٗ فِيْكَ وَ

अपनी उम्मत पर आप की इताअत और विलायत का फ़रीज़ा नाफ़ज किया और उन्होंने उम्मत वालों

صَدَعَ بِاَمْرِهٖ وَ اَوْجَبَ عَلٰى اُمَّتِهٖ فَرْضَ طَاعَتِكَ وَ وِلَايَتِكَ وَ

से आप के लिए बैअत ली और आप को मोमिनीन पर उनके नफ़सों के मुक़ाबले मे अदना क़रार दिया

عَقَدَ عَلَيْهِمُ الْبَيْعَةَ لَكَ وَ جَعَلَكَ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

जैसा के अल्लाह ने उन्हें बनाया था। फिर अल्लाह को उनपर गवाह बनाया और कहा गया मैने पहुँचा

اَنْفُسِهِمْ كَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ كَذٰلِكَ ثُمَّ اَشْهَدَ اللّٰهَ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ

नही दिया, उन लोगो ने कहा हाँ पहुँचा दिया फिर फ़रमाया खुदाया गवाह रहना क्योंके तेरी गवाही काफ़ी

فَقَالَ اَلَسْتُ قَدْ بَلَّغْتُ فَقَالُوْا اللّٰهُمَّ بَلٰى فَقَالَ اَللّٰهُمَّ

है और तेरा हुकूम बन्दों के दरमियान काफ़ी है पस खुदा की लानत हो तेरी विलायत का इक़रार करने

اشْهَدْ وَ كَفٰى بِكَ شَهِيْدًا وَ حَاكِمًا بَيْنَ الْعِبَادِ فَلَعَنَ اللّٰهُ

के बाद इन्कार करने वाले पर और अहेद करने के बाद अहेद शिकनी पर और मै गवाही देता हूँ के

جَاحِدَ وِلَايَتِكَ بَعْدَ الْاِقْرَارِ وَ نَاكِثَ عَهْدِكَ بَعْدَ الْمِيْثَاقِ وَ

आपने अहेदे इलाही को पूरा कर दिया और बेशक खुदा आप से किए हुए अपने अहेद को पूरा करेगा

اَشْهَدُ اَنَّكَ وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَ اَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى مُوْفٍ لَكَ

और जिसने अल्लाह से किए हुए अहेद को पूरा किया तो खुदा उसे अ□ी अज़ीम अता करेगा। और मै

بِعَهْدِهٖ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا وَ

गवाही देता हूँ के आप अमीरूल मोमिनीन (अ) हैं हक़ीक़तन आप की विलायत पर क़ुआर्ने नातिक़

اَشْهَدُ اَنَّكَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْحَقُّ الَّذِىْ نَطَقَ بِوِلَايَتِكَ

है। और रसूल ने इसका अहेद अपनी उम्मत से आप के बारे मै ले लिया है और मै गवाही देता हूँ के

التَّنْزِيْلُ وَ اَخَذَ لَكَ الْعَهْدَ عَلَى الْاُمَّةِ بِذٰلِكَ الرَّسُوْلُ وَ اَشْهَدُ

आप और आप के चचा और आप के भाई वो हैं आप लोगो ने अपने नफ़सों के ज़रिए खुदा से तिजारत

اَنَّكَ وَ عَمَّكَ وَ اَخَاكَ الَّذِيْنَ تَاجَرْتُمُ اللّٰهَ بِنُفُوْسِكُمْ فَاَنْزَلَ

की तो खुदा ने आपके बारे मे नाज़ल फ़रमाया के मोमिनीन के नफ़सां और माल को खुदा ने जन्नत के

اللّٰهُ فِيْكُمْ اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ

एवज़ मे ख़रीद लिया है ये लोग राहे खुदा मे जेहाद करते हैं तो क़त्ल करते हैं और क़त्ल हो जाते हैं

اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ

अललाह का वादा सच्चा है तौरेत, इंजील, और क़ुआर्न मे और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे का पूरा

يُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰيةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ الْقُرْاٰنِ وَ

करनेवाला कौन है? पस तुम को बशरत हो उस बैअत की जो तुमने की है और वही बहुत बड़ी

مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ

कामयाबी है तौबा करने वाले, इबादत करनेवाले, हम्द करने वाले नही अनिल मुंकर करने वाले और

بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ التَّآئِبُوْنَ الْعَابِدُوْنَ الْحَامِدُوْنَ

हुदूदे इलाही की पाबंदी करने वाले और मोमिनीन को बशारत दे दो , मौ गवाही देता हूँ के ऐ अमीरूल

السَّآئِحُوْنَ الرَّاكِعُوْنَ السَّاجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

मोमिनीन आप के बारे मे शक करनेवाला रसुले अमीन पर ईमान नही लाया और जिसने आपके

النَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ الْحَافِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَ

अलावा किसी को आपका मिस्ल बनाय वो दीने हक़ से मुनहरिफ़ है। वो दीन का दुश्मन है जिसको

بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَشْهَدُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنَّ الشَّآكَّ فِيْكَ مَا

खुदा वन्दे आलम ने हमारे लिए पसंद किया है और जिसको मुकम्मल किया है आपकी विलायत के

اٰمَنَ بِالرَّسُوْلِ الْاَمِيْنِ وَ اَنَّ الْعَادِلَ بِكَ غَيْرِكَ عَانِدٌ عَنِ

ज़रिए रोज़े ग़दीर और गवाही देता हूँ के आप ख़ुदए अज़ीज़ो रहीम के मक़सूद हैं इस इरशाद मे के ये

الدِّيْنِ الْقَوِيْمِ الَّذِيْ ارْتَضَاهُ لَنَا رَبُّ الْعَالَمِيْنَ وَ اَكْمَلَهٗ

मेरा सिराते मुसतक़ीम है उसकी इत्तेबा करो और दूसरे रासतों का इत्तेबा न करो के वो तुम्हे राहे खुदा

بِوِلَايَتِكَ يَوْمَ الْغَدِيْرِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ الْمَعْنِيُّ بِقَوْلِ الْعَزِيْزِ

से जुदा कर देगा, बाखुदा वो गमराह हुए और लोगों को गुम्राह किया जिस ने किसी और का तेरे

الرَّحِيْمِ وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ وَ لَا تَتَّبِعُوْا

अलावा इत्तेबा किया और हक़ का दुश्मन हुआ जिसने आपसे दुश्मनी की। खुदया हमने तेरा हुकुम

السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ضَلَّ وَ اللّٰهِ وَ اَضَلَّ مَنِ التَّبَعَ

सूना और इताअत की और तेरे सिराते मुस्तक़ीम का इत्तेबा किया तो मेरे परवरदिगार हमको हिदायत

سِوَاكَ وَ عَنَدَ عَنِ الْحَقِّ مَنْ عَادَاكَ اَللّٰهُمَّ سَمِعْنَا لِاَمْرِكَ وَ

पर बाक़ी रख और हमारे दिलों को कज न होने दे जबके तूने इताअत की तरफ़ हिदायत की है और

اَطَعْنَا وَ اتَّبَعْنَا صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ فَاهْدِنَا رَبَّنَا وَ لَا تُزِغْ

हम को अपनी नेमतों का शुक्र करने वालो मे क़रार दे और मै गवाही देता हूँ के आप हमेशा ख़्वाहिशे

قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا اِلٰى طَاعَتِكَ وَ اجْعَلْنَا مِنَ الشَّاكِرِيْنَ

नफ़्स के मुख़लिफ़त और तक़वे के मुवाफ़िक और ग़ुस्से के ज़ब्त करने पर क़ादिर रहे और लोगों को

لِاَنْعُمِكَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ لَمْ تَزَلْ لِلْهَوٰى مُخَالِفًا وَ لِلتُّقٰى مُحَالِفًا

माफ़ करनेवाले रहे और जब अल्लाह की नाफ़रमानी की गई तो नाराज़ रहे और जब अल्लाह की

وَّ عَلٰى كَظْمِ الْغَيْظِ قَادِرًا وَّ عَنِ النَّاسِ عَافِيًا غَافِرًا وَّ اِذَا

इताअत की गई तो राज़ी रहे और अल्लाह के अहेद पर आमिल रहे और जिसकी हिफ़ाज़त चाही गई

عُصِيَ اللّٰهُ سَاخِطًا وَّ اِذَا اُطِيْعَ اللّٰهُ رَاضِيًا وَّ بِمَا عَهِدَ اِلَيْكَ

उसकी रियाअत की और जिसकी अमानत चाही गई उसके मुहाफ़ज रहे। जो आप को दिया गया

عَامِلًا رَّاعِيًا لِمَا اسْتُحْفِظْتَ حَافِظًا لِّمَا اسْتُودِعْتَ مُبَلِّغًا

उसके मुबल्लिग़ रहे जो आपसे वादा किया उसके मुनतिज़र रहे और मै गवाही देता हूँ के आप का

مَّا حُمِّلْتَ مُنْتَظِرًا مَّا وُعِدْتَ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ مَا اتَّقَيْتَ ضَارِعًا

दुश्मन से ख़ाफ़ ज़िल्लत की वज्ह से न था और न आप अपने हक़ से आजिज़ी की वज्ह से रूके और

وَ لَا اَمْسَكْتَ عَنْ حَقِّكَ جَازِعًا وَّ لَا اَحْجَمْتَ عَنْ مُجَاهَدَةِ

न आप ने अपने ग़ासिबा ंसे जिहाद से सब्र किया नातवानी की वजह से और न आप ने अपनी रज़ामंदी

غَاصِبِيْكَ نَاكِلًا وَّ لَا اَظْهَرْتَ الرِّضٰى بِخِلَافِ مَا يُرْضِى اللّٰهَ

का इज़हार किया खुदाके ख़िलाफ़ कमज़ोरी की वजह से और जो आपको राहे खुदा मे तकलीफ़ हुई

مُدَاهِنًا وَّ لَا وَهَنْتَ لِمَا اَصَابَكَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا ضَعُفْتَ وَ

तो कमज़ोरी और सुस्ती की वजह से नही क़ुबूल किया और हक़ के मुतालेबे मे कोताही नही की ख़ौफ़

لَا اسْتَكَنْتَ عَنْ طَلَبِ حَقِّكَ مُرَاقِبًا مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ تَكُوْنَ

की वजह से माज़ अल्लाह आप ऐसा कैसे कर सकते हैं बल्के जब आप पर ज़ुलम किया गया तो आपने

كَذٰلِكَ بَلْ اِذْ ظُلِمْتَ اَحْتَسَبْتَ رَبَّكَ وَ فَوَّضْتَ اِلَيْهِ اَمْرَكَ وَ

रज़ाए खुदा को निगाह मे रखा और अपना अम्र अल्लाह के हवाले कर दिया और आप ने उन को

ذَكَّرْتَهُمْ فَمَا ادَّكَرُوْا وَ وَعَظْتَهُمْ فَمَا اتَّعَظُوْا وَ خَوَّفْتَهُمُ اللّٰهَ

नसीहत की उन्होंने क़ुबूल नही किया और आपने उनको मोवएज़ा किया उन्होंने नही माना। आप ने

فَمَا تَخَوَّفُوْا وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ جَاهَدْتَ فِيْ اللّٰهِ

उन को ख़ाफ़े खुदा दिलाया उन्होंने नही माना और मै गवाही देता हूँ के ऐ अमीरल मोमिनीन (अ) आप

حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰى دَعَاكَ اللّٰهُ اِلٰى جِوَارِهٖ وَ قَبَضَكَ اِلَيْهِ

ने राहे हक़ मे वो जिहाद किया जो हक़ था यहाँ तक के खुदा ने आप को जो रहमत मे बुलाया और

بِاِخْتِيَارِهٖ وَ اَلْزَمَ اَعْدَآئَكَ الْحُجَّةَ بِقَتْلِهِمْ اِيَّاكَ لِتَكُوْنَ

अपने इख़्तेयार से क़ब्ज़े रूह किया और आप के दुश्मन पर हुज्जत लाज़म कर दी उन की तरफ़ से आप

الْحُجَّةُ لَكَ عَلَيْهِمْ مَعَ مَالَكَ مِنَ الْحُجَجِ الْبَالِغَةِ عَلٰى جَمِيْعِ

के क़त्ल के ज़रिए ताके आप की हुज्जत उनपर क़ाएम रहे बा वजुद ये के आपकी मुकम्मल हुज्जत

خَلْقِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبَدْتَ اللّٰهَ مُخْلِصًا وَ

तमाम मख़लूक़ पर यूँ भी क़ाएम रहे, सलाम आप पर ऐ अमीरल मोमिनीन (अ) आप ने खुलूस के

جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ صَابِرًا وَّ جُدْتَ بِنَفْسِكَ مُحْتَسِبًا وَّ عَمِلْتَ

साथ अल्लाह की इबादत की और राहे खुदा मे सब्र किया साथ जिहाद किया और खुदा के हुकुम से

بِكِتَابِهٖ وَ اتَّبَعْتَ سُنَّةَ نَبِيِّهٖ وَ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ

अपनी जान क़ुर्बान की और किताबे खुदा पर अमल किया और उसके नबी की सुन्नत पर अमल किया

وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ مَا اسْتَطَعْتَ

नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ किया और नही अनिल मुनकर किया

مُبْتَغِيًا مَا عِنْدَ اللّٰهِ رَاغِبًا فِيْمَا وَعَدَ اللّٰهُ لَا تَحْفِلُ بِالنَّوَآئِبِ وَ

जिस क़दर मुमकिन हुआ अल्लाह की रज़ा चाहते हुए और वादए खुदा की तरफ़ रग़बत रखते हुए आप

لَا تَهِنُ عِنْدَ الشَّدَآئِدِ وَلَا تُحْجِمُ عَنْ مُحَارِبٍ اَفَكَ مَنْ نَّسَبَ

को मुश्किलात मे ख़ाफ़ नही था और सख़तियों मे सुसती नही थी और जंगों से बाज न रहे जिस ने आप

غَيْرَ ذٰلِكَ اِلَيْكَ وَافْتَرٰى بَاطِلًا عَلَيْكَ وَ اَوْلٰى لِمَنْ عَنَدَ عَنْكَ

की तरफ़ इस के अलावा की निसबत दी या आप के लिए ग़लत बात कही वो झूठा हुआ और नाबूद

لَقَدْ جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ الْجِهَادِ وَ صَبَرْتَ عَلَى الْاَذٰى صَبْرَ

हुआ जिसने अमदन आप की मुख़ालेफ़त की। आप ने राहे खुदा मे हक़्क़े जेहाद अदा कर दिया और

احْتِسَابٍ وَ اَنْتَ اَوَّلُ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ صَلّٰى لَهٗ وَ جَاهَدَ وَ اَبْدٰى

अज़ीयतों पर सब्र किया जैसा सब्र करना चाहिए आप ही वो पहले शख़्स हैं जो अल्लाह पर ईमान लाए,

صَفْحَتَهٗ فِيْ دَارِ الشِّرْكِ وَ الْاَرْضُ مَشْحُوْنَةٌ ضَلَالَةً وَ

नमाज़ पढ़ी और जेहाद किया और आप ने ही शिर्क का मुक़ाबला किया, शिर्क के घर मे जब के ज़मीन

الشَّيْطَانُ يُعْبَدُ جَهْرَةً وَ اَنْتَ الْقَآئِلُ لَا تَزِيْدُنِيْ كَثْرَةُ النَّاسِ

गुमराही से भरपूर थी और खुले आम शैतान की इबादत हो रही थी और आप ही कहा करते थे के लोगों

حَوْلِيْ عِزَّةً وَ لَا تَفَرُّقُهُمْ عَنِّيْ وَحْشَةً وَ لَوْ اَسْلَمَنِي النَّاسُ

के मेरे गिरदे कसरत मेरी इज़्ज़त मे इज़ाफ़ा नही करती है और उन का अलैहदा हो जाना मेरे अन्दर

جَمِيْعًا لَمْ اَكُنْ مُتَضَرِّعًا اِعْتَصَمْتَ بِاللّٰهِ فَعَزَزْتَ وَ اٰثَرْتَ

वहशत नही पैदा करना है और अगर सब लोग मुझको छोड कर चले जाएं तो मै नाला न करूंगा।

الْاٰخِرَةَ عَلَى الْاُوْلٰى فَزَهِدْتَ وَ اَيَّدَكَ اللّٰهُ وَ هَدَاكَ وَ اَخْلَصَكَ

आपने अल्लाह से राबेता जोड़ा तो आप ने इज़्ज़त पाई और आप ने दुनिया के मुक़ाबले मे आख़िरत को

وَ اجْتَبٰيكَ فَمَا تَنَاقَضَتْ اَفْعَالُكَ وَلَا اخْتَلَفَتْ اَقْوَالُكَ وَلَا

मुकद्दम रखा तो ज़ोहद इख़्तियार किया और अल्लाह ने आप की मदद की हिदायत की और आपको

تَقَلَّبَتْ اَحْوَالُكَ وَلَا ادَّعَيْتَ وَلَا افْتَرَيْتَ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَلَا

अपना बनाया और आपको मुनताख़िब किया तो आपके अफ़आल मे तनाक़ुज और अकवाल मे

شَرِهْتَ اِلَى الْحُطَامِ وَ لَا دَنَّسَكَ الْاٰثَامُ وَ لَمْ تَزَلْ عَلٰى بَيِّنَةٍ

इख़तेलाफ़ और हालात मे तग़ाय्युर नही है आप ने हक़ के ख़िलाफ़ दावा नही किया और अल्लाह पर

مِّنْ رَبِّكَ وَ يَقِيْنٍ مِّنْ اَمْرِكَ تَهْدِىْ اِلَى الْحَقِّ وَ اِلٰى صِرَاطٍ

इफ़तेरा परदाज़ी नही की और दुनिया के माल का लालच नही की और गुनाहों ने आप को आलूदा

مُّسْتَقِيْمٍ اَشْهَدُ شَهَادَةَ حَقٍّ وَ اُقْسِمُ بِاللّٰهِ قَسَمَ صِدْقٍ اَنَّ

नही किया और हमेशा अल्लाह की निशानी पर रहे और अपने अम्र के यक़ीन पर रहे। खुदा की जानिब

مُحَمَّدًا وَّ اٰلَهٗ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ سَادَاتُ الْخَلْقِ وَ اَنَّكَ مَوْلَاىَ

हिदायत करते रहे और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़। मै हक़ से भरपूर शहादत देता हूँ और सच्ची शहात

وَ مَوْلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنَّكَ عَبْدُ اللهِ وَ وَلِيُّهٗ وَ اَخُوْ الرَّسُوْلِ وَ

देता हूँ और सच्ची क़सम खुदा वन्दे आलम की खा कर कहता हूँ के मोहम्मद और उनकी आल

وَصِيُّهٗ وَ وَارِثُهٗ وَ اَنَّهُ الْقَآئِلُ لَكَ وَ الَّذِىْ بَعَثَنِىْ بِالْحَقِّ مَا

सलवातुल्लाह अलैहिम मख़लूक के सरदार हैं और आप मेरे और मोमिनो के मौला हैं और आप अल्लाह

اٰمَنَ بِىْ مَنْ كَفَرَ بِكَ وَ لَا اَقَرَّ بِاللهِ مَنْ جَحَدَكَ وَ قَدْ ضَلَّ مَنْ

के बन्दे और उसके वली और रसूल के भाई वसी और वारिस हैं। रसूल ने ही फ़रमाया है आप के लिए

صَدَّ عَنْكَ وَ لَمْ يَهْتَدِ اِلَى اللهِ وَ لَا اِلَىَّ مَنْ لَّا يَهْتَدِىْ بِكَ وَ هُوَ

क़सम है उस खुदा की जिसने हक़ के साथ मुझको मबूस किया जिस ने आप का इन्कार किया वो मुझ

قَوْلُ رَبِّىْ عَزَّ وَ جَلَّ وَ اِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا

पर ईमान नही लाया और जिस ने आप का इनकार किया उसने खुदा का इक़रार नही किया वो गुमराह

ثُمَّ اهْتَدٰى اِلٰى وِلَايَتِكَ مَوْلَاىَ فَضْلُكَ لَا يَخْفٰى وَ نُوْرُكَ لَا

हुआ जो आप से रूका रहा और न अल्लाह की तरफ़ हिदायत पाई और न आपकी तरफ़ भी हिदायत

يُطْفَاُ وَ اَنَّ مَنْ جَحَدَكَ الظَّلُوْمُ الْاَشْقٰى مَوْلَاىَ اَنْتَ الْحُجَّةُ

न होगी। जिसने तुमसे हिदायात न ली और यही मेरे अज़ीज़ व जलील परवरदिगार का क़ौल है के मै

عَلَى الْعِبَادِ وَ الْهَادِىْ اِلَى الرَّشَادِ وَ الْعُدَّةُ لِلْمَعَادِ مَوْلَاىَ لَقَدْ

बख़्शने वाला हूँ उसको जो तौबा करे, ईमान लाए और नेक अमल बजा लाए फिर तुम्हारी विलायत

رَفَعَ اللّٰهُ فِي الْاُولٰى مَنْزِلَتَكَ وَ اَعْلٰى فِي الْاٰخِرَةِ دَرَجَتَكَ وَبَصَّرَكَ

की तरफ़ आजाए। ऐ मेरे आक़ा आपकी फ़ज़ीलत छुपी नही है और आपका नूर बुझा नही है और

مَا عَمِيَ عَلٰى مَنْ خَالَفَكَ وَ حَالَ بَيْنَكَ وَبَيْنَ مَوَاهِبِ اللّٰهِ لَكَ

जिसने आपका इन्कार किया वो ज़ालिम व बद बख़्त है। मेरे आक़ा आप बंदों पर हुज्जत हैं और नेकी

فَلَعَنَ اللّٰهُ مُسْتَحِلِّيْ الْحُرْمَةِ مِنْكَ وَ ذَآئِدِ الْحَقِّ عَنْكَ وَ اَشْهَدُ

के हादी हैं और आाख़िरत के लिए सहारा हैं। मेरे आक़ा अल्लाह ने आप की मंज़लत को दुनिया मे रफ़त

اَنَّهُمُ الْاَخْسَرُوْنَ الَّذِيْنَ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَ هُمْ فِيْهَا

दी और आख़िरत मे आप के दर्जे को बुलंद किया और आप को बसीर बनाया उस मे जिसमे आप के

كَالِحُوْنَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ مَا اَقْدَمْتَ وَلَا اَحْجَمْتَ وَلَا نَطَقْتَ وَلَا

मुख़ालिफ़ नाबीना हो गऐ। और आपके और अल्लाह की नेमतों के दरमियान हाएल हो गए। पस खुदा

اَمْسَكْتَ اِلَّا بِاَمْرٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ قُلْتَ وَ الَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ

की लानत हो आप की हुरमत के ख़त्म करनेवाले पर और आपके हक़ को दूर करदेने वाले पर और

لَقَدْ نَظَرَ اِلَيَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ اَضْرِبُ بِالسَّيْفِ

मै गवाही देता हूँ के वो लोग घाटे मे हैं के उनके चेहरे जहन्नम मे झोक दिए जाएंगे और वो उसी मे पड़े

قُدُمًا فَقَالَ يَا عَلِيُّ اَنْتَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰى اِلَّا اَنَّهٗ

जलते रहेंगे मै गवाही देता हूँ के आपने कोई इक़दाम नही किया और किसी काम से बाज़ नही रहे और

لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ وَ اُعْلِمُكَ اَنَّ مَوْتَكَ وَ حَيٰوتَكَ مَعِيْ وَ عَلٰى سُنَّتِيْ

न बोले और न रूके मगर अल्लाह के रसूल के हुकम से। आप ही ने फ़रमाया है कि क़सम है उस जात

فَوَ اللّٰهِ مَا كَذِبْتُ وَ لَا كُذِبْتُ وَ لَا ضَلَلْتُ وَ لَا ضُلَّ بِيْ وَ لَا

की जिसके कब्जे मे मेरी जान है कि रसूले खुदा (स) मेरी तरफ़ देख रहे थे जब मै आगे आगे तलवार

نَسِيْتُ مَا عَهِدَ اِلَيَّ رَبِّيْ وَ اِنِّيْ لَعَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ بَيَّنَهَا لِنَبِيِّهٖ وَ

चला रहा था व आप ने फ़रमाया था के ऐ अली तुम मुझ से वैसे ही हो जैसे हारून मूसा से थे मगर ये

بَيَّنَهَا النَّبِيُّ لِيْ وَ اِنِّيْ لَعَلَى الطَّرِيْقِ الْوَاضِحِ اَلْفِظُهٗ لَفْظًا

कि मेरे बाद नबुव्वत नही है और मै तुम को बाखबर करता हूँ कि तुमहारी मौत और ज़िंदगी सब मेरे

صَدَقْتَ وَ اللّٰهِ وَ قُلْتَ الْحَقَّ فَلَعَنَ اللّٰهُ مَنْ سَاوَاكَ بِمَنْ نَّاوَاكَ

साथ है और मेरे तरीक़े पर है। बादा मै ने ग़ल्त नही कहा और न मुझे झुठलाया जा सका। और न मै

وَ اللّٰهُ جَلَّ اسْمُهٗ يَقُوْلُ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِيْنَ

गुमराह हुआ और न गुमराह किया गया और न मै अपने रब के अहेद को भूला और मै अपने रब की

لَا يَعْلَمُوْنَ فَلَعَنَ اللّٰهُ مَنْ عَدَلَ بِكَ مَنْ فَرَضَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

तरफ़ से वाजेह दलील पर हूँ। जिस को उसने अपने नबी के लिये ज़ाहिर किया है। और नबी ने उसको

وِلَايَتَكَ وَ اَنْتَ وَلِيُّ اللّٰهِ وَ اَخُوْ رَسُوْلِهٖ وَ الذَّآبُّ عَنْ دِيْنِهٖ وَ

मेरे लिए ज़ाहिर किया है और मै वाजेह रास्ते पर हूँ जिस को मै बताता हूं। बादा आपने सच कहा है

الَّذِیْ نَطَقَ الْقُرْاٰنُ بِتَفْضِیْلِهٖ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَ فَضَّلَ اللّٰهُ

और हक़ इरशाद फ़रमाया है। पस खुदा की लानत हो उसपर जो आप से बराबर करे उसको जो

الْمُجَاهِدِیْنَ عَلَی الْقَاعِدِیْنَ اَجْرًا عَظِیْمًا دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَ

आपका दुश्मन है। वह खुदा जिस का नाम अज़ीज़ है वह कहता है: कया जाननेवाले और न जाननेवाले

مَغْفِرَةً وَّ رَحْمَةً وَّ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا وَّ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی

बराबर हो सकते है? पस खुदा की लानत हो उस पर जो आप के बराबर क़रार दे उसे जिस पर अल्लाह

اَجَعَلْتُمْ سِقَایَةَ الْحَآجِّ وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ

ने आप की विलायत फ़र्ज़ की है और आप अल्लाह के वली और वसी ए रसूल खुदा और दीन के

اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ جَاهَدَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ لَا یَسْتَوٗنَ

मुहाफ़िज हैं। आप की फ़ज़ीलत के बारे में क़ुरआने नातिक़ है और अल्लाह ने फ़रमाया है कि खुदा ने

عِنْدَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ

मुजाहिदों को बैठे रहनेवालों के मुक़ाबले में फ़ज़ीलत दी है अ ा ए अ ीम के ज़रिए। के उनके लिये

هَاجَرُوْا وَ جَاهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ

दरजात, म फ़िरत और रहमत है और अल्लाह ाफ़ूर व रहीम है। और खुदा ने फ़रमाया है क्या तुमने

اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ یُبَشِّرُهُمْ

हाजियों की सक़्क़ाई और मस्जिदुल हराम की तामीर को वैसा क़रार दे लिया है जैसा कि कोई श स

رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ

अल्लाह और रो□जे आ□□ारत पर ईमान लाये और राहे खुदा मे जेहाद करे। ये दोनो खुदा के नज़दीक

خَالِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ اَشْهَدُ اَنَّكَ

बराबर न होंगे और खुदा ज़ालिमों को हिदायत नही करता है। जो लोग ईमान लाए और हिजरत की

الْمَخْصُوْصُ بِمَدْحَةِ اللّٰهِ الْمُخْلِصُ لِطَاعَةِ اللّٰهِ لَمْ تَبْغِ بِالْهُدٰى

और राहे खुदा मे जिहाद किया अपने माल और जान से उनका दर्जा खुदा के नज़दीक अज़ीम है और

بَدَلًا وَّلَمْ تُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّكَ اَحَدًا وَّاَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى اسْتَجَابَ

वह कामयाम हैं। उनका रब उनको अपनी रहमत की और रिज़वान और जन्नत की बशारत देता है

لِنَبِيِّهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ فِيْكَ دَعْوَتَهٗ ثُمَّ اَمَرَهٗ بِاِظْهَارِ مَا

जिस मे दायमी नेमते हैं और वह इस में हमेशा मुक़ीम रहेंगे। बेशक खुदा के पास उनके लिये अ□ा

اَوْلَاكَ لِاُمَّتِهٖ اِعْلَآءً لِشَاْنِكَ وَ اِعْلَانًا لِبُرْهَانِكَ وَ دَحْضًا

अ□जीम है। और रिज़वान और जन्नत की बशारत देता है जिसमे नेमतें हैं वो उसमे हमेशा मुक़ीम रहेंगे

لِّلْاَبَاطِيْلِ وَقَطْعًا لِّلْمَعَاذِيْرِ فَلَمَّا اَشْفَقَ مِنْ فِتْنَةِ الْفَاسِقِيْنَ

बेशक ख़ूदा के पास उनके लिए अ□ा अज़ीम है: मै गवाही देता हूँ के आप ख़ूदा की मिदहत के लिए

وَ اتَّقٰى فِيْكَ الْمُنَافِقِيْنَ اَوْحٰى اِلَيْهِ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ يٰٓاَيُّهَا

मख़सूस और अल्लाह की इताअत के लिए मुख़लिस हैं हिदायत के लिए किसी बदले को न चाहा और

الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَ اِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا

अपने रब की इबादत मे किसी को शरीक न किया और खुदावंदे आलम ने अपने नबी की दुआ को

بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ فَوَضَعَ عَلٰى نَفْسِهٖ

आपके बारे मे क़ुबूल किया फिर उनको हुकूम दिया आप की विलायत को ज़ाहिर करने का, आप की

اَوْزَارَ الْمَسِيْرِ وَ نَهَضَ فِيْ رَمْضَآءِ الْهَجِيْرِ فَخَطَبَ وَ اَسْمَعَ وَ

शान को बुलंद करने और आपकी दलील का एलान करने और बातिलों को कूचलने और फ़र्ज़ा

نَادٰى فَاَبْلَغَ ثُمَّ سَئَلَهُمْ اَجْمَعَ فَقَالَ هَلْ بَلَّغْتُ فَقَالُوْا اللّٰهُمَّ

माज़रतो के क़ता करने के लिए तो जब मुनाफ़क़ो के फ़ितना से डरे और आपके बारे मे मुनाफ़ेक़ीन

بَلٰى فَقَالَ اللّٰهُمَّ اشْهَدْ ثُمَّ قَالَ اَلَسْتُ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

का ख़ाफ़ पैदा हुआ तो आलमीन के परवर-दिगार ने वही की ऐ रसूल आप पहुँचा दे जो आपकी तरफ़

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْا بَلٰى فَاَخَذَ بِيَدِكَ وَ قَالَ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ

नाज़ल किया गया है और आप ने अगर नही पहुँचा तो गोया उस का कोई पैग़ाम नही पहुँचा और खुदा

فَهٰذَا عَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ

आप को लोगा से महफ़ूज़ रखेगा तो उन्होने सफ़र की ज़हमतों को उठाया और सख़्त कर्मा के ज़माना

مَنْ نَصَرَهٗ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهٗ فَمَا اٰمَنَ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْكَ عَلٰى

मे ग़दीरे खुम मे रूक कर खुतबा दिया और सुनाया और आवाज़ दी फिर पहुँचा दिया फिर कहा के

نَبِيِّهٖۤ اِلَّا قَلِيْلٌ وَّ لَا زَادَ اَكْثَرَهُمْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ وَّ لَقَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ

खुदाया गवाह रहना फिर कहा क्या मै मोमीनो की जान पर उनसे अदना नही हूँ, उन्होंने कहा हाँ फिर

تَعَالٰى فِيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ هُمْ كَارِهُوْنَ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ

आप ने आपके हाथ को पकड़ा और फ़रमाया जिस का मै मौला हूँ उसके ये अली (अ) मौला हैं खुदाया

يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗ

उस को दोस्त रखना जो उन्हें दोस्त रखे और उसे दुश्मन रखना जो उन्हे दुश्मन रखे उसकी मदद करना

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ

जो उनकी मदद करे उसको छोड़ देना जो उन्हें छोड़ दे तो आप के बारे मे खुदा ने जो नाज़ल किया है

اللّٰهِ وَ لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

नबी पर उस पर सिवाए चन्द के कोई ईमान नही लाया और ज़्यादा तर लोगो ने घाटे के अलावा कुछ

وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

भी नही पाया और अल्लाह ने उस से क़ब्ल भी आप के बारे मे नाज़ल फ़रमाया था जिसे लोग ना पसंद

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رَاكِعُوْنَ وَ

कर रहे थे ऐ इमानदारों तुम मे से जो भी खुदा के दीन से फिर जाएगा तो खुदा का कुछ न बिगड़ेगा

مَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ

अनक़रीब वो एक ऐसी क़ौम को लाएगा जिन से वो मोहब्बत करता होगा और वो उस से मोहब्बत

الْغَالِبُوْنَ رَبَّنَا اٰمَنَّا بِمَا اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا

करते होंगे मोमिनीन के लिए ख़ाकसार और काफ़िरो के लिए सख़्त होंगे राहे खुदा मे जेहाद करते होंगे

مَعَ الشَّاهِدِيْنَ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَا

और मलामत करने वाले की मलामत की परवा न करेंगे ये खुदा का फ़ज़्ल है वो जिसे चाहता है दे देता

مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا

है और अल्लाह वुसअत वाला अलीम है बेशक तुम्हारा वली अल्लाह और उसका रसूल और साहेबाने

هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَالْعَنْ مَنْ عَارَضَهٗ وَاسْتَكْبَرَ وَ كَذَّبَ

ईमान जो नमाज़ क़ाएम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं हालते रूकू मे और जिसने अल्लाह और

بِهٖ وَ كَفَرَ وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

उस के रसूल से दोस्ती की और ईमान वालों से तो अल्लाह का गोरोह ही ग़ालिब है: मेरे परवरदिगार

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ سَيِّدَ الْوَصِيِّيْنَ وَ اَوَّلَ

हम ईमान लाए जो तूने नाज़ल किया है और हम ने रसूल का इत्तेबा किया है तो हम को गवाहों मे लिख

الْعَابِدِيْنَ وَ اَزْهَدَ الزَّاهِدِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ صَلَوَاتُهٗ وَ

दे: मेरे खुदा हमारे दिलों को हिदायत के बाद कच होने से बचा ले और अपने पास से रहमत अता कर

تَحِيَّاتُهٗ اَنْتَ مُطْعِمُ الطَّعَامِ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ

बेशक तू ही अता करने वाला है खुदाया मै जानता हूँ के ये हक़ है तेरी जानिब से है तो तू लानत कर

اَسِيْرًا لِّوَجْهِ اللهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا وَّ فِيْكَ

उस पर जो अली (अ) से मारेजा करे सरकशी करे, तकज़ीब करे और कुफ़्र करे और अनक़रीब ज़ुल्म

اَنْزَلَ اللهُ تَعَالٰى وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ

करनेवाले जान लेंगे कहाँ जाएंगेः सलाम आप पर ऐ अमीरल मोमिनीन और वसियों के सरदार और

خَصَاصَةٌ وَّمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ وَ اَنْتَ

पहले इबादत करनेवाले और सबसे बड़े ज़ाहिद और अल्लाह की रहमत और बरकात हो और सलवात

الْكَاظِمُ لِلْغَيْظِ وَ الْعَافِيْ عَنِ النَّاسِ وَ اللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

और तहय्यात होः आप ही ने खुदा की मोहब्बत मे मिसकीन और यतीम व असीर को खाना खिलाया

وَ اَنْتَ الصَّابِرُ فِي الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ وَ اَنْتَ

है आप जज़ा व शुक्र का कोई इरादा न रखते थे और आपके बारे मे खुदा ने नाज़ल किया है के वो लोग

الْقَاسِمُ بِالسَّوِيَّةِ وَ الْعَادِلُ فِي الرَّعِيَّةِ وَ الْعَالِمُ بِحُدُوْدِ اللهِ مِنْ

अपने नफ़्सो पर ईसार करते हैं जबके वो खुद तंगी मे होते हैं तो वो कामयाब है और आप ही ग़ुस्से को

جَمِيْعِ الْبَرِيَّةِ وَ اللهُ تَعَالٰى اَخْبَرَ عَمَّا اَوْلَاكَ مِنْ فَضْلِهٖ بِقَوْلِهٖ

पी जानेवाले हैं और लोगों को माफ़ करनेवाले हैं और अल्लाह नेकूकारों को दोस्त रखता है और आप

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوٗنَ اَمَّا الَّذِيْنَ

ही सख़्ती और दुश्वारी और तंगी के वक़्त सब्र करनेवाले हैं और आपही बराबर से तक़सीम करनेवाले

اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى نُزُلًا بِمَا

और रेयाया मे अद्ल करनेवाले और हुदूदे इलाही के जानने वाले तमाम मख़लूक़ मे हैं और खुदावन्दे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ وَ اَنْتَ الْمَخْصُوْصُ بِعِلْمِ التَّنْزِيْلِ وَ حُكْمِ

आलम ने सबको बा ख़बर किया है उस से जो आप को उस ने फ़ज़ीलत दी है अपने इस क़ौल से क्या

التَّاوِيْلِ وَ نَصِّ الرَّسُوْلِ وَ لَكَ الْمَوَاقِفُ الْمَشْهُوْدَةُ

मोमीन और फ़ासिक़ बराबर हो सकते हैं जो लोग ईमान लाए और नेक अमल बजा लाए तो उनके

وَالْمَقَامَاتُ الْمَشْهُوْرَةُ وَ الْاَيَّامُ الْمَذْكُوْرَةُ يَوْمَ بَدْرٍ وَّ يَوْمَ

लिए जन्नतुल मावा है ये जज़ा है उसकी जो वो आमाल करते रहे हैं और आप ही इल्मे तनज़ील से

الْاَحْزَابِ اِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ

मख़सूस हैं और तावील के हुकुम से और नस्से रसूल (स) से और आप के लिए नुमायाँ मक़ामात और

تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا

मशहूर मनिज़लें और क़ाबिले ज़िक्र दिन हैं बदर के राज़ और जंगे ख़नद के राज़ जब निगाहें बहेक गई

زِلْزَالًا شَدِيْدًا وَ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

और दिले हनजरह तक आ गए और तूम अल्लाह के बारे मे तरह तरह के गूमान करने लगेः इस तरह

مَرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ اِلَّا غُرُوْرًا وَ اِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ

खुदा ने मोमिनो का इम्तेहान ले लिया और सब सख़्त मूताज़लज़ल हो गए और जब मुनाफ़क़ो ने कहा

مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا وَ يَسْتَاْذِنُ

और जिनके दिलां मे मर्ज़ है के अल्लाह व रसूल ने हमसे सिवाए धोके के कुछ भी वादा नही किया है

فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَّ مَا هِيَ بِعَوْرَةٍ

और जब उन मे के एक गुरोह ने कहा ऐ यसरब वालों ये ठहरने की जगह नही है तो पलट जाओ और

اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا وَّ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَ لَمَّا رَاَى الْمُؤْمِنُوْنَ

उन्हीका एक गुरोह नबी से इजाज़त माँग रहा था और कहता था के हमारे घर खुले हुए हैं हाँलाके ऐसा

الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ اللّٰهُ وَ

हरगिज़ न था ये सिर्फ़ फ़रार का इरादा कर रहे थे और खुदा ने फ़रमाया और जब मोमिनो ने लश्करों

رَسُوْلُهٗ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيْمَانًا وَّ تَسْلِيْمًا فَقَتَلْتَ عَمْرَهُمْ وَ

को देखा तो कहा के इसी का खुदा ने और उसके रसूल ने वादा किया था और अल्लाह व रसूल सच्चे हैं

هَزَمْتَ جَمْعَهُمْ وَ رَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا

और उन्हें उसे देख कर ईमान व तसलीम मे ज़्यादती हो गई तो आपने अम्र को क़त्ल कर दिया और

خَيْرًا وَّ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا وَّ

उनके लश्कर को शिकस्त दे दी और खुदाने उन काफ़रो को ग़ैज़ व ग़ज़ब के आलम मे वापस किया

يَوْمَ اُحُدٍ اِذْ يُصْعِدُوْنَ وَ لَا يَلْوٗوْنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ

उन्होंने कोई भलाई न पाई और अल्लाह किताल मे मोमिनीन के लिए काफ़ी है और कुव्वत वाला

يَدْعُوْهُمْ فِيْ اُخْرٰهُمْ وَ اَنْتَ تَذُوْدُ بِهِمُ الْمُشْرِكِيْنَ عَنِ النَّبِيِّ

ग़ालीब है और ओहद के राज़ जब लोग पहाड़ पर चढ़ रहे थे और मुड़ कर किसी को देखते भी न थे

ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ حَتّٰى رَدَّهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْكُمَا

हालाँके रसूल पिछे खड़े उन्हें आवाज़ दे रहे थे और आप मुश्रिकीन के जानवरों को हँका रहे थे कभी

خَآئِفِيْنَ وَ نَصَرَ بِكَ الْخَاذِلِيْنَ وَ يَوْمَ حُنَيْنٍ عَلٰى مَا نَطَقَ بِهٖ

दाहेनी तरफ़ और कभी बाएँ तरफ़ यहाँ तक के खुदावन्दे आलम ने आप दोनो से उनको वापस कर

التَّنْزِيْلُ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّ

दिया ख़ाफ़ ज़दा हालत मे और आप के ज़रिए बे यारो नासिर की इमदाद की और हुनैन के रोज़ जैसा

ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِيْنَ ثُمَّ

के क़ुआर्ने नातिक़ मे है के जब तूम को तुम्हारी कसरत ने खुद पसंदी मे मुब्तेला कर दिया और फिर

اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ

खुदा ने अपना सुकून अपने रसूल (स) और मोमिनो पर नाज़ल कर दिया ओर मोमिन आप थे ओर

اَنْتَ وَ مَنْ يَّلِيْكَ وَ عَمُّكَ الْعَبَّاسُ يُنَادِيْ الْمُنْهَزِمِيْنَ يَا

आप के साथी जब के आप के चचा अब्बास हज़ीमत खुर्दा लोगों को बुला रहे थे ऐ सूरए बक़रा वालां

اَصْحَابَ سُوْرَةِ الْبَقَرَةِ يَا اَهْلَ بَيْعَةِ الشَّجَرَةِ حَتّٰى اسْتَجَابَ

ऐ बैयते शजरा वालों यहाँ तक के एक क़ौम ने लब्बैक कही उस वक़्त आप ने उनके नान व नफ़के का

لَهٗ قَوْمٌ قَدْ كَفَيْتَهُمُ الْمَؤُنَةَ وَ تَكَفَّلْتَ دُوْنَهُمُ الْمَعُوْنَةَ

इंतेज़ाम किया आप उनकी मदद के कफ़ील हो गए तो वो लोग आप से मायूस हालत मे पलटे उम्मीद

فَعَادُوْا اٰيِسِيْنَ مِنَ الْمَثُوْبَةِ رَاجِيْنَ وَعْدَ اللّٰهِ تَعَالٰى بِالتَّوْبَةِ وَ

लगाए हुए खुदा से तौबा के क़ुबूल करने की और ये क़ौले खुदाए अ.ज. है जिसका ज़िक्र अज़ीज़ है के

ذٰلِكَ قَوْلُ اللّٰهِ جَلَّ ذِكْرُهٗ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ

उसके बाद खुदा जिस की चाहेगा तौबा क़ुबूल करेगा ओर आप दरजए सब्र पर फ़ाएजे अज़ीम अज्र के

يَّشَآءُ وَ اَنْتَ حَآئِزٌ دَرَجَةَ الصَّبْرِ فَآئِزٌ بِعَظِيْمِ الْاَجْرِ وَ يَوْمَ

मालिक थे और फिर ख़ैबर के राज़ जब खुदावन्दे आलम ने मुनाफिक़ीन की सुस्ती को जाहिर किया

خَيْبَرَ اِذْ اَظْهَرَ اللّٰهُ خَوَرَ الْمُنَافِقِيْنَ وَ قَطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِيْنَ وَ

और काफ़रों की तमाम जड़ों को मुन्क़ता कर दिया और हम्द है आलमीन वे परवरदिगार के लिए और

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا

उन लोगों ने खुदा से उसके क़ब्ल भी अहेद किया था के वो जंग मे पीठ न दिखाएंगे और अहदे खुदा का

يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْؤُلًا مَوْلَايَ اَنْتَ الْحُجَّةُ

उनसे बहेर हाल सवाल किया जाएगाः मेरे मौला आप हुज्जते बालिग़ा हैं और हक़ का वाज़ेह रासता हैं

الْبَالِغَةُ وَ الْمَحَجَّةُ الْوَاضِحَةُ وَ النِّعْمَةُ السَّابِغَةُ وَ الْبُرْهَانُ

और मुकम्मल और रौशन ददील हैं आपको मुबारक हो वो नेमत जो खुदा ने आपको दी है और खुदा

الْمُنِيْرُ فَهَنِيْئًا لَّكَ بِمَا اٰتٰيكَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلٍ وَّ تَبًّا لِّشَانِئِكَ

की रहमत से दूर हो वो जो जेहालत की वजेह से आप का दुश्मन है आप नबी के साथ तमाम जंगों मे

ذِى الْجَهْلِ شَهِدْتَّ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ جَمِيْعَ

रहे उन के आगे अलम बरदारे लश्कर बने हुए और उनके आगे तलवार चलाते हुए फिर आप के

حُرُوْبِهٖ وَ مَغَازِيْهِ تَحْمِلُ الرَّايَةَ اَمَامَهٗ وَ تَضْرِبُ بِالسَّيْفِ

महशुर नज़म व तदबीर और उमूर मे बसीरत की वजह से उन्होंने आप को बहुत से मक़ामात पर अमीर

قُدَّامَهٗ ثُمَّ لِحَزْمِكَ الْمَشْهُوْرِ وَ بَصِيْرَتِكَ فِي الْاُمُوْرِ اَمَّرَكَ فِي

बनाया और आप पर कोई अमीर न था और कितने ज़्यादा ऐसे उमूर थे के जिस मे आप को तक़्वे ने

الْمَوَاطِنِ وَ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ اَمِيْرٌ وَ كَمْ مِنْ اَمْرٍ صَدَّكَ عَنْ

अक़दाम से बाज़ रखा और दुसरे लोगों ने ख्वाहीशे नफ़स का इत्तेबह किया तो जाहिलों को ये गुमान

اِمْضَآءِ عَزْمِكَ فِيْهِ التُّقٰى وَ اتَّبَعَ غَيْرُكَ فِيْ مِثْلِهِ الْهَوٰى فَظَنَّ

हो गया के आप आजिज़ हो गए हैं के अक़दाम करें। ऐसा नही है ऐसा सोचने वाला बखुदा गुम्राह हुआ

الْجَاهِلُوْنَ اَنَّكَ عَجَزْتَ عَمَّا اِلَيْهِ انْتَهٰى ضَلَّ وَ اللّٰهِ الظَّآنُّ

और हिदायत नही पाई और आप ने खुद वाजेह कर दिया था तमाम तौवहम करने वालों के अश्कालात

لِذٰلِكَ وَ مَا اهْتَدٰى وَ لَقَدْ اَوْضَحْتَ مَآ اَشْكَلَ مِنْ ذٰلِكَ لِمَنْ

को और इफ़तेरा करनेवालो के इफ़तेरा को अपने क़ौल से। अल्लाह का दुरूद हो आप पर, कितने ही

تَوَهَّمَ وَ امْتَرٰى بِقَوْلِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ قَدْ يَرَى الْحُوَّلُ

चारा गर और आला नज़र राह हिला को देखते रहते हैं लेकिन उनका रोकनेवाला तक़ए इलाही होता

الْقُلَّبُ وَجْهَ الْحِيْلَةِ وَ دُوْنَهَا حَاجِزٌ مِّنْ تَقْوَى اللّٰهِ فَيَدَعُهَا

है तो वो जान बूझ कर तर्क कर देते हैं और जो दीन का दर्द नही रखते हैं वो फ़ुरसत समझकर अक़दाम

رَاْىَ الْعَيْنِ وَ يَنْتَهِزُ فُرْصَتَهَا مَنْ لَّا حَرِيْجَةَ لَهٗ فِي الدِّيْنِ

कर बैठते हैं आप ने सच कहा है और बातिल वाले घाटे मे है और फिर जब दो अहेद शिकनो ने मक्कारी

صَدَقْتَ وَ خَسِرَ الْمُبْطِلُوْنَ وَ اِذْ مَا كَرَكَ النَّاكِثَانِ فَقَالَا

की और कहा के हम उमरा करने का इरादा रखते हैं तो आपने उन से कहा के तुम्हारी जान की क़सम

نُرِيْدُ الْعُمْرَةَ فَقُلْتَ لَهُمَا لَعَمْرُكُمَا مَا تُرِيْدَانِ الْعُمْرَةَ لٰكِنْ

तुम्हारा उम्रा का इरादा नही है बल्के तुम्हारा ग़द्दारी का इरादा है तो आप ने दोनो से बैयत ली और अहेद

تُرِيْدَانِ الْغَدْرَةَ فَاَخَذْتَ الْبَيْعَةَ عَلَيْهِمَا وَ جَدَّدْتَ الْمِيْثَاقَ

की तजदीद की तो वो निफ़ाक़ की कोशिशों मे लगे रहे पस जब आप ने दोनो को उनके काम की तरफ़

فَجَدَّا فِي النِّفَاقِ فَلَمَّا نَبَّهْتَهُمَا عَلٰى فِعْلِهِمَا اَغْفَلَا وَ عَادَا وَ مَا

मुतवज्ञे किया तो उसके बावजूद ग़फ़लत की और कोई फ़ाएदा न पाया और उनका अंजाम घाटे के

انْتَفَعَا وَ كَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهِمَا خُسْرًا ثُمَّ تَلَاهُمَا اَهْلُ الشَّامِ

साथ हुआ फिर उन दोनों के पीछे अहले शाम उठे आप उनको दफा करने के लिए चले हुज्जत तमाम

فَسِرْتَ اِلَيْهِمْ بَعْدَ الْاِعْذَارِ وَ هُمْ لَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ وَ لَا

करने के बाद और वो दीने हक़ को नही मान रहे थे और क़ुआर्न मे ग़ौर नही कर रहे थे वो पस्त,

يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ هَمَجٌ رَعَاعٌ ضَآلُّوْنَ وَ بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلٰى

अहमक़ और गुम्राह थे और जो मोहम्मद पर नाज़ल किया गया था आप के बारे मे उस के मुनकिर थे

مُحَمَّدٍ فِيْكَ كَافِرُوْنَ وَ لِاَهْلِ الْخِلَافِ عَلَيْكَ نَاصِرُوْنَ وَ قَدْ

और आप के मुख़ालिफ़िन के नासिर थे और खुदा ने हुकुम दिया है आप के इत्तेबा का और मोमिनीन

اَمَرَ اللّٰهُ تَعَالٰى بِاِتِّبَاعِكَ وَ نَدَبَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِلٰى نَصْرِكَ وَ قَالَ

को आप की नुसरत की दावत दी है और फ़रमाया है के ऐ ईमान लाने वालों खुदा से डरो और सच्चे

عَزَّ وَ جَلَّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ

लोगों के साथ हो जाओ मेरे आक़ा आपके ज़रिए हक़ ज़ाहिर हुआ जबके मख़लूक़ ने उसे छोड़ दिया

الصّٰدِقِيْنَ مَوْلَايَ بِكَ ظَهَرَ الْحَقُّ وَ قَدْ نَبَذَهُ الْخَلْقُ وَ

था और आपने सुन्नत को मिट जाने के बाद और ख़राब हो जाने के बाद ज़ाहिर किया है तो आपके

اَوْضَحْتَ السُّنَنَ بَعْدَ الدُّرُوْسِ وَ الطَّمْسِ فَلَكَ سَابِقَةُ الْجِهَادِ

लिए तसदीक़ तनज़ील मे साबिक़ा जिहाद है और फिर तहक़ीक़ तावील मे आप को फ़ज़ीलते जिहाद

عَلٰى تَصْدِيْقِ التَّنْزِيْلِ وَ لَكَ فَضِيْلَةُ الْجِهَادِ عَلٰى تَحْقِيْقِ

हासिल है और आपका दुश्मन खुदा का दुश्मन है और रसूल का इंकार करनेवाला है जब वो बातिल

التَّاْوِيْلِ وَ عَدُوُّكَ عَدُوُّ اللّٰهِ جَاحِدٌ لِّرَسُوْلِ اللّٰهِ يَدْعُوْ بَاطِلًا وَ

की तरफ़ बुलाता है, ज़ुल्म का हुकुम देता है, हुकूमत करता है, ग़ज़ब के साथ और अपने गरोह को

يَحْكُمُ جَآئِرًا وَ يَتَاَمَّرُ غَاصِبًا وَ يَدْعُوْ حِزْبَهٗ اِلَى النَّارِ وَ عَمَّارٌ

जहन्नम की तरफ़ दावत देता है तो अम्मार यासिर आप की तरफ़ से जेहाद कर रहे थे और सफ़ों के

يُّجَاهِدُ وَ يُنَادِيْ بَيْنَ الصَّفَّيْنِ الرَّوَاحَ الرَّوَاحَ اِلَى الْجَنَّةِ وَ

दरमियान आवाज़ लगा रहे थे जन्नत की तरफ़ जल्दी करो और जब प्यासे हुए तो दूध पिलाया गया तो

لَمَّا اسْتَسْقٰى فَسُقِيَ اللَّبَنُ كَبَّرَ وَ قَالَ قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى

अल्लाहो अक्बर कहा और कहा के मुझसे रसूले खुदा ने कहा था के तुम्हारी आख़री पीने की चीज

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ اٰخِرُ شَرَابِكَ مِنَ الدُّنْيَا ضَيَاحٌ مِنْ لَبَنٍ وَ

दुनिया मे दूध होगा और तुम को बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा उस वक़्त अबुल आदिया मुक़ाबले मे आया

تَقْتُلُكَ الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ فَاعْتَرَضَهٗ اَبُو الْعَادِيَةِ الْفَزَارِيُّ

और उसने जनाबे अम्मार को शहीद कर दिया तो अबुल ग़ादिया पर अल्लाह और उस के मलाएका

فَقَتَلَهٗ فَعَلٰى اَبِي الْعَادِيَةِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَ لَعْنَةُ مَلَآئِكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ

ओर तमाम रसूलों की लानत हो ओर उन सबपर जिन्होने अपनी तलवार को आपके मुक़ाबले मे

اَجْمَعِيْنَ وَ عَلٰى مَنْ سَلَّ سَيْفَهٗ عَلَيْكَ وَ سَلَلْتَ سَيْفَكَ عَلَيْهِ

खाiचा और आपने अपनी तलवार को उन के लिए खींचा, ऐ अमीरल मोमिनीन (अ) चाहे वो मुशरिको

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ الْمُنَافِقِيْنَ اِلٰى يَوْمِ

मे से हां या मुनाफ़ीक़ों मे से रोज़े क़यामत तक और उन सब पर जो आप की बुराई से राज़ी हों और

الدِّيْنِ وَ عَلٰى مَنْ رَضِىَ بِمَا سَائَكَ وَ لَمْ يَكْرَهْهُ وَ اَغْمَضَ

उसको नापसंद न किया और चश्मपोशी की और इंकार न किया आपके ख़िलाफ़ मदद की हाथ या

عَيْنَهٗ وَ لَمْ يُنْكِرْ اَوْ اَعَانَ عَلَيْكَ بِيَدٍ اَوْ لِسَانٍ اَوْ قَعَدَ عَنْ

ज़ुबान से या आपकी नुस्रत से बैठ रहे या आपके साथ जिहाद से बाज़ रहा या आपके फ़ज़्ल को कम

نَّصْرِكَ اَوْ خَذَلَ عَنِ الْجِهَادِ مَعَكَ اَوْ غَمَطَ فَضْلَكَ وَ جَحَدَ حَقَّكَ

कर दिया और आप के हक़ का इंकार किया या आपके बराबर किया उसको जिससे खुदा ने आप का

اَوْ عَدَلَ بِكَ مَنْ جَعَلَكَ اللّٰهُ اَوْلٰى بِهٖ مِنْ نَفْسِهٖ وَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ

अदना बनाया था और अल्लाह का दुरूद हो आप पर ओर उसकी रहमत और बरकात और सलाम

عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ سَلَامُهٗ وَ تَحِيَّاتُهٗ وَ عَلَى الْاَئِمَّةِ

और तहय्यात हो और तमाम आइम्मए ताहेरीन (अ) पर आप की आल मे बेशक, खुदा साहेबे हम्दो

مِنْ اٰلِكَ الطَّاهِرِيْنَ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّ الْاَمْرُ الْاَعْجَبُ وَ الْخَطْبُ

मज्द है और अजीबतरीन अम्र और नागवार तरीन हादेसा आपके हक के इंकारके बाद जनाबे सिद्दीक़ा,

الْاَفْظَعُ بَعْدَ جَحْدِكَ حَقَّكَ غَصْبُ الصِّدِّيْقَةِ الطَّاهِرَةِ

ताहेरा फ़ातेमा ज़ेहरा (स) सय्यदतुननीसा के हक़ फ़िदक का ग़ज़्ब करना है और आप की गवाही और

الزَّهْرَآءِ سَيِّدَةِ النِّسَآءِ فَدَكًا وَ رَدُّ شَهَادَتِكَ وَ شَهَادَةِ

सरदारे जवानाने जन्नत इमामे हसन व हुसैन (अ) की गवाही (जो आप की नस्ल और इत्रते मुसतफ़ा

السَّيِّدَيْنِ سُلَالَتِكَ وَ عِتْرَةِ الْمُصْطَفٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكُمْ وَ قَدْ

(स) मे हैं) का रद करना है जबके खुदावन्दे आलम ने आपके मरतबे को उम्मत पर बुलंद किया है और

اَعْلَى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى الْاُمَّةِ دَرَجَتَكُمْ وَ رَفَعَ مَنْزِلَتَكُمْ وَ اَبَانَ

आपकी मनिज़लत को रफ़त दी है और आपके फ़ज़्ल को ज़ाहिर किया है और तमाम आलम पर

فَضْلَكُمْ وَ شَرَّفَكُمْ عَلَى الْعَالَمِيْنَ فَاَذْهَبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ وَ

आपको शरफ़ दिया है और आपसे रिज्स को दूर रखा और वैसा पाकीज़ा रखा जो पाकीज़गी का हक़

طَهَّرَكُمْ تَطْهِيْرًا قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَ جَلَّ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا

है खुदा ने फ़रमाया इन्सान तबीअतन हरीस और बे सब्रा है जब उस को बुराई पहुँचती हे तो जज़ा व

اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا وَ اِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ

फ़जा करता है और जब अच्छाई मिलती है तो एहसान नही मानता सिवाए नमाज़ गुजारों के पस, खुदा

فَاسْتَثْنَى اللّٰهُ تَعَالٰى نَبِيَّهُ الْمُصْطَفٰى وَ اَنْتَ يَا سَيِّدَ الْاَوْصِيَآءِ

ने अपने मुन्ताख़िब नबी को मुसतसना किया है और आपको जो तमाम मख़लूक़ मे वसियों के सरदार

مِنْ جَمِيْعِ الْخَلْقِ فَمَا اَعْمَهَ مَنْ ظَلَمَكَ عَنِ الْحَقِّ ثُمَّ اَفْرَضُوْكَ

हैं तो वो कितना सर गश्ता और अंधा है जिसने आप के हक़ पर ज़ुल्म किया फिर मक्कारी और धोके

سَهْمَ ذَوِی الْقُرْبٰی مَکْرًا وَّ اَحَادُوْهُ عَنْ اَهْلِهٖ جَوْرًا فَلَمَّا اٰلَ

के साथ ज़िल क़ुर्बा के हिस्से को अलग किया और ज़ुल्मो जौर के ज़रिए उसको मस्तहकीन से रोक

الْاَمْرُ اِلَیْكَ اَجْرَیْتَهُمْ عَلٰی مَا اَجْرَیَارَغْبَةً عَنْهُمَا بِمَا عِنْدَاللّٰهِ

दिया, पस जब अम्रे ख़िलाफ़त आप तक वापस आया तो आप ने उनको उनके हाल पर छोड़ दिया

لَكَ فَاَشْبَهْتَ مِحْنَتُكَ بِهِمَا مِحَنَ الْاَنْبِیَآءِ عَلَیْهِمُ السَّلَامُ

उनसे किनारा कशी करके सवाबे खुदा की उम्मीद लगाए हुए तो आपकी मज़लूमी अंबिया की मज़लूमी

عِنْدَ الْوَحْدَةِ وَ عَدَمِ الْاَنْصَارِ وَ اَشْبَهْتَ فِی الْبَیَاتِ عَلَی

से कितनी मुशाबेह है तन्हाई और नासिर न होने की सूरत मे और आप मुशाबह हो गए ज़बीह के जब

الْفِرَاشِ الذَّبِیْحَ عَلَیْهِ السَّلَامُ اِذَا اَجَبْتَ كَمَا اَجَابَ وَ

आप बिसतरे रसूल पर शबे हिजरत सोए क्याके आपने भी वैसेही लब्बैक कही जैसे जीब्हे अल्लाह ने

اَطَعْتَ كَمَا اَطَاعَ اِسْمٰعِیْلُ صَابِرًا مُحْتَسِبًا اِذْ قَالَ لَهٗ یَابُنَیَّ

और आपने भी वैसेही इताअत की जैसे जनाबे इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ फ़रज़ंद मैने ख़्वाब देखा है के

اِنِّیْٓ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی قَالَ یَا اَبَتِ

मै तुमको ज़िबाह कर रहा हूँ तो अब तुम्हारा कया ख़याल हे तो कहा ऐ पिदरे बुज़ुर्गवार आपको जो

افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِیْٓ اِنْشَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصَّابِرِیْنَ وَ كَذَالِكَ

हुकुम दिय गया है वो कर गुज़रये आप इन्शाअल्लाह मुझको साबीरों मे पाएगें और उसी तरह आपको

اَنْتَ لَمَّا اَبَاتَكَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَ اَمَرَكَ اَنْ تَضْجَعَ

जब नबी (स) ने बिस्तर पर सो रहने का हुक्म दिया उनके नफ़्स को बचाने के लिए तो आपने जल्दी

فِیْ مَرْقَدِہٖ وَاقِیًا لَہٗ بِنَفْسِكَ اَسْرَعْتَ اِلٰی اِجَابَتِہٖ مُطِیْعًا وَ

की लब्बैक कहने मे इताअत करते हुए और अपने नफ़्स को क़त्ल पर आमादा करते हुए तो खुदा ने

لِنَفْسِكَ عَلَی الْقَتْلِ مُوَطِّنًا فَشَكَرَ اللّٰہُ تَعَالٰی طَاعَتَكَ وَ اَبَانَ

आपकी इताअत को क़ुबूल कर लिया और अपने क़ौल के ज़रिए आप के अच्छे अमल को ज़ाहिर

عَنْ جَمِیْلِ فِعْلِكَ بِقَوْلِہٖ جَلَّ ذِكْرُہٗ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْرِیْ

कर दिया लोगो मे से कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जो अपने नफ़्स को मर्ज़ाए खुदा हासिल करनेके लिए बेच

نَفْسَہُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰہِ ثُمَّ مِحْنَتُكَ یَوْمَ صِفِّیْنَ وَ قَدْ

डालते हैं फिर आपकी ज़हमत सिफ़्फ़ीन मे क़ाबिले क़दर थी जब क़ुआर्न बुलंद कर दिए ए मकर व

رُفِعَتِ الْمَصَاحِفُ حِیْلَۃً وَ مَكْرًا فَاَعْرَضَ الشَّكُّ وَ عُزِفَ

हिला के तौर पर तो लोगों को शक पैदा हो गया और हक़ छुप गया और गुनाहों का इत्तेबा किया गया

الْحَقُّ وَ اتُّبِعَ الظَّنُّ اَشْبَہَتْ مِحْنَۃَ ھَارُوْنَ اِذْ اَمَّرَہٗ مُوْسٰی عَلٰی

उस वक़्त आपकी मुसीबत हारून की तरह थी जब उन्हें जनाबे मूसा ने क़ौम का हाकिम बनाया और

قَوْمِہٖ فَتَفَرَّقُوْا عَنْہُ وَ ھَارُوْنُ یُنَادِیْ بِھِمْ وَ یَقُوْلُ یَا قَوْمِ اِنَّمَا

लोग उनसे जुदा हो गए दर हालाँके हारून उनको पुकार रहे थे ऐ क़ौम तुमको फ़ितने मे मुबतेला कर

فُتِنْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِیْ وَ اَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ

दिया गया है और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरा इत्तेबा करो और मेरा हुकुम मानो उन्होने कहा

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَیْهِ عٰكِفِیْنَ حَتّٰى یَرْجِعَ اِلَیْنَا مُوْسٰى وَ

के हम गौशाला को पुजते रहेगें यहाँ तक मूसा वापस आ जाएं और इसी तरह आप भी कहते रहे जब

كَذٰلِكَ اَنْتَ لَمَّا رُفِعَتِ الْمَصَاحِفُ قُلْتَ یَا قَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ

क़ुआर्न बुलंद किया गया के ऐ क़ौम तुम लोग फ़ितने मे मुब्तेला हो तुम्हे धोका दिया गया है तो उन्होनें

بِهَا وَ خُدِعْتُمْ فَعَصَوْكَ وَ خَالَفُوْا عَلَیْكَ وَ اسْتَدْعَوْا نَصْبَ

आपकी नाफ़रमानी की और मुख़ालेफ़त की और हकमैन के मोअय्यन करनेकी ख़्वाहिश की तो आप

الْحَكَمَیْنِ فَاَبَیْتَ عَلَیْهِمْ وَ تَبَرَّاْتَ اِلَى اللّٰهِ مِنْ فِعْلِهِمْ وَ

ने इंकार किया और अल्लाह की जानिब बरात की उनके फ़ेस से और आपने उन्हीं के हवाले कर दिया

فَوَّضْتَهٗ اِلَیْهِمْ فَلَمَّاۤ اَسْفَرَ الْحَقُّ وَ سَفِهَ الْمُنْكَرُ وَ اعْتَرَفُوْا

पस जब हक ज़ाहिर हो गया और उनकी बेवक़ूफ़ी मालूम हो गई और उन्होंने लगाज़िश का एहतेराफ़

بِالزَّلَلِ وَ الْجَوْرِ عَنِ الْقَصْدِ اخْتَلَفُوْا مِنْ بَعْدِهٖ وَ اَلْزَمُوْكَ

कर लिया और ज़ुल्म का तो उसके बाद फिर इख़्तेलाफ़ किया और आप पर तहकीम की ग़लती का

عَلٰى سَفَهِ التَّحْكِیْمَ الَّذِیْۤ اَبَیْتَهٗ وَ اَحَبُّوْهُ وَ خَطَرْتَهٗ وَ اَبَاحُوْا

इलज़ाम था वो जबके आपने इंकार किया था और उन्होंने पसंद किया था आप ने उस से रोका था और

ذَمَنْبَهُمُ الَّذِیْ اقْتَرَفُوْهُ وَ اَنْتَ عَلٰی نَهْجِ بَصِیْرَةٍ وَ هُدًی وَّ هُمْ

उन्होंने अपने गुनाह को मुबाह समझ लिया था जब के आप बसीरत के तरीक़े और हिदायत की राह

عَلٰی سُنَنِ ضَلَالَةٍ وَّ عَمًی فَمَا زَالُوْا عَلَی النِّفَاقِ مُصَرِّیْنَ وَ فِی

पर थे और लोग गुम्राही के रासते और अंधेपन के तारीके पर थे वो लोग निफ़ाक़ पर इसरार करते रहे

الْغَیِّ مُتَرَدِّدِیْنَ حَتّٰی اَذَاقَهُمُ اللّٰهُ وَ بَالَ اَمْرِهِمْ فَاَمَاتَ

और गुम्राही मे पड़े रहे यहाँ तक के खुदा ने उनके बुरे फ़ेल का वबाल व अज़ाब चखा दिया और जिसने

بِسَیْفِكَ مَنْ عَانَدَكَ فَشَقِیَ وَ هَوٰی وَ اَحْیٰی بِحُجَّتِكَ مَنْ سَعَدَ

आप से दुश्मनी रख कर बदबख़्ती की वो आपकी तलवार से मारा गया और ज़िंदा रहा जो सआदत

فَهُدِیَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَیْكَ غَادِیَةً وَّ رَآئِحَةً وَّ عَاكِفَةً وَّ ذَاهِبَةً

मंद रह कर हिदायत पर बाक़ी रहा अल्लाह का दुरूद हो आप पर सुबह व शाम आग़ाज़ व अंजाम मे

فَمَا یُحِیْطُ الْمَادِحُ وَصْفَكَ وَ لَا یُحْبِطُ الطَّاعِنُ فَضْلَكَ اَنْتَ

हरकत व सुकून मे, पस कोई मदह करने वाला आपकी सिफ़त का एहाता नही कर सकता और न

اَحْسَنُ الْخَلْقِ عِبَادَةً وَّ اَخْلَصُهُمْ زَهَادَةً وَ اَذَبُّهُمْ عَنِ الدِّیْنِ

कोई ताना देनेवाला आपके फ़ज़्ल का, आप इबादत के एतेबार से बेहतरीन मख़लूक और ज़ोहद के

اَقَمْتَ حُدُوْدَ اللّٰهِ بِجُهْدِكَ وَ فَلَلْتَ عَسَاكِرَ الْمَارِقِیْنَ بِسَیْفِكَ

एतेबार से ख़ालिस तरीन और दीन से सबसे ज़्यादा देफ़ाअ करनेवाले हैं आपने अपनी कोशिश से हुदूदे

تُخْمِدُ لَهَبَ الْحُرُوْبِ بِبَنَانِكَ وَ تَهْتِكُ سُتُوْرَ الشُّبَهِ بِبَيَانِكَ

खुदा को क़ाएम किया और मारेक़ीन के लश्कर को शिकस्त दी अपनी तलवार से और अपनी क़ुदरत

وَ تَكْشِفُ لَبْسَ الْبَاطِلِ عَنْ صَرِيْحِ الْحَقِّ لَا تَأْخُذُكَ فِي اللهِ

से जंग के शोलों को ख़ामोश किया और अपने ब्यान से शुबह के परदों को चाक किया और बातिल

لَوْمَةُ لَآئِمٍ وَّ فِيْ مَدْحِ اللهِ تَعَالٰى لَكَ غِنًى عَنْ مَدْحِ الْمَادِحِيْنَ

के इश्तेबाह को हक़ की वज़ाहत से खोल दिया। आपने मलामत करने वाले की मलामत की राहे खुदा

وَ تَقْرِيْظِ الْوَاصِفِيْنَ قَالَ اللهُ تَعَالٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ

मे परवा नही की और फिर खुदा की मदह मे मदह करने वालो की मदह से इस्तेग़ना हैं तौसीफ़

صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ

करनेवालों के वस्फ़ से बेनियाज़ी है। खुदावन्दे आलम ने फ़रमाया है मोमिनो मे से कुछ ऐसे बन्दे हैं

مَنْ يَّنْتَظِرُ وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا وَ لَمَّا رَاَيْتَ اَنْ قَتَلْتَ

जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहेद को सच कर दिखाया। उनमे कुछ ऐसे हैं जो दुनिया से चले गए और

النَّاكِثِيْنَ وَ الْقَاسِطِيْنَ وَ الْمَارِقِيْنَ وَ صَدَقَكَ رَسُوْلُ اللهِ

कुछ इंतेज़ार कर रहे है और उन्हानें कोई तब्दीली नही की और जब आपने नाकिसीन, क़ासितीन और

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَعْدَهٗ فَاَوْفَيْتَ بِعَهْدِهٖ قُلْتَ اَمَا اِنَّ اَنْ

मारिक़ीन से जंग की और रसूले खुदा (स) ने आपसे किए हुए वादे को पूरा किया और आप ने अपने

تُخْضَبَ هٰذِهٖ مِنْ هٰذِهٖ اَمْ مَتٰى يُبْعَثُ اَشْقَاهَا وَاثِقًا بِاَنَّكَ

अहेद को वफ़ा करते हुए कहा के क्या अभी वक़्त नही आया है के मेरी दाढ़ी मेरे सर के ख़ून के ख़िज़ाब

عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ وَ بَصِيْرَةٍ مِّنْ اَمْرِكَ قَادِمٌ عَلَى اللّٰهِ

आलुदा हो कब बदबख़त तरीने उम्मत इस के लिए उठेगा आपको कमाले इत्मेनान था के आप अपने

مُسْتَبْشِرٌ بِبَيْعِكَ الَّذِىْ بَايَعْتَهٗ بِهٖ وَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

रब की तरफ़ से दलील और अपने अम्र की बसीरत पर है अल्लाह की बारगाह मे हाज़र होने वाले और

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ اَنْبِيَآئِكَ وَ اَوْصِيَآءِ اَنْبِيَآئِكَ بِجَمِيْعِ

अपनी तिजारत पर बसारत तलब करने वाले और ये बहुत बडी कामयाबी है। खुदाया लानत कर

لَعَنَاتِكَ وَ اَصْلِهِمْ حَرَّ نَارِكَ وَ الْعَنْ مَنْ غَصَبَ وَلِيَّكَ حَقَّهٗ وَ

अपने अंबीया के क़ातिलां पर औसिया के कातिलों पर मुकम्मल लानत और उनको जहन्नम की गर्मा

اَنْكَرَ عَهْدَهٗ وَ جَحَدَهٗ بَعْدَ الْيَقِيْنِ وَ الْاِقْرَارِ بِالْوِلَايَةِ لَهٗ يَوْمَ

मे डाल दे और लानत करे उसपर जिस ने तेरे वली का हक़ ग़ज़ब किया और उसके अहेद का इंकार

اَكْمَلْتَ لَهُ الدِّيْنَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ مَنْ

किया और यक़ीन के बाद और इक़रारे विलायत के बाद उनसे मुनहरिफ़ हुआ जिस राज़ तूने दीन को

ظَلَمَهٗ وَ اَشْيَاعَهُمْ وَ اَنْصَارَهُمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ ظَالِمِىْ

मुकम्मल किया खुदाया लानत कर अमीरल मोमिनीन (अ) के क़ातिल पर और उसपर जिसने ज़ुल्म

الْحُسَيْنِ وَ قَاتِلِيْهِ وَ الْمُتَابِعِيْنَ عَدُوَّهٗ وَ نَاصِرِيْهِ وَ الرَّاضِيْنَ

किया और उसके मानने वालां और नासिरों पर। खुदाया लानत कर हुसैन (अ) के ज़ालिमां और

بِقَتْلِهٖ وَ خَاذِلِيْهِ لَعْنًا وَّبِيْلًا اَللّٰهُمَّ الْعَنْ اَوَّلَ ظَالِمٍ ظَلَمَ

क़ातिलों और उनके दुश्मनों का इत्तेबा करनेवालों और मददगारों पर और उनके क़त्ल पर राज़ी

اٰلَ مُحَمَّدٍ وَ مَانِعِيْهِمْ حُقُوْقَهُمْ اَللّٰهُمَّ خُصَّ اَوَّلَ ظَالِمٍ وَ

रहनेवालों पर और उन्हें छोड़नेवालों पर सख़्त लानत। खुदाया आले मोहम्मद पर सबसे पहले ज़ुल्म

غَاصِبٍ لِاٰلِ مُحَمَّدٍ بِاللَّعْنِ وَ كُلَّ مُسْتَنٍّ بِمَا سَنَّ اِلٰى يَوْمِ

करनेवाले पर लानत कर और उनके हुक़ूक़ के रोकनेवालों पर। खुदाया आले मोहम्मद पर पहले

الْقِيٰمَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ عَلٰى عَلِيٍّ

ज़ालिम और ग़ासिब पर लानत मख़सूस कर और उसपर भी जो उसके तरीक़े पर चले राज़े क़यामत

سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ اٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ اجْعَلْنَا بِهِمْ مُتَمَسِّكِيْنَ وَ

तक। खुदाया दुरूद न्ज़िल फ़र्मा मोहम्मद पर जो ख़ातमुननबीन हैं और अली (अ) पर जो सय्यदुल

بِوِلَايَتِهِمْ مِنَ الْفَآئِزِيْنَ الْاٰمِنِيْنَ الَّذِيْنَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ

वसीईन हैं और उन की आले पाक पर और हम को उनसे मुतमस्सिक और उन की विलायत से

لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ.

मुतमस्सिक क़रार दे कर कामयाबी व महफ़ूज बना जिनके लिए कोई ख़ाफ़ और हुज़्न नही होता है।

लेखक: मैंने हदियतुज़ ज़ाएरीन में इस ज़ियारत की सनद की तरफ़ इशारा किया है और यह के इस ज़ियारत को रोज़ाना नज़दीक और दूर से पढ़ा जा सकता है और यह फ़ायदा ए जलीला है जिसे इबादत में रग़बत और शाहे विलायत की ज़ियारत का शाक़ रखने वाले ग़नीमत समझेंगे।

ईदे ग़दीर की एक और ज़ियारत

(३) वह ज़ियारत जो इक़्बाल में हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है। के जब ईदे ग़दीर के दिन अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की क़ब्र के पास हो तो क़ब्र के क़रीब जाए नमाज़ और दुआ के बाद और अगर दूसरे शहेर में हो तो आप की क़ब्र की तरफ़ इशारा कर के नमाज़ो दुआ के बाद यह ज़ियारत पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى وَلِيِّكَ وَ اَخِىْ نَبِيِّكَ وَ وَزِيْرِهٖ وَ حَبِيْبِهٖ وَ خَلِيْلِهٖ

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर तेरे वली पर और तेर नबी के भाई, वज़ीर, हबीब, ख़लील, उनके राज़दार

وَ مَوْضِعِ سِرِّهٖ وَ خِيَرَتِهٖ مِنْ اُسْرَتِهٖ وَ وَصِيِّهٖ وَ صَفْوَتِهٖ وَ

और उनके ख़ानदान मे सब उनके पसंदीदा पर और उनके वसी उनके चुनिंदा, मुख्य, अमीन, दोस्त,

خَالِصَتِهٖ وَ اَمِيْنِهٖ وَ وَلِيِّهٖ وَ اَشْرَفِ عِتْرَتِهِ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِهٖ وَ

उनके ख़ानदान के अफ़राद मे से सब से ज़्यादा इज़्ज़तवाले जो उनपर ईमान लाए उनकी ज़ुर्रियत के बाप

اَبِىْ ذُرِّيَّتِهٖ وَ بَابَ حِكْمَتِهٖ وَ النَّاطِقِ بِحُجَّتِهٖ وَ الدَّاعِىْ اِلٰى

और उनकी हिकमत के दरवाज़े पर और उनकी हुज्जत के साथ बोलने वाले पर और उनकी शरीयत की

شَرِيْعَتِهٖ وَ الْمَاضِىْ عَلٰى سُنَّتِهٖ وَ خَلِيْفَتِهٖ عَلٰى اُمَّتِهٖ سَيِّدِ

तरफ़ दावत देनेवाले पर और उनकी सुन्नत पर चलने वाले पर और उनकी उम्मत पर उनके ख़लीफ़ा

الْمُسْلِمِيْنَ وَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ قَائِدِ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ اَفْضَلَ

पर जो मुसलमानों के सरदार और मोमिनो के अमीर और नूरानी चेहरेवालों के काएद हैं इतनी बेहतरीन

مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ وَ اَصْفِيَائِكَ وَ اَوْصِيَآءِ

सलवात जो तूने अपनी मख़लूक़ मे से किसी एक पर और अपने मुनताख़िब बंदो पर और अपने अंबिया

اَنْبِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَشْهَدُ اَنَّهٗ قَدْ بَلَّغَ عَنْ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ

के औसिया पर भेजी है। खुदाया मै गवाही देता हूँ के उन्होंने वो सब पहुँचा दिया जो नबी (स) की जानिब

عَلَيْهِ وَ آلِهٖ مَا حُمِّلَ وَ رَعٰى مَا اسْتُحْفِظَ وَ حَفِظَ مَا اسْتُوْدِعَ وَ

से हवाला किया गया था और उसकी रेआयत की जिस की हिफ़ाज़त चाही गई थी और जो अमानत रखी

حَلَّلَ حَلَالَكَ وَ حَرَّمَ حَرَامَكَ وَ اَقَامَ اَحْكَامَكَ وَ دَعَا اِلٰى

गई थी उसकी हिफ़ाजत की और तेरे हलाल को हलाल और तेरे हराम को हराम क़रार दिया और तेरे

سَبِيْلِكَ وَوَالٰى اَوْلِيَآئَكَ وَعَادٰى اَعْدَآئَكَ وَجَاهَدَ النَّاكِثِيْنَ

अहकाम को क़ाएम किया और तेरी राह की तरफ़ बुलाया और तेरे दोस्तों के दोस्त रहे और तेरे दुश्मनों

عَنْ سَبِيْلِكَ وَ الْقَاسِطِيْنَ وَ الْمَارِقِيْنَ عَنْ اَمْرِكَ صَابِرًا

के दुश्मन रहे और बैयत के तोड़नेवालों उदूल करनेवालों और सरकशी करनेवालो से तेरी राह मे जंग

مُّحْتَسِبًا مُقْبِلًا غَيْرَ مُدْبِرٍ لَّا تَاْخُذُهٗ فِى اللّٰهِ لَوْمَةُ لَآئِمٍ حَتّٰى بَلَغَ

की सब्र व शकीबाई के साथ, तेरी तरफ़ आते हुए बग़ैर रूख फिराए हुए उन्होंने किसी मलामत गर की

فِي ذٰلِكَ الرِّضَا وَسَلَّمَ اِلَيْكَ الْقَضَآءَ وَعَبَدَكَ مُخْلِصًا وَّنَصَحَ

मलामत की राहे खुदा मे परवा न की यहाँ तक के वो उसमे मनिज़ले रज़ा तक पहुँचे और तेरे तरफ़ क़जा

لَكَ مُجْتَهِدًا حَتّٰى اَتَاهُ الْيَقِيْنُ فَقَبَضْتَهٗ اِلَيْكَ شَهِيْدًا سَعِيْدًا

को हवाले कर दिया और तेरी ख़ालिस इबादत की और तेरी राह मे बेहद कोशिश के साथ नसीहत की यहाँ

وَّلِيًّا تَقِيًّا رَضِيًّا زَكِيًّا هَادِيًا مَّهْدِيًّا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

तक के मौत आ गई तो तूने क़ब्जे रूह किया, शहीद, सईद, वली, मुत्तक़ी, राज़ी ब रेज़ाए खुदा, पाकीज़ा,

عَلَيْهِ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَنْبِيَآئِكَ وَاَصْفِيَآئِكَ يَا

हादी, मेहदी होने की हालत मे खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद पर और उन पर वो बेहतरीन दुरूद जो तूने

رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

अपने किसी नबी पर भेजा है और अपने किसी मुनतिख़ब बंदे पर भेजा है ऐ आलमीन के परवरदिगार।

लेखक: सय्यद ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में इस मुतबर्रिक दिन की एक और ज़ियारत भी नक़्ल की है। लेकिन इसका उस दिन से मख़सूस होना मालूम नहीं है। और वह दो ज़ियारतों से मुरक्कब है। जिसे अल्लामा मजलिसी ने तोहफ़ा की दूसरी और तीसरी ज़ियारत क़रार दिया है।

दूसरी ज़ियारते मख़्सूसा

पैग़ंबरे इस्लाम (स) की विलादत के दिन यह ज़ियारत शेख़ मुफ़ीद, शहीद और सय्यद इब्ने ताऊस ने नक़्ल की है। के हज़रते इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने १७ रबीउल अव्वल को अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत इस ज़ियारत के साथ की। और उसको सेक़ा जलील मोहम्मद बिन मुस्लिम सक़फी

को तालीम दे कर फ़रमाया: जब रौज़ए अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) में आओ तो गुस्ल करो, पाकीज़ा लिबास पहनो और अच्छी खुशबू से अपने को मोअत्तर करो और सुकूनो विकार के साथ चलो और जब बाबुस सलाम पर पहुँचो याने हरमे मुतहहर के दरवाज़े पर पहुँचो तो रू ब क़िबला खड़े हो कर, तैंतीस बार कहो:

اَللّٰہُ اَکْبَرُ

और फिर पढ़ो:

اَلسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی خِیَرَۃِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلٰی

सलाम हो रसूले खुदा पर, सलाम हो अल्लाह की बेहतरीन मख़लूक़ पर, सलाम हो बशारत

الْبَشِیْرِ النَّذِیْرِ السِّرَاجِ الْمُنِیْرِ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ اَلسَّلَامُ عَلٰی

देनेवाले डरानेवाले रौशन चिराग़ पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो, सलाम हो हर

الطُّھْرِ الطَّاھِرِ اَلسَّلَامُ عَلَی الْعَلَمِ الزَّاھِرِ اَلسَّلَامُ عَلَی الْمَنْصُوْرِ

गुनाह से पाक व पाकीजा मुनज़्ज़ पर, सलाम हो दरख़शंदा निशानी पर, सलाम हो मदद किए हुए

الْمُؤَیَّدِ اَلسَّلَامُ عَلٰی اَبِی الْقَاسِمِ مُحَمَّدٍ وَّ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ اَلسَّلَامُ

ताईद किए हुए पर, सलाम हो अबुल क़ासिम मोहम्मद पर, सलाम हो अल्लाह की रहमत और

عَلٰی اَنْبِیَآءِ اللّٰہِ الْمُرْسَلِیْنَ وَ عِبَادِ اللّٰہِ الصَّالِحِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰی

बरकात हो सलाम हो मुरसल नबियों और नेक बन्दां पर, सलाम हो अल्लाह के उन फ़रिशतो पर

مَلَآئِکَۃِ اللّٰہِ الْحَآفِّیْنَ بِھٰذَا الْحَرَمِ وَ بِھٰذَا الضَّرِیْحِ اللَّآئِذِیْنَ بِہٖ.

जो इस हरम के गरोह हैं और इस ज़रीहे मुबारक की पनाह हासिल करनेवाले हैं।

फिर क़ब्र के पास जाकर पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَصِيَّ الْاَوْصِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِمَادَ

सलाम हो आप पर ऐ वसीयों के वसी, सलाम आप पर ऐ मुत्तकीयों के निगेहबान, सलाम आप

الْاَتْقِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الْاَوْلِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ

पर ऐ वलियों के वली, सलाम आपपर ऐ शोहदा के सरदार, सलाम आप पर ऐ अल्लाह की

الشُّهَدَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اٰيَةَ اللهِ الْعُظْمٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

अज़ीम निशानी, सलाम हो आप पर ऐ अहले अबा के पाँचवे फ़र्द, सलाम आप पर ऐ रौशन

خَامِسَ اَهْلِ الْعَبَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَآئِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ

चेहरा वाले मुत्तकीयों के काएद, सलाम आप पर ऐ औलीया की पनाहगाह, सलाम आप पर

الْاَتْقِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِصْمَةَ الْاَوْلِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ऐ तौहीद का इक़रार करने वालों और नजीब अ□ाद की ज़ीनत, सलाम आप पर ऐ दोस्तों मे

زَيْنَ الْمُوَحِّدِيْنَ النُّجَبَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَالِصَ الْاَخِلَّآءِ

ख़ालिस दोस्त, सलाम आप पर ऐ अमीन इमामों के वालिदे बुज़ुर्गवार, सलाम आप पर ऐ हाज़े

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَالِدَ الْاَئِمَّةِ الْاُمَنَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ

कौसर के मालिक व साक़ी और लेवाए हम्द के उठानेवाले, सलाम आपपर ऐ जन्नत और

اَلْحَوْضِ وَ حَامِلَ اللِّوَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَسِيْمَ الْجَنَّةِ وَ لَظٰى

जहन्नम के तक़सीम करनेवाले। सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जिसके ज़रिए मक्के और मिना को

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ شُرِّفَتْ بِهٖ مَكَّةُ وَ مِنٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَحْرَ

शरफ़ दिया गया, सलाम आप पर ऐ उलूम के दरया, फ़क़ीरों की पनाहगाह, सलाम आप पर

الْعُلُوْمِ وَ كَنَفَ الْفُقَرَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ وُلِدَ فِي الْكَعْبَةِ وَ

जो काबे मे पैदा हुए और आसमान पर सय्यदतुन निसा से अक़्द किया गया और उसके गवाह

زُوِّجَ فِي السَّمَآءِ بِسَيِّدَةِ النِّسَآءِ وَ كَانَ شُهُوْدُهَا الْمَلَآئِكَةُ

मुनतिख़ब मलाएका समावात बने, सलाम आपपर ऐ चिराग़े रौशन, सलाम आप पर ऐ वो

اَلْاَصْفِيَآءُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مِصْبَاحَ الضِّيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

जिसको नबी ने मख़सूस किया बुज़ुर्ग अतीया (ख़िलाफ़त) से, सलाम आपपर ऐ वो ज़ात जो सो

مَنْ خَصَّهُ النَّبِيُّ بِجَزِيْلِ الْحِبَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ بَاتَ عَلٰى

गई ख़ातमुल अंबिया के बिसतर पर और उनको दुश्मनों के शर से अपने ज़रिए बचाया, सलाम

فِرَاشِ خَاتَمِ الْاَنْبِيَآءِ وَ وَقَاهُ بِنَفْسِهٖ شَرَّ الْاَعْدَآءِ اَلسَّلَامُ

आपपर ऐ वो जिसके लिए सूरज पलटा था के शमऊन अस्सफ़ा पर बरतरी हासिल हो जाए,

عَلَيْكَ يَا مَنْ رُدَّتْ لَهُ الشَّمْسُ فَسَامٰى شَمْعُوْنَ الصَّفَا اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ वो ज़ात जिसके नाम के ज़रिए और उसके भाई के नाम के ज़रिए खुदा ने

عَلَيْكَ يَا مَنْ اَنْجَى اللّٰهُ سَفِيْنَةَ نُوْحٍ بِاسْمِهٖ وَاسْمِ اَخِيْهِ حَيْثُ

नूह (अ) के साफ़िने को नजात दी जब पानी की मौजों मे तलातुम से ख़तरे मे पढ़ गया था, सलाम

الْتَطَمَ الْمَآءُ حَوْلَهَا وَ طَمٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ تَابَ اللّٰهُ بِهٖ وَ

हो आप पर जिसके और जिस के भाई के नाम के ज़रिए आदम की तौबा क़ुबूल की गई जब वो

بِاَخِيْهِ عَلٰٓى آدَمَ اِذْ غَوٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا فُلْكَ النَّجَاةِ الَّذِىْ مَنْ

तर्के औला मे मुब्तेला हो गए, सलाम आपपर ऐ नजात की कश्ती के जो उस पर सवार हुआ

رَكِبَهٗ نَجٰى وَ مَنْ تَاَخَّرَ عَنْهُ هَوٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ خَاطَبَ

नजात पा गया और जिसने अलैहदगी इख़्तियार की वो हलाक हो गया, सलाम आप पर जिसने

الثُّعْبَانَ وَ ذِئْبَ الْفَلَا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ رَحْمَةُ

अज़दहे और जंगल के भेड़ीये से गुफ़्तगु की, सलाम आपपर ऐ मोमीनो के अमीर और अल्लाह

اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى مَنْ كَفَرَ وَ اَنَابَ

की रहमत व बरकात हो, सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह की हुज्जत इंकार करने वालों और रूजुअ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ ذَوِى الْاَلْبَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَعْدِنَ

करने वालो पर, सलाम आप पर ऐ अक़्लमन्दों के इमाम, सलाम आप पर ऐ मादने हिकमत

الْحِكْمَةِ وَ فَصْلَ الْخِطَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ

और हक़ व बातिल के जुदा करनेवाले, सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जिस के पास इल्मे किताब है,

الْكِتَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مِيْزَانَ يَوْمِ الْحِسَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

सलाम आप पर ऐ रोज़े क़यामत के मिज़ान, सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जो हुकुम के ज़रिए हक़

يَا فَاصِلَ الْحُكْمِ النَّاطِقَ بِالصَّوَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

व बातिल को जुदा करने वाली है और राहे हक़ की तरफ़ दावत देनेवाली है, सलाम आप पर ऐ

الْمُتَصَدِّقُ بِالْخَاتَمِ فِي الْمِحْرَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كَفَى اللّٰهُ

मेहराब मे अंगूठी सदक़ा करनेवाले, सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जिस को खुदा ने मोमिनीन के

الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ بِهٖ يَوْمَ الْاَحْزَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ

लिए काफ़ी क़रार दिया राज़ जंगे ख़ंदक, सलाम आप पर जिस ने खुदा की ख़ालिस वहदानियत

اَخْلَصَ لِلّٰهِ الْوَحْدَانِيَّةَ وَ اَنَابَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَاتِلَ خَيْبَرَ وَ

तसलीम की और उसकी तरफ़ रूख़ किया, सलाम आप पर ऐ ख़ैबर के काफ़िरों को क़त्ल करने

قَالِعَ الْبَابِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ دَعَاهُ خَيْرُ الْاَنَامِ لِلْمَبِيْتِ عَلٰى

वाले और दरवाज़ए ख़ैबर को उखाडने वाले, सलाम आप पर जिस को मख़लूक मे बेहतरीन

فِرَاشِهٖ فَاَسْلَمَ نَفْسَهٗ لِلْمَنِيَّةِ وَ اَجَابَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ لَهٗ

रसूल ने अपने बिसतर पर सोने के लिए बुलाया तो उसने नफ़्स मौत के हवाले करने का अज़्म

طُوْبٰى وَ حُسْنُ مَاٰبٍ وَّ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ

कर लिया और लब्बैक कही, सलाम आप पर जिस के लिए तूबा और बेहतरीन मकाम है और

عِصْمَةِ الدِّيْنِ وَ يَا سَيِّدَ السَّادَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ

रहमते खुदा व बरकात हों, सलाम आप पर ऐ हिफ़ाज़ते दीन के निगेहबान और सय्यदों के

الْمُعْجِزَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ نَزَلَتْ فِيْ فَضْلِهٖ سُوْرَةُ الْعَادِيَاتِ

सरदार, सलाम आप पर ऐ साहेबे मोजेज़ात, सलाम आप पर जिस की फ़ज़ीलत पर सूरह वल

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كُتِبَ اسْمُهٗ فِي السَّمَآءِ عَلَى السُّرَادِقَاتِ

आदयात नाज़ल हुआ, सलाम आप पर जिस का नाम आसमान के परदों पर लिखा हुआ है,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُظْهِرَ الْعَجَآئِبِ وَ الْاٰيَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ अजाएबात और आयात के ज़ाहिर करने वाले, सलाम आप पर ऐ ग़ज़वात के

اَمِيْرَ الْغَزَوَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُخْبِرًا مِمَّا غَبَرَ وَ بِمَا هُوَ اٰتٍ

अमीर, सलाम आप पर ऐ सहरा के भेडिए से कलाम करन वाले, सलाम आप पर ऐ कंकरी पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُخَاطِبَ ذِئْبِ الْفَلَوَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

मोहर करनेवाले और मुश्किलात को दूर करनेवाले, सलाम आप पर ऐ वो जिस के जंग मे हमलों

خَاتِمَ الْحَصٰى وَ مُبَيِّنَ الْمُشْكِلَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عَجِبَتْ

पर मलाएकए समावात ने ताज्जुब किया, सलाम आप पर जिसने रसूल से नजवा किया और उस

مِنْ حَمَلَاتِهٖ فِي الْوَغَا مَلَآئِكَةُ السَّمٰوَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ

से पहले सदक़ा भी दिया, सलाम आप पर ऐ नेक और सरदार इमामों के वालिदे बुज़ुर्गवार और

نَّاجَى الرَّسُوْلَ فَقَدَّمَ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰهُ الصَّدَقَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

अल्लाह की रहमत व बरकात हो, सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा के बाद आने वाले (ख़लीफ़ा),

وَالِدَ الْاَئِمَّةِ الْبَرَرَةِ السَّادَاتِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

सलाम आप पर ऐ बेहतरीन मुवर्राrस के इल्मके वारिस और अल्लाह की रहमत व बरकात हो,

يَا تَالِيَ الْمَبْعُوْثِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِلْمِ خَيْرِ مَوْرُوْثٍ وَّ

सलाम आप पर ऐ वसीयों के सरदार, सलाम आप पर ऐ मुत्तक़ीयों के इमाम, सलाम आप पर

رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ

ग़मज़दों की पनाह, सलाम आप पर ऐ मोमिनो की पनाह, सलाम आप पर ऐ दलीलों के ज़ाहिर

عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْمُتَّقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا غِيَاثَ الْمَكْرُوْبِيْنَ

करने वाले, सलाम आप पर ऐ ताहा व यासीन, सलाम आप ऐ अल्लाह की मज़बूत रस्सी, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِصْمَةَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُظْهِرَ

आप पर ऐ हालते नमाज़ मे मिसकीन को अंगूठी सदक़ा मे देने वाले। सलाम आप पर ऐ दहाने

الْبَرَاهِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا طٰهٰ وَيٰسٓ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبْلَ اللهِ

चाह से वज़नी पत्थर उखाड़ने वाले और बेहतरीन चश्मे के ज़ाहिर करनेवाले, सलाम आप पर ऐ

الْمَتِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ تَصَدَّقَ فِيْ صَلٰوتِهٖ بِخَاتَمِهٖ عَلَى

खुदा की देखनेवाली आँख और उसका दस्ते करम और उसकी ज़ुबाने गोया तमाम मख़लूक़ मे,

الْمِسْكِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَالِعَ الصَّخْرَةِ عَنْ فَمِ الْقَلِيْبِ وَ مُظْهِرَ

सलाम आप पर ऐ नबियों के इल्म के वारिस और अव्वलीन और आख़िरीन के इल्म के अमीन

الْمَآءِ الْمَعِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَيْنَ اللهِ النَّاظِرَةَ وَ يَدَهُ الْبَاسِطَةَ

और लेवाए हम्द के उठाने वाले और अपने दोस्तों के साक़ी ख़ातमुन नबीईन के हौज़ से, सलाम

وَ لِسَانَهُ الْمُعَبِّرَ عَنْهُ فِي بَرِيَّتِهٖ اَجْمَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

आप पर ऐ दीन के सरदार और रौशन चेहरे वाले पाक लोगों के क़ाएद पसंदीदए खुदा आइम्मा

عِلْمِ النَّبِيِّيْنَ وَ مُسْتَوْدَعَ عِلْمِ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْآخِرِيْنَ وَ صَاحِبَ

के पिता और खुदा की रहमत और बरकात हो। सलाम खुदा के पसंदीदा नाम पे और उसके

لِوَآءِ الْحَمْدِ وَ سَاقِيَ اَوْلِيَآئِهٖ مِنْ حَوْضِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ

रौशन चेहरे और ताक़त वर पहलू व सीधे रास्ते पर, सलाम हो इमाम, मुत्तक़ी, मुख़लिस और

عَلَيْكَ يَا يَعْسُوْبَ الدِّيْنِ وَ قَآئِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَ وَالِدَ الْاَئِمَّةِ

पाकीज़ा पर, सलाम हो कोकबे दुररी पर, सलाम हो इमाम अबुल हसन अली पर और अल्लाह

الْمَرْضِيِّيْنَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلٰى اسْمِ اللهِ الرَّضِيِّ وَ

की रहमत और बरकात, सलाम हो आइम्मए हिदायत पर और तारीकियों के चिराग़, तक़वे के

وَجْهِهِ الْمُضِيْءِ وَ جَنْبِهِ الْقَوِيِّ وَ صِرَاطِهِ السَّوِيِّ اَلسَّلَامُ عَلٰى

निशानियों, हिदायत के मिनारों, अक़्ल वालों और तमाम मख़लूक़ की पनाह गाह, उरवा और

اَلْاِمَامِ التَّقِيِّ الْمُخْلِصِ الصَّفِيِّ اَلسَّلَامُ عَلَى الْكَوْكَبِ الدُّرِّيِّ

शक़ी और दुनियावालो पर हुज्ज़ते खुदा पर और खुदा की रहमत और बरकात हो। सलाम हो

اَلسَّلَامُ عَلَى الْاِمَامِ اَبِي الْحَسَنِ عَلِيٍّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

नुरों के नूर पर। और खुदाए जब्बार की हुज्ज़त पर और आइम्मए अतहार के वालिदे बुज़ुर्गवार

عَلٰى اَئِمَّةِ الْهُدٰى وَمَصَابِيْحِ الدُّجٰى وَاَعْلَامِ التُّقٰى وَمَنَارِ الْهُدٰى

पर और जन्नत व हजन्नम के तक़सीम करनेवाले पर, आसार के ख़बर देनेवाले पर, क़ाफ़िरो के

وَذَوِى النُّهٰى وَكَهْفِ الْوَرٰى وَالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَالْحُجَّةِ عَلٰى اَهْلِ

हलाक करने वाले पर, ख़ालिस शियों को नजात दिलाने वाले पर गुनाहों के बोझ से, सलाम हो

الدُّنْيَا وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلٰى نُوْرِ الْاَنْوَارِ وَحُجَّةِ الْجَبَّارِ

उस ज़ात पर जो मख़सूस हुई ताहेरा, तिक़या जनाबे मासूमा (स) से जो नबीए मुख़तार की दुख़तर

وَوَالِدِ الْاَئِمَّةِ الْاَطْهَارِ وَقَسِيْمِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ الْمُخْبِرِ عَنِ الْاٰثَارِ

हैं जो पैदा हुआ है ख़ानए काबा परदों वाले घर मे, जिस की तजवीज़ की गई आसमान मे पाकीज़ा

الْمُدَمِّرِ عَلَى الْكُفَّارِ مُسْتَنْقِذِ الشِّيْعَةِ الْمُخْلِصِيْنَ مِنْ عَظِيْمِ

राज़या मरिज़या और आइम्मए अतहार (अ) की वालेदा माजेदा से और अल्लाह की रहमत व

الْاَوْزَارِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَخْصُوْصِ بِالطَّاهِرَةِ التَّقِيَّةِ ابْنَةِ الْمُخْتَارِ

बरकात हों, सलाम हो ख़बरे बुज़ुर्ग पर जिसके बारे मे लोग इख़्तेलाफ़ करनेवाले हैं और उसी के

الْمَوْلُوْدِ فِي الْبَيْتِ ذِى الْاَسْتَارِ الْمُزَوَّجِ فِي السَّمَآءِ بِالْبَرَّةِ

पास पहुँचने वाले हैं और उनसे उनके बारे मे सवाल किया जाएगा, सलाम हो अल्लाह के रौशन

الطَّاهِرَةِ الرَّضِيَّةِ الْمَرْضِيَّةِ وَالِدَةِ الْاَئِمَّةِ الْاَطْهَارِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ

नूर पर और उसकी रौशनी पर जो चमक रही है और अल्लाह की रहमत व बरकात हों, सलाम

بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبَاِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ وَ

आप पर ऐ अल्लाह के वली और उस की हुज्जत और अल्लाह के ख़ालिस व ख़ास बंदे, मै गवाही

عَلَيْهِ يُعْرَضُوْنَ وَ عَنْهُ يُسْاَلُوْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى نُوْرِ اللهِ الْاَنْوَرِ وَ

देता हूँ के आप अल्लाह के ख़ालिस व ख़ास बंदे हैं, मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के वली

ضِيَآئِهِ الْاَزْهَرِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ وَ

और हुज्जत हैं आप ने राहे खुदा मे जिहाद किया जो जिहाद का हक़ था और रसूल अल्लाह (स) के

حُجَّتَهٗ وَ خَالِصَةَ اللهِ وَ خَاصَّتَهٗ اَشْهَدُ اَنَّكَ يَا وَلِيَّ اللهِ لَقَدْ جَاهَدْتَ

तरीक़े पर चले और हलाले खुदा को हलाल और हरामे खुदा को हराम रखा और अहकामे खुदा

فِي سَبِيْلِ اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ وَ اتَّبَعْتَ مِنْهَاجَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ

को नाफ़िज़ किया और नमाज़ को क़ाएम किया और ज़कात दी और अम्र बिल मारूफ़ किया

عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ حَلَّلْتَ حَلَالَ اللهِ وَ حَرَّمْتَ حَرَامَ اللهِ وَ شَرَعْتَ

और नही अनिल मुनकर किया और राहे खुदा मे सब्र व तहम्मुल के साथ जिहाद किया नसीहत

اَحْكَامَهٗ وَ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَ آتَيْتَ الزَّكَاةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

व कोशिश के साथ और खुदा के नज़दीक उसका अजरे अज़ीम के क़सद से यहाँ तक के मौत

نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتَ فِي سَبِيْلِ اللهِ صَابِرًا نَاصِحًا مُجْتَهِدًا

आ गई, पस खुदा की लानत हो उसपर जिसने आप को हक़ से रोका और आप को आप के

مُحْتَسِبًا عِنْدَ اللهِ عَظِيْمَ الْاَجْرِ حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ فَلَعَنَ اللهُ مَنْ

मकाम से दूर रखा और खुदा की लानत हो उस पर जिसे ये मालूम हुआ और वो उस पर राज़ी

دَفَعَكَ عَنْ حَقِّكَ وَ اَزَالَكَ عَنْ مَّقَامِكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ بَلَغَهٗ ذٰلِكَ

रहा। मै अल्लाह और उसके मलाएका और अंबिया और रसूलों को गवाह बनाता हूँ के मै उस

فَرَضِيَ بِهٖ اُشْهِدُ اللهَ وَ مَلَآئِكَتَهٗ وَ اَنْبِيَآئَهٗ وَ رُسُلَهٗ اَنِّيْ وَلِيٌّ لِّمَنْ

का दोस्त हूँ जिसने आप से दोस्ती की और उस का दुश्मन हूँ जो आपका दुश्मन है, सलाम हो

وَّالَاكَ وَ عَدُوٌّ لِّمَنْ عَادَاكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

आप पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हों।

फिर खुद को क़ब्र के मिलाकर बोसा दे और कहे:

اَشْهَدُ اَنَّكَ تَسْمَعُ كَلَامِيْ وَ تَشْهَدُ مَقَامِيْ وَ اَشْهَدُ لَكَ يَا وَلِيَّ

मै गवाही देता हूँ के आप मेरा कलाम सुन रहे हैं और मेरे क़याम का मोशहिदा कर रहे हैं और मै ऐ

اللّٰهِ بِالْبَلَاغِ وَالْاَدَاءِ يَا مَوْلَايَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ يَا اَمِيْنَ اللّٰهِ يَا وَلِيَّ

अल्लाह के वली आप के लिए पैग़ाम के पहुँचाने व अदा करने की गवाही देता हूँ ऐ मेरे मौला ऐ हुज्जते

اللّٰهِ اِنَّ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ ذُنُوْبًا قَدْ اَثْقَلَتْ ظَهْرِيْ وَ

खुदा ऐ अमीनुल्लाह ऐ वलीए खुदा मेरे व खुदाए अज़्ज़ो जल के दरमियान वो गुनाह हाएल हैं जिन्होने

مَنَعَتْنِيْ مِنَ الرُّقَادِ وَ ذِكْرُهَا يُقَلْقِلُ اَحْشَائِيْ وَ قَدْ هَرَبْتُ

मेरी पीठ को संगीन बना दिया है और मै भाग कर अल्लाह की तरफ़ और आप की तरफ़ आया हूँ तो

اِلَى اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ وَ اِلَيْكَ فَبِحَقِّ مَنِ ائْتَمَنَكَ عَلٰى سِرِّهٖ وَ

उस के हक़ का वास्ता जिस ने आप को अपने राज का अमीन बनाया और अपने ख़ल्क के अम्र

اسْتَرْعَاكَ اَمْرَ خَلْقِهٖ وَ قَرَنَ طَاعَتَكَ بِطَاعَتِهٖ وَ مُوَالَاتَكَ

का मोहाफ़ज़ क़रार दिया है और आप की इताअत को अपनी इताअत से मिला दिया है और आप

بِمُوَالَاتِهٖ كُنْ لِيْ اِلَى اللّٰهِ شَفِيْعًا وَ مِنَ النَّارِ مُجِيْرًا وَ عَلَى

की दोस्ती को अपनी दोस्ती से मिला दिया है आप मेरे लिस खुदा की बारगाह मे शिफ़ाअत करने

الدَّهْرِ ظَهِيْرًا.

वाले हो जाईए और आग से बचाने वाले हो जाईए और ज़माने पर मददगार हो जाईए।

फिर क़ब्र से लिपट कर बोसा दे और कहे:

يَا وَلِيَّ اللهِ يَا حُجَّةَ اللهِ يَا بَابَ حِطَّةِ اللهِ وَلِيُّكَ وَ زَآئِرُكَ وَ اللَّآئِذُ

ऐ खुदा के वली, ऐ हुज्जते खुदा और अल्लाह के बाबे हित्ता आप का दोस्त और ज़ाएर और आप की क़ब्र

بِقَبْرِكَ وَ النَّازِلُ بِفِنَآئِكَ وَ الْمُنِيْخُ رَحْلَهٗ فِيْ جِوَارِكَ يَسْئَلُكَ اَنْ

की पनाह मे आनेवाला और आप की बारगाह मे हाज़र होने वाला और आप के पड़ोस मे सामान उतार

تَشْفَعَ لَهٗ اِلَى اللهِ فِيْ قَضَآءِ حَاجَتِهٖ وَ نُجْحِ طَلِبَتِهٖ فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ

कर रखने वाला आप से सवाल करता है के आप उसके शफ़ी हो जाईए अल्लाह की तरफ़ उस की हाजत

فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللهِ الْجَاهَ الْعَظِيْمَ وَ الشَّفَاعَةَ الْمَقْبُوْلَةَ فَاجْعَلْنِيْ

बर आवरी और मतलब के पूरा करने के लिए दूनिया व आख़िरत मे इस लिए के खुदा के नज़दीक एक

يَا مَوْلَايَ مِنْ هَمِّكَ وَ اَدْخِلْنِيْ فِيْ حِزْبِكَ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى

अज़ीम मरतबा है और मक़बूले शिफ़ाअत है तो ऐ मेरे मौला मुझको अपने अहले इनायत मे दाख़िल

ضَجِيْعَيْكَ آدَمَ وَ نُوْحٍ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ عَلٰى وَلَدَيْكَ الْحَسَنِ وَ

कर लीजिए और अपने गरोह मे शामिल कर लीजिए और सलाम हो आप पर और आप के जवार के

الْحُسَيْنِ وَ عَلَى الْاَئِمَّةِ الطَّاهِرِيْنَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ

दो पैग़ंबरों आदम (अ) व नूह (अ) पर, सलाम हो आप पर और आप के फ़रज़ंदो पर इमाम हसनो हुसैन

بَرَكَاتُهٗ.

(अ) पर और आइम्मए ताहेरीन (अ) पर, आप की जुर्रायत के और अल्लाह की रहमत और बरकात हो।

फिर छः रकत नमाज़ पढ़े: दो रकात अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के लिए, दो रकत हज़रत आदम (अ.स.) के लिए और दो रकत जनाबे नूह (अ.स.) के लिए और खुदा से ज़्यादा से ज़्यादा क़ुबूलियत की दुआ करे।

साहेबे मज़ारे कबीर ने कहा है के इस ज़ियारत को १७ रबीउल अव्वल के तुलूए आफ़्ताब के क़रीब पढ़ना चाहिए और अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के यह बेहतरीन ज़ियारत है और मोतबर किताबों में मोतबर सनद के साथ मज़कूर है और बाज़ रिवायतों से ज़ाहिर होता है के उस दिन से मख़सूस नहीं है बल्के जिस समय भी इस ज़ियारत को पढ़े अच्छा है।

पैग़ंबरे इस्लाम (स) और अमीरूल मोमिनीन (अ)

लेखक: अगर कोई यह कहे पैग़ंबरे इस्लाम (स) के जन्मदिन और पैग़ंबरे इस्लाम (स) की वफ़ात के दिन ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) क्यों वारिद हुई है और रसूले खुदा (स) की ज़ियारत की रिवायत क्यों नहीं आई है?

जबकि मुनासिब यही था के उस दिन उन अव्क़ात में ज़ियारते रसूले अक्रम (स) पढ़ी जाए।

तो इसका जवाब यह है के यह उन दोनों बुज़ुर्गवार के मुकम्मल इत्तेसाल और दोनों के नूर के मुकम्मल इत्तेहाद की अलामत है। जिसने ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की उसने गोया रसूले अक्रम (स) की ज़ियारता की और इसकी गवाही क़ुराने मजीद की आयत में अनफुसना के शब्द ने दी है के जब आयते मुबाहेला में रसूले अक्रम (स) ने हज़रत अली (अ.स.) को अपना नफ़्स बनाया है और उनके अलावा ऐसा कोई नहीं था। ये बात आयते मुबाहिला मे मौजूद है:

फिर जब तुम्हारे पास इल्म आ चुका उसके बाद भी अगर तुमको कोई (नसरानी) ईसा के बारे मे हुज्जत करे तो कहो हम अपने बेटों को लाएँ तुम अपने बेटों को व हम अपनी औरतों को (बुलाएँ) व तुम अपनी औरतों को व हम अपनी जानों को (बुलाएँ) व तुम अपनी जानों को उसके बाद हम सब मिलकर खुदा की बारगाह मे गिड़गिड़ाएँ और झूठों पर लानत करें।

इस आयत मे अल्लाह ताला ने अली (अ.स.) को रसूले खुदा से जोड़ दिया है

और कहा: हमारे नफ़्स - अन्फ़ो-स-ना। इस सिलसिले मे शायर कहता है:
मुबाहिला की आयत मे अली चुनिंदा नबी के नफ़्स हैं. किसी और को ये रूतबा नही मिला
और मुख़तलिफ़ रिवायात में एक रिवायत शेख़ मोहम्मद बिन मशहदी की है के इमामे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के एक आराबी रसूले खुदा (स) की ाख़िदमत में हाज़र हुआ और अर्ज़ की के या रसूलल्लाह (स) मेरा घर आपके घर से दूर है और मैं आपकी ज़ियारत का मुश्ताक होता हूँ और आपकी ज़ियारत के लिए आता हूँ।
लेकिन आप से मुलाकात नहीं हो पाती है तो मैं इमाम अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) से मुलाक़ात करता हूँ। वह मुझे हदीस, मोआएæजा और नसीहत सुनाते हैं। और मैं आपका दीदार न होने की हसरत लेकर वापस चला जाता हूँ।
तो आपने फ़रमाया के जो व्यक्ति अली (अ.स.) की ज़ियारत करे उसने मेरी ज़ियारत की और जो अली को दोस्त रखता है वह मुझे दोस्त रखता है और जो उनको दुश्मन रखता है वह मेरा दुश्मन है। इस बात को मेरी तरफ़ से अपने क़ौम वालों तक पहुँचा देना और जो व्यक्ति उनकी ज़ियारत के लिए जाए वह मेरी ज़ियारत के लिए आया और मैं उसकी क़यामत के दिन जज़ा दूंगा। और जिब्रईल और सालेह मोमिनीन भी।
और मोतबर हदीस में इमाम सादिक़ (अ.स.) से मरवी है के जब ज़ियारत करे नजफ़ की और ज़ियारत करे जसदे आदम व बदने नूह (अ.स.) और जिस्मे अली इब्ने अबि तालिब (अ.स.) की तो गोया ज़ियारत करने वाला हो गया गुज़शता आबा-ए-केराम और हज़रत मोहम्मद (स) ख़ातेमुल अंबिया और अली ख़ैरूल अव्सीया का।
छटी ज़ियारत में गुज़र चुका है के क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) का रूख़ कर के कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاصَفْوَةَ اللهِ...

शेख़ जाबिर ने कसीदा-ए-अज़रिया की तज़मीन में हुब्बे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की तरफ़ इशारा करते हुए बेहतरीन अशआर कहे हैं:

فِيهِ لِلطُّهْرِ احْمَدِ اىُّ نَفْسٍ	فَاعْتَمِدْ لِلنَّبِيِّ اعْظَمَ رَمْسٍ
है जिस मे दफ़्न नफ़्से नबी हक का इंतेख़ाब	लाज़म है अब के रूख़ हो सूए क़ब्र बु तुराब,
فَتَوَاضَعْ فَثَمَّ دَارَةُ قُدْسٍ	اوْ تَرَىٰ الْعَرْشَ فِيهِ انْوَرَ شَمْسٍ
सर ख़म करो के है ये तक़द्दुस की वो जनाब	चमका है बहरे अर्श बरी जिस का आफ़ताब,
تَتَمَنَّى الافْلَاكُ لَثْمَ ثَرَاهَا	
बोसा की जिस के चश्मे फ़लक को है आरज।	

ज़ियारते शबो रोज़े मबअस

सत्ताइस रजब की रात और दिन की तीन ज़ियारतें हैं:
(१) ज़ियारते रजबिया जो इन शब्दों से आरंभ होती है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی اشْهَدَنَا مَشْهَدَ اوْلِيَائِهِ فِی رَجَبٍ...

माहे रजब के आमाल में गुज़र चुकी है। और वह ज़ियारत वह है जो माहे रजब में जुमला मशाहिदे मुशर्रफ़ा में पढ़ी जाती है। लेकिन साहेबे मज़ारे क़दीम और शेख़ मोहम्मद बिन मश्हदी ने उसको ज़ियारते मख़सूसा मबअस क़रार दिया है। और जब इस ज़ियारत को पढ़े तो फ़रमाया है के इसके बाद दो रकत नमाज़े ज़ियारत बजा लाए। और जो चाहे दुआ करे।
(२) अस सलामो अला अबिल आइम्मा व मादनिन नुबुव्वह है।
इमामों के पिता व नबुव्वत के मादन पर सलाम हो
जिसको अल्लामा मजलिसी ने तोहफ़ा की सातवीं ज़ियारत क़रार दिया है। और साहेबे मज़ारे क़दीम ने कहा है के वह मख़सूस है सत्ताईस रजब की शब से जैसा के हमने हदियतुज़ ज़ाएरीन में ज़िक्र किया है।
(३) वह ज़ियारत जिसे शेख़ मुफ़ीद, सय्यद और शहीद ने नक़्ल किया है के जब शबे मबअस या मबअस के दिन अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत करना चाहे तो क़ब्र के सामने दरे रौज़ा शरीफ़ पर खड़ा होकर यूं कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है वो एक है उस का कोई शरीक नही है

عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ وَ اَنَّ عَلِيَّ بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبْدُ اللّٰهِ

और मै गवाही देता हूँ के मुहम्मद उस के बन्दे और रसूल हैं और अली बिन अबि तालिब (अ)

وَ اَخُوْ رَسُوْلِهٖ وَ اَنَّ الْاَئِمَّةَ الطَّاهِرِيْنَ مِنْ وُلْدِهٖ حُجَجُ اللّٰهِ عَلٰى

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल के भाई हैं और उन की औलाद मे आइम्मए ताहेरीन अल्लाह

خَلْقِهٖ.

की हुज्जत हैं उसकी मख़लूक़ पर।

फिर अंदर दाख़िल हो कर क़ब्रे इमाम (अ.स.) के पास खड़े होकर क़ब्र की तरफ़ रूख़ कर के पुश्त ब क़िबला होकर सौ बार तकबीर कहे और पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ آدَمَ خَلِيْفَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के ख़लीफ़ा आदम के वारिस, सलाम आप पर ऐ नुह सफ़ी अल्लाह के

وَارِثَ نُوْحٍ صِفْوَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ

वारिस, सलाम हो आप पर ऐ ख़लीले खुदा इब्राहीम के वारिस, सलाम आप पर ऐ कलीमे खुदा मूसा

خَلِيْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

के वारिस, सलाम आप पर ऐ रूहे खुदा ईसा के वारिस, सलाम आप पर ऐ अल्लाह के रसूलों के

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسىٰ رُوْحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

सरदार मोहम्मद के वारिस, सलाम आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन, सलाम आप पर ऐ मुत्तिक़या के

مُحَمَّدٍ سَيِّدِ رُسُلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

इमाम, सलाम आप पर ऐ वसीयों के सरदार, सलाम आप पर ऐ आलमीन के परवरदिगार के रसूल

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْمُتَّقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ

के वसी स्रालाम आप पर ऐ अव्वलीन व आख़िरीन के इल्म के वारिस, सलाम आप पर ऐ ख़बरे

الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَصِيَّ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अज़ीम, सलाम आप पर ऐ सिराते मुस्तक़ीम, सलाम आप पर ऐ पाकीज़ा व मुनजह और करम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِلْمِ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ اَلسَّلَامُ

वाले, सलाम आप पर ऐ वसी, मुत्तक़ी, सलाम आप पर ऐ पाकीज़ा सीरत पसंदिदाए खुदा, सलाम

عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبَاُ الْعَظِيْمُ اَلسّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الصِّرَاطُ

आप पर ऐ रौशन चाँद, सलाम आप पर ऐ सिद्दीक़े अकबर, सलाम आप पर ऐ फ़ारूक़े आज़म,

الْمُسْتَقِيْمُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُهَذَّبُ الْكَرِيْمُ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ रौशन चिराग़, सलाम आप पर ऐ हिदायत के इमाम, सलाम आप पर ऐ तक़वा

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ التَّقِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ

की निशानी, सलाम आप पर ऐ अल्लाह की बुज़ुर्ग मोहब्बत सलाम आप पर ऐ अल्लाह के ख़ास व

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْبَدْرُ الْمُضِيْءُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

ख़ालिस बन्दे और अल्लाह के अमीन व बरगुज़ीदा और अल्लाह का दरवाज़ा और हुज्जत और हुकुमे

الصِّدِّيْقُ الْاَكْبَرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْفَارُوْقُ الْاَعْظَمُ

खुदा और उस के राज़ का मादन और इल्मे खुदा के मख़ज़न और अल्लाह के सफ़ीर उस की मख़लूक़

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السِّرَاجُ الْمُنِيْرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ

की तरफ़ मै गवाही देता हूँ के आपने नमाज़ क़ाएम की, ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़

الْهُدٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلَمَ التُّقٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ

और नही अनिल मुनकर किया और रसूल का इत्तेबा किया और क़ुआर्न की तिलावत की जो हक़्क़े

اللهِ الْكُبْرٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَآصَّةَ اللهِ وَ خَالِصَتَهٗ وَ اَمِيْنَ

तिलावत था और अल्लाह की तरफ़ के पैग़ाम को पहुँचाया और अहदे इलाही को पूरा किया और

اللهِ وَ صَفْوَتَهٗ وَ بَابَ اللهِ وَ حُجَّتَهٗ وَ مَعْدِنَ حُكْمِ اللهِ وَ سِرِّهٖ وَ

आप के ज़रिए कलमाते इलाही मुकम्मल हुए और राहे खुदा मे जिहाद किया जो हक़्क़े जिहाद था

عَيْبَةَ عِلْمِ اللهِ وَ خَازِنَهٗ وَ سَفِيْرَ اللهِ فِيْ خَلْقِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ

और अल्लाह व रसूल के लिए नसीहत की अल्लाह हा दुरूद हो रसूल ओर आले रसूल पर और अपने

اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ

नफ़्स को सब्र व तहम्मुल के साथ दीने खुदा के लिए जिहाद करते हुए पेश कर दिया रसूल अल्लाह

عَنِ الْمُنْكَرِ وَ اتَّبَعْتَ الرَّسُوْلَ وَ تَلَوْتَ الْكِتَابَ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ

को बचाने के लिए अल्लाह से जज़ा तलब करते हुए और जिस का वादा खुदा ने किया है उसकी तरफ़

وَ بَلَّغْتَ عَنِ اللّٰهِ وَ وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ تَمَّتْ بِكَ كَلِمَاتُ اللّٰهِ وَ

राग़ाब होते हुए और जिस दीन पर थे उसी पर ज़िन्दगी गुज़ार दी शहीद, शाहीद और मशहुद होने की

جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ وَ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ

हालत मे तो खुदा आप को जज़ा दे अपने रसूल की तरफ़ से और इस्लाम की तरफ़ से ओर अहले

عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ جُدْتَ بِنَفْسِكَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا مُجَاهِدًا عَنْ دِيْنِ

इस्लाम की तरफ़ से सिद्दिक़ीन की बेहतरीन जज़ा, मै गवाही देता हूँ के आप इस्लाम के लेहाज़ से

اللّٰهِ مُوْقِيًا لِرَسُوْلِ اللّٰهِ طَالِبًا مَا عِنْدَ اللّٰهِ رَاغِبًا فِيْمَا وَعَدَ اللّٰهُ

सब से साबिक़ थे और ईमान के लेहाज़ से सब से मुख़लिस और यक़ीन मे सब से मज़बूत और

وَ مَضَيْتَ لِلَّذِيْ كُنْتَ عَلَيْهِ شَهِيْدًا وَ شَاهِدًا وَ مَشْهُوْدًا

अल्लाह का सब से ज़्यादा ख़ाफ़ रखने वाले और सब से ज़्यादा मुसीबत वाले और रसूले खुदा (स)

فَجَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ رَسُوْلِهٖ وَ عَنِ الْاِسْلَامِ وَ اَهْلِهٖ مِنْ صِدِّيْقٍ

के सब से ज़्यादा मराक़ब और मनाक़ब मे सबसे अफ़ज़ल और शराफ़त मे सब से ज़्यादा और दरजे

اَفْضَلَ الْجَزَآءِ اَشْهَدُ اَنَّكَ كُنْتَ اَوَّلَ الْقَوْمِ اِسْلَامًا وَ

मे सब से बुलंद तर और मनिज़लत मे सब से ज़्यादा शरफ़ वाले और सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाले।

اَخْلَصَهُمْ اِيْمَانًا وَ اَشَدَّهُمْ يَقِيْنًا وَّ اَخْوَفَهُمْ لِلّٰهِ وَ اَعْظَمَهُمْ

आप क़वी रहे जब सब कमजोर रहे और रसूल (स) के तरीक़ा से वाबस्ता रहे और मै गवाही देता

عَنَآءً وَ اَحْوَطَهُمْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ

हूँ के आप रसूल के ख़लीफ़ए बरहक हैं और उसमे कोई निज़ा नही मुनाफ़ेक़ीन की ना पसंदीदगी

اَفْضَلَهُمْ مَنَاقِبَ وَ اَكْثَرَهُمْ سَوَابِقَ وَ اَرْفَعَهُمْ دَرَجَةً وَ

और काफ़िरां के ग़ैज़ और फ़ासिक़ो के कीने के बा वजूद और आप अम्रे दीन के साथ क़ाएम रहे

اَشْرَفَهُمْ مَنْزِلَةً وَ اَكْرَمَهُمْ عَلَيْهِ فَقَوِيْتَ حِيْنَ وَهَنُوْا وَ

जब लोग सुस्त पढ़ गए और उस वक़्त बोले जब लोग गूंगे हो गए और नूरे खुदा के साथ चलते रहे

لَزِمْتَ مِنْهَاجَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

जब लोग रूक गए जिस ने आप का इत्तेबा किया उसने हिदायत पाई। आप कलाम मे सब से पहले

كُنْتَ خَلِيْفَتَهٗ حَقًّا لَمْ تُنَازَعْ بِرَغْمِ الْمُنَافِقِيْنَ وَ غَيْظِ

और मारकों मे सबसे सख़्त, गुफ़्तुगू मे सब से सही और रो मे सबसे मज़बूत और दिल के सब से

الْكَافِرِيْنَ وَ ضَغَنِ الْفَاسِقِيْنَ وَ قُمْتَ بِالْاَمْرِ حِيْنَ فَشِلُوْا وَ

बहादुर, यक़ीन मे सब से ज़्यादा और अमल मे सबसे अच्छे और उमूर के सब से ज़्यादा जानने वाले

نَطَقْتَ حِيْنَ تَتَعْتَعُوْا وَ مَضَيْتَ بِنُوْرِ اللّٰهِ اِذْ وَقَفُوْا فَمَنِ

थे आप मोमिनो के लिए रहेम दिल बाप थे जब वो आप के अयाल मे शामिल हो गए तो आपने उन

اتَّبَعَكَ فَقَدِ اهْتَدٰى كُنْتَ اَوَّلَهُمْ كَلَامًا وَ اَشَدَّهُمْ خِصَامًا

बोझा को उठा लिया जिसको उठाने की उन मे तवानाई न थी और आप ने उस को महफ़ूज़ किया

وَ اَصْوَبَهُمْ مَنْطِقًا وَ اَسَدَّهُمْ رَأْيًا وَ اَشْجَعَهُمْ قَلْبًا وَّ اَكْثَرَهُمْ

जिस को उन्हाने ज़ाया किया और आपने उसकी रेआयत की जिसको उन्होने छोड़ दिया आप डटे

يَقِيْنًا وَّ اَحْسَنَهُمْ عَمَلًا وَّ اَعْرَفَهُمْ بِالْاُمُوْرِ كُنْتَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

रहे जब लोग डरते रहे और आपने बुलंदीए हिम्मत दिखाई जब लोग जज़अ व फ़ज़अ कर रहे थे और

اَبًا رَحِيْمًا اِذْ صَارُوْا عَلَيْكَ عِيَالًا فَحَمَلْتَ اَثْقَالَ مَا عَنْهُ ضَعُفُوْا

आप ने सब्र किया जब लोगों ने फ़रयाद की आप काफ़रों के लिए सख़्त अज़ाब और दर्द नाक सज़ा

وَ حَفِظْتَ مَآ اَضَاعُوْا وَ رَعَيْتَ مَا اَهْمَلُوْا وَ شَمَّرْتَ اِذْ جَبَنُوْا وَ

थे और मोमिनो के लिए बारिश, हरयाली और इल्म थे आप की हुज्जत कुंद नही हुई और उस पहाड़

عَلَوْتَ اِذْ هَلِعُوْا وَ صَبَرْتَ اِذْ جَزِعُوْا كُنْتَ عَلَى الْكَافِرِيْنَ

की तरह थे जिसको तेज हवा हिला नही सकती और आँधीयाँ उस को ज़ाएल नही कर सकतीं आप

عَذَابًا صَبًّا وَّ غِلْظَةً وَّ غَيْظًا وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ غَيْثًا وَّ خِصْبًا وَّ عِلْمًا

वैसे कवी बदन थे और खुदा के नज़दीक अज़ीम थे, ज़मीन मे कबीर थे और आसमान मे जलील थे

لَمْ تُفْلَلْ حُجَّتُكَ وَ لَمْ يَزِغْ قَلْبُكَ وَ لَمْ تَضْعُفْ بَصِيْرَتُكَ وَ لَمْ

आप के बारे मे किसी के लिए नुकता चिनी का मकाम नही है और न किसी कहने वाले के लिए

تَجْبُنْ نَفْسُكَ كُنْتَ كَالْجَبَلِ لَا تُحَرِّكُهُ الْعَوَاصِفُ وَلَا تُزِيْلُهُ

इशारा है और आप के बारे मे किसी मख़लूक़ को ग़लत तमा है और न किसी के लिए कोई बेजा

الْقَوَاصِفُ كُنْتَ كَمَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ

उम्मीद है। आपके नज़दीक हर ज़ईफ़ व कमज़ोर व ज़लील क़वी और अज़ीज़ रहता है यहाँ तक के

قَوِيًّا فِيْ بَدَنِكَ مُتَوَاضِعًا فِيْ نَفْسِكَ عَظِيْمًا عِنْدَ اللهِ كَبِيْرًا فِيْ

आप इस के लिए उसका हक़ ले लें और क़वी इज़्ज़त दार आप के नज़दीक कमज़ोर होता है यहाँ

الْاَرْضِ جَلِيْلًا فِيْ السَّمَآءِ لَمْ يَكُنْ لِاَحَدٍ فِيْكَ مَهْمَزٌ وَّ لَا

तक के आप उस से हक़ ले लें। क़रीब और दूर आप के नज़दीक बराबर है। आपकी शाने हक,

لِقَآئِلٍ فِيْكَ مَغْمَزٌ وَّ لَا لِخَلْقٍ فِيْكَ مَطْمَعٌ وَّ لَا لِاَحَدٍ عِنْدَكَ

सदाक़त और रिफ़ाक़त है और आप का क़ौल हुकुम और हतमी है और आप की राए इल्म और

هَوَادَةٌ يُوْجَدُ الضَّعِيْفُ الذَّلِيْلُ عِنْدَكَ قَوِيًّا عَزِيْزًا حَتّٰى تَاْخُذَ

हज़्म है आप के ज़रिए दीन इसतवार हुआ आप के ज़रिए अम्रे सख़त आसान हुआ आप के ज़रिए

لَهٗ بِحَقِّهٖ وَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ عِنْدَكَ ضَعِيْفًا حَتّٰى تَاْخُذَ مِنْهُ الْحَقَّ

आग बुझाई गई और आप के ज़रिए ईमान क़वी हुआ आप के ज़रिए इस्लाम मज़बूत हुआ व आप

الْقَرِيْبُ وَ الْبَعِيْدُ عِنْدَكَ فِيْ ذٰلِكَ سَوَآءٌ شَاْنُكَ الْحَقُّ وَ

की मुसीबत ने मख़लूक़ को बेजान कर दिया पस हम खुदा के लिए हैं व उसी की तरफ़ लौटेंगे। खुदा

الصِّدْقُ وَ الرِّفْقُ وَ قَوْلُكَ حُكْمٌ وَ حَتْمٌ وَ رَأْيُكَ عِلْمٌ وَ حَزْمٌ

की लानत हो उसपर जिसने आपको क़त्ल किया व खुदा की लानत हो उसपर जिसने आपकी

اِعْتَدَلَ بِكَ الدِّيْنُ وَسَهُلَ بِكَ الْعَسِيْرُ وَ اُطْفِئَتْ بِكَ النِّيْرَانُ

मुख़ालेफ़त की व खुदा की लानत हो आप पर इफ़तेरा करनेवाले पर ओर खुदा की लानत हो आप

وَ قَوِيَ بِكَ الْاِيْمَانُ وَ ثَبَتَ بِكَ الْاِسْلَامُ وَ هَدَّتْ مُصِيْبَتُكَ

पर ज़ुल्म करने वाले, आपके हक़ के ग़ाज़ब करनेवाले पर, खुदा की लानत हो उसपर जिस तक ये

الْاَنَامَ فَاِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ

बात पहुँची और वो उसपर राज़ी रहा हम उनसे खुदा की तरफ़ बराअत चाहते हैं। खुदा की लानत हो

اللّٰهُ مَنْ خَالَفَكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنِ افْتَرٰى عَلَيْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ

उस उम्मत पर जिस ने आपकी मुख़ालेफ़त की, इंकार किया आप की विलायत का और आप पर

ظَلَمَكَ وَ غَصَبَكَ حَقَّكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ بَلَغَهٗ ذٰلِكَ فَرَضِيَ بِهٖ

हम्द किया, आप को क़त्ल किया और आप से रोका और आपको बे यार करने की कोशिश की

اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ بُرَآءُ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً خَالَفَتْكَ وَ جَحَدَتْ وِلَايَتَكَ

हम्द खुदा के लिए है जिसने जहन्नम को उनका ठिकाना बनाया और वो बरतरीन विर्द की जगह है मै

وَ تَظَاهَرَتْ عَلَيْكَ وَ قَتَلَتْكَ وَ حَادَتْ عَنْكَ وَ خَذَلَتْكَ اَلْحَمْدُ

गवाही देता हूँ आप के लिए ऐ वलीए खुदा वली रसूल खुदा (स) तबलीग़े दीन करने और अमानते

لِلّٰهِ الَّذِیْ جَعَلَ النَّارَ مَثْوٰیهُمْ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ اَشْهَدُ

दीन के अदा करने की और मै गवाही देता हूँ के आप खुदा के दोस्त और उसका दरवाज़ा हैं और

لَكَ یَا وَلِیَّ اللّٰهِ وَ وَلِیَّ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ بِالْبَلَاغِ وَ

आप खुदा का पहलू और वज्हे खुदा हैं जिस से आया जाता है और आप राहे खुदा हैं और आप खुदा

الْاَدَآءِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ حَبِیْبُ اللّٰهِ وَ بَابُهٗ وَ اَنَّكَ جَنْبُ اللّٰهِ وَ

के बन्दे और रसूल खुदा के भाई हैं। मै आप के पास आया हूँ ज़ियारत के लिए आप की अज़ीम

وَجْهُهُ الَّذِیْ مِنْهُ یُؤْتٰى وَ اَنَّكَ سَبِیْلُ اللّٰهِ وَ اَنَّكَ عَبْدُ اللّٰهِ وَ اَخُوْ

हालत और मनज़ेलत की वजह से खुदा और रसूले खुदा के नज़दीक। खुदा से क़ुर्बत चाहते हुए आप

رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ اَتَیْتُكَ زَآئِرًا لِعَظِیْمِ حَالِكَ وَ

की ज़ियारत के ज़रिए। आप की तरफ़ शिफ़ाअत की रग़बत लिए। मै आपकी शिफ़ाअत के ज़रिए

مَنْزِلَتِكَ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ رَسُوْلِهٖ مُتَقَرِّبًا اِلَى اللّٰهِ بِزِیَارَتِكَ

अपनी गुलू ख़लासी चाहता हूँ आपके ज़रिए से जहन्नम से पनाह चाहते हुए अपने गुनाहा ंसे भागते

رَاغِبًا اِلَیْكَ فِی الشَّفَاعَةِ اَبْتَغِیْ بِشَفَاعَتِكَ خَلَاصَ نَفْسِیْ

हुए जिस ने मेरी पीठ को संगीन कर दिया है आपकी तरफ फ़रयाद करते हुए अपने रब की रहमत

مُتَعَوِّذًا بِكَ مِنَ النَّارِ هَارِبًا مِنْ ذُنُوْبِیَ الَّتِیْ احْتَطَبْتُهَا عَلٰى

की उममीद लगाए। मै आपके पास आया हूँ के ऐ मेरे मौला आप के ज़रिए शिफ़ाअत तलब करूँ

ظَهْرِیْ فَزِعًا اِلَیْكَ رَجَآءَ رَحْمَةِ رَبِّیْ اَتَیْتُكَ اَسْتَشْفِعُ بِكَ یَا

खुदा की तरफ़ और आप के ज़रिए उससे तक़रूब हासिल करूँ ताके वो आपके वास्ते से मेरी हाजत

مَوْلَایَ اِلَی اللّٰهِ وَ اَتَقَرَّبُ بِكَ اِلَیْهِ لِیَقْضِیَ بِكَ حَوَآئِجِیْ فَاشْفَعْ

को पूरा कर दे तो आप ऐ अमीरल मोमिनीन मेरे लिए खुदा की तरफ़ शफ़ा हो जाएँ मै खुदा का बन्दा

یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ فَاِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ وَ مَوْلَاكَ وَ زَآئِرُكَ وَ لَكَ عِنْدَ

आपका दोस्त और ज़ाएर हूँ और खुदा के नज़दीक आपके लिए मशहूर मकाम और अज़ीम मरतबा

اللّٰهِ الْمَقَامُ الْمَعْلُوْمُ وَ الْجَاهُ الْعَظِیْمُ وَ الشَّاْنُ الْكَبِیْرُ وَ

और बड़ी शान और मक़बूल शिफ़ाअत है खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

الشَّفَاعَةُ الْمَقْبُوْلَةُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ صَلِّ

और दुरूद नाज़ल कर अपने बन्दे और अपने कामिल अमीन और अपने रिश्ते मोहकम और अपने

عَلٰی عَبْدِكَ وَ اَمِیْنِكَ الْاَوْفٰی وَ عُرْوَتِكَ الْوُثْقٰی وَ یَدِكَ الْعُلْیَا

बुलंद हाथ और कलमा हुसना और तमाम मख़लूक़ात के लिए अपनी हुज्जत पर अपने सिद्दीक़े

وَ كَلِمَتِكَ الْحُسْنٰی وَ حُجَّتِكَ عَلَی الْوَرٰی وَ صِدِّیْقِكَ الْاَكْبَرِ

अकबर और वसीयों के सरदार पर वलीयों के रूक्र और बरगुज़ीदा लोगों के सुतून, मोमिनो के

سَیِّدِ الْاَوْصِیَآءِ وَ رُكْنِ الْاَوْلِیَآءِ وَ عِمَادِ الْاَصْفِیَآءِ اَمِیْرِ

अमीर और मुत्तिक़यो के सरदार और सिद्दीक़ीन के रहनुमा और सालेहीन के इमाम पर, जो लगिज़शों

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَعْسُوْبِ الْمُتَّقِيْنَ وَ قُدْوَةِ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ اِمَامِ

से मासूम और ख़लल से दूर और अैब से पाकीज़ा और शक से मुनज़्ज़ह हैं। जो तेरे नबी (स) के भाई

الصَّالِحِيْنَ الْمَعْصُوْمِ مِنَ الزَّلَلِ وَ الْمَفْطُوْمِ مِنَ الْخَلَلِ وَ

और तेरे रसूल के वसी हैं जो उन के बिस्तर पर सोनेवाले और अपने नफ़्स से उनका दिफ़ा करने

الْمُهَذَّبِ مِنَ الْعَيْبِ وَ الْمُطَهَّرِ مِنَ الرَّيْبِ اَخِىْ نَبِيِّكَ وَ وَصِيِّ

वाले ओर उन से परेशानी और ग़म को दूर करनेवाले हैं जिस को तूने उन की नबुव्वत की तलवार

رَسُوْلِكَ وَ الْبَآئِتِ عَلٰى فِرَاشِهٖ وَ الْمُوَاسِىْ لَهٗ بِنَفْسِهٖ وَ كَاشِفِ

और उनकी रिसालत का मोज़ेजा और उनकी हुज्जत के लिए वाज़ेह दलील और उनके इलम का

الْكَرْبِ عَنْ وَجْهِهِ الَّذِىْ جَعَلْتَهٗ سَيْفًا لِنُبُوَّتِهٖ وَ مُعْجِزًا

उठाने वाला और जान का मोहाफ़ज़ और उम्मत का हादी और उनका क़ुव्वते बाज़ू और ताजे सर

لِرِسَالَتِهٖ وَ دَلَالَةً وَاضِحَةً لِحُجَّتِهٖ وَ حَامِلًا لِرَايَتِهٖ وَ وِقَايَةً

और बाबे नुस्रत और कामयाबी की कलीद क़रार दिया है यहाँ तक के उसने शिर्क के लश्कर को

لِمُهْجَتِهٖ وَ هَادِيًا لِاُمَّتِهٖ وَ يَدًا لِبَاْسِهٖ وَ تَاجًا لِرَاْسِهٖ وَ بَابًا لِنَصْرِهٖ

शिकस्त दे दी तेरी मदद से और कुफ़्र के सिपाहियों को नाबूद कर दिया तेरे हुक्म से और तेरी मर्ज़ा

وَ مِفْتَاحًا لِظَفَرِهٖ حَتّٰى هَزَمَ جُنُوْدَ الشِّرْكِ بِاَيْدِيْكَ وَ اَبَادَ

के लिए नफ़्स को क़ुर्बान कर दिया और तेरे रसूल की मर्ज़ा की लिए और नफ़्स को वक़्फ़ कर दिया

عَسَاكِرَ الْكُفْرِ بِاَمْرِكَ وَ بَذَلَ نَفْسَهٗ فِيْ مَرْضَاتِكَ وَ مَرْضَاةِ

उसकी इताअत के लिए और मुसीबतों के लिए सिपर बना दिया यहाँ तक के रसूल अल्लाह (स) ने

رَسُوْلِكَ وَ جَعَلَهَا وَقْفًا عَلٰى طَاعَتِهٖ وَ مَجِنًّا دُوْنَ نَكْبَتِهٖ حَتّٰى

उनके हाथों मे जान जाने आफ़रीन के हवाले की और उन्होने उन के सर्द शुदा जिस्म की खुनकी को

فَاضَتْ نَفْسُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فِيْ كَفِّهٖ وَ اسْتَلَبَ بَرْدَهَا وَ

ले कर अपने चेहरे पर मल लिया और उनकी मदद तेरे फ़रिशतों ने की, रसूल के गुस्ल और तजहीज़

مَسَحَهٗ عَلٰى وَجْهِهٖ وَ اَعَانَتْهُ مَلَآئِكَتُكَ عَلٰى غُسْلِهٖ وَ تَجْهِيْزِهٖ وَ

मे और उनकी नमाज़े मय्यत पढ़ी और उनको छुपाया क़ब्र मे और उनके क़र्ज़ को अदा किया और

صَلَّى عَلَيْهِ وَ وَارٰى شَخْصَهٗ وَ قَضٰى دَيْنَهٗ وَ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَ لَزِمَ

उनके वादे को पूरा किया और उनके अहेद को लाज़म रखा, और उन्ही के नक़शे क़दम पर चले,

عَهْدَهٗ وَ احْتَذٰى مِثَالَهٗ وَ حَفِظَ وَصِيَّتَهٗ وَ حِيْنَ وَ جَدَ اَنْصَارًا

और उनकी वसीयत को महफ़ूज़ किया और जब मददगार पा लिए तो उठ खड़े हुए ख़िलाफ़त के

نَهَضَ مُسْتَقِلًا بِاَعْبَآءِ الْخِلَافَةِ مُضْطَلِعًا بِاَثْقَالِ الْاِمَامَةِ

वज़्न को उठाने के लिए और उम्मत के बार को उठाने के लिए। उन्होने हिदायत का अलम तेरे बन्दों

فَنَصَبَ رَايَةَ الْهُدٰى فِيْ عِبَادِكَ وَ نَشَرَ ثَوْبَ الْاَمْنِ فِيْ بِلَادِكَ

मे नसब किया और लिबास अमन को तेरे शहरों मे फैला दिया और तेरी मख़लूक़ मे अद्ल को राएज

وَبَسَطَ الْعَدْلَ فِيْ بَرِيَّتِكَ وَحَكَّمَ بِكِتَابِكَ فِيْ خَلِيْقَتِكَ وَاَقَامَ

किया और तेरी मख़लूक़ मे तेरी किताब के ज़रिए फ़ैसला व हुक्म नाफ़ज़ किया, हदों को क़ाएम

الْحُدُوْدَ وَقَمَعَ الْجُحُوْدَ وَقَوَّمَ الزَّيْغَ وَسَكَّنَ الْغَمْرَةَ وَاَبَادَ الْفَتْرَةَ

किया और कुफ़्र का क़ला क़मा किया और कीना की इसलाह की और फ़ितने को साकिन किया

وَ سَدَّ الْفُرْجَةَ وَ قَتَلَ النَّاكِثَةَ وَ الْقَاسِطَةَ وَ الْمَارِقَةَ وَ لَمْ

और कमज़ोरी को ख़त्म किया रख़नो को बंद किया और नाकेसीन व क़ासेतीन व मारेक़ीन से जंग

يَزَلْ عَلٰى مِنْهَاجِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ وَتِيْرَتِهٖ وَ

की और रसूल अल्लाह (स) के तरीक़े पर क़ाएम रहे और लुत्फ़ सूरत और जमाले सीरते पैग़ंम्बर पर

لُطْفِ شَاكِلَتِهٖ وَ جَمَالِ سِيْرَتِهٖ مُقْتَدِيًا بِسُنَّتِهٖ مُتَعَلِّقًا بِهِمَّتِهٖ

रहे। उनकी सुन्नत की इक़्तेदा करते रहे, उनके अज़्म से वाबस्तह रहे उनके तरीक़े पर बाक़ी रहे और

مُبَاشِرًا لِطَرِيْقَتِهٖ وَ اَمْثِلَتُهٗ نَصْبُ عَيْنَيْهِ يَحْمِلُ عِبَادَكَ

रसूलके किरदार को हमेश पेशे नज़र रखा। तेरे बंदो को उन पर आमादा करते रहे और उन की तरफ़

عَلَيْهَا وَيَدْعُوْهُمْ اِلَيْهَا اِلٰى اَنْ خُضِبَتْ شَيْبَتُهٗ مِنْ دَمِ رَاْسِهٖ

बूलाते रहे यहाँ तक के उन की दाढ़ी उन के सर के ख़ून से ख़िज़ाब कर दी गई। खुदाया जिस तरह

اَللّٰهُمَّ فَكَمَا لَمْ يُؤْثِرْ فِيْ طَاعَتِكَ شَكًّا عَلٰى يَقِيْنٍ وَّلَمْ يُشْرِكْ

उन्होंने यक़ीन के मुक़ाबले मे तेरी इताअत मे शक को राह न दी और चश्म जदन के लिए भी शिर्क

بِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ صَلِّ عَلَيْهِ صَلٰوةً زَاكِيَةً نَامِيَةً يَلْحَقُ بِهَا

नही किया तो तू भी उनपर दुरूद नाज़ल कर पाकीज़ा व अफ़ज़ूदा दुरूद के जिसकी वजह से वो तेरी

دَرَجَةَ النُّبُوَّةِ فِيْ جَنَّتِكَ وَبَلِّغْهُ مِنَّا تَحِيَّةً وَّسَلَامًا وَّاٰتِنَا مِنْ

जन्नत मे नबुव्वत की मंज़ल से मुलहक़ हो जाएं और हमारा इस्लाम व तहय्यत भी उन तक पहुँचा दे

لَّدُنْكَ فِيْ مُوَالَاتِهٖ فَضْلًا وَّاِحْسَانًا وَّمَغْفِرَةً وَّرِضْوَانًا اِنَّكَ ذُو

और हम को अपने फ़ज़्ल व एहसान व मग़िफ़रत व रिज़वान को उनकी मोहब्बत के तुफ़ैल मे अपने

الْفَضْلِ الْجَسِيْمِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

पाससे अता कर के तू बड़े फ़ज़्ल वाला है अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहम करनेवाले।

फिर ज़रीह का बोसा लें और पहले दाहने रूख़्सार को रखे फिर दाएं रूख़सार को रखे फिर सिम्ते क़िबला मुतवज्जे हो और नमाज़े ज़ियारत बजा लाए और नमाज़ के बाद जो चाहे दुआ करे और तसबीहे ज़हरा के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ بَشَّرْتَنِيْ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ وَ رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ

खुदाया तूने मुझे अपने नबी व रसूल मोहम्मद की ज़ुबान से बशारत दी है तेरा दुरूद हो उनपर और

صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ فَقُلْتَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ

उनकी आल पर तुने कहा है के बशारत दे दो ईमानदारों को के उन के लिए क़दमे सिदक जन्नत मे

صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ اَللّٰهُمَّ وَ اِنِّيْ مُؤْمِنٌ بِجَمِيْعِ اَنْبِيَآئِكَ وَ

हैं खुदाया मै तेरे तमाम नबियों और रसूलों पर ईमान लाया हूँ तेरा दुरूद हो उन सब पर तू मुझको

رُسُلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ فَلَا تَقِفُنِيْ بَعْدَ مَعْرِفَتِهِمْ مَوْقِفًا

उनकी मारेफ़त के बाद किसी मौक़फ मे न ठहराना जहाँ तू मुझ को रूसवा कर दे सब लोगों के

تَفْضَحُنِيْ فِيْهِ عَلٰى رُؤُوْسِ الْاَشْهَادِ بَلْ قِفْنِيْ مَعَهُمْ وَ تَوَفَّنِيْ

सामने बल्के उनके साथ ठहराना और मुझको उनकी तसदीक़ पर मौत देना, खुदाया तूने उनको

عَلَى التَّصْدِيْقِ بِهِمْ اَللّٰهُمَّ وَ اَنْتَ خَصَصْتَهُمْ بِكَرَامَتِكَ وَ

अपनी इज़्ज़त से मख़सूस किया है और हमको उनके इत्तेबअ का हुकुम दिया है, खुदाया मै तेरा

اَمَرْتَنِيْ بِاتِّبَاعِهِمْ اَللّٰهُمَّ وَاِنِّيْ عَبْدُكَ وَزَآئِرُكَ مُتَقَرِّبًا اِلَيْكَ

बन्दा और तेरा ज़ाएर हूँ। तेरी क़ुर्बत चाहता हूँ तेरे रसूल के भाई की ज़ियारत के ज़रिए और हर उस

بِزِيَارَةِ اَخِيْ رَسُوْلِكَ وَ عَلٰى كُلِّ مَأْتِيٍّ وَ مَزُوْرٍ حَقٌّ لِمَنْ اَتَاهُ وَ

शख़्स पर जिस के पास आया जाए और जिस की ज़ियारत की जाए हक़ होता है उसका जो आए

زَارَهٗ وَ اَنْتَ خَيْرُ مَأْتِيٍّ وَ اَكْرَمُ مَزُوْرٍ فَاَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ

और ज़ियारत करे और तू बेहतरीन वो है जिसके पास आया जाए और उन सब से ज़्यादा करीम

يَا رَحِيْمُ يَا جَوَادُ يَا مَاجِدُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ

है वो जिनकी ज़ियारत की जाए मै तुझसे सवाल करता हूँ ऐ खुदा ऐ रहमान, ऐ रहीम, ऐ जवाद

يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ وَ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا

ऐ माजीद ऐ यकता ऐ बेनेयाज ऐ वो जिसका कोई फ़रजंद नही जो किसी का फ़रजंद नही है और

اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَجْعَلَ تُحْفَتَكَ اِیَّایَ مِنْ

जिसका कोई हमसर नही है और कोई शरिके ज़िन्दगी नही है और न औलाद है तो दुरूद नाज़ल कर

زِیَارَتِیْ اَخَا رَسُوْلِكَ فَكَاكَ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ وَ اَنْ تَجْعَلَنِیْ مِمَّنْ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर ओर आज अपना तोहफ़ा क़रार दे अपने रसूल के भाई की ज़ियारत

یُسَارِعُ فِی الْخَیْرَاتِ وَ یَدْعُوْكَ رَغَبًا وَّ رَهَبًا وَّ تَجْعَلَنِیْ لَكَ

के एवज़ के मुझ को जहन्नम से नजात अता करदे और मुझको क़रारदे उन मे से जो नेकियों की

مِنَ الْخَاشِعِیْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ مَنَنْتَ عَلَیَّ بِزِیَارَةِ مَوْلَایَ عَلِیٍّ

तरफ़ जलदी करते हैं और जो तुझे शौक़ व ख़ाफ़ के आलम मे पुकारते हैं व मुझको खुज़ु व खुशू

بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ وَ وِلَایَتِهٖ وَ مَعْرِفَتِهٖ فَاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یَّنْصُرُهٗ وَ

करनेवालो मे क़रार दे खुदाया तूने मुझपर एहसान किया है मेरे मौला अली बिन अबी तालिब की

یَنْتَصِرُ بِهٖ وَ مُنَّ عَلَیَّ بِنَصْرِكَ لِدِیْنِكَ اَللّٰهُمَّ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ

ज़ियारत और विलायत व मारेफ़त के ज़रिए तू मुझको उनमे से क़रार दे जो उन की मदद करते हों

شِیْعَتِهٖ وَ تَوَفَّنِیْ عَلٰی دِیْنِهٖ اَللّٰهُمَّ اَوْجِبْ لِیْ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ

और उनसे मदद तलब करते हों और मुझपर एहसान कर अपने दीन की नुसरतके ज़रिए खुदाया

الرِّضْوَانِ وَ الْمَغْفِرَةِ وَ الْاِحْسَانِ وَ الرِّزْقِ الْوَاسِعِ الْحَلَالِ

मुझको उनके शियों में क़रार दे और उनके दीन पर मौत दे। खुदाया मेरे लिए रहमत रिज़वान,

الطَّيِّبِ مَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

मग़फ़िरत, एहसान और वुस्अते रिज़्क़े हलाल व पाकीज़ा को लाज़म कर जिस का तू अहेल है ऐ

الْعَالَمِيْنَ.

सब से ज़्यादा रहेम करने वाले और हम्द पस खुदाए रब्बुल आलमीन के लिए है।

रिवायते मोतबर में मनक़ूल है के हज़रते ख़िज़्र (अ.स.) अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की शहादत के दिन रोते हुए और इन्ना लिल्लाह पढ़ते हुए तेज़ी से आए। अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के दरवाज़े पर खड़े हो कर कहने लगे:

رَحِمَكَ اللّٰهُ يَا اَبَا الْحَسَنِ كُنْتَ اَوَّلَ الْقَوْمِ اِسْلَامًا وَاَخْلَصَهُمْ

खुदा आप पर रहमत नाज़ल करे, ऐ अबुल हसन आप इस्लाम मे सब से साबिक़ और ईमान मे

اِيْمَانًا وَاَشَدَّهُمْ يَقِيْنًا وَاَخْوَفَهُمْ لِلّٰهِ...

ख़ालिस और यक़ीन मे सब से मज़बूत और सब से ज़्यादा ख़ाफ़े खुदा वाले थे।

और फिर बहुत से अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के फ़ज़ाएल को गिनाया जो इन शब्दों से क़रीबतर थे। जो इस ज़ियारत में मज़कूर हैं। तो अगर उस दिन यह ज़ियारत भी पढ़ी जाए तो मुनासिब है। और इन कलेमात की अस्ल जो ब मांज़िले ज़ियारते रोज़े शहादत है उसको मैंने हदिया में ज़िक्र कर दिया है जो व्यक्ति चाहे उसकी तरफ़ रूजू कर सकता है।
यह भी वाज़ेह रहे के हमने इस से क़ब्ल आमाले शबे मबअस के ज़िम्न में सफ़रनाम-ए-इब्ने बतूता का इक़्तेबास भी नक़्ल किया है जो उस रौज़े से मुताल्लिक था। उसकी तरफ़ भी रूजू करना मुनासिब है।

वर्ग-५

फ़ज़ीलते कूफ़ा व मस्जिदे कूफ़ा, आमाले मस्जिदे कूफ़ा और ज़ियारते हज़रत मुस्लिम

फ़ज़ीलते कूफ़ा

वाज़ेह रहे के कूफ़ा उन चार शहरों में है जिनको परवरदिगारे आलम ने मुन्तख़ब फ़रमाया है। और जिसको तफ़सीर में तूरे सिनीन भी कहा गया है। रिवायत में है के यह हरमे खुदा, हरमे रसूल और हरमे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) है। यहाँ पर एक दिरहम सदक़ा भी सौ के बराबर सवाब रखता है। और यहाँ की दो रकत नमाज़ भी सौ रकत के बराबर शुमार की जाती है।

मस्जिदे कूफ़ा की फ़ज़ीलत

मस्जिदे कूफ़ा की वाकई फ़ज़ीलत बयान से बाहर है और उसके लिए यही काफ़ी है के उन चार मस्जिदों में है जिनकी तरफ़ सफ़र करने और उनकी फ़ज़ीलत हासिल करने की ताकीद की गई है। और उन मकामत पर मुसाफ़िर को कस्र और इतमाम का इख़्तेयार दिया गया है और वहाँ की नमाज़े फ़रीज़ा एक हज्जे मक़्बूल और हज़ार नमाज़ों के बराबर है जो दूसरे मकाम पर अदा की जाएं।

रिवायत में वारिद हुआ है के मस्जिदे कूफ़ा महल्ले नमाज़े अंबिया व मुरसलीन है और यही महल्ले नमाज़े इमाम महदी क़रार पाएगी। और रिवायत में यह भी है के यहाँ हज़ार पैग़ंबरों और हज़ार औसिया ने नमाज़ अदा की है। बल्के बाज़ रिवायत के अनुसार मस्जिदे कूफ़ा मस्जिदे अक़सा से भी अफ़ज़ल है जो बैतुल मुक़द्दस में है।

इब्ने कूलूवय ने इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के अगर

लोगों को मालूम हो जाए के मस्जिदे कूफ़ा की फ़ज़ीलत क्या है तो यक़ीनन दूर दराæज इलाकों से ज़ाद फ़राहम करके इस मस्जिद में ज़रूर हाज़री देंगे। और फ़रमाया इस मस्जिद में नमाज़े वाजिब एक हज्जे मक़्बूल के बराबर और नमाज़े नाफ़ेला एक उमरा के बराबर है। और दूसरी रिवायत की बिना पर मस्जिद में नमाज़े फ़रीज़ा व नाफ़ेला उस हज व उमरा के बराबर है जो रसूले अक्रम (स) के साथ अंजाम दिया जाए। शेख़ कुलैनी वग़ैरा के बड़े मशाएख के हवाले से हारून बिन ख़ारेजा से रिवायत की है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने मुझ से फ़रमाया के तुम्हारे और मस्जिदे कूफ़ा के दरमियान किस क़द्र मसाफ़त है? कहा एक मील होगी। मैंने अर्ज़ की नहीं। फ़रमाया तो फिर तमाम नमाज़े वहाँ अदा नहीं करते हो? जवाब दिया नहीं। फ़रमाया अगर मैं उस मस्जिद के नज़दीक होता तो मुझ से कोई नमाज़ भी फ़ौत न होती और मैं तमाम नमाज़ें वहीं अदा करता। क्या तुम जानते हो के उस जगह की फ़ज़ीलत क्या है? कोई बंदे सालेह और पैंग़म्बर ऐसा नहीं है जिसने वहां नमाज़ अदा न की हो यहाँ तक के रसूले अक्रम (स) जिस रात मेराज पर तशरीफ़ ले गए जिब्रईल ने पूछा के या रसूलल्लाह आपको मालूम है के आप कहाँ हैं? इस समय आप मस्जिदे कूफ़ा के मुक़ाबले में हैं। तो हज़रत ने परवरदिगार से इजाज़त तलब की के दो रकत नमाज़ अदा करें और जिब्रईल ने मालिक से इजाज़त लेकर हज़रत को ख़बर दी आप वहाँ तशरीफ़ ले गए और दो रकत नमाज़ अदा की। याद रखो उसके दाहने तरफ़ जन्नत के बागात में वह एक बाग़ है और उसके दरमियान भी एक बाग़े जन्नत है और उसके पीछे भी एक बाग़े जन्नत है। यक़ीनन उसमें नमाज़े वाजिब हज़ार नमाज़ों के बराबर है और नमाज़े नाफ़ेला पाँच सौ नमाज़ों के बराबर है और वहाँ बैठना भी इबादत है। और अगर तुम्हें मालूम हो जाए के वहाँ क्या फ़ज़ीलत पाई जाती है तो चाहे बच्चों की तरह रगड़ते हुए आओ मगर ज़रूर आओगे। इस रिवायत में है के वहाँ नमाज़े वाजिब एक हज के बराबर है और नमाज़े नाफेला एक उमरा के बराबर है।

हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की सातवीं ज़ियारत के ज़ैल में भी इस

मस्जिद के फ़ज़ाएल की तरफ़ इशारा किया जा चुका है। और बाज़ रिवायात से मालूम होता है के इस मस्जिद का दायां हिस्सा बाएं हिस्से से ज़्यादा अफ़ज़ल है।

आमाले मस्जिदे कूफ़ा

जैसा के मिस्बाहुज़ ज़ाएर में नक़्ल किया गया है के जब कूफ़ा में दाख़िल हो तो यूँ कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ عَلٰی مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ صَلَّی

अल्लाह के नाम से अल्लाह की ज़ात से और राहे खुदा मे और रसूल अल्लाह (स) की मिल्लत पर

اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبَارَكًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ

खुदाया मुझको मुतबर्रिक मनिज़ल मे नाज़ल कर तू बेहतरीन ज़ात है जिसके पास आया जाता

الْمُنْزِلِیْنَ.

है।

उसके बाद मस्जिद ती तरफ़ चले और चलते हुए कहता रहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ.

अल्लाह बड़ा है खुदा के अलावा कोई माबूद नही है और हम्द खुदा के लिए है और अल्लाह पाक व बेनियाज़ है।

मस्जिदे के दर पर पहुँच कर ठहर जाए और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا رَسُوْلِ اللّٰهِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ وَ آلِهِ الطَّاهِرِيْنَ

सलाम हो हमारे सरदार अल्लाह के रसूल मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर ओर उनकी पाकीज़ा आल

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ وَّ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ

पर सलाम हो अमीरल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब पर और अल्लाह की रहमत व बरकात

بَرَكَاتُهٗ وَ عَلٰى مَجَالِسِهٖ وَ مَشَاهِدِهٖ وَ مَقَامِ حِكْمَتِهٖ وَ اٰثَارِ اٰبَائِهٖ اٰدَمَ

हो और उनकी मजलिसों और उनके मशाहिद और मक़ामे हिकमत पर और उनके आबा आदम

وَ نُوْحٍ وَ اِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ تِبْيَانِ بَيِّنَاتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَى

(अ), नूह (अ), इब्राहीम और इस्माईल (अ) के आसार पर और रौशन दलीलों पर, सलाम हो

الْاِمَامِ الْحَكِيْمِ الْعَدْلِ الصِّدِّيْقِ الْاَكْبَرِ الْفَارُوْقِ بِالْقِسْطِ

इमामे हकीम, आदिल्। सिद्दीक़े अकबर और अदालत के ज़रिए फ़र्क़ करनेवाले पर जिस के

الَّذِيْ فَرَّقَ اللّٰهُ بِهٖ بَيْنَ الْحَقِّ وَ الْبَاطِلِ وَ الْكُفْرِ وَ الْاِيْمَانِ وَ

ज़रिए अल्लाह ने हक़ और बातिल के दरमियान फ़र्क़ किया है और कुफ़्र व ईमान और शिर्क व

الشِّرْكِ وَ التَّوْحِيْدِ لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَ يَحْيَا مَنْ حَيَّ عَنْ

तौहीद के दरमियान फ़र्क़ किया है ताके जो हलाक हो वो बीना के साथ और जो ज़िन्दा रहे वो

بَيِّنَةٍ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ خَآصَّةُ نَفْسِ الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ

दलील के साथ, मै गवाही देता हूँ के आप मोमिनो के अमीर और बरगुज़ीदा लोगोंमे मख़सूस

زَيْنُ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ صَابِرُ الْمُمْتَحَنِيْنَ وَ اَنَّكَ حَكَمُ اللهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَ

बन्दे और सिद्दीक़ीन की ज़ीनत और आज़मूदा लोगों मे साबिर हैं और आप खुदाई हाकिम हैं

قَاضِيْ اَمْرِهٖ وَ بَابُ حِكْمَتِهٖ وَ عَاقِدُ عَهْدِهٖ وَ النَّاطِقُ بِوَعْدِهٖ وَ

उसकी ज़मीन मे और उसके अम्र के काज़ी, उसकी हिकमत का दरवाज़ा, उस के अहेद के

الْحَبْلُ الْمَوْصُوْلُ بَيْنَهٗ وَ بَيْنَ عِبَادِهٖ وَ كَهْفُ النَّجَاةِ وَ مِنْهَاجُ

मोहकम रखने वाले और उसके वादा के साथ बोलनेवाले और रिश्तए मोहकमे खुदा और बनदों

التُّقٰى وَ الدَّرَجَةُ الْعُلْيَا وَ مُهَيْمِنُ الْقَاضِيْ الْاَعْلٰى يَا اَمِيْرَ

के दरमियान और नजात की पनाहगाह और तक़वे का तरीक़ा और बुलंद दरजेवाले बुलंद तरीन

الْمُؤْمِنِيْنَ بِكَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ زُلْفٰى اَنْتَ وَلِيِّيْ وَ سَيِّدِيْ وَ وَسِيْلَتِيْ

हाकिम और गवाह हैं, ऐ मोमिनो के अमीर आप के वास्ते से अल्लाह से तक़र्रूब तलाश करता हूँ

فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ.

आप मेरे वली और मेरे सरदार और दुनिया व आख़िरत मे मेरा वसीला हैं।

उसके बाद मस्जिद में दाख़िल हो।
लेखक का बयान है के बेहतर यह है के मस्जिद के पिछले दरवाज़े से दाख़िल हो जिसको बाबुल फ़ील कहा जाता है। और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ هٰذَا مَقَامُ الْعَآئِذِ بِاللّٰهِ وَ بِمُحَمَّدٍ

अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, ये अल्लाह की पनाह चाहने वाले का मकाम है और मोहम्मद (स)

حَبِيْبِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ بِوِلَايَةِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْاَئِمَّةِ

हबीबे खुदा और अमीरूल मोमिनीन और आइम्मा (अ) की पनाह चाहनेवाला का मकाम है जो हादी, सादिक़,

الْمَهْدِيِّيْنَ الصَّادِقِيْنَ النَّاطِقِيْنَ الرَّاشِدِيْنَ الَّذِيْنَ اَذْهَبَ اللّٰهُ

नाति्क, हिदायत करनेवाले हैं जिन से खुदावन्दे आलम ने गंदिगी को दूर रखा है और उनको ऐसा पाक व

عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ طَهَّرَهُمْ تَطْهِيْرًا رَضِيْتُ بِهِمْ اَئِمَّةً وَّ هُدَاةً وَّ

पाकीज़ा रखा है जो पाकीज़ा रखने का हक़ है मै उनके इमाम और हादी और मौला होने पर राज़ी हूँ और हुक्मे खुदा

مَوَالِيَّ سَلَّمْتُ لِاَمْرِ اللّٰهِ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَّ لَا اَتَّخِذُ مَعَ اللّٰهِ وَلِيًّا

पर सर तसलीम ख़म किए हूँ मै खुदा मे किसीको शरीक नही करता हूँ और अल्लाह के साथ किसी और को वली

كَذَبَ الْعَادِلُوْنَ بِاللّٰهِ وَ ضَلُّوْا ضَلَالًا بَعِيْدًا حَسْبِيَ اللّٰهُ وَ اَوْلِيَآءُ اللّٰهِ

नही बनाता हूँ अल्लाह से बराबरी करने वाले झूठे हैं और बहुत ज़्यादा गुमराह हो गए हैं मेरे लिए अल्लाह और उस

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

के औलीया काफ़ी हैं। मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है वो एक है उस का कोई शरीक

وَ رَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اَنَّ عَلِيًّا وَّ الْاَئِمَّةَ الْمَهْدِيِّيْنَ مِنْ

नही है और मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दा ओर रसूल हैं अल्लाह का दुरूद हो उन पर और उनकी

ذُرِّيَّتِهٖ عَلَيْهِمُ اَلسَّلَامُ اَوْلِيَآئِيْ وَ حُجَّةُ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ.

आल पर और उन की ज़ुर्रायत के आइम्मा (अ) मेरे वली और अल्लाह की हुज्जत पर जो उनकी मख़लूक़ पर है।

उसके बाद चौथे सुतून की तरफ़ जाएं जो बाबे अनमात के पहलू में पांचवे सुतून के बराबर है. और वह सुतूने इब्राहीम है। वहाँ चार रकत नमाज़ अदा करें। दो रकत हम्द और सूरह तौहीद के साथ और दो रकत सूरह क़द्र के साथ। नमाज़ के बाद तस्बीहे जनाबे ज़हरा पढ़े और यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ الرَّاشِدِيْنَ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ اللّٰهُ

सलाम हो अल्लाह के नेक और हादी बन्दों पर जिन से खुदा ने गंदिगी को दूर रखा है और ऐसा पाक रखा

عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ طَهَّرَهُمْ تَطْهِيْرًا وَّ جَعَلَهُمْ اَنْبِيَآءَ مُرْسَلِيْنَ وَ

है जो पाक रखने का हक़ है और उनको अंबीया व मुरसलीन और अपनी तमाम मख़लूक़ पर हुज्जत

حُجَّةً عَلَى الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

क़रार दिया है और सलाम हो मुरसलीन पर और हम्द है आलमीन के परवरदिगार अल्लाह के लिए ये

الْعَالَمِيْنَ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ.

ग़ालिब और दाना खुदा की तक़दीर है।

फिर सात बार कहे:

سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ.

सलाम हो नूह पर आलमीन मे

फिर कहे:

نَحْنُ عَلٰى وَصِيَّتِكَ يَا وَلِيَّ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّتِيْ اَوْصَيْتَ بِهَا ذُرِّيَّتَكَ مِنَ

सलाम हो आलमीन के पैग़ंम्बर जनाबे नूह पर, हम आप की वसीयत पर हैं ऐ मोमिनो के वली जिस की

الْمُرْسَلِيْنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ نَحْنُ مِنْ شِيْعَتِكَ وَ شِيْعَةِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

आप ने वसीयत की थी अपनी ज़ुर्रायत मे मुरसलीन और सिद्दीक़ीन के लिए और हम आप के शीयों मे से

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ عَلَيْكَ وَ عَلٰى جَمِيْعِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْاَنْبِيَآءِ وَ

और अपने नबी मोहम्मद (स) के शियों मे से हैं और आप पर और तमाम रसूलों नबियों और सादेक़ीन पर

الصَّادِقِيْنَ وَ نَحْنُ عَلٰى مِلَّةِ اَبْرَاهِيْمَ وَ دِيْنِ مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ

सलवात हो ओर हम इब्राहीम (अ) की मिल्लत और मोहम्मद के दीन पर हैं जो नबीए उम्मी हैं और आइम्मा

الْاَئِمَّةِ الْمَهْدِيِّيْنَ وَ وِلَايَةِ مَوْلَانَا عَلِيِّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى

हादी के दीन पर हैं और अमीरूल मोमिनीन अली (अ) की विलायत पर हैं। सलाम हो बशारत देनेवाले,

الْبَشِيْرِ النَّذِيْرِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ رَحْمَتُهٗ وَ رِضْوَانُهٗ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ

डराने वाले पर, अल्लाह का दुरूद, रहमत, रिज़वान और बरकात हां उनपर और उनके वसी पर और उनके

عَلٰى وَصِيِّهٖ وَ خَلِيْفَتِهِ الشَّاهِدِ لِلّٰهِ مِنْ بَعْدِهٖ عَلٰى خَلْقِهٖ عَلِيِّ اَمِيْرِ

ख़लीफ़ा पर जो उनके बाद खुदा के गवाह हैं मख़लूक़ पर जिनका नाम अली अमीरूल मोमिनीन (अ)

الْمُؤْمِنِيْنَ الصِّدِّيْقِ الْاَكْبَرِ وَ الْفَارُوْقِ الْمُبِيْنِ الَّذِيْ اَخَذْتَ

है जो सिद्दीक़े अकबर और फ़ारूक़े मुबीन हैं जिनकी बैअत आप ने आलमीन से ली है। मै उनके वली

بَيْعَتَهٗ عَلَى الْعَالَمِيْنَ رَضِيْتُ بِهِمْ اَوْلِيَآءَ وَمَوَالِيَ وَحُكَّامًا فِيْ نَفْسِيْ

मौला होने पर राज़ी हूँ और उनके हाकिम होने पर मेरे लिए मेरी औलाद के लिए मेरे घर वालों के लिए मेरे

وَ وَلَدِيْ وَ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ وَ قِسْمِيْ وَ حِلِّيْ وَ اِحْرَامِيْ وَ اِسْلَامِيْ وَ دِيْنِيْ وَ

माल, मेरे हिस्से मे हिल मे और एहराम मे, इस्लाम मे, दीन मे, दुनिया मे और आख़िरत मे, ज़िंगदी और

دُنْيَايَ وَ اٰخِرَتِيْ وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ اَنْتُمُ الْاَئِمَّةُ فِي الْكِتَابِ وَ فَصْلُ

मौत मे आप लोग इमाम हैं किताब मे और फ़ज़्ल मकाम हैं और फ़स्ले ख़िताब हैं खुदा की वो आँखे जो

الْمَقَامِ وَ فَصْلُ الْخِطَابِ وَ اَعْيُنُ الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَنَامُ وَ اَنْتُمْ

सोती नही हैं और आप अल्लाह के हुकुमा हैं और आप ही के ज़रिए खुदा ने हुकुम दिया और आप ही के

حُكَمَآءُ اللّٰهِ وَ بِكُمْ حَكَمَ اللّٰهُ وَ بِكُمْ عُرِفَ حَقُّ اللّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

ज़रिए हक़्क़े खुदा पहचाना गया अल्लाह के अलावा कोई खुदा नही मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं आप लोग

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ، اَنْتُمْ نُوْرُ اللّٰهِ مِنْ مبَيْنِ

नूरे खुदा हैं हमारे सामने और हमारे पीछे आप अल्लाह की वो सुन्नत हैं जिस के ज़रिए पहले फ़ैसला हुआ

اَیۡدِیۡنَا وَ مِنۡ خَلۡفِنَا اَنۡتُمۡ سُنَّۃُ اللّٰہِ الَّتِیۡ بِہَا سَبَقَ الۡقَضَآءُ یَا اَمِیۡرَ

ऐ अमीरल मोमिनीन (अ) मै आपके हुकुम के आगे सर तसलीम ख़म किए हुए हूँ। अल्लाह मे किसी को

الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنَا لَکُمۡ مُسَلِّمٌ تَسۡلِیۡمًا لَآ اُشۡرِکُ بِاللّٰہِ شَیۡئًا وَّ لَآ اَتَّخِذُ مِنۡ

शरीक नही करता हूँ और अललाह के अलावा किसी को बादशाह नही बनाता हूँ हम्द है उस खुदा के लिए

دُوۡنِہٖ وَلِیًّا اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ ھَدَانِیۡ بِکُمۡ وَ مَا کُنۡتُ لِاَھۡتَدِیَ لَوۡلَآ

जिस ने मेरी हिदायत की आप के ज़रिए और मै हिदायत नही पा सकता था अगर खुदा ने मेरी हिदायत न

اَنۡ ھَدَانِیَ اللّٰہُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی مَا ھَدَانَا.

की होती। अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा हे, हम्दे खुदा उसपर के उसने हमारी हिदायत की।

दक्कतुल कज़ा और बैतुत तश्त के आमाल

वाज़ेह रहे के दक्कतुल कज़ा मस्जिद में वह जगह है जहाँ बैठ कर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) फ़ैसले फ़रमाया करते थे। उस जगह एक छोटा सा सुतून था जिस पर लिखा हुआ था: اِنَّ اللّٰہَ یَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ

बैतुत तश्त वह जगहा है जहाँ अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने उस लड़की के बारे में फ़ैसला किया था जो बग़ैर शौहर के थी और एक दिन नहा रही थी के एक जोंक उसके बदन में दाख़िल हो गई और धीरे धीरे ख़ून चूस कर बड़ी हो गई और लड़की भी बड़ी होती गई यहाँ तक के लोगों ने ख़याल किया के यह हामेला है और चाहा के बद किरदार क़रार देकर उसे क़त्ल कर दें। लेकिन जब अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास लाए तो आप (अ.स.) ने हुक्म दिया के मस्जिद में एक तरफ़ परदा खींच दिया जाए और लड़की को उस तरफ़ बिठा दिया जाए। कूफ़े की क़ाबिला दाई को बुलाया गया के वह तहक़ीक़ करे। क़बिला ने तहक़ीक़ के बाद कहा के यह हामेला है और उसके पेट में बच्चा

है। हज़रत ने हुक्म दिया के गंदे पानी से एक तश्त भरा जाए और लड़की को उसमें बिठा दिया जाए। जैसे ही उस जोंक ने गंदे पानी की बू महसूस की फ़ौरन बच्ची के पेट से बाहर आ गई। और बाज़ रिवायात में है के हज़रत ने हाथ बढ़ाकर शाम के पहाडं से बर्फ़ का एक टुक्ड़ा उठाया और उसे तश्त के पास रख दिया ताके वह जानवर उस बच्ची के पेट से बाहर आ जाए।

यह भी वाज़ेह रहे के मस्जिद के आमाल की तरतीब में मशहूर यही है के चौथे सुतून के आमाल के बाद मस्जिदे के बीच में जाए और वहाँ के आमाल बजा लाएं और दक्कतुल कज़ा और बैतुत तश्त के आमाल सबके बाद। दक्के इमाम सादिक़ (अ.स.) से फ़ारिग़ होने के बाद बजा लाएं। लेकिन हमने तरतीब से नक़्ल किया है। जैसे सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में अल्लामा मजलिसी ने बेहार और शेख़ खिज़्र ने मज़ार में नक़्ल किया है।

अगर कोई व्यक्ति तरतीबे मशहूर पर अमल करना चाहे तो आमाले दक्कतुल कज़ा को चौथे सुतून के बाद बजा न लाए और आख़र में मक़ामे इमाम सादिक (अ.स.) के बाद बजा लाए।

बहर हाल उसके बाद दक्कतुल कज़ा की तरफ जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे, अलहम्द और जिस सूरह के साथ चाहे। नमाज़ के बाद तस्बीहे जनाबे ज़हरा पढ़े और यह कहे:

يَا مَالِكِيْ وَ مُمَلِّكِيْ وَ مُتَغَمِّدِيْ بِالنِّعَمِ الْجِسَامِ مِنْ غَيْرِ اسْتِحْقَاقٍ

ऐ मेरे मालिक, ऐ मुझे मालिक बनाने वाले ओर मुझको नेमते अज़ीम मे ग़र्क करने वाले बग़ैर इस्तेहक़ाक़

وَّجْهِيْ خَاضِعٌ لِمَا تَعْلُوْهُ الْاَقْدَامُ لِجَلَالِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ لَا تَجْعَلْ

के, मेरा चेहरा खुज़ू किए हुए है जिस को क़दमो ने बुलंद किया है तेरी करीम व जलील ज़ात के लिए तू उस

هٰذِهِ الشِّدَّةَ وَ لَا هٰذِهِ الْمِحْنَةَ مُتَّصِلَةً بِاسْتِيْصَالِ الشَّأْفَةِ وَ

सख़्ती और उस इम्तेहान को हमेशा न क़रार देना के मुत्तसिल रहे परेशानी से और मुझको अपने फ़ज़्ल से

اَمْنَحَنِیْ مِنْ فَضْلِكَ مَا لَمْ تَمْنَحْ بِهٖۤ اَحَدًا مِّنْ غَیْرِ مَسْئَلَةٍ اَنْتَ

अता करना बग़ैर सवाल के जिस को किसी को भी अता न किया हो तू क़दीम और अव्वल है जो हमेशा

الْقَدِیْمُ الْاَوَّلُ الَّذِیْ لَمْ تَزَلْ وَلَا تَزَالُ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ

से है और हमेशा रहेगा दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको बख़्श दे और मुझ पर

اغْفِرْ لِیْ وَ ارْحَمْنِیْ وَ زَكِّ عَمَلِیْ وَ بَارِكْ لِیْ فِیْ اَجَلِیْ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ

रहेम कर और मेरे अमल को पाक कर और मेरी उम्र मे बरकत दे और मुझको अपने आज़ादों मे क़रार दे

عُتَقَآئِكَ وَ طُلَقَآئِكَ مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

और जहन्नम से छुटकारा पानेवालों मे अपनी रहमत से, ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

आमाले बैतुत तश्त

जो दक्कतुल कज़ा से मिला हुआ है।
वहाँ दो रकत नमाज़ अदा करे सलाम के बाद यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ذَخَرْتُ تَوْحِیْدِیْ اِیَّاكَ وَ مَعْرِفَتِیْ بِكَ وَ اِخْلَاصِیْ لَكَ

खुदाया मै ने ख़ास तौर पर तेरे लिए अपनी तौहीद ओर मारेफ़त और तेरे लिए खुलूस और तेरी

وَ اِقْرَارِیْ بِرُبُوْبِیَّتِكَ وَ ذَخَرْتُ وِلَایَةَ مَنْ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ بِمَعْرِفَتِهِمْ

रबूबीयत के इक़रार को ज़ख़ीरा किया है और मै ने ज़ख़ीरा किया है उन की विलायत को जिन

مِنْ بَرِيَّتِكَ مُحَمَّدٍ وَّ عِتْرَتِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ لِيَوْمِ فَزَعِىْ اِلَيْكَ

की मारेफ़त के साथ तू ने नेमत दी है अपनी मख़लूक़ मे मोहम्मद ओर उन की इतरत से जज़ा व

عَاجِلًا وَاٰجِلًا وَقَدْفَزِعْتُ اِلَيْكَ وَاِلَيْهِمْ يَامَوْلَاىَ فِىْ هٰذَا الْيَوْمِ

फ़ज़ा के दिन के दिन के लिए दुनिया व आख़िरत मे और मै तालिबे पनाह हूँ तुझ से और उन से ऐ

وَفِىْ مَوْقِفِىْ هٰذَا وَسَئَلْتُكَ مَادَّنِىْ مِنْ نِعْمَتِكَ وَاِزَاحَةَ مَا اَخْشَاهُ

मेरे मौला इस रोज़ और इस मकाम मे और मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी नेमत की कशिश का

مِنْ نِقْمَتِكَ وَ الْبَرَكَةَ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْهِ وَ تَحْصِيْنَ صَدْرِىْ مِنْ كُلِّ

और इस अज़ाब के दूर करने का जिससे मै डरता हूँ और उसमे बरकत का जिसका रिज़्क़ तूने

هَمٍّ وَّ جَآئِحَةٍ وَّ مَعْصِيَةٍ فِىْ دِيْنِىْ وَ دُنْيَاىَ وَ اٰخِرَتِىْ يَآ اَرْحَمَ

मुझको दिया है और मेरे दिल को हर ग़ाम व अनदोह और मासियत से महफ़ूज़ करने का दुनिया

الرَّاحِمِيْنَ.

और दीन मे और आख़िरत मे ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

रिवायत में ये भी है के इमाम सादिक़ (अ.स.) बैतुत तश्त में दो रकत नमाज़ अदा किया करते थे।

नमाज़ व दुआ-ए-वुस्ते मस्जिद

यहाँ दो रकत नमाज़ अदा करे। पहली रकत में सूरह हम्द और सूरह तौहीद और दूसरी रकत में सूरह हम्द व सूरह काफ़ेरून। सलाम के बाद तसबीहे ज़हरा

पढ़े इसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَ مِنْكَ السَّلَامُ وَ اِلَيْكَ يَعُوْدُ السَّلَامُ وَ

खुदाया तू सलाम है और तेरी तरफ़ से सलाम है और तेरी तरफ़ मुनतहाए सलाम है और तेरा घर

دَارُكَ دَارُ السَّلَامِ حَيِّنَا رَبَّنَا مِنْكَ بِالسَّلَامِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ صَلَّيْتُ

दारूस्सलाम है, खुदाया मुझ पर सलाम का तोहफ़ा भेज। खुदाया मैने ये नमाज़ पढ़ी है तेरी रहमत

هٰذِهِ الصَّلٰوةَ ابْتِغَآءَ رَحْمَتِكَ وَ رِضْوَانِكَ وَ مَغْفِرَتِكَ وَ تَعْظِيْمًا

को हासिल करने के लिए और तेरे रिज़वान और मग़िफ़रत के हुसूल के लिए और तेरी मस्जिद

لِّمَسْجِدِكَ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ ارْفَعْهَا فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ

की ताज़ीम के लिए, खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उन नमाज़ को बुलंद

تَقَبَّلْهَا مِنِّيْ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

दरजे मे बुलंद कर और उस को क़ुबूल कर ले ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

लेखक: इस जगह को दक्कतुल मेराज भी कहा जाता है और यह शायद उस एतेबार से हो के शबे मेराज रसूले अक्रम (स) ने मालिक से इजाज़त मांग के इसी जगह पर दो रकत नमाज़ अदा की थी जिसकी तरफ़ इशारा किया जा चुका है।

सातवें सुतून की नमाज़

यह वह जगह है जहाँ परवरदिगार ने जनाबे आदम (अ.स.) को तौबा की तौफ़ीक़ दी थी। लेहाज़ा उस तरफ़ जाकर क़िबले की तरफ़ मूँह कर के यूँ कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ عَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ لَا اِلٰهَ

खुदा के नाम और खुदा की ज़ात से और रसूले खुदा (स) की मिल्लत पर कोइ्र माबूद नही है

اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِيْنَا اٰدَمَ وَ اُمِّنَا حَوَّآءَ

सिवाए खुदा के मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं सलाम हो हमारे बाप आदम और हमारी माँ हव्वा

اَلسَّلَامُ عَلٰى هَابِيْلَ الْمَقْتُوْلِ ظُلْمًا وَّ عُدْوَانًا اَلسَّلَامُ عَلٰى مَوَاهِبِ

पर, सलाम हो हाबील पर जो ज़ुल्म व तअदी से क़त्ल किए गए, सलाम हो अल्लाह के मवाहीब

اللّٰهِ وَ رِضْوَانِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى شَيْثٍ صَفْوَةِ اللّٰهِ الْمُخْتَارِ الْاَمِيْنِ وَ

और रिज़वान पर सलाम हो शीस पर जो अल्लाह के मुंताख़िब बन्दे हैं और मुख़तार और अमीन

عَلَى الصَّفْوَةِ الصَّادِقِيْنَ مِنْ ذُرِّيَتِهِ الطَّيِّبِيْنَ اَوَّلِهِمْ وَ اٰخِرِهِمْ

हैं और उनकी ज़ुर्रायते ताहेरा मे मुंतिख़ब सादेक़ीन पर चाहे वो पहले हों या आख़री हों, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ عَلٰى ذُرِّيَّتِهِمْ

हो इब्रहीम व इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उन की बरगुज़ीदा ज़ुर्रायत पर, सलाम हो अल्लाह के

اَلْمُخْتَارِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُوْسٰى كَلِيْمَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عِيْسٰى

कलीम मूसा पर, सलाम हो रूहे खुदा ईसा पर, सलाम हो मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर जो ख़ातमुन

رُوْحِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ خَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ

नबीईन हैं। सलाम हो अमीरूल मोमिनीन (अ) पर और उनकी पाकीज़ा ज़ुर्रायत पर और अल्लाह

عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ ذُرِّيَّتِهِ الطَّيِّبِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

की रहमत और बरकात हो। सलाम हो आप पर अव्वलीन मे, सलाम हो आप पर आख़िरीन मे।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ فِي الْاَوَّلِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ فِي الْآخِرِيْنَ اَلسَّلَامُ

सलाम हो फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पर सलाम हो आइम्मा पर जो हादी और अल्लाह के गवाह हैं

عَلٰى فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَئِمَّةِ الْهَادِيْنَ شُهَدَآءِ اللّٰهِ عَلٰى

उसकी मख़लूक पर सलाम हो निगेहबान पर ओर उन पर जो उम्मतों पर गवाह हैं उस अल्लाह के

خَلْقِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَى الرَّقِيْبِ الشَّاهِدِ عَلَى الْاُمَمِ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

लिए जो आलमीन का रब है।

इसके बाद सुतून के पास चार रकत नमाज़ अदा करे पहली रकत में हम्द और सूरह क़द्र, दूसरी रकत में सूरह हम्द और तीसरी चौथी रकत भी इसी तरह अदा करे। नमाज़ के बाद तसबीह पढ़े और तसबीह के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتُ قَدْ عَصَيْتُكَ فَاِنِّيْ قَدْ اَطَعْتُكَ فِي الْاِيْمَانِ مِنِّيْ

खुदाया अगर मै ने तेरा ईसयान किया है तो मै ने अपने ईमान के ज़रिए तेरी इताअत भी की है ये तेरा मुझ पर

بِكَ مَنًّا مِّنْكَ عَلَيَّ لَا مَنًّا مِّنِّيْ عَلَيْكَ وَ اَطَعْتُكَ فِيْ اَحَبِّ

एहसान है मेरा कोई एहसान तुझ पर नही है और मैने तेरी इताअत की है तेरी पसंददीदा तरीन चीज मे मैने

الْاَشْيَآءِ اِلَيْكَ لَمْ اَتَّخِذْ لَكَ وَلَدًا وَّ لَمْ اَدْعُ لَكَ شَرِيْكًا وَّ قَدْ

तेरे लिए कोई औलाद नही क़रार दी है और तेरा किसी को शरीक नही बनाया और मैने बहुतसी चीजों मे

عَصَيْتُكَ فِيْ اَشْيَآءَ كَثِيْرَةٍ عَلٰى غَيْرِ وَجْهِ الْمَكَابَرَةِ وَلَا الْخُرُوْجِ

तेरी मासियत की है लेकिन तकब्बुर की वजह से नही और न तेरी बंदगी से ख़ारिज होने की वजह से और

عَنْ عُبُوْدِيَّتِكَ وَلَا الْجُحُوْدِ لِرُبُوْبِيَّتِكَ وَلٰكِنِ اتَّبَعْتُ هَوَايَ وَ

न तेरी रबूबियत का इन्कार करने की वजह से बल्के मैने अपनी ख़्वाहिश का इत्तेबा किया और शैतान ने

اَزَلَّنِيَ الشَّيْطَانُ بَعْدَ الْحُجَّةِ عَلَيَّ وَ الْبَيَانِ فَاِنْ تُعَذِّبْنِيْ

मुझको लगिज़श मे डाल दिया हुज्जत और बयान के बाद तो अगर तू मुझको अज़ाब देगा तो मेरे गुनाहों की

فَبِذُنُوْبِيْ غَيْرَ ظَالِمٍ لِيْ وَ اِنْ تَعْفُ عَنِّيْ وَ تَرْحَمْنِيْ فَبِجُوْدِكَ وَ

वजह से होगा तो मुझ पर ज़ुल्म न होगा और अगर मुझको माफ़ करदेगा और मुझपर रेहम करेगा तो अपने

كَرَمِكَ يَا كَرِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنَّ ذُنُوْبِيْ لَمْ يَبْقَ لَهَا اِلَّا رَجَآءُ عَفْوِكَ

जदो करम की वजह से होगा ऐ करीम खुदाया मेरे गुनाहा के लिए तेरी माफ़ी की उम्मीद के अलावा कुछ

وَ قَدْ قَدَّمْتُ اٰلَةَ الْحِرْمَانِ فَاَنَا اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ مَا لَا اَسْتَوْجِبُهٗ

बाक़ी नही रहा है और मैने वसीला महरूमी को पेश किया है तो मै तुझसे सवाल करता हूँ खुदाया जिसका मै

وَ اَطْلُبُ مِنْكَ مَا لَا اَسْتَحِقُّهٗ اَللّٰهُمَّ اِنْ تُعَذِّبْنِیْ فَبِذُنُوْبِیْ وَ لَمْ

मुसतहक़ नही हूँ और वो चीज़ तलब करता हूँ जिस का मै हक़दार नही हूँ। खुदाया अगर तू मुझको अज़ाब मे

تَظْلِمْنِیْ شَیْئًا وَّ اِنْ تَغْفِرْ لِیْ فَخَیْرُ رَاحِمٍ اَنْتَ یَا سَیِّدِیْ اَللّٰهُمَّ

मुब्तेला करेगा तो ये मेरे गुनाहों की वजह से होगा और तू कुछ भी ज़ुल्म न करेगा और अगर तु मुझको माफ़

اَنْتَ اَنْتَ وَ اَنَا اَنَا اَنْتَ الْعَوَّادُ بِالْمَغْفِرَةِ وَ اَنَا الْعَوَّادُ بِالذُّنُوْبِ

कर देगा तो तू बेहतरीन रहेम करने वाला है ऐ मेरे सरदार खुदाया तू तू है और मै मै हूँ तू बार बार बख़शिश

وَ اَنْتَ الْمُتَفَضِّلُ بِالْحِلْمِ وَ اَنَا الْعَوَّادُ بِالْجَهْلِ اَللّٰهُمَّ فَاِنِّیْ

का लौटाने वाला है और मै बार बार गुनाहों का दोहराने वाला हूँ और तू हिल्म के ज़रिए फ़ज़्ल करनेवाला है

اَسْئَلُكَ یَا كَنْزَ الضُّعَفَآءِ یَا عَظِیْمَ الرَّجَآءِ یَا مُنْقِذَ الْغَرْقٰی یَا

और मै बार बार जेहालत के ज़रिए लौटने वाला हूँ। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ कमज़ोरों के ख़जाने

مُنْجِحَ الْهَلْكٰی یَا مُمِیْتَ الْاَحْیَآءِ یَا مُحْیِیَ الْمَوْتٰی اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ

ऐ अज़ीम उम्मीद ऐ डूबने वालों को नजात देने वाले ऐ हलाक होने वालों को बचानेवाले ऐ ज़िन्दों को मौत

اِلَّا اَنْتَ اَنْتَ الَّذِیْ سَجَدَ لَكَ شُعَاعُ الشَّمْسِ وَ دَوِیُّ الْمَآءِ وَ

देनेवाले ऐ मुरदों को ज़िन्दगी देनेवाले तू खुदा है तेरे अलावा कोई माबूद नही है तुझ ही को सजदा किया है

حَفِیْفُ الشَّجَرِ وَ نُوْرُ الْقَمَرِ وَ ظُلْمَةُ اللَّیْلِ وَ ضَوْءُ النَّهَارِ وَ

सूरज की सोआओं, पानी के ज़मज़मे और नवाए दरख़्त और नूरे क़मर और तारीकीए शब और रौशनीए

خَفَقَانُ الطَّيْرِ فَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ يَا عَظِيْمُ بِحَقِّكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

राज़ और परवाज़े तैर ने तो मै तुझ से दरख़्वास्त करता हूँ खुदाया ऐ अज़ीम तेरे हक़ के वास्ते से मोहम्मद

اٰلِهِ الصَّادِقِيْنَ وَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الصَّادِقِيْنَ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ

और उन की सादिक़ आल के ऊपर और मोहम्मद और उनकी सच्ची आल के हक़ के वास्ते से तेरे ऊपर

عَلٰى عَلِيٍّ وَ بِحَقِّ عَلِيٍّ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ عَلٰى فَاطِمَةَ وَ بِحَقِّ فَاطِمَةَ

और तेरे हक़ के वास्ते से अली (अ) पर और अली के हक़ के वास्ते से तेरे ऊपर और तेरे हक़ के वास्ते से

عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ عَلَى الْحَسَنِ وَ بِحَقِّ الْحَسَنِ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ عَلَى

फ़ातेमा (स) पर और फ़ातेमा के हक़ के वास्ते से तेरे ऊपर और तेरे हक़ के वास्ते से हसन पर और हसन के

الْحُسَيْنِ وَ بِحَقِّ الْحُسَيْنِ عَلَيْكَ فَاِنَّ حُقُوْقَهُمْ عَلَيْكَ مِنْ

हक के वास्ते से तेरे ऊपर तेरे हक़ के वास्ते से हुसैन पर और हुसैन के हक़ के वास्ते से तेरे ऊपर इस लिए

اَفْضَلِ اِنْعَامِكَ عَلَيْهِمْ وَ بِالشَّانِ الَّذِىْ لَكَ عِنْدَهُمْ وَ بِالشَّانِ

के उन के हुक़ूक़ तेरे ऊपर तेरे बेहतरीन इनामात मे से हैं उनपर और उन की शान की वजह से जो तेरे लिए

الَّذِىْ لَهُمْ عِنْدَكَ صَلِّ عَلَيْهِمْ يَا رَبِّ صَلٰوةً دَآئِمَةً مُنْتَهٰى

उन के नज़दीक है और उस शान की वजह से जो उनके लिए तेरे नज़दीक है तो दुरूद नाज़ल कर उनपर ऐ

رِضَاكَ وَ اغْفِرْ لِىْ بِهِمُ الذُّنُوْبَ الَّتِىْ بَيْنَكَ وَ ارْضَ عَنِّىْ

मेरे परवरदिगार मुसलसल दुरूद जो तेरी मर्ज़ा की इन्तेहा है और उनके वासते से मेरे गुनाहों को बख़्श दे जो

خَلْقَكَ وَ اَتْمِمْ عَلَيَّ نِعْمَتَكَ كَمَا اَتْمَمْتَهَا عَلٰى اٰبَآئِيْ مِنْ قَبْلُ وَ

मेरे और तेरे दरमियान हैं और राज़ी कर दे मुझसे अपनी मख़लूक को और मुझपर अपनी नेमत को मुकम्मल

لَا تَجْعَلْ لِاَحَدٍ مِّنَ الْمَخْلُوْقِيْنَ عَلَيَّ فِيْهَا امْتِنَانًا وَ امْنُنْ عَلَيَّ

कर दे जिस तरह तूने उसको मुकम्मल किया है मेरे आबा पहले पर और मख़लूक़ मे से किसी एक का भी

كَمَا مَنَنْتَ عَلٰى اٰبَآئِيْ مِنْ قَبْلُ يَا كٓهٰيٰعٓصٓ اَللّٰهُمَّ كَمَا صَلَّيْتَ

एहसान मुझपर न क़रार दे और मुझपर एहसान कर जैसा तूने मेरे बाप पर एहसान किया है उस से पहले ऐ

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ فَاسْتَجِبْ لِيْ دُعَآئِيْ فِيْمَا سَئَلْتُ يَا كَرِيْمُ يَا

काफ़, हा, या, ऐन, स्वाद, ऐ खुदा जिस तरह तूने दुरूद नाज़ल किया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर तू मेरी

كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ.

दुआ को क़ुबूल कर ले जिसका मै ने सवाल किया ऐ करीम, ऐ करीम, ऐ करीम।

इसके बाद सजदे में जाकर कहे:

يَا مَنْ يَقْدِرُ عَلٰى حَوَآئِجِ السَّآئِلِيْنَ وَ يَعْلَمُ مَا فِيْ ضَمِيْرِ الصَّامِتِيْنَ

ऐ वो ज़ात जो सवाल करने वालों की हाजत बर आवरी पर क़ाबू है और ख़ामोश लोगों के फ़िज़्ज़मीर

يَا مَنْ لَا يَحْتَاجُ اِلَى التَّفْسِيْرِ يَا مَنْ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ مَا تُخْفِيْ

से वाक़िफ़ है ऐ वो जो तफ़सीर का मोहताज नही होता है ऐ वो जो निगाहों की ख़कयानत का आलम

الصُّدُوْرُ يَا مَنْ اَنْزَلَ الْعَذَابَ عَلٰى قَوْمِ يُوْنُسَ وَ هُوَ يُرِيْدُ اَنْ

है और दिलों के पोशीदा राज़ को जानता है। ऐ वो जिस ने क़ौमे यूनुस पर अज़ाब नाज़ल किया और

يُّعَذِّبَهُمْ فَدَعَوْهُ وَ تَضَرَّعُوْا اِلَيْهِ فَكَشَفَ عَنْهُمُ الْعَذَابَ وَ مَتَّعَهُمْ

वो उनको अज़ाब देना चाहता था के उन्होंने दुआ की और ज़ारी की तो उन से अज़ाब को दूर कर दिया

اِلٰى حِيْنٍ قَدْ تَرٰى مَكَانِيْ وَ تَسْمَعُ دُعَآئِيْ وَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَ عَلَانِيَتِيْ وَ

और उसके बाद उनको एक मुद्दत तक मुतमतअ किया। तू मेरी मनिज़ल को देखता है और मेरी दुआ

حَالِيْ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ مِنْ اَمْرِ دِيْنِيْ وَ

को सुनता है और मेरे ज़ाहिर व बातिन और हाले राज़ को जानता है तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व

دُنْيَايَ وَ اٰخِرَتِيْ.

आले मोहम्मद पर और मेरे तमाम दीन व दुनिया व आख़िरत के अहेम उमूर मे काफ़ी हो जा।

उसके बाद सत्तर बार कहे:

يَاسَيِّدِيْ

ऐ मेरे आक़ा।

फिर सजदे से सर उठाकर कहे:

يَا رِبِّ اَسْئَلُكَ بَرَكَةَ هٰذَا الْمَوْضِعِ وَ بَرَكَةَ اَهْلِهٖ وَ اَسْئَلُكَ اَنْ

ऐ मेरे सरदार, ऐ मेरे परवरदिगार मै तुझ से सवाल करता हूँ इस मकाम की बरकत का और मै

تَرْزُقَنِيْ مِنْ رِزْقِكَ رِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا تَسُوْقُهٗ اِلَيَّ بِحَوْلِكَ وَ قُوَّتِكَ وَ

तुझ से सवाल करता हूँ के मुझको पाकीज़ा हलाल रिज़्क़ देदे जो मुझ तक तेरी क़ुव्वत व ताक़त

اَنَا خَآئِضٌ فِيْ عَافِيَةٍ يَّآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

से पहुँचता है और मै आफ़ियत मे डूबा रहूँ, ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

लेखक: मज़ारे कदीम में इस जगह की दुआ में يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ के बाद और सजदे की दुआ से पहले यह दुआ भी मज़कूर है:

اَللّٰهُمَّ يَا مَنْ تُحَلُّ بِهٖ عُقَدُ الْمَكَارِهِ

ये सहीफ़े सज्जादिया की एक दुआ है और जिसका पहले ज़िक्र हो चुका है। इसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَ اَنْتَ عَلَّامُ

खुदाया तू जानता है और मै नही जानता हूँ और तू क़ादिर है और मै क़ादिर नही हूँ और तू ग़ैब

الْغُيُوْبِ صَلِّ اَللّٰهُمَّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْ لِيْ وَ

का जाननेवाला है। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और बख़्श दे मुझको

ارْحَمْنِيْ وَ تَجَاوَزْ عَنِّيْ وَ تَصَدَّقْ عَلَيَّ مَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ يَآ اَرْحَمَ

और मुझ पर रहेम कर और दर गुज़र कर ओर मुझको सदक़ा दे जिस का तू एहेल है। ऐ सब से

الرَّاحِمِيْنَ.

ज़्यादा रहेम करने वाले।

इसके बाद सजदे में जा कर यह दुआ पढ़ेः

يَامَنْ يَّقْدِرُ عَلٰى حَوَائِجِ السَّآئِلِيْنَ...

वाज़ेह रहे के अहादीस में इस सातवें सुतून के बेशुमार फ़ज़ाएल वारिद हुए हैं। शेख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ रिवायत की है के अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) इस सुतून के पास नमाज़ अदा किया करते थे और इतना करीब खड़े होते थे के दरमियान से सिर्फ़ एक बकरी गुज़र जाए। और दूसरी मोतबर रिवायत में है के हर रात साठ हज़ार फ़रिश्ते आसमान से नाज़ल होते हैं जो उस सातवें सुतून के पास नमाज़ पढ़ते हैं और दूसरी रात फिर दूसरे मलाएका उसी तादाद में नाज़ल होते हैं और फिर मशग़ूले इबादत हो जाते हैं।
हदीसे मोतबर में इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के सातवां सुतून मक़ामे हज़रत इब्राहिम (अ.स.) है। शेख़ कुलैनी ने काफ़ी में सनदे सहीह के साथ अबू इस्माईल सर्राज से रिवायत की है माविया बिन वहब ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा था के अबू हमज़ा सुमाली ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा था के असबग़ बिन नुबातह ने मेरा हाथ पकड़ कर सातवें सुतून का पता दिया था। और यह कहा था के यह सुतून मक़ामे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) है। आप यहाँ पर नमाज़ अदा किया करते थे। और इमाम हसन (अ.स.) सुतूने पंजुम के पास नमाज़ पढ़ते थे और जब अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) न होते थे तो इमाम हसन (अ.स.) उस जगह पर नमाज़ पढ़ते थे और यही बाबे किंदा से है। मुख़्तसर यह है के इस सुतून के फ़ज़ाएल बहुत हैं और बर बिनाए इख़्तेसार नक़्ल नहीं किये गए हैं।

पाँचवें सुतून के आमाल

वाज़ेह रहे के इस मस्जिद के मुम्ताज़ मक़ामात में से एक पाचवां सुतून भी

है जिसके पास नमाज़ अदा कर के परवरदिगार से हाजत तलब करना चाहिए इस लिए के मोतबर रिवायात में वारिद हुआ है के यह महले हज़रत इब्राहीम ख़लील (अ.स.) है।
और इसमें और दूसरी रिवायात में कोई टकराओ नहीं है बल्कि मुम्किन है के जनाबे इब्राहीम (अ.स.) ने हर जगह नमाज़ अदा की हो। और हदीसे मोतबर में इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के पाँचवा सुतून मक़ामे जिब्रईल (अ.स.) है और गुज़श्ता रिवायात से मालूम होता है के मक़ामे इमामे हसन (अ.स.) है।
गर्ज़ रिवायात से ज़ाहिर होता है के सातवां और पाँचवां सुतून यह दोनो मसाजिद के तमाम मक़ामात से बेहतर मकाम है।
सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के पाँचवें सुतून के पास दो रकत नमाज़ अदा करे और सलाम के बाद तसबीह पढ़े और कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِجَمِيۡعِ اَسۡمَآئِكَ كُلِّهَا مَا عَلِمۡنَا مِنۡهَا وَ مَا لَا

खुदाया मै सवाल करता हूँ तेरे उन तमाम नामो के ज़रिए जिस को मै जानता हूँ और जिन को नही जानता हूँ मै

نَعۡلَمُ وَ اَسۡئَلُكَ بِاسۡمِكَ الۡعَظِيۡمِ الۡاَعۡظَمِ الۡكَبِيۡرِ الۡاَكۡبَرِ

तुझसे दरख़्वासत करता हूँ तेरे अज़ीम बाअज़मत बड़े और सबसे बड़े नाम के ज़रिए जिस के ज़रिए जब किसी

الَّذِیۡ مَنۡ دَعَاكَ بِهٖ اَجَبۡتَهٗ وَ مَنۡ سَئَلَكَ بِهٖ اَعۡطَيۡتَهٗ وَ مَنۡ

ने तुझको पुकारा तो तूने जवाब दिया व जिस के ज़रिए जब किसी ने सवाल किया तो तूने अता किया व जिसके

اسۡتَنۡصَرَكَ بِهٖ نَصَرۡتَهٗ وَ مَنِ اسۡتَغۡفَرَكَ بِهٖ غَفَرۡتَ لَهٗ وَ مَنۡ

ज़रिए किसी ने नुसरत चाही तो तूने मदद की और जिसके ज़रिए किसी ने इस्तेग़फ़ार किया तो तूने बख़्श दिया

اسْتَعَانَكَ بِهٖ اَعَنْتَهٗ وَ مَنِ اسْتَرْزَقَكَ بِهٖ رَزَقْتَهٗ وَ مَنِ

और जिसके ज़रिए किसी ने मदद चाही तो तूने उसकी मदद की और जिस के ज़रिए किसी ने रिज़्क़ चाहा तो तूने

اسْتَعَاثَكَ بِهٖ اَغَثْتَهٗ وَ مَنِ اسْتَرْحَمَكَ بِهٖ رَحِمْتَهٗ وَ مَنِ

उसको रिज़्क़ दिया और जिसके ज़रिए किसी ने इस्तेग़ाफ़ार किया तो तूने फ़रयाद रसी की और जिसके ज़रिए

اسْتَجَارَكَ بِهٖ اَجَرْتَهٗ وَ مَنْ تَوَكَّلَ عَلَيْكَ بِهٖ كَفَيْتَهٗ وَ مَنِ

किसी ने तलबे रहेम किया तो तूने उसपर रहेम किया और जिसके ज़रिए किसी ने पनाह चाही तो तूने उसवा

اسْتَعْصَمَكَ بِهٖ عَصَمْتَهٗ وَ مَنِ اسْتَنْقَذَكَ بِهٖ مِنَ النَّارِ

पनाह दी ओर जिसके ज़रिए किसी ने तुझपर तवक्कुल किया तो उसके लिए तू काफ़ी हो गया और जिस के ज़रिए

اَنْقَذْتَهٗ وَ مَنِ اسْتَعْطَفَكَ بِهٖ تَعَطَّفْتَ لَهٗ وَ مَنْ اَمَّلَكَ بِهٖ

किसी ने हिफ़ाज़त चाही तो तूने उसकी हिफ़ाज़त की और जिसके ज़रिए किसी ने जहन्नम से रेहाई चाही तो तूने

اَعْطَيْتَهُ الَّذِیْ اتَّخَذْتَ بِهٖ اٰدَمَ صَفِيًّا وَّ نُوْحًا نَجِيًّا وَّ اِبْرَاهِيْمَ

उस को रेहाई दी और जिस के ज़रिए किसी ने महेरबानी तलब की तो तूने महेरबानी की और जिसके जरिए किसी

خَلِيْلًا وَّ مُوْسٰى كَلِيْمًا وَّ عِيْسٰى رُوْحًا وَّ مُحَمَّدًا حَبِيْبًا وَّ عَلِيًّا

ने उम्मीद लगाई तुझ से तो तूने उसको अता किया, ऐ वो ज़ात के तूने आदम को बरगुज़ीदा किया और नुह को

وَصِيًّا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَنْ تَقْضِيَ لِیْ حَوَآئِجِیْ وَ تَغْفِرَ

नजात याफ़ता किया और इब्राहीम (अ) को ख़लील बनाया और मूसा (अ) को कलीम और ईसा (अ) को रूहुल्लह

عَمَّا سَلَفَ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَ تَتَفَضَّلَ عَلَيَّ بِمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ لِجَمِيْعِ

और मोहम्मद (स) को हबीब और अली (अ) को वसी बनाया अल्लाह का दुरूद नाज़ल हो उन सब पर के तू मेरी

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ لِلدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَا مُفَرِّجَ هَمِّ

हाजतों को पूरा करदे और मेरे उन गुनाहों को माफ़ करदे जो मै ने पहले किए हैं और तू मुझपर फ़ज़्ल कर जिसका

الْمَهْمُوْمِيْنَ وَ يَا غِيَاثَ الْمَلْهُوْفِيْنَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ يَا

तू अहेल है और तमाम मोमिनीन व मोमिनात पर फ़ज़्ल कर दुनिया और आाख़िरत मे ऐ ग़मज़दों के ग़म के दूर

رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

करने वाले और ऐ शिकसता दिलों के फ़रयादरस तेरे अलावा कोई खुदा नही है, ऐ आलमीन के परवरदिगार।

इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के आपने अपने बाज़ असहाब से फ़रमाया के पाँचवें सुतून के पास दो रकत नमाज़ पढ़ो के वह मुसल्ल-ए-इब्राहीम है और उसके बाद कहो अस्सलामो अला अबीन आदम व उम्मेना हव्वा। यह वही दुआ है जो सातवें सुतून के पास रू ब क़िबला पढ़ी जाती है।

तीसरे सुतून के आमाल

मक़ामे इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.): इसके बाद मक़ामे इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) के पास जाए जो तीसरे सुतून के क़रीब है और बाबे किंदा की तरफ़ से यह जगह क़िबले की तरफ़ मुक़ाबिले दक्के बाबे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और मग़रिब की तरफ़ से बाबे किंदा के मुक़ाबिल थी जो बंद हो चुका है। कहा जाता है के मुनासिब है के नमाज़ सुतून से पाँच हाथ पीछे अदा की जाए के यह दक्का अस्ल में उसी जगह पर था। बहर हाल वहाँ पर दो रकत नमाज़ अदा करे हम्द और जिस सूरह के साथ चाहे। नमाज़ के

बाद तसबीह पढ़े और तसबीह के बाद कहे:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَللّٰهُمَّ اِنَّ ذُنُوْبِيْ قَدْ كَثُرَتْ وَ لَمْ

बख़्शने वाले महेरबान खुदा के नाम से खुदाया मेरे गुनाह ज़्यादा हैं और उनके लिए तेरी माफ़ी की उममीद के

يَبْقَ لَهَا اِلَّا رَجَآءُ عَفْوِكَ وَ قَدْ قَدَّمْتُ اٰلَةَ الْحِرْمَانِ اِلَيْكَ فَاَنَا

अलावा कुछ भी बाक़ी नही रहा और मैने अपनी महरूमी के असबाब को तेरी तरफ़ पेश कर दिया तो मै तुझ

اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ مَا لَا اَسْتَوْجِبُهٗ وَ اَطْلُبُ مِنْكَ مَا لَا اَسْتَحِقُّهٗ

से सवाल करता हूँ उसका जिसका मै मुसतहक नही हूँ और उस का मुतालेबा करता हूँ जिसका मै अहेल

اَللّٰهُمَّ اِنْ تُعَذِّبْنِيْ فَبِذُنُوْبِيْ وَ لَمْ تَظْلِمْنِيْ شَيْئًا وَّ اَنْ تَغْفِرْ لِيْ

नही हूँ। खुदा अगर तू मुझ को अज़ाब देगा तो मेरे गुनाहों की वजह से होगा और ये मेरे ऊपर तेरा ज़ुल्म न

فَخَيْرُ رَاحِمٍ اَنْتَ يَا سَيِّدِيْ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اَنْتَ وَ اَنَا اَنَا اَنْتَ الْعَوَّادُ

होगा और अगर तू मुझको बख़्श देगा तो तू बेहतरीन रहेम करने वाला है तो ऐ मेरे सरदार, खुदाया तू तू है

بِالْمَغْفِرَةِ وَ اَنَا الْعَوَّادُ بِالذُّنُوْبِ وَ اَنْتَ الْمُتَفَضِّلُ بِالْحِلْمِ وَ اَنَا

और मै मै हूँ तू बार बार मग़फ़ेरत करने वाला है और मै बार बार गुनाह करने वाला हूँ और तू हिल्म के ज़रिए

الْعَوَّادُ بِالْجَهْلِ اَللّٰهُمَّ فَاِنِّيْ اَسْئَلُكَ يَا كَنْزَ الضُّعَفَآءِ يَا عَظِيْمَ

फ़ज़्ल करनेवाला है और मै बार बार जेहालत की वजह से गुनाह करता हूँ। पस मै तुझ से सवाल करता हूँ

الرَّجَآءِ يَا مُنْقِذَ الْغَرْقٰى يَا مُنْجِيَ الْهَلَكٰى يَا مُمِيْتُ الْاَحْيَآءِ يَا مُحْيِيَ

ऐ कमज़ोरों के ख़जाने, ऐ अज़ीम तरीन उम्मीद, ऐ डूबनेवाले को नजात देनेवाले, ऐ हलाक होनेवाले को

الْمَوْتٰى اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَنْتَ الَّذِيْ سَجَدَ لَكَ

बचानेवाले, ऐ ज़िन्दों को मौत देनेवाले, ऐ मुरदों को ज़िन्दा करनेवाले तू वो खुदा है के तेरे अलावा कोई खुदा

شُعَاعُ الشَّمْسِ وَ نُوْرُ الْقَمَرِ وَ ظُلْمَةُ اللَّيْلِ وَ ضَوْءُ النَّهَارِ وَ

नही है तेरे ही लिए सजदा किया है सूरज की शोआ, चाँद के नूर और रात की तारीकी और दिन की रौशनी

خَفَقَانُ الطَّيْرِ فَاَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ يَا عَظِيْمُ بِحَقِّكَ يَا كَرِيْمُ عَلٰى

और परिंदों की परवाज ने तो मै तुझसे सवाल करता हूँ। खुदाया ऐ अज़ीम तेरे हक़ के वासते से ऐ करीम

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الصَّادِقِيْنَ وَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الصَّادِقِيْنَ عَلَيْكَ وَ

जो मोहम्मद और उनकी सच्ची आल पर है और मोहम्मद और उनकी सच्ची आल के हक़ के वासते से जो

بِحَقِّكَ عَلٰى عَلِيٍّ وَ بِحَقِّ عَلِيٍّ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ عَلٰى فَاطِمَةَ وَ بِحَقِّ

तुझ पर है और तेरे हक़ के वासते से अली (अ) पर और अली के हक़ के वासते से तुझ पर और तेरे हक़ के

فَاطِمَةَ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ عَلَى الْحَسَنِ وَ بِحَقِّ الْحَسَنِ عَلَيْكَ وَ

वासते से फ़ातेमा (स) पर और फ़ातेमा (स) के हक़ के वासते से तुझ पर और तेरे हक़ के वासते से हसन पर

بِحَقِّكَ عَلَى الْحُسَيْنِ وَ بِحَقِّ الْحُسَيْنِ عَلَيْكَ فَاِنَّ حُقُوْقَهُمْ مِنْ

और हुसैन (अ) के हक़ के वासते से तुझ पर और तेरे हक़ के वासते से हुसैन (अ) पर और हुसैन (अ) के

اَفْضَلِ اِنْعَامِكَ عَلَيْهِمْ وَبِالشَّاْنِ الَّذِىْ لَكَ عِنْدَهُمْ وَبِالشَّانِ

हक़ के वासते से तुझ पर क्योंके उन के हुक़ूक़ तेरे बेहतरीन इंनाम मे से है उन पर और उस शान की वजह

الَّذِىْ لَهُمْ عِنْدَكَ صَلِّ يَا رَبِّ عَلَيْهِمْ صَلٰوةً دَآئِمَةً مُّنْتَهٰى

से जो तेरे लिए उन के नज़दीक है और उस शान की वजह से जो उन की तेरे नज़दीक है ऐ परवरदिगार दुरूद

رَضَاكَ وَ اغْفِرْ لِىْ بِهِمُ الذُّنُوْبَ الَّتِىْ بَيْنِىْ وَ بَيْنَكَ وَ اَتْمِمْ

नाज़ल कर उन पर दाएमी दुरूद जिस मे तेरी इंतेहाई मर्ज़ा है और उन्ही के वासते से मेरे उन गुनाहों को बख़्श

نِعْمَتَكَ عَلَىَّ كَمَا اَتْمَمْتَهَا عَلٰى اٰبَآئِىْ مِنْ قَبْلُ يَا كٓهٰيٰعٓصٓ اَللّٰهُمَّ

दे जो मेरे और तेरे दरमियान हैं और अपनी नेमत को मुकम्मल कर दे जैसे के तूने मेरे आबा पर मुकम्मल

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ فَاسْتَجِبْ لِىْ دُعَآئِىْ فِيْمَا

किया है इस से क़ब्ल ऐ काफ़, हा, या, ऐन, स्वाद, खुदाया जिस तरह तू दुरूद नाज़िल करता है मोहम्मद व

سَئَلْتُكَ.

आले मोहम्मद पर मेरी दुआओं को क़ुबूल कर ले जिन का मैने तुझ से सवाल किया है।

इसके बाद सजदे में जाए और दाहने रूख़सार को ज़मीन पर रख कर कहे:

يَا سَيِّدِىْ يَا سَيِّدِىْ يَا سَيِّدِىْ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْ لِىْ وَ

ऐ मेरे सरदार, ऐ मेरे सरदार, ऐ मेरे सरदार दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको

اغْفِرْ لِيْ.

बख़्श दे और मुझको बख़्श दे।

इसी फिक़रे को मुसलसल दोहराता रहे और गिरया करता रहे।
इसके बाद बायां रूख़सार रख कर इन्हीं फ़िक्रों को दोहराए और फिर जो चाहे दुआ करे।

اِلٰهِيْ اِنْ كُنْتُ قَدْ عَصَيْتُكَ فَاِنِّيْ قَدْ اَطَعْتُكَ فِيْ اَحَبِّ الْاَشْيَآءِ

खुदाया अगर मैने तेरी मासियत की है तो मैने तेरी महबूब तरीन चीज मे इताअत भी की है के मैने

اِلَيْكَ لَمْ اَتَّخِذْ لَكَ وَلَدًا وَّ لَمْ اَدْعُ لَكَ شَرِيْكًا وَ قَدْ عَصَيْتُكَ فِيْ

तेरे लिए औलाद नही क़रार दी और तेरा शरीक किसी को नही बनाया और मैने तेरी मासियत

اَشْيَآءَ كَثِيْرَةٍ عَلٰى غَيْرِ وَجْهِ الْمُكَابَرَةِ لَكَ وَ لَا الْاِسْتِكْبَارِ عَنْ

की है बहुत सी चीजों मे लेकिन तकब्बुर की वजह से नही और न तेरी इबादत से सरकशी करते

عِبَادَتِكَ وَ لَا الْجُحُوْدِ لِرُبُوْبِيَّتِكَ وَ لَا الْخُرُوْجِ عَنِ الْعُبُوْدِيَّةِ لَكَ وَ

हुए और न तेरी रबूबियत का इन्कार करते हुए और न बंदगी से बाहर निकलते हुए बलके मैने

لٰكِنِ اتَّبَعْتُ هَوَايَ وَ اَزَلَّنِيَ الشَّيْطَانُ بَعْدَ الْحُجَّةِ وَ الْبَيَانِ فَاِنْ

ख़्वाहीशे नफ़्स का इत्तेबा किया और मुझको शैतान ने बहका दिया हुज्जत और दलील के बावजूद,

تُعَذِّبْنِيْ فَبِذُنُوْبِيْ غَيْرَ ظَالِمٍ اَنْتَ لِيْ وَ اِنْ تَعْفُ عَنِّيْ وَ تَرْحَمْنِيْ

पस अगर तू मुझको अज़ाब देगा तो मेरे गुनाहों की वजह से होगा तू मेरे लिए ज़ालिम न होगा और

فَبِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ يَا كَرِيْمُ.

अगर माफ़ कर देगा और रहेम करेगा तो अपने जुदो करम की वजह से होगा ऐ करीम।

और उसके बाद कहे:

غَدَوْتُ بِحَوْلِ اللهِ وَ قُوَّتِهٖ غَدَوْتُ بِغَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَ لَا قُوَّةٍ وَّ لٰكِنْ

मै ने अल्लाह की क़ुव्वत व ताक़त की वजह से सुबह की है मैने अपनी क़ुव्वत व ताक़त से सुबह नही की है

بِحَوْلِ اللهِ وَ قُوَّتِهٖ يَا رَبِّ اَسْئَلُكَ بَرَكَةَ هٰذَا الْبَيْتِ وَ بَرَكَةَ اَهْلِهٖ وَ

बलके अल्लाह की क़ुव्वत व ताक़त के ज़रिए, ऐ परवरदिगार मै तुझसे सवाल करता हूँ उस घर की बरकत का

اَسْئَلُكَ اَنْ تَرْزُقَنِيْ رِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا تَسُوْقُهٗ اِلَيَّ بِحَوْلِكَ وَ قُوَّتِكَ وَ

और घर वाले की बरकत का और मै तुझ से सवाल करता हूँ के तू मुझ को पाकीज़ा हलाल रिज़्क़ अता कर और

اَنَا خَافِضٌ فِيْ عَافِيَتِكَ.

उस रिज़्क़ को मुझ तक अपनी क़ुव्वत व ताक़त से पहुँचा दे और मै मुकम्मल तेरी आफ़ियत मे डूबा हुआ रहूँ।

शेख़ शहीद और मोहम्मद बिन मशहदी ने इस अमल को सहने मस्जिद के लिए चौथे सुतून के पास ज़िक्र किया है। जहाँ दो रकत में हम्द और तौहीद है और दो रकत में हम्द और इन्ना अन्ज़ल्ना है। और सलाम के बाद तसबीहे ज़हरा का भी ज़िक्र है। हदीसे मोतबर में अबू हमज़ा सुमाली से मनक़ूल है के एक दिन मैं मस्जिदे कूफ़ा में बैठा था। तो मैंने देखा के एक व्यक्ति बाबे किंदा से दाख़िल हुआ जो सब से ज़्यादा हसीनो खुबसूरत था।
बेहतरीन लिबास पहने हुए सर पर अमामा पैरों में नालैने अरबी। नालैन को

उतारने के बाद सातवें सुतून के पास खड़े होकर पहले तकबीर कही जिसको सुनकर मेरा बदन लरज़ गया। उसके बाद चार रकत नमाज़ अदा की। बेहतरीन रूकू और सुजूद के साथ। उसके बाद यह दुआ पढ़ी:

اِلٰهِی اَنْ کُنْتُ قَدْ عَصَیْتُکَ فَاِنِّیْ قَدْ اَطَعْتُکَ فِی اَحَبِّ الاَشْیَاءِ

मेरे खुदा अगर मैने तेरी ना- फ़रमानी की है तो बेशक मैने फ़रमाबरदारी की उसमे जो तेरे सबसे

اِلَیْکَ...

ज़्यादा बज़दीक है...

और یَا کَرِیْمُ یَا کَرِیْمُ یَا کَرِیْمُ तक पहोंचा तो सजदे में जाकर मुसलसल एक सांस तक या करीमो कहता रहा।
इसके बाद सजदे ही में یَا مَنْ یَقْدِرُ عَلٰی حَوَائِجِ السَّائِلِیْنَ... पढ़ा और सत्तर बार یَا سَیِّدِیْ कहा जिसका ज़िक्र सातवें सुतून के आमाल में किया जा चुका है।
उसके बाद जब सर उठाया तो मैंने बग़ौर देखा के यह इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) थे। मैंने आपके हाथों को बोसा दिया और पूछा के आप यहाँ क्यों तशरीफ़ लाए? फ़रमाया के उस काम के लिए जो तुमने देखा है। याने मस्जिदे कूफ़ा में नमाज़ के लिए। दूसरी रिवायत के जो सातवीं ज़ियारत के ज़ैल में नक़्ल की गई है उसमें है के आप अबू हमज़ा को अपने साथ अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ियारत के लिए ले गए।

आमाले बाबुल फ़रज मारूफ़ ब मक़ामे नूह

तीसरे सुतून से फ़ारिग़ होने के बाद दक्के बाबे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास जाए। जो उस दरवाज़े से मुत्तसिल है जो मस्जिद से अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के घर की तरफ़ जाता था। वहाँ चार रकत नमाज़ अदा करे। नमाज़ के बाद तसबीहे फ़ातेमा पढ़े और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اقْضِ حَاجَتِیْ یَا اَللّٰهُ یَا مَنْ لَا

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी हाजत को पूरा कर दे ऐ अल्लाह

یَخِیْبُ سَآئِلُهٗ وَ لَا یَنْفَدُ نَائِلُهٗ یَا قَاضِیَ الْحَاجَاتِ یَا مُجِیْبَ

ऐ वो खुदा जिस से सवाल करने वाला महरूम नही होता है और जिस का अतीया ख़त्म नही

الدَّعَوَاتِ یَا رَبَّ الْاَرَضِیْنَ وَ السَّمٰوَاتِ یَا كَاشِفَ الْكُرُبَاتِ یَا

होता है ऐ हाजतों के पूरा करने वाले ऐ दुआओं के क़ुबूल करने वाले ऐ ज़मीनों और आसमानों के

وَاسِعَ الْعَطِیَّاتِ یَا دَافِعَ النَّقِمَاتِ یَا مُبَدِّلَ السَّیِّئَاتِ حَسَنَاتٍ

परवरदिगार, ऐ ग़मों के दूर करने वाले, ऐ वसी अतीया देनी वाले ऐ उक़ूबत के दुर करने वाले ऐ

عُدْ عَلَیَّ بِطَوْلِكَ وَ فَضْلِكَ وَ اِحْسَانِكَ وَ اسْتَجِبْ دُعَآئِیْ فِیْمَا

बुराईयों को नेकीयों मे तबदील करने वाले मुझ पर करम कर अपने एहसान, फ़ज़्ल और करम

سَئَلْتُكَ وَ طَلَبْتُ مِنْكَ بِحَقِّ نَبِیِّكَ وَ وَصِیِّكَ وَ اَوْلِیَآئِكَ

से और मेरी दुआ को क़ुबूल कर जिस का मैने तुझ से सवाल किया है और जिस का मैने तुझसे

الصَّالِحِیْنَ.

मुतालेबा किया है अपने नबी और अपने वसी और अपने नेक वलीयों के वासते से।

इस मकाम पर एक और नमाज़ दो रकत है जिसमे नमाज़ के बाद तसबीहे फ़ातेमा पढ़े और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ حَلَلۡتُ بِسَاحَتِكَ لِعِلۡمِیۡ بِوَحۡدَانِیَّتِكَ وَ

खुदाया मै तेरी बारगाह मे आया हूँ मै वाक़फ़ हूँ तेरी वहदानियत और तेरी बेनियाज़ी से और ये के

صَمَدَانِیَّتِكَ وَ اَنَّهٗ لَا قَادِرَ عَلٰی قَضَآءِ حَاجَتِیۡ غَیۡرُكَ وَ قَدۡ

मेरी हाजत के पूरा करने पर तेरे अलावा कोई क़ादिर नही है और मै जानता हूँ के ऐ परवरदिगार

عَلِمۡتُ یَا رَبِّ اَنَّهٗ كُلَّمَا شَاهَدۡتُ نِعۡمَتَكَ عَلَیَّ اشۡتَدَّتۡ فَاقَتِیۡ

के जितना ज़्यादा अपने ऊपर नेमतों का मुशाहिदा करता हूँ मेरी एहतेयाज तेरी तरफ़ ज़्यादा होती

اِلَیۡكَ وَ قَدۡ طَرَقَنِیۡ یَا رَبِّ مِنۡ مُهِمِّ اَمۡرِیۡ مَا قَدۡ عَرَفۡتَهٗ لِاَنَّكَ

जाती है और मुझ को आमादा किया है ऐ परवरदिगार मेरे अहेम उमूर ने जिन को तू जानता है इस

عَالِمٌ غَیۡرُ مُعَلَّمٍ وَ اَسۡئَلُكَ بِالۡاِسۡمِ الَّذِیۡ وَضَعۡتَهٗ عَلَی

लिए के तू आलम है जिस को किसी ने सिखाया नही है और मै तुझ से सवाल करता हूँ उस नाम

السَّمٰوٰاتِ فَانۡشَقَّتۡ وَ عَلَی الۡاَرَضِیۡنَ فَانۡبَسَطَتۡ وَ عَلَی

के वासते से जिस को तूने आसमानों पर रखा तो वो शक़ हो गए और ज़मीनों पर रखा तो वो फैल

النُّجُوۡمِ فَانۡتَشَرَتۡ وَ عَلَی الۡجِبَالِ فَاسۡتَقَرَّتۡ وَ اَسۡئَلُكَ

गई और सितारों पर रखा तो वो मुन्तशिर हो गए और पहाड़ों पर रखा तो क़रार पा गए और मै तुझ

بِالۡاِسۡمِ الَّذِیۡ جَعَلۡتَهٗ عِنۡدَ مُحَمَّدٍ وَّ عِنۡدَ عَلِیٍّ وَّ عِنۡدَ الۡحَسَنِ وَ

से सवाल करता हूँ उस नाम के ज़रिए जिसको तूने मोहम्मद (स) और अली (अ) और हसन (अ)

عِنْدَ الْحُسَيْنِ وَ عِنْدَ الْاَئِمَّةِ كُلِّهِمْ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمْ

और हुसैन (अ) और तमाम अईम्मा (अ) के पास रखा है उन तमाम हज़रात पर अल्लाह का दुरूद

اَجْمَعِيْنَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَقْضِيَ لِيْ يَا رَبِّ

हो के त दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और ऐ परवरदेगार मेरी हाजत को पूरा

حَاجَتِيْ وَ تُيَسِّرَ عَسِيْرَهَا وَ تَكْفِيَنِيْ مُهِمَّهَا وَ تَفْتَحَ لِيْ قُفْلَهَا

कर दे और दुश्वार को आसान बना दे और अहेम हाजतों के लिए वास्ते काफ़ी हो जा और उन के

فَاِنْ فَعَلْتَ ذٰلِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَلَكَ الْحَمْدُ غَيْرَ

फ़ज़्ल को खोल दे और अगर तूने ऐसा कर दिया तो हम्द तेरे लिए है और अगर न किया तो भी

جَآئِرٍ فِيْ حُكْمِكَ وَلَا حَآئِفٍ فِيْ عَدْلِكَ.

तेरे लिए हम्द है तू अपने फ़ैसले मे ज़ालिम नही है और अपने अद्ल मे जाबिर नही है।

उसके बाद दाहिना रूख़सार ज़मीन पर रख कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ يُوْنُسَ بْنَ مَتّٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ عَبْدَكَ وَ نَبِيَّكَ دَعَاكَ فِيْ بَطْنِ

खुदाया यूनुस बिन मता (अ) तेरे बन्दा और तेरे नबी ने तुझको शिकमे माही मे पुकारा तो तूने

الْحُوْتِ فَاسْتَجَبْتَ لَهٗ وَ اَنَا اَدْعُوْكَ فَاسْتَجِبْ لِيْ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ

उनकी दुआ क़ुबूल कर ली और मै तुझको पुकार रहा हूँ तू मेरी दुआ सुन ले मोहम्मद व आले

اٰلِ مُحَمَّدٍ.

मोहम्मद के हक़ के वास्ते से।

उसके बदा जो चाहे दुआ करे।
उसके बाद बाएं रूख़सार को रख कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ اَمَرْتَ بِالدُّعَآءِ وَ تَكَفَّلْتَ بِالْاِجَابَةِ وَ اَنَا اَدْعُوْكَ كَمَا

खुदाया तू ने हुक्म दिया दुआ का और क़ुबूल करने का तू कफ़ील हुआ और मै तुझ को पुकार

اَمَرْتَنِیْ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ یَا

रहा हूँ जैसा के तूने हुक्म दिया है तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और क़ुबूल

كَرِیْمُ.

कर ले जिसका तूने मुझसे वादा किया है, ऐ करमवाले।

उसके बाद पेशानी को ख़ाक पर रखकर कहे:

یَا مُعِزَّ كُلِّ ذَلِیْلٍ وَ یَا مُذِلَّ كُلِّ عَزِیْزٍ تَعْلَمُ كُرْبَتِیْ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ

ऐ हर ज़लील को इज़्ज़त देने वाले और ऐ इज़्ज़त वाले को ज़लील करनेवाले तू मेरी मुसीबत को जानता

اٰلِهٖ وَ فَرِّجْ عَنِّیْ یَا كَرِیْمُ.

है तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मरे लिए कुशादगी पैदा कर ऐ करम वाले।

चार रकत नमाज़े हाजत

इस मकाम पर चार रकत नमाज़े हाजत भी है जिसमें नमाज़ के बाद तसबीहाते अरबा पढ़े और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُكَ یَا مَنۡ لَا تَرَاهُ الۡعُیُوۡنُ وَ لَا تُحِیۡطُ بِهِ الظُّنُوۡنُ وَ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ, ऐ वो खुदा जिस को आँखे नही देख पाती हैं और जिस का एहाता

لَا یَصِفُهُ الۡوَاصِفُوۡنَ وَ لَا تُغَیِّرُهُ الۡحَوَادِثُ وَ لَا تُفۡنِیۡهِ الدُّهُوۡرُ

गुमान नही कर पाते हैं और सिफ़त करने वाले सिफ़त नही कर सकते हैं और हवादिस जिस को बदलते

یَعۡلَمُ مَثَاقِیۡلَ الۡجِبَالِ وَ مَكَایِیۡلَ الۡبِحَارِ وَ وَرَقَ الۡاَشۡجَارِ وَ

नही हैं और ज़माने जिसको फ़ना नही करते हैं तू पहा□ड़ों के वज़न को जानता है और दरयाओं के पैमाना

رَمۡلَ الۡقِفَارِ وَ مَا اَضَآئَتۡ بِهِ الشَّمۡسُ وَ الۡقَمَرُ وَ اَظۡلَمَ عَلَیۡهِ

को और दरख़्तों के पत्तों को और बियाबान की रेग को और जिस पर सूरज और चाँद चमकते हैं उनको

اللَّیۡلُ وَ وَضَحَ بِهِ النَّهَارُ وَ لَا تُوَارِیۡ مِنۡكَ سَمَآءٌ سَمَآءً وَّ لَا اَرۡضٌ

और जिस पर रात तारीक होती है उसको और दिन जिसको रौशन करता है उसको और तुझ से एक

اَرۡضًا وَّ لَا جَبَلٌ مَّا فِیۡ اَصۡلِهٖ وَ لَا بَحۡرٌ مَّا فِیۡ قَعۡرِهٖ اَسۡئَلُكَ اَنۡ تُصَلِّیَ

आसमान दूसरे आसमान को नही छू सकता और न एक ज़मीन दुसरी ज़मीन को और न पहाड़ उसको

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَجْعَلَ خَيْرَ اَمْرِىْ اٰخِرَهٗ وَ خَيْرَ اَعْمَالِىْ

जो उस की जड़ मे है और न दरया उसको जो उस की तह मे है मै तुझ से सवाल करता हूँ के तू दुरूद

خَوَاتِيْمَهَا وَ خَيْرَ اَيَّامِىْ يَوْمَ اَلْقَاكَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर क़रार दे मेरे अम्र के आख़िर को बेहतर और मेरे आमाल

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَرَادَنِىْ بِسُوْءٍ فَاَرِدْهُ وَ مَنْ كَادَنِىْ فَكِدْهُ وَ مَنْ بَغَانِىْ

के लिए अंजाम बख़ैर कर और मेरे बेहतरीन आमाल को उस दिन जिस राज़ मै तुझ से मुलाक़ात करू

بِهَلَكَةٍ فَاَهْلِكْهُ وَ اكْفِنِىْ مَا اَهَمَّنِىْ مِمَّنْ اَدْخَلَ هَمَّهٗ عَلَىَّ اَللّٰهُمَّ

बेशक तू हर चीज पर क़ादिर है खुदाया जो मेरे साथ बुराई का इरादा करे तू उस के साथ वैसा ही इरादा

اَدْخِلْنِىْ فِىْ دِرْعِكَ الْحَصِيْنَةِ وَ اسْتُرْنِىْ بِسِتْرِكَ الْوَاقِىْ يَا مَنْ

कर और जो मेरे साथ धोका करे तू उसके साथ वैसा ही कर और जो मेरे साथ इरादा करे हलाकत का

يَكْفِىْ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ وَّ لَا يَكْفِىْ مِنْهُ شَىْءٌ اِكْفِنِىْ مَا اَهَمَّنِىْ مِمَّنْ

तू उस को हलाक कर और मेरे लिए काफ़ी हो जा हर अहेम काम मे जिस का ग़ाम मेरे क़रीब आए।

اَدْخَلَ هَمَّهٗ عَلَىَّ، اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنِىْ فِىْ دِرْعِكَ الْحَصِيْنَةِ، وَ اسْتُرْنِىْ

खुदाया मुझको अपने जाए मोहकम मे दाख़ल कर और मुझको छुपा ले अपने पर्दाए हिफ़ाजत मे, ऐ वो

بِسِتْرِكَ الْوَاقِىْ. يَا مَنْ يَكْفِىْ كُلَّ شَىْءٍ وَ لَا يَكْفِىْ مِنْهُ شَىْءٌ، اِكْفِنِىْ

खुदा जो सब के लिए किफ़ालत करता है और कोई चीज उसके एवज़ काफ़ी नही। तू मेरे लिए दुनिया

مِنْ اَمْرِ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ صَدِّقْ قَوْلِیْ وَ فِعْلِیْ یَا شَفِیْقُ یَا رَفِیْقُ

और आख़िरत के अहेम उमूर मे काफ़ी हो जा और मेरे लिए क़ौल व फ़ेल को मक़ामे सिद्क़ तक पहुँचा

فَرِّجْ عَنِّیْ الْمَضِیْقَ وَ لَا تُحَمِّلْنِیْ مَا لَا اُطِیْقُ اَللّٰهُمَّ احْرُسْنِیْ

दे ऐ शफ़ीक़, ऐ रफ़ीक़ मेरी तंगी को दूर कर और जिसकी ताक़त मै नही रखता उस का मुतहम्मिल न

بِعَیْنِكَ الَّتِیْ لَا تَنَامُ وَ ارْحَمْنِیْ بِقُدْرَتِكَ عَلَیَّ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ یَا

बना। खुदाया मेरी हिफ़ाज़त कर उस आँख के ज़रिए जो सोती नही है और अपनी क़ुदरत से मुझ पर

عَلِیُّ یَا عَظِیْمُ اَنْتَ عَالِمٌ بِحَاجَتِیْ وَ عَلٰی قَضَآءِهَا قَدِیْرٌ وَّ هِیَ لَدَیْكَ

रहेम कर ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले, ऐ बुलंद,ऐ अलीम तू मेरी हाजत का आलम है और उसके

یَسِیْرٌ وَّ اَنَا اِلَیْكَ فَقِیْرٌ فَمُنَّ بِهَا عَلَیَّ یَا كَرِیْمُ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

पूरा करने पर क़ादिर है और वो तेरे लिए आसान है और मै तेरा मोहताज हूँ तू मेरे ऊपर एहसान कर,

قَدِیْرٌ.

ऐ करीम तू हर चीज पर क़ादिर है।

उसके बाद सजदे में जाकर कहे:

اِلٰهِیْ قَدْ عَلِمْتَ حَوَآئِجِیْ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اقْضِهَا وَ

मेरे खुदा तू मेरी हाजतां का आलिम है तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उसको

قَدْ اَحْصَيْتَ ذُنُوْبِيْ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اغْفِرْهَا يَا

पुरा कर दे और तू ने मेरे गुनाहों को एहसार कर लिया है तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

كَرِيْمُ.

पर और उनको बख़्श दे ऐ करीम।

फिर दाहिने रूख़सार को रख कर कहे:

اِنْ كُنْتُ بِئْسَ الْعَبْدُ فَاَنْتَ نِعْمَ الرَّبُّ اِفْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَلَا

ऐ खुदा अगर मै बुरा बुन्दा हूँ तो तू बेहतरीन परवरदिगार है तू मेरे साथ वैसा कर जिस का तू सज़ावार है

تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और मेरे साथ वैसा न कर जिस का मै अहेल हूँ ऐ मेरे ज़्यादा रहेम करने वाले।

फिर बाएं रूख़सार को ज़मीन पर रख कर कहे:

اِلٰهِيْ اِنْ عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ.

खुदाया अगर तेरे बन्दे का गुनाह अज़ीम है तो तेरे पास से माफ़ी भी बेहतरीन होनी चाहिए ऐ करीम।

फिर पेशानी का रख कर कहे:

اِرْحَمْ مَنْ اَسَآءَ وَاقْتَرَفَ وَاسْتَكَانَ وَاعْتَرَفَ.

तू रहेम कर उसपर जिसने बुराई की और गुनाह मे डूब गया व क़ुबूल की और एतेराफ़ किया।

यह दुआ वि॰ग़फ़रहा या करीमो वही दुआ है जो मज़ारे क़दीम में मस्जिदे सहला के सहेन में माक़मे इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) के बारे में नक़्ल हुई है।

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की मेहराब के आमाल

इस जगह पर दो रकत नमाज़ अदा करे के यहाँ अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के सर पर ज़र्बत लगी थी। दो रकत नमाज़ के बाद तसबीह पढ़े और यह कहे:

يَا مَنْ اَظْهَرَ الْجَمِيْلَ وَسَتَرَ الْقَبِيْحَ يَا مَنْ لَّمْ يُؤَاخِذْ بِالْجَرِيْرَةِ وَلَمْ

ऐ वो खुदा जिस ने अच्छाई को ज़ाहिर किया और बुराई को छुपा दिया। ऐ वो जिस ने गुना का मवाख़ेजा

يَهْتِكِ السِّتْرَ وَالسَّرِيْرَةَ يَا عَظِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا وَاسِعَ

नही किया और गुनाहगारों की पर्दा दरी नही की, ऐ अज़ीम माफ़ी वाले ऐ बेहतरीन दर गुज़रवाले, ऐ वसी

الْمَغْفِرَةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ يَا صَاحِبَ كُلِّ نَجْوٰى يَا مُنْتَهٰى

मग़िफ़रत वाले ऐ रहमत के साथ हाथ बढ़ाने वाले, ऐ हर नजवा के राज़दार, ऐ हर शिकायत की इन्तेहा

كُلِّ شَكْوٰى يَا كَرِيْمَ الصَّفْحِ يَا عَظِيْمَ الرَّجَآءِ يَا سَيِّدِيْ صَلِّ عَلٰى

ऐ करीम बख़्शने वाले, ऐ अज़ीम उम्मीद, ऐ मेरे सरदार दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّافْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ يَا كَرِيْمُ.

और मेरे साथ वो बरताव कर जिसका तू अहेल है, ऐ करम वाले खुदा।

मुनाजाते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُكَ الۡاَمَانَ یَوۡمَ لَا یَنۡفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوۡنَ اِلَّا مَنۡ

खुदाया मै तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ उस रोज़ के आमान की जिस दिन माल व औलाद फ़ाएदा न देंगे

اَتَی اللّٰهَ بِقَلۡبٍ سَلِیۡمٍ وَ اَسۡئَلُكَ الۡاَمَانَ یَوۡمَ یَعَضُّ الظَّالِمُ

सिवाए जो खुदा के पास आए क़लबे सलीम के साथ व मै तुझसे सवाल करता हूँ उस दिनके आमान

عَلٰی یَدَیۡهِ یَقُوۡلُ یَا لَیۡتَنِیۡ اتَّخَذۡتُ مَعَ الرَّسُوۡلِ سَبِیۡلًا وَ

का जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ काट रहा होगा व कहता होगा के काश मैने रसूले खुदा के साथ

اَسۡئَلُكَ الۡاَمَانَ یَوۡمَ یُعۡرَفُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ بِسِیۡمَاهُمۡ فَیُؤۡخَذُ

रासता लिया होता और मै सवाल करता हूँ उस दिन के अमान का जिस दिन मु□ाम अपनी अलामतों

بِالنَّوَاصِیۡ وَ الۡاَقۡدَامِ وَ اَسۡئَلُكَ الۡاَمَانَ یَوۡمَ لَا یَجۡزِیۡ وَالِدٌ

से पहेचान लिए जाएगें और पेशानी व क़दमो के साथ पकड़ लिए जाएगें और मै सवाल करता हूँ उस

عَنۡ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوۡلُوۡدٌ هُوَ جَازٍ عَنۡ وَالِدِهٖ شَیۡئًا اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ

दिनके अमान का जिस राज़ वालि अपनी औलाद के लिए बदला न होगा और न बच्चा अपने बाप के

وَّ اَسۡئَلُكَ الۡاَمَانَ یَوۡمَ لَا یَنۡفَعُ الظَّالِمِیۡنَ مَعۡذِرَتُهُمۡ وَ لَهُمُ

लिए कोई काम आएगा बेशक खुदा का वादए हक़ है और मै सवाल करता हूँ उस दिन के अमान का

اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ وَ اَسْئَلُكَ الْاَمَانَ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ

जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़ेरत फ़ाएदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए

نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَّ الْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلّٰهِ وَ اَسْئَلُكَ الْاَمَانَ يَوْمَ

बदतरीन घर होगा और मै सवाल करता हूँ उस दिन के अमान का जिस दिन कोई नफ़्स किसी नफ़्स

يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ وَ اُمِّهٖ وَ اَبِيْهِ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ بَنِيْهِ لِكُلِّ امْرِءٍ

का कुछ भी साहेबे इख़्तियार न होगा और हुकुम उस दिन पस खुदा के लिए होगा और मै सवाल करता

مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ وَ اَسْئَلُكَ الْاَمَانَ يَوْمَ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ

हूँ उस राज़ के अमान का जिस दिन इन्सान अपने भाई, माँ, बाप, औरत और औलाद से भाग रहा

لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمَئِذٍ بِبَنِيْهِ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِ وَ

होगा उस राज़ हर आदमी की अपनी मशग़ुलियत अपने मे दुसरे से बेगाना अजनबी बना देगी और मै

فَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُؤْوِيْهِ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ كَلَّآ

सवाल करता हूँ के उस दिन के अमान का जिस दिन काफ़र मुजरिम तमन्ना करेगा के काश उस दिन

اِنَّهَا لَظٰى نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى مَوْلَايَ يَا مَوْلَايَ اَنْتَ الْمَوْلٰى وَ اَنَا

के अज़ाब से अपनी औलाद औरत और भाई और ख़ानदान को अपना फ़िदया क़रार दे देता और वो

الْعَبْدُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْعَبْدَ اِلَّا الْمَوْلٰى مَوْلَايَ يَا مَوْلَايَ اَنْتَ

उस की हिमायत करते और उन सब को फ़िदया क़रार दे देता जो तमाम रूए ज़मीन पर हैं और अज़ाब

الْمَالِكُ وَ اَنَا الْمَمْلُوْكُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْمَمْلُوْكَ اِلَّا الْمَالِكُ مَوْلَایَ

से नजात पा जाता हरगिज़ नही नजात पाएगा आतिशे जहन्नम शोला वर है भड़क रही है ताके जला दे

يَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ وَ اَنَا الذَّلِيْلُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الذَّلِيْلَ اِلَّا

ऐ मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू मौला है और मै बन्दा हूँ ओर बन्दे पर मौला के अलावा कौन रहेम करेगा।

الْعَزِيْزُ مَوْلَایَ يَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْخَالِقُ وَ اَنَا الْمَخْلُوْقُ وَ هَلْ يَرْحَمُ

ऐ मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू मालिक है और मै ममलूक हूँ और मालिक के सिवा ममलूक पर कौन रहेम

الْمَخْلُوْقَ اِلَّا الْخَالِقُ مَوْلَایَ يَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْعَظِيْمُ وَ اَنَا

करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू इज़्ज़त व एक़तेदार वाला है और मै ज़िल्लत व रूसवाई वाला और ज़लील

الْحَقِيْرُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْحَقِيْرَ اِلَّا الْعَظِيْمُ مَوْلَایَ يَا مَوْلَایَ اَنْتَ

पर सिवाए इज़्ज़त वाले के कौन रहेम करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू ख़लिक़ है और मै मख़लूक़ हूँ और

الْقَوِيُّ وَ اَنَا الضَّعِيْفُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الضَّعِيْفَ اِلَّا الْقَوِيُّ مَوْلَایَ

मख़लूक़ पर ख़ालिक के सिवा कौन रहेम करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू अज़ीम है और मै हक़ीर हूँ और

يَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْغَنِيُّ وَ اَنَا الْفَقِيْرُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْفَقِيْرَ اِلَّا الْغَنِيُّ

हक़ीर पर सिवाए अज़ीम के कौन रहेम करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू अज़ीम है और मै हक़ीर हूँ और

مَوْلَایَ يَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْمُعْطِيْ وَ اَنَا السَّآئِلُ وَ هَلْ يَرْحَمُ السَّائِلَ

हक़ीर पर सिवाए अज़ीम के कौन रहेम करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू ताक़तवर है और मै कमज़ोर हूँ

اِلَّا الْمُعْطِیْ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْحَیُّ وَ اَنَا الْمَیِّتُ وَ هَلْ یَرْحَمُ

और कमज़ोर पर ताक़तवर के अलावा कौन रहेम करेगा। मौला ऐ मेरे मौला तू मालदार है और मै

الْمَیِّتَ اِلَّا الْحَیُّ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْبَاقِیْ وَ اَنَا الْفَانِیْ وَ هَلْ

मोहताज हूँ और मोहताज पर सिवाए मालदार के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू अता करने

یَرْحَمُ الْفَانِیَ اِلَّا الْبَاقِیْ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الدَّآئِمُ وَ اَنَا

वाला है और मै साएल हूँ और साएल पर सिवाए अता करनेवाले के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ

الزَّآئِلُ وَ هَلْ یَرْحَمُ الزَّآئِلَ اِلَّا الدَّآئِمُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ

मरे मौला तू ज़िन्दा है मै मुर्दा हूँ और मुर्दा पर कौन रहेम करेगा सिवाए ज़िन्दा के। मेरे मौला ऐ मेरे मौला

الرَّازِقُ وَ اَنَا الْمَرْزُوْقُ وَ هَلْ یَرْحَمُ الْمَرْزُوْقَ اِلَّا الرَّازِقُ مَوْلَایَ

तू बाक़ी है और मै फ़ानी हूँ और फ़ानी पर सिवाए बाक़ी के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू

یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْجَوَادُ وَ اَنَا الْبَخِیْلُ وَ هَلْ یَرْحَمُ الْبَخِیْلَ اِلَّا

हमेशा रहने वाला है और मै मिटने वाला हूँ और मिटने वाले पर सिवाए बाक़ी रहनेवाले के कौन रहेम

الْجَوَادُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْمُعَافِیْ وَ اَنَا الْمُبْتَلٰی وَ هَلْ یَرْحَمُ

करेगा। मेरे मौला, ऐ मेरे मौला तू राज़क है और मै मरज़ूक़ और मरज़ूक़ पर कौन रहेम करेगा सिवाए

الْمُبْتَلٰی اِلَّا الْمُعَافِیْ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْکَبِیْرُ وَ اَنَا الصَّغِیْرُ

राज़क के। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू सख़ी है और मै बख़ील और कौन बख़ील पर सिवाए सख़ी के रहेम

وَهَلْ يَرْحَمُ الصَّغِيْرَ اِلَّا الْكَبِيْرُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْهَادِیْ وَ

करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू आाफ़ियत बख़्शने वाला है और मै दर्दमंद हूँ और दर्दमंद पर सिवाए

اَنَا الضَّآلُّ وَ هَلْ يَرْحَمُ الضَّآلَّ اِلَّا الْهَادِیْ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ

आाफ़ियत बख़्श के कौन रहेम करेगा। मेरे मौल मेरे मौला तू बड़ा हे और मै छोटा और छोटे पर सिवाए

اَنْتَ الرَّحْمٰنُ وَ اَنَا الْمَرْحُوْمُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْمَرْحُوْمَ اِلَّا الرَّحْمٰنُ

बड़े के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू हादी है और मै गुम्राह और गुम्राह पर सिवाए हादी

مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ السُّلْطَانُ وَ اَنَا الْمُمْتَحَنُ وَ هَلْ يَرْحَمُ

के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू रहमान है और मै क़ाबिले रहेम और क़ाबिले रहेम पर

الْمُمْتَحَنَ اِلَّا السُّلْطَانُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الدَّلِيْلُ وَ اَنَا

सिवाए रहमान के कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू बादशाह है और मै मुबतेलाए मुसीबत

الْمُتَحَيِّرُ وَهَلْ يَرْحَمُ الْمُتَحَيِّرَ اِلَّا الدَّلِيْلُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ

और मुबतेलाए मुसीबत पर बादशाह के अलावा कौन रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू रहबर है

الْغَفُوْرُ وَ اَنَا الْمُذْنِبُ وَهَلْ يَرْحَمُ الْمُذْنِبَ اِلَّا الْغَفُوْرُ مَوْلَایَ یَا

और मै सरगरदाँ और क्या सरगरदाँ पर और कोई रहेम करेगा सिवाए रहबर के। मेरे मौला ऐ मेरे मौला

مَوْلَایَ اَنْتَ الْغَالِبُ وَ اَنَا الْمَغْلُوْبُ وَ هَلْ يَرْحَمُ الْمَغْلُوْبَ اِلَّا

तू बख़्शने वाला है और मै गुनाहगार हूँ और कया गुनाहगार पर सिवाए बख़्शने वाले के कोई और रहेम

الْغَالِبُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الرَّبُّ وَ اَنَا الْمَرْبُوْبُ وَ هَلْ یَرْحَمُ

करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू ग़ालिब है और मै मग़लूब हूँ और क्या मग़लूब पर ग़ालिब के अलावा

الْمَرْبُوْبَ اِلَّا الرَّبُّ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ اَنْتَ الْمُتَکَبِّرُ وَ اَنَا

कोई और रहेम करेगा। मेरे मौला, ऐ मेरे मौला तू परवरदिगार है और मै पाला हुआ और क्या पाले हुए

الْخَاشِعُ وَ هَلْ یَرْحَمُ الْخَاشِعَ اِلَّا الْمُتَکَبِّرُ مَوْلَایَ یَا مَوْلَایَ

पर पालने वाले के अलावा कोई और रहेम करेगा। मेरे मौला ऐ मेरे मौला तू साहेबे किब्रियाई है और

ارْحَمْنِیْ بِرَحْمَتِكَ وَ ارْضَ عَنِّیْ بِجُوْدِكَ وَ کَرَمِكَ وَ فَضْلِكَ یَا ذَ

मै ख़ाशे हूँ और क्या साहेबे किब्रेयाई के अलावा ख़ाशे पर कोई और रहेम करेगा मेरे मौला ऐ मेरे मौला

الْجُوْدِ وَ الْاِحْسَانِ وَ الطَّوْلِ وَ الْاِمْتِنَانِ بِرَحْمَتِكَ یَآ اَرْحَمَ

मुझ पर रहेम कर अपनी रहमत से और मुझ से राज़ी हो जा अपने जूदो करम व फ़ज़्ल व एहसान से।ऐ

الرَّاحِمِیْنَ.

जूदो एहसान, फ़ज़्ल व नेमतवाले अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

लेखक: सय्यद इब्ने ताऊस ने इस नमाज़ के बाद आं हज़रत (अ.स.) से एक लंबी दुआ भी नक़्ल की है जिसको दुआए अमान का नाम दिया है जिसकी इस मकाम पर गुंजाइश नहीं है। इसके अलावा वह दुआ भी पढ़ी जा सकती है जो मस्जिदे ज़ैद में पढ़ी जाएगी और वाज़ेह रहे के हमने इस इख़्तेलाफ़ की तरफ़ हदियतुज़ ज़ाएर में इशारा कर दिया है के यह मेहराब जो महल्ले ज़र्बत है यह वही मेहराब है या वह मेहराब जो तर्क हो गई है। लेहाज़ा तरीका एहतियात यही है के आमाले मेहराब को दोनों जगह अंजाम दे या कभी यहाँ

अंजाम दे और कभी वहाँ ताके दोनो के बरकात को हासिल कर ले।

इमाम सादिक़ (अ.स.) के मकाम के आमाल

उसके बाद मक़ामे इमाम सादिक़ (अ.स.) के पास जाए जो मुस्लिम बिन अक़ील के रौज़े के क़रीब है और वहाँ दो रकत नमाज़ अदा करे। सलाम के बाद तसबीह पढ़े और फिर कहे:

يَا صَانِعَ كُلِّ مَصْنُوْعٍ وَ يَاجَابِرَ كُلِّ كَسِيْرٍ وَ يَا حَاضِرَ كُلِّ مَلَاءٍ وَ يَا

ऐ हर बनी हुई चीज के बनाने वाले और ऐ हर शिकस्ता के जिबरान करलनेवाले और ऐ हर मजमे मे हाज़र

شَاهِدَ كُلِّ نَجْوٰى وَ يَا عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ وَ يَا شَاهِدًا غَيْرَ غَآئِبٍ وَّ يَا

और ऐ हर नजवा के गवाह और ऐ मख़फ़ी के जानने वाले और ऐ वो हाज़र जो ग़ाएब नही और ऐ वो ग़ाएब जो

غَالِبًا غَيْرَ مَغْلُوْبٍ وَّ يَا قَرِيْبًا غَيْرَ بَعِيْدٍ وَّ يَا مُؤْنِسَ كُلِّ وَحِيْدٍ وَّ يَا

मग़लूब नही और ऐ क़रीब जो के बईद नही है और ऐ हर तन्हा के मोनिस और ऐ ज़िन्दा जब उसके अलावा

حَيًّ حِيْنَ لَا حَيَّ غَيْرُهٗ يَا مُحْيِيَ الْمَوْتٰى وَ مُمِيْتَ الْاَحْيَآءِ الْقَآئِمَ عَلٰى كُلِّ

कोई ज़िन्दा नही रहे, ऐ मुर्दों को ज़िन्दा करनेवाले और ज़िन्दों को मौत देनेवाले और हर नफ़्स के आमाल की

نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ.

निगरानी करने वाले तेरे अलावा कोई खुदा नही है तू दुरूद नाज़िल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर।

लेखक का बयान है के मैं पहले भी कह चुका हूँ और दोबारा फिर कह रहा हूँ के मज़ारे क़दीम और लोगों के दरमियान आमाले मस्जिद की तरतीब में मशहूर यह है के इस जगह के बाद आमाले दक्कतुल कज़ा और आमाले बैतुत

तश्त बजा लाए।
जिसको हमने मिस्बाहुज़ ज़ाएर और बिहार वगैरह के मुताबक चौथे सुतून के बाद नक़्ल किया है लेहाज़ा यह भी हो सकता है के बतौरे मशहूर अमल किया जाए और दोनो जगहों के आमाल बाद में बजा लाए जाएं।

मस्जिदे कूफ़ा में नमाज़े हाजत

इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के अगर कोई व्यक्ति मस्जिदे कूफ़ा में दो रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत में हम्द के बाद दोनो क़ुल सूरह तौहीद और काफ़ेरून, सूरह नस्र, सूरह क़द्र और सूरह आला पढ़े, सलाम के बाद तसबीहे ज़हरा पढ़े और उसके बाद खुदा से हाजत तलब करे, परवरदिगार उसकी हाजत को पूरा कर देगा और दुआओं को क़ुबूल कर लेगा।
सूरों की यह तरतीब सय्यद इब्ने ताऊस की रिवायत के मुताबिक़ है वरना शेख़ तूसी ने अमाली में सूरह क़द्र को सब्बे इस्म के बाद नक़्ल किया है और शायद किसी तरतीब की कोई ज़रूरत भी न हो और सूरह हम्द के बाद यह सातों सूरे पढ़ लिए जाएं तो यही काफ़ी है।

हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील की ज़ियारत

मस्जिदे कूफ़ा के आमाल से फ़ारिग़ होने के बाद जनाबे मुस्लिम की तरफ़ जाए और वहाँ खड़े हो कर कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمَلِكِ الْحَقِّ الْمُبِيْنِ وَ الْمُتَصَاغِرِ لِعَظَمَتِهٖ جَبَابِرَةُ

हम्द उस खुदा के लिए है जो मालिक है हक़ है ज़ाहिर है उसकी अज़मत के सामने सरकश व जाबिर

الطَّاغِيْنَ الْمُعْتَرِفِ بِرُبُوْبِيَّتِهٖ جَمِيْعُ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرَضِيْنَ

जलील हैं व उसकी रबुबियत का एतेराफ़ किया है तमाम आसमानों व ज़मीनों के रहनेवालों ने व उसकी

الْمُقِرِّ بِتَوْحِيْدِهٖ سَآئِرُ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِ

वहदानियत का इक़रार किया है तमाम मख़लूक़ ने व अल्लाह का दुरूद हो मख़लूक़ात के सरदार और

الْاَنَامِ وَ اَهْلِ بَيْتِهِ الْكِرَامِ صَلَاةً تَقَرُّ بِهَا اَعْيُنُهُمْ وَ تَرْغَمُ بِهَآ

उनके मुकर्रम अहलेबैत (अ) पर ऐसा दुरूद जिससे उन को सुकून मितला हो और तमाम जिन व इन्स

اَنْفُ شَانِئِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اَجْمَعِيْنَ سَلَامُ اللّٰهِ الْعَلِيِّ

मे से उन के हर दुश्मन की नाक रगड़ी जाती हो और अल्लाह का सलाम हो जो बुलंद व अज़ीम है और

الْعَظِيْمِ وَ سَلَامُ مَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَنْبِيَآئِهِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ

सलाम हो मलाएका मुकर्रेबीन और उस के अंबिया मुर्सलीन और मुनताख़िब आईम्मा और नेक बन्दों

اَئِمَّتِهِ الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ عِبَادِهِ الصّٰلِحِيْنَ وَ جَمِيْعِ الشُّهَدَآءِ وَ

का और तमाम शोहदा और सिद्दीक़ीन और पाक व पाकीज़ा अफ़राद का हर सुबह और हर शाम को

الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الزَّاكِيَاتُ الطَّيِّبَاتُ فِيْمَا تَغْتَدِيْ وَ تَرُوْحُ عَلَيْكَ

आप पर ऐ मुसलिम बिन अक़ील बिन अबी तालिब और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मै गवाही

يَا مُسْلِمَ بْنَ عَقِيْلِ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَشْهَدُ

देता हूँ के आपने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अमर बिलमारूफ़ और नही अनिल

اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

मुनकर किया और जिहाद की राहे खुदा मे जो जेहाद का हक़ था और आप शहीद होने मुजाहेदीन राहे

نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ وَ قُتِلْتَ عَلٰى

खुदा के तरिक़े पर यहाँ तक के आपने मुलाक़ात की अल्लाह अ०ज़्जो जल से जब के वो राज़ी था और

مِنْهَاجِ الْمُجَاهِدِيْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ حَتّٰى لَقِيْتَ اللهَ عَزَّ وَ جَلَّ وَ هُوَ

मै गवाही देता हूँ के आप ने अल्लाह का वादा पूरा किया और अपनी जान क़ुर्बान कर दी हुज़ते खुदा की

عَنْكَ رَاضٍ وَّ اَشْهَدُ اَنَّكَ وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللهِ وَ بَذَلْتَ نَفْسَكَ فِيْ

नुसरत की राह मे और हुज़ते खुदा के फ़रज़ंद की नुसरत मे यहाँ तक के आपको मौत आ गई। मै गवाही

نُصْرَةِ حُجَّتِهٖ وَ ابْنِ حُجَّتِهٖ حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ اَشْهَدُ لَكَ بِالتَّسْلِيْمِ

देता हूँ आप के लिए तसलीम की और वफ़ा व नसीहत की रसूल स.व. के ख़लफ़ और मुनताख़िब

وَ الْوَفَآءِ وَ النَّصِيْحَةِ لِخَلَفِ النَّبِيِّ الْمُرْسَلِ وَ السِّبْطِ الْمُنْتَجَبِ

नूर और रहनुमाए आलम और वसीए मुबल्लीग़ और मज़लूम शहीद के लिए। तो खुदा आपको जज़ा

وَ الدَّلِيْلِ الْعَالِمِ وَ الْوَصِيِّ الْمُبَلِّغِ وَ الْمَظْلُوْمِ الْمُهْتَضَمِ

दे अपने रसूल की तरफ़ से और अमीरल मोमिनीन और इमामे हसन और इमामे हुसैन की तरफ़ से

فَجَزَاكَ اللهُ عَنْ رَسُوْلِهٖ وَ عَنْ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ عَنِ الْحَسَنِ وَ

बेहतरीन जज़ा के आपने सब्र किया और बरदाश्त किया और मदद की तो आख़िरत का घर बेहतरीन

الْحُسَيْنِ اَفْضَلَ الْجَزَآءِ بِمَا صَبَرْتَ وَ احْتَسَبْتَ وَ اَعَنْتَ

घर है। खुदा की लानत हो उसपर जिसने आप को क़त्ल किया और खुदा की लानत हो उसपर जिसने

فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ لَعَنَ اللهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ اَمَرَ

क़त्ल का हुकुम दिया और लानत खुदा की उसपर जिसने आप पर ज़ुल्म किया और खुदा की लानत

بِقَتْلِكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ ظَلَمَكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنِ افْتَرٰى عَلَيْكَ وَ

उसपर जिसने आप पर बोहतान बांधा और खुदा की लानत उसपर जो आपके हक से जाहिल रहा और

لَعَنَ اللهُ مَنْ جَهِلَ حَقَّكَ وَ اسْتَخَفَّ بِحُرْمَتِكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ

आप की हुरमत को सुबुक समझा और खुदा की लानत उसपर जिसने आपकी बैअत की और धोका

بَايَعَكَ وَ غَشَّكَ وَ خَذَلَكَ وَ اَسْلَمَكَ وَ مَنْ اَلَبَّ عَلَيْكَ وَ لَمْ

दिया और आपको छोड़ दिया और आपको दुश्मन के हवाले कर दिया और आपके मुक़ाबले मे दुश्मन

يُعْنِكَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ النَّارَ مَثْوٰهُمْ وَ بِئْسَ الْوِرْدُ

का साथ दिया और आपकी मदद न की। हम्द है खुदा के लिए जिसने जहन्नम को उनका ठिकाना बनाया

الْمَوْرُوْدُ اَشْهَدُ اَنَّكَ قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا وَّ اَنَّ اللهَ مُنْجِزٌ لَّكُمْ مَا

जो बदतरीन वरूद का मकाम है। मै गवाही देता हूँ के आप मज़लूम क़त्ल किए गए और बेशक खुदा

وَعَدَكُمْ جِئْتُكَ زَآئِرًا عَارِفًا بِحَقِّكُمْ مُسَلِّمًا لَّكُمْ تَابِعًا

पूरा करनेवाला है उसका जो आपसे वादा किया है मै आपका ज़ाएर और आपके हक़ का आरिफ़ और

لِسُنَّتِكُمْ وَ نُصْرَتِىْ لَكُمْ مُعَدَّةٌ حَتّٰى يَحْكُمَ اللهُ وَ هُوَ خَيْرُ

आपकी बारगाह मे सर तसलीमे ख़म किए हुए आप की सुन्नत का ताबे हो कर आया हूँ और मेरी मदद

اَلْحَاكِمِيْنَ فَمَعَكُمْ مَعَكُمْ لَا مَعَ عَدُوِّكُمْ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

आप के लिए हाज़र है यहाँ तक के खुदा हुकुम कर दे और वो बेहतरीन फ़ैसला वाला है हम आप के

وَعَلٰى اَرْوَاحِكُمْ وَاَجْسَادِكُمْ وَشَاهِدِكُمْ وَغَآئِبِكُمْ وَالسَّلَامُ

साथ हैं आप के दुश्मनो के साथ नही है खुदा का दुरूद हो आप पर आपकी रूहों पर और आप के

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ قَتَلَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكُمْ بِالْاَيْدِىْ وَ

जिस्मों पर और आपके हाज़र और आपके ग़ाएब पर और सलाम हो आप पर और खुदा की रहमत व

الْاَلْسُنِ.

बरकात हो खुदा उस उम्मत को क़त्ल करे जिसने आप को हाथ और ज़ुबान से क़त्ल किया।

मज़ारे कबीर में इन कलेमात को वमनिज़ले इज़्ने दुख़ूल क़रार दिया गया है और कहा गया है के इसके बाद दाख़ल हो कर क़ब्र से लिपट जाए या ज़रीह की तरफ़ इशारा कर के यूँ ज़ियारत पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ الْمُطِيْعُ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِاَمِيْرِ

सलाम हो आप पर ऐ बन्दए सालेह, अल्लाह की इताअत और उसके रसूल और अमीरूल मोमिनीन

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِمُ السَّلَامِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ

(अ) और हसन व हुसैन (अ) की इताअत करने वाले (उनपर सलाम हो) हम्द खुदा के लिए है और

سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَ

सलाम हो उसके मुनताख़िब शुदा मोहम्मद और उनकी आल पर और सलाम हो आप पर और अल्लाह

رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ مَغْفِرَتُهٗ وَ عَلٰى رُوْحِكَ وَ بَدَنِكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

की रहमत व बरकात हो और मग़फ़ेरत हो आपकी रूह और आपके बदन पर। मै गवाही देता हूँ के आप

مَضَيْتَ عَلٰى مَا مَضٰى عَلَيْهِ الْبَدْرِيُّوْنَ الْمُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ

दुनिया से उस राह पर गए जिसपर बद्र वाले थे जो राहे खुदा मे जिहाद करनेवाले और दुश्मनाने खुदा से

الْمُبَالِغُوْنَ فِيْ جِهَادِ اَعْدَآئِهٖ وَ نُصْرَةِ اَوْلِيَآئِهٖ فَجَزَاكَ اللهُ اَفْضَلَ

जिहाद मे कोशिश करने वाले और उसके वलीयों की नुसरत करने वाले थे तो खुदा आपको बेहतरीन

الْجَزَآءِ وَ اَكْثَرَ الْجَزَآءِ وَ اَوْفَرَ جَزَآءِ اَحَدٍ مِّمَّنْ وَفٰى بِبَيْعَتِهٖ وَ

जज़ा दे और ज़्यादा जज़ा और बहुत ज़्यादा जज़ा दे उस शख़्स की जैसी जज़ा जिस ने बैअत मे वफ़ादारी

اسْتَجَابَ لَهٗ دَعْوَتَهٗ وَ اَطَاعَ وُلَاةَ اَمْرِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَالَغْتَ فِيْ

की है और उसकी दावत को क़ुबूल किया है और उसके वलीए अम्र की इताअत की है। मै गवाही देता

النَّصِيْحَةِ وَ اَعْطَيْتَ غَايَةَ الْمَجْهُوْدِ حَتّٰى بَعَثَكَ اللهُ فِي الشُّهَدَآءِ وَ

हूँ के आपने नसीहत को इन्तेहा तक पहुँचा दिया और इन्तेहाई कोशिश को सर्फ कर दिया यहाँ तक के

جَعَلَ رُوْحَكَ مَعَ اَرْوَاحِ السُّعَدَآءِ وَ اَعْطَاكَ مِنْ جِنَانِهٖ اَفْسَحَهَا

खुदाने आपको शोहदा के दरजे मे मबऊस किया और आपकी रूह को नेक बख़्त लोगों की रूह के

مَنْزِلًا وَ اَفْضَلَهَا غُرَفًا وَ رَفَعَ ذِكْرَكَ فِي الْعِلِّيِّيْنَ وَ حَشَرَكَ مَعَ

साथ क़रार दिया और आपको अता की अपनी जन्नत मे वसी तरीन मनिज़ल और बेहतरीन मकाम और

النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصَّالِحِيْنَ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ

आपके ज़िक्रको आलमे बाला मे बुलंद किया और आपको महशूर किया नबियों, सिद्दीक़ों और शोहदा

رَفِيْقًا اَشْهَدُ اَنَّكَ لَمْ تَهِنْ وَ لَمْ تَنْكُلْ وَ اَنَّكَ قَدْ مَضَيْتَ عَلٰى

और सालेहीन के साथ। जो वो लोगा बेहतरीन रफ़ीक़ हैं। मै गवाही देता हूँ के आपने न सुस्ती की न

بَصِيْرَةٍ مِّنْ اَمْرِكَ مُقْتَدِيًا بِالصّٰلِحِيْنَ وَ مُتَّبِعًا لِّلنَّبِيِّيْنَ فَجَمَعَ اللّٰهُ

तक़सीर की और आप गए दुनिया से अपने अम्र की बसीरत पर, सालेहीन की इक़तेदा करते हुए और

بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ وَبَيْنَ رَسُوْلِهٖ وَ اَوْلِيَآئِهٖ فِيْ مَنَازِلِ الْمُخْبِتِيْنَ فَاِنَّهٗ

नबियों का इत्तेबा करते हुए तो खुदा हमारे और आपके दरमियान और अपने रसूल और अपने औलिया

اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ.

के दरमियान मुनताख़िब बन्दों की मनाज़िल मे इज्तेमा करदे बेशक वो बड़ा रहेम करने वाला है।

इसके बाद बालाए सर दो रकत नमाज़ पढ़ कर जनाबे मुस्लिम को हदिया करे, फिर कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे किसी गुनाह को न छोड़ना।

यह वही दुआ है जो हरमे जनाबे अब्बास (अ.स.) में पढ़ी जाती है और जिसका ज़िक्र आने वाला है। इसके बाद अगर जनाबे मुस्लिम को विदा करना चाहे तो ज़ियारते विदा हज़रत अब्बास (अ.स.) पढ़े।

ज़ियारते हज़रत हानी बिन उरवा (र)

इन्की क़ब्र के पास खड़े हो कर रसूले खुदा (स.अ.व.व.) को सलाम करे और उसके बाद कहे:

سَلَامُ اللهِ الْعَظِيْمِ وَ صَلَوَاتُهٗ عَلَيْكَ يَا هَانِئَ بْنَ عُرْوَةَ اَلسَّلَامُ

खुदाया बुज़ुर्ग का सलाम हो और उस ा दुरूद हो आप पर ऐ हानी बिन उर्वा सलाम हो आप पर

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ النَّاصِحُ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِاَمِيْرِ

ऐ अब्दे सालेह जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए और अमीरूल मोमिनीन और हसन और

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ لِلْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَشْهَدُ اَنَّكَ

हुसैन (अ) की राह मे नसीहत करने वाले थे। मै गवाही देता हूँ के आप को मज़लूम क़त्ल किया

قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا فَلَعَنَ اللهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ اسْتَحَلَّ دَمَكَ وَ حَشٰى

गया पस अल्लाह की लानत हो उसपर जिसने आपको क़त्ल किया और आप के खुन को हलाल

قُبُوْرَهُمْ نَارًا اَشْهَدُ اَنَّكَ لَقِيْتَ اللهَ وَ هُوَ عَنْكَ رَاضٍ بِمَا فَعَلْتَ

जाना और उनकी क़ब्रों को खुदा आग से भर दे। मै गवाही देता हूँ के आप शोहदा के दरजे तक

وَ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ بَلَغْتَ دَرَجَةَ الشُّهَدَآءِ وَ جَعَلَ رُوْحَكَ

पहुँचे और आपकी रूह को नेक बख़तों की रूहों के साथ क़रार दिया गया क्योंके आप ने राहे

مَعَ اَرْوَاحِ السُّعَدَآءِ بِمَا نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ مُجْتَهِدًا وَ بَذَلْتَ

खुदा और रसूल मे कोशिश के साथ नसीहत की और अपनी जान को क़ुर्बान किया ज़ाते खुदा

نَفْسَكَ فِيْ ذَاتِ اللّٰهِ وَ مَرْضَاتِهٖ فَرَحِمَكَ اللّٰهُ وَ رَضِيَ عَنْكَ وَ

और मर्ज़ाए खुदा की राह मे तो खुदा रहेम करे आप पर और आप से राज़ी हो आप को मोहम्मद

حَشَرَكَ مَعَ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ جَمَعَنَا وَ اِيَّاكَ مَعَهُمْ فِيْ دَارِ

और उनकी पाकीज़ा आल के साथ महशूर करे और हमको और आप को उनके साथ जमा करे

النَّعِيْمِ وَ سَلَامٌ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

नेमत वाले घर मे और सलाम हो आप पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद दो रकत नमाज़ पढ़ कर जनाबे हानी को हदिया करे और जो चाहे दुआ करे और अगर चाहे तो जनाबे मुस्लिम ही की तरह विदा भी कर सकता है।

वर्ग - ६

फ़ज़ीलत व आमाले मस्जिदे सहला और आमाले मस्जिदे ज़ैद व सासा

मस्जिदे सहला की फ़ज़ीलत

कूफ़ा की मस्जिदे कबीर के बाद कोई भी मस्जिद फ़ज़ीलत में मस्जिदे सहला जैसी नहीं है। जो हज़रत इद्रीस, हज़रते इब्राहीम का मकान और हज़रते ख़िज़्र के वुरूद की मंज़ल और उनका मसकन थी।

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के आप ने अबू बसीर से फ़रमाया के मैं यह देख रहा हूँ के हज़रत साहेबुल अम्र (अ.स.) अपने अहलो अयाल के साथ मस्जिदे सहला में वारिद हुऐ हैं और यहांr आप की जगह है। और परवरदिगार ने किसी भी पैंग़बर को नहीं भेजा है मगर उसने इस मस्जिद में नमाज़ अदा की है। लेहाज़ा जो व्यक्ति इस मस्जिद में क़याम करेगा। गोया उसने ख़ैमे रसूल में क़याम किया है। और कोई मर्दे मोमिन या ज़ने मोमिना नहीं है जिसका दिल इस मस्जिद में एक पत्थर है जिस पर पैग़ंबर की तसवीर नक़्श है और जो व्यक्ति भी सच्ची नीय्यत के साथ इस मस्जिद में नमाज़ और दुआएं करता है उसकी हाजत बहर हाल पूरी हो जाती है और अगर अमान तलब करता है तो अमान भी मिल जाती है। मैंने पूछा के वाक़ेएन फ़ज़ीलत वही है जो इस मस्जिद की है? फ़रमाया के क्या और ज़्यादा बयान करूँ? मैंने कहा ज़रूर। फ़रमाया के यह उन मक़ामात में से है जिनको खुदा दोस्त रखता है के वहाँ उससे दुआ की जाए और कोई शबोरोज़ ऐसा नहीं है जब मलाएका इस मस्जिद की ज़ियारत और उस में इबादत के लिए न आते हों। इसके बाद फ़रमाया के अगर मेरा घर इस मस्जिद से नज़दीक होता तो मैं तमाम नमाज़ें इस मस्जिद में अदा करता और फ़रमाया के इस मस्जिद के

जो फ़ज़ाएल मैंने नहीं बयान किए वो इससे कहीं ज़्यादा हैं जो बयान कर दिये हैं। मैंने पूछा: हज़रत क़ाएम (अ.स.) हमेशा इसी मस्जिद में रहेंगे? फ़रमाया: बेशक।

मस्जिदे सहला के आमाल

इस मस्जिद में शाम और सोने के दरमियान दो रकत नमाज़ सुन्नत है जैसा के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के जो ग़म रसीदा ऐसा करेगा खुदावंदे आलम उसके ग़म को ज़ाएल कर देगा।

बाज़ ज़ियारत की किताबों से नक़्ल किया गया है के जब मस्जिद में दाख़ल होना चाहे तो दरवाज़े के पास ख़ड़े हो कर यूं कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ مِنَ اللّٰهِ وَ اِلَى اللّٰهِ وَ مَا شَآءَ اللّٰهُ وَ خَيْرُ الْاَسْمَآءِ

अल्लाह के नाम से अल्लाह की मदद से और अल्लाह से ओर अल्लाह की तरफ़ और जो खुदा चाहे और

لِلّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

बेहतरीन नाम खुदा के लिए है। मै ने तवककूल किया है अल्लाह पर और कोई कुव्वत व ताक़त नही है मगर

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنْ عُمَّارِ مَسَاجِدِكَ وَ بُيُوْتِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَتَوَجَّهُ

बुलंद व अज़ीम खुदा के लिए खुदाया मुझको क़रार दे अपनी मस्जिदों और घरों की तामीर करनेवालों

اِلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اُقَدِّمُهُمْ بَيْنَ يَدَىْ حَوَآئِجِىْ فَاجْعَلْنِىْ

मे से। खुदाया मै तेरी तरफ़ मुतवज्ज़े हूँ मोहम्मद व आले मोहम्मद के वास्ते से और उनको मुकद्दमा रखा

اَللّٰهُمَّ بِهِمْ عِنْدَكَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ

है अपनी हाजतों के लिए तू मुझको क़रार दे। खुदाया उनके साथ अपने नज़दीक इज़्ज़त वाला दुनिया व

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَاتِيْ بِهِمْ مَقْبُوْلَةً وَّ ذَنْبِيْ بِهِمْ مَغْفُوْرًا وَّ رِزْقِيْ

आख़ेरत मे और मुक़र्रेबीन मे से, खुदाया मेरी नमाज़ को उन के वासते से क़ुबूल फ़रमा और मेरे गुनाह

بِهِمْ مَبْسُوْطًا وَّ دُعَآئِيْ بِهِمْ مُسْتَجَابًا وَّ حَوَآئِجِيْ بِهِمْ مَقْضِيَّةً وَّ

को उनके ज़रिए बख़्शा हुआ क़रार दे और मेरे रिज़्क़ मे वुसअत दे और दुआ को क़ुबूल कर और मेरी

انْظُرْ اِلَيَّ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ نَظْرَةً رَّحِيْمَةً اَسْتَوْجِبُ بِهَا الْكَرَامَةَ

हाजतों को पूरा करदे और मेरी तरफ़ निगाहे रहमत कर अपनी करीम ज़ात के वास्ते से जिसके ज़रिए

عِنْدَكَ ثُمَّ لَا تَصْرِفْهُ عَنِّيْ اَبَدًا بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا

मै तेरी बारगाह मे करामत का मुसतहक़ हो सकूँ फिर मुझसे नज़रे लुत्फ़ को दूर न कर अपनी रहमत से

مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَ الْاَبْصَارِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ وَ دِيْنِ نَبِيِّكَ

ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले और निगाहों के बदलने वाले तू मेरे दिल को साबित कर दे अपने दीन

وَ وَلِيِّكَ وَ لَا تُزِغْ قَلْبِيْ بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنِيْ وَ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً

और अपने नबी और अपने वली के दीन पर और मेरे दिल को कज न करना जब के तूने हिदायत कर दी

اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَ مَرْضَاتَكَ طَلَبْتُ وَ

है और मुझको अपने पास से रहमत अता कर बेशक तू बड़ा अता करने वाला है। खुदाया मै तेरी तरफ़

ثَوَابَكَ ابْتَغَيْتُ وَ بِكَ اٰمَنْتُ وَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَللّٰهُمَّ فَاَقْبِلْ

आया हूँ और तेरी मर्जा का तालिब हूँ और तेरे सवाब का ख़्वाहिश मंद हूँ और तुझ पर ईमान लाया हूँ

بِوَجْهِكَ اِلَيَّ وَّ اَقْبِلْ بِوَجْهِيَ اِلَيْكَ.

और तुझ पर तवक्कुल किया है खुदाया तू मेरी तरफ़ रूख़ कर और हमेशा मेरे चेहरा को अपनी तरफ़ रख।

इसके बाद आयतुल कुर्सा, सूरह नास व सूरह फ़लक पढ़े और सात बार कहे:

سُبْحَانَ اللهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اللهُ اَكْبَرُ

पाक व मुनज़्ज़ह है खुदा, खुदा के लिए हम्द है अल्लाह के अलावा कोई खुदा नही है और अल्लाह बड़ा है।

इसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى مَا هَدَيْتَنِيْ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى مَا فَضَّلْتَنِيْ وَ

खुदाया तेरे लिए हम्द है के तू ने मेरी हिदायत की और तेरी हम्द है के तूने मुझको फ़ज़ीलत दी है और तेरी

لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى مَا شَرَّفْتَنِيْ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ بَلَآءٍ حَسَنٍ

हम्द है के तूने मुझको शरफ़ दिया है और तेरी हम्द है हर बेहतरीन बला पर जिस मे तूने मुझको मुबतेला

ابْتَلَيْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ صَلَاتِيْ وَ دُعَآئِيْ وَ طَهِّرْ قَلْبِيْ وَ اشْرَحْ لِيْ

किया है खुदाया तू मेरी नमाज़ को क़ुबूल कर और मेरी दुआ को और मेरे दिल को पाक कर दे और मेरे

صَدْرِيْ وَ تُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

दिल को खोल दे और मेरी तौबा क़ुबूल करे, तू बड़ा तौबा का क़ुबूल करने वाला और रहेम करनेवाला है।

सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के जब भी मस्जिदे सहला जाने का इरादा हो तो बुधवार की शब में मग़रिबो इशा के दरमियान वारिद हो के यह बेहतरीन समय है और वारिद होने के बाद नमाज़े मग़रिब व नाफ़ेला बजा लाए। फिर दो रकत नमाज़े तहियए मस्जिद पढ़े और नमाज़ के बाद आसमान की तरफ़ हाथों को उठाकर यूँ कहे:

اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ مُبْدِءُ الْخَلْقِ وَ مُعِيْدُهُمْ وَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ

तू अल्लाह है तेरे अलावा कोई खुदा नही है तू मख़लूक़ का पैदा करनेवाला है और उनका लौटाने वाला है

اِلَّا انْتَ الْخَالِقُ الْخَلْقِ وَ رَازِقُهُمْ وَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

और तू खुदा है तेरे अलावा कोई माबूद नही है तू मख़लूक का ख़ालिक है और उनका राज़क है और तू

الْقَابِضُ الْبَاسِطُ وَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ مُدَبِّرُ الْاُمُوْرِ وَ بَاعِثُ

अल्लाह है तेरे अलावा कोई खुदा नही है तू रोकनेवाला और अता करनेवाला है और तू खुदा है तेरे अलावा

مَنْ فِي الْقُبُوْرِ اَنْتَ وَارِثُ الْاَرْضِ وَ مَنْ عَلَيْهَا اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ

कोई खुदा नही है तू उमूरकी तदबीर करनेवाला है और क़ब्रो से उठानेवाला है तू ज़मीन का वारिस है और जो

الْمَخْزُوْنِ الْمَكْنُوْنِ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ وَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَالِمُ

कुछ इस ज़मीन पर है। मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे मख़ज़ून और मसतूर ज़िन्दा और पाईन्दा नाम के ज़रिए

السِّرِّ وَ اَخْفٰى اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ اَجَبْتَ وَ اِذَا

तू खुदा है तेरे अलावा कोई खुदा नही है तू पोशीदा राज़ का जानने वाला है मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे उस

سُئِلْتَ بِهٖ اَعْطَيْتَ وَ اَسْئَلُكَ بِحَقِّكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ

नाम के ज़रिए जिस के ज़रिए तुझको पुकारा गया तो तूने जवाब दिया और जिसके ज़रिए जब सवाल किया

بِحَقِّهِمُ الَّذِىْ اَوْجَبْتَهٗ عَلٰى نَفْسِكَ اَنْ تُصَلِّىَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

गया तो तूने अता किया और मै सवाल करता हूँ तुझसे तेरे हक़ के वास्ते से मोहम्मद और उनके अहलेबैत

وَّ اَنْ تَقْضِىَ حَاجَتِىَ السَّاعَةَ السَّاعَةَ يَا سَامِعَ الدُّعَآءِ يَا سَيِّدَاهُ يَا

पर और उनके हक़ के वास्ते से जिस को तूने अपने ऊपर वाजिब किया है के दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व

مَوْلَاهُ يَا غِيَاثَاهُ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوِ اسْتَاْثَرْتَ

आले मोहम्मद पर और मेरी हाजत को पूरा कर इसी वक़्त इसी वक़्त ऐ दुआ के सुन्नेवाले ऐ सरदार ऐ मौला

بِهٖ فِىْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تُصَلِّىَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ

ऐ फरयादरस। मै तुझ से सवाल करता हूँ हर उस नाम के ज़रिए जिससे तू अपने को बुलाता है या उस नाम

تُعَجِّلَ فَرَجَنَا السَّاعَةَ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَ الْاَبْصَارِ يَا سَمِيْعَ

के ज़रिए जो इल्मे ग़ैब मे मख़सूस किया है अपने पास के दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

الدُّعَآءِ.

और हमारी कुशादगी मे जलदी कर इसी वक़्त ऐ दिलों और निगाहों के बदलने वाले ऐ दुआ के सुनने वाले।

उसके बाद सजदे में जाए और अपने मक़सद को पेश करे। उसके बाद उस गोशे में दो रकत नमाज़ पढ़े जो मग़रिबो शुमाल की तरफ़ है और वह मक़ामे जनाबे इब्राहीम (अ.स.) है के वहीं से अमालेक़ा गए थे। नमाज़ के बाद तसबीह

पढ़े और उसके बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذِهِ الْبُقْعَةِ الشَّرِيْفَةِ وَ بِحَقِّ مَنْ تَعَبَّدَ لَكَ فِيْهَا قَدْ

खुदाया इस शरफ़वाले मकाम के हक़ का वास्ता और उसके हक़ का वास्ता जिसने इसमे तेरे लिए

عَلِمْتَ حَوَآئِجِیْ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اقْضِهَا وَ قَدْ اَحْصَيْتَ

इबादत की तू मेरी हाजतों से वाक़िफ़ है। तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

ذُنُوْبِیْ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْهَا اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مَا اِذَا

उसको पूरा करदे और तूने मेरे गुनाहों का एहसा किया है तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

كَانَتِ الْحَيٰوةُ خَيْرًا لِّیْ وَ اَمِتْنِیْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّیْ عَلٰی مُوَالَاةِ

पर और उसको बख़्श दे। खुदाया मुझको ज़िन्दगी दे उस वक़्त तक जब तक ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर हो

اَوْلِيَآئِكَ وَ مُعَادَاةِ اَعْدَآئِكَ وَ افْعَلْ بِیْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ يَا اَرْحَمَ

और मुझको मौत दे जब मौत मेरे लिए बेहतर हो अपने दोस्तों की मोहब्बत पर और अपने दुश्मनों की

الرَّاحِمِيْنَ.

अदावत पर और मेरे साथ वो बरताओ कर जिसका तू अहेल है ऐ सब से ज़्यादा रहेम वाले।

इसके बदा दूसरे गोशे में दो रकत नमाज़ पढ़े जो मग़रिब और ाक़िबले की तरफ़ है और हाथों को बुलंद कर के कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ صَلَّیۡتُ هٰذِهِ الصَّلٰوةَ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِكَ وَ طَلَبَ نَآئِلِكَ وَ

खुदाया मैने ये नमाज़ पढ़ी है तेरी मर्ज़ा हासिल करने के लिए और तेरे इनाम को पाने के लिए और तेरे

رَجَآءَ رِفۡدِكَ وَ جَوَآئِزِكَ فَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ تَقَبَّلۡهَا مِنِّیۡ

सवाब और जज़ा की उममीद मे तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और अच्छी तरह

بِاَحۡسَنِ قَبُوۡلٍ وَّ بَلِّغۡنِیۡ بِرَحۡمَتِكَ الۡمَاۡمُوۡلَ وَ افۡعَلۡ بِیۡ مَا اَنۡتَ اَهۡلُهٗ یَا

से क़ुबूल कर ले और मुझको अपनी रहमत से मक़सूद तक पहुँचा दे और मेरे साथ वो बरताओ कर

اَرۡحَمَ الرَّاحِمِیۡنَ.

जिसका तू अहेल है ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनो वाले।

फिर सजदे में जाए और दोनों रूख़सारों को ख़ाक पर रखे और फ़िर उस गोशे में जाए जो मशरिक की तरफ़ है और वहाँ भी दो रकत नमाज़ पढ़कर दोनो हाथों को फैला कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنۡ كَانَتِ الذُّنُوۡبُ وَ الۡخَطَایَا قَدۡ اَخۡلَقَتۡ وَجۡهِیۡ

खुदाया अगर मेरे गुनाहों और ख़ताओं ने मुझको तेरी बारगाह मे बे आबरू कर दिया है के मेरी

عِنۡدَكَ فَلَمۡ تَرۡفَعۡ لِیۡ اِلَیۡكَ صَوۡتًا وَّ لَمۡ تَسۡتَجِبۡ لِیۡ دَعۡوَةً فَاِنِّیۡۤ

आवाज़ तेरी तरफ़ बुलंद नही होती है और दुआ क़ुबूल नही होती है तो मै सवाल करता हूँ तुझ

اَسۡئَلُكَ بِكَ یَا اَللّٰهُ فَاِنَّهٗ لَیۡسَ مِثۡلَكَ اَحَدٌ وَّ اَتَوَسَّلُ اِلَیۡكَ

से तेरे ज़रिए ऐ अल्लाह तेरा मिस्ल कोई नही है और तेरी तरफ़ वसीला बनाता हूँ मोहम्मद और

بِمُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ

आल को और मै तुझसे सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

تُقْبِلَ اِلَيَّ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَ تُقْبِلَ بِوَجْهِيْ اِلَيْكَ وَ لَا

अपनी करीम ज़ात की वजह से मुझ पर करम फ़र्मा और मेरे दिल को कुल्ली तौर पर अपनी तरफ़

تُخَيِّبْنِيْ حِيْنَ اَدْعُوْكَ وَ لَا تَحْرِمْنِيْ حِيْنَ اَرْجُوْكَ يَا اَرْحَمَ

मुतवज्ञे कर ले मुझको मायूस न कर जब मै तुझ को पुकारूँ और मुझको महरूम न कर जब मै

الرَّاحِمِيْنَ.

तुझ से उममीद लगाऊँ, ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

लेखक के अनुसार बाज़ गैर मारूफ़ ज़ियारत की किताबों में नक़्ल किया गया है के उसके बाद उस गोशे में जाए जो मश्रिक़ की तरफ़ है। और दो रकत नमाज़ पढ़ने के बाद यह कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا اَللّٰهُ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे नाम के ज़रिए ऐ अल्लाह तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व

مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَجْعَلَ خَيْرَ عُمُرِيْ اٰخِرَهٗ وَ خَيْرَ اَعْمَالِيْ خَوَاتِيْمَهَا وَ

आले मोहम्मद पर और मेरी उम्र के आख़िर को बेहतरीन क़रार दे और मेरे आमाल का ख़ात्मा

خَيْرَ اَيَّامِيْ يَوْمَ اَلْقَاكَ فِيْهِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ

बिल ख़ैर कर और मेरे दिनों मे बेहतरीन दिन अपनी मुलाक़ात का दिन क़रार दे तू हर चीज़ पर

تَقَبَّلْ دُعَآئِیْ وَ اسْمَعْ نَجْوَایَ یَا عَلِیُّ یَا عَظِیْمُ یَا قَادِرُ یَا قَاهِرُ یَا

क़ादीर है। खुदाया मेरी दुआ को क़ुबूल कर और मेरी मुनाजात को सुन ले ऐ बुलंद ऐ अज़ीम ऐ

حَیًّا لَا یَمُوْتُ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ

क़दीर ऐ ग़लबेवाले ऐ ज़िन्दा जिसे मौत नही है दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

الَّتِیْ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكَ وَ لَا تَفْضَحْنِیْ عَلٰی رُؤُسِ الْاَشْهَادِ وَ

और मेरे उन गुनाहों को बख़्श दे जो मेरे और तेरे दरमियान हाएल हैं और मेझको सब के सामने

احْرُسْنِیْ بِعَیْنِكَ الَّتِیْ لَا تَنَامُ وَارْحَمْنِیْ بِقُدْرَتِكَ عَلَیَّ یَا اَرْحَمَ

रूसवा न करना और मुझ को महफ़ूज़ रखना अपनी उस निगाह के ज़रिए जो सोती नही है और

الرَّاحِمِیْنَ وَ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الطَّاهِرِیْنَ یَا رَبَّ

मुझ पर रहेम करना अपनी क़ुदरत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले और अल्लाह का दुरूद

الْعَالَمِیْنَ.

हमारे सरदार मोहम्मद और उनकी पाकीज़ा आल पर, ऐ आलमीन के परवरदिगार।

इसके बाद वुसते मस्जिद में दो रकत नमाज़ अदा करे और यह कहे:

یَا مَنْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَیَّ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ یَا فَعَّالًا لِّمَا یُرِیْدُ یَا مَنْ

ऐ वो ज़ात जो मेरी रगे गर्दन से ज़्यादा मुझ से क़रीब है ऐ वो जो चाहता है करता है ऐ वो जो इन्सान

يَّحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ حُلْ بَيْنَنَا وَ

ओर उसके दिल के दरमियान हाएल हो जाता है दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और उनकी आल पर

بَيْنَ مَنْ يُّؤْذِيْنَا بِحَوْلِكَ وَ قُوَّتِكَ يَا كَافِيًا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّ لَا يَكْفِيْ

और हाएल हो जा मेरे और उनके दरमियान जो हम को अज़ीयत देते हैं अपनी क़ुव्वत व ताक़त से

مِنْهُ شَيْءٌ اِكْفِنَا الْمُهِمَّ مِنْ اَمْرِ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ يَآ اَرْحَمَ

ऐ हर चीज के लिए काफ़ी और कोई चीज उस के लिए काफ़ी नही है तू हमारे दुनिया व आख़िरत

الرَّاحِمِيْنَ.

के अहेम उमूर के लिए काफ़ी हो जा। ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

इसके बाद दोनो रूख़सार ख़ाक पर रखे।
लेखक के अनुसार यह जगह इस ज़माने में इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) के नाम से मारूफ़ है और मज़ारे कबीर में कहा गया है के दो रकत नमाज़ के बाद इस मकाम पर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ يَا مَنْ لَا تَرَاهُ الْعُيُوْنُ...

जिसका ज़िक्र मसनदे कूफ़ा में दक्का बाबे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के ज़ैल में हो चुका है।
इस जगह के क़रीब वह जगह है जिसे मक़ामे इमाम महदी कहा जाता है जिस जगह हज़रत की ज़ियारत इन्तेहाई मुनासिब है और बाज़ कुतुबे ज़ियारात में नक़्ल किया गया है के इस जगह खड़े हो कर سَلَامُ اللهِ الْكَامِلُ التَّامُّ الشَّامِلُ الْعَامُّ वाली ज़ियारत पढ़े जो दर हक़ीक़त इस्तेग़ासा है और उसको हम पहले वर्ग में कलमए तय्यब से नक़्ल कर चुके हैं।
सय्यद बिन ताऊस ने इसे दो रकत नमाज़ के बाद सरदाबे मुक़द्दस की ज़ियारत में शुमार किया है।

नमाज़ व दुआ मस्जिदे ज़ैद (र)

इसके बाद मस्जिदे सहला के क़रीब वाक़ेअ मस्जिदे सहला में जाए। और वहाँ दो रकत नमाज़ अदा कर के हाथों को उठाकर कहे:

اِلٰهِیْ قَدْ مَدَّ اِلَیْكَ الْخَاطِئُ الْمُذْنِبُ یَدَیْهِ لِحُسْنِ ظَنِّهٖ بِكَ

खुदाया ख़ताकार गुनाहकार इन्सान ने अपने दोनों हाथों को फैला दिया है तेरे ऊपर हुसने जन के साथ

اِلٰهِیْ قَدْ جَلَسَ الْمُسِیْٓءُ بَیْنَ یَدَیْكَ مُقِرًّا لَكَ بِسُوْٓءِ عَمَلِهٖ

मेरे खुदा तेरा गुनाहगार तेरे सामने है तेरे पास अपनी बद अमली का इक़रार करते हुए और तुझ से

رَاجِیًا مِّنْكَ الصَّفْحَ عَنْ زَلَلِهٖ اِلٰهِیْ قَدْ رَفَعَ اِلَیْكَ الظَّالِمُ

अपनी लगिज़श से चश्मपोशी की उम्मीद लगाए हुए। मेरे खुदा तेरी जानिब ज़ालिम ने अपनी दोनो

كَفَّیْهِ رَاجِیًا لِّمَا لَدَیْكَ فَلَا تُخَیِّبْهُ بِرَحْمَتِكَ مِنْ فَضْلِكَ اِلٰهِیْ

हथेलीयाँ बुलंद की हैं उस रहमत की उम्मीद लगाए हुए जो तेरे पास है तू उसको महरूम न करना अपनी

قَدْ جَثَا الْعَآئِدُ اِلَی الْمَعَاصِیْ بَیْنَ یَدَیْكَ خَآئِفًا مِّنْ یَّوْمِ

रहमत से अपने फ़ज़्ल की बिना पर मेरे खुदा गुनाहो की तरफ़ बार बार लौटनेवाला बन्दा तेरी बारगाह

تَجْثُوْ فِیْهِ الْخَلَآئِقُ بَیْنَ یَدَیْكَ اِلٰهِیْ جَآئَكَ الْعَبْدُ الْخَاطِئُ

मे आया है उस दिन से ख़ाफ़ करते हुए जिस दिन तमाम बन्दे तेरी बारगाह मे हाज़र होंगे और खड़े होंगे

فَزِعًا مُّشْفِقًا وَّرَفَعَ اِلَيْكَ طَرْفَهٗ حَذَرًا رَّاجِيًا وَّفَاضَتْ عَبْرَتُهٗ

मेरे खुदा तेरे पास ख़ता कार बन्दा आया है डरते हुए हेरासाँ हालत मे और तेरी जानिब नज़र उठाए हुए

مُسْتَغْفِرًا نَادِمًا وَّ عِزَّتِكَ وَ جَلَالِكَ مَا اَرَدْتُ بِمَعْصِيَتِيْ

है डर और उम्मीद की हालत मे और अश्के चश्म जारी हैं तलबे इस्तेग़फ़ार करते हुए शमाAदा हो कर

مُخَالَفَتَكَ وَ مَا عَصَيْتُكَ اِذْ عَصَيْتُكَ وَ اَنَا بِكَ جَاهِلٌ وَّ لَا

और तेरी इज़्ज़त और जलाल की क़सम मैने अपनी ना फ़रमानी से तेरी मुख़ालिफ़त का इरादा नही

لِعُقُوْبَتِكَ مُتَعَرِّضٌ وَّ لَا لِنَظَرِكَ مُسْتَخِفٌّ وَّ لٰكِنْ سَوَّلَتْ لِيْ

किया था और मै ने तेरी ना फ़रमानी नही की जब भी ना फ़रमानी की इस तरह के मै तेरी मारेफ़त से

نَفْسِيْ وَ اَعَانَنِيْ عَلٰى ذٰلِكَ شِقْوَتِيْ وَ غَرَّنِيْ سِتْرُكَ الْمُرْخٰى عَلَيَّ

जाहिल हूँ और न तेरी सज़ा से मोतरिज़ और तेरी अज़मत का हलका समझनेवाला न था लेकिन मेरे

فَمَنِ الْاٰنَ مِنْ عَذَابِكَ يَسْتَنْقِذُنِيْ وَ بِحَبْلِ مَنْ اَعْتَصِمُ اِنْ

नफ़्स ने मुझको इस ०ख्याल मे डाला और इस पर उसकी मदद की मेरी बद बख़ती ने और मुझको

قَطَعْتَ حَبْلَكَ عَنِّيْ. فَيَا سَوْاَتَاهُ غَدًا مِّنَ الْوُقُوْفِ بَيْنَ يَدَيْكَ

धोका मे रख दिया तेरी वो पर्दा पोशी ने तो उस वक़्त तेरे अज़ाब से कौन मुझको निकाल सकता है और

اِذَا قِيْلَ لِلْمُخِفِّيْنَ جُوْزُوْا وَ لِلْمُثْقِلِيْنَ حُطُّوْا اَفَمَعَ الْمُخِفِّيْنَ

किस के ताल्लुक़ से रिश्ता बाधूँ अगर तूने अपने रिश्ता मुझ से तोड़ लिया, पस वाए है कल की रूसवाई

اَجُوْزُ اَمْ مَّعَ الْمُثْقِلِيْنَ اَحُطُّ وَيْلِيْ كُلَّمَا كَبِرَتْ سِنِّيْ كَثُرَتْ

पर तेरे सामने खड़े होने की हालत मे जब सुबूकबारों के साथ होगा या संगीन बार वालों के साथ रहूँगा।

ذُنُوْبِيْ وَيْلِيْ كُلَّمَا طَالَ عُمْرِيْ كَثُرَتْ مَعَاصِيَّ فَكَمْ اَتُوْبُ وَ

मेरे लिए वैल है जितना मेरा सिन बड़ा मेरे गुनाह ज़्यादा हुए, वैल है मेरे लिए जितना मेरा सिन तूलानी

كَمْ اَعُوْدُ اَمَا آنَ لِيْ اَنْ اَسْتَحْيِيَ مِنْ رَّبِّيْ. اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ

हुआ मेरी मासियत ज़्यादा हुई तो मै कितनी तौबा करूँ और कितनी मैने तौबा शिकनी की क्या वो वक़्त

اٰلِ مُحَمَّدٍ ارْحَمْنِيْ وَ اغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ خَيْرَ

नही आया के मै अपने खुदा से शर्म करूँ। खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद के हक़ का वास्ता मुझको

الْغَافِرِيْنَ.

बख़्श दे और मुझ पर रहेम कर ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले और बेहतरीन बख़्शने वाले।

उसके बाद आँसू बहाए और ख़ाक को चेहरे पर रख कर कहे:

اِرْحَمْ مَنْ اَسَآءَ وَ اقْتَرَفَ وَ اسْتَكَانَ وَ اعْتَرَفَ.

तू रहेम कर उसपर जिसने बुराई की और गुनाह मे मुब्तेला हुआ फिर तजर्रो और एतेराफ़ किया।

फिर दाएं रूख़सार को रख कर कहे:

اِنْ كُنْتُ بِئْسَ الْعَبْدُ وَ اَنْتَ نِعْمَ الرَّبُّ

मेरे खुदा अगर मै तेरा बदतरीन गुनाहगार हूँ तो तूँ बेहतरीन परवरदिगार है।

फिर बाएं रूख़सार को रख कर कहे:

عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ يَا كَرِيْمُ.

तेरे बन्दा का गुनाह अज़ीम है तो तेरी बख़शिश भी बहुत अच्छी होनी चाहिए ऐ करीम

उसके बाद सजदे में पेशानी रख कर सौ बार कहे:

اَلْعَفْوَ اَلْعَفْوَ

माफ़ी - माफ़ी

लेखक: यह मस्जिद भी कूफ़े की अज़ीम मस्जिदों में से है जिसकी निसबत जनाबे ज़ैद बिन सौहान की तरफ़ है जो अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के असहाब में से थे और उस दौर के अबदाल में शुमार होते थे। जंगे जमल में आपकी नुसरत में दर्जे शहादत पर फ़ाएज़ हुए और यह वह दुआ है जो वह नमाज़े शब में पढ़ा करते थे।
उसी मस्जिद के पास उनके भाई सासा बिन सौहान की मस्जिद है जो अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के असहाब में और आप के हक़ के आरिफ़ीन में थे। बुज़ुर्ग अहले ईमान में थे और इन्तेहाई फ़सीहो बला॰ाग थे। अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) उनको ख़तीबे शहशह कहा करते थे। उनकी फ़साहत व बलाग़त की तारीफ़ फ़रमाया करते थे। उनकी एक तारीफ़ यह भी है के ख़र्च

कम करते थे और इमदाद ज़्यादा करते थे। जिस रात अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) दुनिया से रूख़सत हुए और इमाम के फ़रज़ंद जनाज़े को कूफ़ा से नजफ़ की तरफ़ ले चले तो सासा भी मशायत करने वालों में थे।
दफ़्न से फ़ारिग होने के बाद सासा ने क़ब्रे मुबारक के सरहाने खड़े होकर एक मुट्ठी ख़ाक अपने सर पर डाली और कहा: मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान या अमीरल मोमिनीन (अ.स.)। अल्लाह आप को यह करामते मुबारक करे यक़ीनन आप की ज़िंदगी पाकीज़ा थी। आप का सब्र क़वी था। आप का जेहाद अज़ीम था और आप अपने मक़सद तक पहुँच गए। आपकी तिजारत कामयाब थी। आप खुदा की बारगाह में हाज़र हो गए और इस तरह मुसलसल यही कहते जाते थे और गिरया करते जाते थे। यहाँ तक तमाम हाज़ेरीन ने गिरया किया और उस रात को गिरया किया के क़ब्र के सरहाने एक मजलिसे अज़ा मुनआक़िद हो गई जिसके ज़ाकिर जनाबे सासा थे। और सामने इमाम हसन, इमाम हुसैन, मोहम्मदे हनाफ़िया, जनाबे अब्बास और दीगर फ़रज़ंदान और मोतल्लेक़ीन थे। इन कलेमात के ख़त्म होने के बाद आपने इमाम हसन व हुसैन (अ.स.) और दीगर फ़रज़ंदां की तरफ़ रूख़ करके सबको ताज़यत पेश की। फिर सब कूफ़े वापस आए। मुख़तसर यह है के मस्जिदे सासा एक अज़ीम तरीन मस्जिद है। और बाज़ लोगों ने माहे रजब में इमामे ज़माना (अ.स.) को भी इस मकाम पर देखा है के आप ने दो रकत नमाज़ पढ़ी और यह दुआ पढ़ी:

اَللّٰهُمَّ يَاذَا الْمِنَنِ السَّابِغَةِ وَالْاَلَاءِ الْوَازِعَةِ...

जिससे मालूम होता है के यह मख़सूस इस मस्जिद के लिए है। उसके आमाल में शामिल है जिस तरह के मस्जिदे सहला और मस्जिदे ज़ैद की दुआएं हैं। लेकिन चूँके हज़रत ने माहे रजब में यह दुआ पढ़ी है मुम्किन है के यह दुआ रजब की दुआओं में हो और इसी लिए ओलमा ने इसको आमाले माहे रजब में भी ज़िक्र किया है और हम आमाले रजब में इसका ज़िक्र कर चुके हैं लेहाज़ा अब तकरार करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

वर्ग - ८

अबु अब्दिल्लाह हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत की फ़ज़ीलत और उसके आदाब

जिनका लेहाज़ रखना हज़रत के हर ज़ाएर के लिए ज़रूरी है। राहे ज़ियारत में और हरमे मुतह्हर में आपकी कैफ़यते ज़ियारत के बारे में तीन मक़ासिद हैं।

पहला मक़सद

फ़ज़ीलते ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.)

वाज़ेह रहे के इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत के फ़ज़ाएल एहातए बयान से बाहर हैं। और अकसर रिवायात में यह वारिद हुआ है के यह ज़ियारत हज व उमरा और जिहाद के बराबर है। बल्के उससे बदर्जा अफ़ज़ल व बेहतर है। यह ज़ियारत बाइसे मग़िफ़रत व बुलंदीए दरजात व इजाबते दुआ व सबबे तूले उम्र व हिफ़ज़े जानो माल व आबरू है। इससे रिज़्क में वुस्अत पैदा होती है और हाजतें पूरी होती हैं। हम व ग़म दूर होता है और ज़ियारत को तर्क कर देना दीन व ईमान में नुक़्स और पैग़ंबर के हुक़ूक़ में कोताही के मुतरादिफ़ है। इस ज़ियारत का कम से कम सवाब यह है के ज़ाएर के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। परवरदिगार उसके जानो माल की हिफ़ाज़त करता है यहाँ तक के अपने घर वापस आ जाए। अकसर रिवायात में यह भी है के यह ज़ियारत हम व ग़म को ज़ाएल करती है। जांकनी को आसान बनाती है और हौले क़ब्र को बरतरफ़ कर देती है। इस राह में ख़र्च होनेवाला हर दिरहम हज़ार बल्के दस हज़ार दिरहम के बराबर शुमार होता है।

जब कोई इंसान क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) का इरादा करता है तो चार हज़ार फरिश्ते उसका इस्तेक़्बाल करते हैं और जब वापस होता है तो उसे घर तक पहुँचाते हैं।

आपकी ज़ियारत के लिए पैंगबर औलिया और आइम्मा मासूमीन और मलाएका सब हाज़र होते हैं और ज़ाएरीन के हक़ में दुआ करते हैं और उन्हें बशारत देते हैं के परवरदिगार इन ज़ाएरीने इमाम हुसैन (अ.स.) पर मैदाने अरफ़ात में हाज़र होने वालों से ज़्यादा निगाहे रहमत रखता है।
और हर शख़्स रोज़े क़यामत इस बात की आरज़ू करेगा के काश वह भी ज़ाएरीने इमाम हुसैन (अ.स.) में होता के उसने उन ज़ाएरीन की करामत व बुज़ुर्गा का मुशाहेदा कर लिया होगा।
इस सिलसिले में रिवायात बेशुमार हैं।
हम ज़ियाराते मख़सूस के ज़ैल में कुछ ज़ियारात के फ़ज़ाएल का ज़िक्र करेंगे और इस मकाम पर फ़क़त जनाब इब्ने क़ूलूवय, कुलैनी, इब्ने ताऊस और दूसरों की नक़ल की हुई इस रिवायत पर इक़्तेफ़ा करते हैं के जिसको मोतबर असनाद के साथ ज़लीलुल क़द्र सिक़ा माविया बिन वहब बजली कूफ़ी से नक़्ल किया गया है के इमाम सादिक़ (अ.स.) की ाख़िदमत में हाज़र था।
देखा के आप मुसल्ले पर मशग़ूले नमाज़ हैं तो मैं बैठ गया। जब आपने नमाज़ तमाम की तो मैंने देखा के आप परवरदिगार से मुनाजात कर रहे हैं। और कह रहे हैं। अय वह परवरदिगार जिसने हमे करामत अता की है और हमसे शफ़ाअत का वादा किया है और हमे उलूमे रिसालत देकर पैग़ंबरों का वारिस बना दिया है। और हमें आख़री उम्मत में क़रार देकर हमको वसीयते पैग़ंबर से मख़सूस किया है। और हमें माज़ी और मुस्तक़बिल का इल्म दिया है और लोगों के दिलों को माएल कर दिया है।
मुझे और मेरे बिरादरे इमानी और ज़ाएरीने क़ब्रे हुसैन को बख़्श दे। वह लोग जिन्होंने अपने माल को ख़र्च किया है अपने शहरों से निकल पड़े हैं हमारे साथ नेकी की है और सिले रहम में तेरे सवाब की उम्मीद रखी है। तेरे पैग़ंबर को खुश करना चाहा है। तेरी खुशनूदी के लिए तेरे दुश्मनों को नाराज़ किया है। परवरदिगार मेरी तरफ़ से उन्हें यह बदला दे के उनसे खुश हो जा और शबो रोज़ हर समय उनकी हिफ़ाज़त फ़र्मा और अहलो अयाल व औलाद जिन्हें वतन में छोड़कर आए हैं सबकी हिफ़ाज़त फ़र्मा और उनका रफ़ीक़ होजा।
उनसे हर तरह के ज़ालिम व जाबिर के शर को दूर फ़र्मा और जिन्नो इन्स के शयातीन से उन्हें महफ़ूज़ फ़र्मा जो उनकी उम्मीदें हैं उनसे ज़्यादा अता

फ़र्मा और जो उन्होंने वतन से दूरी इख़्तेयार की है और हमें अपने मालो औलाद पर मुक़द्दम रखा है खुदावंदा हमारे दुश्मनों ने उनको इस राह पर निकलने पर ताने दिए हैं मगर इसके बाद भी उन्होंने अपने इरादों को तबदील नहीं किया और निकल पड़े हैं लेहाज़ा उनके उन चेहरों पर रहमत नाज़ल करना जिन्हें आफ़ताब की गर्मा ने झुलसा दिया है। और उन रूख़सारों पर रहमत नाज़ल फ़र्मा जो क़ब्रे हुसैन (अ.स.) पर रखे जा रहे हैं।

खुदाया रहम करना उन आखों पर जो हमारे हाल पर गिरया कर रही हैं। और रहम करना उन दिलों पर जो हमारे ग़म में बेकरार हैं। रहम करना उन नाला व शेवन पर जो हमारी मुसीबत में बुलंद हो जाए। खुदाया मैं उन तमाम अरवाह व अजसाम को तेरे हवाले करता हूँ ताके तू उन्हें रोज़े तशनगीए महशर हौज़े कौसर से सेराब कर दे।

इसी तरह हज़रत मुसलसल सजदे में दुआ करते रहे। जब फ़ारिग़ हुए तो मैंने अर्ज़ किया के यह दुआ जो मैने आप से सुनी है यह तो अगर किसी एसे व्यक्ति के हक़ में भी कर दी जाए जो खुदा को न पहचानता हो तो मेरा ख़याल है के वह आतिशे जहन्नम से बच जाएगा। खुदा की क़सम यह दुआ सुन कर मुझे यह आरज़ू पैदा हुई के काश मैंने हज्जे मुस्तहब के बजाए हज़रत की ज़ियारत कर ली होती तो आं हज़रत ने फ़रमाया के तुम तो बहुत क़रीब हो तुम्हें ज़ियारत से किस चीज़ ने रोक रखा है? अय माविय्ह देखो इस ज़ियारत को तर्क न करना। मैंने अर्ज़ की मैं आप पर क़ुरबान मुझे नहीं मालूम था के ज़ियारत में इस क़द्र फ़ज़ीलत है।

फ़रमाया के माविय्ह वह लोग के जो हज़रत की ज़ियारत करने वालों के हक़ में दुआ करते हैं वह आसमान में उनसे कहीं ज़्यादा है जिस क़द्र ज़मीन में है। ख़बरदार ज़ियारते हुसैन को किसी के ख़ाफ़ से भी तर्क न करना। जो व्यक्ति किसी के ख़ाफ़ से तर्क कर देगा रोज़े क़यामत हसरत का शिकार होगा। और आरज़ू करेगा काश हज़रत की क़ब्र के पास इस क़द्र रहता के वहीं ख़त्म हो जाता। क्या तुम यह नहीं चाहते हो के परवरदिगार तुम्हें उनके दरमियान क़रार दे जिनके हक़ में रसूले अक्रम हज़रत अली व फ़ातेमा और आइम्मए मासूमीन (अ.स.) दुआ करते हैं। क्या नहीं चाहते हो के उनके दरमियान रहो

जिनसे मलाएका रोज़े क़यामत मुसाफ़ेहा करेंगे? क्या नहीं चाहते हो के उनमें शामिल हो जाओ जो क़यामत के दिन इस तरह आएं के उनके ज़िम्मे कोई गुनाह न हो? क्या नहीं चाहते हो के उन लोगों में शामिल हो जाओ जो क़यामत के दिन रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से मुसाफ़ेहा करने वाले हैं।

दूसरा मक़सद

ज़ाएरे सय्यदुश शोहदा के ज़रूरी आदाब
राहे ज़ियारत में या हरमे मुतहहर में

(१) घर से निकलने से पहले तीन दिन रोज़ा रखे और तीसरे दिन गुस्ल करे जैसा के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने सफ़वान को बताया था। और इसका ज़िक्र सातवीं ज़ियारत में आने वाला है।

शेख़ मोहम्मद बिन मशहदी ने ज़ियारते ईदैन में ज़िक्र फ़रमाया है के जब इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत का इरादा करो तो तीन दिन रोज़ा रखो और तीसरे दिन गुस्ल करो और अहलो अयाल को जमा कर के कहो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡتَوۡدِعُكَ الۡيَوۡمَ نَفۡسِیۡ وَ اَهۡلِیۡ وَ مَالِیۡ وَ وُلۡدِیۡ وَ مَنۡ

खुदाया मैने आज के दिन तेरे सुपूर्द किया अपने नफ़्स को अहेल को और माल व औलाद को

كَانَ مِنِّیۡ بِسَبِيۡلِ الشَّاهِدَ مِنۡهُمۡ وَ الۡغَائِبَ اَللّٰهُمَّ احۡفَظۡنَا

और हर उस शख़्श को जो मेरे साथ हो चाहे हाज़र हो या ग़ाएब। खुदाया हम को अपनी हिफ़ाज़त

بِحِفۡظِكَ بِحِفۡظِ الۡاِيۡمَانِ وَ احۡفَظۡ عَلَيۡنَا اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡنَا فِیۡ حِرۡزِكَ وَ

के ज़रिए महफ़ूज़ कर ईमान की हिफ़ाजत के साथ और हमारा निगरॉ हो जा खुदाया हम को क़रार

لَا تَسْلُبْنَا نِعْمَتَكَ وَلَا تُغَيِّرْ مَا بِنَا مِنْ نِعْمَةٍ وَّ عَافِيَةٍ وَّ زِدْنَا مِنْ

दे अपनी पनाह मे और हमसे अपनी नेमतको न छीन और न बदल उसको जो हमारे साथ नेमत

فَضْلِكَ اِنَّا اِلَيْكَ رَاغِبُوْنَ.

और आफ़ियत है और हमारे लिए अपने फ़ज़्ल को ज़्यादा कर हम तेरी तरफ़ राग़ाब हैं।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

कोई माबुद नही सिवाए खुदा के और खुदा बड़ा है व हम्द खुदा के लिए है।

मालिक की सना करे और मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) पर सलवात भेजे और उसके बाद सुकूनो विक़ार के साथ चले। रिवायत में हैं के परवरदिगार ज़ाएरीने क़ब्रे हुसैन के पसीने के हर क़तरे से सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को ख़ल्क फ़रमाता है जो मालिक की तसबीह करते हैं और ज़ाएर के लिए इस्तेग़फ़ार करते हैं और रोज़े क़यामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा।

(२) इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जब ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जाओ तो आं हज़रत (अ.स.) की ज़ियारत महज़ून ग़मगीन और ग़ुबार आलूद व तिश्ना व गुरूसना हालत में करो के आपको इसी कैफ़ियत में शहीद किया गया है। अपनी हाजत को तलब करो और फ़ौरन वापस आजाओ और उस जगह को अपना वतन न बनाओ।

(३) ज़ियारत के सफ़र में कोई लज़ीज़ चीज़ बिरयानी, हलवा, वग़ैरह साथ न ले जाओ और अपनी खुराक को मामूली क़रार दो के इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के हज़रत ने फ़रमाया के मैंने सुना है के एक जमाअत इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत के लिए जाती है और अपने साथ दरतरख़्वान पर भूने हुए गोश्त और हलवे के साथ जाती है। क्या यह लोग अगर अपने माँ बाप या दोस्तों की क़ब्र पर जाते हैं तो इसी तरह का सामान लेकर जाते हैं? दूसरी मोतबर हदीस में है के आंहज़रत

(अ.स.) ने मुफज़्ज़ल बिन उमर से फ़रमाया के बाज़ औक़ात इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करना न करने से बेहतर है और बाज़ औक़ात ज़ियारत न करना ज़ियारत करने से बेहतर होता है।

मुफ़ज़्ज़ल ने अर्ज़ की के हुज़ूर आप ने तो मेरी कमर तोड़ दी। फ़रमाया के वल्लाह अगर तुम अपने माँ बाप की क़ब्र की ज़ियारत को जाते हो तो ग़मगीन और रंजीदा होकर जाते हो और जब इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत को जाते हो तो अपने साथ दसतरख़्वान और सामान लेकर जाते हो। यह ग़लत है। तुम्हें चाहिए के गर्द आलूद और परेशान हाल बन कर जाओ।

लेखक के अनुसार किस क़दर मुनासिब है के अग़निया और तुज्जार अपने सफ़र में इस बात का लेहाज़ रखें और अपने शहर से लेकर करबला-ए-मोअल्ला तक अगर रास्ते में लोग उनकी दावतो मेहमानी के लिए बुलाएं तो एसी दावतों को क़ुबूल न करें जिनमें बेहतरीन गिज़ाएं और मुर्ग व बिरयानी पाई जाती हो और अपने घर से भी अच्छी ग़िज़ाए लेकर न निकलें और यह कहें के हम मुसाफ़रे करबला हैं। हमारे लिए एसी गिज़ाएं मुनासिब नहीं हैं।

शेख़ कुलैनी ने रिवायत नक़्ल की है के शहादते इमाम हुसैन (अ.स.) के बाद आपकी बीवी कलबिया ने सफ़े अज़ा बिछाई और आप पर गिरया किया और तमाम औरतों और ख़ादिमों ने इतना गिरया किया के आँसू खुश्क हो गए तो किसी जगह उन मोअज़्ज़मा के लिए मुर्ग भेजा गया ताके उससे गिरया की ताक़त पैदा हो। तो उन मोअज़्ज़मा ने देखते ही पूछा के यह क्या है? लोगों ने कहा के यह फ़लाँ व्यक्ति ने आप के लिए हदिया भेजा है। के इसके ज़रिए मातमे हुसैन (अ.स.) की क़ुव्वत पैदा हो। फ़रमाया हम किसी शादी में नहीं है। लेहाज़ा हमे ऐसी खुराक से क्या तअल्लुक़ है। उसके बाद आपने उस गिज़ा को घर से बाहर भिजवा दिया।

(४) इन चीज़ों में जो इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत के सफ़र में मुस्तहब हैं यह है कि तवाज़ो व इन्केसारी फ़रूतनी और खुज़ू व खुशू के साथ इस तरह चले जिस तरह कोई बंदे ज़लील रास्ता तय करता है। वह लोग जो राहे ज़ियारत में नई नई जदीद सवारियों पर सवार होते हैं उन्हें इन बातों की तरफ खुसूसियत के साथ मुतवज्जे रहना चाहिए और कहीं से तकब्बुरो गुरूर न पैदा होने पाए और बाकी ज़ाएरीन जो सख़्ती और

मश॰व॰ाकत के साथ ज़ियारत करते हैं उनके सामने बुज़ुर्गा का इज़हार न हो और उन्हें हिक़ारत की नज़र से न देखा जाए। ओलमाए केराम ने असहाबे कहफ़ के हालात में नक़्ल किया है के यह लोग द॰क्यानूस के मख़सूसीन बल्के वोज़रा में थे। लेकिन जब परवरदिगारे आलम ने अपनी रहमत को उनके शामिले हाल किया तो खुदा परस्ती और इस्लाहे अमल की तरफ़ मुतवज्जे हो गए और तमाम लोगों से किनारा कश हो गए और ग़ार में पनाह लेकर इबादते इलाही में मशग़ूल हो गए। यह घोड़ों पर सवार होकर शहर से बाहर निकले अभी तीन मील रास्ता तय किया था के उनमें से तलमीख़ा ने कहा के लोगों आख़रत की मिसकीनी के दिन आ गए हैं। और मुल्के दुनिया हमारे हाथ से निक़ल गया लेहाज़ा अब घोड़ों से उतर आओ और पैदल चलो ताके परवरदिगार हमारे हाल पर रहम करे और हमे सुकून व इत्मिनान इनायत फ़रमाए। चुनांचे सब के सब घोड़ों से उतर आए और सात फ़रसख का रास्ता पैदल तय किया यहाँ तक के पैर जख़्मी हो गए। और पैरों से ख़ून बहने लगा। ज़ाएरीन क़ब्रे मुतहहरे इमाम हुसैन (अ.स.) को इस मतलब को निगाह में रखना चाहिए और यह जानना चाहिए के इस रास्ते में जिस क़दर भी तवाज़ो से काम लिया जाए तो बलंदीए दरजात का बाएस होगा।

इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत के आदाब में इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से यह भी नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए पैदल सफ़र करेगा परवरदिगार उसके लिए हर क़दम पर हज़ार नेकियाँ लिखेगा और हज़ार गुनाह मिटा के बेहिश्त में हज़ार दरजात अता करेगा। लेहाज़ा फ़ुरात के किनारे पहुँचने के बाद गुस्ल करो और पा बरेहना होकर नालैन को हाथ में लेकर रास्ता तय करो जैसे कोई बंदे ज़लील रास्ता तय करता है।

(५) अगर ज़ियारत की राह में किसी ज़ाएर को ख़स्ता हाल देखे और वह मदद तलब करे तो जहाँ तक मुम्किन हो उसे तवज्जो दे और मंज़ल तक पहुँचा दे। ऐसा न हो के उसकी तरफ़ से बे एतेनाई अमल में आ जाए। शेख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ अबू हारून से रिवायत की है के

मैं इमाम सादिक़ (अ.स.) की ाख़िदमत में था के आप ने अपने पास के असहाब से फ़रमाया के आाख़िर तुम्हें क्या हो गया है के तुम हमें हक़ीर समझते हो? यह सुनना था के उनके दरमियान से एक खुरासानी व्यक्ति खड़ा हो गया। कहने लगा खुदा की पनाह हम और आपको हक़ीर और मामूली ख़याल करेंगे? फ़रमाया के जो लोग हमें मामूली समझते हैं उनमें से एक तुम भी हो। उसने कहा पनाह बाखुदा मैं ऐसा कर सकता हूँ! फ़रमाया के वाय तुम्हारे हाल पर क्या तुमने उस व्यकति की आवाज़ नहीं सुनी थी जो जोहफ़ा के नज़दीक यह कह रहा था के हमे एक मील के लिए अपने साथ सवार कर लो मैं ख़स्ता हाल हो गया हूँ और तुमने मुड़कर भी नहीं देखा था और उसे हक़ीर समझ लिया था? याद रखो के जिसने किसी मोमिन को ज़लील किया उसने हमें ज़लील किया है और हमारी हुरमत को ज़ाया किया है।

लेखक के अनुसार हमने आदाबे ज़ियारत में नवें नम्बर के ज़ैल में एक बयान अली बिन यक़तीन की रिवायत के साथ नक़्ल किया है। जो इस मकाम के लिए मुनासिब है लेहाज़ा उसे भी देखा जा सकता है। और वह बेहतरीन मोआएज़ा है और यहाँ इस मकाम पर जिस अदब का ज़िक्र किया गया है उसका ताल्लुक़ सिर्फ़ ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) से नहीं हैं लेकिन क्योंकि राहे ज़ियारत का वाक्या था इस लिए हमने इस मकाम पर नक़्ल कर दिया।

(६) सिक़ा जलीलुल क़द्र मोहम्मद बिन मुस्लिम से रिवायत है के इमाम बाक़िर (अ.स.) से पूछा गया के हम जब आपके पिता इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत के लिए जाते हैं तो क्या ऐसा नहीं है जैसे हज में हों? फ़रमाया बेशक। पूछा: तो क्या हम पर वह सब कुछ लाज़म है जो हाजियों पर लाज़म है? फ़रमाया के बेशक तुम्हारा फ़र्ज़ है के साथियों के साथ अच्छा बरताव करो कम गुफ़्तगू करो बातें बेहतरीन करो और खुदा को ज़्यादा याद करो पाकीज़ा लिबास पहनो और हरम में दाख़ल होने से पहले गुस्ल करो और यह भी लाज़म है के खुज़ू-ओ-खुशू और रि॰क्क़ते क़ल्ब के साथ बढ़ो और वहां जाकर नमाज़ें अदा करो। मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर मुसलसल सलवात पढ़ते रहो।

और अपने को उन चीज़ों से महफ़ूज़ रखो जो तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं हैं। अपनी निगाहों को हराम और मुश्तबा चीज़ों से नीचे रखो और मोमिन भाईयों के साथ एहसान करो। और अगर देखो के किसी का माल ख़त्म हो गया है तो उसकी मदद करो और Dापने ख़र्च को उनके दरमियान बाँट दो। यह भी ज़रूरी है के तक़य्या का लेहाज़ रखो के दीन का क़याम तक़य्या से है। और उन चीज़ों से परहेज़ करो जिन से खुदा ने मना किया है। लोगों से झगड़ा न करो ज़्यादा क़सम न खाओ। लोगों से बहस न करो। अगर तुमने ऐसा कर लिया तो तुम्हें हज ओ उमरे का सवाब मिल जाएगा और तुम मालिक की तरफ़ से उस अज्र के हक़दार हो जाओगे जो उस व्यक्ति को मिलता है जो माल ख़र्च कर के अपने महल से दूर जाकर परवरदिगार से गुज़ारिश करता है। वापसी के वक़्त तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और तुम रहमत के हक़दार हो जाओगे।

(७) अबू हमज़ा ने इमाम सादिक़ (अ.स.) से बाबे ज़ियारत में नक़्ल किया है के जब नैनवां पहुँचो तो अपना सामान उतार दो और अपने जिस्म पर तेल की मालिश न करना, सुरमा न लगाना और जब तक वहाँ रहना ख़बरदार गोश्त इस्तेमाल न करना।

(८) फ़ुरात के पानी से गुस्ल करे के इस बारे में मोतअद्दिद रिवायात वारिद हुई हैं और एक हदीस में इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति भी फ़ुरात के पानी से गुस्ल करके इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करेगा वह गुनाहों से इस प्रकार पाक हो जाएगा जैसे शिकमे मादर से पैदा हुआ है चाहे उसके गुनाहे कबीरा ही क्यों न हों।

रिवायत में है के आं हज़रत (अ.स.) से कहा गया के अक्सर ऐसा होता है के हम ज़ियारते क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जाते हैं और हमारे लिए सर्दा वग़ैरह की बिना पर गुस्ल मुश्किल हो जाता है।

फ़रमाया के जो व्यक्ति फ़ुरात में गुस्ल करे और इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करे परवरदिगारे आलम उसके वास्ते वह फ़ज़ीलत अता करता है जिसका शुमार न हो सके।

बशीर दहान से रिवायत है के हज़रते सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति भी ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जाए वुज़ू करे फ़ुरात में

गुस्ल करे तो जो क़दम भी बढ़ाएगा या रखेगा परवरदिगार उसके लिए हज व उमरा का सवाब लिख देगा। बाज़ रिवायात में यह है के फ़ुरात में भी उस जगह गुस्ल करे जो क़ब्र के सामने है। और बाज़ रिवायात से मालूम होता है के जब फ़ुरात के पास पहुँचे तो सौ बार اَللّٰہُ اَکْبَرُ , सौ बार لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहे और सौ बार सलवात पढ़े।

अल्लाह सबसे बड़ा है। कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा। खुदाया मुहम्मद व आले मुहम्म -द पर रहमत नाज़ल कर।

(९) जब हरम में दाख़ल होना चाहे तो मशरिक़ी दरवाज़े से दाख़ल हो जैसा इमाम सादिक़ (अ.स.) ने यूसुफ किनासी से फ़रमाया था।

(१०) इब्ने क़ुलूवय की रिवायत है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने मुफज़्ज़ल बिन उमर से फ़रमाया के जब क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के पास पहुँचों तो रौज़े के दरवाज़े पर ठहर कर यह कलेमात पढ़ो के हर कलमे के एवज़ रहमते इलाही के हक़दार बन जाओगे।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اٰدَمَ صَفْوَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ

सलाम आप पर ऐ आदम सफ़ी अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर अल्लाह के नबी नूह के

نَبِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللّٰهِ اَلسلَامُ عَلَيْكَ

वारिस, सलाम आप पर ऐ इब्राहीम अल्लाह के ख़लील के वारिस, सलाम आप पर ऐ मूसा

يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى رُوْحِ اللّٰهِ

कलीमे खुदा के वारिस, सलाम आपपर ऐ ईसा रूहुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

मोहम्मद हबीबे खुदाके वारिस, सलाम आप पर ऐ अली वसी रसूले खुदा के वारिस, सलाम

عَلِيٍّ وَصِيِّ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُوْلِ اللهِ

आप पर ऐ हसने मुजतबा (अ) के वारिस, सलाम आप पर ऐ फ़ातेमा बिन्ते रसूल ख़ुदा के

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ الرَّضِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الشَّهِيْدُ

वारिस, सलाम आप पर ऐ शहीद सिद्दीक़, सलाम आप पर ऐ वसीए नेक व मुत्तक़ी, सलाम

الصِّدِّيْقُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَآرُّ التَّقِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَى

उन रूहों पर जिन्होंने तेरी बारगाह मे नज़ूल किया और तेरी बारगाह मे सामाने सफ़र उतार

الْاَرْوَاحِ الَّتِيْ حَلَّتْ بِفِنَآئِكَ وَ اَنَاخَتْ بِرَحْلِكَ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَلَآئِكَةِ

दिया, सलाम अल्लाह के मलाएका पर जो आपके गिर्द हैं मै गवाही देता हूँ के आपने नमाज़

اللهِ الْمُحْدِقِيْنَ بِكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ

क़ाएम की, ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर किया और

اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ عَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا حَتّٰى

अल्लाह की मुख़लिसाना इबादत की यहाँ तक के मौत आ गई, सलाम आप पर और अल्लाह

اَتٰيكَ الْيَقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

की रहमत व बरकात हो।

उस के बाद क़ब्र की तरफ़ आगे बढ़े के जो क़दम भी उठाएगा या रखेगा उसे वो सवाब मिलेगा जैसे कोई राहे खुदा में अपने ख़ून में डूबा हुआ हो। क़ब्र के पास पहुँच कर अपने हाथों को क़ब्र पर रखकर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَ سَمَآئِهٖ

सलाम आप पर ऐ अल्लाह की हुज्जत उसकी ज़मीन और आसमान मे।

इसके बाद नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जे हो जाए। के जो दो रकत भी यहाँ अदा की जाएगी उसका सवाब उस व्यक्ति का होगा जिसने हज़ार हज व उमरा अदा किए हों। और हज़ार गुलाम आज़ाद किए हों और हज़ार बार राहे खुदा में किसी पैग़म्बरे मुरसल के साथ जिहाद किया हो।

(११) अबू सईद मदाएन से मनक़ूल है के मैं इमामे सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में दाख़िल हुआ और मैंने कहा के मैं ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जा रहा हूँ। फ़रमाया जाओ ज़ियारते फ़रमज़ंदे रसूल इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जो तमाम नेकियों में नेक तमाम पाकीज़ा किरदारों में पाकीज़ा किरदार और तमाम नेक किरदारों में नेक किरदार थे। मगर जब आं हज़रत की ज़ियारत करो तो बालाए सर हज़ार बार तस्बीहे अमीरूल मोमेनीन (अ.स.) पढ़ो और पाईने पा तसबीहे फ़ातेमा पढ़ो। इसके बाद दो रकत नमाज़ अदा करो। पहली रकत में सूरह यासीन पढ़ो और दूसरी रकत में सूरह रहमान। अगर एसा करोगे तो तुम्हारे वास्ते सवाबे कसीर होगा। मैंने पूछा के मैं आप पर क़ुरबान यह तसबीहे अली व फ़ातेमा क्या हैं? फ़रमाया अय अबू सईद, तसबीहे अली यह है:

سُبْحَانَ الَّذِيْ لَا تَنْفَدُ خَزَائِنُهٗ سُبْحَانَ الَّذِيْ لَا تَبِيْدُ مَعَالِمُهٗ سُبْحَانَ

पाक व मुनज़्ज़ह है वो खुदा जिस का ख़ज़ाना ख़त्म नही होता है। पाक है वो खुदा जिस के मआलिम

الَّذِيْ لَا يَفْنٰى مَا عِنْدَهٗ سُبْحَانَ الَّذِيْ لَا يُشْرِكُ اَحَدًا فِيْ حُكْمِهٖ سُبْحَانَ

नाबूद नही होते, पाक है वो खुदा जिस के पास जो है वो ख़त्म नही होता, पाक है वो खुदा जो हुकुम

الَّذِیْ لَا اضْمِحْلَالَ لِفَخْرِہٖ سُبْحَانَ الَّذِیْ لَا انْقِطَاعَ لِمُدَّتِہٖ سُبْحَانَ

मे किसी को शरीक नही करता है, पाक है वो खुदा जिसके फ़०ख ग़ाएब नही होता, पाक है वो

الَّذِیْ لَا اِلٰہَ غَیْرُہٗ.

खुदा जिस की मुद्दत के लिए ख़त्म होना नही है पाक हे वो खुदा जिसके अलावा कोई खुदा नही है।

और तसबीहे जनाबे फ़ातेमा यह है:

سُبْحَانَ ذِی الْجَلَالِ الْبَاذِخِ الْعَظِیْمِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزِّ الشَّامِخِ

पाक है जलालत व बुज़ुर्गा और अज़मत वाल। खुदा पाक है इज़्ज़त बुलंद मरतबह वाला खुदा

الْمُنِیْفِ سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ الْفَاخِرِ الْقَدِیْمِ سُبْحَانَ ذِی الْبَہْجَۃِ وَ

पाक है, बादशाहत वाला फ़०ख व क़दामत वाला खुदा पाक है हुसनो जमालवाला, खुदा पाक हे

الْجَمَالِ سُبْحَانَ مَنْ تَرَدّٰی بِالنُّوْرِ وَ الْوَقَارِ سُبْحَانَ مَنْ یَّرٰی اَثَرَ

वो खुदा जिसने नूर और विक़ार की रिदा पहनी है, पाक है वो खुदा जो पत्थर पर चूँटी के निशाने

النَّمْلِ فِی الصَّفَا وَ وَقْعَ الطَّیْرِ فِی الْھَوَاءِ

क़दम को और हवा मे परिंदे की परवाज को देखता है।

(१२) क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के पास नमाज़े वाजिब व मुस्तहब अदा करे के वहाँ नमाज़ मक़बूल होती है। सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के कोशिश करो के तुमसे हरमे मुबारक में कोई वाजिब फ़रीज़ा या नाफ़ेला

तर्क न होने पाए के रिवायत में है के आं हज़रत के पास नमाज़े वाजिब हज के बराबर है और नाफ़ेला उमरा के बराबर है।

लेखक के अनुसार रिवायत मुफज़्ज़ल में हाएरे मुबारक में नमाज़ की फ़ज़ीलत का ज़िक्र हो चुका है और दूसरी मोतबर रिवायत में इमामे सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति आं हज़रत (अ.स.) की ज़ियारत करे और दो रकत या चार रकत नमाज़ वहां अदा करे उसे परवरदिगार हज व उमराह का सवाब देगा। रिवायत से ज़ाहिर होता है के नमाज़े ज़ियारत या दूसरी नमाज़ें क़ब्र के पीछे या बालाए सर दोनो जगह पढ़ी जा सकती हैं। अगर बालाए सर पढ़े तो इस क़द्र पीछे रहकर पढ़े के अस्ल क़ब्र के मुक़ाबले में न हो।

अबू हमज़ा सुमाली इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत करते हैं के आं हज़रत (अ.स.) के बालाए सर दो रकत नमाज़ अदा करो पहली रकत में सूरह हम्द व यासीन और दूसरी रकत में सूरह हम्द व सूरह रहमान पढ़ो। और अगर चाहो तो पुश्ते क़ब्र पर भी नमाज़ हो सकती है लेकिन बालाए सर बेहतर है। इस नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद जो नमाज़ चाहो पढ़ सकते हो लेकिन यह दो रकत नमाज़े ज़ियारत बहरहाल पढ़ना है हर उस मकाम पर जहाँ की ज़ियारत करो। इब्ने कूलूवय ने इमाम बाकिर (अ.स.) से रिवायत की है के आप (अ.स.) ने एक व्यक्ति से फ़रमाया के तुम्हारे लिए क्या माने है के जब कोई ज़रूरत पेश आ जाए तो जाओ क़ब्रे हुसैन (अ.स.) के पास और चार रकत नमाज़ पढ़कर अपनी हाजत तलब करो के वहां नमाज़े फ़रीज़ा हज के बराबर है और नमाज़े नाफ़ेला उमरा के बराबर है।

(१३) रौज़ए मुतहहरे इमाम हुसैन (अ.स.) में बेहतरीन अमल दुआ है के उस जगह याने इमाम हुसैन (अ.स.) के क़ुब्बे के नीचे दुआएं क़बूल होती हैं और यह उन चीज़ों में से है जिसको इमाम हुसैन (अ.स.) को परवरदिगार ने शहादत के एवज़ में अता फ़रमाया है। ज़ाएर को चाहिए के इस फ़ुरसत को ग़नीमत समझे और तौबा व इनाबत और अ॰र्जे हाजात में कोताही न करे। आं हज़रत (अ.स.) की ज़ियारत के ज़ैल में बहुत सी दुआएं बेहतरीन मज़ामीन के साथ वारिद हुई हैं। अगर हमारी बिना इख़्तेसार न होती तो चंद एक का ज़िक्र ज़रूर किया जाता। लेहाज़ा बेहतर यह है के

जहाँ तक मुम्किन हो सहीफए कामेला की दुआएं पढ़े जो बेहतरीन दआएं हैं। और हम इस बाब के आख़िर में ज़ियाराते जामेआ के बाद एक दुआ और नक़्ल करेंगे जो तमाम मशाहिदे मुक़द्दसा में पढ़ी जा सकती है। और इस लिए के यह जगह भी ख़ाली न रह जाए एक मुख़्तसर दुआ नक़्ल किये दे रहे हैं जो एक ज़ियारत के ज़ैल में वारिद हुई है और वह यह है के हरमे मुबारक में हाथों को आसमान की तरफ़ बुलंद कर के कहे:

اَللّٰهُمَّ قَدْ تَرٰى مَكَانِيْ وَ تَسْمَعُ كَلَامِيْ وَ تَرٰى مَقَامِيْ وَ تَضَرُّعِيْ

खुदाया तू मेरी जगह को देखता है और मेरे कलाम को सुनता है और मेरे मकाम को देखता है और मेरे

وَ مَلَاذِيْ بِقَبْرِ وَلِيِّكَ وَ حُجَّتِكَ وَ ابْنِ نَبِيِّكَ وَ قَدْ عَلِمْتَ يَا

त०र्जो और पनाह को अपनी हुज्जत के क़ब्र के पास और अपने नबी के फ़रज़ंद की क़ब्र के पास और तुझको

سَيِّدِيْ حَوَائِجِيْ وَ لَا يَخْفٰى عَلَيْكَ حَالِيْ وَ قَدْ تَوَجَّهْتُ اِلَيْكَ

मालुम है ऐ मेरे सरदार मेरी हाजत और तुझ पर मेरा ख़याल पोशीदा नही है और मै तेरी जानिब मुतवज्ज़े

بِابْنِ رَسُوْلِكَ وَ حُجَّتِكَ وَ اَمِيْنِكَ وَ قَدْ اَتَيْتُكَ مُتَقَرِّبًا بِهٖ

हुआ हूँ। तेरे रसूल के फ़रजंद और तेरी हुज्जत व अमीन के वास्ते से और मै तेरे पास आया हूँ उस के ज़रिए

اِلَيْكَ وَ اِلٰى رَسُوْلِكَ فَاجْعَلْنِيْ عِنْدَكَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَ

तेरा तक़र्रूब ढूँढते हुए और तेरे रूसल का तक़र्रूब तलाश करते हुए तू मुझको उनके वासते से अपने

الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَعْطِنِيْ بِزِيَارَتِيْ اَمَلِيْ وَ هَبْ لِيْ

नज़दीक इज़्ज़तदार क़रार दे दुनिया मे और आख़िरत मे और मुकर्रेबीन मे से क़रार दे और मेरी ज़ियारत

مُنَایَ وَ تَفَضَّلْ عَلَیَّ بِسُؤْلِیْ وَ رَغْبَتِیْ وَ اقْضِ لِیْ حَوَائِجِیْ وَ لَا

के वासते से मुझको मेरी उम्मीद देदे और मुझको मेरी तमन्ना अता कर दे और मेरी रग़बत और ख़्वाहिश मे

تَرُدَّنِیْ خَائِبًا وَّ لَا تَقْطَعْ رَجَائِیْ وَ لَا تُخَیِّبْ دُعَائِیْ وَ عَرِّفْنِیْ

मुझ पर फ़ज़्ल कर और मेरी हाजतों को पूरा कर दे और मुझको नामुराद न पलटाना और मेरी उम्मीद को

الْاِجَابَةَ فِیْ جَمِیْعِ مَا دَعَوْتُ مِنْ اَمْرِ الدِّیْنِ وَ الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ

मुनक़ता न करना और मेरी दुआ को नाकाम न करना और मुझको क़ुबूलियत को पहुँचवा दे तमाम चीज

وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ عِبَادِكَ الَّذِیْنَ صَرَفْتَ عَنْهُمُ الْبَلَایَا وَ

मे जिसकी मैने तुझसे दुआ की है दीन और दुनिया के अम्र और आख़िरत मे और मुझको क़रार दे अपने

الْاَمْرَاضَ وَ الْفِتَنَ وَ الْاَعْرَاضَ مِنَ الَّذِیْنَ تُحْیِیْهِمْ فِیْ

उन बन्दों मे जिनसे तूने दूर कर दिया है मुसीबतों, बिमारियों, फ़ितनो और आसेब को और जिनको तू ज़िन्दा

عَافِیَةٍ وَّ تُمِیْتُهُمْ فِیْ عَافِیَةٍ وَّ تُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ فِیْ عَافِیَةٍ وَ

रखता है आफ़ियत मे और मौत देता है उन्हें आफ़ीयत मे और जन्नत मे जिन्हें दाख़िल करेगा आफ़ियत मे

تُجِیْرُهُمْ مِنَ النَّارِ فِیْ عَافِیَةٍ وَ وَفِّقْ لِیْ بِمَنٍّ مِنْكَ صَلَاحَ مَا

और उनको पनाह देगा जहन्नम की आग से आफ़ियत मे और मुझको अपने फ़ज़्ल व एहसान से तौफ़ीक़

اُؤَمِّلُ فِیْ نَفْسِیْ وَ اَهْلِیْ وَ وُلْدِیْ وَ اِخْوَانِیْ وَ مَالِیْ وَ جَمِیْعِ مَا

दे बेहतरी की जिसकी मै उम्मीद करता हूँ अपने नफ़्स, अहलो अयाल, औलाद और भाईयों और माल मे

اَنْعَمْتَ بِهٖ عَلَيَّ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और तमाम उन चीज़ो मे जिन को तूने नेमत के तौर पर दिया है मुझको ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

(१४) इमाम हुसैन (अ.स.) के हरम के आमाल में से एक अमल सलवात पढ़ना भी है जिसके बारे में रिवायत है के पुश्ते सर खड़े होकर पैग़ंबर और हुसैन (अ.स.) पर सलवात पढ़े।

सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में इस सलवात को बाज़ ज़ियारात के ज़ैल में यूँ नक़्ल किया है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ صَلِّ عَلَى الْحُسَيْنِ الْمَظْلُوْمِ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और दुरूद नाज़ल कर हुसैने मज़लुम व शहीद

الشَّهِيْدِ قَتِيْلِ الْعَبَرَاتِ وَ اَسِيْرِ الْكُرُبَاتِ صَلٰوةً نَامِيَةً زَاكِيَةً

पर जो मक़तूल गिरया और असीरे ग़म व मुसिबत हैं ज़्यादा होने वाला दुरूद पाकीज़ा मुबारक दुरूद

مُبَارَكَةً يَصْعَدُ اَوَّلُهَا وَ لَا يَنْفَدُ اٰخِرُهَا اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى

के जिसका आगाज़ बुलंद होता है और जिस का आख़िर ख़त्म नही होता है ऐसा बेहतरीन दुरूद जो

اَحَدٍ مِّنْ اَوْلَادِ الْاَنْبِيَآءِ وَ الْمُرْسَلِيْنَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ

तूने अंबिया व मुर्सलीन की औलाद पर भेजा है, ऐ आलमीन के परवरदिगार खुदाया दुरूद नाज़ल कर

صَلِّ عَلَى الْاِمَامِ الشَّهِيْدِ الْمَقْتُوْلِ الْمَظْلُوْمِ الْمَخْذُوْلِ وَ

इमाम शहीदे मक़तूल मज़लूम बे यारो मद्दगार पर और सरदार, क़ाएद, इबादत गुज़ार, ज़ाहीद, वसी

السَّيِّدِ الْقَآئِدِ وَ الْعَابِدِ الزَّاهِدِ الْوَصِيِّ الْخَلِيْفَةِ الْاِمَامِ

ख़लीफ़ा इमाम सिद्दीक़ पाक व पाकीज़ा तैय्यब व ताहीर मुबारक, राज़ी मर्ज़ा, मुत्तक़ी, हादी, मेहदी,

الصِّدِّيْقِ الطُّهْرِ الطَّاهِرِ الطَّيِّبِ الْمُبَارَكِ وَ الرَّضِيِّ الْمَرْضِيِّ وَ

ज़ाहिद रहबर मुजाहिद आलम इमाम हिदायत रसूल के नवासे, बतूल की खुनकीए चश्म पर अल्लाह का

التَّقِيِّ الْهَادِى الْمَهْدِيِّ الزَّاهِدِ الذَّآئِدِ الْمُجَاهِدِ الْعَالِمِ اِمَامِ

दुरूद हो उन पर ओर उनकी आल पर और सलाम हो खुदाया दुरूद नाज़ल कर मेरे सरदार मौला पर

الْهُدٰى سِبْطِ الرَّسُوْلِ وَ قُرَّةِ عَيْنِ الْبَتُوْلِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ

जिन्होने तेरी इताअत के साथ अमल किया और तेरी मासियत से रूके और तेरी मर्जा के लिए कोशिश

وَ سَلَّمَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِىْ وَ مَوْلَاىَ كَمَا عَمِلَ بِطَاعَتِكَ

की और तेरे ईमान की तरफ़ आए, तेरे बारे मे किसी के अज्र को पोशिदा व ज़ाहिर मे क़ुबूल नही किया

وَ نَهٰى عَنْ مَّعْصِيَتِكَ وَ بَالَغَ فِىْ رِضْوَانِكَ وَ اَقْبَلَ عَلٰى اِيْمَانِكَ

वो बन्दों को बुलाते रहे तेरी जानिब और उन की हिदायत करते रहे, तेरी तरफ़ और तेरे सामने खड़े हो

غَيْرَ قَابِلٍ فِيْكَ عُذْرًا سِرًّا وَ عَلَانِيَةً يَدْعُوْ الْعِبَادَ اِلَيْكَ وَ

गए ज़ुल्म को ढाँते रहे, सच्चाई से और सुन्नत को ज़िन्दा करते रहे किताब से पस वो ज़िन्दा रहे तेरी मर्ज़ा

يَدُلُّهُمْ عَلَيْكَ وَ قَامَ بَيْنَ يَدَيْكَ يَهْدِمُ الْجَوْرَ بِالصَّوَابِ وَ

मे रंज व ग़म के साथ और तेरी इताअत पर दुनिया से गए और तेरे औलिया की इताअत मे रहे कोशिश

يُحْيِيْ السُّنَّةَ بِالْكِتَابِ فَعَاشَ فِيْ رِضْوَانِكَ مَكْدُوْدًا وَ مَضٰى

करते हुए और जान तेरे हवाले कर दी उन्होंने तेरी मासियत नही की रात मे न दिन मे बल्के तेरी राह मे

عَلٰى طَاعَتِكَ وَ فِيْ اَوْلِيَآئِكَ مَكْدُوْحًا وَ قَضٰى اِلَيْكَ مَفْقُوْدًا لَمْ

मुनाफ़ि०कों और काफ़िरों से जिहाद किया।खुदाया उनको सादिक़ीन और नेकूकारों की बेहतरीन जज़ा

يَعْصِكَ فِيْ لَيْلٍ وَّ لَا نَهَارٍ بَلْ جَاهَدَ فِيْكَ الْمُنَافِقِيْنَ وَ الْكُفَّارَ

दे और उनके दुश्मनो पर अज़ाब मे ज़्यादती कर और उनके क़ातिलों पर इक़ाब नाज़ल कर क्योंके

اَللّٰهُمَّ فَاجْزِهٖ خَيْرَ جَزَآءِ الصَّادِقِيْنَ الْاَبْرَارِ وَ ضَاعِفْ عَلَيْهِمُ

उन्होने करीमाना अनदाज़ मे जंग की और क़त्ल किए गए मज़लूम हालत मे और रहमत के साथ दुनिया

الْعَذَابَ وَلِقَاتِلِيْهِ الْعِقَابَ فَقَدْ قَاتَلَ كَرِيْمًا وَ قُتِلَ مَظْلُوْمًا

से गए वो अपने क़ातिलों से कह रहे थे मै रसूल अल्लाह का बेटा हूँ और मै उसका बेटा हूँ जिस ने ज़कात

وَ مَضٰى مَرْحُوْمًا يَقُوْلُ: اَنَا ابْنُ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُحَمَّدٍ وَ ابْنُ مَنْ زَكّٰى

दी और इबादत की तो उन लोगों ने क़त्ल किया जान बुझ कर उन को ईमान पर क़त्ल किया और

وَ عَبَدَ فَقَتَلُوْهُ بِالْعَمْدِ الْمُعْتَمَدِ قَتَلُوْهُ عَلَى الْاِيْمَانِ وَ اَطَاعُوْا

उनके क़तल मे शैतान की इताअत की और रहमान को ज़रा भी निगाह मे न रखा। खुदाया दुरूद नाज़ल

فِيْ قَتْلِهِ الشَّيْطَانَ وَلَمْ يُرَاقِبُوْا فِيْهِ الرَّحْمٰنَ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى

कर मेरे सरदार मौला पर ऐसा दुरूद जिस के ज़रिए तू उनके ज़िक्र को बुलंद करता है और उन के अम्र

سَيِّدِیْ وَ مَوْلَایَ صَلَاةً تَرْفَعُ بِهَا ذِكْرَهٗ وَ تُظْهِرُ بِهَا اَمْرَهٗ وَ

को ज़ाहिर करता है और उनकी मदद मे जलदी करता है और उनको मख़सूस कर बेहतरीन फ़ज़ाएल

تُعَجِّلُ بِهَا نَصْرَهٗ وَ اخْصُصْهُ بِاَفْضَلِ قِسَمِ الْفَضَآئِلِ يَوْمَ

की क़िसमो से राज़े क़यामत और उनके शरफ को अला ईल्लीन मे ज़्यादा कर और उनको पहुँचा दे

الْقِيٰمَةِ وَ زِدْهُ شَرَفًا فِیْ اَعْلٰی عِلِّيِّيْنَ وَ بَلِّغْهُ اَعْلٰی شَرَفِ

मुकर्रेमीन के बुलंद तरीन श०रफ तक और उनको बुलंद कर दे अपनी रहमत के शरफ़ से मुक़र्रेबीन

الْمُكَرَّمِيْنَ وَ ارْفَعْهُ مِنْ شَرَفِ رَحْمَتِكَ فِیْ شَرَفِ الْمُقَرَّبِيْنَ فِیْ

के मकाम शरीफ़ मे बुलंद तरीन बारगाह मे और उनको पहुँचा दे मकाम वसीला और लजालत वाली

الرَّفِيْعِ الْاَعْلٰی وَبَلِّغْهُ الْوَسِيْلَةَ وَ الْمَنْزِلَةَ الْجَلِيْلَةَ وَ الْفَضْلَ وَ

मनिज़ल और फ़ज़्ल व फ़ज़ीलत और करामत जज़ीला तक। खुदा उनको हमारी तरफ़ से जज़ा दे वो

الْفَضِيْلَةَ الْكَرَامَةَ الْجَزِيْلَةَ اَللّٰهُمَّ وَ اجْزِهٖ عَنَّا اَفْضَلَ مَا

बेहतरीन जज़ा जो तूने किसी इमाम को दी है उसकी रय्यत से और दुरूद नाज़ल कर मेरे सरदार व मौला

جَازَيْتَ اِمَامًا عَنْ رَعِيَّتِهٖ وَ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِیْ وَ مَوْلَایَ كُلَّمَا

पर जब भी ज़िक्र किया जाए या न किया जाए ऐ मेरे सरदार व मौला मुझको दाख़िल कर दे अपने गरोह

ذُكِرَ وَ كُلَّمَا لَمْ يُذْكَرْ يَا سَيِّدِیْ وَ مَوْلَایَ اَدْخِلْنِیْ فِیْ حِزْبِكَ وَ

और ज़ुमरे मे और मेरे लिए तलब अताया कीजिए अपने परवरदिगार और मेरे परवरदिगार की तरफ़

زُمْرَتِكَ وَ اسْتَوْهِبْنِيْ مِنْ رَبِّكَ وَ رَبِّيْ فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللّٰهِ جَاهًا وَ

से क्योंके आप की इज़्ज़त आप का मरतबा मनज़ेलत बुलंद खुदा के नज़दीक है अगर आप ने सवाल

قَدْرًا وَ مَنْزِلَةً رَفِيْعَةً اِنْ سَاَلْتَ اُعْطِيْتَ وَاِنْ شَفَعْتَ شُفِّعْتَ.

किया तो आपको अता किया जाएगा और अगर आपने शिफ़ाअत की तो क़ुबूल की जाएगी। खुदारा

اَللّٰهَ اَللّٰهَ فِيْ عَبْدِكَ وَ مَوْلَاكَ لَا تُخَلِّنِيْ عِنْدَ الشَّدَآئِدِ وَ الْاَهْوَالِ

खुदारा अपने बन्दे व ग़ुलाम को सख़तियों मे न छोड़ दीजिएगा मेरे अमल के बुरे और काम के कबीह

لِسُوْٓءِ عَمَلِيْ وَ قَبِيْحِ فِعْلِيْ وَ عَظِيْمِ جُرْمِيْ فَاِنَّكَ اَمَلِيْ وَ رَجَآئِيْ وَ

और जुर्म के अज़ीम होने की वजह से क्योंके आप मेरी उम्मीद, आरज़ू, मेरा भरोसा और एतेमाद और

ثِقَتِيْ وَ مُعْتَمَدِيْ وَ وَسِيْلَتِيْ اِلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَ رَبِّكَ لَمْ يَتَوَسَّلِ

मेरा वसीला हैं उल्लाह की तरफ़ जो मेरा और आप का परवरदिगार है किसी वसीला बनाने वाले ने

الْمُتَوَسِّلُوْنَ اِلَى اللّٰهِ بِوَسِيْلَةٍ هِيَ اَعْظَمُ حَقًّا وَلَا اَوْجَبُ حُرْمَةً

वसीला नही बनाया खुदा की तरफ़ जिसका उससे अज़ीम हक़ रहा हो और जिसकी हुरमत ज़्यादा रही

وَلَا اَجَلُّ قَدْرًا عِنْدَهٗ مِنْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ لَا خَلَّفَنِيَ اللّٰهُ عَنْكُمْ

हो और जिसकी इज़्ज़त ज़्यादा रही हो उसके नज़दीक आप अहलेबैत (अ) से अल्लाह मुझको न जुदा

بِذُنُوْبِيْ وَ جَمَعَنِيْ وَ اِيَّاكُمْ فِيْ جَنَّةِ عَدْنٍ الَّتِيْ اَعَدَّهَا لَكُمْ وَ

करे आपसे मेरे गुनाहों की वजह से और मुझको और आपको जन्नते अद्न मे जमा करे जिस को उनसे

لِاَوْلِيَآئِكُمْ اِنَّهٗ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ وَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَبْلِغْ

मोहैया किया है। आपके लिए और आपके दोस्तों के लिए बेशक वो बेहतरीन बख़्शनेवाला है और

سَيِّدِیْ وَ مَوْلَایَ تَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَ سَلَامًا وَارْدُدْ عَلَيْنَا مِنْهُ

सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाला है। खुदाया मेरे सरदार व मौला को ज़्यादा तहैय्यात व सलाम पहुँचा दे

السَّلَامَ اِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيْمٌ وَ صَلِّ عَلَيْهِ كُلَّمَا ذُكِرَ السَّلَامُ وَ

और हमपर ही उनकी जानिब से सलाम को लौटा, बेशक तू जवादो करीम है और उन पर दुरूद भेज

كُلَّمَا لَمْ يُذْكَرْ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

जब भी सलाम का ज़िक्र हो या ज़िक्र न हो, ऐ आलमीन के परवरदिगार।

लेखक के अनुसार: हमने इस ज़ियारत को आमाले रोज़े आशूरा मों नक़्ल किया है। और इस बात के अंत में हुज्जजे ताहेरीन पर एक सलवात नक़्ल करेंगे और एक सलवात मुख़्तसर इमाम हुसैन (अ.स.) के बारे में भी वहाँ नक़्ल की जाएगी जिसे पढ़ना तर्क न करे।

(१५) रौज़ए मुक़द्दसा के आमाल में से एक मज़लूम की बददुआ है ज़ालिमों के ख़िलाफ़ लेहाज़ा मुनासिब है के अगर कोई व्यक्ति ज़ुल्मे ज़ालिम से परेशान है तो इस हरम में दुआ करे और वह दुआ वह है जिसका तरीक़ा शेखुत ताएफ़ा ने मिस्बाहुल मुतहज्जिद में आमाले जुमा के ज़ैल में ज़िक्र किया है। और फ़रमाया है के दुआ-ए-मज़लूम क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के पास बेहतरीन है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعْتَزُّ بِدِيْنِكَ وَ اَكْرَمُ بِهِدَايَتِكَ وَ فُلَانٌ يُذِلُّنِیْ

खुदाया मै तेरी दीन की वजह से इज़्ज़तदार हुआ और मुकर्रम हुआ तेरी हिदायत की वजह से और फ़ुलॉ

بِشَرِّهٖ وَ يُهِيْنُنِيْ بِاَذِيَّتِهٖ وَ يُعِيْبُنِيْ بِوِلَآءِ اَوْلِيَآئِكَ وَ يَبْهَتُنِيْ

मुझको ज़लील करना चाहता है अपने शर से और मेरी तौहीन करता है अपनी अज़ीयत से और मुझको

بِدَعْوَاهُ وَ قَدْ جِئْتُ اِلٰى مَوْضِعِ الدُّعَآءِ وَ ضِمَانِكَ الْاِجَابَةَ

जब ऐब लगाता है तेरे वली की विलायत से और अपने दावे से मुझको हैरत ज़दा कर रहा है और मै

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَعْدِنِيْ عَلَيْهِ السَّاعَةَ

आया हूँ दुआ के मकाम पर और तेरी क़ुबूलियत की जमानत के मकाम पर, खुदाया दुरूद नाज़ल कर

السَّاعَةَ.

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको उसी के सर पर पलटा दे इसी वक़्त इसी वक़्त।

फिर खुद को क़ब्र पर डाल दे और कहे:

مَوْلَايَ اِمَامِيْ مَظْلُوْمٌ اَسْتَعْدِيْ عَلٰى ظَالِمِهِ النَّصْرَ

मेरे मौला मेरे इमाम एक सितम रसीदा अपने ज़ालिम की शिकायत लाया है आप मदद करें मदद

النَّصْرَ.

करें।

और फ़िर इस शब्द अन नसरा अन नसरा की तक़रार करता रहे यहाँ तक के सांस टूट जाए।

(१६) इस हरम के आमाल में वह दुआ भी है जिसको इब्ने फहद ने उद्दतुद

दाई में इमाम सादिक़ (अ.स.) से नक़्ल किया है। के जब कोई हाजत पेश आ जाए तो बालाए सरे इमाम हुसैन (अ.स.) खड़े होकर कहे:

يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ تَشْهَدُ مَقَامِیْ وَ تَسْمَعُ كَلَامِیْ وَ

ऐ अबु अब्दुल्लह मै गवाही देता हूँ के आप मेरे मकाम को देख रहे हैं और मेरे कलाम को सुन रहे

اَنَّكَ حَیٌّ عِنْدَ رَبِّكَ تُرْزَقُ فَاسْئَلْ رَبَّكَ وَ رَبِّیْ فِیْ قَضَآءِ

हैं और आप जिन्दा हैं अपने रब के पास से रिज़्क पाते हैं तू अपने और मेरे रब से मेरी हाजत बर

حَوَآئِجِیْ.

आरी के लिए सवाल कीजिए।

इन्शाअल्लाह हाजत पूरी होगी।

(१७) आमाले हरम में दो रकत नमाज़ है जो बालाए सर सूरह रहमान और सूरह मुल्क के साथ पढ़ी जाती है।

सय्यद इब्ने ताऊस ने रिवायत की है के जो व्यक्ति इस नमाज़ को पढ़ेगा परवरदिगार उसके लिए पच्चीस हज्जे मक़्बूल लिख देगा जो रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) के साथ अंजाम दिये हों।

(१८) ज़ेरे क़ुब्बा के आमाल में से एक इस्तेख़ारा भी जिसका तरीक़ा अल्लामा मजलिसी ने नक़्ल किया है। और असल रिवायत क़ुरबुल असनाद हिमयरी से है। जो वहाँ सनदे सहीह के साथ इमाम सादिक़ (अ.स.) से नक़्ल की गई है। के जो व्यक्ति भी किसी मामले में सौ बार तलबे ख़ैर करे - इस तरह के बालाए सरे इमाम हुसैन (अ.स.) खड़े हो कर कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ سُبْحَانَ اللهِ

और सारी तारीफ़ खुदा के लिए है और नही है कोई माबूद सिवाए खुदा के और खुदा पाक है।

उसके बाद खुदा की बुज़ुर्गा को याद करके उसकी हम्दो सना करे और सौ बार परवरदिगार से तलबे ख़ैर करे। यक़ीनन परवरदिगार उस ख़ैर को अता फ़रमाएगा और दूसरी रिवायत के अनुसार तलबे ख़ैर के लिए सौ बार पढ़े:

اَسْتَخِيْرُ اللّٰهَ بِرَحْمَةٍ خِيَرَةً فِيْ عَافِيَةٍ.

मै तलब करता हूँ अल्लाह से उसकी रहमत से ऐसे ख़ैर के लिए जो आफ़ियत से मिला हो।

(१९) शेख़े अजल कामिल अबुल क़ासिम जाफ़र बिन क़ूलूवय कुम्मी ने रिवायत की है इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से के आपने फ़रमाया के इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत को जाते हुए ख़ामोशी का ख़याल रखो और सिर्फ़ कारे ख़ैर के लिए ज़बान खोलो और रात दिन आसमान से मलाएका नाज़ल हो कर हरम में मौजूद मलाएका से मुसाफ़ेहा करते हैं। लेकिन हरम में मौजूद मलाएका शिद्दते गिरया की बिना पर उनका जवाब नहीं देते और मुसलसल रोते रहते हैं और सिर्फ़ ज़वाल और तुलूए फ़ýा के समय ख़ामोश होते हैं। चुनान्चे आनेवाले मलाएका फ़ýा या ज़ोहर का इंतेज़ार करते रहते हैं ताके उनसे कुछ गु़फ्तुगू कर सकें तो वह उनसे आसमान के बारे में कुछ सवाल करते हैं। वरना उसके अलावा पूरे वक़्त वो ख़ामोश नहीं होते। या दुआओं में मश्ग़ूल रहते हैं या गिरया करते रहते हैं।

नीज़ आं हज़रत (अ.स.) से ही रिवायत है के खुदावंदे आलम ने हरमे इमाम हुसैन (अ.स.) पर चार हज़ार फ़रिश्ते मोअय्यन किए हैं जिनके बाल उलझे हुए और गर्द आलूद मुसीबत ज़दा अफ़राद की तरह ज़ोहर तक गिरया करते रहते हैं। और ज़ोहर के समय चार हज़ार फ़रिश्ते और आ जाते हैं तो यह वापस चले जाते हैं। और वह तुलूए सुबह तक मुसलसल रोते रहते हैं। इस तरह की और भी अहादीस कसरत के साथ मौजूद हैं जिनसे यह वाज़ेह हो जाता है के हरम में जाकर आप पर गिरया करना सिर्फ़ जाएज़ ही नहीं बलके एक महबूबो पसंदीदह अमल है।

और इसे इस मुबारक हरम के आमाल में शुमार किया जाता है। क्योंकि वह

शिओं के लिए हज़रत पर गिरया करने और मरसिया पढ़ने या नौहा व मातम के लिए बैतुल अहज़ान है। और सफ़वान ने इमाम सादिक़ (अ.स.) से ही रिवायत की है के मलाएका खुदावंदे आलम की बारगाह में गिरया व ज़ारी के साथ क़ातेलाने अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) पर मुसलसल लानत करते रहते हैं। और आप पर जिन्नात का नौहा या हरम के गिर्द मौजूद मलाएका के ग़मो अंदोह और गिरया का यह आलम है के अगर कोई उसे सुन ले तो खाना पीना सोना छोड़ देगा।

हदीसे अब्दुल्लाह हम्माद बसरी के मुताबिक़ इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने उनसे फ़रमाया के मैंने सुना है के कूफ़ा और उसके अतराफ़ या दूसरी जगहों से मर्द और औरतें इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र पर नीमे शाबान में आकर गिरया-ओ-ज़ारी करते हैं। बाज़ तिलावत और बाज़ मसाएबे करबला पढ़ते हैं और बाज़ नौहा और मरसिया पढ़ते हैं। मैंने कहा: मेरी जान आप पर क़ुरबान यह मंज़र मैंने भी देखा है तो आप (अ.स.) ने फ़रमाया: खुदावंदे आलम का शुक्र है जिसने ऐसे लोग पैदा किए हैं जो हमारे पास आकर हमारी मदह करते हैं और हमारे लिए मरसिया पढ़ते हैं जबके हमारे दुश्मन उनको ताना देते हैं और उन्हें डराते या धमकाते हैं और उनके कामों को बुरा समझते हैं। इसी रिवायत के शुरू में यह भी है के लोग इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत को जाते हैं और गिरया करते हैं और जो नहीं जा सकते उनकी मुसीबत में ग़मगीन रहते हैं। और जो उन्हें याद करते हैं और दुआ-ए-रहमत करते हैं जो उनके पाईनेपा उनके फ़रज़ंद की क़ब्र का तसव्वुर करते हैं और यह देखते हैं के यह लोग उस बयाबान में थे जहाँ उनका कोई दोस्त क़रीब नहीं था। लोगों ने उनके हक़ को ग़स्ब कर लिया है और कुछ काफ़िर और मुरतद अफ़राद ने जमा होकर और एक दूसरे की मदद करके उन्हें शहीद कर दिया और लाश को बेगोरो कफ़न छोड़ दिया और उनपर फ़ुरात का वो पानी भी बंद कर दिया जिसको जानवर तक पी रहे थे। और रसूले खुदा (स.अ.व.व.) के हक़ और उनकी अहलेबैत (अ.स.) के बारे में वसीयत को भी ज़ाया कर दिया।

नीज़ इब्ने कुलूवय ने हारिस आवर से रिवायत की है के अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने फ़रमाया के मेरे माँ बाप क़ुर्बान हो जाएं हुसैने शहीद पर जिसे पुश्ते

कूफ़ा पर शहीद कर दिया गया। खुदा की क़सम मैं देख रहा हूँ के सहराई जानवर अपना सर उठाए हुए उनकी क़ब्र के गिर्द जमा हो रहे हैं और अव्वले शब से सुबह तक गिरया कर रहे हैं।

ग़र्ज़ की इस बारे में रिवायात बहुत हैं।

(२०) सय्यद इब्ने ताऊस ने फरमाया है के मुस्तहब है के जब इंसान ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) से फ़ारिग़ हो जाए और रौज़े से बाहर जाना चाहे तो अपने को ज़रीहे अक़्दस से मस करके बोसा दे और यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

सलाम आप पर ऐ मेर मौला, सलाम आप पर ऐ हुज्ज़ते खुदा, सलाम आप पर ऐ बरगुज़ीदए खुदा,

يَا صَفْوَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَالِصَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَتِيْلَ

सलाम आप पर ऐ खुदा के मुख़लिस बन्दे, सलाम आप पर ऐ कुश्ता तशनगी, सलाम आप पर

الظَّمْآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا غَرِيْبَ الْغُرَبَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ سَلَامَ

ऐ ग़रीबुल ग़ुरबा, सलाम आप पर रूख़सत करने वाले का सलाम जो न ख़सता हुआ न दिल तंग

مُوَدِّعٍ لَا سَئِمٍ وَلَا قَالٍ فَإِنْ اَمْضِ فَلَا عَنْ مَلَالَةٍ وَإِنْ اُقِمْ فَلَا عَنْ

अगर मै जा रहा हूँ तो मलाल की वजह से नही और अगर ०क्याम करता हूँ तो बदगुमानी की वजह

سُوْءِ ظَنٍّ بِمَا وَعَدَ اللهُ الصَّابِرِيْنَ. لَا جَعَلَهُ اللهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنِّيْ

से नही जिस का खुदा ने साबिरों से वादा किया है खुदावन्दे आलम इसको मरी आख़री ज़ियारत

لِزِيَارَتِكَ وَ رَزَقَنِيَ اللهُ الْعَوْدَ اِلٰى مَشْهَدِكَ وَ الْمُقَامَ بِفِنَآئِكَ وَ

का अहेद न क़रार दे ओर खुदा मुझको नसीब करे आप के मशहद की तरफ़ और आपकी बारगाह

الْقِيَامَ فِيْ حَرَمِكَ وَ اِيَّاهُ اَسْئَلُ اَنْ يُسْعِدَنِيْ بِكُمْ وَ يَجْعَلَنِيْ مَعَكُمْ

मे क़याम की तरफ़ लौटने की और ख़ास तौर पर उसी से सवाल करता हूँ के आपके वासते से

فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ.

मुझको नेक बख़्त बना दे और मुझको आप के साथ, दुनिया व आख़रत मे क़रार दे।

तिसरा मक़्सद

हज़रत सय्यदुश शोहदा (अ.स.) और हज़रत अब्बास (अ.स.) की ज़ियारत का तरीक़ा

वाज़ेह रहे के इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए मनक़ूल ज़ियारतों की दो किस्में हैं:
एक ज़ियारते मुतलक़ा है जिसका कोई वक़्त मोअय्यन नहीं है और एक ज़ियारते मख़सूसा है जिसका वक़्त मोअय्यन है। लेहाज़ा उन ज़ियारात का ज़िक्र तीन मतालिब के ज़ैल में किया जाएगा।

ज़ियाराते मुतलका इमाम हुसैन (अ.स.)

यह ज़ियारतें बहुत हैं लेकिन हम इस मकाम पर सिर्फ़ चंद ज़ियारतों को बयान कर रहे हैं।

पहली ज़ियारत

शेख़ कुलैनी ने काफ़ी में अपनी सनद के साथ हुसैन बिन सुवैद से रिवायत की है के मैं और यूनुस बिन ज़ब्यान और मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर और अबू सलमा सर्राज इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के पास बैठे हुए थे और हमारे दरमियान यूनुस तरजुमानी कर रहे थे के वह सिनो साल में हम सब से बुज़ुर्ग थे। उन्होंने हज़रत से अर्ज़ की के मैं आप पर क़ुरबान मैं उस क़ौम याने औलादे अब्बास की महाफ़िल में हाज़र होता हूँ तो क्या कहा करूँ?
फ़रमाया के जब वहाँ हाज़र हो और मुझे याद करो तो कहो:
खुदाया हमें आसानी और सुरूर अता फ़रमा।
के जो कुछ भी हमसे चाहते हो के रजअत में बहरहाल मिल जाएगा। यूनुस ने अर्ज़ की के हमारी जान क़ुर्बान अकसर ऐसा होता है के हम लोग इमाम हुसैन (अ.स.) को याद करते हैं। तो ऐसे समय क्या कहें? फ़रमाया के तीन बार कहो:

صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ.

यह सलाम नज़दीक या दूर जहाँ से भी हो हज़रत तक पहुँच जाएगा।
इसके बाद फ़रमाया के जब इमाम हुसैन (अ.स.) शहीद हो गए तो आपके ऊपर सातों आसमान और सातों ज़मीनों ने और उनके दरमियान जो कुछ था सबने गिरया किया। अहले बेहिश्तो दोज़ख़ और जो मख़लूक़ात नज़र आती हैं या नज़र नहीं आती हैं सबने आप पर गिरया किया। सिर्फ़ तीन चीज़ों ने गिरया नहीं किया।
मैंने पूछा: मैं आप पर कुरबान, वह तीन चीज़ें क्या हैं? फ़रमाया बसरा, दमिश्क़ और आले उसमान। मैंने पूछा के मैं चाहता हूँ के आं हज़रत की ज़ियारत के लिए जाऊँ तो क्या कहूँ और क्या करूँ?
फ़रमाया जब आपकी ज़ियारत के लिए जाओ तो पहले फ़ुरात में गुस्ल करो उसके बाद पाकीज़ा लिबास पहन कर पा बरहना हरम की तरफ़ जाओ जबके वह हरमे खुदा व रसूल है। रास्ते में मुसलसल कहते रहो: अल्लाहो अकबर। ला इलाहा इल्लल्लाह व सुब्हानल्लाह व अल्लाहुम्म सल्ले अला मोहम्मदिन

व आले मोहम्मदिन हर वह ज़िक्र जिसमें अज़मते परवरदिगार पाई जाती हो। और मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर सलवात पढ़ो। यहाँ तक के हरम के दरवाज़े पर पहुँच जाओ। तो कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ ابْنَ حُجَّتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا مَلَآئِكَةَ

सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा और उसके फ़रजंद, सलाम आप ऐ मलाएका खुदा ओर फ़रज़ंद

اللهِ وَ زُوَّارَ قَبْرِ ابْنِ نَبِيِّ اللهِ

रसूले खुदा की क़ब्र के जाएरों।

इसके बाद दस क़दम आगे बढ़कर ठहर जाओ और बीस बार अल्लाहो अकबर कहो।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ ابْنَ حُجَّتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَتِيْلَ

सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा और हुज्जते खुदा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ शहीदे राहे खुदा और उसके

اللهِ وَ ابْنَ قَتِيْلِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ اَلسَّلَامُ

फ़रज़ंद, सलाम आपपर ऐ वो जिसका ख़ून बहा, खुदा लेगा और उस के फ़रज़ंद पर, सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا وِتْرَ اللهِ الْمَوْتُوْرَ فِي السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ اَشْهَدُ اَنَّ

अल्लाहके बेमिसाल नुमाएंदे आसमान व ज़मीन मे, मै गवाही देता हूँ के आपका ख़ून खुलद मे साकिन हो

دَمَكَ سَكَنَ فِي الْخُلْدِ وَ اقْشَعَرَّتْ لَهٗ اَظِلَّةُ الْعَرْشِ وَ بَكٰى لَهٗ

गया और उसने अर्श के पर्दों को लरज़े मे डाल दिया और उसके लिए तमाम मख़लूक़ रोई और उसके लिए

جَمِيْعُ الْخَلَائِقِ وَ بَكَتْ لَهُ السَّمٰوَاتُ السَّبْعُ وَ الْاَرَضُوْنَ

सातों आसमान और सातों ज़मीन रोए और जो कुछ उनमे है और उनके दरमियान मे है और जो जन्नत और

السَّبْعُ وَ مَا فِيْهِنَّ وَ مَا بَيْنَهُنَّ وَ مَنْ يَّتَقَلَّبُ فِي الْجَنَّةِ وَ النَّارِ

हजन्नम मे है हमारे रब की मख़लूक़ मे से और जो देखी जाती हैं और जो नही देखी जाती है। मै गवाही देता

مِنْ خَلْقِ رَبِّنَا وَ مَا يُرٰى وَ مَا لَا يُرٰى اَشْهَدُ اَنَّكَ حُجَّةُ اللّٰهِ وَ

हूँ के आप हुज्जते खुदा और हुज्जते खुदा के फ़रज़ंद हैं और मै गवाही देता हूँ के आप शहीदे राहे खुदा और

ابْنُ حُجَّتِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَتِيْلُ اللّٰهِ وَ ابْنُ قَتِيْلِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

शहीदे राहे खुदा के फ़रज़ंद है और मै गवाही देता हूँ के आप वो है जिनका खून बहा खुदा लेगा और उस के

ثَائِرُ اللّٰهِ وَ ابْنُ ثَائِرِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ وِتْرُ اللّٰهِ الْمَوْتُوْرُ فِي السَّمٰوَاتِ

फ़रज़ंद हैं और मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के बेमिसल नुमाईंदे हैं आसमान व ज़मीन मे और मै गवाही देता

وَ الْاَرْضِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ وَ نَصَحْتَ وَ وَفَيْتَ وَ اَوْفَيْتَ

हूँ के आप ने पहुँचा दिया, नसीहत कर दी, पूरा किया और मुकम्मल किया और राहे खुदा मे जिहाद किया

وَ جَاهَدْتَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ مَضَيْتَ لِلَّذِيْ كُنْتَ عَلَيْهِ شَهِيْدًا

और जिस मक़सद पर आप थे उसी पर शहीद हुए और शाहीद व मशहूद हुए मै अल्लाह का बन्दा आपका

وَ مُسْتَشْهِدًا وَ شَاهِدًا وَ مَشْهُوْدًا اَنَا عَبْدُ اللّٰهِ وَ مَوْلَاكَ وَ فِيْ

ग़ुलाम और आप की इताअत मे और आपकी तरफ़ आनेवाला इल्तेमास करता हूँ कमाले मरतबह का

طَاعَتِكَ وَ الْوَافِدُ اِلَيْكَ اَلْتَمِسُ كَمَالَ الْمَنْزِلَةِ عِنْدَ اللهِ وَ

अल्लाह के नज़दीक़ और सेबाते क़दम का आप की तरफ़ हिजरत करने मे और उस रासते का के तेरे सामने

ثَبَاتَ الْقَدَمِ فِيْ الْهِجْرَةِ اِلَيْكَ وَ السَّبِيْلَ الَّذِيْ لَا يُخْتَلِجُ

तेरी उस किफ़ालत मे दाख़िल होने मे ख़िलज़ान नही होता है जिस का तुझे हुकुम दिया गया है जो शख़्स

دُوْنَكَ مِنَ الدُّخُوْلِ فِيْ كَفَالَتِكَ الَّتِيْ اُمِرْتَ بِهَا مَنْ اَرَادَ اللهُ

खुदा को चाहता है वो आपसे शुरू करता है खुदा झूठ को वाज़ेह करता है आपके ज़रिए और आपके ज़रिए

بَدَءَ بِكُمْ يُبَيِّنُ اللهُ الْكَذِبَ وَبِكُمْ يُبَاعِدُ اللهُ الزَّمَانَ الْكَلِبَ

खुदा सख़्त तकलीफ़ वाले ज़माने को दूर करता है और आपके ज़रिए खुदाने आग़ाज़ किया और आपके

وَ بِكُمْ فَتَحَ اللهُ وَ بِكُمْ يَخْتِمُ اللهُ وَ بِكُمْ يَمْحُوْ مَا يَشَآءُ وَ

ज़रिए ख़त्म करता है आपके ज़रिए जिसको चाहता है महेव करता है या साबित करता है जिसको तलब

يُثْبِتُ وَ بِكُمْ يَفُكُّ الذُّلَّ مِنْ رِقَابِنَا وَ بِكُمْ يُدْرِكُ اللهُ تِرَةَ

किया जाता है और आपके ज़रिए हमारी गरदनों को ज़िल्लत से नजात देता है और आपके ज़रिए खुदा हर

كُلِّ مُؤْمِنٍ يُطْلَبُ بِهَا وَبِكُمْ تُنْبِتُ الْاَرْضُ اَشْجَارَهَا وَبِكُمْ

मोमिन के ख़ून का बदला लेता है जिसको तलब किया जाता है और आप के ज़रिए ज़मीन दरख़तों को

تُخْرِجُ الْاَشْجَارُ اَثْمَارَهَا وَ بِكُمْ تُنْزِلُ السَّمَآءُ قَطْرَهَا وَ

उगाती है और आपके ज़रिए ज़मीन फलो को निकालती है और आप के ज़रिए आसमान बारिश को नाज़ल

رِزْقَهَا وَبِكُمْ يَكْشِفُ اللّٰهُ الْكَرْبَ وَبِكُمْ يُنَزِّلُ اللّٰهُ الْغَيْثَ وَ

करता है और रिज़्क़ को और आपके ज़रिए अल्लाह ग़म को दूर करता है और आप के वास्ते से अल्लाह

بِكُمْ تَسِيْخُ الْاَرْضُ الَّتِيْ تَحْمِلُ اَبْدَانَكُمْ وَ تَسْتَقِرُّ جِبَالُهَا

बारिश नाज़ल करता है और आपके ज़रिए वो ज़मीन तसबीह करती है जो आपके जिस्मों को उठाती है और

عَنْ مَرَاسِيْهَا اِرَادَةُ الرَّبِّ فِيْ مَقَادِيْرِ اُمُوْرِهٖ تَهْبِطُ اِلَيْكُمْ وَ

पहाड़ अपनी क़रारगाह पर इसतेक़रार पाते हैं खुदा का इरादा उसके उमूर की तक़दीर मे है जो तुम्हारी तरफ़

تَصْدُرُ مِنْ بُيُوْتِكُمْ وَ الصَّادِرُ عَمَّا فَصَلَ مِنْ اَحْكَامِ الْعِبَادِ

उतरते हैं और तुम्हारे घरों से सादिर होते हैं और बन्दों के लिए फ़ैसले सादिर होते हैं। उस उम्मत पर लानत

لُعِنَتْ اُمَّةٌ قَتَلَتْكُمْ وَاُمَّةٌ خَالَفَتْكُمْ وَاُمَّةٌ حَجَدَتْ وَلَا يَتَكُمْ

हो जिसने आप को क़त्ल किया और उस उम्मत पर जिस ने मुख़ालेफ़त की। उस उम्मत पर जिसने इंकार

وَ اُمَّةٌ ظَاهَرَتْ عَلَيْكُمْ وَ اُمَّةٌ شَهِدَتْ وَلَمْ تُسْتَشْهَدْ اَلْحَمْدُ

किया आपकी विलायत का और उस उम्मत पर जिसने आपके ख़िलाफ़ मदद की और उस उम्मत पर जो

لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ النَّارَ مَثْوَاهُمْ وَ بِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ وَ

मौजूद थी और गवाही नही दी। हम्द खुदाके लिए है जिसने जहन्नम उनका ठिकाना बनाया जो वारिद होने की

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

जग्हों मे बदतरीन है और बदतरीन लोग वारिद होते हैं और हम्द है आलमीन के परवरदिगार खुदा के लिए।

उसके बाद तीन बार कहो:

وَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ.

खुदा की रहमत हो आप पर ऐ अबु अब्दुल्लाह।

फिर तीन बार कहे:

اَنَا اِلَى اللهِ مِمَّنْ خَالَفَكَ بَرِیْءٌ

खुदाकी तरफ़ बराअत चाहता हूँ, आपकी मुख़ालेफ़त से।

उसके बाद उठकर क़ब्रे फरज़ंदे हुसैन, अली अकबर (अ.स.) के पास जाए और यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ

सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम हो आप पर ऐ फ़रजंदे अमीरल मोमिनीन (अ), सलाम हो आप

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ

पर फ़रजंदे हसन व हुसैन (अ), सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे ख़दीजा व फ़ातेमा (स) अल्लाह की रहमत आप पर

عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَدِيْجَةَ وَ فَاطِمَةَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ لَعَنَ اللهُ مَنْ

अल्लाह की रहमत आप पर अल्लाह की रहमत आप पर और अल्लाह लानत करे उस पर जिसने आप को क़त्ल

قَتَلَكَ

किया। खुदा लानत करे उसपे जुसने आप को क़त्ल किया खुदा लानत करे उसपे जुसने आप को क़त्ल किया।

फिर तीन बार कहे:

اَنَا اِلَى اللهِ مِنْهُمْ بَرِیْءٌ

मै खुदा की तरफ़ बराएत चाहता हूँ उनसे।

उसके बाद उठे और अपने हाथ से इशारा करे शोहदा की तरफ़ और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ فُزْتُمْ وَ

सलाम आप पर सलाम आप पर आप लोग कामियाब हुए क़सम खुदा की कामयाब हुए क़सम

اللهِ فُزْتُمْ وَ اللهِ فُزْتُمْ وَ اللهِ فَلَيْتَ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا

खुदा की कामयाब हुए कामयाब हुए बाखुदा काश मै आप के साथ होता तो मै भी अज़ीम

عَظِيْمًا.

कामयाबी पाता।

उसके बाद पलट कर क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) की तरफ़ वापस लौटे और क़ब्रे मुतह्हर को अपने सामने क़रार देकर पुश्ते क़ब्र पर खड़ा हो और छे रकत नमाज़ अदा करे और ज़ियारत तमाम कर दे। फिर अगर वापस जाना चाहता

है तो जा सकता है।
लेखक: शेख़ तूसी ने तहज़ीब में और सदूक ने मन ला यहज़रहुल फक़ीह में इस ज़ियारत को नक़्ल किया है। और शेख़ सदूक ने फ़रमाया है के मैंने किताबे मज़ारो मक़तल में मुख़्तलिफ़ ज़ियारतें नक़्ल की हैं। लेकिन इस किताब के लिए इस ज़ियारत को इख़्तेसार किया है इस लिए के ब-एतेबारे रिवायत सबसे ज़्यादा सही तरीन है और यही ज़ियारत काफ़ी व वाफ़ी है।

दूसरी ज़ियारत

शेख़ कुलैनी ने इमाम अली नक़ी (अ.स.) से रिवायत की है के इमाम हुसैन (अ.स.) की बारगाह में यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ فِيْٓ اَرْضِهٖ وَ

सलाम आप पर ऐ अबु अबदुल्लाह सलाम आप पर ऐ खुदा की ज़मीन मे उसकी हुज्जत और

شَاهِدَهٗ عَلٰى خَلْقِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ

उसकी मख़लूक़ पर उसके गवाह, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا ابْنَ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ

फ़रज़ंदे अली मुरतुज़ा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.)। मै गवाही देता हूँ के

اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

आप ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर

نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ حَتّٰٓى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ

किया और राहे खुदा मे जिहाद किया यहाँ तक के मौत आ गई तो अल्लाह का दुरूद हो आप पर

فَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ حَيًّا وَمَيِّتًا.

ज़िन्दगी और मौत की हालत मे।

उसके बाद दाहिने रू॰खसार को ॰कब्र पर रख कर कहे:

اَشْهَدُ اَنَّكَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ جِئْتُ مُقِرًّا بِالذُّنُوْبِ لِتَشْفَعَ لِيْ

मै गवाही देता हूँ के आप अपने रब की दलील पर हैं मै गुनाहों का एतेराफ़ करते हुए आया हूँ ताके

عِنْدَ رَبِّكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ.

आप मेरी शिफ़ाअत करें अपने परवरदिगार से ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा।

उसके बाद आइम्मए मासूमीन (अ.स.) को नाम ब नाम याद करे और कहे:

اَشْهَدُ اَنَّكُمْ حُجَّةُ اللهِ اُكْتُبْ لِيْ عِنْدَكَ مِيْثَاقًا وَعَهْدًا اَنِّيْ اَتَيْتُكَ

मै गवाही देता हूँ के आप सब अल्लाह की हुज्जत हैं, मेरे लिए अपने नज़दीक अहेद लिख दीजिए। मै आप

اُجَدِّدُ الْمِيْثَاقَ فَاشْهَدْ لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ اِنَّكَ اَنْتَ الشَّاهِدُ.

के पास तजदीदे मिसाक़ के लिए आया हूँ तो मेरे लिए खुदा के पास गवाह हो जाईए, बेशक आप गवाह हैं।

तीसरी ज़ियारत

यह वह ज़ियारते मुख़तसर है जिसको सय्यद इब्ने ताऊस ने मज़ार में नक़्ल किया है और इसके बहुत से फ़ज़ाएल हैं। असनाद को छोड़कर जाफ़रे जाफ़ी से नक़्ल किया है के इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया है के जाबिर तुम्हारे और क़ब्रे हुसैन (अ.स.) के दरमियान किस क़द्र मसाफ़त है? जाबिर ने कहा एक मील या कुछ ज़्यादा। फ़रमाया: क्या हज़रत की ज़ियारत को जाते हो? जवाबा् दिया बेशक। फ़रमाया: क्या तुम्हें कोई बशारत देकर खुश करूँ? जाबिर ने कहा: मैं आप पर कुरबान, ज़रूर। फ़रमाया के अगर तुम में से कोई व्यक्ति ज़ियारतें हुसैन (अ.स.) के लिए तय्यार हो तो उसे आसमान के फ़रिश्ते बशारत देते हैं और जब घर से सवार या प्यादा निकलता है तो परवरदिगार हज़ार फ़रिश्ते मोअय्यन कर देता है जो उस पर सलवात भेजते रहते हैं जब तक क़ब्रे हुसैन तक पहुँच न जाए। इसके बाद हज़रत ने फ़रमाया के जब क़ब्रे हुसैन तक आओ तो रौज़े के दरवाज़े पर खड़े हो कर यह कलेमात कहो जिसमे हर कलमे के मुक़ाबले में परवरदिगार रहमत फ़रमाता है। पूछा वह कलेमात क्या हैं? फ़रमाया: कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ آدَمَ صَفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ

सलाम आप पर ऐ आदम सफ़वतुल्लह के वारिस, सलाम आप पर ऐ नूह नबी खुदा के वारिस

نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ इब्राहीम ख़लीले खुदा के वारिस, सलाम आप पर ऐ मूसा कलीम अल्लाह

وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى رُوْحِ اللهِ

के वारिस, सलाम आप पर ऐ ईसा रूहुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद सय्यदुल

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ سَيِّدِ رُسُلِ اللهِ اَلسَّلَامُ يَا وَارِثَ اَمِيْرِ

मुरसलीन के वारिस, सलाम आप पर ऐ अली अमीरल मोमिनीन और ख़ैबर के वारिस, सलाम

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ خَيْرِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ الرَّضِيَّ

आप पर ऐ हसन पसंदीदा खुदा, ताहीर राज़ी और मर्ज़ा के वारिस, सलाम आप पर ऐ सिद्दीक़े

الطَّاهِرِ الرَّاضِى الْمَرْضِيِّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ الْاَكْبَرُ

अकबर, सलाम आप पर ऐ वसीए नेक और मुत्तक़ी, सलाम आप पर और उन रूहों पर जो आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ التَّقِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلَى الْاَرْوَاحِ

के आसताने पर नाज़ल हुई और सामाने सफ़र को आपके पास रख दिया, सलाम आप पर और

الَّتِيْ حَلَّتْ بِفِنَآئِكَ وَ اَنَاخَتْ بِرَحْلِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلَى الْمَلَآئِكَةِ

उन मलाएका पर जो आप की क़ब्र के ग्रिद हैं। मै गवाही देता हूँ के आप ने नमाज़ क़ाएम की

الْحَآفِّيْنَ بِكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ किया और नही अनील मुनकर किया और बे दीनों

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتَ الْمُلْحِدِيْنَ وَ عَبَدْتَ اللهَ

से जिहाद किया और खुदा की इबादत की। मौत के वक़्त तक सलाम आप पर और अल्लाह की

مُخْلِصًا حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

रहमत व बरकात हो।

उसके बाद क़ब्रे मुतह्हर की तरफ़ क़दम आगे बढ़ाए तो परवरदिगारे आलम हर क़दम पर उस शहीद का सवाब देता है जो अपने ख़ून में डूब जाए - क़ब्र के पास पहुँच कर अपने हाथों को क़ब्र से मस करे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ فِيْ اَرْضِهٖ.

इसके बाद जिस क़द्र चाहे नमाज़ अदा करे के हर रकत के बदले में परवरदिगारे आलम हज़ार हज और हज़ार उमरा और हज़ार ग़ुलामों के आज़ाद करने का सवाब देता है और इंसान वैसा हो जाता है जैसे हज़ार मवाक़े पर किसी पैग़ंबरे मुरसल के साथ रहा हो। यह रिवायत इससे पहले आदाबे ज़ियारत में मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर के नाम से नक़्ल की जा चुकी है।

चौथी ज़ियारत

माविया बिन अम्मार से मनक़ूल है के मैंने इमाम सादिक़ (अ.स.) से अर्ज़ किया के अगर ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जाऊँ तो क्या कहूँ? फ़रमाया: यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَبَا عَبْدِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह खुदा की रहमत हो आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह आपपर रहेम

رَحِمَكَ اللهُ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ لَعَنَ اللهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ شَرِكَ

करे ऐ अबु अब्दुल्लह। अल्लाह की लानत हो उसपर जिसने आपको क़त्ल किया और अल्लाह की

فِيْ دَمِكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ بَلَغَهٗ ذٰلِكَ فَرَضِيَ بِهٖ اَنَا اِلَى اللهِ مِنْ ذٰلِكَ

लानत हो उन पर जो आपके ख़ून मे शरीक रहा और अल्लाह की लानत हो उस पर जिसने ये सब

بَرِیٓءٌ.

सुना और वो राज़ी रहा मै उससे अल्लाह की तरफ़ बराअत चाहता हूँ।

पाँचवी ज़ियारत

मोतबर रिवायत के साथ इमाम मूसा काज़िम (अ.स.) से मनक़ूल है के आपने इब्राहीम बिन अबिल बलाद से फ़रमाया के ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए जाते हो तो क्या कहते हो? इब्राहीम ने कहा: मैं कहता हूँ:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, मै गवाही देता हूँ के

اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَآتَيْتَ الزَّكَاةَ وَاَمَرْتَ بِالْمَعْرُوفِ

आपने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ किया और नही अनिल

وَنَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَدَعَوْتَ اِلٰى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ

मुनकर किया और अपने खुदा की राह की तरफ़ बुलाया हिकमत और मौएज़ा हसना के साथ

الْحَسَنَةِ وَاَشْهَدُ اَنَّ الَّذِينَ سَفَكُوا دَمَكَ وَاسْتَحَلُّوا حُرْمَتَكَ

और मै गवाही देता हूँ के जिन लोगों ने आप का ख़ून बहाया और आपकी इज़्ज़त का पास न

مَلْعُونُونَ مُعَذَّبُونَ عَلٰى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى بْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا

किया वो मलऊन और अज़ाब वाले हैं जनाब दाऊद और ईसा (अ) की ज़ुबान पर खुदा की ना

عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ

फ़रमानी और ज़ुल्म की वज्ह से।

हज़रत ने फ़रमाया के बिलकुल सही कहते हो।

छटी ज़ियारत

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के आपने अम्मार साबाती से फ़रमाया के क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) तक पहुँचो तो यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ اَمِيرِ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे अमीरल मोमिनीन (अ),

الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह सलाम आप पर ऐ जन्नत के जवानानों के सरदार और अलल्लाह

شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ

की रहमत व बरकात हो, सलाम आप पर ऐ वो जिसकी मर्ज़ा खुदा की मर्ज़ा है और जिस की

رِضَاهُ مِنْ رِضَا الرَّحْمٰنِ وَسَخَطُهُ مِنْ سَخَطِ الرَّحْمٰنِ اَلسَّلَامُ

नाराज़गी खुदा की नाराज़गी है, सलाम हो आप पर ऐ अमीने खुदा और हुज्ज़ते खुदा और बाबे खुदा

عَلَيْكَ يَا اَمِينَ اللهِ وَحُجَّةَ اللهِ وَبَابَ اللهِ وَالدَّلِيلَ عَلَى اللهِ

और खुदा के लिए दलील और अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले। मै गवाही देता हूँ के आप ने हलाले

وَالدَّاعِیَ اِلَی اللّٰہِ اَشْھَدُ اَنَّکَ قَدْ حَلَّلْتَ حَلَالَ اللّٰہِ وَحَرَّمْتَ

खुदा को हलाल रखा और हरामे खुदा को हराम रखा और नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदाकी

حَرَامَ اللّٰہِ وَاَقَمْتَ الصَّلَاۃَ وَاٰتَیْتَ الزَّکَاۃَ وَاَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ

और नेकी का हुकुम दिया और बुराई से रोका और अपने रब की राह की तरफ़ बुलाया हिकमत

وَنَھَیْتَ عَنِ الْمُنْکَرِ وَدَعَوْتَ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ

और मौएज़ा हसना के ज़रिए और मै गवाही देता हूँ के आप और जोजो आपके साथ शहीद हुए

وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ وَاَشْھَدُ اَنَّکَ وَمَنْ قُتِلَ مَعَکَ شُھَدَاءُ اَحْیَاءٌ

वो सब ज़िन्दा हैं आपके रब के पास से रोज़ी पा रहे हैं और मै गवाही देता हूँ के आपका क़ातिल

عِنْدَ رَبِّکُمْ تُرْزَقُوْنَ وَاَشْھَدُ اَنَّ قَاتِلَکَ فِی النَّارِ اَدِیْنُ اللّٰہَ

जहन्नम मे है मै खुदा की तरफ़ बराअत चाहता हूँ आप के क़ातिल और आप से जंग करने वाले से

بِالْبَرَاءَۃِ مِمَّنْ قَتَلَکَ وَمِمَّنْ قَاتَلَکَ وَشَایَعَ عَلَیْکَ وَمِمَّنْ جَمَعَ

और जिसने दुश्मन का इत्तेबा किया और जो आप के ख़िलाफ़ जमा हुआ और जिस ने आपकी

عَلَیْکَ وَمِمَّنْ سَمِعَ صَوْتَکَ وَلَمْ یُعِنْکَ یَا لَیْتَنِی کُنْتُ مَعَکُمْ

आवाज़ सुनकर मदद न की काश मै आपके साथ होता तो अपना जान दे कर बड़ी कामयाबी

فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِیْمًا

हासिल करता।

लेखक: यह तीनों ज़ियारतें मज़ारे इब्ने क़ूलूवय से नक़्ल की गई हैं।

सातवीं ज़ियारत

शेख़ ने मिस्बाह में स॰फ्वान जम्माल से रिवायत की है के मैंने ज़ियारते इमामे हुसैन (अ.स.) के लिए इमाम सादिक़ (अ.स.) से इजाज़त तलब की और गुज़ारिश की के मुझे ज़ियारत का तरीक़ा सिखाएं। फ़रमाया के स॰फ्वान घर से निकलने से पहले तीन दिन रोज़ा रखो। तीसरे दिन गुस्ल करो और अहलो अयाल को जमा करके यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اسْتَوْدِعُكَ الْيَوْمَ نَفْسِی...

उसके बाद आपने एक दुआ तालीम की के नहरे फ़ुरात के पास पहुँच कर यह दुआ पढ़ो:

इसके बाद फ़ुरात में गुस्ल करो के मेर पिदरे बुज़ुर्गवार ने मुझ से पैग़म्बरे इस्लाम का यह इरशाद नक़्ल किया है के मेरा फ़रज़ंद हुसैन मेरे बाद शते फ़ुरात पर शहीद किया जाएगा और जो व्यक्ति उसकी ज़ियारत करेगा और फ़ुरात से गुस्ल करेगा उसके गुनाह इस प्रकार ख़त्म हो जाएँग जैसे आज ही पैदा हुआ है। गुस्ल करते समय यह कहो:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ نُوْرًا وَّطَهُوْرًا وَّحِرْزًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ

खुदा के नाम से और ज़ाते खुदा से खुदाया इसको नूर व पाकीज़गी और निगेहबानी और हर

دَآءٍ وَسُقْمٍ وَآفَةٍ وَعَاهَةٍ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ بِهٖ قَلْبِیْ وَاشْرَحْ بِهٖ صَدْرِیْ وَ

बीमारी से शिफ़ा और हर आफ़त व मुसीबत से नजात क़रार दे दे। खुदाया इसके ज़रिए मेरे दिल

سَهِّلْ لِیْ بِهٖ اَمْرِیْ.

को पाक कर दे और मेरे सीने को खोल दे और उस के ज़रिए मेरे अम्र को आसान कर दे।

ग़ुस्ल से फ़ारिग होने के बाद पाकीज़ा लिबास पहनो और दरया के किनारे दो रकत नमाज़ अदा करो के यह जगह है जिसके बारे में परवरदिगारे आलम ने क़ुराने मजीद में फ़रमाया है के:
मेरी ज़मीन के कुछ टुकड़े हैं एक दूसरे से क़रीब जहां अंगूर के बाग़ हैं। कुश्तो ज़ार है और खुरमा के बाग़ है। दोनो बागों की जड़ एक है। एक पानी से सैराब होते हैं और बाज़ के फल बाज़ से ज़्यादा होते हैं।
नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आहिस्ता आहिस्ता सुकूनो विकार के साथ क़दम आगे बढ़ाओ के परवरदिगारे आलम हर क़दम पर हज व उमरा का सवाब देता है। खुज़ू व खुशू और गिरया व ज़ारी के साथ आगे बढ़ते रहो और अल्लाहो अकबर व ला इलाहा इल्लल्लाहो सनाए खुदा और मोहम्मद ओ आले मोहम्मद पर सलवात पढ़ते रहो और क़ातिलाने हुसैन पर लानत करते रहो और उनसे बेज़ारी का एलान करते रहो। जिन लोगों ने ज़ुल्म का आगाज़ किया। फिर हरम के दरवाज़े पर पहुँच जाओ तो कहो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

अल्लाह बड़ा है और हम्द खुदा के लिए ज़्यादा है और अल्लाह की तसबीह सुबह व शाम करता हूँ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ

हम्द खुदा के लिए है जिसने हमारी हिदायत की और हमको हिदायत न मिलती अगर खुदा हमारी

لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ.

हिदायत न करता। हमारे रब का रसूल हक़ ले कर आया।

उसके बाद कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ नबीए खुदा, सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ

ख़ातमुल अंबिया, सलाम आप पर ऐ सय्यदुल मुरसलीन, सलाम आप पर ऐ हबीबे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

खुदा, सलाम आप पर ऐ अमीरल मोमिनीन, सलाम आप पर ऐ सय्यदुल औसिया,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَائِدَ الْغُرِّ

सलाम आप पर ऐ पेशवाए मुत्तक़ी व इज़्ज़त दारान, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे

الْمُحَجَّلِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ

फ़ातेमा सय्यदातिन निसाईल आलमीन, सलाम आप पर और आप की औलाद मे

عَلَيْكَ وَ عَلَى الْاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَصِيَّ اَمِيْرِ

आइम्मा पर, सलाम आप पर ऐ वसी अमीरूल मोमिनीन (अ) सलाम आप पर ऐ

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ الشَّهِيْدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

सिद्दीक़े, शहीद, सलाम हो आप पर ऐ खुदा के फ़रिशतों जो मुक़ीम हैं इस मुतबर्रिक

يَا مَلَآئِكَةَ اللهِ الْمُقِيْمِيْنَ فِيْ هٰذَا الْمَقَامِ الشَّرِيْفِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

मकाम पर सलाम हो आप पर ऐ मेरे रब के मलाएका जो क़ब्र इमामे हुसैन (अ) के

يَا مَلَائِكَةَ رَبِّيْ الْمُحْدِقِيْنَ بِقَبْرِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ اَلسَّلَامُ

इर्द गिर्द हैं, सलाम आप पर मेरा हमेश के लिए जब तक मै बाक़ी रहूँ और शब व

عَلَيْكُمْ مِنِّيْ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ.

रोज़ बाक़ी रहें।

फिर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ फ़रजंदे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे अमीरूल

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَبْدُكَ وَ ابْنُ عَبْدِكَ وَ ابْنُ

मोमिनीन (अ), मै आप का बन्दा और आप के बन्दा का फ़रज़ंद और आपकी कनीज़ का फ़रज़ंद हूँ। बन्दगी

اَمَتِكَ الْمُقِرُّ بِالرِّقِّ وَ التَّارِكُ لِلْخِلَافِ عَلَيْكُمْ وَ الْمُوَالِيْ لِوَلِيِّكُمْ

का इक़रार करने वाला हूँ और आप की मुख़लिफ़त का तरक करने वाला हूँ और आप के वली का दोस्त

وَ الْمُعَادِيْ لِعَدُوِّكُمْ قَصَدَ حَرَمَكَ وَ اسْتَجَارَ بِمَشْهَدِكَ وَ تَقَرَّبَ

और आप के दुश्मन का दुश्मन हूँ। अब आप के हरम का क़सद किया है और आप के मशहद की पनाह

اِلَيْكَ بِقَصْدِكَ اَاَدْخُلُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا نَبِيَّ اللهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا

चाही है और आपकी ज़ियारत के क़सद से आप का तक़र्रूब चाहा। क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ रसूले खुदा

اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ؟ اَ اَدْخُلُ يَا سَيِّدَ الْوَصِيِّيْنَ؟ اَ اَدْخُلُ يَا فَاطِمَةُ

क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ नबीए खुदा क्या मै दाख़िल हो जाऊँ।ऐ अमीरल मोमिनीन, क्या मै दाख़िल हो

سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ؟ اَ اَدْخُلُ يَا

जाऊँ ऐ वलियों के सरदार, क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ फ़ातेमा (स) आलमीन की औरतों की सरार, क्या मै

مَوْلَايَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ؟

उसके बाद अगर दिल में खुज़ू व खुशू पैदा हो जाए और आँखों में आंसू आ जाएं तो यह अलामत है के इजाज़त मिल गई है और फिर दाख़ल होने के बाद कहो:

दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह, क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ الْفَرْدِ الصَّمَدِ الَّذِيْ هَدَانِيْ لِوِلَايَتِكَ وَ

हम्द है उस खुदा के लिए जो एक अकेला मुस्तग़ाना है जिस ने हमारी हिदायत की है आप की विलायत के

خَصَّنِيْ بِزِيَارَتِكَ وَسَهَّلَ لِيْ قَصْدَكَ.

लिए और हम को मख़सूस किया आपकी ज़ियारत से और मेरे लिए आप के क़सद को आसान किया।

उसके बाद क़ब्रे मुतहहर पर जाकर सरहाने की तरफ़ खड़े होकर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اٰدَمَ صَفْوَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

सलाम आप पर ऐ आदम सफ़ी अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ नूह नबीए खुदा के वारिस,

نُوْحٍ نَبِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ इब्राहीम ख़लीले खुदा के वारिस, सलाम आप पर ऐ मूसा कलीमे खुदा के

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى

वारिस, सलाम आप पर ऐ ईसा रूहुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद हबीबे खुदाके

رُوْحِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

वारिस, सलाम आप पर ऐ अमीरल मोमिनीन के वारिस (सलाम हो उन पर) सलाम आप पर ऐ

يَا وَارِثَ عَلِيٍّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

मोहम्मद मुसतफ़ा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ अलीए मुतुर्ज़ा के दिल बन्द, सलाम हो आप पर

يَا ابْنَ مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ

ऐ फ़ातेमा ज़हरा के लख़्ते जिगर, सलाम आप पर ऐ ख़दीजतुल कुबरा के फ़रज़ंद, सलाम आप

عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَدِيْجَةَ الْكُبْرٰى

पर ऐ ख़ूने पाके खुदा और उनके फ़रज़ंद, आप के अकेले रहने पर, सलाम मै गवाही देता हूँ के

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللّٰهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ وَ الْوِتْرَ الْمَوْتُوْرَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ

आप ने नमाज़ क़ाएम की ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ किया और नही अनिल मुनकर

اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ

किया और अल्लाह व रसूल की इताअत की यहाँ तक के आप को मौत आ गई तो खुदा की लानत

الْمُنْكَرِ وَ اَطَعْتَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً

हो उस पर जिस ने आप को क़त्ल किया ओर खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिसने ज़ुल्म

قَتَلَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً سَمِعَتْ بِذٰلِكَ

किया और अल्लाह की लानत हो उस उम्मत पर जो सुनती रही और उस पर राज़ी रही। ऐ मेरे

فَرَضِيَتْ بِهٖ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ كُنْتَ نُوْرًا فِي

मौला, ऐ अबू अब्दुल्लाह, मै गवाही देता हूँ के आप नूर थे बुलंद मरतबा सुलबों और पाकीज़ा रहमों

الْاَصْلَابِ الشَّامِخَةِ وَ الْاَرْحَامِ الْمُطَهَّرَةِ لَمْ تُنَجِّسْكَ الْجَاهِلِيَّةُ

मे रहे जाहिलियत ने अपनी नजासतों से आप को नजिस नही किया और जेहालत का लिबास

بِاَنْجَاسِهَا وَ لَمْ تُلْبِسْكَ مِنْ مُدْلَهِمَّاتِ ثِيَابِهَا وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ مِنْ

आप ने नही पहना और मै गवाही देता हूँ के आप दीन के निगेहबान हैं और मोमिनों के रूक्न हैं

دَعَآئِمِ الدِّيْنِ وَ اَرْكَانِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ الْاِمَامُ الْبَرُّ التَّقِيُّ

और मै गवाही देता हूँ के आप इमामे नेक, मुत्तक़ी, पसंदीदए खुदा, पाकीज़ा, हादी और मेहदी और

الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ الْهَادِي الْمَهْدِيُّ وَ اَشْهَدُ اَنَّ الْاَئِمَّةَ مِنْ وُلْدِكَ كَلِمَةُ

मै गवाही देता हूँ के आप की औलाद मे आईम्मा हैं कलमए तक़वा और परचमे हिदायत और

التَّقْوٰى وَ اَعْلَامُ الْهُدٰى وَ الْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَ الْحُجَّةُ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا

वसीलए मोहकम हैं और हुज्जते खुदा हैं दुनियावालों पर और मै खुदा और उसके मलाएका और

وَاُشْهِدُ اللّٰهَ وَمَلَآئِكَتَهٗ وَاَنْبِيَآئَهٗ وَرُسُلَهٗ اَنِّيْ بِكُمْ مُؤْمِنٌ وَبِاِيَابِكُمْ

रसूल और अंबिया को गवाह बनाता हूँ के आप पर ईमान लाया हूँ आप की रजअत का यक़ीन

مُوْقِنٌ بِشَرَائِعِ دِيْنِيْ وَخَوَاتِيْمِ عَمَلِيْ وَقَلْبِيْ لِقَلْبِكُمْ سِلْمٌ وَاَمْرِيْ

किए हुए अपने दीन की शरीअत के साथ और अपने अमल के ख़ात्मे के साथ और मेरा दिल

لِاَمْرِكُمْ مُتَّبِعٌ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى اَرْوَاحِكُمْ وَ عَلٰى

आपके दिल को तसलीम किए हुए हैं और मेरा अम्र आप के हुकूम का ताबे है आप पर सलवाते

اَجْسَادِكُمْ وَعَلٰى اَجْسَامِكُمْ وَعَلٰى شَاهِدِكُمْ وَعَلٰى غَآئِبِكُمْ وَعَلٰى

खुदा हो और आपकी रूह पर आपके जिस्मे पाक पर और आप के बदन पर और आप के ज़ाहिर

ظَاهِرِكُمْ وَعَلٰى بَاطِنِكُمْ.

पर और आप के ग़ाएब पर और आप के ज़ाहिर पर और आप के बातिन पर।

उसके बाद अपने को क़ब्रे अक़्दस पर गिरा दे और बोसा देकर कहे:

بِاَبِيْ اَنْتَ وَ اُمِّيْ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ بِاَبِيْ اَنْتَ وَ اُمِّيْ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ لَقَدْ

मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों, ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों ऐ अबू अब्दुल्लाह

عَظُمَتِ الرَّزِيَّةُ وَ جَلَّتِ الْمُصِيْبَةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ

कितनी अज़ीम मुसीबत आप की है और कितनी बड़ी क़यामत आप पर वारिद हुई हमारे लिए और तमाम

السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسْرَجَتْ وَ اَلْجَمَتْ وَ تَهَيَّاَتْ

उन लोगों के लिए जो आसमान और ज़मीन मे हैं तो खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने घोड़े को

لِقِتَالِكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ قَصَدْتُ حَرَمَكَ وَ اَتَيْتُ اِلٰى

लगाम लगाई और ज़ीन कसा और आप से जंग के लिए आमादा हुई, ऐ मेरे मौला अबू अब्दुल्लाह मैने आप

مَشْهَدِكَ اَسْاَلُ اللّٰهَ بِالشَّاْنِ الَّذِيْ لَكَ عِنْدَهٗ وَ بِالْمَحَلِّ الَّذِيْ لَكَ

की बारगाह का क़सद किया है और आप के राज़ा तक आया हूँ। मै खुदा से सवाल करता हूँ आप की उस

لَدَيْهِ اَنْ يُّصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ يَّجْعَلَنِيْ مَعَكُمْ فِي الدُّنْيَا وَ

शान के वास्ते से जो खुदा के नज़दीक है और उस मकाम के ज़रिए जो आप के लिए खुदा के पास है के वो

الْاٰخِرَةِ.

दुरूद नाज़ल करे मोहम्मद व आले मोहम्मद पर व मुझको आपके साथ दुनिया ओ आख़िरत मे क़रार दे।

उसके बाद बालाए सर दो रकत नमाज़ जिस सूरह के साथ चाहे अदा करे। और नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ صَلَّيْتُ وَ رَكَعْتُ وَ سَجَدْتُ لَكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لِاَنَّ

खुदाया मैने नमाज़ अदा की और रूकू व सजदा किया तेरे लिए के तू एक है तेरा कोई शरीक नही है और

الصَّلَاةَ وَ الرُّكُوْعَ وَ السُّجُوْدَ لَا يَكُوْنُ اِلَّا لَكَ لِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ

नमाज़, रूकू और सजदा सिवाए तेरे किसी के लिए नही होता है क्योंके तू अल्लाह है तेरे सिवा कोई खुदा

اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَبْلِغْهُمْ عَنِّيْ اَفْضَلَ السَّلَامِ وَ

नही है खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनको पहुँचा दे मेरी तरफ़ से बेहतरीन

التَّحِيَّةِ وَارْدُدْ عَلَيَّ مِنْهُمُ السَّلَامَ اَللّٰهُمَّ وَهَاتَانِ الرَّكْعَتَانِ هَدِيَّةٌ

सलाम और तहय्या और पलटा दे उनकी तरफ़ से मुझ पर सलाम खुदाया ये दोनो रकतें मेरी तरफ़ से हदया

مِّنِّيْ اِلٰى مَوْلَايَ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى

हैं मेरे मौला हुसैन बिन अली (अ) की तरफ़, खुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद पर और उनपर और

مُحَمَّدٍ وَّ عَلَيْهِ وَ تَقَبَّلْ مِنِّيْ وَ اَجِرْنِيْ عَلٰى ذٰلِكَ بِاَفْضَلِ اَمَلِيْ وَ رَجَآئِيْ

मेरे अमल को क़ुबूल करले और मुझको उस का अक्र दे मेरी उम्मीद और आरज़ू से बेहतर जो तेरे बारे

فِيْكَ وَ فِيْ وَلِيِّكَ يَا وَلِيَّ الْمُؤْمِنِيْنَ.

मे और तेरे वली के बारे मे है ऐ मोमिनों के वली।

उसके बाद पाईने पा जाकर हज़रत अली अकबर (अ.स.) के सरहाने खड़े होकर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ نَبِيِّ اللّٰهِ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे नबीए खुदा। सलाम आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ

ऐ अमीरल मोमिनीन (अ) के फ़रज़ंद। सलाम आप पर ऐ हुसैन (अ) के फ़रजंद जो शहीद हैं।

اَلْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الشَّهِيْدُ وَ ابْنُ الشَّهِيْدِ

सलाम आप पर ऐ शहीदे राहे खुदा। सलाम हो आप पर ऐ मज़लूम और फ़रज़ंदे मज़लूम अल्लाह

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمَظْلُوْمُ وَ ابْنُ الْمَظْلُوْمِ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً

की लानत हो उस क़ौम पर जिस ने आप को क़त्ल किया और अल्लाह की लानत हो आप पर

قَتَلَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً سَمِعَتْ بِذٰلِكَ

ज़ुल्म करनेवाली उम्मत पर और अल्लाह की लानत हो उस उम्मत पर जिसने सूना और राज़ी

فَرَضِيَتْ بِهٖ.

रही।

उसके बाद अपने को क़ब्रे मुतह्हर पर गिरा दे और बोसा देकर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ وَلِيِّهٖ لَقَدْ عَظُمَتِ الْمُصِيْبَةُ وَ جَلَّتِ

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और फ़रज़ंदे वलीए खुदा कितनी अज़ीम मुसीबत पड़ी और

الرَّزِيَّةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ الْمُسْلِمِيْنَ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَ

कितनी बड़ी तकलीफ़ हुई आप के साथ हम पर और तमाम मुसलमानों पर तो खुदाकी लानत

اَبْرَاُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلَيْكَ مِنْهُمْ.

उस उम्मत पर जिसने आपको क़त्ल किया व मै खुदा की तरफ़ व आपकी तरफ़ उनसे बेज़ार हूँ।

उसके बाद पाईंती के दरवाज़े से बाहर आकर शोहदा की तरफ़ रूख करके कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ وَ اَحِبَّآئَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَصْفِيَآءَ

सलाम आप पर ऐ अल्लाह के वलीयों और महबूबों, सलाम आप पर ऐ अल्लाह के मुनताख़िब

اللّٰهِ وَ اَوِدَّآئَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ دِيْنِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا

और बरगुज़ीदा लोग, सलाम आप पर ऐ दीने खुदा के नासिरों, सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा के

اَنْصَارَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

मददगार, सलाम आप पर ऐ अमीरल मोमेनीन के नासिरों, सलाम आप पर ऐ नासिराने फ़ातेमा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ

जो आलमीन की औरतों की सरदार हैं। सलाम आप पर ऐ नासेराने अबू मोहम्मद हसन बिन

عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ اَبِيْ مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ الْوَلِيِّ النَّاصِحِ اَلسَّلَامُ

अली जो वली, पाकीज़ा और नसीहत करनेवाले हैं, सलाम आपपर ऐ अबू अब्दुल्लाह के मददगार

عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ اَبِيْ عَبْدِ اللّٰهِ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ طِبْتُمْ وَ طَابَتِ

मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों आप भी पाक हुए और वो ज़मीन भी, जिस मे आप दफ़न किए गए

الْاَرْضُ الَّتِيْ فِيْهَا دُفِنْتُمْ وَ فُزْتُمْ فَوْزًا عَظِيْمًا فَيَالَيْتَنِيْ كُنْتُ

आपने बड़ी कामयाबी हासिल करली काश मै भी आपके साथ होता तो आपके साथ कामयाब

مَعَكُمْ فَأَفُوزَ مَعَكُمْ.

हो जाता।

इसके बाद बालाए सरे इमाम हुसैन (अ.स.) वापस आकर दुआ करे अपने लिए और अपने अहलो अयाल के लिए, अपने माँ बाप के लिए और दीनी भाईयों के लिए के रौज़ए पाक में दुआ रद्द नहीं होती है और हर सवाल सुन लिया जाता है।

लेखक: इस ज़ियारत को ज़ियारते वारिस कहा जाता है और इसका मद्रक शेख़े तूसी की किताब मिस्बाहुल मुतहज्जिद है। जो इन्तेहाई मोतबर और मारूफ़ किताबों में है। मैंने इस ज़ियारत को उसी किताब से बिलावास्ता नक़्ल किया है। और यह ज़ियारत इसी मकाम पर तमाम हो जाती है।

فَيَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَعَكُمْ فَأَفُوزَ مَعَكُمْ

लेहाज़ा इसके बाद जो इज़ाफ़े किये गए हैं:

فِي الْجِنَانِ مَعَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا اَلسَّلَامُ عَلَى مَنْ كَانَ فِي الْحَائِرِ مِنْكُمْ وَعَلَى مَنْ لَمْ يَكُنْ فِي الْحَائِرِ مَعَكُمْ...

यह सब फ़ुज़ूल है और मेरे उस्ताद शेख़ मोहद्दिस नूरी ने लूलू व मरजान में फ़रमाया है के यह कलेमात वाज़ेह ग़लत बयानियों पर मुश्तमिल हैं और इस में बिदअत के अलावा इमाम के बयान पर इज़ाफा भी है मगर अफ़सोस के यह इज़ाफे इस कद्र मशहूर हो गए के रोज़ो शब हज़ारों बार इमाम हुसैन (अ.स.) के सामने और मलाएका की मौजूदगी में और अंबिया की हुज़ूरी में ब आवाज़े बुलंद इन कलेमात को दोहराया जाता है। और कोई टोकने वाला नहीं होता है और न कोई उस झूठ के लिए नहीं अनिल मुन्कर करता है। यहाँ तक के धीरे धीरे यह कलेमात बाज़ अहमकों के मजमूए में शामिल हो गए हैं और उस मजमूए का अच्छा सा नाम रखकर उसे शाया और मुन्तशिर कर दिया गया है। फिर एक अहमक़ के मजमूए से दूसरे अहमक़ की तरफ़ नक़्ल हो रहा है और हद यह है के बाज़ तुल्लाबे इल्मे दीन भी इस नुकते को न समझ सके। चुनांचे एक दिन मैंने देखा के एक तालिबे इल्म शोÔदा के हुæज़ूर इन्ही खुराफ़ात को पढ़ रहा है। मैंने उसके कांधे पर हाथ रख कर कहा के अहले

इल्म के लिए यह बात कबीह नहीं है के ऐसे मुक़द्दस मकाम पर ऐसा झूठ बोले? उसने कहा के क्या यह रिवायत नहीं है? मैंने ताज्जुब किया और कहा: हरगिज़ नहीं। उसने कहा मैंने एक किताब में देखा है। मैंने पूछा कौनसी किताब में? उसने कहा मफ़ातीहुल जिनान। मैं ख़ामोश हो गया के अगर इंसान इस क़द्र बेइत्तेला हो जाए के अवाम के जमा करदा कलाम को मुस्तनद क़रार देने लगे तो ऐसा इंसान बात करने के लाएक भी नहीं है।

इसके बाद शेख़ मरहूम ने बयान को तूल दिया है और फ़रमाया है के इस तरह की बिदतों में अवाम को आज़ाद छोड़ देना और ग़ुस्ले ओवय्से करनी और अबू दरदा जो के मुख़लसे माविया जैसे खुराफ़ात को राएज कर देना या रोज़ा सौत को राएज कर देना और किसी की तरफ़ से उसकी मुख़ालेफ़त का न होना सबब बन गया है के हर महीना और हर साल नए नए नबी और इमाम पैदा हों और धीरे धीरे लोग दीने खुदा से बाहर निकल जाएं।

लेखक का बयान है के इस शेख़े जलील की फ़रमाइश पर ग़ौर करना चाहिए के वह मज़ाके शरई को ख़ूब पहचानते थे। और यह मसला उनके लिए इस क़द्र सख़्त था के वह जानते थे के इस काम के नताएज इंतेहाई संगीन होंगे। इसके बराख़िलाफ़ जो लोग उलूमे अहलेबैत से बेबहरा हैं और सिर्फ़ चंद इस्तेलाहात व अलफ़ाज़ को याद कर लेने ही को काफ़ी समझ लेते हैं उनकी नज़र में इन बातों की कोई अहमियात नहीं है। बहर हाल नौबत यहाँ तक पहुँच गई है के मिस्बाहुल मुतहज्जिद, मोहिज्जुद दअवात, जमालुल उसबूअ, मिस्बाहुज़ ज़ाएर, बलदुल अमीन, जन्नतुल वाक़ेया, मिफ़्ताहुल फ़ला, मक़बास, रबीउल असाबी, तोहफ़ा ज़ादुल माद वगैरह जैसी किताबों मतरूक हो गईं और ऐसे अहमक़ाना मजमूए शाया हो गए जिनमें दुआए मुजीर जैसी दुआ में ८० बार बेअफ़वेका का इज़ाफा किया है और दुआ जौशने कबीर में सौ फ़सलें थी तो हर फ़स्ल के लिए एक ख़ासियत गड़ली गई है और बाकसरत ज़ियारत के होते हुए एक ज़ियारते मफ़जा बना ली गई है और बेशुमार मोतबर दुआओं के होते हुए जिनके मज़ामीन बुलंद कलेमात पर मुश्तमिल थे एक दुआए हुब्बी तय्यर कर ली गई है और उसको अर्षे आज़म से नाज़ल कर दिया गया है। और उसके लिए इतनी फ़ज़ीलतें तय्यार कर ली गई हैं के इंसान हैरान होकर

रह जाए जिनमें से एक फ़ज़ीलत यह भी है के जिब्रईले अमीन ने रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) तक मालिक का यह पैग़ाम पहुँचाया के जो बंदा इस दुआ को अपने साथ रखेगा मैं उस पर हरगिज़ अज़ाब न करूँगा चाहे मुस्तहके जहन्नम ही क्यों न हो और एक सजदा भी न किया हो मैं उस बंदे को सत्तर हज़ार पैग़ंबरों का सवाब दूंगा और सत्तर हज़ार शहीद, सत्तर हज़ार नमाज़ गुज़ार, सत्तर हज़ार बरेहना लोगों को लिबास देनेवाले, और सत्तर हज़ार लोगों को सेर करनेवाले का सवाब अता करूँगा और इसका सवाब सहराओं की रेत के बराबर होगा और सत्तर हज़ार बु॰क्क़ए ज़मीन का सवाब दे दूंगा और रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की मोहरे नबुव्वत व रिसालत का सवाब दे दूँगा। और उसके साथ ईसा रूहुल्लाह, इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, इस्माईल ज़बीहुल्लाह और जिब्रईल, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्रईल और तमाम फ़रिश्तों का सवाब दे दूँगा। ऐ मोहम्मद (स)!

जो भी इस दुआए हुब्बी को पढ़ लेगा या अपने साथ रखे उसको बख़्श दूंगा और मुझे अस पर अज़ाब करते हुए शर्म आएगी।

मुनासिब है के इंसान इन बातों को सुनने के बाद हसने के बजाए गिरया करे के शिया दुआओं की किताबें इस क़द्र मोत॰व॰ाकन थीं के एक से एक किताब नक़्ल की जाती थी और अहले इल्म उनके नक़्ल करनेवाले होते थे। और फिर उस नुस्ख़े से नक़्ल की जाती थीं जो अहले इल्म की तरफ़ से तसहीह शुदा और ओलमा की तरफ़ से मुक़ाबले के बाद तय्यार हुआ हो और अगर कोई इख़्तेलाफ़ हो तो हाशये पर उसे भी लिख दिया जाए।

मसलन दुआ मकारेमुल अ॰ख्लाक में मुबल्लिग बैईमान था तो हाशये पर लिख दिया गया के इब्ने अशनास के नुस्ख़े में मुबल्लिग़ बेईमान है और रिवायत इब्ने शाज़ान में अल्लाहुम्म अबलिग ईमानी है या मसलन फ़लां कलमा इब्ने सुकून के ख़त में इस तरह और शहीद के ख़त में इस तरह है। मगर अब नौबत यह आ गई है के तमाम काम मफ़ातीहुल जिनान पर मुनहसिर हो गया है। जिसके हालात अभी आप ने मुलाहेज़ा फ़रमाए के यह किताब मरजए अवाम ओ ख़ास व अरब व अजब हो गई है और यह सिर्फ़ अहले इल्म के हदीस ओ अख़बार से बे एतेनाई और ओलमा ओ फ़ोकहाए अहले बैत (अ.स.)

की किताबों की तरफ़ तवज्जो न करने का नतीजा है।
और नतीजा इस बात का है के बिदआत, इज़ाफ़ात तहरी॰फें जोहला और तसर्रूफ़े न अहलान की मुख़ालेफ़त नहीं की गई और नौबत यहाँ तक पहुँच गई के सबने अपने अपने सलीक़े से दुआ ज़ियारत और सलवात इजाद कर ली और अनेक मजमुए इसी तरह से तय्यार कर के छाप दिये गए और मफ़ातीहुल जिनान के बच्चे भी पैदा हो गए और धीरे धीरे यह ख़राबियाँ दूसरी किताबों में भी दाख़िल हो गई। मसिल के तौर पर हकीर की किताब मुनतहुल आमाल को हाल ही में छापा गया है तो बाज़ लोगों ने अपने सलीक़े से इसमें भी तसर्रूफ कर दिया और मालिक बिन यसार मलऊन के हालात में इस तरह लिख दिया है के इमाम हुसैन की बद दुआ से उसके दोनों हाथ बेकार हो गए। अल हम्दो लिल्लाह। गर्मा में वह खुश्क लकड़ियों जैसे होते थे अल हम्दो लिल्लाह। और सर्दायों में उनसे ख़ून टपकता था अल हम्दो लिल्हा और यह उसका अंजाम हुआ अल हम्दो लिल्लाह। गोया दो सतरों में चार बार लफ़्ज़े अल हम्दो लिल्लाह का इज़ाफा कर दिया गया है जबके उसका अस्ल से कोई तअल्लुक़ नहीं है।
या बाज़ मक़ामात पर जनाबे ज़ैनब और उम्मे कुलसूम के साथ अपने ज़ाती ज़ौक की बिना पर लफ़्ज़े ख़ानम का इज़ाफ़ा कर दिया गया है ज़ैनब खानम उम्मे कुलसूम ख़ानम ताके उन महज़रात की तजलील हो सके। या हमीद बिन क़हतबा से कातिब को नफरत थी तो उसने उसको हमीद बिन क़हबा लिख दिया लेकिन यह एहतियात की के क़हतबा को भी नुसख़ए बदल के तौर पर लिख दिया या अबदे रब को नामुनासिब समझकर अब्दुल्लाह बना दिया या ज़ोहर बिन ॰कैस को हाए महमेला के बजाए जीम में लिख दिया। या उम्मे सलमा को ग़लत समझ कर उम्मुस सलमा बना दिया वग़ैरह वग़ैरह।
इन तमाम मतालिब को नक़्ल करने से एक तरफ़ उन तसरूर्फ़ात की निशान देही कर दी जिन्हें उस शख़्स ने अपने सला॰रके के नाक़स को कामिल और कामिल को नाक़स बना दिया है और यहीं से यह अंदाज़ा होता है के जिन चीज़ों को हम अपनी जेहालत व नादानी की बिना पर दुआओं में दाख़िल कर देते हैं या अपने नाक़स सलीक़े की बिना पर तसर्रूफ़ात कर देते हैं और उसको कमाल तसव्वुर करते हैं यह उमूर उसके अहले फ़न के नज़दीक सबबे नुक़सान

हैं और उनही की वजेह से दुआएँ और ज़ियारत ग़ैर मोतबर होती हैं।
लेहाज़ा मुनासिब यही है के इस बाब में किसी प्रकार की मुदाख़ेलत न की जाए और जिस प्रकार मासूमी (अ.स.) ने फ़रमाया है वैसे ही अमल किया जाए और उस से तजावुज़ न किया जाए। दूसरा सबब यह भी था के यह भी मालूम हो जाए के जब एक लेखक की ज़िंदगी में यह काम हो सकता है तो दूसरी किताबों का क्या हश्र होगा और उन किताबों का क्या एतेबार रह जाएगा? अलावा उन चंद मशहूर व मारूफ़ किताबों के जो मशहूर ओलमा की तसनीफ़ात में हैं और ओलमाए फ़न की नज़रों से गुज़र चुकी हैं।
और उन्होंनें रोज़ाना के आमाल में एक किताब लिखी थी और जनाब अबू हाशिम जाफ़री ने उस किताब को इमाम हसन असकरी (अ.स.) के सामने पेश किया तो हज़रत ने पूरी किताब का मुतालेआ करने का बाद फ़रामाया के यही मेरा और मेरे आबाओ अजदाद का दीन है और यही हक़ है।
देखिए अबू हाशिम जाफ़री ने यूनुस बिन अब्दुर रहमान के कामिले इल्म व फ़क़ाहत व दियानत के जानने के बा वुजूद अपने ज़ाती इल्म पर एतेबार नहीं किया।
बल्के किताब को क़ाबिले अमल बनाने के लिए उसे इमाम की ख़िदमत में पेश किया ताकि वह तसदीक़ फ़रमां दें।
इसी प्रकार दरख़शंजानी हेराती से मरवी है जो इन्तेहाई मर्दे सादिक़ साहेबे सलाह व तक़वा थे के वह सामर्रा में इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की ख़िदमत में शामिल हुए और शेख़ जलीलुल क़द्र फ़ज़्ल बिन शाज़ान निशापूरी की किताब यौमे दलीला को आं हज़रत (अ.स.) को दिया और कहा मैं आप पर क़ुरबान चाहता हूँ के इस पर नज़रे सानी फ़रमा लें। और वरक वरक मुलाहेज़ा फ़रमा लें।
हज़रत ने फ़रमाया के यह किताब सही है। इस पर अमल हो सकता है।
यह हक़ीर अगरचे इस ज़माने के लोगों के ज़ौक को जानता है और उसे मालूम है के वह इस तरह के मसाएल को कोई अहमियत नहीं देते हैं।
फिर भी इतमामे हुज्जत के लिए बेपनाह कोशिश की के दुआएं और ज़ियाराते मनक़ूला को इस किताब में हत्तल इम्कान असली नुसख़ों से नक़्ल किया जाए और फिर मुतअद्दिद नुसख़ों से मिला लिया जाए और जहाँ तक मुम्किन हो

उसकी तसहीह कर दी जाए ता के उस पर अमल करने वाला बा इतमिनान अमल कर सकें। बशर्ते के बाद के कातिब और नक़्ल करनेवाले उनमें कोई तसर्रूफ़ न कर दें और पढ़ने वाले अपने सलीक़े और ज़ौक को शामिल न करें। शेख़ कुलैनी ने अब्दुर रहीम कसीर से नक़्ल किया है के मैंने इमामे सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र होकर अर्ज़ किया मैं आप पर क़ुर्बान, मैंने अपने पास से एक दुआ तय्यार की है। फ़रमाया अपनी ईजाद को अपने पास रखो मुझ से बयान न करो।

याने हज़रत ने सुनना भी गवारा नहीं किया और खुद आपने एक दसतूरूल अमल बयान फ़रमाया।

शेख़ सदूक (अ.स.) ने अब्दुल्लाह बिन सिनान से रिवायत की है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के अनक़रीब तुम्हारे पास वह शुबहात आने वाले हैं जिनमें निशाने मंज़ल पोशीदा हो जाएगा। और उन शुबहात में वही व्यक्ति नजात पा सकेगा जो दुआए ग़रीक को पढ़ेगा। मैंने पूछा के हुज़ूर यह दुआए ग़रीक क्या है? फरमाया:

يَااللهُ يَارَحْمٰنُ يَارَحِيمُ يَامُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلٰى دِينِكَ

ऐ अल्लाह ऐ रहमान ऐ रहीम ऐ दिलों को बदलने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर साबित रख।

रावी ने ये अलफ़ाज दोहराए और ये कलेमात का इज़ाफ़ा किया:

يَامُقَلِّبَ الْقُلُوبِ وَالاَبْصَارِ

ऐ दिलों और नज़रों को बदलने वाले

इमाम ने फ़रमाया: बेशक खुदा क़ल्बो नज़र दोनो का पलटनेवाला है मगर तुम वैसे ही कहो जैसे मैने तुम्हें तालीम दी है। इन दो रिवायात में ताम्मुल करने के बाद उन लोगों को होशियार हो जाना चाहिए जो दुआओं में अपने सलीक़े से इज़ाफ़ा कर देते हैं। और किसी भी तरह का तसरूफ़ कर देते हैं इसके बाद अल्लाह ही सबको महफ़ूज़ रखने वाला है।

दूसरा मतलब

ज़ियारते हज़रते अब्बास बिन अली बिन अबि तालिब (अ.स.)

शेख़े बुज़ुर्गवार जाफ़र बिन क़ूलूवय क़ुम्मी ने सनदे मोतबर के साथ अबू हमज़ा सुमाली से रिवायत की है के इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के जब क़ब्रे हज़रत अब्बास बिन अली की ज़ियारत करना चाहो जो फ़ुरात के किनारे हरमे इमाम हुसैन (अ.स.) के सामने है तो दरे हरम पर खड़े होकर कहो:

سَلَامُ اللّٰهِ وَسَلَامُ مَلَآئِكَتِهِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَاَنْبِيَآئِهِ الْمُرْسَلِيْنَ

अल्लाह का सलाम और उस के मुक़ररब मलाएका और उस के मुरसल नबियों और उसके नेक

وَعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ وَجَمِيْعِ الشُّهَدَآءِ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالزَّاكِيَاتُ

बन्दों का सलाम हो और तमाम शोहदा और सिद्दीक़ीन पाक व पाकीज़ा और नेक सीरत का

الطَّيِّبَاتُ فِيْمَا تَغْتَدِيْ وَ تَرُوْحُ عَلَيْكَ يَابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

सलाम हो सुबह और शाम आप पर ऐ फ़रजंदे अमारूल मोमिनीन (अ), मै गवाही देता हूँ आप

اَشْهَدُ لَكَ بِالتَّسْلِيْمِ وَ التَّصْدِيْقِ وَ الْوَفَآءِ وَ النَّصِيْحَةِ لِخَلَفِ

के लिए तसलीम तसदीक़ वफ़ादारी और मुकम्मल ख़ैर ख़्वाही की नबीए मुरसल (स) के फ़रजंद

النَّبِيِّ الْمُرْسَلِ وَ السِّبْطِ الْمُنْتَجَبِ وَ الدَّلِيْلِ الْعَالِمِ وَ

के लिए और मुनताख़िब नवासए रसूल के लिए और रहनुमा और आलम, वसी, मुबल्लिग़,

الْوَصِيِّ الْمُبَلِّغِ وَ الْمَظْلُوْمِ الْمُهْتَضَمِ فَجَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ رَسُوْلِهٖ وَ

मज़लूम और जिसका हक़ हज़म किया गया उस के लिए तो खुदा आप को जज़ा दे अपने रसूल

عَنْ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ عَنِ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ

की तरफ़ से और अमीरूल मोमिनीन (अ) और हसन व हुसैन की तीरफ़ से अल्लाह का दुरूद हो

عَلَيْهِمْ اَفْضَلَ الْجَزَآءِ بِمَا صَبَرْتَ وَ احْتَسَبْتَ وَ اَعَنْتَ فَنِعْمَ

उन पर बेहतरीन जज़ा क्योंके अपने सब्र किया, मसाएब बरदाशत किए और आप ने मदद की

عُقْبَى الدَّارِ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ جَهِلَ حَقَّكَ وَ

तो आख़ेरत का बेहतरीन घर है। अल्लाह की लानत हो आप के क़ातिल पर अल्लाह की लानत हो

اسْتَخَفَّ بِحُرْمَتِكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ حَالَ بَيْنَكَ وَ بَيْنَ مَآءِ

आप के हक़ से जाहिल पर और आपकी हुरमत के इसतेख़फ़ाफ़ करनेवाले पर अल्लाह की लानत

الْفُرَاتِ اَشْهَدُ اَنَّكَ قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا وَ اَنَّ اللّٰهَ مُنْجِزٌ لَّكُمْ مَا

हो उस पर जो आप के और आबे फ़ुरात के दरमियान हाएल हो गया। मै गवाही देता हूँ के आप

وَعَدَكُمْ جِئْتُكَ يَابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ افِدًا اِلَيْكُمْ وَ قَلْبِيْ

को मज़लूम क़त्ल किया गया और अल्लाह आप से किए हुए वादे का पूरा करने वाला है। मै ऐ

مُسَلِّمٌ لَّكُمْ وَ تَابِعٌ وَ اَنَا لَكُمْ تَابِعٌ وَ نُصْرَتِيْ لَكُمْ مُعَدَّةٌ حَتّٰى

फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन (अ) आप के पास आया हूँ जबके दिल आपके सामने झुका है और

يَحْكُمَ اللهُ وَ هُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِيْنَ فَمَعَكُمْ مَعَكُمْ لَا مَعَ عَدُوِّكُمْ

ताबे फ़रमान है और मै आपका ताबे हूँ और मेरी मदद आप के लिए तैयार है यहाँ तक के खुदा

اِنِّيْ بِكُمْ وَ بِاِيَابِكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ بِمَنْ خَالَفَكُمْ وَ قَتَلَكُمْ

फ़ैसला कर दे और वो बेहतरीन फ़ैसला करनेवाला है तो मै आप के साथ हूँ आप के साथ हूँ आप

مِنَ الْكَافِرِيْنَ اِنِّيْ بِكُمْ وَبِاِيَابِكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَبِمَنْ خَالَفَكُمْ

के दुश्मनों के साथ नही हूँ। मै आप पर और आप के लौटने पर ईमान रखता हूँ और आप के

وَ قَتَلَكُمْ مِنَ الْكَافِرِيْنَ قَتَلَ اللهُ اُمَّةً قَتَلَتْكُمْ بِالْاَيْدِيْ وَ

दुश्मनों, मुख़ालिफ़ो और क़ातिलों का इंकार करनेवाला हूँ। खुदा उस उम्मत को क़त्ल करे जिस

الْاَلْسُنِ.

ने आप का क़त्ल किया हाथ या ज़ुबान से।

उसके बाद रौज़े में दाख़ल होकर ज़रीह से लिपट कर यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ الْمُطِيْعُ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ

सलाम आप पर ऐ अब्दे सालेह जो इताअत करनेवाले हैं, अल्लाह और उसके रसुल और अमीरूल

لِاَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ

मोमिनीन (अ) और हसन और हुसैन (अ) के (उन पर सलवात हो और सलाम हो) सलाम आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ وَ مَغْفِرَتُهٗ عَلٰى رُوْحِكَ وَ

पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो और मग़िफ़रत व रिज़वान हो और आप की रूह और

بَدَنِكَ اَشْهَدُ وَ اُشْهِدُ اللهَ اَنَّكَ مَضَيْتَ عَلٰى مَا مَضٰى الْبَدْرِيُّوْنَ

आप के बदन पर। मै गवाही देता हूँ और अल्लाह को गवाह बनाता हूँ के आप दुनिया से इसी हाल

وَ الْمُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الْمُنَاصِحُوْنَ لَهٗ فِيْ جِهَادِ اَعْدَائِهٖ

मे गए जिस तरह बदर के लोग गए जो राहे खुदा मे जिहाद करने वाले और नसीहत करनेवाले थे

الْمُبَالِغُوْنَ فِيْ نُصْرَةِ اَوْلِيَآئِهِ الذَّآبُّوْنَ عَنْ اَحِبَّآئِهٖ فَجَزَاكَ اللهُ

उस के दुश्मनों से जिहाद मे, उसके वलियों की नुस्रत मे हद्दे कमाल पर पहुँचनेवाले थे जो उसके

اَفْضَلَ الْجَزَآءِ وَ اَوْفَرَ الْجَزَآءِ اَحَدٍ مِّمَّنْ وَفّٰى بِبَيْعَتِهٖ وَ اسْتَجَابَ

दोस्तों से दफ़अ करनेवाले थे तो खुदा आपको जज़ा दे बेहतरीन जज़ा वाफ़र जज़ा और कामील

لَهٗ دَعْوَتَهٗ وَ اَطَاعَ وُلَاةَ اَمْرِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَالَغْتَ فِي النَّصِيْحَةِ

तरीन जज़ा उस की जज़ा जिसने बैअत मे वफ़ादारी की हो और उसकी दुआ को क़ुबूल किया हो

وَ اَعْطَيْتَ غَايَةَ الْمَجْهُوْدِ فَبَعَثَكَ اللهُ فِي الشُّهَدَآءِ وَ جَعَلَ

और जिसने उसके वलीए अम्र की इताअत की हो। मै गवाही देता हूँ के आपने नसीहत मे काशिश

رُوْحَكَ مَعَ اَرْوَاحِ السُّعَدَآءِ وَ اَعْطَاكَ مِنْ جِنَانِهٖ اَفْسَحَهَا

की ओर मुकम्मल कोशिश की तो खुदा आप को नेक बख़्तों मे मबऊस करे और आपकी रूह

مَنْزِلًا وَّ اَفْضَلَهَا غُرَفًا وَ رَفَعَ ذِكْرَكَ فِي الْعِلِّيِّيْنَ وَ حَشَرَكَ مَعَ

को नेक बख़्तों की रूह के साथ क़रार दे और आपको अता करे जन्नत मे वसी मकाम बेहतरीन

النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصَّالِحِيْنَ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ

कमरा और आपके ज़िक्र को बुलंद करे ईल्लीन मे और आपको महशुर करे नबियों और सिद्दीक़ीन,

رَفِيْقًا اَشْهَدُ اَنَّكَ لَمْ تَهِنْ وَ لَمْ تَنْكُلْ وَ اَنَّكَ مَضَيْتَ عَلٰى

शोहदा और सालेहीन के साथ ये बेहतरीन रफ़ीक़ हैं। मै गवाही देता हूँ के आप ने कोई कोताही नही

بَصِيْرَةٍ مِّنْ اَمْرِكَ مُقْتَدِيًا بِالصَّالِحِيْنَ وَ مُتَّبِعًا لِّلنَّبِيِّيْنَ جَمَعَ اللّٰهُ

की और न सुस्ती की बल्के आप अपने अम्र की बसीरत पर उठे सालेह लोगों की इक़तेदा करते

بَيْنَنَا وَ بَيْنَكَ وَ بَيْنَ رَسُوْلِهٖ وَ اَوْلِيَآئِهٖ فِيْ مَنَازِلِ الْمُحْسِنِيْنَ

हुए और इत्तेबा करते हुए नबियों का तो खुदा जमा करे हमारे और आप के दरमियान और उसके

فَاِنَّهٗ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ.

रसूल और वलियों के दरमियान तक़्वेवालों के मनिज़ल है, बेशक वो बड़ा रहेम करने वाला है।

लेखक: बेहतर है के इस ज़ियारत को पुश्ते सर रू ब क़िबला खड़े होकर पढ़े जैसा के शेख़ ने तहज़ीब में फ़रमाया है के क़ब्र पर अपने को गिरा दे और रू ब क़िबला यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ

सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के नेक बंदे।

वाज़ेह रहे के ज़ियारते जनाबे अब्बास मज़कूरा रिवायत के मुताबिक़ यही थी।

जो यहाँ ज़िक्र की गई। लेकिन सय्यद इब्ने ताऊस और शेख़ मुफ़ीद और दीगर हज़रात ने इसके बाद फ़रमाया है के बालाए सर जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे। और नमाज़ के बाद यह दोआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ لَا تَدَعْ لِيْ فِيْ هٰذَا الْمَكَانِ

खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको न छोड़ इस करामत वाली जगह और

الْمُكَرَّمِ وَ الْمَشْهَدِ الْمُعَظَّمِ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَ لَا هَمًّا اِلَّا

अज़मत वाले मशहद मे गुनाहगार मगर ये के तू उस को बख़्श दे और न कोई ग़ाम मेरे लिए मगर ये के

فَرَّجْتَهٗ وَلَا مَرَضًا اِلَّا شَفَيْتَهٗ وَلَا عَيْبًا اِلَّا سَتَرْتَهٗ وَلَا رِزْقًا

उसको दूर कर दे और न कोई बीमारी मगर ये के तू उससे शिफ़ा दे दे और न कोई ऐब मगर ये के तू उसको

اِلَّا بَسَطْتَهٗ وَ لَا خَوْفًا اِلَّا آمَنْتَهٗ وَ لَا شَمْلًا اِلَّا جَمَعْتَهٗ وَ لَا

छुपा दे और न कोई रिज़्क़ मगर ये के तू उस को बढ़ा दे और न ख़ाफ़ मगर ये के तू उस से अमान दे दे और

غَآئِبًا اِلَّا حَفِظْتَهٗ وَ اَدْنَيْتَهٗ وَلَا حَاجَةً مِّنْ حَوَآئِجِ الدُّنْيَا وَ

न परागन्दगी मगर ये के उस को जमा कर दे और न ग़ाएब मगर ये के उस की हिफ़ाज़त करे और उसको

الْاٰخِرَةِ لَكَ فِيْهَا رِضًى وَّ لِيْ فِيْهَا صَلَاحٌ اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ

क़रीब कर दे और न दुनिया और आख़िरत की हाजतों मे से कोई हाजत जिस मे तेरी रज़ामंदी हो और मेरे

الرَّاحِمِيْنَ.

लिए जिस मे फ़ाएदा हो मगर ये के तू उसको पूरा कर दे। ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

उसके बाद ज़रीह के पाईने पा खड़े होकर यह दुआ पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْفَضْلِ الْعَبَّاسَ بْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

सलाम आप पर ऐ अबुल फ़ज़लिल अब्बास फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन (अ) सलाम आप पर ऐ वलियों

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَوَّلِ

के सरदार के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ उस शख़्स जिसने सब से पहले इसलाम ज़ाहिर किया और ईमान

الْقَوْمِ اِسْلَامًا وَاَقْدَمِهِمْ اِيْمَانًا وَاَقْوَمِهِمْ بِدِيْنِ اللّٰهِ وَاَحْوَطِهِمْ

के एतेबार से सब से मुक़द्दम रहा और दीने खुदा मे सब से ज़्यादा पाएदार और दीने इसलाम का सबसे बड़ा

عَلَى الْاِسْلَامِ اَشْهَدُ لَقَدْ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِاَخِيْكَ فَنِعْمَ

मुहाफ़िज रहा। मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह व रसूल और अपने भाई की राह मे ख़ैर ख्वाह थे और नसीहत

الْاَخُ الْمُوَاسِيْ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَ

की। आप बेहतरीन मवासात वाले भाई थे खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने आप को क़त्ल किया और

لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اسْتَحَلَّتْ مِنْكَ الْمَحَارِمَ وَ انْتَهَكَتْ حُرْمَةَ

लानत करे उस उम्मत पर जिसने ज़ुल्म किया और खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने आप की हतके हुरमत

الْاِسْلَامِ فَنِعْمَ الصَّابِرُ الْمُجَاهِدُ الْمُحَامِيْ النَّاصِرُ وَ الْاَخُ

की और हुरमते इस्लाम को बरबाद किया आप बेहतरीन साबिर, मुजाहिद, हिमायत करनेवाले और मददगार थे

الدَّافِعُ عَنْ اَخِيْهِ الْمُجِيْبُ اِلٰى طَاعَةِ رَبِّهِ الرَّاغِبُ فِيْمَا زَهِدَ فِيْهِ

और बेहतरीन भाई और अपने से दफ़ा करने वाले और अपने रब की इताअत के क़ुबूल करने वाले और रग़बत

غَيْرُهٗ مِنَ الثَّوَابِ الْجَزِيْلِ وَ الثَّنَآءِ الْجَمِيْلِ فَاَلْحَقَكَ اللّٰهُ بِدَرَجَةِ

करने वाले थे उस मे जिसमे आप के अलावा सब रूह गरदानी करते रहे यानी ज़्यादा सवाब और बेहतरीन

آبَآئِكَ فِيْ دَارِ النَّعِيْمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ تَعَرَّضْتُ لِزِيَارَةِ اَوْلِيَآئِكَ رَغْبَةً

तारीफ़ और खुदा आपको आप के आबा के दरजे से जन्नत नईम मे मुलहक़ कर दे। खुदाया मैने अपने को तेरे

فِيْ ثَوَابِكَ وَ رَجَآءً لِمَغْفِرَتِكَ وَ جَزِيْلِ اِحْسَانِكَ فَاَسْاَلُكَ اَنْ

औलिया की ज़ियारत के लिए मोहय्या किया है तेरे सवाब के शौक़ मे और तेरी मग़िफ़रत की उम्मीद के साथ

تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ اَنْ تَجْعَلَ رِزْقِيْ بِهِمْ دَآرًّا وَ

और तेरे ज़्यादा एहसान की उम्मीद के साथ तो मै सवाल करता हूँ के तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व उनकी

عَيْشِيْ بِهِمْ قَارًّا وَ زِيَارَتِيْ بِهِمْ مَقْبُوْلَةً وَ حَيَاتِيْ بِهِمْ طَيِّبَةً وَ

आले पाक पर और उनके ज़रिए मेरे रिज़्क़ मे वुसअत फ़र्मा और उनके ज़रिए मेरी ज़िन्दगी को पाएदार कर

اَدْرِجْنِيْ اِدْرَاجَ الْمُكْرَمِيْنَ وَ اجْعَلْنِيْ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ مِنْ زِيَارَةٍ

और मेरी ज़ियारत को उनकी शिफ़ाअत से क़ुबूल कर और मेरी ज़िन्दगी को उन के ज़रिए पाकीज़ा बना और

مَشَاهِدِ اَحِبَّآئِكَ مُفْلِحًا مُنْجِحًا قَدِ اسْتَوْجَبَ غُفْرَانَ الذُّنُوْبِ

मुझको दर्ज फ़र्मा करामत वालों के दरजे मे और मुझको क़रार दे उनमे से जो पलटते हैं तेरे दोस्तों के मशाहीद

وَ سَتْرَ الْعُيُوْبِ وَ كَشْفَ الْكُرُوْبِ اِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَ اَهْلُ

की ज़ियारत से कामयाब व कामरान और गुनाहों के बख़्शे जाने के मुसतहक़ हो चुके होते हैं और ऐबों के छुपाने

الْمَغْفِرَةِ.

के और ग़मो के दूर करने के मुसतहक़ हो चुके होते हैं बेशक तू तक़वे वाला और मग़िफ़रत वाला है।

उसके बाद जब हज़रत को विदा करना चाहे तो क़ब्रे शरीफ़ के पास जाकर वह कहे जो रिवायते अबू हमज़ा सुमाली में वारिद हुआ है। ओलमा ने इसका ज़िक्र किया है।

اَسْتَوْدِعُكَ اللهَ وَ اَسْتَرْعِيْكَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكَ السَّلَامُ آمَنَّا بِاللهِ

मै आपको अल्लाह को सौंपता हूँ विदा चाहता हूँ और खुदा से आप के लिए तवज्ञए ख़ास चाहता हूँ और आप पर

وَبِرَسُوْلِهٖ وَبِكِتَابِهٖ وَبِمَا جَآءَ بِهٖ مِنْ عِنْدِ اللهِ اَللّٰهُمَّ فَاكْتُبْنَا

सलाम पढ़ता हूँ हम अल्लाह व रसूल पर ईमान लाए और उसकी किताब पर और जो अल्लाह के पास से उनपर नाज़ल

مَعَ الشَّاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِيْ قَبْرَ ابْنِ

हुई। खुदाया हमको लिख दे गवाहों के साथ खुदाया इसको मेरी आख़िरी ज़ियारत न क़रार देना Dापने रसूल के भाई

اَخِيْ رَسُوْلِكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ ارْزُقْنِيْ زِيَارَتَهٗ اَبَدًا مَّا

के फ़रजंद की क़ब्र की (खुदा का दुरूद उनपर और उनकी आल पर) और मुझको उनकी ज़ियारत हमेशा नसीब

اَبْقَيْتَنِيْ وَ احْشُرْنِيْ مَعَهٗ وَ مَعَ آبَائِهٖ فِي الْجِنَانِ عَرِّفْ بَيْنِيْ وَ

करना जब तक तू मुझको बाक़ी रखे और मुझको उनके साथ और उनके आबा के साथ महशूर करना जन्नत मे और

بَيْنَهٗ وَ بَيْنَ رَسُوْلِكَ وَ اَوْلِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ

मेरे और उनके दरमियान और अपने रसूल और वलियों के दरमियान शनासाई रखना। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

مُحَمَّدٍ وَ تَوَفَّنِىْ عَلَى الْاِيْمَانِ بِكَ وَ التَّصْدِيْقِ بِرَسُوْلِكَ وَ الْوِلَايَةِ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको अपने ईमान पर मौत दे और अपने रसूल की तसदीक और अली बिन

لِعَلِيِّ بْنِ اَبِىْ طَالِبٍ وَ الْاَئِمَّةِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ الْبَرَآئَةِ مِنْ

अबी तालिब की विलायत और उनकी औलाद मे आइम्मा (अ) की विलायत पर और उनके दुश्मनो से बराअत

عَدُوِّهِمْ فَاِنِّىْ رَضِيْتُ بِذٰلِكَ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ.

करने पर के मै राज़ी हूँ ऐ परवरदिगार इसी बातसे और खुदाका दुरूद हो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर।

इसके बाद अपने लिए अपने वालेदैन के लिए मोमिनीन व मुस्लेमीन के लिए दुआ करे और जो दुआ चाहे तलब करे।

लेखक का बयान है के रिवायत में इमाम सज्जाद (अ.स.) से मनक़ूल है के आप (अ.स.) ने फ़रमाया: खुदा रहमत करे हज़रत अब्बास (अ.स.) पर के उन्होंने अपने भाई को अपने पर मुक़द्दम रखा और अपनी जान को उनपर क़ुर्बान कर दिया यहाँ तक के उनके दोनो हाथ क़लम हो गए और परवरदिगार ने उसके एवज़ में उन्हें वह बालो पर इनायत कर दिये जिनके ज़रिए आप जाफ़रे तय्यार की तरह फ़रिश्तों के साथ जन्नत में परवाज़ कर रहे हैं। हज़रत अब्बास (अ.स.) के लिए पेशे परवरदिगार वह मंज़लत है जिसकी रोज़े क़यामत तमाम शोहदा आरज़ू करेंगे।

रिवायत यह है के शहादत के समय आपकी उम्र ३४ साल थी और आपकी मादरे गिरामी जनाबे उम्मुल बनीन आपके मातम में और आपके भाईयों के ग़म में मदीने के बाहर बक़ी में जाकर ऐसा गिरया करती थीं के हर गुज़रने वाला दोस्त व दुश्मन बे क़रार हो जाता था। यहाँ तक के मरवान बिन हकम

जैसा व्यक्ति जो बदतरीन दुश्मने ख़ानदाने रिसालत था वह भी इस मंज़र को देख कर बेचैन हो जाता था। आप से हज़रते अब्बास (अ.स.) के मरसिए में यह अशआर भी नक़्ल किये गए हैं:

يَامَنْ رَآىٰ الْعَبَّاسَ كَرَّ عَلَى جَمَاهِيرِ النَّقَدْ

देखा है जिस ने हमलए अब्बासे नामवर

وَوَرَاهُ مِنْ اَبْنَاءِ حَيْدَرَ كُلُّ لَيْثٍ ذِي لَبَدٍ

थे जिस के साथ और भी क़रार के पीसर

اُنْبِئْتُ اَنَّ اَبْنِي اُصِيبَ بِرَاسِهِ مَقْطُوعَ يَدٍ

सुनती हूँ हाथ कटने पे ज़ख़्मी हुआ था सर

وَيْلِي عَلَى شِبْلِي اَمَالَ بِرَاسِهِ ضَرْبُ الْعَمَدِ

यारब गिरा था लाल मेरा कैसा ख़ाक पर

لَوْ كَانَ سَيْفُكَ فِي يَدَيْكَ لَمَا دَنَا مِنْهُ اَحَدٍ

हुई जो तेग़ पास न आता कोई नज़र

لَا تَدْعُوَنِّي وَيْكِ اُمَّ الْبَنِينْ

उम्मुलबनीन कह के पुकारे न अब कोई

تُذَكِّرِينِي بِلُيُوثِ الْعَرِينْ

आता है याद मुझको वो शेराने हैदरी

كَانَتْ بَنُونَ لِيَ اُدْعَىٰ بِهِمْ

जब तक थे मेरे लाल मै उम्मुलबनीन थी

وَالْيَوْمَ اَصْبَحْتُ وَلَا مِنْ بَنِينْ

उजड़ी है ऐसी कोक के अब कुछ नही रही

اَرْبَعَةٌ مِثْلُ نُسُورِ الرُّبَىٰ

वो मेरे चार शेर नीसतान मुरतुजा

قَدْ وَاصَلُوا الْمَوْتَ بِقَطْعِ الْوَتِينْ

सर दे के सो गए जो सरे ख़ाके करबला

تَنَازَعَ الْخِرْصَانُ اَشْلَاءَهُمْ

मैदान मे जो भी आ गया उन सब के रूबरूह

فَكُلُّهُمْ اَمْسَىٰ صَرِيعًا طَعِينْ

वो जंग की जमीन पे बरसने लगा लहू

يَالَيْتَ شِعْرِي اَكَمَا اَخْبَرُوا

ऐ काश कोई आ के मुझे देता ये ख़बर

بِاَنَّ عَبَّاسًا قَطِيعُ الْيَمِينْ

क्या वाक़ेयन था दस्त बोरिदाँ मेरा पीसर।

तिसरा मतलब

ज़ियारते मख़सूसा हज़रत अबी अब्दिल्लाह अल हुसैन (अ.स.)

यह चंद ज़ियारतें हैं।

पहली ज़ियारत

पहली रजब, १५ रजब और १५ शाबान के लिए है। जिसके बारे में इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो व्यक्ति पहली रजब को इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करे परवरदिगार उसे बख़्श देगा।

इब्ने अबी नस्र से मनक़ूल है के मैंने हज़रते इमाम रज़ा (अ.स.) सवाल किया के ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए बेहतरीन समय कौन सा है? तो आप (अ.स.) ने फ़रमाया के १५ रजब और १५ शाबान। शेख़ मूफ़ीद और सय्यद इब्ने ताऊस ने ज़िक्र किया है के यह ज़ियारत रोज़े अव्वले रजब और शबे नीमए शाबान के लिए है। और शहीद ने उस पर शबे अव्वले रजब और शबो रोज़ १५ रजब और शबो रोज़ १५ शाबान का भी इज़ाफा किया है। इसका मतलब यह है के यह ज़ियारत जुमला अवक़ात में पढ़ी जा सकती है: १ रजब के रात और दिन, १५ रजब के रात और दिन और १५ शाबान के रात और दिन। इस ज़ियारत का तरीका यह है के जब इंसान ज़ियारत करना चाहे तो पहले गुस्ल कर के पाकीज़ा लिबास पहने। उसके बाद क़ुब्बए मुतह्हरा के दरवाज़े पर रू ब क़िबला खड़े हो कर रसूले खुदा (स), अमीरूल मोमिनीन (अ.स.), हज़रते फ़ातेमा (अ.स.), इमाम हसनो हुसैन (अ.स.) और बाक़ी आइम्मा (अ.स.) को सलाम करे।

उसके बाद वो इज़्ने दोखूल पढ़े जिसका ज़िक्र ज़ियारते अरफ़ा में आएगा और इसके बाद दाख़ल हो कर ज़रिहे मुक़द्दस के पास खड़े हो कर सौ बार اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे। उसके बाद ज़ियारत शुरू करे।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَاتَمِ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आपपर ऐ फ़रज़ंदे ख़ातमुन नबीईन, सलाम आप पर

النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ऐ फ़रज़ंदे सैय्यदुल मुरसलीन, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे सैय्यदुल वसीईन, सलाम आप पर ऐ अबू

ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ हुसैन बिन अली (अ), सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा सय्यदता

يَا حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ

निसाईल आलमीन, सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और फ़रज़ंदे वलीए खुदा, सलाम आप पर ऐ

الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ وَ ابْنَ وَلِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

अल्लाह के बरगुज़ीदा और उस के बरगुज़ीदा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा ओर उसकी

صَفِيَّ اللهِ وَ ابْنَ صَفِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ ابْنَ حُجَّتِهٖ اَلسَّلَامُ

हुज्जत के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ हबीबे खुदा और उस के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ अल्लाह के

عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ وَ ابْنَ حَبِيْبِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَفِيْرَ اللهِ وَ

सफ़ीर और सफ़ीर के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ किताबे मसतूर के ख़ज़ीनादार, सलाम आप पर

ابْنَ سَفِيْرِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَازِنَ الْكِتَابِ الْمَسْطُوْرِ اَلسَّلَامُ

ऐ तौरेत, इनजील और जबूर के वारिस, सलाम आप पर ऐ रहमान के अमीन, सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ التَّوْرٰةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ الزَّبُوْرِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْنَ

क़ुआर्न के शरीक, सलाम आप पर ऐ दीन के सुतून, सलाम आप पर ऐ आलमीन के परवरदिगार

الرَّحْمٰنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَرِيْكَ الْقُرْاٰنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمُوْدَ

की हिकमत के दरवाजे, सलाम आप पर ऐ दरवाज़ा हित्ता जिस से जो दाख़िल हुआ वो अमन व

الدِّيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَابَ حِكْمَةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आमान मे आ गया, सलाम आप पर ऐ इलमे खुदा के मख़जन, सलाम आप पर ऐ महेले राज़ खुदा,

يَا بَابَ حِطَّةِ الَّذِىْ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ खुदा के इनतेक़ाम और उसके फ़रज़ंद और वितर मौतूर, सलाम आप पर और

عَيْبَةَ عِلْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْضِعَ سِرِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

उन रूहों पर जो आप के हरम मे मदफ़ून है और आप के पास मुक़ीम है। मेरे माँ बाप और मेरी जान

ثَارَ اللّٰهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ وَ الْوِتْرَ الْمَوْتُوْرَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلَى الْاَرْوَاحِ

आप पर क़ुर्बान हों ऐ अबू अब्दुल्लाह आप की मुसीबत अज़ीम है और तकलीफ़ शदीद है आपकी

الَّتِىْ حَلَّتْ بِفِنَآئِكَ وَ اَنَاخَتْ بِرَحْلِكَ بِاَبِىْ اَنْتَ وَ اُمِّىْ وَ نَفْسِىْ يَا اَبَا

वजह से हमारे लिए और तमाम अहले इसलाम के लिए तो खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिस ने

عَبْدِ اللّٰهِ لَقَدْ عَظُمَتِ الْمُصِيْبَةُ وَ جَلَّتِ الرَّزِيَّةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى

ज़ुलमो जौर की बुनियाद रखी आप अहले बैत (अ) पर और खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने

جَمِيْعِ اَهْلِ الْاِسْلَامِ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسَّسَتْ اَسَاسَ الظُّلْمِ وَ

आप को अपने मरतबे व मकाम से रोका और उस मनिज़ल से दूर रखा जिसको खुदा ने आप को

الْجَوْرِ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً دَفَعَتْكُمْ عَنْ مَّقَامِكُمْ

अता किया था। मेरे माँ बाप और जान क़ुर्बान हो आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह। मै गवाही देता हूँ के

وَ اَزَالَتْكُمْ عَنْ مَّرَاتِبِكُمُ الَّتِيْ رَتَّبَكُمُ اللّٰهُ فِيْهَا بِاَبِيْ اَنْتَ وَ اُمِّيْ وَ

आप के ख़ून की वजह से सरावक़े अर्श से मख़लूक़ के अरवाह काँप उठे और आप पर आसमान

نَفْسِيْ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اَشْهَدُ لَقَدِ اقْشَعَرَّتْ لِدِمَآئِكُمْ اَظِلَّةُ الْعَرْشِ

व ज़मीन और जन्नत के रहने वाले खुशकी और दरया के रहने वाले रोए ऐ अल्लाह की तरफ़ बुलाने

مَعَ اَظِلَّةِ الْخَلَآئِقِ وَ بَكَتْكُمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ سُكَّانُ الْجِنَانِ وَ

वाले अगर चे मेरे जिस्म ने आप के इस्तेगासा के वक़्त लबैक नही कही और मेरी ज़ुबान ने आप

الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ لَبَّيْكَ دَاعِيَ اللّٰهِ اِنْ

के तलबे नुस्रत के वक़्त जवाब नही दिया लेकिन मेरे दिल ने कान ने ओर आँख ने लब्बैक कही,

كَانَ لَمْ يُجِبْكَ بَدَنِيْ عِنْدَ اسْتِغَاثَتِكَ وَ لِسَانِيْ عِنْدَ اسْتِنْصَارِكَ

हमारा रब पाक व पाकीज़ा है हमारे रब का वादा पूरा होनेवाला है। मै गवाही देता हूँ के आप पाक व

فَقَدْ اَجَابَكَ قَلْبِيْ وَ سَمْعِيْ وَ بَصَرِيْ سُبْحَانَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا

पाकीज़ा हैं और पाक व पाकीज़ा ख़ानदान से हैं आप पाक हैं और आप की वजह से शहेर पाक हो

لَمَفْعُوْلًا اَشْهَدُ اَنَّكَ طُهْرٌ طَاهِرٌ مُطَهَّرٌ مِنْ طُهْرٍ طَاهِرٍ مُطَهَّرٍ

गए और वो ज़मीन पाक हो गई जिसमे आप थे और आपका हरम पाक है। मै गवाही देता हूँ के आप

طَهُرْتَ وَ طَهُرَتْ بِكَ الْبِلَادُ وَ طَهُرَتْ اَرْضٌ اَنْتَ بِهَا وَ طَهُرَ

ने अदल व इन्साफ़ का हुकूम दिया और उन्हीं की तरफ़ बुलाया और आप सादिक़ और सिद्दीक़ हैं

حَرَمُكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَمَرْتَ بِالْقِسْطِ وَ الْعَدْلِ وَ دَعَوْتَ اِلَيْهِمَا وَ

आपने जिस की तरफ़ दावत दी उस मे सच कहा और आप अल्लाह का इनतेक़ाम हैं ज़मीन मे और

اَنَّكَ صَادِقٌ صِدِّيْقٌ صَدَقْتَ فِيْمَا دَعَوْتَ اِلَيْهِ وَ اَنَّكَ ثَارُ اللّٰهِ فِيْ

मै गवाही देता हूँ के आप ने खुदा की तरफ़ से ओर अपने जद रसूले खुदा की तरफ़ से और अपने

الْاَرْضِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ عَنِ اللّٰهِ وَ عَنْ جَدِّكَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ

बाप अमीरूल मोमिनीन (अ) और अपने भाई हसन (अ) की तरफ़ से पैग़ाम पहुँचा दिया और आप

عَنْ اَبِيْكَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ عَنْ اَخِيْكَ الْحَسَنِ وَ نَصَحْتَ وَ

ने नसीहत की और राहे खुदा मे जिहाद किया और उसकी इबादत की खुलूस के साथ यहाँ तक

جَاهَدْتَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ عَبَدْتَهٗ مُخْلِصًا حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ فَجَزَاكَ

के आप को मौत आ गई तो खुदा आप को साबेक़ीन की बेहतरीन जज़ा दे और अल्लाह का दुरूद

اللّٰهُ خَيْرَ جَزَآءِ السَّابِقِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا اَللّٰهُمَّ

हो आप पर और सलाम हो जो सलाम का हक़ है। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ صَلِّ عَلَى الْحُسَيْنِ الْمَظْلُوْمِ الشَّهِيْدِ

मोहम्मद पर और दुरूद हो हुसैने मज़लूम पर जो शहीद रशीद, आँसुओं के मक़तूलों और मुसीबतों

الرَّشِيْدِ قَتِيْلِ الْعَبَرَاتِ وَ اَسِيْرِ الْكُرُبَاتِ صَلٰوةً نَامِيَةً زَاكِيَةً

के असीर हैं। मुसलसल दुरूद और पाक व मुतबर्रिक दुरूद हो के उसका आग़ाज़ आसमान पर

مُّبَارَكَةً يَصْعَدُ اَوَّلُهَا وَلَا يَنْفَدُ اٰخِرُهَا اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ

बुलंद हो और उसका आाख़िर ख़त्म न होता हो। वो बेहतरीन दुरूद जो तूने भेजा है अपने मुरसल

مِّنْ اَوْلَادِ اَنْبِيَآئِكَ الْمُرْسَلِيْنَ يَا اِلٰهَ الْعٰلَمِيْنَ.

नबियों की औलाद मे से किसी एक पर। ऐ आलमीन के माबुद।

इसके बाद क़ब्रे मुतह्हर को बोसा देकर अपने दाहने रूख़सार को क़ब्र पर रखे फिर बाएं रूख़सार को रखे। फिर क़ब्र के गिर्द तवाफ़ कर के चारों गोशों को बोसा दें। और बक़ौले शेख़ मुफ़ीद (र) क़ब्रे हज़रत अली अकबर (अ) की तरफ़ जाए और वहाँ खड़े हो कर यूं कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ الطَّيِّبُ الزَّكِيُّ الْحَبِيْبُ الْمُقَرَّبُ وَ

सलाम हो आप पर ऐ सिद्दीक़ पाकीज़ा मुतह्हर दोस्त, मुक़र्रबे खुदा और फ़रज़ंदे फ़ातेमा, गुले रसूले खुदा।

ابْنَ رَيْحَانَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنْ شَهِيْدٍ مُّحْتَسِبٍ وَ رَحْمَةُ

सलाम आपपर और अल्लाह की रहमत व बरकात ऐ शहीदे आजमूदए राहे खुदा, आपका मकाम कितना

اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ مَا اَكْرَمَ مَقَامَكَ وَاَشْرَفَ مُنْقَلَبَكَ اَشْهَدُ لَقَدْ شَكَرَ

मुकर्रम है और आप की जगह कितनी शरफ़ वाली है। मै गवाही देता हूँ के खुदाने आप की कोशिश को क़ुबूल

اللهُ سَعْيَكَ وَ اَجْزَلَ ثَوَابَكَ وَ اَلْحَقَكَ بِالدَّرَجَةِ الْعَالِيَةِ حَيْثُ

कर लिया और आप के सवाब को ज़्यादा किया और आप को मुलहक़ किया बुलंदतरीन नुकतए कमाल से

الشَّرَفُ كُلُّ الشَّرَفِ وَ فِي الْغُرَفِ السَّامِيَةِ كَمَا مَنَّ عَلَيْكَ مِنْ

और शराफ़त के तमाम तर मक़ामात तक पहुँचा दिया और बुलंद तरीन क़सरों मे पहुँचा दिया जैसा के उसने

قَبْلُ وَ جَعَلَكَ مِنْ اَهْلِ الْبَيْتِ الَّذِيْنَ اَذْهَبَ اللهُ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ

इसके क़ब्ल भी आप पर एहसान किया और आप को उन अहलेबैत मे से क़रार दिया जिन से खुदा ने रिज्स को

طَهَّرَهُمْ تَطْهِيْرًا صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ وَرِضْوَانُهٗ

दूर रखा है और ऐसा पाक व पाकीज़ा रखा है जो हक़ है। अल्लाह का दुरूद हो आप पर और अल्लाह की रहमत

فَاشْفَعْ اَيُّهَا السَّيِّدُ الطَّاهِرُ اِلٰى رَبِّكَ فِيْ حَطِّ الْاَثْقَالِ عَنْ ظَهْرِيْ وَ

व बरकात हो और उसकी रजा मंदी हो तो आप शिफ़ाअत करें, ऐ सरदार पाकीज़ा अपने रब की तरफ़ मेरी

تَخْفِيْفِهَا عَنِّيْ وَ ارْحَمْ ذُلِّيْ وَ خُضُوْعِيْ لَكَ وَ لِلسَّيِّدِ اَبِيْكَ صَلَّى اللهُ

पुश्त से बोझ के उतारने मे और उसकी मुझ से तख़फ़ा०rफ करने मे और मेरी ज़िल्लत और तवाज़ो पर रहेम

عَلَيْكُمَا.

करें जो आप की बारगाह मे और आप के पिदरे बुज़ुर्गवार की बारगाह मे है अल्लाह का दुरूद हो दोना पर।

इसके बाद क़ब्र से लिपट जाए और यूँ कहे:

زَادَ اللّٰهُ فِیْ شَرَفِكُمْ فِی الْاٰخِرَةِ كَمَا شَرَّفَكُمْ فِی الدُّنْیَا وَ اَسْعَدَكُمْ

अल्लाह आप के शरफ़ को आख़िरत मे ज़्यादा करे जैसा के उसने आपको दुनिया मे शरफ़ दिया है और

كَمَآ اَسْعَدَبِكُمْ وَ اَشْهَدُ اَنَّكُمْ اَعْلَامُ الدِّیْنِ وَ نُجُوْمُ الْعَالَمِیْنَ وَ

आपको नेक बख़्त करे जैसा के आपकी वज्ह से मख़लूक़ को नेक बख़्त किया है। मै गवाही देता हूँ के आप

السَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

दीन के परचमदार और आलमीन के सितारे हैं और सलाम हो आपपर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

इसके बाद शोहदा का रूख़ कर के कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ یَا اَنْصَارَ اللّٰهِ وَ اَنْصَارَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْصَارَ عَلِیِّ بْنِ اَبِیْ

सलाम आप पर ऐ खुदा के नासिर और रसूले खुदा के नासिरों और अली बिन अबी तालिब के नासिरों

طَالِبٍ وَ اَنْصَارَ فَاطِمَةَ وَ اَنْصَارَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَیْنِ وَ اَنْصَارَ

और फ़ातेमा ज़ेहरा के नासिरों और हसन व हुसैन (अ) के नासिरों और इस्लाम के नासिरों। मै गवाही

الْاِسْلَامِ اَشْهَدُ اَنَّكُمْ لَقَدْ نَصَحْتُمْ لِلّٰهِ وَ جَاهَدْتُمْ فِیْ سَبِیْلِهٖ

देता हूँ के आप सब ने अल्लाह के लिए नसीहत की और जिहाद किया राहे खुदा मे तो खुदा आप को

فَجَزَاكُمُ اللّٰهُ عَنِ الْاِسْلَامِ وَ اَهْلِهٖ اَفْضَلَ الْجَزَآءِ فُزْتُمْ وَ اللّٰهِ فَوْزًا

जज़ा दे इस्लाम और अहले इस्लाम की तरफ़ से बेहतरीन जज़ा। आप बखुदा कामयाब हुए अज़ीम

عَظِيْمًا يَا لَيْتَنِىْ كُنْتُ مَعَكُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا اَشْهَدُ اَنَّكُمْ اَحْيَآءٌ

काम-याबी के साथ काश मै आप के साथ होता तो अज़ीम कामयाबी हासिल कर लेता। मै गवाही देता

عِنْدَ رَبِّكُمْ تُرْزَقُوْنَ اَشْهَدُ اَنَّكُمُ الشُّهَدَآءُ وَ السُّعَدَآءُ وَ اَنَّكُمُ

हूँ के आप ज़िन्दा हैं, अपने रब की तरफ़ से रिज़्क़ पाते हैं। मै गवाही देता हूँ के आप शहीद और नेक

الْفَآئِزُوْنَ فِىْ دَرَجَاتِ الْعُلٰى وَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

बख़्त हैं और कामयाब हैं बुलंद दरजात मे और सलाम और रहमते खुदा ओर बरकत हो आप पर।

इसके बाद पलट कर सरे मुबारक की तरफ़ आए और दो रकत नमाज़ अदा करे और अपने लिए और अपने वालेदैन के लिए और दीनी भाईयों के लिए दुआ करे। वाज़ेह रहे के सय्यद इब्ने ताऊस ने हज़रत अली अकबर (अ) और शोहदा की एक ज़ियारत और भी नक़्ल की है जिसमे सबके नाम भी हैं लेकिन इख़्तेसार की बिना पर और ज़ियारत के मशहूर होने की बिना पर मैंने यहाँ ज़िक्र नहीं किया।

१५ रजब की ज़ियारत

इस ज़ियारत के अलावा जो अभी बयान हुई है एक ज़ियारत और भी है जिसे शेख़ मुफ़ीद ने मज़ार में भी नक़्ल किया है और वह १५ रजब की मख़सूस ज़ियारतों में है। याद रहे के १५ रजब को ़गोफैला भी कहा जाता है के आम लोग इसकी फ़ज़ीलत से ग़ाफ़िल हैं। लेहाज़ा उस दिन हज़रत की ज़ियारत का क़स्द कर के सहने मुबारक में आकर हरम में दाख़िल हों। और तीन बार कहे: اَللّٰهُ اَكْبَرُ फिर पाक क़ब्र के पास खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اٰلَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا صَفْوَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ आले खुदा, सलाम आप पर ऐ बरगुज़ीदा खुदा, सलाम आप पर ऐ अल्लाह

عَلَيْكُمْ يَا خِيَرَةَ اللهِ مِنْ خَلْقِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا سَادَةَ السَّادَاتِ

की बेहतरीन मख़लूक़ सलाम आप पर ऐ सादातों के पेशवा सलाम आप पर ऐ जंगल के शेरों

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا لُيُوْثَ الْغَابَاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا سُفُنَ

सलाम आप पर ऐ नजात की कश्तीयों, सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह हुसैन (अ), सलाम

النَّجَاةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ इल्मे अंबिया के वारिस और अल्लाह की रहमत व बरकात हो, सलाम आप पर ऐ

وَارِثَ عِلْمِ الْاَنْبِيَآءِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

आदम सफ़ीअल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ नुह नबीए खुदा के वारिस, सलाम आप पर ऐ

اٰدَمَ صَفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ

इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ इस्माईल ज़बीह अल्लाह के वारिस, सलाम

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

आप पर ऐ मूसा कलीमुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ ईसा रूहुल्लह के वारिस, सलाम आप

اِسْمٰعِيْلَ ذَبِيْحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللهِ

पर ऐ मोहम्मद हबीब अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद मुसतफ़ा के फ़रज़ंद सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى رُوْحِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

आपपर ऐ अली मुरतुज़ा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ फ़ातेमा ज़हरा (स) के फ़रज़ंद, सलाम

مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ مُحَمَّدِ الْمُصْطَفٰى اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ ख़दीजतुल कुबरा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ शहीद व फ़रज़ंदे शहीद, सलाम आप

عَلَيْكَ يَا ابْنَ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ

पर ऐ मक़तूल राहे खुदा व फ़रज़ंदे मक़तूले राहे खुदा, सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और वलीए

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَدِيْجَةَ الْكُبْرٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَهِيْدَ

खुदा के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा और हुज्जते खुदा के फ़रज़ंद उसकी मख़लूक़ पर।

ابْنَ الشَّهِيْدِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَتِيْلَ ابْنَ الْقَتِيْلِ السَّلَامُ عَلَيْكَ

मै गवाही देता हूँ के आपने नमाज़ क़ाएम की ओर ज़कात अदा की और नेकी का हुकुम दिया

يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ وَلِيِّهٖ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ وَ ابْنَ حُجَّتِهٖ عَلٰى

और बुराईसे रोका और ग़मज़दा हुए अपने वालदैन की मुसीबत मे और अपने दुश्मन से जेहाद

خَلْقِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

किया। और मै गवाही देता हूँ के आप मेरा कलाम सुनते हैं और जवाब देते हैं और आप हबीबे

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ رُزِئْتَ بِوَالِدَيْكَ وَ جَاهَدْتَ

खुदा हैं और उस के ख़लील नजीब और बरगुज़ीदा और फ़रज़ंदे बरगुज़ीदा हैं। ऐ मेरे मौला और

عَدُوَّكَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ تَسْمَعُ الْكَلَامَ وَ تَرُدُّ الْجَوَابَ وَ اَنَّكَ حَبِيْبُ

फ़रज़ंदे मौला मैने आप की ज़ियारत की है शाक़ के साथ तो आप मेरे लिए शिफ़ाअत करनेवाले

اللّٰهِ وَ خَلِيْلُهٗ وَ نَجِيْبُهٗ وَ صَفِيُّهٗ وَ ابْنُ صَفِيِّهٖ يَا مَوْلَايَ وَ ابْنَ مَوْلَايَ

हो जाईए अल्लाह की तरफ़ ऐ मेरे सरदार मै शिफ़ाअत चाहता हूँ आप के जद सय्यदुल अंबिया के

زُرْتُكَ مُشْتَاقًا فَكُنْ لِّيْ شَفِيْعًا اِلَى اللّٰهِ يَا سَيِّدِيْ وَ اَسْتَشْفِعُ اِلَى

ज़रिए और आप के वालिद सय्यदुल औसिया के ज़रिए ओर आप की वालेदा फ़ातेमा सय्यदुन

اللّٰهِ بِجَدِّكَ سَيِّدِ النَّبِيِّيْنَ وَ بِاَبِيْكَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ بِاُمِّكَ فَاطِمَةَ

निसाईल आलमीन के ज़रिए खुदा की लानत हो आप के क़ातिलों पर। खुदा की लानत हो आप

سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلَا لَعَنَ اللّٰهُ قَاتِلِيْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ ظَالِمِيْكَ وَ

के ज़ालिमों पर। खुदा की लानत हो आप का हक़ ले जानेवालों और छुपनेवालों पर अव्वलीन व

لَعَنَ اللّٰهُ سَالِبِيْكَ وَ مُبْغِضِيْكَ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ

आख़िरीन मे से और अल्लाह का दुरूद हो हमारे सरदार मोहम्मद पर और उनकी पाक व पाकीज़ा

عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ.

आल पर।

उसके बाद क़ब्र को बोसा दे और क़ब्रे अली अकबर (अ) का रूख़ करे और यूँ ज़ियारत करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ وَ ابْنَ مَوْلَايَ لَعَنَ اللّٰهُ قَاتِلِيْكَ وَ لَعَنَ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ओर मेरे मौला के फ़रज़ंद। अल्लाह की लानत हो आप के क़ातिलों

اللّٰهُ ظَالِمِيْكَ اِنِّيْ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ بِزِيَارَتِكُمْ وَ مُحَبَّتِكُمْ وَ اَبْرَءُ اِلَى

पर। अल्लाह की लानत हो आप पर ज़ुल्म करने वालों पर। मै आपकी ज़ियारत और मोहब्बत के

اللّٰهِ مِنْ اَعْدَآئِكُمْ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ

ज़रिए अल्लाह की बारगाह से क़ुरबत तलाश करता हूँ और आप के दुश्मनो से अल्लाहकी जानिब

بَرَكَاتُهٗ.

बरी होता हूँ और सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला व अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद क़ब्रे शोहदा का रूख़ करे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَرْوَاحِ الْمُنِيْخَةِ بِقَبْرِ اَبِيْ عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ

सलाम हो उन रूहों पार जो क़ब्रे अबू अब्दुल्लाह इमामे हुसैन (अ) के पास मुक़ीम हैं। सलाम हो

السَّلَامُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا طَاهِرِيْنَ مِنَ الدَّنَسِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

आप पर ऐ आलूदगियों से पाको पाकीज़ा। सलाम आप पर ऐ हिदायत याफ़ता अफ़राद सलाम

يَا مَهْدِيُّوْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَبْرَارَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَ عَلَى

आप पर ऐ खुदा के नेक बन्दों, सलाम आप पर और तमाम मलाएका पर जो आपकी क़ब्रों को

الْمَلَآئِكَةِ الْحَافِّيْنَ بِقُبُوْرِكُمْ اَجْمَعِيْنَ جَمَعَنَا اللهُ وَ اِيَّاكُمْ فِيْ

घेरे हैं। खुदा हम को और आप को ख़ास तौर पर जमा करे अपनी रहमत के मकाम मे व अपने

مُسْتَقَرِّ رَحْمَتِهٖ وَ تَحْتَ عَرْشِهٖ اِنَّهٗ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ

अर्शके नीचे वो सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाला है और सलाम हो आपपर और अल्लाह की रहमत

وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

व बरकात हो।

इसके बाद हरमे हज़रते अब्बास (अ) का रूख़ करे और वहाँ दरे क़ुब्बा पर खड़े हो कर कहे जो आख़िर ज़ियारत तक जो पहले गुज़र चुकी है।

तिसरी ज़ियारत - १५ शाबान की ज़ियारत

जिसकी फ़ज़ीलत में बेशुमार हदीसें वारिद हुई हैं और इसके लिए इतना ही काफ़ी है के मुख़तलिफ़ असनाद से इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) और इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत है के जो व्यक्ति एक लाख चौबीस हज़ार पैग़ंबरों से मुसाफेहा करना चाहे वह नीमे शाबान में इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे के उस दिन तमाम अरवाहे अंबिया व मुरसलीन मालिक से इजाज़त लेकर आपकी ज़ियारत के लिए आती हैं और क्या कहना उसका जो उन हज़रात से मुसाफ़ेहा करे और वह उस से मुसाफ़ेहा करें। और उनके साथ पाँच पैग़ंबराने ऊलुल अज़्म नूह व इब्राहीम व मूसा व ईसा और हज़रते मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स) भी हैं।

रावी ने पूछा के यह पाँच उलुल अज़्म कैसे हो गए? फ़रमाया के यह मशरिक़ो मग़रिब सबकी तरफ़ नबी बनाए गए थे।

इस ज़ियारत के अलफ़ाज़ दो तरीक़े के नक़्ल हुए हैं। एक वही ज़ियारत है जो पहली रजब में नक़्ल की गई है।

दूसरी वह ज़ियारत है जो शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन में इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल की है के क़ब्र के पास खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ

हम्द खुदा के लिए जो बुलंद मर्तबा व अज़ीम है और सलाम हो आप पर ऐ सालेह व पाकीज़ा बन्दे अपनी गवाही

الزَّكِيُّ اُوْدِعُكَ شَهَادَةً مِّنِّيْ لَكَ تُقَرِّبُنِيْ اِلَيْكَ فِيْ يَوْمِ شَفَاعَتِكَ

को आपके लिए व आपकी ख़िदमत मे देता हूँ जो मुझको आपसे क़रीब करेगी आपकी शिफ़ाअत के राज़। गवाही

اَشْهَدُ اَنَّكَ قُتِلْتَ وَلَمْ تَمُتْ بَلْ بِرَجَآءِ حَيٰوتِكَ حَيِّيَتْ قُلُوْبُ

देता हूँ के आपको क़त्ल किया गया व आपको मौत नही आई बलके आपकी ज़िन्दगी की उम्मीद मे आपके शियों

شِيْعَتِكَ وَبِضِيَآءِ نُوْرِكَ اهْتَدَى الطَّالِبُوْنَ اِلَيْكَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

के दिल ज़िन्दा हैं व आपके नूरे हम्दे खुदा के लिए है जो बुलंद मरतबह व अज़ीम है व सलाम हो आपपर ऐ सालेह

نُوْرُ اللّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يُطْفَاُ وَلَا يُطْفَاُ اَبَدًا وَ اَنَّكَ وَجْهُ اللّٰهِ الَّذِيْ لَمْ

व पाकीज़ा बन्दे मै अपनी गवाही को आप के लिए व आप की ख़िदमत मे वदीअत करता हूँ जो मुझको आप से

يَهْلِكَ وَ لَا يُهْلَكُ اَبَدًا وَ اَشْهَدُ اَنَّ هٰذِهِ التُّرْبَةَ تُرْبَتُكَ وَ هٰذَا

क़रीब करेगी आप की शिफ़ाअत के रोज़। मै गवाही देता हूँ के आप खुदा का वो नूर हैं जो बुझता नही व कभी न

الْحَرَمَ حَرَمُكَ وَ هٰذَا الْمَصْرَعَ مَصْرَعُ بَدَنِكَ لَا ذَلِيْلَ وَ اللّٰهُ

बुझेगा आप खुदाका वो चेहरा हैं जो कभी नाबूद नही हुआ न कभी होगा मै गवाही देता हूँ के ये तुरबते पाक आपकी

مُعِزٌّكَ وَ لَا مَغْلُوْبَ وَ اللّٰهُ نَاصِرُكَ هٰذِهٖ شَهَادَةٌ لِیْ عِنْدَكَ اِلٰی

तुरबत है व ये हरम आपका हरम है व ये जगह आपके जिस्मे मुबारक की जगह है खुदा की क़सम आपका अज़ीज़

یَوْمِ قَبْضِ رُوْحِیْ بِحَضْرَتِكَ وَ السَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ

कभी ज़लील नही होता और बखुदा आप का मददगार कभी मग़लूब नही होता ये मेरी गवाही है आप के पास क़ब्ज़े

بَرَكَاتُهٗ.

रूह तक आप की बारगाह मे और सलाम हो आप पर और अल्लाह की रहमत और बरकात हो।

चौथी ज़ियारत - शबहाए क़द्र की ज़ियारत

वाज़ेह रहे के इमाम हुसैन (अ) कि ज़ियारत की फज़ीलत माहे रमज़ान में बिलखुसूस पहली शब, १५ रमज़ान, आाख़िर रमज़ान और बिलखुसूस शबे क़द्र में बहुत ज़्यादा है और इसके बारे में अहादीस बहुत ज़्यादा हैं।

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति २३वीं शब में इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे जिसके बारे में उम्मीदे क़वी है के उसी रात में सारे उमूर का फ़ैसला होता है। तो गोया उस से चौबीस हज़ार मलाएका और अंबिया की रूह ने मुसाफ़ेहा किया जो मालिक से इजाज़त लेकर उस रात में हज़रत की ज़ियारत के लिए आते हैं।

दूसरी मोतबर हदीस में इमाम सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के जब शबे क़द्र होती है तो सातवें आसमान से, फ़िæजाए अर्ष से एक मुनादी आवाज़ देता है: के परवरदिगार ने तमाम ज़ाएरीन क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) को बख़्श दिया है। रिवायत में है के जो व्यक्ति शबे क़द्र में हज़रत की क़ब्र के पास रहे और दो रकत नमाज़ अदा करे और जिस क़द्र मुम्किन हो परवरदिगार से सवाल करे बेहिश्त के हासिल होने और जहन्नम से बचने के लिए तो परवरदिगार उसके सवाल को पूरा कर देता है और उसे जहन्नम से नजात दे देता है।

इब्ने क़ूलूवय ने इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत की है के जो व्यक्ति माहे

रमज़ान में इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे और राहे ज़ियारत में मर जाए तो उसके वास्ते कोई हिसाब नहीं है और उस से कहा जाएगा के बिला ख़ौफ़ जन्नत में दाख़ल हो जा। शबे क़द्र में हज़रत की ज़ियारत के लिए शेख़ मुफ़ीद, शेख़ तूसी, मोहम्मद बिन मश्हदी, इब्ने ताऊस और शहीद वग़ैरह ने कुतुबे मज़ार में यूँ नक़्ल किया है के:

यह ज़ियारत उस रात के लिए और रोज़े इदुल फ़ित्र और ईदे अ॰ज्हा के लिए मख़सूस है और शेख़ मोहम्मद बिन मशहदी ने इसको अपने मोतबर असनाद के साथ इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत किया है। और कहा है के हज़रत ने फ़रमाया के जब इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करना चाहो वहाँ गुस्ल कर के पाकीज़ा लिबास पहन कर जाओ और हरम के दरवाज़े पर क़ब्र के पास खड़े हो कर हज़रत की तरफ़ रूख़ कर के क़िबले को पुश्त क़रार दे कर यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْ لِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ

सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आपपर ऐ फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन (अ) आप पर ऐ फ़रज़ंदे

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ الصِّدِّيْقَةِ الطَّاهِرَةِ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ

सिद्दीक़ए ताहेरा फ़ातेमा ज़हरा (स) आलमीन की औरतों की सरदार। सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू

نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ وَ رَحْمَةُ اللهِ

अब्दुल्लाह और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मै गवाही देता हूँ के आप ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा

وَ بَرَكَاتُهٗ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

की और नेकी का हुकुम दिया और बुराई से रोका और किताब की तिलावत की जो हक़े तिलावत था और राहे

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تَلَوْتَ الْكِتَابَ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ وَ

खुदा मे जेहाद किया जो हक़े जेहाद था और आप ने सब्र किया तकला०rफा पर राहे खुदा मे मुख़लिस रहते हुए यहाँ

جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ وَ صَبَرْتَ عَلَى الْاَذٰى فِيْ جَنْۢبِهٖ مُحْتَسِبًا

तक के आप को मौत आ गई। मै गवाही देता हूँ के जिन लोगों ने आपकी मुख़ालेफ़त की और आप से जंग की

حَتّٰٓى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ اَشْهَدُ اَنَّ الَّذِيْنَ خَالَفُوْكَ وَ حَارَبُوْكَ وَ الَّذِيْنَ

और आप को छोड़ा और आप को क़त्ल किया वो मलऊन हैं। नबीए उम्मी की ज़ुबान पर। और जिस ने इफ़्तेरा

خَذَلُوْكَ وَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْكَ مَلْعُوْنُوْنَ عَلٰى لِسَانِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ قَدْ

किया वो ना काम हुआ। अल्लाह की लानत हो आप के ज़ुल्म करनेवालों पर अव्वलीन व आख़िरीन मे से और उन

خَابَ مَنِ افْتَرٰى لَعَنَ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ لَكُمْ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ

पर खुदा इज़ाफ़ा करे दर्दनाक अज़ाब मे मै आप के पास ऐ मौला फ़रज़ंदे रसूले खुदा ज़ाएर आया हूँ आप के हक़ को

وَ ضَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ اَتَيْتُكَ يَا مَوْلَايَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ

पहचानते हुए आप वे दोस्तो को दोस्त और आप के दुश्मनो को दुश्मन रहते हुए इस हिदायत का बसीर व मोतिक़द

اللّٰهِ زَائِرًا عَارِفًا بِحَقِّكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكَ مُعَادِيًا لِّاَعْدَآئِكَ

हूँ जिस पर आप हैं जिसने आपकी मुख़ालिफ़त की उसकी गुम्राहीको पहचानते हुए तो आप मेरी शिफ़ाअत कीजिए

مُسْتَبْصِرًا بِالْهُدٰى الَّذِيْ اَنْتَ عَلَيْهِ عَارِفًا بِضَلَالَةِ مَنْ خَالَفَكَ

अपने रब के पास। सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा उसकी ज़मीन व आसमान मे अल्लाह का दुरूद हो आपकी

فَاشْفَعْ لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ.

पाकीज़ा रूह और पाकीज़ा जिस्म पर और आप पर सलाम हो ऐ मेरे मौला और अल्लाह की रहमत व बरकात हों।

इसके बाद क़ब्रे अत्हर से लिपट जाए और अपने रूख़सार को क़ब्र पर रख दे और फिर बालाए सर जाकर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَ سَمَآئِهٖ صَلَّى اللهُ عَلٰى رُوْحِكَ

सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा उसकी ज़मीन व आसमान मे अल्लाह का दुरूद हो आपकी पाकीज़ा

الطَّيِّبِ وَ جَسَدِكَ الطَّاهِرِ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا مَوْلَايَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ

रूह और पाकीज़ा जिस्म पर और आप पर सलाम हो ऐ मेरे मौला और अल्लाह की रहमत व

بَرَكَاتُهٗ.

बरकात हों।

फिर अपने आप को क़ब्र पर गिरा दे फिर बालाए सर जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे। इसके बाद जितनी हो सके नमाज़ पढ़े। फिर जनाबे अली अकबर की ज़ियारत करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ وَ ابْنَ مَوْلَايَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ لَعَنَ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला और मेरे मौला के फ़रज़ंद और अल्लाह की रहमत व बरकात हों खुदा

اللهُ مَنْ ظَلَمَكَ وَ لَعَنَ اللهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ ضَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ

लानत करे उस पर जिस ने आप पर ज़ुल्म किया और खुदा लानत करे उस पर जिस ने आप को

الْاَلِيْمَ.

क़त्ल किया और उन पर दर्दनाक अज़ाब मे इज़ाफ़ा करे।

इसके बाद जितना मुम्किन हो दुआ करे। फिर पांयती की तरफ़ आगे बढ़ कर ज़ियारते शोहदाए करबला करे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُوْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَيُّهَا الشُّهَدَآءُ

सलाम आप लोगों पर ऐ सच्चों। सलाम आप लोगों पर ऐ शहीद होनेवालों और सब्र करने वालों।

الصَّابِرُوْنَ اَشْهَدُ اَنَّكُمْ جَاهَدْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ صَبَرْتُمْ عَلَى

मै गवाही देता हूँ के आप लोगोंने राहे खुदा मे जिहाद किया और राहे खुदा मे मुसीबतों पर सब्र

الْاَذٰى فِيْ جَنْبِ اللّٰهِ وَ نَصَحْتُمْ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ حَتّٰى اَتٰيكُمُ الْيَقِيْنُ

किया और अल्लाह व रसूल की राह मे नसीहत की यहाँ तक़ के मौत आ गई। मै गवाही देता हूँ के

اَشْهَدُ اَنَّكُمْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّكُمْ تُرْزَقُوْنَ فَجَزَاكُمُ اللّٰهُ عَنِ الْاِسْلَامِ

आप लोगा ज़िन्दा हैं अपने परवरदिगार के पास से रिज़्क़ पाते हैं तो खुदा आप को इसलाम और

وَ اَهْلِهٖ اَفْضَلَ جَزَآءِ الْمُحْسِنِيْنَ و جَمَعَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ فِيْ مَحَلِّ

अहले इसलाम की तरफ़ से जज़ा दे नेकी करने वालों की बेहतरीन जज़ा और हम को और आप

النَّعِيْمِ.

को नेमत के मकान पर जमा कर दे।

इसके बाद हज़रते अब्बास (अ) की ज़ियारत के लिए जाएं और आपकी क़ब्र के पास खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ السَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे अमीरूल मोमेनीन, सलाम आप पर ऐ वो बन्दए नेक और अल्लाह

الصَّالِحُ الْمُطِيْعُ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ جَاهَدْتَ وَ نَصَحْتَ وَ

व रसूल के मुतीअ। मै गवाही देता हूँ के आप ने जिहाद किया और नसिहत की और सब्र किया

صَبَرْتَ حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ فَلَعَنَ اللّٰهُ الظَّالِمِيْنَ لَكُمْ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ

यहाँ तक के आप को मौत आ गई। खुदा लानत करे आप पर ज़ुल्म करने वालों पर अव्वलीन व

وَ الْاٰخِرِيْنَ وَ اَلْحَقَهُمْ بِدَرَكِ الْجَحِيْمِ.

आख़िरीन से और उनको जहन्नम के बदतरीन तबक़े मे दाख़ल करे।

उसके बाद जितना मुम्किन हो नमाज़ अदा करे।

पाँचवीं ज़ियारत - इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत ईदे फ़ित्र और ईदे क़ुरबान के दिन

इमाम सादिक़ (अ) से रिवायते मोतबर में नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति भी इन तीन रातों में इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे उसके तमाम गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। शबे ईदे फ़ित्र, शबे ईदे अज़हा और शबे १५ शाबान।
दूसरी रिवायत में इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ) से नक़्ल किया गया है के तीन रातें हैं जिनमें इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करने वाले के तमाम गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। शबे नीमए शाबान।

शबे तेईस रमज़ान और शबे ईदुल फ़ित्र - इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत शबे नीमए शाबान, शबे ईदे फ़ित्र और शबे अरफ़ा एक ही साल में करेगा परवरदिगार उसके लिए हज़ार मक़बूल हज और हज़ार मक़बूल उमरा लिख देता है और दुनिया व आख़िरत की हज़ार हाजतें पूरी कर देता है।

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति शबे अरफ़ा करबला में रहे और वहाँ रहकर रोज़े ईद इमामे मज़लूम की ज़ियारत करे। वह जब पलटेगा तो परवरदिगार उसको साल भर के शर से महफ़ूज़ रखेगा।

वाज़ेह रहे के उलमा ने इन दोनो ईदों के लिए दो ज़ियारतें नक़्ल की हैं। एक वही साबिक़ा ज़ियारत है जिसका ज़िक्र शबे क़द्र में हो चुका है और दूसरी यह ज़ियारत है जिसके बारे में ओलमा के बयानात से अंदाज़ा होता है के साबेक़ा ज़ियारत रोज़े ईदैन की थी और यह ज़ियारत शबे ईदैन की है।

बहर हाल जो भी हज़रत इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारतका इरादा करे इन दो रातों में पहले क़ुब्बए मुतहहर के दरवाज़े पर खड़े हो कर क़ब्र पर निगाह डाले और फिर बतौर इजाज़त तलबी कहे:

ऐ मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह, ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा आप का ग़ुलाम और आप की कनीज़

يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ عَبْدُكَ وَ ابْنُ اَمَتِكَ

का बेटा आप के सामने ज़लील और आप की बुलंद मरतबे के सामने छोटा आप के हक़ का

الذَّلِيْلُ بَيْنَ يَدَيْكَ وَ الْمُصَغَّرُ فِيْ عُلُوِّ قَدْرِكَ وَ الْمُعْتَرِفُ بِحَقِّكَ

एतेराफ़ करनेवाला आपके पास आया है आप की पनाह तलब करते हुए आप के हरम का

جَآئَكَ مُسْتَجِيْرًا بِكَ قَاصِدًا اِلٰى حَرَمِكَ مُتَوَجِّهًا اِلٰى مَقَامِكَ

क़सद किए हुए आप के मकाम की तरफ़ रूख़ किए हुए। आप को अल्लाह की तरफ़ वसीला

مُتَوَسِّلًا اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِكَ اَاَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ؟ اَاَدْخُلُ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ؟ اَ

बनाए हुए। क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला। क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ खुदा के वली।

اَدْخُلُ يَا مَلَآئِكَةَ اللّٰهِ الْمُحْدِقِيْنَ بِهٰذَا الْحَرَمِ الْمُقِيْمِيْنَ فِيْ هٰذَا

क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अल्लाह के मलाएका जो इस हरम के गिर्द हलका बनाए हों और इस

الْمَشْهَدِ.

रौज़े मे मुक़ीम हां।

उसके बाद अगर दिल नर्म हो जाए और आँखों में आँसू आ जाएं तो दाहिने क़दम को आगे बढ़ाते हुए दाख़िल हो जाए और कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْنِيْ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह की ज़ात से और राहे खुदा मे और मिल्लते रसूले खुदा पर, खुदाया

مُنْزَلًا مُّبَارَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ.

मुझको मुतबर्रिक मकाम मे उतार, तू बेहतरीन नाज़ल करनेवाला है।

फिर कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّ سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا وَّ

अल्लाह बड़ा है बहुत बड़ा है और हम्दे कसीर है खुदा के लिए और मै खुदा की तसबीह करता

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْفَرْدِ الصَّمَدِ الْمَاجِدِ الْاَحَدِ الْمُتَفَضِّلِ الْمَنَّانِ

हूँ सुबह और शाम और हम्द है खुदा के लिए जो अकेला, बेनियाज़ दार, एक, फ़ज़्लवाला,

الْمُتَطَوِّلِ الْحَنَّانِ الَّذِیْ مِنْ تَطَوُّلِهٖ سَهَّلَ لِیْ زِیَارَةَ مَوْلَایَ بِاِحْسَانِهٖ

एहसानवाला और अता करनेवाला और महेरबानी वाला है जिसके एहसान ही से मेरे लिए मेरे

وَلَمْ یَجْعَلْنِیْ عَنْ زِیَارَتِهٖ مَمْنُوْعًا وَلَا عَنْ ذِمَّتِهٖ مَدْفُوْعًا بَلْ تَطَوَّلَ

मौला की ज़ियारत आसान हुई है और मुझको उसने ज़ियारत से नही रोका है और ज़िम्मा ओहदए

وَمَنَحَ.

विलायत से अलग नही किया है बलके मुझ पर एहसान किया है और करम किया है ।

उसके बाद दाख़िल होकर जब रौज़े के अंदर पहुँचे तो क़ब्र के सामने खड़े हो कर खुज़ू व खुशू और गिरया के साथ यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَارِثَ اٰدَمَ صَفْوَةِ اللّٰهِ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَارِثَ

सलाम आप पर ऐ आदम सफ़ी अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ नूह अमीने खुदा के

نُوْحٍ اَمِیْنِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَارِثَ اِبْرَاهِیْمَ خَلِیْلِ اللّٰهِ

वारिस, सलाम आप पर ऐ इब्राहीम ख़लीले खुदा के वारिस, सलाम आप पर ऐ वारिसे मूसा

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَارِثَ مُوْسٰی كَلِیْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَارِثَ

कलीम अल्लाह, सलाम आप पर ऐ वारिसे ईसा रूहुल्लह, सलाम आप पर ऐ वारिसे मोहम्मद

عِيْسٰى رُوْحِ اللّٰهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

(स) हबीब अल्लाह, सलाम आप पर ऐ वारिसे अली (अ) हुज्जते खुदा। सलाम आप पर ऐ

حَبِيْبِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عَلِيٍّ حُجَّةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

वसी, नेक व मुत्तक़ी, सलाम आप पर ऐ खुदा का इनतेक़ाम और उसके इन्तेक़ाम के फ़रज़ंद

اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ التَّقِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللّٰهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ وَ الْوِتْرَ

और वित्रे मौतूर। मै गवाही देता हूँ के आप ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और

الْمَوْتُوْرَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर किया और राहे खुदा मे हक़्क़े जिहाद अदा किया

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰى

यहाँ तक के आपके हरम की हतक को मुबाह जाना गया और आपको मज़लूम क़त्ल किया

اسْتُبِيْحَ حَرَمُكَ وَ قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا.

गया।

उसके बाद बालाए सर खड़े होकर रंजीदा दिल और चश्मे गिरयां के साथ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ

आप पर ऐ फ़रज़ंदे सय्यदुल औसिया, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा ज़हरा (स)

الزَّهْرَآءِ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَطَلَ الْمُسْلِمِيْنَ

आलमीन की औरतों की सरदार, सलाम आप पर ऐ मुसलमानों के बहादुर। ऐ मेरे

يَا مَوْلَايَ اَشْهَدُ اَنَّكَ كُنْتَ نُوْرًا فِي الْاَصْلَابِ الشَّامِخَةِ وَ الْاَرْحَامِ

मौला मै गवाही देता हूँ के आप नूर थे बुलंद सुलबों और पाकीज़ा रहमा मे। आप तक

الْمُطَهَّرَةِ لَمْ تُنَجِّسْكَ الْجَاهِلِيَّةُ بِاَنْجَاسِهَا وَ لَمْ تُلْبِسْكَ مِنْ

जाहिलियत की नजासत नही पहुँच सकी और रेज़ालतों का ग़ुबार आप के लिबासे

مُدْلَهِمَّاتِ ثِيَابِهَا وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ مِنْ دَعَآئِمِ الدِّيْنِ وَ اَرْكَانِ

तहारत तक नही आ सका। मै गवाही देता हूँ के आप दीन के सुतून और मुसलमानों

الْمُسْلِمِيْنَ وَ مَعْقِلِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ الْاِمَامُ الْبَرُّ التَّقِيُّ

के रूक्न और मोमिनीन की पनाह हैं और मै गवाही देता हूँ के आप इमाम, नेक,

الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ الْهَادِي الْمَهْدِيُّ وَ اَشْهَدُ اَنَّ الْاَئِمَّةَ مِنْ وُلْدِكَ كَلِمَةُ

मुत्तक़ी, पसंदीदा पाक, हादी और मेहदी हैं और मै गवाही देता हूँ के आप की औलाद

التَّقْوٰى وَ اَعْلَامُ الْهُدٰى وَ الْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَ الْحُجَّةُ عَلٰى اَهْلِ

मे अईम्मा, कलमए तक़वा और हिदायत के परचम और उरवतुल वुसक़ा और हुज्जत

الدُّنْيَا.

हैं दुनिया वालों पर।

उसके बाद क़ब्र से लिपट कर कहे:

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ يَا مَوْلَایَ اَنَا مُوَالٍ لِوَلِيِّكُمْ وَ مُعَادٍ

हम अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ मेरे मौला मै आपके दोस्तों का दोस्त और आपके

لِعَدُوِّكُمْ وَاَنَابِكُمْ مُؤْمِنٌ وَبِاِيَابِكُمْ مُوْقِنٌ بِشَرَايِعِ دِيْنِیْ وَخَوَاتِيْمِ

दुश्मन का दुश्मन हूँ व मै आप पर ईमान लाया हूँ व आपकी रजत का यक़ीन किए हुए हूँ अपने दीन की शरीयतों

عَمَلِیْ وَ قَلْبِیْ لِقَلْبِكُمْ سِلْمٌ وَ اَمْرِیْ لِاَمْرِكُمْ مُتَّبِعٌ يَا مَوْلَایَ

और अपने अमल के ख़ातमे के साथ और मेरा दिल आपके दिल के साथ तसलीम किए हुए है और मेरा हर

اَتَيْتُكَ خَآئِفًا فَاٰمِنِّیْ وَ اَتَيْتُكَ مُسْتَجِيْرًا فَاَجِرْنِیْ وَ اَتَيْتُكَ فَقِيْرًا

अम्र आप के हुक्म का ताबे है। ऐ मेरे मौला मै आपके पास आया हूँ ख़ाफ़ज़दा हालत मे तो मुझ को आमान दे

فَاَغْنِنِیْ سَيِّدِیْ وَ مَوْلَایَ اَنْتَ مَوْلَایَ حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَى الْخَلْقِ

दीजिए और मै आप के पास आया हूँ पनाह चाहते हुए तो पनाह दे दीजीए। मै आया हूँ फ़क़ीर बनकर तो मुझे

اَجْمَعِيْنَ اٰمَنْتُ بِسِرِّكُمْ وَ عَلَانِيَّتِكُمْ وَ بِظَاهِرِكُمْ وَ بَاطِنِكُمْ وَ

मालदार कीजिए मेरे सरदार, मेरे मौला आप मेरे मौला और तमाम मख़लूक़ पर अल्लाह की हुज्जत हैं। मै आप के

اَوَّلِكُمْ وَ اٰخِرِكُمْ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ التَّالِيْ لِكِتَابِ اللهِ وَ اَمِيْنُ اللهِ

पोशीदा, आशकारा, ज़ाहिर व बातिन और अव्वल व आख़िर पर ईमान लाया हूँ और मै गवाही देता हूँ के आप

الدَّاعِي اِلَى اللهِ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً

खुदा की किताब के तिलावत करनेवाले और अल्लाह के अमीन हैं खुदा की तरफ़ हिकमत और मौएज़े हसना

ظَلَمَتْكَ وَ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً سَمِعَتْ بِذٰلِكَ

के ज़रिए दावत देनेवाले हैं। खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिस ने आप पर ज़ुल्म किया और उस उम्मत

فَرَضِيَتْ بِهٖ.

पर जिसने आप को क़त्ल किया व लानत हो खुदा की उस उम्मत पर जिस ने सुना और उस पर राज़ी रही।

उसके बाद बालाए सर दो रकत नमाज़ अदा करे और सलाम के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ لَكَ صَلَّيْتُ وَلَكَ رَكَعْتُ وَلَكَ سَجَدْتُ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ

खुदाया मैने तेरे लिए नमाज़ पढ़ी, तेरे लिए रूकू किया, तेरे लिए सजदा किया, तू एक अकेला है, तेरा कोई शरीक

لَكَ فَاِنَّهٗ لَا تَجُوْزُ الصَّلٰوةُ وَ الرُّكُوْعُ وَ السُّجُوْدُ اِلَّا لَكَ لِاَنَّكَ اَنْتَ

नही है क्योंके नमाज़ रूकूअ और सजदा सिवाए तेरे किसी के लिए जाएज़ नही है, बेशक तू वो खुदा है के तेरे

اللهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَبْلِغْهُمْ

अलावा कोई माबूद नही है। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनको मेरी तरफ़

عَنِّیْ اَفْضَلَ السَّلَامِ وَ التَّحِیَّةِ وَ ارْدُدْ عَلَیَّ مِنْهُمُ السَّلَامَ اللّٰهُمَّ وَ

से बेहतरीन सलाम व तहय्या पहुँचा दे और मुझ पर लौटा दे उनकी तरफ़ से सलाम। खुदाया ये दोनो रकतें मेरी

هَاتَانِ الرَّكْعَتَانِ هَدِیَّةٌ مِّنِّیْ اِلٰی سَیِّدِیْ الْحُسَیْنِ بْنِ عَلِیٍّ عَلَیْهِمَا

तरफ़ से हदया हैं मेरे मौला हुसैन बिन अली (अ) की ख़िदमत मे। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद पर ओर

السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلَیْهِ وَ تَقَبَّلْهُمَا مِنِّیْ وَ اجْزِنِیْ

इमामे हुसैन (अ) पर और उन दो रकतों को क़ुबूल कर ले मेरी तरफ़ से और मुझको जज़ा दे उन दोनो की मेरी

عَلَیْهِمَا اَفْضَلَ اَمَلِیْ وَ رَجَآئِیْ فِیْكَ وَ فِیْ وَلِیِّكَ یَا وَلِیَّ الْمُؤْمِنِیْنَ.

बेहतरीन उम्मीद और आरज़ू के मुताबि०क़ तेरे बारे मे और तेरे वली के बारे मे, ऐ मोमिनो के वली

उसके बाद क़ब्र से लिपट कर बोसा दे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَی الْحُسَیْنِ بْنِ عَلِیٍّ الْمَظْلُوْمِ الشَّهِیْدِ قَتِیْلِ

सलाम हुसैन (अ) बिन अली (अ) पर जो मज़लूम, शहीद और कुश्तए गिरया और मुसीबतों के असीर हैं।

الْعَبْرَاتِ وَ اَسِیْرِ الْكُرُبَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّهٗ وَلِیُّكَ وَ ابْنُ

खुदाया मै गवाही देता हूँ के वो तेरे वली और तेरे वली के फ़रज़ंद है और तेरे बरगुज़ीदा और तेरे हक़ के साथ

وَلِیِّكَ وَ صَفِیُّكَ الْفَائِزُ بِحَقِّكَ اَكْرَمْتَهٗ بِكَرَامَتِكَ وَ خَتَمْتَ لَهٗ

इनते०काम लेने वाले है तूने उनको अपनी करामत से मुकर्रम किया है और उन के लिए शहादत की मोहर

بِالشَّهَادَةِ وَ جَعَلْتَهٗ سَيِّدًا مِّنَ السَّادَةِ وَ قَائِدًا مِّنَ الْقَادَةِ وَ

लगा दी है और उनको सरदारों का सरदार बनाया है और रहनुमाओं का रहनुमा बनाया है और तू ने उनको

اَكْرَمْتَهٗ بِطِيْبِ الْوِلَادَةِ وَ اَعْطَيْتَهٗ مَوَارِيْثَ الْاَنْبِيَآءِ وَ جَعَلْتَهٗ

मुकर्रम किया है विलायत की तहारत के साथ और उनको अता क है अंबिया की मिरास और उनको हुज्जत

حُجَّةً عَلٰى خَلْقِكَ مِنَ الْاَوْصِيَآءِ فَاَعْذَرَ فِي الدُّعَآءِ وَ مَنَحَ

क़रार दिया है अपनी मख़लूक़ पर औसिया मे से तो उन्होंने दावत देने का हक़ अदा कर दिया और नसीहत

النَّصِيْحَةَ وَ بَذَلَ مُهْجَتَهٗ فِيْكَ حَتّٰى اسْتَنْقَذَ عِبَادَكَ مِنَ

की और अपनी जान क़ुर्बान कर दी तेरी राह मे। यहाँ तक के तेरे बन्दों को जेहालत और गुम्राही की हैरानी

الْجَهَالَةِ وَ حَيْرَةِ الضَّلَالَةِ وَ قَدْ تَوَازَرَ عَلَيْهِ مَنْ غَرَّتْهُ الدُّنْيَا وَ

से निकाला और फिर उन के मुक़ाबले मो एक वो गिरहो आया जिस को दुनिया ने धोका दिया और जिस

بَاعَ حَظَّهٗ مِنَ الْاٰخِرَةِ بِالْاَدْنٰى وَ تَرَدّٰى فِيْ هَوَاهُ وَ اَسْخَطَكَ وَ اَسْخَطَ

ने अपनी आख़िरत के हिस्से को बेचा कमतरीन चीज़ के बदले मे और ख़्वाहिशे नफ़्स मे हलाक हुआ और

نَبِيَّكَ وَ اَطَاعَ مِنْ عِبَادِكَ اُولِي الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ حَمَلَةَ

तुझको और तेरे नबी को नाराज़ किया और इताअत की तेरे बन्दो मे से शक़ावत और निफ़ाक़ वालो और

الْاَوْزَارِ الْمُسْتَوْجِبِيْنَ النَّارَ فَجَاهَدَهُمْ فِيْكَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا

गुनाह के उठाने वालों की जिन की वज्ह से वो जहन्नम के मुसतहक़ हुए। तेरे वली ने उनसे जेहाद किया तेरी

مُقْبِلًا غَيْرَ مُدْبِرٍ لَا تَأْخُذُهُ فِي اللهِ لَوْمَةُ لَآئِمٍ حَتّٰى سُفِكَ فِيْ

राह मे सब्र व तहम्मल के साथ आगे बढ़ते हुए और बग़ैर पलटे हुए उन्होने राहे खुदा मे किसी मलामत करने

طَاعَتِكَ دَمُهُ وَ اسْتُبِيْحَ حَرِيْمُهُ اَللّٰهُمَّ الْعَنْهُمْ لَعْنًا وَّبِيْلًا وَ

वाले की मलामत की परवाह नही की यहाँ तक के तेरी इताअत मे उन का ख़ून बहाया गया और उनकी

عَذِّبْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا.

हुरमत को मुबाह जाना गया। खुदाया उन ज़ालिमों पर सख़्त तरीन लानत कर और उनको दर्दनाक अज़ाब दे।

उसके बाद क़ब्रे हज़रत अली अकबर (अ) की तरफ़ पाईने पा इमाम हुसैन (अ) जाए और जाकर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

सलाम आपपर ऐ वलीए खुदा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ ख़ातमुल

يَابْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ

आंबिया के फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ फ़ातेमा सैय्यदतुन्निसा आलमीन के फ़रज़ंद, सलाम आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمَظْلُوْمُ

पर ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) के फ़रज़ंद सलाम आप ऐ मज़लूम व शहीद। मेरे माँ बाप आप पर

الشَّهِيْدُ بِاَبِيْ اَنْتَ وَ اُمِّيْ عِشْتَ سَعِيْدًا وَ قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا شَهِيْدًا.

क़ुर्बान हों आप ने सआदत मंद ज़िन्दगी गुज़ारी और मज़लूम व शहीद क़त्ल किए गए।

उसके बाद क़ब्रे शोहदा का रूख़ कर के यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَيُّهَا الذَّابُّوْنَ عَنْ تَوْحِيْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

सलाम आप लोगों पर ऐ अल्लाह की तौहीद का दिफ़ा करने वालों, सलाम आप लोगों पर के आप

بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ فُزْتُمْ فَوْزًا

ने सब्र किया तो आप के लिए बेहतरीन अंजाम का घर है मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों आप ने

عَظِيْمًا.

अज़ीम कामयाबी हासिल की।

उसके बाद रौज़ए अब्बास जाए और ज़रीह के पास खड़े होकर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ وَ الصِّدِّيْقُ الْمُوَاسِيْ اَشْهَدُ

सलाम आप पर ऐ अब्दे सालेह और सिद्दीक़ और मवासात करनेवाले। मै गवाही देता हूँ के आप

اَنَّكَ اٰمَنْتَ بِاللهِ وَ نَصَرْتَ ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ وَ دَعَوْتَ اِلٰى سَبِيْلِ اللهِ

अल्लाह पर ईमान लाए ओर आपने फ़रज़ंदे रसूले खुदा की नुसरकत की और राहे खुदा की दावत दी

وَ وَاسَيْتَ بِنَفْسِكَ عَلَيْكَ مِنَ اللهِ اَفْضَلُ التَّحِيَّةِ وَ السَّلَامُ.

और अपने नफ़्स के ज़रिए मवासात की तो आप पर अल्लाह की तरफ़ से बेहतरीन दुरूदो सलाम हो।

उसके बाद क़ब्र से लिपट जाए और कहे:

بِاَبِیْ اَنْتَ وَ اُمِّیْ یَا نَاصِرَ دِیْنِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَاصِرَ الْحُسَیْنِ

मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों ऐ दीने खुदा के नासिर, सलाम आप पर ऐ हुसैन (अ) के मददगार

الصِّدِّیْقِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَاصِرَ الْحُسَیْنِ الشَّهِیْدِ عَلَیْكَ مِنِّیْ

जो सिद्दीक हैं। सलाम आप पर ऐ हुसैने शहीद के नासिर आप पर मेरी तरफ़ से सलाम जब तक मै

السَّلَامُ مَابَقِیْتُ وَبَقِیَ اللَّیْلُ وَ النَّهَارُ.

बाक़ी हूँ और रात दिन बाक़ी हैं।

उसके बाद बालाए सर दो रकत नमाज़ अदा करे। उसके बाद जो दुआ हरमे इमाम हुसैन (अ) में पढ़ी थी उस दुआ को फिर पढ़े:
???ऐ अल्लाह मै तेरे लिए नमाज़ पढ़ता हूँ और तेरे लिए रूकू और सजदे करता हूँ।
फिर जब तक चाहे वहीं रहे और मुसतहब है के उस जगह को रात गुज़ारने की मंज़ल न क़रार दे। और जब हज़रत को रूख़सत करना चाहे तो बालाए सर खड़े हो कर गिरया करे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا مَوْلَایَ سَلَامَ مُوَدِّعٍ لَا قَالٍ وَلَا سَئِمٍ فَاِنْ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला व दाई सलाम जिस मे न कोई मलाल है न ख़सतिगी, अगर मै पलट रहा

اَنْصَرِفْ فَلَا عَنْ مَلَالَةٍ وَ اِنْ اُقِمْ فَلَا عَنْ سُوْٓءِ ظَنٍّ بِمَا وَعَدَ اللهُ

हूँ तो मलाल की वजह से नही और अगर क़याम करता हूँ तो सूए ज़न की वजह से नही उस अज्र के

الصَّابِرِيْنَ يَا مَوْلَايَ لَا جَعَلَهُ اللّٰهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّيْ لِزِيَارَتِكَ وَ رَزَقَنِي

बारे मे जिस का खुदा ने सब्र करनेवालों से वादा किया है। ऐ मेरे मौला अल्लाह इस ज़ियारत को आख़री

الْعَوْدَ اِلَيْكَ وَ الْمَقَامَ فِيْ حَرَمِكَ وَ الْكَوْنَ فِيْ مَشْهَدِكَ اٰمِيْنَ رَبَّ

ज़ियारत न क़रार दे और मुझको आप की तरफ़ लौटना नसीब करे और आपके हरम मे क़याम मुकर्रर

الْعَالَمِيْنَ.

करे और आप के रौज़े मे हाज़री नसीब करे इस दुआ को ऐ आलमीन के परवरदेगार क़ुबूल कर ले।

इसके बाद ज़रीह को बोसा देकर अपने बदन को मस करे के यह बाएसे अमानो हिफ्ज़ है और फिर वहाँ से इस तरह बाहर जाए के हज़रत की पुश्त न होने पाए और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَابَ الْمَقَامِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَرِيْكَ الْقُرْآنِ

सलाम आप पर ऐ दरवाज़ए अक़ामत गाहे इलाही, सलाम आप पर ऐ क़ुआर्न के

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ الْخِصَامِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَفِيْنَةَ النَّجَاةِ

शरीक, सलाम आप पर ऐ दुश्मनों के मुक़ाबले मे हुज्जत, सलाम आप पर ऐ नजात

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا مَلَآئِكَةَ رَبِّيَ الْمُقِيْمِيْنَ فِيْ هٰذَا الْحَرَمِ اَلسَّلَامُ

के सफ़ीने, सलाम आप लोगों पर ऐ मेरे रब के मलाएका मुक़ीम इस हरम मे। सलाम

عَلَيْكَ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ.

आपपर हमेशा जबतक मै बाक़ी रहूँ व रात-दिन बाक़ी रहें।

और कहे:

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ़ पलटने वाले हैं कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही

الْعَظِيْمِ.

सिवाय खुदाए बुज़ुर्ग व बाला के।

उसके बाद बाहर निकल जाए। सय्यद इब्ने ताऊस और मोहम्मद बिन मश्हदी ने फ़रमाया है के अगर यह आमाल अंजाम दे दिए तो गोया अर्शे आला पर खुदा की ज़ियारत कर ली।

इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत अरफ़ा के दिन

वाज़ेह रहे के अहलेबैते इस्मतो तहारत (अ) से जो कसीर रिवायात और अज़ीम फ़ज़ीलत और सवाब नक़्ल किया गया है उसका शुमार नहीं किया जा सकता है। मैं सिर्फ़ ज़ाएरीन की तशवीक के लिए चंद अहादिस नक़्ल किए देता हूँ। मोतबर सनद के साथ बशीर दहान से नक़्ल किया गया है के मैंने इमाम सादिक़ (अ) की ख़िदमत में नक़्ल किया है के कभी ऐसा होता है के मैं हज नहीं जा पाता तो अरफ़ा के दिन इमाम हुसैन (अ) की क़ब्र के पास चला जाता हूँ। फ़रमाया बहुत अच्छा करते हो। ऐ बशीर जो मोमिन भी क़ब्रे हुसैन (अ) की ज़ियारत के लिए मारेफ़त के साथ रोज़े ईद के अलावा जाएगा उसके लिए बीस हज और बीस उमरा मक़बूल और पैग़ंबरे अक्रम (स) या इमामे आदिल के साथ बीस जिहाद का सवाब लिख दिया जाएगा। और जो व्यक्ति हज़रत की ज़ियारत ईद के दिन केरगा परवरदिगार उसके लिए सौ हज, सौ उमरा और सौ जिहाद का सवाब लिख देगा जो पैग़म्बरे इसलाम या इमामे आदिल

के साथ किया हो।
और जो मारेफ़त के साथ अरफ़ा के दिन हज़रत की ज़ियारत करेगा परवरदिगार उसके लिए हज़ार हज, हज़ार उमरा और पैग़ंबरे अक्रम (स) या इमामे आदिल के साथ हज़ार जिहाद का सवाब लिख देगा। मैंने अर्ज़ किया के भला मुझे मौकफ़े अरफ़ात का सवाब कैसे हासिल हो सकता है? तो हज़रत ने गज़बनाक अंदाज़ से मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाया के ऐ बशीर अगर मोमिन अरफ़ा के दिन इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत के लिए जाए फ़ुरात में गुस्ल कर के मुतवज्जे हो जाए तो परवरदिगार हर क़दम पर एक हज जुमला मनासिक के साथ लिख देता है और बशीर का बयान है के मुझे ख़याल आता है के आपने उमरा भी फ़रमाया था और मुताद्दिद रिवायात में वारिद हुआ है के परवरदिगार अरफ़ा के दिन पहले ज़ाएराने हुसैन (अ) पर नज़र करता है। इसके बाद अरफ़ात में वुकूफ करनेवाले पर निगाह करता है। और राफ़ाअ से मोतबर हदीस में नक़्ल किया गया है के इमाम सादिक़ (अ) ने मुझ से फ़रमाया के तुमने इस साल हज किया है? मैंने कहा के मेरे पास पैसा नहीं था जो हज को जाता लेकिन अरफ़ा के दिन इमाम हुसैन (अ) की क़ब्र के पास था। फ़रमाया के रोफ़ाअ तुमने कोई कोताही नहीं की है। तुमने उस से कुछ कम नहीं किया जो अहले मिना ने किया। अगर यह मुश्किल न होती के मैं नहीं चाहता के लोग हज को तर्क कर दें तो मैं तुम्हारे वास्ते वह हदीस बयान करता जिस के बाद तुम कभी हज़रत की क़ब्र की ज़ियारत को तर्क न करते। इसके बाद हज़रत थोड़ी देर ख़ामोश रहे और फिर फ़रमाया के मुझ से मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने बयान किया है के जो व्यक्ति हज़रत के हक़ की मारेफ़त रखते हुए आपकी क़ब्र की ज़ियारत के लिए जाए और कोई तकब्बुर न हो तो उसके साथ हज़ार फ़रिश्ते दाहिनी तरफ़ और हज़ार फ़रिश्ते बाईं तरफ़ रहते हैं और उसे हज़ार हज और हज़ार उमरा का सवाब दिया जाता है। जो पैग़ंबर या वसीए पैग़म्बर के साथ अंजाम दिया गया हो।
इस ज़ियारत की कैफ़ियत जैसा के ओलमाए बुज़ुर्गवार और रोअसाए मज़हब ने नक़्ल किया है यह है के जब रोज़े अरफ़ा हज़रत की ज़ियारत करना चाहे तो अगर मुम्किन हो तो फ़ुरात से गुस्ल करे और अगर न हो तो किसी भी

पानी से गुस्ल करे पाकीज़ा लिबास पहने और हज़रत की ज़ियारत का क़स्द करे।
आहिस्ता आहिस्ता क़दम बढ़ाए और हरम के दरवाज़े पर पहुँच कर कहे: اَللّٰهُ اَكْبَرُ उसके बाद कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا وَ

खुदा बहुत बड़ा है, खुदा बहुत बड़ा है सब से बड़ा और सब से ज़्यादा हम्द खुदा के लिए है और मै खुदा

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ

की तसबीह करता हूँ सुबह और शाम ओर हम्द खुदा के लिए है जिसने हमारी हिदायत की उसकी

لَقَدْ جَآئَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

तरफ़ और हम हिदायत न पाते अगर खुदा ने हमारी हिदायत न की होती। बेशक हमारे परवरदिगार के

اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ

सारे रसूल हक़ लेकर आए सलाम हो रसूले खुदा (स) पर, सलाम हो अमीरूल मोमिनीन पर, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

हो फ़ातेमा ज़हरा पर जो आलमीन की औरतों की सरदार हैं। सलाम हो हसन व हुसैन (अ) पर, सलाम

اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلٰى جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ اَلسَّلَامُ

हो अली बिन हुसैन पर, सलाम हो मोहम्मद बिन अली पर, सलाम हो जाफ़र बिन मोहम्मद पर, सलाम

عَلٰى مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُوْسٰى اَلسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدِ

हो मूसा बिन जाफ़र पर, सलाम हो अली बिन मूसा पर, सलाम हो मोहम्मद बिन अली पर, सलाम हो

بْنِ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ اَلسَّلَامُ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ

अली बिन मोहम्मद पर, सलाम हो हसन बिन अली (अ) पर, सलाम हो ख़लफ़े सालेह इमामे मुन्तज़र

اَلسَّلَامُ عَلَى الْخَلَفِ الصَّالِحِ الْمُنْتَظَرِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ

पर, सलाम हो आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा मै आप का बन्दा

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ عَبْدُكَ وَ ابْنُ عَبْدِكَ وَ ابْنُ

आप के बन्दा का बेटा और आप की ककनीज़ का बेटा आप के दोस्त का दोस्त और आप के दुश्मन

اَمَتِكَ الْمُوَالِيْ لِوَلِيِّكَ الْمُعَادِيْ لِعَدُوِّكَ اسْتَجَارَ بِمَشْهَدِكَ وَ

का दुश्मन हूँ। मै ने आप के राज़े की पनाह चाही है और आप की ज़ियारत के क़सद से अल्लाह का

تَقَرَّبَ اِلَى اللهِ بِقَصْدِكَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدَانِيْ لِوِلَايَتِكَ وَ خَصَّنِيْ

तक़र्रूब चाहा है। हम्द है खुदा के लिए जिस ने हमारी हिदायत की आप की विलायत के लिए और

بِزِيَارَتِكَ وَ سَهَّلَ لِيْ قَصْدَكَ.

मुझको मख़सूस किया आप की ज़ियारत से और मेरे लिए क़सदे ज़ियारत को आसान बना दिया।

उसके बाद रौज़े में दाख़िल हो कर सरे अक़्दस के सामने खड़े हो कर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اٰدَمَ صِفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

सलाम आप पर ऐ आदम सफ़ी अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ नूह नबीए खुदा के वारिस,

نُوْحٍ نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ मूसा कलीम अल्लाह

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى

के वारिस, सलाम आप पर ऐ ईसा रूहुल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद हबीब अल्लाह

رُوْحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

के वारिस, सलाम आप पर ऐ वारिसे अमीरूल मोमिनीन सलाम आप पर ऐ वारिसे फ़ातेमा (स),

يَا وَارِثَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे मोहम्मद मुसतफ़ा (स), सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे अलीए मुतुर्ज़ा,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ عَلِيٍّ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा ज़हरा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे ख़दीजतुल कुबरा, सलाम

الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ इनतेक़ामे खुदा और इनतेक़ामे खुदा के फ़रज़ंद और वित्रल मौतूर, मै गवाही देता हूँ के

ابْنَ خَدِيْجَةَ الْكُبْرٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ وَ الْوِتْرَ

आप ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और नेकी का हुकुम दिया और बुराई से रोका और

الْمَوْتُوْرَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

अल्लाह की इताअत की यहाँ तक के मौत आ गई तो खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने आप

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ اَطَعْتَ اللّٰهَ حَتّٰى اَتٰكَ الْيَقِيْنُ

को क़त्ल किया और खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिस ने आप पर ज़ुल्म किया और खुदा

فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً سَمِعَتْ

की लानत हो उस उम्मत पर जिसने सुना और राज़ी रही ऐ मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह, मै खुदा

بِذٰلِكَ فَرَضِيَتْ بِهٖ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ مَلَآئِكَتَهٗ وَ

और उसके मलाएका और उसके अंबिया और रसूलों को गवाह बनाता हूँ के मै आप का मोमिन

اَنْبِيَآئَهٗ وَ رُسُلَهٗ اَنِّيْ بِكُمْ مُّؤْمِنٌ وَ بِاِيَابِكُمْ مُّوْقِنٌ بِشَرَايِعِ دِيْنِيْ وَ

हूँ और आप की रजअत का यक़ीन रखने वाला हूँ अपने दीन की शरीयतों और अमल के ख़ातमे

خَوَاتِيْمِ عَمَلِيْ وَ مُنْقَلَبِيْ اِلٰى رَبِّيْ فَصَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى

और अपने रब की तरफ़ पलटने के साथ तो अल्लाह का दुरूद हो आपपर और आप की रूहों और

اَرْوَاحِكُمْ وَ عَلٰى اَجْسَادِكُمْ وَ عَلٰى شَاهِدِكُمْ وَ عَلٰى غَآئِبِكُمْ وَ

आपके जिस्मोंपर और आपके शाहिद, ग़ाएब, ज़ाहिर और बातिन पर, सलाम आप पर ऐ ख़ातमुल

ظَاهِرِكُمْ وَ بَاطِنِكُمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ ابْنَ

अंबिया के फ़रज़ंद और सय्यदुल औसिया के फ़रज़ंद और इमामे मुत्तक़ीन के फ़रज़ंद और पेशवाए

سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ ابْنَ اِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَ ابْنَ قَآئِدِ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ

रौ सफेदाने आलम के फ़रज़ंद जन्नत नईम की तरफ़ और कैसे आप ऐसे न होगें दर हालाँके आप

اِلٰى جَنَّاتِ النَّعِيْمِ وَ كَيْفَ لَا تَكُوْنُ كَذٰلِكَ وَ اَنْتَ بَابُ الْهُدٰى وَ

बाबे हिदायत और तक़वा के इमाम और उरवतुल वुसक़ा हैं और हुज्जत हैं दुनिया वालों पर और

اِمَامُ التُّقٰى وَ الْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَ الْحُجَّةُ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا وَ خَامِسُ

पाँचवे आले अबा हैं। आप को गिज़ा दी है रहमत के हाथ ने और ईमान के सीने से आप की

اَصْحَابِ الْكِسَآءِ غَذَتْكَ يَدُ الرَّحْمَةِ وَ رَضَعْتَ مِنْ ثَدْيِ الْاِيْمَانِ وَ

रेज़ाअत की गई है और इसलाम की आ०गोश मे पाला गया है तो मेरा नफ़्स आप के फ़िराक़ पर

رُبِّيْتَ فِيْ حِجْرِ الْاِسْلَامِ فَالنَّفْسُ غَيْرُ رَاضِيَةٍ بِفِرَاقِكَ وَ لَا شَآكَّةٍ

राज़ी नही है और आपकी ज़िन्दगी पर शक करनेवाला नही है। अल्लाह का दुरूद हो आप पर और

فِيْ حَيٰوتِكَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اٰبَآئِكَ وَ اَبْنَآئِكَ اَلسَّلَامُ

आप के आबा और आप के फ़रज़ंद पर, सलाम आप पर ऐ मक़तूल अश्के रवाँ और मुसीबते

عَلَيْكَ يَا صَرِيْعَ الْعَبْرَةِ السَّاكِبَةِ وَ قَرِيْنَ الْمُصِيْبَةِ الرَّاتِبَةِ لَعَنَ

मुसलसल के साथी, खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिस ने आप की हुरमत को हलाल समझा तो

اللّٰهُ اُمَّةً اسْتَحَلَّتْ مِنْكَ الْمَحَارِمَ فَقُتِلْتَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ مَقْهُوْرًا

आपको क़त्ल किया गया ज़ुल्म से अल्लाह का दुरूद हो आप पर और रसूल (स) आप के क़त्ल

وَاَصْبَحَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ بِكَ مَوْتُوْرًا وَاَصْبَحَ كِتَابُ

की वजह से ग़म ज़दा हुए और किताबे खुदा आपके न होने से बिलकुल तर्क हो गई। सलाम आप

اللّٰهِ بِفَقْدِكَ مَهْجُوْرًا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى جَدِّكَ وَاَبِيْكَ وَاُمِّكَ وَ

पर और आप के दादा ओर वालिद पर, माँ ओर भाई और आपकी औलाद मे आइम्मा पर, और

اَخِيْكَ وَعَلَى الْاَئِمَّةِ مِنْ بَنِيْكَ وَعَلَى الْمُسْتَشْهَدِيْنَ مَعَكَ وَعَلَى

आपके साथ शहीद होनेवालों पर और आप की क़ब्र के गिर्द रहनेवाले मलाएका पर जो आपके

الْمَلَآئِكَةِ الْحَآفِّيْنَ بِقَبْرِكَ وَ الشَّاهِدِيْنَ لِزُوَّارِكَ الْمُؤْمِنِيْنَ

ज़ाएरीन के गवाह और आप के शियों की दुआओं पर आमीन कहनेवाले हैं और सलाम आप पर

بِالْقَبُوْلِ عَلٰى دُعَآءِ شِيْعَتِكَ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। मेरे

بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ لَقَدْ

माँ बाप क़ुर्बान हो जाएं ऐ अबू अब्दुल्लाह, आप की शहादत का हादेसा अज़ीम और उसकी मुसीबत

عَظُمَتِ الرَّزِيَّةُ وَ جَلَّتِ الْمُصِيْبَةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ

जलील है हम पर और तमाम आसमान व ज़मीनवालों पर। तो खुदा की लानत हो उस उम्मत पर

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسْرَجَتْ وَ اَلْجَمَتْ وَ تَهَيَّاَتْ

जिस ने घोड़ों पर ज़ीन और लगाम कसी और आमादा हुए आप से जंग के लिए, ऐ मेरे मौला, ऐ

لِقِتَالِكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ قَصَدْتُ حَرَمَكَ وَ اَتَيْتُ مَشْهَدَكَ

मेरे अबू अब्दुल्लाह मै आपके हरमे मुतह्हर का इरादा किया है और आप के रौज़े पर आया हूँ। मै

اَسْئَلُ اللّٰهَ بِالشَّاْنِ الَّذِيْ لَكَ عِنْدَهٗ وَ بِالْمَحَلِّ الَّذِيْ لَكَ لَدَيْهِ اَنْ

अल्लाह से सवाल करता हूँ आपकी उस शान के वास्ते से जो खुदा के नज़दीक है और उस मकाम

يُّصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ يَّجْعَلَنِيْ مَعَكُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ

के वास्ते से जो आपका खुदा के नज़दीक है के खुदा दुरूद भेजे मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और

بِمَنِّهٖ وَ جُوْدِهٖ وَ كَرَمِهٖ.

मुझको आप के साथ दुनिया व आख़िरत मे क़रार दे अपने जुदो एहसान और करम से।

इसके बाद ज़रीह का बोसा देकर बालाए सर दो रकत नमाज़ बजा लाए (इसमें जो सूरह चाहे पढ़ सकता है) इसके बाद यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ صَلَّيْتُ وَ رَكَعْتُ وَ سَجَدْتُ لَكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لِاَنَّ

ऐ खुदा मै ने तेरे लिए नमाज़ पढ़ी और रूकू और सजदा किया तेरे लिए, तू एक है। तेरा कोई

الصَّلَاةَ وَ الرُّكُوْعَ وَ السُّجُوْدَ لَا تَكُوْنُ اِلَّا لَكَ لِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ

शरीक नही है। इस लिए के नमाज़ और रूकू और सजदा तेरे अलावा किसी के लिए नही होता है

اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اَبْلِغْهُمْ عَنِّيْ اَفْضَلَ

इस लिए के तू खुदा है तेरे अलावा कोई खुदा नही है। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले

اَلتَّحِيَّةِ وَ السَّلَامِ وَارْدُدْ عَلَيَّ مِنْهُمُ التَّحِيَّةَ وَ السَّلَامَ اَللّٰهُمَّ وَ

मोहम्मद पर और मेरी तरफ़ से उनको पहुँचा दे बेहतरीन सलाम व तहय्यह, खुदाया ये दोनो रकतें

هَاتَانِ الرَّكْعَتَانِ هَدِيَّةٌ مِّنِّيْ اِلٰى مَوْلَايَ وَ سَيِّدِيْ وَ اِمَامِيْ حُسَيْنِ

मेरी तरफ़ से हदया हैं। मेरे मौला व सरदार की ख़िदमत मे और मेरे इमाम हुसैन (अ) बिन अली

بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ تَقَبَّلْ

(अ) की बारगाह मे। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे उस अमल

ذٰلِكَ مِنِّيْ وَ اجْزِنِيْ عَلٰى ذٰلِكَ اَفْضَلَ اَمَلِيْ وَ رَجَآئِيْ فِيْكَ وَ فِيْ وَلِيِّكَ يَا

को क़ुबूल कर ले और मुझको जज़ा दे मेरी बेहतरीन उम्मीद व आरज़ू के मुताबिक़ अपने बारे मे

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और तेरे वली के बारे मे ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

इसके बाद इमाम हुसैन (अ) की क़ब्र के पाईन जाकर हज़रत अली अकबर (अ) की ज़ियारत पढ़े जिनका सर हज़रत के पाए अक़्दस की तरफ़ है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ نَبِيِّ اللّٰهِ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूल खुदा सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंद नबी खुदा। सलाम आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ

फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन (अ), सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे हुसैने शहीद। सलाम आप पर ऐ

الْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الشَّهِيْدُ ابْنُ الشَّهِيْدِ

शहीद और फ़रज़ंदे शहीद। सलाम आप पर ऐ मज़लूम और फ़रज़ंदे मज़लूम। खुदा की लानत

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمَظْلُوْمُ ابْنُ الْمَظْلُوْمِ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ

हो उस उम्मत पर जिसने आपको क़त्ल किया और खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिसने

وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً سَمِعَتْ بِذٰلِكَ فَرَضِيَتْ بِهٖ

आप पर ज़ुल्म किया और लानते खुदा हो उस उम्मत पर जिसने ये सुना और राज़ी रही। सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ وَلِيِّهٖ لَقَدْ

आप पर ऐ मेरे मौला। सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा ओर उसके फ़रज़ंद पर मुसीबत अज़ीम

عَظُمَتِ الْمُصِيْبَةُ وَ جَلَّتِ الرَّزِيَّةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ

हुई आपकी ये मुसीबत हम पर और सारे मोमिनीन पर और लानत उस उममत पर जिसने

فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَ اَبْرَءُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلَيْكَ مِنْهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ

आपको क़त्ल किया व मै खुदाकी तरफ़ व आपकी तरफ़ बराअत करता हूँ उनसे दुनियाओ

الْاٰخِرَةِ.

आख़िरत मे।

उसके बाद शोहदा का रूख़ करे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ وَ اَحِبَّآئَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَصْفِيَآءَ

सलाम आप लोगों पर ऐ खुदा के वलियों और दोस्तों, सलाम आप लोगों पर ऐ खुदा के बरगुज़ीदा

اللّٰهِ وَ اَوِدَّآئَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ دِيْنِ اللّٰهِ وَ اَنْصَارَ نَبِيِّهٖ وَ

और ख़ास बन्दों, सलाम आप लोगों पर ऐ दीने खुदा के नासिरों और अल्लाह के नबी के नासिरों

اَنْصَارَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْصَارَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ

और अमीरूल मोमिनीन के नासिरों और फ़ातेमा आलमीन की औरतों की सरदार के नासिरों।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ اَبِيْ مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ الْوَلِيِّ النَّاصِحِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप लोगों पर ऐ अबू मोहम्मद हसन वली और नासेह के नासिरों । सलाम आप लोगों

عَلَيْكُمْ يَا اَنْصَارَ اَبِيْ عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ الْمَظْلُوْمِ صَلَوَاتُ

पर ऐ अबू अब्दुल्लाहिल हुसैन (अ) के नासिरों जो शहीद और मज़लूम हैं। अल्लाह का दुरूद हो उन

اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ طِبْتُمْ وَ طَابَتِ الْاَرْضُ الَّتِيْ

सब पर। मेरे माँ बाप आप लोगों पर क़ुर्बान हो जाएं आप भी पाक हुए और वो ज़मीन भी जिस

فِيْهَا دُفِنْتُمْ وَ فُزْتُمْ وَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا يَا لَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَكُمْ فَاَفُوْزَ

मे आप लोग दफ़न किए गए और आप ने बाखुदा बड़ी कामयाबी हासिल की। काश मै आप के

مَعَكُمْ فِي الْجِنَانِ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ الصَّالِحِيْنَ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا

साथ होता तो मै भी कामयाब होता आप के साथ जन्नत मे शोहदा के साथ सालेहीन के साथ और

وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

वो बेहतरीन दोस्त हैं और सलाम हो आप लोगों पर और खुदाकी रहमत व बरकात हो।

उसके बाद इमाम हुसैन (अ) के सरहाने वापस आ कर दुआ करे। अपने लिए और अपने अहलो अयाल के लिए और बिरादराने ईमानी के लिए। सय्यद इब्ने ताऊस और शहीद ने फ़रमाया है के इसके बाद हज़रत अब्बास (अ) के रौज़े तक जाएं और वहाँ खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْفَضْلِ الْعَبَّاسَ ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ अबुल फ़जलिल अब्बास फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे

عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَوَّلِ الْقَوْمِ

सय्यदुल औसिया। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंद उसके जो सब से पहला मुसलमान और सबसे पहला

اِسْلَامًا وَ اَقْدَمِهِمْ اِيْمَانًا وَ اَقْوَمِهِمْ بِدِيْنِ اللهِ وَ اَحْوَطِهِمْ عَلَى

मोमिन है और खुदा के दीन पर सबसे ज़्यादा साबित क़दम है व इसलाम हक़ा पर सबसे ज़्यादा निगरा है। मै

الْاِسْلَامِ اَشْهَدُ لَقَدْ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِاَخِيْكَ فَنِعْمَ الْاَخُ

गवाही देता हूँ के आपने नसीहत की खुदाके लिए और उसके रसूल के लिए व अपने भाई के लिए तो आप

الْمُوَاسِيْ فَلَعَنَ اللهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً ظَلَمَتْكَ وَ لَعَنَ اللهُ

बेहतरीन मवासात वाले भाई हैं। खुदा की लानत हो उस क़ौम पर जिसने आप को क़त्ल किया व खुदाकी

اُمَّةً اِسْتَحَلَّتْ مِنْكَ الْمَحَارِمَ وَ انْتَهَكَتْ فِيْ قَتْلِكَ حُرْمَةَ

लानत हो उस उम्मत पर जिस ने आप पर ज़ुल्म किया और खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिसने

الْاِسْلَامِ فَنِعْمَ الْاَخُ الصَّابِرُ الْمُجَاهِدُ الْمُحَامِي النَّاصِرُ وَ الْاَخُ

आपकी हुरमत को हलाल समझा और आपके क़त्लसे हुरमते इस्लाम को ज़ाया किया, तो आप बेहतरीन

الدَّافِعُ عَنْ اَخِيْهِ الْمُجِيْبُ اِلٰى طَاعَةِ رَبِّهِ الرَّاغِبُ فِيْمَا زَهِدَ فِيْهِ

साबिर भाई हैं। मुजाहिद, हामी, नासिर और अपनी भाई से देफ़ा करनेवाले और लब्बैक कहनेवाले अपने

غَيْرُهٗ مِنَ الثَّوَابِ الْجَزِيْلِ وَ الثَّنَآءِ الْجَمِيْلِ وَ اَلْحَقَكَ اللّٰهُ بِدَرَجَةِ

रब की इताअत को और रग़बत करनेवाले उस मे जिसमे दूसरों ने ज़ोहद से काम लिया यानी सवाब और

اٰبَآئِكَ فِيْ دَارِ النَّعِيْمِ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

सनाए जमील और खुदा आपको आपको आपके आबा के दरजेसे मिला दे नेमतों वाले घर मे।

उसके बाद अपने को क़ब्र पर गिरा दे और कहे:

اَللّٰهُمَّ لَكَ تَعَرَّضْتُ وَ لِزِيَارَةِ اَوْلِيَآئِكَ قَصَدْتُ رَغْبَةً فِيْ ثَوَابِكَ وَ

खुदाया तेरी रहमत मे आया हूँ और तेरे वली की ज़ियारत का क़सद किया है तेरे सवाब की रग़बत करते हुए और

رَجَآءً لِمَغْفِرَتِكَ وَ جَزِيْلِ اِحْسَانِكَ فَاَسْاَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

तेरी ब०ख़्शीश की उम्मीद लगाए हुए और तेरी ज़्यादा एहसान की उम्मीद करते हुए तो मै तुझ से सवाल करता हूँ

آلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَجْعَلَ رِزْقِیْ بِهِمْ دَارًّا وَّ عَیْشِیْ بِهِمْ قَارًّا وَّ زِیَارَتِیْ

के तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे रिज़्क को उनके ज़रिए वसी कर और मेरी ज़िन्दगी

بِهِمْ مَقْبُوْلَةً وَّ ذَنْبِیْ بِهِمْ مَغْفُوْرًا وَ اقْلِبْنِیْ بِهِمْ مُفْلِحًا مُنْجِحًا

को उनके ज़रिए बरक़रार रख और मेरी ज़ियारत को क़ुबूल कर और मेरे गुनाह को बख़्श दे और मुझको कामयाब

مُسْتَجَابًا دُعَآئِیْ بِاَفْضَلِ مَا یَنْقَلِبُ بِهٖ اَحَدٌ مِّنْ زُوَّارِهٖ وَ الْقَاصِدِیْنَ

व कामरान, दुआ का क़ुबूल किया हुआ बना कर वापस कर ऐसा कामयाब जो उनकी ज़ियारत करनेवालों मे और

اِلَیْهِ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

उनकी तरफ़ क़सद करनेवालों मे किसी एक को भी बनाता है अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेमकरने वाले।

सातवीं ज़ियारत - ज़ियारते आशूरा

वाज़ेह रहे के रोज़े आशूरा जो ज़ियारतें नक़्ल की गई हैं वह बहुत सी हैं। लेकिन हम इख़्तेसार की बिना पर सिर्फ़ दो ज़ियारतें नक़्ल कर रहे हैं और दूसरे वर्ग में आमाले आशूरा के ज़ैल में भी एक ज़ियारत नक़्ल की जा चुकी है उन मतालिब के साथ जो इस जगह से भी मुनासिबत रखते हैं।

मज़कूरा दो ज़ियारतों में से पहली ज़ियारते आशूरा मारूफ़ा है जो नज़दीक व दूर हर जगह से पढ़ी जाती है।

और उसकी दासतान यूँ है के शेख तूसी ने मिसबाह में ज़िक्र किया है के मोहम्मद बिन इस्माईल बिन बज़ीअ ने सालेह बिन अकबा से उनके बाप के हवाले से इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ) से रिवायत की है के हज़रत ने फ़रमाया के जो व्यक्ति दसवीं मोहर्रम को इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे वह रोज़े क़यामत परवरदिगार से दो हज़ार हज, दो हज़ार उमरा और दो हज़ार जिहाद के साथ मुलाक़ात करेगा जो उसने रसूले खुदा (स) और आइम्मए ताहेरीन

(अ) के साथ अंजाम दिए हों।
रावी ने अर्ज़ किया के उसके लिये क्या सवाब है जो करबला से बाहर किसी दूसरे मकाम पर हो और उसके लिए करबला जाना मुम्किन न हो?
फ़रमाया के अगर ऐसा हो तो सहरा में या पुश्ते बाम पर चला जाए और हज़रत की क़ब्र की तरफ़ इशारा कर के दुश्मनों पर लानत करे और सलाम के बाद दो रकत नमाज़ अदा करे और यह सारे काम ज़वाले आफ़ताब से पहले अंजाम दे। फिर इमाम हुसैन (अ) पर गिरया करे और अपने घर वालों को भी इसका हुक्म दे।
अगर तक़य्ये का ज़माना न हो और अपने घर में अज़ादारी बरपा करे और रंजो गम का इज़हार करे और एक दूसरे को ताज़यत पेश करे।
फ़रमाया के इस बात का मैं ज़ामिन हूँ के परवरदिगारे आलम इस अमल के अंजाम देनेवाले को यह तमाम सवाब इनायत फ़र्मा देगा।
मैंने अर्ज़ किया के आप æजामिन हैं तमाम सवाब के लिए और कफ़ील हैं सारे अज्र के लिए?
फ़रमाया के बेशक मैं ज़ामिन और वकील हूँ उस शख़्स के लिए जिसने इन तमाम आमाल को अंजाम दिया हो। उसने अर्ज़ की उस ताज़यत का तरीका क्या होगा? फ़रमाया के यूँ कहे:

اَعْظَمَ اللّٰهُ اُجُورَنَا بِمُصَابِنَا بِالْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَ جَعَلَنَا وَ

खुदा अज़ीम करे हमारे अज्र को इमामे हुसैन (अ) की सोगवारी मे और हमको और आप

اِيَّاكُمْ مِنَ الطَّالِبِيْنَ بِثَارِهٖ مَعَ وَلِيِّهِ الْاِمَامِ الْمَهْدِيِّ مِنْ آلِ مُحَمَّدٍ

को क़रार दे उनके ख़ून खॉहों में। अपने वली इमामे मेहदी (अ) आले मोहम्मद (अ) के

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

साथ।

अगर मुम्किन हो उस दिन किसी दुन्यवी काम के लिए बाहर न जाए तो ऐसा ही करना चाहिए के यह दिन इन्तेहाई मनहूस है जिस दिन कोई भी हाजत पूरी होने वाली नहीं है और अगर पूरी हो भी जाए तो उसमें कोई बरकत न होगी। कोई ख़ैर देखने में न आएगा। इसके अलावा अपने घर के लिए उस दिन कोई सामान भी ज़ख़ीरा नहीं करना चाहिए के जो शख़्स उस दिन सामान का ज़ख़ीरा करेगा वह हरगिज़ बरकत न देखेगा न अपने लिए और न अपने अहेल के लिए और जो इंसान इन आमाल को अंजाम देगा परवरदिगार उसके लिए हज़ार हज, हज़ार उमरा और हज़ार जिहाद का सवाब लिख देगा। जो रसूले खुदा (स) के साथ अंजाम दिए हों। और उसे तमाम पैग़ंबर, औसिया। सिद्दीक़ और शहीद का सवाब इनायत फ़रमाएगा। जो राहे खुदा में क़ुरबान हुए हों उस समय से जबसे यह काएनात पैदा हुई है और जब तक क़यामत न आ जाए।

सालेह बिन अक़्बा और सैफ़ बिन उमैर कहते हैं के अलक़मा बिन मोहम्मद खज़रमी ने बयान किया के मैंने इमामे बाक़र (अ) से पूछा के आप मुझे वह दुआ तालीम करें जिसे मैं आशूरा के दिन पढ़ूँ।

जब भी मैं इमामे हुसैन (अ) की ज़ियारत करूँ और वह दुआ जो उस समय पढ़ूं जब हज़रत की क़रीब से ज़ियारत न कर सकूं और दूर से इशारा करके सलाम करूँ।

आपने फ़रमाया के ऐ अल्क़मा जब भी तुम ज़ियारत करना चाहो तो दो रकत नमाज़ पढ़ो।

उसके बाद आं हज़रत की क़ब्र की तरफ़ इशारा कर के सलाम करो और इशारा करते समय तकबीर के बाद यह ज़ियारत पढ़ो तो यक़ीनन ऐसा करने के बाद गोया तुमने वह दुआ की है जिसे ज़ियारत करनेवाले मलाएका पढ़ते हैं और परवरदिगार तुम्हारे लिए हज़ार हज़ार दर्जे लिख देगा और तुम्हारा शुमार उन लोगों के साथ होगा जो इमाम हुसैन (अ) के साथ क़ुरबान हो गए हों और क़यामत के दिन शहीदों में महसूब किये जाओगे और तुम्हारे वास्ते हर पैग़ंबर या रसूल का वह सवाब लिखा जाएगा जो इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत से हासिल हुआ हो शहादत के दिन से आज तक।

सलाम का तरीका यह है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُولِ اللهِ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ وَ ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ

अमीरूल मोमिनीन व फ़रज़ंदे सय्यदुल वसीईन, सलाम आपपर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा सय्यदतुन निसा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَاءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आलमीन, सलाम आप पर ऐ इन्तेक़ामे खुदा ओर फ़रज़ंदे इन्तेक़ामे खुदा और वित्रल मौतूर और

يَا خِيَرَةَ اللهِ وَ ابْنَ خِيَرَتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ وَ الْوِتْرَ

सलाम आप पर और उन रूहों पर जो आप के हरमे मुतह्हर मे मौजुद हैं आप सब पर मेरी तरफ़से

الْمَوْتُوْرَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلَى الْاَرْوَاحِ الَّتِيْ حَلَّتْ بِفِنَائِكَ

अल्लाह का सलाम हो हमेशा जब तक मै बाक़ी रहूँ और रात व दिन बाक़ी हैं, ऐ अबू अब्दुल्लाह

عَلَيْكُمْ مِنِّيْ جَمِيْعًا سَلَامُ اللهِ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ

तकला०rफे अज़ीम और मुसीबते ज़लील है आप की शहादत से। हमारे ऊपर और तमाम अहले

يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ لَقَدْ عَظُمَتِ الرَّزِيَّةُ وَ جَلَّتْ وَ عَظُمَتِ الْمُصِيْبَةُ بِكَ

इसलाम पर और आप की मुसीबत अज़ीम व जलील है आसमानो मे तमाम आसमान वालों पर

عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ الْاِسْلَامِ وَ جَلَّتْ وَ عَظُمَتْ مُصِيْبَتُكَ فِي

खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने ज़ुल्म की बुनयाद रखी आप के ऊपर, ऐ अहले बैत (अ)

السَّمَاوَاتِ عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ السَّمَاوَاتِ فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسَّسَتْ

और अल्लाह की लानत हो उस उम्मत पर जिसने आप को आप के मरतबे से रोका और आप को

اَسَاسَ الظُّلْمِ وَ الْجَوْرِ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً

आप के दरज़े से दूर रखा जो खुदा ने आप से मख़सूस किया था और अल्लाह की लानत हो उस

دَفَعَتْكُمْ عَنْ مَقَامِكُمْ وَ اَزَالَتْكُمْ عَنْ مَرَاتِبِكُمُ الَّتِيْ رَتَّبَكُمُ اللّٰهُ

उम्मत पर जिसने आप को क़त्ल किया अल्लाह की लानत हो उन लोगों पर जिन्होंने आपसे जंग

فِيْهَا وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكُمْ وَ لَعَنَ اللّٰهُ الْمُمَهِّدِيْنَ لَهُمْ بِالتَّمْكِيْنِ

करने की ज़मीन हमवार की। मै अल्लाह की तरफ़ और आपकी तरफ़ बरी हूँ उन सबसे और उनके

مِنْ قِتَالِكُمْ بَرِئْتُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلَيْكُمْ مِنْهُمْ وَ مِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ

पैरूओं और ताबईन से और दोस्तों से ऐ अबू अब्दुल्लाह मेरी सुलह है उससे जिसने आप से सुलह

اَتْبَاعِهِمْ وَ اَوْلِيَائِهِمْ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اِنِّيْ سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَكُمْ وَ

की और जंग है उस से जिसने आपसे जंग की रोज़े क़यामत पर और अल्लाह की लानत हो मरजाना

حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَ لَعَنَ اللّٰهُ آلَ زِيَادٍ وَ آلَ

के बेटे पर और खुदा की लानत हो उमर बिन सअद पर और खुदा की लानत हो शिम्र पर और खुदा

مَرْوَانَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ بَنِیْ اُمَیَّةَ قَاطِبَةً وَ لَعَنَ اللّٰهُ ابْنَ مَرْجَانَةَ وَ لَعَنَ

की लानत हो उस उम्मत पर जिसने ज़ीन कसी, लगाम लगाई और नक़ाब डाली आप से जंग के

اللّٰهُ عُمَرَ بْنَ سَعْدٍ وَ لَعَنَ اللّٰهُ شِمْرًا وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسْرَجَتْ وَ اَلْجَمَتْ وَ

लिए। मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मेरी मुसीबत अज़ीम है आप पर ज़ुल्म की वजह से तो मै खुदा

تَنَقَّبَتْ وَ تَهَيَّاَتْ لِقِتَالِكَ بِاَبِیْ اَنْتَ وَ اُمِّیْ لَقَدْ عَظُمَ مُصَابِیْ بِكَ

से सवाल करता हूँ जिस ने आप के मकाम को मुकर्रम किया और आप के वास्ते से मुझको मुकर्रम

فَاَسْاَلُ اللّٰهَ الَّذِیْ اَكْرَمَ مَقَامَكَ وَ اَكْرَمَنِیْ بِكَ اَنْ یَرْزُقَنِیْ طَلَبَ

किया के वो मुझको तौफ़ीक़ दे आपके ख़ून का बदला लेने की अहलेबैते (अ) मोहम्मद (स) के

ثَارِكَ مَعَ اِمَامٍ مَنْصُوْرٍ مِنْ اَهْلِ بَیْتِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ آلِهٖ

इमामे मनसूर के साथ। खुदाया मुझको अपने पास आबरूमंद क़रार दे इमामे हुसैन (अ) के वास्ते

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ عِنْدَكَ وَجِیْهًا بِالْحُسَیْنِ عَلَیْهِ السَّلَامُ فِی الدُّنْیَا وَ

से दुनिया और आख़िरत मे। ऐ अबू अब्दुल्लाह मै अल्लाह की तरफ़ क़ुरबत चाहता हूँ और उस के

الْاٰخِرَةِ یَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اِنِّیْ اَتَقَرَّبُ اِلَی اللّٰهِ وَ اِلٰی رَسُوْلِهٖ وَ اِلٰی اَمِیْرِ

रसूलकी तरफ़ और अमीरल मोमिनीन (अ) की तरफ़ और फ़ातेमा (स) की तरफ़ और इमामे हसन

الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اِلٰی فَاطِمَةَ وَ اِلَی الْحَسَنِ وَ اِلَیْكَ بِمُوَالَاتِكَ وَ بِالْبَرَائَةِ

(अ) की तरफ़ और आप की तरफ़ आप की दोस्ती के वास्ते से और बरात के ज़रिए उनसे जिन्होंने

مِمَّنْ قَاتَلَكَ وَ نَصَبَ لَكَ الْحَرْبَ وَ بِالْبَرَائَةِ مِمَّنْ اَسَّسَ اَسَاسَ

उस ज़ुल्म की बुनयाद रखी और उस पर उस की इमारत क़ाएम की और उस ज़ुलमो जौर को जारी

الظُّلْمِ وَ الْجَوْرِ عَلَيْكُمْ وَ اَبْرَاُ اِلَى اللهِ وَاِلٰى رَسُولِهٖ مِمَّنْ اَسَّسَ ذٰلِكَ

रखा आप सब पर और आपके शियों पर मै बरी हूँ अल्लाह की तरफ़ और आप की तरफ़ उनसे

وَ بَنٰى عَلَيْهِ بُنْيَانَهٗ وَ جَرٰى فِيْ ظُلَمِهٖ وَ جَوْرِهٖ عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى

और अल्लाह का तक़र्रूब चाहता हूँ और फिर आप का तक़र्रूब आप की मोहब्बत के वास्ते से और

اَشْيَاعِكُمْ بَرِئْتُ اِلَى اللهِ وَ اِلَيْكُمْ مِنْهُمْ وَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ ثُمَّ

आपके वली की मोहब्बत के ज़रिए ओर आपके दुश्मनो से बरात के ज़रिए और आपसे जंग क़ाएम

اِلَيْكُمْ بِمُوَالَاتِكُمْ وَ مُوَالَاةِ وَلِيِّكُمْ وَ بِالْبَرَائَةِ مِنْ اَعْدَائِكُمْ وَ

करनेवालों से बरात के ज़रिए ओर उनके शियों और ताबईन से बरात के ज़रिए मेरी सुलह है उस

النَّاصِبِيْنَ لَكُمُ الْحَرْبَ وَ بِالْبَرَائَةِ مِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ اَتْبَاعِهِمْ اِنِّيْ

से जिस ने आप से सुलह की और जंग है उस से जिस ने आप से जंग की और दोस्त हूँ उस को जो

سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَكُمْ وَ حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ وَ وَلِيٌّ لِمَنْ وَالَاكُمْ وَ

आप का दोस्त है और दुश्मन हूँ उस का जो आप का दुश्मन है तो मै खुदा से सवाल करता हूँ जिस ने

عَدُوٌّ لِمَنْ عَادَاكُمْ فَاَسْاَلُ اللهَ الَّذِيْ اَكْرَمَنِيْ بِمَعْرِفَتِكُمْ وَ مَعْرِفَةِ

मुझको आप की मारेफ़त से मुकर्रम किया और आप के वलियों की मोहब्बत से और मुझको आप

اَوْلِيَائِكُمْ وَ رَزَقَنِي الْبَرَائَةَ مِنْ اَعْدَائِكُمْ اَنْ يَجْعَلَنِيْ مَعَكُمْ فِي

के दुश्मनों से बरात नसीब की के वो मुझको क़रार दे आप के साथ दुनिया और आख़िरत मे और

الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَنْ يُّثَبِّتَ لِيْ عِنْدَكُمْ قَدَمَ صِدْقٍ فِي الدُّنْيَا وَ

क़दमे सिद्क़ को मेरे लिए आप के नज़दीक साबित करदे दुनिया और आख़िरत मे और मै सवाल

الْاٰخِرَةِ وَ اَسْاَلُهٗ اَنْ يُّبَلِّغَنِيَ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ لَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَ اَنْ

करता हूँ उस से के वो मुझको उस मक़ामे महमूद तक पहुँचा दे जो आप का खुदा के नज़दीक है

يَّرْزُقَنِيْ طَلَبَ ثَارِيْ مَعَ اِمَامٍ هُدًى ظَاهِرٍ نَاطِقٍ بِالْحَقِّ مِنْكُمْ وَ

और मुझको इन्तेक़ाम तलब करने वाला बना दे इमाम, हादी, ज़ाहिर, हक़ के साथ बोलने वाले के

اَسْاَلُ اللّٰهَ بِحَقِّكُمْ وَ بِالشَّاْنِ الَّذِيْ لَكُمْ عِنْدَهٗ اَنْ يُّعْطِيَنِيْ بِمُصَابِيْ

साथ और मै सवाल करता हूँ आपके हक़ के वास्ते से और उस शान के वास्ते से जो आप की खुदा

بِكُمْ اَفْضَلَ مَا يُعْطِيْ مُصَابًا بِمُصِيْبَتِهٖ مُصِيْبَةً مَا اَعْظَمَهَا وَ

की बारगाह मे है के वो मुझको अता करे आप की मुसीबत मे बेहतरीन जज़ा जो किसी मुसीबत

اَعْظَمَ رَزِيَّتَهَا فِي الْاِسْلَامِ وَ فِيْ جَمِيْعِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَللّٰهُمَّ

वाले को मिलती है ऐसी मुसीबत पर जो अज़ीम मुसीबत और तकलीफ़ है इसलाम मे और तमाम

اجْعَلْنِيْ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا مِمَّنْ تَنَالُهٗ مِنْكَ صَلَوَاتٌ وَّ رَحْمَةٌ وَّ مَغْفِرَةٌ

ज़मीन व आसमान वालों मे। खुदाया मुझको उस मकाम मे उनमे से क़रार दे जिन को तेरी तरफ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ مَحْيَايَ مَحْيَا مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ مَمَاتِي مَمَاتَ مُحَمَّدٍ وَّ آلِ

से सलवात, रहमत और मग़फ़िरत मिलती है। खुदाया मेरी ज़िन्दगी मिस्ले हयात मोहम्मद व आले

مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا يَوْمٌ تَبَرَّكَتْ بِهٖ بَنُوْ اُمَيَّةَ وَ ابْنُ آكِلَةِ الْاَكْبَادِ

मोहम्मद क़रार दे और मेरी मौत को मोहम्मद व आले मोहम्मद की मौत की तरह क़रार दे। खुदाया

اللَّعِيْنُ بْنُ اللَّعِيْنِ عَلٰى لِسَانِكَ وَلِسَانِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ

वो दिन है जिसको बनी उमैय्या ने राज़े बरकत क़रार दिया जिगर ख़्वारा के बेटे ने जो मलऊन बिन

فِيْ كُلِّ مَوْطِنٍ وَ مَوْقِفٍ وَقَفَ فِيْهِ نَبِيُّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ اَللّٰهُمَّ

मलऊन है तेरी ज़ुबान पर और तेरे नबी (अ) की ज़ुबान पर। हर मकाम मे और माक़ूफ़ मे जिसमे

الْعَنْ اَبَا سُفْيَانَ وَ مُعَاوِيَةَ وَيَزِيْدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ عَلَيْهِمْ مِنْكَ اللَّعْنَةُ

तेरे नबी (स) ने तवक़्◌ुकुफ़ किया है। खुदा लानत करे अबु सुफ़यान और माविया और यज़ीद

اَبَدَ الْآبِدِيْنَ وَ هٰذَا يَوْمٌ فَرِحَتْ بِهٖ آلُ زِيَادٍ وَ آلُ مَرْوَانَ بِقَتْلِهِمُ

बिन माविया सब पर अपनी तरफ़ से वो लानत जो हमेशा के लिए हो और ये वो दिन है जिस मे

الْحُسَيْنَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ فَضَاعِفْ عَلَيْهِمُ اللَّعْنَ مِنْكَ وَ

आले ज़ियाद और आले मरवान, इमाम हुसैन (अ) के क़त्ल से खुश हुई। खुदाया उनपर अपनी

الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَتَقَرَّبُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ وَفِيْ مَوْقِفِيْ

तरफ़ से लानत मे ज़्यादती कर और अज़ाब मे। खुदाया मै तुझ से क़रीब होता हूँ उस दिन और

هٰذَا وَ اَيَّامِ حَيَاتِيْ بِالْبَرَائَةِ مِنْهُمْ وَ اللَّعْنَةِ عَلَيْهِمْ وَ بِالْمُوَالَاةِ

अपने उस मौकिफ़ मे और ज़िन्दगी के दिनो मे उनसे बराअत के साथ और उन पर लनत के साथ

لِنَبِيِّكَ وَآلِ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

और तेरे नबी और उनकी आल से मोहब्बत के साथ नबी पर और उनकी आल पर सलाम हो।

फिर सौ बार कहे:

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ اَوَّلَ ظَالِمٍ ظَلَمَ حَقَّ مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ آخِرَ تَابِعٍ لَهٗ

खुदाया लानत कर उस पहले ज़ालिम पर जिसने मोहम्मदो आले मोहम्मद पर ज़ुल्म किया व आख़री

عَلٰى ذٰلِكَ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْعِصَابَةَ الَّتِيْ جَاهَدَتِ الْحُسَيْنَ وَ شَايَعَتْ وَ

इत्तेबा करनेवाले ज़ालिम पर। खुदाया उस गिरोह पर लानत कर जिसने इमाम हुसैन (अ) से जंग

بَايَعَتْ وَ تَابَعَتْ عَلٰى قَتْلِهٖ اَللّٰهُمَّ الْعَنْهُمْ جَمِيْعًا.

की और पैरवी की बैअत की और इत्तेबा किया उनके क़तल पर। खुदाया उन सब पर लानत कर

उसके बाद सौ बार कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ وَ عَلَى الْاَرْوَاحِ الَّتِيْ حَلَّتْ بِفِنَائِكَ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह और उन रूहों पर जो आप की बारगाह मे मदफ़ून हैं आप पर

عَلَيْكَ مِنِّيْ سَلَامُ اللهِ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ وَ لَا

मेरी तरफ़ से खुदा का सलाम हो हमेशा के लिए जबतक मै बाक़ी रहूँ और रात दिन बाक़ी रहें

جَعَلَهُ اللهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّيْ لِزِيَارَتِكُمْ اَلسَّلَامُ عَلَى الْحُسَيْنِ وَ عَلٰى

और खुदा उस को मेरी आपकी आख़री ज़ियारत न क़रार दे, सलाम हुसैन (अ) पर और अली

عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ وَ عَلٰى اَوْلَادِ الْحُسَيْنِ وَ عَلٰى اَصْحَابِ الْحُسَيْنِ

इब्ने हुसैन (अ) पर और औलादे हुसैन और असहाबे हुसैन (अ) पर

फिर यूँ दुआ कहे:

اَللّٰهُمَّ خُصَّ اَنْتَ اَوَّلَ ظَالِمٍ بِاللَّعْنِ مِنِّيْ وَ ابْدَأْ بِهٖ اَوَّلًا ثُمَّ الثَّانِيَ

खुदाया मख़सूस कर मेरी लानत से पहले ज़ालिम को और पहले से शुरू कर फिर दूसरा फिर

ثُمَّ الثَّالِثَ ثُمَّ الرَّابِعَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ يَزِيْدَ خَامِسًا وَ الْعَنْ عُبَيْدَ اللهِ

तिसरा और चौथा खुदाया लानत कर पाँचवे नंबर पर। याज़ीद पर लानत कर अब्दुल्लाह बिन

بْنَ زِيَادٍ وَ ابْنَ مَرْجَانَةَ وَ عُمَرَ بْنَ سَعْدٍ وَ شِمْرًا وَ آلَ اَبِيْ سُفْيَانَ وَ آلَ

ज़ियाद मरजाना के बेटे उमर सअद और सिम्र और आले अबू सुफ़यान और आले ज़ियाद और

زِيَادٍ وَ آلَ مَرْوَانَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

मरवान पर रोज़े क़यामत तक।

उसके बाद सजदे में जाकर कहे:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدَ الشَّاكِرِيْنَ لَكَ عَلٰى مُصَابِهِمْ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى

खुदाया तेरे लिए हम्द है शुकर करनेवालों की हम्द और उन की मुसीबत पर खुदा के लिए हम्द है

عَظِيْمِ رَزِيَّتِيْ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ شَفَاعَةَ الْحُسَيْنِ يَوْمَ الْوُرُوْدِ وَ ثَبِّتْ

मेरे अज़ीम ग़म व अन्दोह पर । खुदाया मुझको इमाम हुसैन (अ) की शिफ़ाअत नसीब कर वरिद

لِيْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَكَ مَعَ الْحُسَيْنِ وَ اَصْحَابِ الْحُسَيْنِ الَّذِيْنَ بَذَلُوْا

होने के दिन और मेरे लिए साबित कर अपने नज़दीक क़दमे सिद्क़ को इमाम हुसैन और उन के

مُهَجَهُمْ دُوْنَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ.

साथियों के साथ जिन्होंने राहे खुदा मे जान दी इमामे हुसैन (अ) के पास।

अल्लामा मजलिसी कहते हैं के हज़रत बाक़र (अ) ने फ़रमाया के अगर मुम्किन हो के रोज़ाना अपने घर ही से इस ज़ियारत के साथ हज़रत की ज़ियारत करो तो तुम्हारे वास्ते यह सारा सवाब हो जाएगा।
मोहम्मद बिन ख़ालिद तेयालिसी ने सैफ़ बिन उमैरा से रिवायत की है के मैं स॰फ्वान बिन मेहरान और असहाब की एक जमात के साथ नजफ़ की तरफ़ रवाना होने लगी इमाम सादिक़ (अ) को रूखसत करने के बाद हीरा से मदीना। तो जब ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ) से फ़ारिग़ हुआ तो सफ़वान ने अपना रूख़ मशहदे इमाम हुसैन (अ) की तरफ़ किया और हमसे कहा के अमीरूल मोमिनीन (अ) के बालाए सर से इशारा कर के इमाम हुसैन (अ) को सलाम करो के ऐसा अमल इमामे सादिक़ (अ) ने भी किया है। जब मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़र था सैफ़ का बयान है के इसके बाद सफ़वान ने वही

ज़ियारत पढ़ी जो अलक़मा बिन मोहम्मद हज़रमी ने इमामे मोहम्मद बाक़िर से आशूरे के दिन नक़्ल की है। उसके बाद अमीरूल मोमिनीन (अ) के बालाए सर दो रकत नमाज़ अदा की और नमाज़ के बाद अमीरूल मोमिनीन (अ) को रूख़सत किया और इशारा किया क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) की तरफ़ और ज़ियारतो सलाम के बाद हज़रत को भी विदा किया और जो दुआएं पढ़ी उनमें से एक दुआ यह भी थी:

يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ يَا كَاشِفَ كُرَبِ

ऐ खुदा, ऐ खुदा, ऐ खुदा, बेचारो की दुआ क़ुबूल करने वाले, ग़मज़दों के ग़म को दूर करनेवाले, ऐ फ़रयाद

الْمَكْرُوبِينَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِينَ وَ يَا صَرِيخَ الْمُسْتَصْرِخِينَ

करने वालो वे फ़रयादरस, ऐ दाद ख़वहों क दादरस, और ऐ वो खुदा जो मुझ से रगे गरदन से ज़्यादा क़रीब है

يَا مَنْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَيَّ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ وَ يَا مَنْ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ

और ऐ वो ज़ात जो इन्सान और उसके दिलके दरमियान हाएल हो जाती है ऐ वो ज़ात जो बुलंद मन्ज़र है और

قَلْبِهِ يَا مَنْ هُوَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلَى وَ بِالْاُفُقِ الْمُبِينِ وَ يَا مَنْ هُوَ

उफ़क़ मुबीन मे है और ऐ वो ज़ात जो रहमान व रहीम है और अर्श जिसके तहेते इख़तियर है और ऐ वो खुदा

الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوى وَ يَا مَنْ يَعْلَمُ خَائِنَةَ

जो निगाहों की ख़यानत को जानता है और दिलां के पोशिदा उमूर को पहचानता है और ऐ वो खुदा जिस पर

الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِي الصُّدُورُ وَ يَا مَنْ لَا تَخْفَى عَلَيْهِ خَافِيَةٌ وَ يَا مَنْ

कोई चीज पोशिदा नही है और ऐ वो जिस पर आवाज मे मुश्तबह नही होती है और वो जिस को जाहों रंज नही

لَا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ الْاَصْوَاتُ وَ يَا مَنْ لَا تُغَلِّطُهُ الْحَاجَاتُ وَ يَا مَنْ

देती है और ऐ वो जिस को मलाल नही करती है इल्तेमास करनेवालों की इल्तेमास। ऐ हर फ़ौत शुदा के पालने

لَا يُبْرِمُهُ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ يَا مُدْرِكَ كُلِّ فَوْتٍ وَ يَا جَامِعَ كُلِّ

वाले। ऐ हर मुतफ़रिर्क़ा के जमा करने वाले और ऐ नफ़सों को मौत के बाद पैदा करने वाले,ऐ वो जिस के लिए

شَمْلٍ وَ يَا بَارِءَ النُّفُوْسِ بَعْدَ الْمَوْتِ يَا مَنْ هُوَ كُلَّ يَوْمٍ فِيْ شَأْنٍ يَا

हर रोज़ एक शान है, ऐ हाजतों के पूरा करनेवाले, ऐ ग़मों के दूर करने वाले। ऐ सवालात के अता करने वाले,

قَاضِيَ الْحَاجَاتِ يَا مُنَفِّسَ الْكُرُبَاتِ يَا مُعْطِيَ السُّؤَالَاتِ يَا وَلِيَّ

ऐ रग़बतों के मालिक, व ऐ किफ़ालत करनेवाले अहेम उमूर के, ऐ वो जो काफ़ी होता है हर चीज़ के लिए और

الرَّغَبَاتِ يَا كَافِيَ الْمُهِمَّاتِ يَا مَنْ يَكْفِيْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَ لَا يَكْفِيْ

जिसके लिए आसमान व ज़मीन की कोई च़ीज किफ़ालत नही करती है मै तुझ से सवाल करता हूँ मोहम्मद

مِنْهُ شَيْءٌ فِي السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ عَلِيٍّ وَ

ख़ातमुल अंबिया के हक़ के वास्ते से और अली अमीरूल मोमिनीन (अ) वे हक़ के वासते से और तेरे नबी की

بِحَقِّ فَاطِمَةَ بِنْتِ نَبِيِّكَ وَ بِحَقِّ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ فَاِنِّيْ بِهِمْ

दुख़तरे फ़ातेमा के हक़ और हसन व हुसैन (अ) के हक़ के वास्ते से मै उन लोगों के ज़रिए तेरी तरफ़ अपने उस

اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا وَ بِهِمْ اَتَوَسَّلُ وَ بِهِمْ اَتَشَفَّعُ اِلَيْكَ

मकाम मे मुतवज्जहे हूँ और उनसे तवस्सुल करता हूँ और उस से शिफ़ाअत तलब करता हूँ तेरी तरफ़ और उनके

وَبِحَقِّهِمْ اَسْاَلُكَ وَ اُقْسِمُ وَ اَعْزِمُ عَلَيْكَ وَبِالشَّأْنِ الَّذِى لَهُمْ

हक़ के ज़रिए तुझसे सवाल करता हूँ और तुझको क़सम से याद करता हूँ और उस शान के ज़रिए जो उनकी

عِنْدَكَ وَ بِالْقَدْرِ الَّذِىْ لَهُمْ عِنْدَكَ وَ بِالَّذِى فَضَّلْتَهُمْ عَلَى

तेरे नज़दीक है और उस कद्र के ०ज़रिए जो उनकी है तेरे नज़दीक और उसके ज़रिए क तूने उनको आलमीन

الْعَالَمِينَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ جَعَلْتَهٗ عِنْدَهُمْ وَ بِهٖ خَصَصْتَهُمْ

पर फ़ज़ीलत दी है और तेरे नाम के ज़रिए जिसको तूने क़रार दिया है उनके नज़दीक और उससे तूने उन को

دُونَ الْعَالَمِينَ وَ بِهٖ اَبَنْتَهُمْ وَ اَبَنْتَ فَضْلَهُمْ مِنْ فَضْلِ

मख़सूस किया है आलमीन के मुक़ाबले मे और जिसके ज़रिए तूने उनको जुदा किया है और उनके फ़ज़्ल को

الْعَالَمِينَ حَتّٰى فَاقَ فَضْلُهُمْ فَضْلَ الْعَالَمِينَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَى

जुदा किया है आलमीन के फ़ज़्ल से यहाँ तक के उन का फ़ज़ल तमाम आलमीन के फ़ज़्ल पर बुलंद हो गया।

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَكْشِفَ عَنِّى غَمِّى وَهَمِّىْ وَ كَرْبِى وَ تَكْفِيَنِى

मै तुझ से सवाल करता हूँ के मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद नाज़ल कर और उन से ग़म व अलम और

الْمُهِمَّ مِنْ اُمُورِىْ وَ تَقْضِىَ عَنِّىْ دَيْنِىْ وَ تُجِيْرَنِىْ مِنَ الْفَقْرِ وَ

मुसीबत को दूर कर दे और मुझको और मेरे अहेम उमूर मे का०फ़ी हो जा और मेरे क़र्ज़ को अदा कर दे और

تُجِيرَنِىْ مِنَ الْفَاقَةِ وَ تُغْنِيَنِىْ عَنِ الْمَسْاَلَةِ اِلَى الْمَخْلُوقِينَ وَ

मुझको फ़क़र से बचा ले और मुझको फ़ाक़े से बचाले और मुझको मख़लूक़ीन के सवाल से मुस्तग़ाना बना दे

تَكْفِيَنِيْ هَمَّ مَنْ اَخَافُ هَمَّهٗ وَ عُسْرَ مَنْ اَخَافُ عُسْرَهٗ وَ حُزُوْنَةَ

और मेरे लिए काफ़ी हो जा उसके ग़मसे जिससे मै डर रहा हूँ और उसकी सख़ती से जिससे मै डरता हूँ और

مَنْ اَخَافُ حُزُوْنَتَهٗ وَ شَرَّ مَنْ اَخَافُ شَرَّهٗ وَ مَكْرَ مَنْ اَخَافُ

उसकी दुश्वारी से जिससे मै डरता हूँ और उस के शर से जिससे मै डरता हूँ और उस के मकर से जिस से मै डरता

مَكْرَهٗ وَ بَغْيَ مَنْ اَخَافُ بَغْيَهٗ وَ جَوْرَ مَنْ اَخَافُ جَوْرَهٗ وَ سُلْطَانَ

हूँ और उसकी बग़ावत से जिस से मै डरता हूँ और उस के ज़ुल्म से जिस से मै डरता हूँ और उस के तसललुत

مَنْ اَخَافُ سُلْطَانَهٗ وَ كَيْدَ مَنْ اَخَافُ كَيْدَهٗ وَ مَقْدُرَةَ مَنْ

से जिस से मै डरता हूँ और उस के धोके के जिस से मै डरता हूँ और उस की कुदरत से जिससे मै डरता हूँ और

اَخَافُ مَقْدُرَتَهٗ عَلَيَّ وَ تَرُدَّ عَنِّيْ كَيْدَ الْكَيَدَةِ وَ مَكْرَ الْمَكَرَةِ

मुझ से दूर कर दे धोका देनेवाले के धोके और मक्कारी करने वाले के मक्र को, खुदाया जो मेरे साथ जैसा इरादा

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَرَادَنِيْ فَاَرِدْهُ وَ مَنْ كَادَنِيْ فَكِدْهُ وَ اصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهٗ

करे तू उस के लिए वैसा इरादा कर और जो मेरे साथ धोका करे तू उस के साथ वही कर और मुझ से उस के

وَ مَكْرَهٗ وَ بَأْسَهٗ وَ اَمَانِيَّهٗ وَ امْنَعْهُ عَنِّيْ كَيْفَ شِئْتَ وَ اَنَّى

धोके, मक्र, सख़ती और तकलीफ़ को रद कर दे और मुझसे उसको रोक दे जैसे तू चाहे व जहाँ चाहे, खुदाया

شِئْتَ اَللّٰهُمَّ اشْغَلْهُ عَنِّيْ بِفَقْرٍ لَا تَجْبُرُهٗ وَ بِبَلَاءٍ لَا تَسْتُرُهٗ وَ

उस को मशग़ूल रख ऐसे फ़ाक़े मे के उसका तू जिबरान न करे और ऐसी बला मे के उस को तू न छिपाए और

بِفَاقَةٍ لَا تَسُدُّهَا وَبِسُقْمٍ لَا تُعَافِيْهِ وَذُلٍّ لَا تُعِزُّهٗ وَبِمَسْكَنَةٍ لَا

उसे फ़ाक़ा मे के उस का इलाज न करे और उस बीमारी मे वे उस से आाफ़ियत न रे और ज़िल्लत मे के इज़्ज़त

تَجْبُرُهَا اَللّٰهُمَّ اضْرِبْ بِالذُّلِّ نَصْبَ عَيْنَيْهِ وَ اَدْخِلْ عَلَيْهِ

न दे और ग़ुरबत मे के उसका जिबरान न करे। खुदाया उस के मन्सूबों पर ज़िल्लत की मार पढ़े और उस पर

الْفَقْرَ فِي مَنْزِلِهٖ وَ الْعِلَّةَ وَ السُّقْمَ فِي بَدَنِهٖ حَتّٰى تَشْغَلَهٗ عَنِّيْ

फ़ाक़ा दाख़िल कर उस की मनिज़ल मे और बीमारी दाख़िल कर उस के बदन मे ता के उसको मेरी तरफ़ से

بِشُغْلٍ شَاغِلٍ لَا فَرَاغَ لَهٗ وَ اَنْسِهٖ ذِكْرِيْ كَمَا اَنْسَيْتَهٗ ذِكْرَكَ وَ

ऐसा ग़ाफ़िल कर दे के उसे फ़रागत न हो और मेरी याद उसके दिल से निकाल दे जैसा के तू ने उस से अपनी

خُذْ عَنِّيْ بِسَمْعِهٖ وَ بَصَرِهٖ وَ لِسَانِهٖ وَ يَدِهٖ وَ رِجْلِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَمِيْعِ

याद निकाल दी है और मुझको तकलीफ़ देने से उस के कान, आँख, ज़ुबान, और हाथ और पैर और दिल और

جَوَارِحِهٖ وَ اَدْخِلْ عَلَيْهِ فِيْ جَمِيْعِ ذٰلِكَ السُّقْمَ وَ لَا تَشْفِهٖ حَتّٰى

तमाम अज़ा व जवारेह को रोक दे और उस पर उन सब मे बीमारी दाख़िल कर दे और उस को शिफ़ा न दे ता

تَجْعَلَ ذٰلِكَ شُغْلًا شَاغِلًا بِهٖ عَنِّيْ وَ عَنْ ذِكْرِيْ وَ اكْفِنِيْ يَا كَافِيَ

के तू उसके लिए ऐसा मशग़ाला क़रार दे दे के वो उस की वजह से मुझ से ग़ाफ़िल और मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल

مَا لَا يَكْفِيْ سِوَاكَ فَاِنَّكَ الْكَافِيْ لَا كَافِيَ سِوَاكَ وَ مُفَرِّجٌ لَا

रहे और मेरे लिए काफ़ी हो जा ऐ किफ़ालत करने वाले के तेरे अलावा कोई काफ़ी नही है बेशक तू काफ़ी है

مُفَرِّجَ سِوَاكَ وَ مُغِيثٌ لَا مُغِيثَ سِوَاكَ وَ جَارٌ لَا جَارَ سِوَاكَ

तेरे अलावा कोई काफ़ी नही है और कुशादगी देनेवाला है के तेरे अलावा कोई नही है फ़र्यादरस व कोई नही है

خَابَ مَنْ كَانَ جَارُهٗ سِوَاكَ وَ مُغِيثُهٗ سِوَاكَ وَ مَفْزَعُهٗ اِلٰى

पनाह तेरे अलावा। वो ना काम हुआ जिसकी पनाह गाह तेरे अलावा कोई और हुआ और जिसका फ़रयादरस

سِوَاكَ وَ مَهْرَبُهٗ وَ مَلْجَاهُ اِلٰى غَيْرِكَ وَ مَنْجَاهُ مِنْ مَخْلُوقٍ غَيْرِكَ

तेरे अलावा हुआ और जिसकी फ़रयाद तेरे अलावा की तरफ़ हुई और जिस का फ़रार तेरे ग़ैर की तरफ़ हुआ

فَاَنْتَ ثِقَتِيْ وَ رَجَائِيْ وَ مَفْزَعِيْ وَ مَهْرَبِيْ وَ مَلْجَائِيْ وَ مَنْجَايَ

और पनाहगाह तेरे ग़ैर की तरफ़ और उसकी नजात मख़लूक़ की तरफ़ हुई तेरे अलावा। तू मेरा भरोसा मेरी

فَبِكَ اَسْتَفْتِحُ وَ بِكَ اَسْتَنْجِحُ وَ بِمُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ اَتَوَجَّهُ

उम्मीद, मक़ामे फ़रयाद, मक़ामे फ़रार, मलजा व नजात का मकाम है। मै तुझ से ही फ़तेह चाहता हूँ तुझ से ही

اِلَيْكَ وَ اَتَوَسَّلُ وَ اَتَشَفَّعُ فَاَسْاَلُكَ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ

कामयाबी चाहता हूँ और मोहम्मद व आले मोहम्मद के ज़रिए तेरी तरफ़ मुतवज्जे हूँ मुतवस्सिल हूँ और उसकी

آلِ مُحَمَّدٍ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَكْشِفَ عَنِّيْ غَمِّيْ

शिफ़ारिश लाया हूँ। मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह के हम्द तेरे लिए है और तेरे लिए

وَ هَمِّيْ وَ كَرْبِيْ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا كَمَا كَشَفْتَ عَنْ نَبِيِّكَ هَمَّهٗ وَ غَمَّهٗ

शुक्र है और तेरी तरफ़ फ़रयाद है और तू वो है जिस से मदद चाही है तो मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह ऐ

وَ كَرْبَهٗ وَ كَفَيْتَهٗ هَوْلَ عَدُوِّهٖ فَاكْشِفْ عَنِّيْ كَمَا كَشَفْتَ عَنْهُ وَ

अल्लाह ऐ अल्लाह मोहम्मद व आले मोहम्मद के हक़ के वासते से के तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और आले

فَرِّجْ عَنِّيْ كَمَا فَرَّجْتَ عَنْهُ وَ اكْفِنِيْ كَمَا كَفَيْتَهٗ وَ اصْرِفْ عَنِّيْ

मोहम्मद पर और मुझ से मेरे ग़ाम व अलम व मुसीबत को दूर कर दे मेरे उस मकाम मे जैसा के तूने अपने नबी

هَوْلَ مَا اَخَافُ هَوْلَهٗ وَ مَئُوْنَةَ مَا اَخَافُ مَئُوْنَتَهٗ وَ هَمَّ مَا

से उनके ग़ाम व अलम और करब को दूर किया है और तू काफ़ी हुआ है उन के लिए दुश्मन के ख़ाफ़ से तू दूर

اَخَافُ هَمَّهٗ بِلَا مَئُوْنَةٍ عَلَى نَفْسِيْ مِنْ ذٰلِكَ وَ اصْرِفْنِيْ بِقَضَاءِ

कर दे मुझ से जैसा के तू ने उन से दूर किय है और मेरे लिए कुशादगी क़रार दी जैसी तुने उन के लिए क़रार दी

حَوَائِجِيْ وَ كِفَايَةِ مَا اَهَمَّنِيْ هَمُّهٗ مِنْ اَمْرِ آخِرَتِيْ وَ دُنْيَايَ يَا اَمِيْرَ

है और मेरे लिए काफ़ी हो जैसा के तू उन के लिए काफ़ी हुआ है और मुझ से दूर कर दे उस ख़ौफ़ को जिस से

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ عَلَيْكُمَا مِنِّيْ سَلَامُ اللّٰهِ اَبَدًا مَا بَقِيْتُ

मै डरता हूँ और उस माश०व०कत को जिस से मै डरता और उस ग़ाम को जिस से मै डरता हूँ बग़ैर मेरे नफ़्स

وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ وَ لَا جَعَلَهُ اللّٰهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِكُمَا وَ

पर मश०व०कत के और मेरी हाजतों को पूरा करने का ज़िम्मेदार हो जा और काफ़ी हो जा उस मे जिस का

لَا فَرَّقَ اللّٰهُ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمَا اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ حَيَاةَ مُحَمَّدٍ وَ ذُرِّيَّتِهٖ وَ

हम अहेम हो मेरी आख़ेरत और दीनके अम्र मे ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) और ऐ अबू अब्दुल्लाह आप पर मेरी

اَمِتْنِی مَمَاتَهُمْ وَ تَوَفَّنِی عَلَی مِلَّتِهِمْ وَ احْشُرْنِی فِی زُمْرَتِهِمْ وَ لَا

तरफ़ से खुदा का सलाम हो हमेशा जबतक मै बाक़ी रहूँ अैर रात दिन बाक़ी रहें खुदा न क़रार दे इसको मेरी आप

تُفَرِّقْ بَیْنِی وَ بَیْنَهُمْ طَرْفَةَ عَیْنٍ اَبَدًا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ یَا

दोनो की आख़री ज़ियारत और खुदा मेरो और आप दोनो के दरमियान जुदाई न डाले।खुदाया मुझको ज़िन्दगी

اَمِیرَ الْمُؤْمِنِینَ وَ یَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اَتَیْتُکُمَا زَائِرًا وَ مُتَوَسِّلًا اِلَی

दे जैसी ज़िन्दगी मोहम्मद और उनकी ज़ुर्राrयत की है और मुझको मौत दे उनकी मौत की तरह और मुझको

اللّٰهِ رَبِّی وَ رَبِّکُمَا مُتَوَجِّهًا اِلَیْهِ (بِکُمَا وَ مُسْتَشْفِعًا بِکُمَا) اِلَی

वफात दे उनकी मिल्लत पर और मुझको महशूर कर उनके ज़ुमरे मे और जुदाई न डाल मेरे और उनके दरमियान

اللّٰهِ فِی حَاجَتِی هٰذِهٖ فَاشْفَعَا لِی فَاِنَّ لَکُمَا عِنْدَ اللّٰهِ الْمَقَامَ

चश्मे ज़दन के लिए दुनिया और आख़िरत मे। ऐ अमीरूल मोमिनीन और ऐ अबू अब्दुल्लाह मै आप की ख़िदमत

الْمَحْمُودَ وَ الْجَاهَ الْوَجِیهَ وَ الْمَنْزِلَ الرَّفِیعَ وَ الْوَسِیلَةَ اِنِّی

मे आया हूँ ज़ाएर बनकर और अल्लाह की तरफ़ तवस्सुल करते हुए जो मेरा और आपका रब है और उसकी

اَنْقَلِبُ عَنْکُمَا مُنْتَظِرًا لِتَنَجُّزِ الْحَاجَةِ وَ قَضَائِهَا وَ نَجَاحِهَا مِنَ

तरक मुतवज्जे हूँ आप दोनो के ज़रिए और शिफ़ाअत चाहने वाला हूँ आपसे अल्लाह की तरफ़ अपनी उस हाजत

اللّٰهِ بِشَفَاعَتِکُمَا لِی اِلَی اللّٰهِ فِی ذٰلِکَ فَلَا اَخِیبُ وَ لَا یَکُونُ

मे तो आप दोनो शिफ़ाअत करें मेरी के आप दोनो के लिए मक़ामे महमूद है खुदा के नज़दीक़ और आबरूमंद

مُنْقَلَبِی مُنْقَلَبًا خَائِبًا خَاسِرًا بَلْ یَکُونُ مُنْقَلَبِی مُنْقَلَبًا

दरजा और बुलंद मनिज़ल और वसीला है ।मै आप की ज़ियारत से पलट रहा हूँ इन्तेज़ार करते हुए अपनी हाजत

رَاجِحًا مُفْلِحًا مُنْجِحًا مُسْتَجَابًا لِیْ بِقَضَاءِ جَمِیعِ حَوَائِجِی وَ

के पूरा होने का और हाजत के कामयाब होने का अल्लाह से आप दोनों की शिफ़ाअत से मेरे लिए अल्लाह की

تَشْفَعَا لِیْ اِلَی اللّٰہِ اِنْقَلَبْتُ عَلَی مَا شَاءَ اللّٰہُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا

तरफ़। तो अब मै ना उम्मीद न हूँ और मेरा पलटना ना कामी और खुसरान वाला पलटना न हो बलके मेरा

بِاللّٰہِ مُفَوِّضًا اَمْرِی اِلَی اللّٰہِ مُلْجِئًا ظَھْرِی اِلَی اللّٰہِ وَ مُتَوَکِّلًا عَلَی

पलटना कामयाबी कामरानी रूस्तगारी और रूजहान वाला हो मेरी तमाम हाजतों के पूरा होने के साथ व मेरे

اللّٰہِ وَ اَقُولُ حَسْبِیَ اللّٰہُ وَ کَفَی سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ دَعَا لَیْسَ لِی وَرَاءَ

लिए शिफ़ाअत कीजिए अल्लाह की तरफ़ के मै पलटूं उस पर जो खुदा चाहे और कोई क़ुव्वत और ताक़त नही है

اللّٰہِ وَوَرَاءَ کُمْ یَا سَادَتِی مُنْتَھَی مَا شَاءَ رَبِّی کَانَ وَمَا لَمْ یَشَأْ لَمْ

मगर अल्लाह से मै अपने अम्र को अल्लाह की तरफ़ सौंपे हूँ और मेरी पनाह अल्लाह की तरफ़ है तवक्कुल करते हुए

یَکُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ اَسْتَوْدِعُکُمَا اللّٰہَ وَلَا جَعَلَہُ اللّٰہُ

अल्लाह पर और मै कहता हूँ के अल्लाह के अलावा और आप के अलावा ऐ मेरे सरदार कोई मुनतहा जिस को

آخِرَ الْعَھْدِ مِنِّی اِلَیْکُمَا انْصَرَفْتُ یَا سَیِّدِی یَا اَمِیرَ الْمُؤْمِنِینَ

खुदा ने चाहा वो हो गया और जिस को उसने नही चाहा वो नही हुआ और कोई क़ुव्वत व ताक़त नही है मगर

وَ مَوْلَایَ وَ اَنْتَ یَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ یَا سَیِّدِی وَ سَلَامِی عَلَیْکُمَا

अल्लाह मै आप दोनो को खुदा को सौपता हूँ और खुदा न क़रार दे मेरे लिए ये आख़री ज़ियारत। मै पलट रहा

مُتَّصِلٌ مَا اتَّصَلَ اللَّیْلُ وَ النَّهَارُ وَاصِلٌ ذٰلِكَ اِلَیْكُمَا غَیْرُ

हूँ ऐ मेरे सरदार ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) और मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह ऐ मेरे सरदार ओर मेरा मुसलसल

مَحْجُوبٍ عَنْكُمَا سَلَامِی اِنْ شَاءَ اللّٰهُ وَ اَسْاَلُهٗ بِحَقِّكُمَا اَنْ یَشَاءَ

सलाम हो आप दोनो पर शब व रोज़ और सलाम पहुँचता रहे आप दानो तक और आप दोनो से पोशीदा न रहे

ذٰلِكَ وَ یَفْعَلَ فَاِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَجِیْدٌ انْقَلَبْتُ یَا سَیِّدِیْ عَنْكُمَا تَائِبًا

मेरा सलाम इनशाअल्लाह और मै उस से सवाल करता हूँ आप दोनो के हक़ के वासते से के वो यही चाहे और

حَامِدًا لِلّٰهِ شَاكِرًا رَاجِیًا لِلْاِجَابَةِ غَیْرَ آیِسٍ وَ لَا قَانِطٍ آئِبًا

करे वो हमीद और मजीद है। मै पलट रहा हूँ ऐ मेरे सरदार आप से, तौबा करते हुए, हम्दे खुदा करते हुए, शुक्र

عَائِدًا رَاجِعًا اِلٰی زِیَارَتِكُمَا غَیْرَ رَاغِبٍ عَنْكُمَا وَ لَا مِنْ

करते हुए, उम्मीद लगाए हुए क़ुबूलियत की, बेग़ैर मायूसी और क़नूतियत के पलटनेवाला होते हुए आप की

زِیَارَتِكُمَا بَلْ رَاجِعٌ عَائِدٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا

ज़ियारत के लिए बग़ैर मुनहरिफ़ हुए आप दोनो की ज़ियारत और ज़ात से बलके पलटने वाला हूँ इनशाअल्लाह

بِاللّٰهِ یَا سَادَتِی رَغِبْتُ اِلَیْكُمَا وَ اِلٰی زِیَارَتِكُمَا بَعْدَ اَنْ زَهِدَ

और कोई ताक़त व क़ूव्वत नही है मगर अल्लाह के ज़रिए ऐ मेरे सरदार मै आप दोनो की जानिब राग़िब हूँ और

فِيكُمَا وَفِي زِيَارَتِكُمَا اَهْلُ الدُّنْيَا فَلَا خَيَّبَنِيَ اللهُ مِمَّا رَجَوْتُ وَ

आप की ज़ियारत की तरफ़। बार उस के के मै ने अहेले दुनिया को आप से और आप की ज़ियारत से बे रग़बत

مَا اَمَّلْتُ فِي زِيَارَتِكُمَا اِنَّهٗ قَرِيبٌ مُجِيبٌ.

देखा तो खुदा मुझको मेरी उम्मीद मे ना काम न करे जो मैने आप दोनो की ज़ियारत से उम्मीद की है, बेशक वो

सैफ़ बिन उमैर का बयान है के मैंने सफ़वान से सवाल किया के अलक़मा बिन मोहम्मद ने इस दुआ को हमारे लिए इमाम बाक़िर (अ) से रिवायत नहीं की है बल्के सिर्फ़ ज़ियारत को बयान किया है।

तो उन्होंने कहा मैं खुद इमाम सादिक़ (अ) के साथ इस जगह आया था तो आपने वही अमल किया था जो मैंने किया है। ज़ियारत भी और दुआ भी। इसके बाद दो रकत नमाज़ अदा की जैसे के हमने पढ़ी है और वैसे ही विदा किया था जैसे हमने विदा किया।

इसके बाद सफ़वान ने कहा के हज़रत सादिक़ (अ) ने मुझ से फ़रमाया था के इस ज़ियारत की पाबंदी करना और इस दुआ को पढ़ते रहना के मैं खुदा की बारगाह में इस ज़ियारत के पढ़ने वाले और इस तरह की दुआ नज़दीक या दूर से करने वाले के लिए ज़ामीन हूँ के उसकी दुआ क़ुबूल होगी और उसकी सई मशकूर होगी और उसका सलाम क़ुबूल हो जाएगा।

और उसकी हाजतें पूरी होंगी और परवरदिगार कार तरफ़ से जो मर्तबा चाहेगा वह मिलेगा और ना उम्मीद नहीं होगा। ऐ सफ़वान मैंने ज़ियारत को इसी ज़मानत के साथ अपने पिदरे बुज़ुर्गवार से और उन्होंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार अली बिन हुसैन (अ) से और उन्होंने इमाम हुसैन (अ) से और उन्होंने अपने भाई इमाम हसन (अ) से और उन्होंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार अमीरूल मोमिनीन (अ) से और अमीरूल मोमिनीन (अ) ने रसूले खुदा (स) और रसूले खुदा (स) ने जिब्रईल से और जिब्रईल ने परवरदिगार से हासिल किया है। और परवरदिगार ने अपनी ज़ाते मुक़द्दस की क़सम खाई है के जो शख़्स नज़दीक या दूर से इमाम हुसैन (अ) की यह ज़ियारत करेगा और यह दुआ पढ़ेगा तो

उसकी ज़ियारत को क़ुबूल कर लूंगा और उसकी हर ख़्वाहिश को पूरा कर दूंगा और वह मेरी बारगाह से ना उम्मीद और मायूस वापस न जाएगा। बल्के हाजत पूरी होने के बाद और दोज़ख से आज़ाद होने के बाद और जन्नत का हक़दार होने के बाद वापस जाएगा और अगर किसी के बारे में सिफ़ारिश कर देगा तो उसे भी क़ुबूल कर लूँगा। और यह भी फ़रमाया के हम अहलेबैत (अ) के दुशमनो के अलावा के उनके हक़ में किसी की भी दुआ क़ुबूल न होगी जैसा के परवरदिगारे आलम ने अपनी ज़ाते अक़्दस की क़सम खाकर फ़रमाया है और हमको उसका गवाह बनाया है और इसके गवाह आसमान के फ़रिश्ते भी हैं। इसके बाद जिब्रईल ने कहा या रसूल अल्लाह (स) खुदा ने मूझे आपके पास भेजा है के मैं आपको और अली व फ़ातेमा व हसन व हुसैन और उनकी औलाद के इमामों को बशारत दूँ जो आपके लिए और उन आइम्मा के लिए और आपके शिओं के लिए क़यामत के दिन बाईसे मसर्रत है।

सफ़वान जब तुम्हारे लिए कोई हाजत पेश आ जाए तो यह ज़ियारत जहाँ से चाहो पढ़ लो और इस दुआ को भी पढ़ लो और परवरदिगार से हाजत तलब करो। इन्शाअल्लाह ज़रूर पूरी होगी। और खुदा अपने रसूल (स) से किए हुए वादे के ख़िलाफ़ न करेगा।

लेखक के अनुसार नजमुस साकिब में सय्यद अहमद रशती की इमामे ज़माना (अ) से सफ़रे हज में मुलाक़ात के ज़ैल में यह हिकायत नक़्ल की गई है जिसमें हज़रत का यह इरशाद है के ज़ियारते आशूरा क्यों नहीं पढ़ते हो? आशूरा आशूरा आशूरा। इसको हम इन्शाअल्लाह ज़ियारते जामेआ कबीरा के बाद नक़्ल करेंगे।

हमारे उसताद शेख़ नूरी ने फ़रमाया है के ज़ियारते आशूरा अपने फ़ज़्लो मकाम में आम ज़ियारतों जैसी नहीं लेकिन बज़ाहिर यह कलामे मासूम में शामिल नहीं है। अगरचे उनके पाकीज़ा क़ल्ब से जो चीज़ भी सामने आती है वह सब आलमे बाला का इलहाम होता है। बल्के यह ज़ियारत अहादीसे क़ुदसिया में शामिल है। के उसी तरतीब से ज़ियारत व लअन व सलाम व दुआ के साथ हज़रते अहदियत की बारगाह से जिब्रईले अमीन के ज़रीए ख़ातेमुन नबीइन तक पहुँची है। और तजुरबात की बिना पर चालीस रोज़ या

उस से कम उसकी पाबंदी की ज़ाए हवाएज उसूले मक़ासिद और दुश्मनों के दिफ़ा के लिए बेनज़ीर है। और उसकी पाबंदी से जो फ़वाएद सामने आए हैं उनमें सबसे अहम फ़ायदा वह है जो किताबे दारूस सलाम में मैंने ज़िक्र किया है।

उसका खुलासा यह है के मर्दे सालेह मुत्तकी हाज मुल्ला हसन यज़दी जो नजफ़े अशरफ़ के मुजाविर थे और मुसलसल मशग़ूले इबादत व ज़ियारत रहा करते थे, उन्होंने मर्दे सिक़ा हाज मोहम्मद अली यज़दी से जो मर्दे फ़ाज़ल व सालेह थे और हमेशा उमूरे आख़िरत में मशग़ूल रहते थे और रातों को य॰ज्द के उस मक़बरे में उस मकाम पर उसे दफ़्न किया गया जहाँ वह बुज़ुर्गवार रात गुज़ारते थे।

दफ़्न के एक महीने के अंदर उन्होंने उसको ख़्वाब में देखा के इन्तेहाई हसीन शक्ल में उनके पास आया है।

उन्होंने कहा के मुझे मालूम है तेरे काम की शुरूआत और अंत और उसका ज़ाहिरो बातिन ऐसा नहीं था जिसके बारे में इस नेकी का एहतेमाल पाया जाता हो और तेरा कारोबार भी अज़ाब के अलावा और किसी चीज़ का सबब नहीं था। तू आाख़िर इस मंज़ल तक कैसे पहुँच गया? उसने कहा आप बिलकुल सही कहते हैं। मैं मौत के दिन से कल तक सख़्त तरीन अज़ाब में मुब्तेला था के उसताद अशरफ़ हद्दाद की बीवी का देहांत हुआ और उनको इस मकाम पर दफ़्न किया गया जो यहाँ से सौ हात के फ़ासले पर है और शबे वफ़ात इमाम हुसैन (अ) तीन बार उसको देखने के लिए तशरीफ़ लाए और तीसरी बार हुक्म दिया के इस मक़बरे से हुक्म उठा लिया जाए। इसके बाद मेरे हालात बिल्कुल ठीक हो गए और मैं इन्तेहाई वुसअत और नेमत में हूँ। वह हैरानो परेशान ख़्वाब से बेदार हुए के अशरफ़ हद्दाद को नहीं पहचानते थे न उस महल्ले को जानते थे। लेहाज़ा लोहारों के बाज़ार में पता लगाया और जब मालूम हो गया तो उससे पूछा के क्या तुम्हारी कोई ज़ौजा थी। उसने कहा हाँ। कल उसका इन्तेक़ाल हो गया और मैंने फ़लां जगाह पर उसे दफ़्न किया है। पूछा क्या वह इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत के लिए गई थी? उसने कहा नहीं। पूछा क्या ज़िक्रे मसाएब करती थी? कहा नहीं। कहा क्या

ताज़यादारी की मजलिसें करती थीं? कहा यह भी नहीं। मगर तुम यह सब दरयाफ़्त क्यों कर रहे हो? उन्होंने अपना ख़्वाब बयान किया तो उसने कहा के हाँ मेरी बीवी ज़ियारते आशूरा की पाबंद थी।

दूसरी ज़ियारत - ज़ियारते आशूरा ग़ैर मारूफ़ा

जो दूसरी ज़ियारतों के साथ अज्र सवाब में शरीक है। मगर इस में सौ बार लअन और सौ बार सलाम का ज़िक्र नहीं है। और यह उन लोगों के वास्ते है जो किसी अहम काम में मशग़ूल हों एक अज़ीम कामयाबी का रास्ता है। इस ज़ियारत का तरीक़ा जैसा के मज़ारे कदीम में नक़्ल हुआ है यह है:
जो व्यक्ति चाहता है के इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत दूर या नज़दीक से करे वह गुस्ल कर के सहरा में या घर की छत पर जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे जिसमे सूरह तौहीद पढ़े। सलाम के बाद क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) की तरफ़ इशारा कर के यह सलाम पेश करे याने करबला का रूख़ कर के खुज़ू और खुशू के साथ यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ الْبَشِيْرِ

सलाम आप पर ऐ फ़रजंदे रसूले खुदा, सलाम आपपर ऐ फ़रज़ंदे बशीर व नज़ीर और फ़रज़ंदे

النَّذِيْرِ وَ ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ

सय्यदुल औसिया, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़ातेमा (स) सय्यदुन निसाएल आलमीन, सलाम

نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ وَ ابْنَ خِيَرَتِهٖ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ बरगुज़ीदए खुदा और उसके फ़रज़ंद सलाम आप पर ऐ खुदा के इन्तेक़ाम और उसके

عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللهِ وَ ابْنَ ثَارِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوِتْرُ الْمَوْتُوْرُ

फ़रज़ंद, सलाम आप पर ऐ वित्रे मौतूर, सलाम आप पर ऐ इमामे हादी पाकीज़ा और उन रूहों पर जो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ الْهَادِیُ الزَّكِيُّ وَ عَلٰى اَرْوَاحٍ حَلَّتْ

आपकी बारगाह मे हाज़र हैं और आप के पड़ोस मे मुक़ीम हैं और आप के ज़वार के साथ वारिद होती

بِفِنَآئِكَ وَ اَقَامَتْ فِیْ جِوَارِكَ وَ وَفَدَتْ مَعَ زُوَّارِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

हैं, सलाम आपपर मेरी तरफ़ से जब तक मै बाक़ी हूँ और शबो रोज़ बाक़ी हैं आप की मुसीबत से

مِنِّیْ مَا بَقِيْتُ وَ بَقِیَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ فَلَقَدْ عَظُمَتْ بِكَ الرَّزِيَّةُ وَ

मुसीबते अज़ीम हो गई और तमाम मोमिनों और मुसलमानों और आसमानों और ज़मीनों के तमाम

جَلَّتْ فِی الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ فِیْ اَهْلِ السَّمٰوَاتِ وَ اَهْلِ

रहनेवालों मे। बेशक हम खुदा के लिए है और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। अल्लाह का दुरूद और

الْاَرَضِيْنَ اَجْمَعِيْنَ فَاِنَّ لِلّٰهِ وَاِنَّ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ صَلَوَاتُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

बरकात व तहय्यात आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह हुसैन (अ) और आपके पाकीज़ा व मुनताख़िब आबा

وَ تَحِيَّاتُهٗ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ الْحُسَيْنِ وَ عَلٰى اٰبَآئِكَ الطَّيِّبِيْنَ

पर और आप की ज़ुर्रा्यत पर जो हादी व मेहदी है खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने आप को

الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ عَلٰى ذُرِّيَّاتِكُمُ الْهُدَاةِ الْمَهْدِيِّيْنَ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً

छोड़ दिया और आप की मदद तर्क करदी और खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने ज़ुल्म की

خَذَلَتْكَ وَ تَرَكَتْ نُصْرَتَكَ وَ مَعُوْنَتَكَ وَ لَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسَّسَتْ

बुनयाद को आपके लिए क़ाएम किया और बिसाते ज़ुल्म को आप के लिए फैला दिया और आप की

اَسَاسَ الظُّلْمِ لَكُمْ وَمَهَّدَتِ الْجَوْرَ عَلَيْكُمْ وَطَرَّقَتْ اِلٰى اَذِيَّتِكُمْ

अज़ीयत और बेदारी की तरफ़ रासता खुला और ज़ुल्म किया आपके दयार और आपके शियों मे। मै

وَ تَحَيُّفِكُمْ وَ جَارَتْ ذٰلِكَ فِيْ دِيَارِكُمْ وَ اَشْيَاعِكُمْ بَرِئْتُ اِلَى اللّٰهِ عَزَّ

अल्लाह की तरफ़ बरी हूँ और आप की तरफ़ ऐ मेरे सरदार व मौला और इमाम उन सबसे और उनके

وَ جَلَّ وَاِلَيْكُمْ يَا سَادَاتِيْ وَ مَوَالِيَّ وَ اَئِمَّتِيْ مِنْهُمْ وَ مِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ

शियों से और ताबईन से और मै खुदा से सवाल करता हूँ जिस ने आप के मकाम को मुकर्रम किया ऐ

اَتْبَاعِهِمْ وَ اَسْئَلُ اللّٰهَ الَّذِيْ اَكْرَمَ يَا مَوَالِيَّ مَقَامَكُمْ وَ شَرَّفَ

मौला और आप की मनिज़लत को मुशरर्फ़ किया और शान को ०शरफ़ दिया के वो मुझको मुकर्रम

مَنْزِلَتَكُمْ وَ شَأْنَكُمْ اَنْ يُّكْرِمَنِيْ بِوِلَايَتِكُمْ وَ مَحَبَّتِكُمْ وَ الْاِيْتِمَامِ

कर दे आप की वेलायत व मोहब्बत से और आप की इमामत से और आप के दुश्मनों से बरी होने

بِكُمْ وَبِالْبَرَآئَةِ مِنْ اَعْدَآئِكُمْ وَ اَسْئَلُ اللّٰهَ الْبَرَّ الرَّحِيْمَ اَنْ يَّرْزُقَنِيْ

के ज़रिए और मै खुदाए बुज़ुर्ग व महेरबान से सवाल करता हूँ के आप की मवद्दत नसीब करे और

مَوَدَّتَكُمْ وَ اَنْ يُّوَفِّقَنِيْ لِلطَّلَبِ بِثَارِكُمْ مَعَ الْاِمَامِ الْمُنْتَظَرِ

मुझको तौफ़ीक़ दे आप के ख़ून के इन्तेक़ाम लेने की इमामे मुन्तिज़र हादी के साथ जो आले मोहम्मद

الْهَادِیْ مِنْ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ یَّجْعَلَنِیْ مَعَكُمْ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَنْ

से हैं और मुझको आप के साथ क़रार दे दुनिया और आख़िरत मे और मुझको आप के उस मक़ामे

یُّبَلِّغَنِیْ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ لَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَ اَسْئَلُ اللّٰهَ عَزَّ وَ جَلَّ

महमूद तक पहुँचा जो अल्लाह के नजदीक है और मै सवाल करता हूँ खुदाए अ०ज़्जो जल से आप के

بِحَقِّكُمْ وَ بِالشَّاْنِ الَّذِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ یُّعْطِیَنِیْ بِمُصَابِیْ بِكُمْ

हक़ के ज़रिए और उस शान के ज़रिए जो खुदा ने आप के लिए क़रार दी है के वो मुझको अता करदे

اَفْضَلَ مَا اَعْطٰی مُصَابًا بِمُصِیْبَةٍ اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ یَا لَهَا مِنْ

आप की मुसीबत पर बेहतरीन अज्र जो किसी मुसीबत वाले को दिया है। मै अल्लाह के लिए हूँ और

مُّصِیْبَةٍ مَّا اَفْجَعَهَا وَ اَنْكَاهَا لِقُلُوْبِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُسْلِمِیْنَ فَاِنَّا لِلّٰهِ

उसी की तरफ़ लौटने वाला हूँ। कितनी बड़ी मुसीबत है कितनी ग़म अंगेज़ व तकलीफ़ वो है मोमिनों

وَ اِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اجْعَلْنِیْ فِیْ

और मुसलमानों के दिलों के लिए तो हम अल्लाह के लिए है और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले

مَقَامِیْ هٰذَا مِمَّنْ تَنَالُهٗ مِنْكَ صَلَوَاتٌ وَّ رَحْمَةٌ وَّ مَغْفِرَةٌ وَّ اجْعَلْنِیْ عِنْدَكَ

हैं खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको क़रार दे उस मकाम पर उन

وَجِیْهًا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ فَاِنِّیْ اَتَقَرَّبُ اِلَیْكَ

लोगों मे जिन के लिए तेरी तरफ़ सलवाते रहमत मग़फ़ेरत है और मुझको अपनी बारगाह मे आबरू

بِمُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ وَ اِنِّيْ

मंद बना दे दुनिया और आख़िरत मे और मुक़र्रबीन मे से। मै तेरी क़ुरबत चाहता हूँ मोहम्मद व आले

اَتَوَسَّلُ وَ اَتَوَجَّهُ بِصَفْوَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ خِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ مُحَمَّدٍ

मोहम्मद के वास्ते से तेरा दुरूद हो मोहम्मद और उन की कुल आल पर। खुदाया मै वसीला बनाता

وَّ عَلِيٍّ وَ الطَّيِّبِيْنَ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ

हूँ और मुतवज्ञे हो रहा हूँ तेरी मख़लूक मे बरगुज़ीदा और तेरी बेहतरीन मख़लूक़ मोहम्मद और अली

اجْعَلْ مَحْيَايَ مَحْيَاهُمْ وَ مَمَاتِيْ مَمَاتَهُمْ وَ لَا تُفَرِّقْ بَيْنِيْ وَ بَيْنَهُمْ فِيْ

और उनकी पाकीज़ा ज़ुर्रrयत के ज़रिए। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और आले मोहम्मद

الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ اَللّٰهُمَّ وَ هٰذَا يَوْمٌ تُجَدَّدُ فِيْهِ

पर और मेरी ज़िन्दगी को उनकी ज़िन्दगी की तरह और मौत को उनकी मौत की तरह क़रार दे और

النِّقْمَةُ وَ تُنَزَّلُ فِيْهِ اللَّعْنَةُ عَلَى اللَّعِيْنِ يَزِيْدَ وَ عَلٰى اٰلِ يَزِيْدَ عَلٰٓى اٰلِ

मेरे और उनके दरमीया दुनिया और आख़ेरत मे जुदाई न डालना। तू दुआओं का सुनने वाला है।

زِيَادٍ وَ عُمَرَ بْنِ سَعْدٍ وَ الشِّمْرِ اَللّٰهُمَّ الْعَنْهُمْ وَ الْعَنْ مَنْ رَضِيَ

खुदाया ये वो दिन है के जिस मे अज़ाब की तजदीद होती है जिस मे लानत नाज़ल होती है मलअुन

بِقَوْلِهِمْ وَ فِعْلِهِمْ مِنْ اَوَّلٍ وَ اٰخِرٍ لَعْنًا كَثِيْرًا وَ اَصْلِهِمْ حَرَّ نَارِكَ وَ

यज़ीद और आले यज़ीद और आले ज़ियाद और उमर बिन सअद और शिम्र पर। खुदाया उन सब

اَسْكِنْهُمْ جَهَنَّمَ وَ سَآئَتْ مَصِيْرًا وَّ اَوْجِبْ عَلَيْهِمْ وَ عَلٰى كُلِّ مَنْ

पर लानत कर और उस पर लानत कर जो उनके क़ौल व फ़ेल पर राज़ी हो। अव्वलीन व आख़िरीन

شَايَعَهُمْ وَبَايَعَهُمْ وَ تَابَعَهُمْ وَ سَاعَدَهُمْ وَرَضِيَ بِفِعْلِهِمْ وَ افْتَحْ

मे से ज़्यादा से ज़्यादा लानत और उनको आतिशे जहन्नम मे जला और उनको जहन्नम मे साकिन

لَهُمْ وَ عَلَيْهِمْ وَ عَلٰى كُلِّ مَنْ رَضِيَ بِذٰلِكَ لَعَنَاتِكَ الَّتِيْ لَعَنْتَ بِهَا

कर जो बदतरीन ठिकाना है और उन पर जहन्नम वाजिब कर और हर उस शख़्स पर जो उनकी पैरवी

كُلَّ ظَالِمٍ وَّ كُلَّ غَاصِبٍ وَّ كُلَّ جَاحِدٍ وَّ كُلَّ كَافِرٍ وَّ كُلَّ مُشْرِكٍ وَّ كُلَّ

करे और बैयत करे और इत्तेबा करे और मदद और उन के फेल पर राज़ी हो और खोल दे उनके

شَيْطَانٍ رَّجِيْمٍ وَّ كُلَّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ يَزِيْدَ وَ اٰلَ يَزِيْدَ وَ

लिए और उनपर और हर उस शख़्स पर जो राज़ी हो उनसे अपनी लानतों के दरवाजे जिसके ज़रिए

بَنِيْ مَرْوَانَ جَمِيْعًا اَللّٰهُمَّ وَ ضَعِّفْ غَضَبَكَ وَ سَخَطَكَ وَ عَذَابَكَ وَ

तूने लानत की है किसी ज़ालिम, ग़ासिब, मुनकर, काफ़र और मुशरिक और शैतान मरदुद और

نَقِمَتَكَ عَلٰٓى اَوَّلِ ظَالِمٍ ظَلَمَ اَهْلَ بَيْتِ نَبِيِّكَ اَللّٰهُمَّ وَ الْعَنْ جَمِيْعَ

जब्बार व सरकश पर खुदाया लानत कर यज़ीद और आले यज़ीद और बनी मरवान सब पर खुदाया

الظَّالِمِيْنَ لَهُمْ وَ انْتَقِمْ مِنْهُمْ اِنَّكَ ذُوْ نِقْمَةٍ مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ

अपने ग़ज़ब और नाराज़गी और अज़ाब मे ज़्यादती कर उस शख़्स पर जिसने सबसे पहले तेरे नबी

اَللّٰهُمَّ وَ الْعَنْ اَوَّلَ ظَالِمٍ ظَلَمَ اٰلَ بَيْتِ مُحَمَّدٍ وَّ الْعَنْ اَرْوَاحَهُمْ وَ

के अहलेबैत पर ज़ुल्म किया। खुदाया लानत कर उनके तमाम ज़ालिमों पर और उनसे इन्तेक़ाम ले

دِيَارَهُمْ وَ قُبُوْرَهُمْ وَ الْعَنِ اللّٰهُمَّ الْعِصَابَةَ الَّتِيْ نَازَلَةِ الْحُسَيْنَ بْنَ

बेशक तू मुजरिमों से इन्तेक़ाम लेनेवाला है। खुदाया लानत कर उस पहले शख़्स पर जिसने अहलेबैते

بِنْتِ نَبِيِّكَ وَ حَارَبَتْهُ وَ قَتَلَتْ اَصْحَابَهٗ وَ اَنْصَارَهٗ وَ اَعْوَانَهٗ وَ

मोहम्मद पर ज़ुल्म किया और उन तमाम ज़ालिमो की रूहों और दयार और कबरों पर लानत कर।

اَوْلِيَآئَهٗ وَ شِيْعَتَهٗ وَ مُحِبِّيْهِ وَ اَهْلَ بَيْتِهٖ وَ ذُرِّيَّتَهٗ وَ الْعَنِ اللّٰهُمَّ

खुदाया लानत कर उस गोरोह पर जो फ़रज़ंदे रसूले खुदा से लड़ने आया और उनसे जंग की और

الَّذِيْنَ نَهَبُوْا مَالَهٗ وَ سَلَبُوْا حَرِيْمَهٗ وَ لَمْ يَسْمَعُوْا كَلَامَهٗ وَ لَا مَقَالَهٗ

उनके असहाब को क़त्ल किया और अन्सार को और मददगारों को और वलियों को और शियों को

اَللّٰهُمَّ وَ الْعَنْ كُلَّ مَنْ مَبْلَغَهٗ ذٰلِكَ فَرَضِيَ بِهٖ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ

और मोहिब्बों को और उनके अहलेबैत (अ) को और उनकी औलाद को, खुदाया लानत कर उन

الْاٰخِرِيْنَ وَ الْخَلَآئِقِ اَجْمَعِيْنَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا

लोगों पर जिन्होंने इमाम का माल छीना और हरम को लौटा और उन का कलाम और क़ौल नही

عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنَ وَ عَلٰى مَنْ سَاعَدَكَ وَ عَاوَنَكَ وَ وَاسَاكَ بِنَفْسِهٖ وَ

सुना। खुदाया लानत कर हर उस शख़्स पर जिस तक आवाज़े ज़ुल्म पहुँची और वो उस पर राज़ी

بَذَلَ مُهْجَتَهٗ فِيْ الذَّبِّ عَنْكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ وَ عَلَيْهِمْ وَ

रहा अव्वलीन व आख़िरीन मे से और तमाम मख़लूक़ मे से रोज़े क़यामत तक। सलाम आप पर ऐ

عَلٰى رُوْحِكَ وَ عَلٰى اَرْوَاحِهِمْ وَ عَلٰى تُرْبَتِكَ وَ عَلٰى تُرْبَتِهِمْ اَللّٰهُمَّ

अबू अब्दुल्लाह हुसैन (अ) और उस पर जिस ने आप की मदद की और नुसरत की और अपनी जान

لَقِّهِمْ رَحْمَةً وَّ رِضْوَانًا وَّ رَوْحًا وَّ رَيْحَانًا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا

के ज़रिए मवासात किया और अपना ख़ून बहाया आप से ज़ुल्म के दूर करने के लिए। सलाम आप

اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ يَا ابْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ يَا ابْنَ

पर ऐ मेरे मौला और आप के साथियों पर और आप की रूह पर और उनकी रूहों पर और आप की

سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَهِيْدُ يَا ابْنَ الشَّهِيْدِ

तुरबत पर और उनकी तुरबतों पर खुदाया उनको रहमत व रिज़वान और निशात व शादमानी अता

اَللّٰهُمَّ بَلِّغْهُ عَنِّيْ فِيْ هٰذِهِ السَّاعَةِ وَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ وَ فِيْ هٰذَا الْوَقْتِ وَ

करे। सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह ऐ फ़रज़ंदे ख़ातमुल अंबिया, सलाम आप पर ऐ

كُلِّ وَقْتٍ تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ وَ

शहीद व फ़रज़ंदे शहीद। खुदाया उन को पहुँचा दे मेरी तरफ़ से इसी साअत मे और इसी राज़ और

عَلَى الْمُسْتَشْهَدِيْنَ مَعَكَ سَلَامًا مُّتَّصِلًا مَّا اتَّصَلَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ

इसी वक़्त और हर वक़्त मे तहय्या और सलाम। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे सरदारे आलमीन और

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ

आप के साथ शहीद होने वालों पर मुसलसल सलाम जब तक शबो रोज़ बाक़ी रहें। सलाम हो हुसैन

الْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْعَبَّاسِ بْنِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

बिन अली (अ) पर। सलाम हो अली बिन हुसैन (अ) शहीद पर। सलाम हो अब्बास बिन अमीरूल

الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ

मोमिनीन (अ) शहीद पर। सलाम हो औलादे अमीरूल मोमिनीन (अ) के शहीदों पर। सलाम हो

عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ جَعْفَرٍ وَّ عَقِيْلٍ اَلسَّلَامُ عَلٰى كُلِّ مُسْتَشْهَدٍ

औलादे जाफ़र व अक़ील के शोहदा पर। सलाम हो तमाम शहीद मोमिनीन पर। खुदाया दुरूद नाज़ल

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ بَلِّغْهُمْ عَنِّيْ تَحِيَّةً

फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनको पहुँचा मेरी तरफ़ से तहय्यह और सलाम। सलाम

وَّ سَلَامًا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ

आप पर ऐ रसूले खुदा और आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात हो खुदा आप को सब्रे

وَ بَرَكَاتُهٗ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ وَلَدِكَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ

जमील अता फ़रमाए आप के फ़रजंद हुसैन (अ) की मुसीबत मे। सलाम आप पर ऐ अबुल हसन

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ وَ

(अ) ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) और सलाम आप पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो खुदाया

رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَحْسَنَ اللهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ وَ لَدِكَ الْحُسَيْنِ

आपके अज्र को नेक क़रार दे आप के फ़रज़ंद हुसैन (अ) के ग़ाम व अलम मे। सलाम आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ عَلَيْكِ

फ़ातेमा ऐ दुख़तरे रसूलर खुदा और आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात हो खुदा आप

السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَحْسَنَ اللهُ لَكِ الْعَزَآءَ فِي وَلَدِكِ

के अज्र को नेक करे आपके फ़रज़ंदे इमामे हुसैन (अ) की ताज़ियत व मुसीबत मे। सलाम आप पर

الْحُسَيْنِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ وَ

ऐ अबु मोहम्मद हसन (अ) और आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात हो खुदा आपके

رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَحْسَنَ اللهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ اَخِيْكَ الْحُسَيْنِ

अज्र को नेक करे आपके भाई हुसैन (अ) की ताज़ीयत मे। सलाम हो मोमिनीन व मोमिनात की रूहों

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَرْوَاحِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ الْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ وَ

पर चाहे ज़िन्दा हों या मुर्दा व उनपर सलाम हो और अल्लाह की रहमतो बरकात हो अल्लाह आप सबके

الْاَمْوَاتِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَحْسَنَ اللهُ لَهُمُ

अज्र को नेक करे उनके मौला हुसैन की ताज़ीयत मे। खुदाया हम को क़रार दे इमाम हुसैने (अ) के

الْعَزَآءَ فِيْ مَوْلَاهُمُ الْحُسَيْنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنَ الطَّالِبِيْنَ بِثَارِهٖ

ख़ून का बदला लेनेवालों मे इमामे आदिल (इमामे जमाना) के साथ जिसके ज़रिए तू इसलाम और

مَعَ اِمَامٍ عَدْلٍ تُعِزُّ بِهِ الْاِسْلَامَ وَ اَهْلَهٗ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

अहले इसलाम को इज़्ज़त देगा ऐ आलमीन के परवरदेगार।

उसके बाद सजदे में जाए और कहे:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى جَمِيْعِ مَا نَابَ مِنْ خَطْبٍ وَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ

खुदाया तेरे लिए हम्द है तमाम उन मसाएब पर जो हमको पहुँचे हैं तेरे लिए हम्द है जुमला उमूर मे और

اَمْرٍ وَ اِلَيْكَ الْمُشْتَكٰى فِيْ عَظِيْمِ الْمُهِمَّاتِ بِخِيَرَتِكَ وَ اَوْلِيَآئِكَ وَ

तेरी बारगाह मे फ़रयाद है तमाम अहेम अज़ीम मसाएब मे जो तेरे नेक बन्दों और दोसतां को पहु@ंचते

ذٰلِكَ لِمَا اَوْجَبْتَ لَهُمْ مِنَ الْكَرَامَةِ وَ الْفَضْلِ الْكَثِيْرِ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ

हैं और ये उस वजह से के तूने उनके लिए करामत और फ़०ज्ले कसीर को वाजीब किया है। खुदाया

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ ارْزُقْنِيْ شَفَاعَةَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ

दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको नसीब कर इमाम हुसैन (अ) की शिफ़ाअत

الْوُرُوْدِ وَ الْمَقَامِ الْمَشْهُوْدِ وَ الْحَوْضِ الْمَوْرُوْدِ وَ اجْعَلْ لِيْ قَدَمَ

वारिद होने के रोज़ और मक़ामे मशहुद अता कर और हौज़े कौसर मरहमत फ़र्मा और मेरे लिए अपने

صِدْقٍ عِنْدَكَ مَعَ الْحُسَيْنِ وَ اَصْحَابِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ

नज़दीक क़दमे सिद्क क़रार दे इमाम हुसैन और हुसैन (अ) के असहाब के साथ जिन्होंने अपनी जान

الَّذِيْنَ وَاسَوْهُ بِاَنْفُسِهِمْ وَ بَذَلُوْا دُوْنَهٗ مُهَجَهُمْ وَ جَاهَدُوْا مَعَهٗ

के ज़रिए मवासात की और अपनी जानों को उनके सामने राहे खुदा मे क़ुर्बान कर दिया और उनके साथ

اَعْدَآئَكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِكَ وَ رَجَآئَكَ وَ تَصْدِيْقًا بِوَعْدِكَ وَ خَوْفًا

तेरे दुश्मनों से जिहाद किया तेरी मर्ज़ा के हुसूल के लिए और तेरी उम्मीद मे और तेरे वादे की तसदीक़ मे

مِّنْ وَّعِيْدِكَ اِنَّكَ لَطِيْفٌ لِّمَا تَشَآءُ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और तेरे अज़ाब से डरते हुए बेशक तू महेरबान है जिस पर चाहे ऐ सबसे बड़े रहेम करनेवाले।

छठी ज़ियारत - ज़ियारते अरबईन - (यानी २० सफर)

शेख़ ने तहज़ीब व मिस्बाह में इमाम हसन अस्करी (अ) से रिवायत की है के मोमिनीन की पाँच अलमतें हैं। रोज़ाना ५१ रकत नमाज़ पढ़ना, १७ रकत वाजिब और ३४ रकत नाफ़ेला, दाहने हाथ में अंगूठी पहनना, सजदे में पेशानी को ख़ाक पर रखना और बिस्मिल्लाह बलंद आवाज़ से कहना।

अरबईन के दिन इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करना। जिसका तरीक़ा दो तरह से बयान किया गया है:

एक वह ज़ियारत है जो शेख़ ने तहज़ीब व मिस्बाह में सफ़वान जम्माल से नक़्ल की के मुझसे इमाम सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के जब दिन बुलंद हो जाए तो इस तरह कहो:

اَلسَّلَامُ عَلٰى وَلِيِّ اللّٰهِ وَ حَبِيْبِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى خَلِيْلِ اللّٰهِ وَ نَجِيْبِهٖ

सलाम अल्लाह के वली और उसके हबीब पर, सलाम हो ख़लीले खुदा और उसके बरगुज़ीदा पर सलाम हो खुदा

اَلسَّلَامُ عَلٰى صَفِيِّ اللّٰهِ وَ ابْنِ صَفِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَى الْحُسَيْنِ

के ख़ालिस बन्दे और उस के ख़ालिस बन्दे के फ़रज़ंद पर, सलाम हो हुसैन (अ) मज़लूम व शहीद पर। सलाम हो

الْمَظْلُوْمِ الشَّهِيْدِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَسِيْرِ الْكُرُبَاتِ وَ قَتِيْلِ الْعَبَرَاتِ

असीर मसाएब और कुशता गिरया पर खुदाया मै गवाही देता हूँ के वो तेरे दोस्त और तेरे वली के फ़रज़ंद और तेरे

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَشْهَدُ اَنَّهٗ وَلِيُّكَ وَ ابْنُ وَلِيِّكَ وَ صَفِيُّكَ وَ ابْنُ صَفِيِّكَ

बरगुज़ीदा और फ़रज़ंदे बरगुज़ीदा हैं तेरी करामत पर फ़ाएज़ हैं। तूने उन को मुकर्रम किया शहादत के ज़रिए और

الْفَآئِزُ بِكَرَامَتِكَ اَكْرَمْتَهٗ بِالشَّهَادَةِ وَ حَبَوْتَهٗ بِالسَّعَادَةِ وَ

उनको सआदत से मख़सूस किया है और उनको मुनताख़िब किया है पाकीज़गीए वलादत के साथ और उनको

اجْتَبَيْتَهٗ بِطِيْبِ الْوِلَادَةِ وَجَعَلْتَهٗ سَيِّدًا مِّنَ السَّادَةِ وَ قَآئِدًا

सरदार बनाया है सरदारो मे से और क़ाएद बनाया है क़ाएदो मे से और इसलाम से दिफ़ा करने वालों मे से एक बड़ा

مِّنَ الْقَادَةِ وَ ذَائِدًا مِّنَ الذَّادَةِ وَ اَعْطَيْتَهٗ مَوَارِيْثَ الْاَنْبِيَآءِ وَ

दिफ़ा करनेवाला बनाया है और तूने उनको अंबिया की मीरास अता की और उनको अपनी मख़लूक पर हुज्जत

جَعَلْتَهٗ حُجَّةً عَلٰى خَلْقِكَ مِنَ الْاَوْصِيَآءِ فَاَعْذَرَ فِي الدُّعَآءِ وَ مَنَحَ

क़रार दिया औसिया मे से तो उन्होंने भी तमाम हुज्जत मे उम्मत से तमाम उज्र को दूर कर दिया और उम्मत की

النُّصْحَ وَ بَذَلَ مُهْجَتَهٗ فِيْكَ لِيَسْتَنْقِذَ عِبَادَكَ مِنَ الْجَهَالَةِ وَ

नसीहत को अंजाम दिया और तेरी राह मे अपना ख़ून बहाया ताके तेरे बन्दों को निकाल लें जेहालत और गुमराही

حَيْرَةِ الضَّلَالَةِ وَ قَدْ تَوَازَرَ عَلَيْهِ مَنْ غَرَّتْهُ الدُّنْيَا وَ بَاعَ حَظَّهٗ

की हैरानी से जबके उनके उपर ज़ुल्म किया उन लोगों ने जिनको दुनिया ने मग़रूर किया और जिन्होंने अपने

بِالْاَرْذَلِ الْاَدْنٰى وَ شَرٰى اٰخِرَتَهٗ بِالثَّمَنِ الْاَوْكَسِ وَ تَغَطْرَسَ وَ

आख़िरत के हिस्सा को पस्त व ज़लील दुनिया के बदले मे बेच दिया और अपनी आख़िरत को बेच दिया पस्त

تَرَدّٰى فِيْ هَوَاهُ وَ اَسْخَطَكَ وَ اَسْخَطَ نَبِيَّكَ وَ اَطَاعَ مِنْ عِبَادِكَ اَهْلَ

क़ीमत मे और ज़ुल्मो ज़ौर किया और ख़्वाहिशे नफ़्स मे हलाक हो गए और तुझको और तेरे नबी को ग़ज़ब नाक

الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ حَمَلَةَ الْاَوْزَارِ الْمُسْتَوْجِبِيْنَ النَّارَ فَجَاهَدَهُمْ

किया और तेरे बन्दों मे शक़ावत और निफ़ाक वालों की इताअत की और गुनाह के संगीन बार के उठानेवालों की

فِيْكَ صَابِرًا مُّحْتَسِبًا حَتّٰى سُفِكَ فِيْ طَاعَتِكَ دَمُهٗ وَ اسْتُبِيْحَ

इताअत की जो मुस्तहक़े जहन्नम हो चुके हैं तो उन्होंने उन ज़ालिमों से तेरी राह मे जिहाद किया सब्र और इख़लास

حَرِيْمُهٗ اَللّٰهُمَّ فَالْعَنْهُمْ لَعْنًا وَبِيْلًا وَّ عَذِّبْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا اَلسَّلَامُ

के साथ यहाँ तक के तेरी इताअत मे उनका ख़ून बहाया और उनकी हतके हुरमत को मुबाह समझा। खुदाया उन

عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْاَوْصِيَآءِ

ज़ालिम लोंगों पर शदीद लानत कर और उनको दर्दनाक अज़ाब दे। सलाम हो आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा।

اَشْهَدُ اَنَّكَ اَمِيْنُ اللّٰهِ وَ ابْنُ اَمِيْنِهٖ عِشْتَ سَعِيْدًا وَ مَضَيْتَ

सलाम हो आप पर ऐ दिलबंदे सय्यदुल औसिया। मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के अमीन और उसके अमीन

حَمِيْدًا وَ مُتَّ فَقِيْدًا مَّظْلُوْمًا شَهِيْدًا وَ اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ مُنْجِزٌ مَّا

के फ़रज़ंद हैं आप ने तमाम उम्र सआदत के साथ गुज़ारी और क़ाबिले तारीफ़ अंदाज़ से गुज़र गए और दुनिया

وَعَدَكَ وَ مُهْلِكٌ مَّنْ خَذَلَكَ وَ مُعَذِّبٌ مَّنْ قَتَلَكَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

से रहलत की बे मिसाल मज़लूम और शहीद हालत मे और मै गवाही देता हूँ के खुदा पूरा करनेवाला है उसका

وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ جَاهَدْتَ فِيْ سَبِيْلِهٖ حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ فَلَعَنَ

जो आपसे वादा किया है और हलाक करनेवाला है उसे जिसने आप को छोड़ा दिया और अज़ाब देनेवाला है उसे

اللّٰهُ مَنْ قَتَلَكَ وَلَعَنَ اللّٰهُ مَنْ ظَلَمَكَ وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً سَمِعَتْ بِذٰلِكَ

जिसने आप को क़त्ल किया और मै गवाही देता हूँ के आप ने अल्लाह के अहद को पूरा कर दिया और उसकी राह

فَرَضِيَتْ بِهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُشْهِدُكَ اَنِّيْ وَلِيٌّ لِّمَنْ وَالَاهُ وَ عَدُوٌّ لِّمَنْ

मे जेहाद किया यहाँ तक के आप को मौत आ गई तो खुदा लानत करे उसपर जिसने आप को क़त्ल किया और

عَادَاهُ بِاَبِيْ اَنْتَ وَ اُمِّيْ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ كُنْتَ نُوْرًا فِيْ

खुदा लानत करे उसपर जिसने आप पर ज़ुल्म किया और खुदा की लानत हो उस उम्मत पार जिस ने ये सब सुना

الْاَصْلَابِ الشَّامِخَةِ وَ الْاَرْحَامِ الْمُطَهَّرَةِ لَمْ تُنَجِّسْكَ الْجَاهِلِيَّةُ

ओर उसपर राज़ी रही। खुदाया मै तुझको गवाह बनाता हूँ के मै उसका दोस्त हूँ जिस से उनकी दोस्ती है और उनके

بِاَنْجَاسِهَا وَ لَمْ تُلْبِسْكَ الْمُدْلَهِمَّاتُ مِنْ ثِيَابِهَا وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ

दुश्मनों का दुश्मन हूँ मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। मै गवाही देता हूँ के आप नूर थे बुलंद

مِنْ دَعَآئِمِ الدِّيْنِ وَ اَرْكَانِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ مَعْقِلِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

तरीन सुलबों मे और पाकीज़ा माओं की रहमों मे आप तक जाहिलियत की गन्दगियाँ नही पहुँची और दीन और

اَشْهَدُ اَنَّكَ الْاِمَامُ الْبَرُّ التَّقِيُّ الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ الْهَادِيُ الْمَهْدِيُّ وَ

असास आईन मुसलमान और मोमिनीन को पनाह देनेवाले और मै गवाही देता हूँ के आप इमाम, नेक, मुत्तक़ी,

اَشْهَدُ اَنَّ الْاَئِمَّةَ مِنْ وُلْدِكَ كَلِمَةُ التَّقْوٰى وَ اَعْلَامُ الْهُدٰى وَ

पसंदीदए खुदा, पाकीज़ा, हादी और महदी हैं और मै गवाही देता हूँ के आप की औलाद मे अईम्मा रूहे त०क्का हैं

الْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَ الْحُجَّةُ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا وَ اَشْهَدُ اَنِّيْ بِكُمْ مُؤْمِنٌ

और हिदायत की निशानियाँ हैं और मुसतहकम रिश्तए ईमान और दुनिया वालों पर हुज्जत हैं और मै गवाही देता

وَّ بِاِيَابِكُمْ مُوْقِنٌ بِشَرَايِعِ دِيْنِيْ وَ خَوَاتِيْمِ عَمَلِيْ وَ قَلْبِيْ لِقَلْبِكُمْ

हूँ के मै आप पर ईमान रखनेवाला और आपकी रजअत का यक़ीन करने वाला हूँ अपनी दीन की शरियतों और

سِلْمٌ وَّ اَمْرِيْ لِاَمْرِكُمْ مُتَّبِعٌ وَّ نُصْرَتِيْ لَكُمْ مُعَدَّةٌ حَتّٰى يَاْذَنَ اللّٰهُ

अमल के ख़ातमे के साथ और मेरा दिल आप के सामने सरापा तस्लीम है और मेरा अम्र आपके अम्र का ताबे

لَكُمْ فَمَعَكُمْ لَا مَعَ عَدُوِّكُمْ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى اَرْوَاحِكُمْ

है और मेरी मदद आपके लिए मोहय्या है यहाँ तक के खुदा आपको इजाज़त दे तो हम आपके साथ हैं आपके

وَ اَجْسَادِكُمْ وَ شَاهِدِكُمْ وَ غَآئِبِكُمْ وَ ظَاهِرِكُمْ وَ بَاطِنِكُمْ اٰمِيْنَ

दुश्मनों के साथ नही हैं। अल्लाह का दुरूद हो आप लोगों पर आप की रूहों पर, आपके जिस्मों पर, आपके ज़ाहिर

رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

पर, आप के ग़ाएब पर और आपके ज़ाहिर और आपके बातिन पर ऐ अलमीन के रब इस दुआ को क़ुबूल कर।

उसके बाद दो रकत नमाज़ अदा करे और जो चाहे दुआ करे और उसके बाद वापस हो जाए।

दूसरी ज़ियारत वह है जो जाबिर से नक़्ल की गई है और जिसकी कैफ़ियत अता के बयान के अनुसार यह है के मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी के साथ था।

२० सफ़र को जब ग़दिरिया पहुँचे तो फ़ुरात के पानी से गुस्ल किया पाक कपड़े पहने और मूझ से पूछा:

क्या तुम्हारे पास कोई खुश्बू है?

मैंने अर्ज़ किया के एक खुश्बू साथ है।

उसे लेकर अपने सर और गर्दन पर छिड़क लिया और पा बरहना चले यहाँ तक के बालाए सरे इमाम हुसैन (अ) खड़े हो कर तीन बार अल्लाहो अकबर कहा और बेहोश हो कर गिर पड़े।

जब होश आया तो मैंने सुना के कह रहे हैं اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا آلَ اللهِ और यह वही ज़ियारत नीमए रजब है जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है और इसमे चंद कलमों का फ़र्क़ है जो इख़्तेलाफ़े इबारात की बिना पर भी हो सकता है।

जैसा के शेख़ तूसी ने एहतेमाल दिया है।

लेहाज़ा अगर कोई व्यक्ति चाहे १५ रजब की ज़ियारत को पढ़ सकता है।

लेखक के अनुसार इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत मुख़्तलिफ़ शरीफ़ अवक़ात और बा बरकत दिन और रात मज़कूरा अवक़ात के अलावा भी बेहतरीन अमल है।

ख़ास तौर पर वह अवक़ात जिनकी कोई भी निसबत हज़रत की तरफ़ है जैसे मुबाहेला के दिन, हज़रत की विलादत के दिन और गुरूवार की शब में।

रिवायात से मालूम होता है के परवरदिगार हर शबे जुमा आं हज़रत (अ) पर एक ख़ास नज़रे लुत्फ़ करता है और तमाम पैग़ंबरान और औसिया को आपकी

ज़ियारत के लिए भेजता है जैसा के इब्ने क़ूलूवय ने इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत की है।
के जो व्यक्ति हर रोज़े जुमा इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करेगा उसके सारे गुनाह बख़्श दिए जाएंगे और वह दुनिया से कोई हसरत लेकर न जाएगा। और उसका मसकन बेहिश्त में इमाम हुसैन (अ) के साथ होगा और आअमश की रिवायत में है के उनके हमसाए ने उनसे कहा के मैंने ख़्वाब में देखा है के आसमान से कुछ परचे उड़ कर आ रहे हैं जिन में इमाम हुसैन (अ) की शबे जुमा ज़ियारत करनेवालों के लिए अमान नामा लिखा हुआ है।
उसके बाद आमाले काज़मैन के ज़ैल में हाजी अली बग़दादी की रिवायत में भी इस मतलब की तरफ़ इशारा किया जाएगा और एक रिवायत की बिना पर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) से पूछा गया के क्या ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) के लिए कोइ ख़ास समय है जो दूसरे मौ॰कों से बेहतर हो?
तो फ़रमाया के जिस समय और जिस ज़माने में मुम्किन हो हज़रत की ज़ियारत करो के आपकी ज़ियारत ख़ैर है जिस क़दर बजा लाए उस क़दर ज़्यादा ख़ैर का हक़दार होगा और जो कम करेगा उसे कम ख़ैर मिलेगा।
कोशिश करो आं हज़रत (अ) की ज़ियारत के लिए बेहतरीन अवक़ात में उस समय नेक अमल का सवाब भी ज़ियादा हो जाता है और आसमान से मलाएका भी हज़रत की ज़ियारत के लिए वारिद होते हैं।
उन मख़सूस अवक़ात के लिए कोई ख़ास ज़ियारत नक़्ल नहीं हुई है।
सिर्फ़ तीसरी शाबान को इमाम हुसैन (अ) की विलादत का दिन है एक दुआ है जो इमामे ज़माना (अ) की तरफ़ से वारिद हुई है के इस दुआ को पढ़े और हमने उस दुआ को आमाले माहे शाबान में ज़िक्र भी कर दिया है।
यह भी मालूम रहे के आं हज़रत (अ) की ज़ियारत करबला के अलावा दूसरे शहरों से भी बेहतरीन फ़ज़ीलत रखती है।
हम इस जगह पर काफ़ी, तहज़ीब, फ़क़ीह से दो रिवायतें नक़्ल करते हैं।
एक रिवायत इब्ने अबी उमैर ने हिशाम से नक़्ल की है के इमाम सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के अगर तुम में से किसी व्यक्ति का मकान हमारी क़ब्रां से दूर हो और फ़ासला ज़्यादा हो उसे चाहिए के छत पर जाकर दो रकत नमाज़ अदा

करे और सलाम करने के लिए हमारी क़ब्रों की तरफ़ इशारा कर के सलाम करे के यह सलाम हम तक पहुँच जाएगा।
दूसरी रिवायत हन्नान बिन सुदैर की है जिन्होंने अपने वालिद से नक़्ल किया है के इमाम सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के सुदैर क्या तुम रोज़ाना इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करते हो।
अर्ज़ की आप पर क़ुरबान, नहीं।
फ़रमाया किस क़द्र ज़ुल्म करते हो।
अच्छा क्या हर जुमे को ज़ियारत करते हो?
अर्ज़ की नहीं।
फ़रमाया हर महीने में ज़ियारत करते हो?
अर्ज़ की कभी कभी कई बरसों के बाद ज़ियारत कर सकता हूँ।
फ़रमाया सूदैर तुमने इमाम हुसैन (अ) पर किस क़द्र ज़्यादती की है।
क्या तुमहें नहीं मालूम है के परवरदिगार के बीस लाख़ फ़रिश्ते हैं।
और तहज़ीब व फ़क़ीह की रिवायत की बिना पर दस लाख फ़रिश्ते हैं जिनके बाल गर्द आलूद हैं और वह इमाम हुसैन (अ) पर गिरया करते रहते हैं।
और आपकी ज़ियारत करते हैं और कभी थकते नहीं हैं।
सुदैर क्या मुश्किल है के तुम इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करो हर जुमे को पाँच बार और हर रोज़ एक बार।
सुदैर ने अर्ज़ की के मौला मेरे और उनके दरमियान कई फ़रसख़ का फ़ासला है।
फ़रमाया के छत पर चले जाओ।
दाहने बाएं देख कर आसमान की तरफ़ सर उठा कर हज़रत की क़ब्र का इरादा कर के कहो: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ
तो तुम्हारे वास्ते ज़ियारत दर्ज की जोगी और यह ज़ियारत हज व उमरा के बराबर है। सुदैर का बयान है के अक्सर ऐसा हुआ है के मैंने इस अमल को महीने में बीस बार से ज़्यादा अंजाम दिया है।
बहरहाल ज़ियाराते मुतलक़ा की पहली ज़ियारत के ज़ैल में बाज़ मताबिल इस मकाम के मुनासिबे हाल ज़िक्र किए जा चुके हैं।

फ़ज़ीलत व आदाबे तुरबते इमाम हुसैन (अ.स.)

वाज़ेह रहे के इस सिलसिले में बहुत सी रिवायात वारिद हुई हैं के ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) मौत के अलावा हर दर्द का इलाज है।
और हर बला से बचाने का ज़रिया और हर ख़ाफ़ में अम्न का वसीला है।
इस सिलसिले की रिवायात मुतवातिर हैं और इससे जो मोजिज़ात ज़ाहिर हुए हैं वह भी बयान से बाहर हैं।
मैंने अपनी किताब फवाएदुर रज़विया में (जो ओलमा शिआ के हालात में है) मोहद्दिसे बुज़ुर्ग आक़ा सय्यद नेमतुल्लाह जज़ाएरी के हालात में लिखा है के उन्होंने तहसीले इल्म में बेहद ज़हमतें बरदाश्त कीं और बेहिसाब मसाएब का सामना किया और अवाएले तालीम में उनके पास रौशनी का भी इंतेज़ाम नहीं था तो चांद की रौशनी में मुतालेआ किया करते थे।
जिसकी बिना पर उनकी आंखें पढ़ने से इस क़द्र ज़इफ़ हो गई थी के वह रौशनी चश्म के लिए ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) और खाके मशाहिदे मुशर्रेफा आइम्मए इराक़ को बतौरे सुरमा इस्तेमाल करते थे जिस की बरकत से उनकी आखों की बीनाई ठीक हो गई।
और मैंने एसा भी लिखा है के ऐसा न हो के आजकल के लोग, कुफ़्फ़ार और बेदीनां के साथ माशेरत की बिना पर इस मसले में शक करने लगें।
जब के कमालुद्दीन दिमयरी ने हयातुल हैवान में नक़्ल किया है के सांप की उम्र जब हज़ार साल हो जाती है तो उसकी आंखें अंधी हो जाती है और परवरदिगार उसको यह इल्हाम करता है के अपनी आँक को फलां घांस पर जिसको रा॰ज्यांज कहते हैं मल दे तो उसकी बीनाई पलट आएगी और वह उस घांस की तलाश में निकल पडता है और चाहे कितनी तवील मसाफ़त हो अपने को वहाँ पहुँचा देता है और अपनी आंखों को उस घास पर मल देता है। जिससे उसकी रौशनी पलट आती है।
इसको अल्लामा ज़मखशरी ने भी नक्ल किया है। तो अगर परवरदिगार एक घांस में यह ख़ासियत पैदा कर सकता है के अंधे सांप को बीना बना दे तो इस बात पर क्या ताज्जुब है के परवरदिगार फ़रज़ंदे रसूल की तुरबत में उससे

बेहतर तासीर पैदा कर दे जिसने राहे खुदा में अपना सारा घर लुटा दिया। इस ख़ाक़े मुक़द्दस के वह फ़वाएद व बरकात हैं के जिनसे चाहने वालों ने बेशुमार फ़ायदे उठाए हैं और यहां सिर्फ़ चंद रिवायात की तरफ़ इशारा किया जा रहा है।

(१) रिवायत में है के हूराने बेहिश्त जब मलाएका को देखती हैं के वह किसी काम के लिए ज़मीन की तरफ़ जा रहे हैं तो उनसे गुज़ारिश करती हैं के हमारे लिए तसबीह और ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) बतौर हदिया ले आएं।

(२) सनदे मोतबर के साथ मनक़ूल है के एक शख़्स ने बयान किया है के इमाम रज़ा (अ) ने मेरे वास्ते ेखोरासान से एक सामान का थैला भेजा जब मैंने खोला तो देखा के उसमे एक ख़ाक भी है। मैंने लानेवाले से पूछा के यह क्या है? उसने कहा के यह ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) है और हज़रत जब कोई लिबास या ग़ैरे लिबास किसी को भेजते हैं तो उसमें यह ख़ाक ज़रूर रखते हैं और फ़रमाते हैं के यह हुक्मे खुदा से तमाम बलाओं से अमान का ज़रिया है।

(३) रिवायत है के अब्दुल्लाह बिन अबी याफ़ूर ने इमाम सादिक़ (अ) से अर्ज़ किया के एक व्यक्ति ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) को उठाता है और फ़ायदा हासिल कर लेता है और दूसरे को वैसा फ़ायदा नहीं होता है। तो आपने फ़रमाया के जो व्यक्ति भी एतेमादे सहीह रखता है उसको यक़ीनन फ़ायदा होगा।

(४) अबू हमज़ा सुमाली से रिवायत है के मैंने इमाम सादिक़ (अ) से अर्ज़ किया के मैं देखता हूँ के हमारे असहाब ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) को लेकर उससे शिफ़ा तलब कर रहे हैं। तो क्या उस में वाकेअन शिफ़ा है? फ़रमाया: बेशक वह ख़ाक भी क़ब्र के चार मील के अंदर से उठाई जाए उसमें शिफ़ा है।

यही तासीर हज़रते रसूल, इमाम हसन, इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) और इमाम मोहम्मद बाक़र (अ) की ख़ाके क़ब्र में भी है के यह ख़ाक हर तरह से शिफ़ा है और हर बला के दफ़ा करने का ज़रिया है।

दुनिया की कोई चीज़ इसके बराबर नहीं हो सकती सिवाए दुआ के।
अलबत्ता जो चीज़ इसको बरबाद कर देती है वह किसी ग़लत जगह पर उसको रख देना है।
लेहाज़ा जो लोग इस ख़ाक से इलाज करते हैं। अगर उनका यक़ीन व एतेकाद सहीह है तो यक़ीनन उन्हें फ़ायदा होगा।
और उन्हें दूसरी दवा की ज़रूरत न होगी लेकिन कभी कभी इस ख़ाक को शयातीन और जिन्नात के काफ़र बरबाद कर देते हैं के अपने को उस पर मल देते हैं या उसमें कोई चीज़ डाल देते हैं के उन्हें इनसानों से हसद है। और वह उसकी नेकी और खुशबू को ज़ाएल कर देते हैं।
चुनांचे जब भी हरमे इमाम हुसैन (अ) से कोई ख़ाक निकलता है तो शयातीन व कुफ़्फ़ार जिन्नात बेशुमार तादाद में तय्यार हो जाते हैं के किस तरह इस ख़ाक को साहेबे ख़ाक से छीन लें या उसको अपने हाथों से मस कर दें के मलाएका उन्हें हरमे इमाम हुसैन (अ) में दाख़िल होने नहीं देते हैं। लेहाज़ा अगर यह तुरबत उन लोगों से महफ़ूज़ रह जाए तो हर बीमारी का इलाज कर सकती हैं। लेहाज़ा जब ख़ाके क़ब्र को उठाएं तो उसे पोशीदा रखे और मुसलसल उस पर ज़िक्रे खुदा करता रहे। मैंने सुना है के बाज़ लोग ख़ाक उठा तो लेते हैं मगर उसको मामूली समझते हैं। हत्ता के बाज़ लोग जानवर के खाने के सामान में या ऐसी जगह पर रख देते हैं जहां लोगों के हाथ लगते रहते हैं। ज़ाहिर है के ऐसे लोगों को किस तरह शिफ़ा हासिल हो सकती है जो उसकी हुरमत का ख़याल नहीं रखते हैं। लेहाज़ा जिस दिल में यकीन नहीं है और जो उसको मामूली समझता है वह खुद अपने अमल को बरबाद कर लेता है।

(५) रिवायत में है के जब तुम में से कोई व्यक्ति ख़ाके क़ब्र को उठाना चाहे तो चुटकी से उठाए। एक चने के बराबर उठाए, उसको बोसा दे और आँखों से लगाए। उसके बाद अपने सारे बदन पर मल ले और यह कहे:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذِهِ التُّرْبَةِ وَبِحَقِّ مَنْ حَلَّ بِهَا وَثَوٰى فِيهَا وَبِحَقِّ جَدِّهِ

खुदाया उस तुरबत का वासता और उसका वासता जो उसमे वारिद हुआ और एकामत ग०जीं हुआ और

وَابِيهِ وَاُمِّهِ وَاخِيهِ وَالاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِهِ وَبِحَقِّ الْمَلَائِكَةِ الْحَافِّينَ بِهِ

उसके जद और पिदर का वास्ता और उसकी वालेदा, भाई और उसकी औलाद मे आइम्मा का वास्ता

اِلَّا جَعَلْتَهَا شِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ وَبُرْءًا مِنْ كُلِّ مَرَضٍ وَنَجَاةً مِنْ كُلِّ

और मलाएका का वास्ता जो उसे घेरे हुए हैं तू उसको शिफ़ा क़रार दे दे हर बीमारी के लिए और बहबूद

آفَةٍ وَحِرْزًا مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ

बना दे हर मर्ज़ के लिए और नजात बना दे हर आफ़त के लिए और हिर्ज बना दे जिस चीज से मै डरता हूँ।

उसके बाद उस ख़ाक को इस्तेमाल करे।
रिवायत में है के तुरबते इमाम हुसैन (अ) को मोहर करने का तरीक़ा यह है के उस पर सूरह क़द्र पढ़ा जाए।
यह भी रिवायत है के जो व्यक्ति उस ख़ाक को खाना चाहता है या किसी व्यक्ति को खिलाना चाहता है वह पहले कहे:

بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ رِزْقًا وَاسِعًا وَعِلْمًا نَافِعًا وَشِفَاءً مِنْ

खुदा क नाम से और खुदा की ज़ात से खुदाया उसको क़रार दे वसी रिज़्क़ और नफ़ा बख़्श इल्म और

كُلِّ دَاءٍ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

हर मर्ज़ से शिफ़ा तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

लेखक के अनुसार इस तुरबते शराफ़ा के फ़वाएद बहुत हैं जिनमें से एक यह भी है के मुस्तहब है के उसे मय्यत के साथ क़ब्र में रखा जाए और कफ़न को उसी से लिखा जाए।

और फ़िर उसी पर सजदा किया जाए के ख़ाके शिफ़ा पर सजदा सातों हिजाबात को उठा देता है और नमाज़ के क़ुबूलियत का ज़रिया बन जाता है।
उस ख़ाक की तस्बीह बनाना और उस पर ज़िक्र करना और उसको अपने हाथों में रखना भी फ़ज़ीलत रखता है।
उसकी ख़ासियत यह है के वह खुद तसबीहे परवरदिगार करती रहती हैं।
चाहे साहेबे तसबीह तसबीह करे या न करे और वाज़ेह रहे के यह तसबीह उस तसबीह के अलावा है जो फ़ित्री तौर पर सारी काएनात के ज़र्रात करते हैं।
जैसा के परवरदिगार ने फ़रमाया है।

وَاِنْ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ.

आरिफ़ रूमी ने इसी मफ़्हूम को यूँ बयान किया है:

گرترا از غیب چشمی باز شد	باتو ذرّات جهان همراز شد
نطق خاك و نطق آب و نطق گل	هست محسوس حواس اهل دل
جمله ذرّات در عالم نهان	با تو میگویند روزان و شبان
ما سمیعیم و بصیر و با هشیم	با شمانا محرمان ما خامشیم
از جمادي سوي جان جان شوید	غلغل از اجزائے عالم بشنوید
فاشِ تسبیح جمادات آیدت	وسوسه تأویلها بزدایدت

यह तसबीह जिस का ज़िक्र इस रिवायत में है यह खुसूसियात ख़ाके क़ब्रे

सय्यदुश शोहदा में है।

(६) इमामे रज़ा (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति तसबीहे ख़ाके शिफ़ा हाथ में लेकर कहे:

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

तो हर दाने पर खुदावंदे आलम उसके लिए छे हज़ार नेकियां लिखेगा और छे हज़ार गुनाह मिटा देगा और छे हज़ार दरजात बुलंद कर देगा और छे हज़ार अफ़राद की शिफ़ाअत का हक़ दे देगा।

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) के संगरेज़ों से तसबीह बनाए और एक बार इस्तेग़फ़ार कर ले तो उसके लिए सत्तर बार इस्तेग़फ़ार लिखा जाता है और अगर तसबीह हाथ में लिए रहे और खुद कुछ न पढ़े तो हर दाने की सात बार तसबीह दर्ज की जाती है।

(७) हदीसे मोतबर में है के इमाम सादिक़ (अ) इराक़ तशरीफ़ लाए तो एक गरोह आपके पास हाज़र हुआ और कहा के हमने सुना है के तुरबते इमाम हुसैन (अ.स.) हर दर्द से शिफ़ा का बाएस है। क्या ख़ाफ़ से हिफ़ाज़त का सबब भी है? फ़रमाया बेशक अगर कोई व्यक्ति चाहता है के वह हर ख़तरे से महफ़ूज़ रहे तो उसे ख़ाके क़ब्रे इमाम हुसैन (अ) की तसबीह बनाकर अपने हाथ में रखना चाहिए और तीन बार इस दुआ को पढ़ना चाहिए:

اَصْبَحْتُ اللّٰهُمَّ مُعْتَصِمًا بِذِمَامِكَ وَجِوَارِكَ الْمَنِيعِ الَّذِی لَا

सुबह की मैने खुदाया तेरी ज़िम्मादारी से वाबसता होते हुए और तेरे जवार मे जो हर तरह महफ़ूज़ है उसपर

يُطَاوَلُ وَلَا يُحَاوَلُ مِنْ شَرِّ كُلِّ غَاشِمٍ وَطَارِقٍ مِنْ سَائِرِ مَنْ

किसी का दस तअदी व राज नही है और कोई पा सकता नही है हर ज़ालिम व रहज़न के शर से उन

خَلَقْتَ وَمَا خَلَقْتَ مِنْ خَلْقِكَ الصَّامِتِ وَالنَّاطِقِ فِی جُنَّةٍ مِنْ

मख़लूक़ात मे से जिनको तूने पैदा किया है और जिसको तू ने पैदा किया है अपनी सामित व नातिक़ मख़लूक़

كُلِّ مَخُوفٍ بِلِبَاسٍ سَابِغَةٍ حَصِينَةٍ وَهِيَ وَلَاءُ اهْلِ بَيْتِ نَبِيِّكَ

मे से और जो ख़ौफ़नाक़ हैं मै अपने को छुपाता हूँ मुकम्मल लिबास और मुसतहकम जोशन मे और वो तेरे

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ مُحْتَجِزًا مِنْ كُلِّ قَاصِدٍ لِي اذِيَّةٍ بِجِدَارٍ

नबी (स) के अहलेबैत की मोहब्बत है महफ़ूज़ रहते हुए हर उस शख़्स से जो अज़ीयत का क़सद करे मरे

حَصِينٍ الإِخْلَاصِ فِي الِاعْتِرَافِ بِحَقِّهِمْ وَالتَّمَسُّكِ بِحَبْلِهِمْ

लिए। इख़लास के मुसतहकम हिसार मे उनके हक़ का एतेराफ़ करने के साथ और उनकी रस्सी से मज़बूती

جَمِيعًا مُوقِنًا انَّ الْحَقَّ لَهُمْ وَمَعَهُمْ وَمِنْهُمْ وَفِيهِمْ وَبِهِمْ أُوَالِي

से तमस्सुक के साथ। यक़ीन करते हुए के हक़ उन्हीं के लिए है और उन्ही के साथ है उन्ही से है, उन्ही मे

مَنْ وَالَوْا وَأُعَادِي مَنْ عَادَوْا وَأُجَانِبُ مَنْ جَانَبُوا فَصَلِّ عَلَى

है और उन्ही के ज़रिए है। मै उसको दोस्त रखता हूँ जिनको वो दोस्त रखते हैं और उनका दुश्मन हूँ जिनसे

مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاعِذْنِي اللهُمَّ بِهِمْ مِنْ شَرِّ كُلِّ مَا اتَّقِيهِ يَا عَظِيمُ

उनकी दुश्मनी है और उससे दूर हूँ जिससे वो दूर हैं तू दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको

حَجَزْتُ الاعَادِيَ عَنِّي بِبَدِيعِ السَّمَاوَاتِ وَالارْضِ «إِنَّا جَعَلْنَا

बचा ले खुदाया उनके ज़रिए हर उस बुराई से जिस से मै डरता हूँ, ऐ अज़्मत वाले मैने दुश्मनो को खुद से

مِنْ بَيْنِ ايْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا

रोका आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले के वास्ते से हमने काफ़िरो के सामने और उनके पीछे दीवार

يُبْصِرُونَ.

खड़ी कर दी है और हमने उनके सामने परदा डाल दिया। तो वो लोग देखते भी नही है।

उसके बाद तसबीह का बोसा देकर आँखों पर मले और कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْاَلُكَ بِحَقِّ هٰذِهِ التُّرْبَةِ الْمُبَارَكَةِ وَبِحَقِّ صَاحِبِهَا وَبِحَقِّ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ उस मुतबर्रrक तुरबत के हक़ के ज़रिए और साहेबे तुरबत के

جَدِّهٖ وَبِحَقِّ اَبِيهِ وَبِحَقِّ اُمِّهٖ وَبِحَقِّ اَخِيهِ وَبِحَقِّ وُلْدِهِ الطَّاهِرِينَ

हक़ के ज़रिए और उनके जद और पिदर और मादरे गिरामी और भाई के हक़ के वास्ते से और

اَجْعَلْهَا شِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ وَاَمَانًا مِنْ كُلِّ خَوْفٍ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ

उनकी औलादे ताहेरीन के हक़ के वास्ते से तू इसको हर मर्ज से शिफ़ा क़रार दे और हर ख़ाफ़ से

سُوءٍ

आमान बनादे और हर बुराई से निगेहबान मुक़र्रर फ़र्मा।

उसके बाद तसबीह को अपनी पेशानी पर रखे। अगर सुबह को ऐसा करेगा तो शाम तक अमान में रहेगा और शाम को एसा करेगा तो सुबह तक महफ़ूज़ रहेगा।

दूसरी रिवायत में है के जो व्यक्ति किसी बादशाह या किसी ज़ालिम से डरता हो तो घर से बाहर निकलते समय यही तरीक़ा इख़्तेयार करे तो उसके शर से महफ़ूज़ रहेगा।

लेखक: ओलमाए केराम के दरमियान मशहूर है के किसी भी ख़ाक का खाना

जाएज़ नहीं है मगर तुरबते इमाम हुसैन (अ) को लज़्ज़त के बजाए शिफ़ा की नीय्यत से एक चने के बराबर खाया जाए तो कोई हर्ज नहीं है बल्के एहतेयात यह है के एक मसूर के दाने के बराबर हो और इसमें भी बेहतर यह है के मूँह में रख कर पानी से उतार ली जाए और यह कहे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ رِزْقًا وَاسِعًا وَعِلْمًا نَافِعًا وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ وَسُقْمٍ

खुदाया इसको रिज़्क़े वासे और इल्म नाफ़े और हर मर्ज़ व दर्द से शिफ़ा क़रार दे।

अल्लामा मजलिसी का इरशाद है के एहतियात यह है के ख़ाके पाक की तसबीह व सजदगाह की ख़रीद व फ़रोख्त न करे। बल्के दोनो तरफ़ से क़ीमत को बतौरे हदिया दे दिया जाए बशर्ते यह के पहले से कोई शर्त न हो जैसा के हदीसे मोतबर में इमाम सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के जिस व्यक्ति ने ख़ाके क़ब्रे इमामे हुसैन (अ) को फ़रोख़्त किया गोया के हज़रत के गोश्त की ख़रीदो फ़रोख़्त की।

लेखक: हमारे उस्ताद आलिम मुतबÔहर मोहद्दिसे अज़ीम सिक़तुल इसलाम ने दारूस सलाम में फ़रमाया के मेरे भाईयों में से एक को वालिदा मोहतरमा ने देख लिया के वह तुरबते इमामे हुसैन (अ) को क़बा के नीचे की जेब में रखे हैं तो उन्होंने इन्तेहाई सख़्त तम्बीह की और फ़रमाया के यह ख़ाके पाक की बेअदबी है।

हो सकता है के यह रान के नीचे दब कर टूट भी जाए तो भाई ने कहा के ऐसा तो दो बार हो चुका है लेकिन अब आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।

चुनांचे इसके बाद मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार ने ख़्वाब में देखा जब के उन्हें इस वाकए की इत्तेला भी नहीं थी के इमाम हुसैन (अ) मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ लाए हैं और कुतूबख़ाने के कमरे में बैठ कर इंतेहाई मोहब्बत का इज़हार फ़र्मा रहे हैं।

इसके बाद आपने फ़रमाया के अपने बच्चों को बुलाओ। आपने तमाम बच्चों को तलब किया जिन में हम पाँच भाई थे और सब हज़रत के सामने खड़े हो गए।

आप के पास लिबास और कुछ चीज़ें और थीं। आपने एक एक को बुलाकर कोई न कोई चीज़ दे दी। लेकिन जब हमारे भाई की नौबत आई तो उनकी तरफ़ ग़ुस्से से निगाह की और वालिद से पूछा यह तुम्हारा बेटा है? इसने हमारे ख़ाक की दो सजदगाहों को अपनी रान के नीचे तोड़ दीया है और यह कह कर आपने दूसरे भाईयों की तरह तलब करने के बजाए दूर से कोई चीज़ ़फैंक दी जो ग़ालिबन मेरे ख़याल के मुताबिक़ कंघी का डब्बा था। उसके बाद वालिदे मोहतरम ख़्वाब से बेदार हुए तो उन्होंने इस ख़्वाब को वालिदाए मोहतरमा से नक़ल किया और उन्होंने अपना ाक़िस्सा वालिद से बयान किया और उन्हें अपने ख़्वाबकी सदाक़त पर बेहद ताज्जुब हुआ।

वर्ग - ८

फ़ज़ीलत व कैफ़यत ज़ियारते काज़मैन

यानी इमाम मूसा काज़िम व इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) और ज़िक्र मस्जिदे बुरासा, ज़ियारते नव्वाबे अरबा व ज़ियारते हज़रते सलमान और उस में चंद मतालिब हैं

मतलबे अव्वल - फ़ज़ीलत व कैफ़ियत ज़ियारते काज़मैन

वाज़ेह रहे के इन दोनो मासूमीन (अ) की ज़ियारत बेशुमार फ़ज़ाएल नक़्ल किये गए हैं और बहुतसी रिवायात में वारिद हुआ है के ज़ियारते इमाम मूसा काज़िम (अ) पैग़ंबरे अक्रम (स) की ज़ियारत के बराबर है बल्के एक रिवायत में है के जिसने आपकी ज़ियारत की गोया पैग़ंबरे अक्रम (स) और अमीरूल

मोमिनीन (अ) दोनों की ज़ियारत की और दूसरी रिवायत में आपकी ज़ियारत को इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत के बराबर क़रार दिया गया है और एक हदीस में है के जिसने आपकी ज़ियारत की उसके लिए बाग़े जन्नत है।
शेख़ जलील मोहम्मद बिन शहरे आशौब ने मनाक़िब में तारीख़े बग़दाद के हवाले से नक़्ल किया है के उसके लेखक ख़तीबे बग़दादी ने अपनी सनद से अली बिन ाख़िलाल से नक़्ल किया है के जब भी कोई दुश्वार मसला पेश आया तो हम क़ब्रे इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ) के पास गए हैं और उनको वसीला क़रार दिया और परवरदिगारे आलम ने मुश्किल को आसान कर दिया है।
और यह भी नक़्ल किया है के बग़दाद में एक औरत को देखा गया के वह हज़रत की तरफ़ दौड़ कर जा रही है तो पूछा गया कहाँ जा रही है तो उसने कहा क़ब्रे इमामे मूसा बिन जाफ़र की तरफ़ मैं वहाँ अपने बच्चे के लिए दुआ करूँगी जिसको गिरफ़तार कर लिया गया है। इत्तेफ़ाक़ से वहाँ एक व्यक्ति हंबली मज़हब भी था। उसने उस औरत का मज़ाक उड़ाया और कहा के तुम्हारा बेटा ैकैदख़ाने में मर चुका है। उसने कहा खुदा वंदा मैं तुझे उसका वास्ता दे रही हूँ जो ैकैदख़ाने में शहीद किया गया के अपनी क़ुदरत का मोजिज़ा दिखा दें। थोड़ी देर के बाद उसका फ़रज़ंद रेहा हो गया और उस मर्दे हंबली के बच्चे को उसकी जगह पर गिरफ़तार कर लिया गया।
शेख़ सदूक ने इब्राहीम बिन अकबा से रिवायत की है के मैंने इमाम अली नक़ी (अ) को ख़त लिखा के ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) और ज़ियारते इमाम मूसा व ज़ियारते इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) में कौन सी ज़ियारत बेहतर है? तो हज़रत ने जवाब में लिखा के ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) मुक़द्दम है लेकिन इन मासूमों की ज़ियारत इंतेहाई जामे और उनका सवाब अज़ीम तर है।

काज़मैन की ज़ियारत का तरीक़ा

वाज़ेह रहे के इस हरमे शरीफ़ में बाज़ ज़ियारतें दो में से किसी एक इमाम के लिए मख़सूस हैं और बाज़ दोनो इमामों के दरमियान मुशतरिक हैं।

इमाम मूसा काज़िम (अ) की मख़सूस ज़ियारत

सय्यद इब्ने ताऊस ने मज़ार में नक़्ल किया है के जब हज़रत की ज़ियारत करना चाहो तो पहले गुस्ल करो। उसके बाद आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ो और दरे हरम के पास पहुँच कर यूँ कहो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى هِدَايَتِهٖ

खुदा बड़ा है, खुदा बड़ा है, सिवाए अल्लाह के कोई माबूद नही है अल्लाह बड़ा है खुदा की हम्द है उसके हिदायत करने

لِدِيْنِهٖ وَ التَّوْفِيْقِ لِمَا دَعَا اِلَيْهِ مِنْ سَبِيْلِهٖ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ اَكْرَمُ

पर अपने दीन के लिए और तौफ़ीक़ के लिए उस चीज़ के लिए जिस की तरफ़ उसने दावत दी है यानी अपना रासता

مَقْصُوْدٍ وَ اَكْرَمُ مَاْتِيٍّ وَ قَدْ اَتَيْتُكَ مُتَقَرِّبًا اِلَيْكَ بِاِبْنِ بِنْتِ نَبِيِّكَ

खुदाया तू करीम तरीन मक़सूद है और बुज़ुर्ग तरीन मक़ामे आमद है और मै तेरे पास आया हूँ तेरी तरफ़ क़ुर्बत चाहते

صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ عَلٰٓى اٰبَآئِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ اَبْنَآئِهِ الطَّيِّبِيْنَ اَللّٰهُمَّ

हुए तेरे नबी की दुख़तर के फ़रज़ंद के वास्ते से तेरा दुरूद हो उनपर और उनके पाकीज़ा आबा और पाकीज़ा फ़रज़ंदो

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ لَا تُخَيِّبْ سَعْيِىْ وَ لَا تَقْطَعْ رَجَآئِىْ وَ

पर, खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी कोशिश को ना मुराद न करना और मेरी उम्मीद

اجْعَلْنِىْ عِنْدَكَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ.

को मुनक़ता न करना और मुझको क़रार देना अपने पास आबरू-मंद दुनिया और आख़िरत मे और मुक़र्रेबीन मे से।

उसके बाद दाहने पैर को आगे बढ़ाकर दाख़ल हो और कहो:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

खुदा के नाम से खुदा की ज़ात से और खुदा की राह मे और रसूले खुदा (स) की मिल्लत पर खुदाया मुझको बख़्श दे

وَاٰلِهٖ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ.

और मेरे वालदैन को बख़्श दे और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को।

फिर दाख़ल हो; चार बार तकबीर कहे और क़ब्र के सामने पुश्त बाक़िबला खड़े होकर यूँ कहे:

اَاَدْخُلُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ. اَاَدْخُلُ يَا مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ

क्या मै दाख़िल हो सकता हूँ ऐ रसूले खुदा, क्या दाख़िल हो सकता ऐ नबीए खुदा, क्या दाख़ल हो सकता हूँ ऐ

اللّٰهِ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ؟ اَاَدْخُلُ

मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह, क्या दाख़िल हो जाऊँ ऐ अमीरूल मोमिनीन क्या दाख़ल हो जाऊँ ऐ अबू मोहम्मद

يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنِ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ عَلِيَّ بْنَ الْحُسَيْنِ؟ اَاَدْخُلُ

हसन, क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अबू अब्दुल्लाह अल हुसैन, क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ अबू मोहम्मद अली

يَا اَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ؟ اَاَدْخُلُ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ جَعْفَرَ بْنَ مُحَمَّدٍ؟ اَ

बिन अल हुसैन, क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ जाफ़र मोहम्मद बिन अली, क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अबू

اَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا الْحَسَنِ مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ ؑ اَاَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ يَا

अब्दुल्लाह जाफ़र बिन मोहम्मद, क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला अबुल हसन मुसा बिन जाफ़र, क्या

اَبَا جَعْفَرٍ ؑ اَاَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ ؑ

मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला ऐ अबू जाफ़र, क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला मोहम्मद बिन अली।

दाख़ल होते समय चार दफ़ा कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

फिर क़ब्र के सामने खड़ा हो जाए क़िबला अपने बाजुओं के दरमियान रखे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ وَلِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ وَ

अल्लाह बड़ा है। सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा ओर फ़रज़ंदे वलीए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ

ابْنَ حُجَّتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ صَفِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

हुज्जते खुदा व फ़रज़ंदे हुज्जते खुदा, सलाम आप पर ऐ बरगुज़ीदए खुदा और फ़रज़ंदे बरगुज़ीदए खुदा,

اَمِيْنَ اللّٰهِ وَ ابْنَ اَمِيْنِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ

सलाम आप पर ऐ अमीने खुदा और फ़रज़ंदे अमीने खुदा। सलाम आप पर ऐ नूरे खुदा ज़मीन की

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْهُدٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلَمَ الدِّيْنِ وَ

तारीकियों मे। सलाम आप पर ऐ इमामे हिदायत। सलाम आप पर ऐ परचमे दीन व तक़वा। सलाम

التُّقٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَازِنَ عِلْمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ इल्मे अंबिया के ख़ज़ीनादार, सलाम आप पर ऐ ख़ज़ीनादारे इल्मे मुर्सलीन। सलाम आप

خَازِنَ عِلْمِ الْمُرْسَلِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَائِبَ الْاَوْصِيَآءِ

पर ऐ औसिया साबेक़ीन के नाएब। सलाम आप पर ऐ मादने वहीए मुबीन। सलाम आप पर ऐ साहेबे

السَّابِقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَعْدِنَ الْوَحْيِ الْمُبِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

इल्मे यक़ीन। सलाम आप पर ऐ रसूल के इल्म के मरकज़। सलाम आप पर ऐ इमामे सालेह। सलाम

يَا صَاحِبَ الْعِلْمِ الْيَقِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَيْبَةَ عِلْمِ الْمُرْسَلِيْنَ

आप पर ऐ इमामे ज़ाहीद। सलाम आप पर ऐ इमामे आबिद। सलाम आप पर ऐ इमाम, सरदार व

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ الصَّالِحُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ

रहबर। सलाम आप पर ऐ मक़तूल व शहीद। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा और फ़रज़ंदे

الزَّاهِدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ الْعَابِدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

वसीए रसूल। सलाम आप पर ऐ मेरे मौला मूसा बिन जाफ़र अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मै

الْاِمَامُ السَّيِّدُ الرَّشِيْدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمَقْتُوْلُ الشَّهِيْدُ

गवाही देता हूँ के आपने उसको पहुँचा दिया जिसके मोतहमिल हुए अल्लाह की तरफ़ से और हिफ़ाज़त

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ ابْنَ وَصِيِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

की जिसकी आपको आमानत मिली और आप ने हलाले खुदा को हलाल रखा और हरामे खुदा को

مَوْلَایَ مُوْسَی بْنَ جَعْفَرٍ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ

हराम क़रार दिया और अहकामे खुदा को क़ाएम किया और किताबे खुदा की तिलावत की और सब्र

عَنِ اللّٰهِ مَا حَمَّلَكَ وَ حَفِظْتَ مَا اسْتَوْدِعَكَ وَ حَلَّلْتَ حَلَالَ اللّٰهِ وَ

किया तकली०फों पर राहे खुदा मे और खुदा की राह मे जिहाद किया जो जिहाद का हक़ था यहाँ तक

حَرَّمْتَ حَرَامَ اللّٰهِ وَ اَقَمْتَ اَحْكَامَ اللّٰهِ وَ تَلَوْتَ كِتَابَ اللّٰهِ وَ صَبَرْتَ

के आप को मौत आ गई और मै गवाही देता हूँ के आप उन्ही उमूर पर चलते रहे जिन पर आपके

عَلَى الْاَذٰی فِیْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَ جَاهَدْتَ فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰۤی اَتٰىكَ

पाकीज़ा आबा और पाकीज़ा अजदाद चलते रहे थे जो वसी थे हादी और महदी इमाम थे आप ने

الْيَقِيْنُ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ مَضَيْتَ عَلٰی مَا مَضٰی عَلَيْهِ اٰبَآؤُكَ الطَّاهِرُوْنَ

गुम्राही को हिदायत के बदले मे नही इख़्तेयार किया और हक़ से बातिल की तरफ़ नही माएल हुए और

وَ اَجَدَادُكَ الطَّيِّبُوْنَ الْاَوْصِيَآءُ الْهَادُوْنَ الْاَئِمَّةُ الْمَهْدِيُّوْنَ لَمْ

मै गवाही देता हूँ के आप ने मख़लूक़ की हिदायत की राहे खुदा व रसूल व अमीरूल मोमिनीन (अ)

تُؤْثِرْ عَمًی عَلٰی هُدًی وَّ لَمْ تَمِلْ مِنْ حَقٍّ اِلٰی بَاطِلٍ اَشْهَدُ اَنَّكَ نَصَحْتَ

मे और आपने अमानत को अदा किया और ख़यानत से परहेज़ किया और नमाज़ को क़ाएम किया

لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِاَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنَّكَ اَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَ اجْتَنَبْتَ

और ज़कात को अदा किया और नेकी का हुकुम दिया और बुराई से रोका और अल्लाह की इबादत की

الْخِيَانَةَ وَ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

खुलूस व कोशिश और निगरानी के साथ यहाँ तक वे मौत आ पहुँची तो खुदा आप को इस्लाम और

نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ عَبَدْتَ اللّٰهَ مُخْلِصًا مُّجْتَهِدًا مُّحْتَسِبًا حَتّٰى اَتٰيكَ

अहले इस्लाम की तरफ़ से जज़ा दे बेहतरीन जज़ा और शरीफ़ तरीन जज़ा। मै आप के पास आया ऐ

الْيَقِيْنُ فَجَزَاكَ اللّٰهُ عَنِ الْاِسْلَامِ وَ اَهْلِهٖ اَفْضَلَ الْجَزَآءِ وَ اَشْرَفَ

फ़रज़ंदे रसूले खुदा ज़ियारत के लिए पहचानते हुए आप के हक़ को। आप के फ़ज़्ल का इक़रार करते

الْجَزَآءِ اَتَيْتُكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ زَائِرًا عَارِفًا مبِحَقِّكَ مُقِرًّا

हुए। आप के इल्म के मोतहम्मील होते हुए आप की उम्मत से मुतवस्सिल होते हुए आप की क़ब्र की

بِفَضْلِكَ مُحْتَمِلًا لِعِلْمِكَ مُحْتَجِبًا بِذِمَّتِكَ عَآئِذًا بِقَبْرِكَ لَائِذًا

पनाह चाहते हूँ आपकी ज़रीह की पनाह मे आप से शिफ़ाअत चाहते हुए अल्लाह की तरफ़ मोहब्बत

بِضَرِيْحِكَ مُسْتَشْفِعًا بِكَ اِلَى اللّٰهِ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكَ مُعَادِيًا

करते हुए आपके दोस्तों से और आपके दुश्मनो से दुश्मनी रखते हुए। आप की शान और उस हिदायत

لِاَعْدَآئِكَ مُسْتَبْصِرًا بِشَاْنِكَ وَ بِالْهُدَى الَّذِىْ اَنْتَ عَلَيْهِ عَالِمًا

से वाक़िफ़ होते हुए जिस पर आप हैं। जानते हुए उसकी गुम्राही को जो आप का मुख़ालिफ़ हो और उस

بِضَلَالَةِ مَنْ خَالَفَكَ وَ بِالْعَمَى الَّذِىْ هُمْ عَلَيْهِ بِاَبِىْ اَنْتَ وَ اُمِّىْ وَ

जलालत को जिस पर वो लोग हैं। क़ुर्बान हो जाएं मेरे माँ बाप, मेरी ज़ात, मेरे अहेल, मेरा माल और

نَفْسِیْ وَ اَهْلِیْ وَ مَالِیْ وَ وَلَدِیْ یَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَتَیْتُكَ مُتَقَرِّبًا

मेरी औलाद, ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा आपके पास आया हूँ आपकी ज़ियारत से खुदासे क़ुरबत चाहते

بِزِیَارَتِكَ اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی وَ مُسْتَشْفِعًا مِبِكَ اِلَیْهِ فَاشْفَعْ لِیْ عِنْدَ

हुए व आपके ज़रिए खुदा से शिफ़अत चाहते हुए तो आप शिफ़ाअत कर दीजिए मेरे लिए अपने रब

رَبِّكَ لِیَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَ یَعْفُوَ عَنْ جُرْمِیْ وَ یَتَجَاوَزَ عَنْ سَیِّئَاتِیْ وَ

के पास ताके वो मेरे गुनाह बख़्श दे व मेरे जुर्म को माफ़ करदे व मेरी बुराईयों से दर गुज़र करदे व मेरी

یَمْحُوَ عَنِّیْ خَطِیْئَتِیْ وَ یُدْخِلَنِی الْجَنَّةَ وَ یَتَفَضَّلَ عَلَیَّ بِمَا هُوَ اَهْلُهٗ وَ

ख़ताओं को मुझसे महव करदे और मुझको जन्नत मे दाख़िल करदे व मुझ पर वो फ़ज़्ल करे जिसका

یَغْفِرَ لِیْ وَلِاٰبَآئِیْ وَلِاِخْوَانِیْ وَاَخَوَاتِیْ وَلِجَمِیْعِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

वो अहेल है और बख़्श दे मुझको व मेरे आबा को व मेरे भाईयों व बहनों को व तमाम मोमिनीन व

فِیْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَمَغَارِبِهَا بِفَضْلِهٖ وَجُوْدِهٖ وَمَنِّهٖ.

मोमिनात को जो ज़मीनके मशरिक़ या मग़रिब मे हों अपने फ़ज़्ल व जूद व एहसान से।

उसके बाद अपने को क़ब्र पर गिरा दे और क़ब्र को बोसा देकर और दोनों रूख़सारों को ख़ाक पर रख कर जो चाहे दुआ करे।
उसके बाद सरहाने आकर यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا مَوْلَایَ یَا مُوْسَی بْنَ جَعْفَرٍ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला मुसा बिन जाफ़र और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मै गवाही

اَشْهَدُ اَنَّكَ الْاِمَامُ الْهَادِیُ وَ الْوَلِیُّ الْمُرْشِدُ وَ اَنَّكَ مَعْدِنُ التَّنْزِیْلِ

देता हूँ के आप इमामे हादी और वली व रहबर हैं और आप मादने तन्ज़ील और सहेबे तावील

وَ صَاحِبُ التَّاْوِیْلِ وَ حَامِلُ التَّوْرٰیةِ وَ الْاِنْجِیْلِ وَ الْعَالِمُ الْعَادِلُ

हैं और हामिले तौरेत व इनजील हैं और आलम, आदिल, सादिक़ आमील हैं, ऐ मेरे मैला मै

وَ الصَّادِقُ الْعَامِلُ یَا مَوْلَایَ اَنَا اَبْرَءُ اِلَی اللّٰهِ مِنْ اَعْدَآئِكَ وَ اَتَقَرَّبُ

अल्लाह की तरफ़ बरी हूँ आपके दुश्मनोसे और अल्लाह से क़रीब हू@ आपके दोस्तों के ज़रिए। तो

اِلَی اللّٰهِ بِمُوَالَاتِكَ فَصَلَّ اللّٰهُ عَلَیْكَ وَ عَلٰی اٰبَآئِكَ وَ اَجْدَادِكَ وَ

अल्लाह का दुरूद हो आप पर आपके आबा व अजदाद पर आप के फ़रज़ंदा, शियों और मोहब्बत

اَبْنَآئِكَ وَ شِیْعَتِكَ وَ مُحِبِّیْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

करनेवालों पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद दो रकत नमाज़ सूरह यासीन और रहमान के साथ अदा करे या फिर जिस प्रकार मुम्किन हो। उसके बाद जो चाहे दुआ करे।

दूसरी ज़ियारत हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ)

शेख़ मुफ़ीद और शेख़ शहीद और मोहम्मद बिन मशहदी ने फ़रमाया है के जब बग़दाद में आं हज़रत (अ) की ज़ियारत करना चाहो तो पहले ग़ुस्ले ज़ियारत करो। उसके बाद हरमे मुबारक का क़स्द कर के दरे हरम तक आकर इज़्ने दोख़ूल तलब कर के दाख़ल हो और यूँ कहो:

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ عَلٰی مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ السَّلَامُ عَلٰی

खुदा के नाम से खुदा की ज़ात से और राहे खुदा मे और मिल्लते रसूले खुदा (स) पर ओर सलाम

اَوْلِیَآءِ اللّٰهِ.

हो खुदा के वलियों पर।

उसके बाद मुक़ाबिले क़ब्रे मूसा बिन जाफ़र (अ) खड़े हो कर यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نُوْرَ اللّٰهِ فِیْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَلِیَّ

सलाम आप पर ऐ नूरे खुदा ज़मीन की तारीकियां मे। सलाम आपपर ऐ वलिए खुदा। सलाम आप

اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا حُجَّةَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا بَابَ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ

पर ऐ खुदा की हुज्जत। सलाम आप पर ऐ दरवाज़ए खुदा। मै गवाही देता हूँ के आप ने नमाज़ क़ाएम

اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَیْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَیْتَ عَنِ

की और ज़कात अदा की और नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका और किताब की तिलावत

الْمُنْكَرِ وَ تَلَوْتَ الْكِتَابَ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ وَ جَاهَدْتَ فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ

कार जो तिलावत का हक़ था और राहे खुदा मे जिहाद किया जो हक़े जिहाद था और सब्र किया

وَ صَبَرْتَ عَلَی الْاَذٰی فِیْ جَنْبِهٖ مُحْتَسِبًا وَ عَبَدْتَهٗ مُخْلِصًا حَتّٰی اَتٰیكَ

राहे खुदा मे तकली०फां पर और उसकी इबादत की खुलूस के साथ यहाँ तक के मौत आ गई। मै

الْيَقِيْنُ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَوْلٰى بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَ اَنَّكَ ابْنُ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَقًّا

गवाही देता हूँ के आप खुदा और रसूल से क़ुर्ब मे औला और यक़ीनन फ़रज़ंदे रसूले खुदा हैं। मै

اَبْرَءُ اِلَى اللّٰهِ مِنْ اَعْدَآئِكَ وَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ بِمُوَالَاتِكَ اَتَيْتُكَ يَا

अल्लाह की तरफ़ बराअत करता हूँ आपके दुश्मनों से और क़ुर्ब चाहता हूँ अल्लाह की तरफ़ आपकी

مَوْلَایَ عَارِفًا بِحَقِّكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكَ فَاشْفَعْ

दोस्ती से मै आप के पास आया हूँ ऐ मेरे मौला आपके हक़ का आरिफ़ हो कर आपके दोस्तों का

لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ.

दोस्त हो कर आप के दुश्मनो का दुश्मन हो कर तो मेरी शिफ़ाअत कीजिए अपने खुदा के पास।

फिर अपने आप को क़ब्र पर गिरा दे, बोसा ले, दोनो रूख़सारों को रखे, इमाम के सर की जानिब फिरे, रूके और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ صَادِقٌ اَدَّيْتَ نَاصِحًا وَ

सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा मै गवाही देता हूँ के आप सादिक़ हैं आपने ख़ैर ख़्वाही के

قُلْتَ اَمِيْنًا وَ مَضَيْتَ شَهِيْدًا لَّمْ تُؤْثِرْ عَمًى عَلَى الْهُدٰى وَلَمْ تَمِلْ

साथ अमानत को अदा किया और अमानतदारी के साथ बोले और शहादत के मर्तबे पर गुज़रे

مِنْ حَقٍّ اِلٰى بَاطِلٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اٰبَآئِكَ وَ اَبْنَآئِكَ

आपने गुम्राही को मुक़द्दम नही किया हिदायत के मुक़ाबले मे और हक़ से बातिल की तरफ़ माएल

الطَّاهِرِيْنَ.

नही हुए। अल्लाह का दुरूद हो आपपर और आप के आबा व फ़रज़ंदाने ताहेरीन पर।

उसके बाद क़ब्र को बोसा देकर दो रकत नमाज़ अदा करे और इसके बाद जो नमाज़ चाहे पढ़े। आाख़िर में सजदे में जाकर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اعْتَمَدْتُ وَ اِلَيْكَ قَصَدْتُ وَ لِفَضْلِكَ رَجَوْتُ وَ قَبْرَ

खुदाया तेरी तरफ़ मैने एतेमाद किया और तेरा मैने क़सद किया और तेरे फ़ज़्ल की उम्मीद की

اِمَامِيَ الَّذِيْ اَوْجَبْتَ عَلَيَّ طَاعَتَهٗ زُرْتُ وَ بِهٖ اِلَيْكَ تَوَسَّلْتُ

और अपने उस इमाम की क़ब्र की ज़ियारत की जिसकी इताअत मुझपर वाजिब की है और उसके

فَبِحَقِّهِمُ الَّذِيْ اَوْجَبْتَ عَلٰى نَفْسِكَ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

ज़रिए तेरी तरफ़ तवस्सुल किया है तो उनके उस हक़ का वास्ता जिसको तूने अपने ऊपर वाजिब

يَا كَرِيْمُ.

किया है मुझको बख़्श दे और मेरे वालेदैन और मोमिनीन को भी ऐ करीम।

फिर अपने दहिने रूख़सार को ज़मीन पर रखे और कहे:

اَللّٰهُمَّ قَدْ عَلِمْتَ حَوَآئِجِيْ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اقْضِهَا.

खुदाया तुझ को मेरी हाजतें मालूम है पस दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनको पूरा कर दे।

फिर अपने बाएं रूख़सार को ज़मीन पर रखे और कहे:

اَللّٰهُمَّ قَدْ اَحْصَيْتَ ذُنُوْبِيْ فَبِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

खुदाया तू ने मेरे गुनाहों का अहसार कर लिया है तो मोहम्मदा और आले मोहम्मद के हक़ का वासता दुरूद

اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْهَا وَ تَصَدَّقْ عَلَيَّ بِمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ.

फिर पेशानी को सजदे में रख के सौ बार शुक्रन कहे और सर उठा कर जो चाहे दुआ करे।

شُكْرًا

फिर अपने सर को उठाए और जो चाहे दुआ करे।

लेखक: सय्यदे जलील अली बिन ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में हज़रत की ज़ियारात में से सलवात भी नक़्ल की है। जिसमें आप के फ़ज़ाएल व मनाक़ब, आप की इबादत और आपके मसाएब का ज़िक्र है। लेहाज़ा हज़रात इस सलवात के पढ़ने से महरूम न रहें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ صَلِّ عَلٰى مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ وَصِيِّ

नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और गुनाहों को बख़्श दे और मुझ पर रहेम फ़र्मा जिस का तू अहेल

الْاَبْرَارِ وَ اِمَامِ الْاَخْيَارِ وَ عَيْبَةِ الْاَنْوَارِ وَ وَارِثِ السَّكِيْنَةِ وَ

है।खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मदो उनके अहलेबैत पर और दुरूद नाज़ल कर मूसा बिन

الْوَقَارِ وَ الْحِكَمِ وَ الْاٰثَارِ الَّذِيْ كَانَ يُحْيِي اللَّيْلَ بِالسَّهَرِ اِلَى السَّحَرِ

जाफ़र (अ) पर जो नेकुकारों के वसी और नेक लोगों के इमाम हैं। अनवार का सनदूक़ और

بِمُوَاصَلَةِ الْاِسْتِغْفَارِ حَلِيْفِ السَّجْدَةِ الطَّوِيْلَةِ وَ الدُّمُوْعِ الْغَزِيْرَةِ

सुकून व विक़ार के वारिस और हिकत व आसार के वारिस हैं जो रातों मे सुबह तक बेदार रहते

وَ الْمُنَاجَاتِ الْكَثِيْرَةِ وَ الضَّرَاعَاتِ الْمُتَّصِلَةِ الْجَمِيْلَةِ وَ مَقَرِّ

थे मुसलसल इस्तेग़फ़ार के साथ और तूलानी सजदे के साथ और अशकबार आँखो के साथ वो

النُّهٰى وَ الْعَدْلِ وَ الْخَيْرِ وَ الْفَضْلِ وَ النَّدٰى وَ الْبَذْلِ وَ مَأْلَفِ

मादने अक़्ल व अद्ल और ख़ैर व फ़ज़्ल और अता व एहसान थे उनका वुजूदे मुक़द्दस बला व

الْبَلْوٰى وَ الصَّبْرِ وَ الْمُضْطَهَدِ بِالظُّلْمِ وَ الْمَقْبُوْرِ بِالْجَوْرِ وَ الْمُعَذَّبِ

सब्र के साथ उलफ़त का मकाम और ज़ुल्म पर सब्र करने का मकाम था और ज़ुल्म के साथ क़ब्र

فِيْ قَعْرِ السُّجُوْنِ وَ ظُلَمِ الْمَطَامِيْرِ ذِي السَّاقِ الْمَرْضُوْضِ بِحَلَقِ

मे रखे गए और कैदख़ानो मे गिरफ़तारे मसाएब रहे और तारीक ज़िन्दानों मे उनके पाए मुबारक

الْقُيُوْدِ وَ الْجَنَازَةِ الْمُنَادٰى عَلَيْهَا بِذُلِّ الْاِسْتِخْفَافِ وَ الْوَارِدِ عَلٰى

ज़न्जीर के हलक़े मे मजरू रहे और रहलत के वक़्त उनके ज़नाजे पर खवारी के साथ आवाज़

جَدِّهِ الْمُصْطَفٰى وَ اَبِيْهِ الْمُرْتَضٰى وَ اُمِّهٖ سَيِّدَةِ النِّسَآءِ بِاِرْثٍ

लगाई गई और वो इस हाल मे अपने जद्दे अमजद मोहम्मदे मुसतफ़ा (स) और वालिद अलीए

مَغْضُوْبٍ وَ وَلَآءٍ مَّسْلُوْبٍ وَّ اَمْرٍ مَّغْلُوْبٍ وَّ دَمٍ مَطْلُوْبٍ وَّ سَمٍّ

मुरतुज़ा (अ) और माँ सैय्यदुन्निसा के पास वारिद हुए के उनकी मिरास ग़ज़ब की हुई और विलायत

مَشْرُوْبٍ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا صَبَرَ عَلٰى غَيْظِ الْمِحَنِ وَ تَجَرَّعَ فِيْكَ غُصَصَ

छीनी हुई थी और मग़लूब था और ख़ून तलब किया जा रहा था और ज़हेर पिलाया जा रहा था।

الْكُرَبِ وَ اسْتَسْلَمَ لِرِضَاكَ وَ اَخْلَصَ الطَّاعَةَ لَكَ وَ مَحَضَ

खुदाया जिस तरह उन्होने सब्र किया सख़्त तकलीफ़ पर और तकलीफ़ के ग़ुस्से के घुँट पिए और

الْخُشُوْعَ وَاسْتَشْعَرَ الْخُضُوْعَ وَعَادَى الْبِدْعَةَ وَاَهْلَهَا وَلَمْ يَلْحَقْهُ

तेरी मर्ज़ा पर सर तसलीम ख़म किए रहे और इताअत को तेरे लिए ख़ालिस किया और खुज़ू को

فِيْ شَيْءٍ مِّنْ اَوَامِرِكَ وَ نَوَاهِيْكَ لَوْمَةُ لَآئِمٍ صَلِّ عَلَيْهِ صَلَاةً نَامِيَةً

ख़ालिस रखा और खुज़ू को बजा लाए और बिदअत व अहले बिदअत से दुश्मनी की और तेरे

مُّنِيْفَةً زَاكِيَةً تُوْجِبُ لَهٗ بِهَا شَفَاعَةَ اُمَمٍ مِّنْ خَلْقِكَ وَ قُرُوْنٍ مِّنْ

अहकाम व नवाही मे किसी मलामत वाले की मलामत उन तक नही पहुँच सकी। तू दुरूद नाज़ल

بَرَايَاكَ وَ بَلِّغْهُ عَنَّا تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا وَّ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ فِيْ مُوَالَاتِهٖ

कर उन पर मुसलसल बुलंद मरतबह दुरूद जो पाकीज़ा हो और तेरी मख़लूक मे से एक उम्मत

فَضْلًا وَّ اِحْسَانًا وَّ مَغْفِرَةً وَّ رِضْوَانًا اِنَّكَ ذُوْ الْفَضْلِ الْعَمِيْمِ وَ

के लिए शिफ़ाअत का सबब हो और हमारी तरफ़ से उनको पहु@ंचा दे तहय्यत व सलाम और

التَّجَاوُزِ الْعَظِيْمِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

हमको देदे अपने पास से उनकी मोहब्बत मे फ़ज़्ल व एहसान और मग़फ़ेरत व रिज़वान बेशक तू

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.स.) की ज़ियारत

गुज़श्ता तीनों बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है के उसके बाद क़ब्रे इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) का रूख़ करे जो आपके जद्दे बुज़ुर्गवार की पुश्त पर है।
और वहां खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आम फ़ज़्ल वाला और अज़ीम दरगुज़रवाला है अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

يَا نُوْرَ اللهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा। सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा। सलाम आप पर ऐ नेर खुदा ज़मीन

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اٰبَآئِكَ السَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اَبْنَآئِكَ

की तारीकियों मे। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। सलाम आप पर और आप के आबा

السَّلَامُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اَوْلِيَآئِكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ

ताहेरीन पर। सलाम आप पर और आप के फ़रज़ंदो पर। सलाम आप पर और आप के औलिया

اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تَلَوْتَ

पर। मै गवाही देता हूँ के आपने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की और अम्र बिल मारूफ़ और

الْكِتَابَ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ وَ جَاهَدْتَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ وَ صَبَرْتَ عَلَى

नही अनिल मुनकर किया और किताब की तिलावत की जो हक़ तिलावत था और राहे खुदा मे

الْاَذٰى فِيْ جَنْبِهٖ حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ اَتَيْتُكَ زَآئِرًا عَارِفًا بِحَقِّكَ

जिहाद किया जो हक़ जिहाद था और राहे खुदा मे अज़ीयत पर सब्र किया यहाँ तक के मौत आ गई।

مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكَ فَاشْفَعْ لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ.

मै आप के पास आया हूँ ज़ियारत के लिए आपके हक़को पहचानते हुए आप के दोस्तों का दोस्त हो

उसके बाद क़ब्र को बोसा देकर रूख़सारों को क़ब्र पर रखे और दो रकत नमाज़े ज़ियारत अदा करने के बाद जो नमाज़ चाहे पढ़े। और आाख़िर में सजदे में जाकर कहे:

اِرْحَمْ مَنْ اَسَآءَ وَاقْتَرَفَ وَاسْتَكَانَ وَاعْتَرَفَ

कर और आपके दुश्मनोका दुश्मन हो कर तो आप मेरी शिफ़ाअत करें अपने रब की बारगाह मे।

फिर दाहने रूख़सार को रख कर कहे:

اِنْ كُنْتُ بِئْسَ الْعَبْدُ فَاَنْتَ نِعْمَ الرَّبُّ

रहेम उसपर जिसने बुराई की है व जुर्म किया है व बेचारा हुआ है व एतेराफ़ किया है।

फिर बायाँ रूख़सार रख कर कहे:

عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ يَا كَرِيْمُ.

अगर मै बदतरीन बन्दा हूँ तो तू बेहतरीन परवरदिगार है।

इसके बाद पेशानी ख़ाक पर रख कर सौ बार कहे: شُكْرًا
इसके बाद अपने काम से जा सकता है।

इमामे मोहम्मद तक़ी (अ.स.) की दूसरी ज़ियारत

सय्यद इब्ने ताऊस ने मज़ार में फ़रमाया है के जब इमाम मूसा काज़िम (अ) की ज़ियारत ख़त्म हो जाए तो क़ब्रे इमाम जवाद के पास खड़े हो कर उसे बोसा दे और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ الْبَرَّ التَّقِيَّ الْاِمَامَ الْوَفِيَّ

जब तेरे बन्दाका गुनाह अज़ीम है तू अपनी बेहतरीन माफ़ी को मेरे शामिल कर दे ऐ करम वाले।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ

सलाम आप पर ऐ अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली जो नेक, मुत्तक़ी, इमाम और वफ़ादार

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَجِيَّ اللهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَفِيْرَ اللهِ اَلسَّلَامُ

थे। सलाम आप पर ऐ पसंदीदए खुदा और ऐब से पाक, सलाम आप पर ऐ वलाए खुदा,

عَلَيْكَ يَا سِرَّ اللهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ضِيَآءَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ राज़दारे खुदा, सलाम आप पर ऐ सफ़ीरे खुदा, सलाम आप पर ऐ राज़े

سَنَآءَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا كَلِمَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَحْمَةَ اللهِ

खुदा, सलाम आप पर ऐ नूरे खुदा, सलाम आप पर ऐ रौशनिए खुदा, सलाम आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النُّوْرُ السَّاطِعُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْبَدْرُ

ऐ चमकनेवाले नूर, सलाम आप पर ऐ दरख़शंदा महताब, सलाम आप पर ऐ पाकीज़ा

اَلطَّالِعُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الطَّيِّبُ مِنَ الطِّيِّبِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

लोगों मे पाकीज़ा, सलाम आप पर ऐ ताहिर अफ़राद मे ताहिर सलाम आप ऐ अल्लाह

اَيُّهَا الطَّاهِرُ مِنَ الْمُطَهَّرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاٰيَةُ الْعُظْمٰى

की अज़ीम निशानी, सलाम आप पर ऐ हुज्जते किबरीया, सलाम आप पर ऐ लगिज़शों

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْحُجَّةُ الْكُبْرٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُطَهَّرُ

से पाकीज़ा, सलाम आप पर ऐ बद बहकने से पाक व पाकीज़ा, सलाम आप पर ऐ वो

مِنَ الزَّلَّاتِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُنَزَّهُ عَنِ الْمُعْضِلَاتِ اَلسَّلَامُ

ज़ात जो दूर है सिफ़तों के नक़ाएस से, सलाम आप पर ऐ पसंदिदाए अशराफ़, सलाम

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَلِيُّ عَنْ نَقْصِ الْاَوْصَافِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الرَّضِيُّ

आप पर ऐ दीन के सुतून। मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के वली और उसकी हुज्जत

عِنْدَ الْاَشْرَافِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمُوْدَ الدِّيْنِ اَشْهَدُ اَنَّكَ وَلِيُّ اللّٰهِ وَ

हैं उसकी ज़मीन मे और आप तरफ़दारे दीन खुदा, मुन्ताख़िबे खुदा और मकाम अमानते

حُجَّتُهٗ فِيْ اَرْضِهٖ وَ اَنَّكَ جَنْبُ اللّٰهِ وَ خِيَرَةُ اللّٰهِ وَ مُسْتَوْدَعُ عِلْمِ اللّٰهِ وَ

इसरार इल्मे खुदा और इल्मे अंबिया हैं और इमान का रूक्न और क़ुआर्न के तरजुमान हैं

عِلْمِ الْاَنْبِيَآءِ وَ رُكْنُ الْاِيْمَانِ وَ تَرْجُمَانُ الْقُرْاٰنِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مَنِ

और मै गवाही देता हूँ के जिस ने आप का इत्तेबा किया वो हक़ और हिदायत पर है और

اتَّبَعَكَ عَلَى الْحَقِّ وَ الْهُدٰى وَ اَنَّ مَنْ اَنْكَرَكَ وَ نَصَبَ لَكَ الْعَدَاوَةَ

जिसने आप का इनकार किया और अदावत इख़्तियार की वो गुम्राही और हलाकत पर

عَلَى الضَّلَالَةِ وَ الرَّدٰى اَبْرَءُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلَيْكَ مِنْهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ

है। मै अल्लाह की तरफ़ बरी होता हूँ और आपकी तरफ़ उनसे दुनिया और आख़िरत मे

وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ مَا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ.

और सलाम आप पर जब तक मै बाक़ी रहूँ और शबो राज़ बाक़ी रहें।

उसके बाद आप पर यूँ सलवात पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ الزَّكِيِّ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और उन के अहलेबैत पर और दुरूद नाज़ल कर मोहम्द बिन अली (अ)

التَّقِيِّ وَ الْبَرِّ الْوَفِيِّ وَ الْمُهَذَّبِ النَّقِيِّ هَادِيْ الْاُمَّةِ وَ وَارِثِ الْاَئِمَّةِ وَ

पर जो पाकीज़ा और मुत्तक़ी नेक, वफ़ादार, मोहज़्ज़ब, साफ़ और उम्मत के हादी और अइम्मा के वारिस हैं

خَازِنِ الرَّحْمَةِ وَ يَنْبُوْعِ الْحِكْمَةِ وَ قَآئِدِ الْبَرَكَةِ وَ عَدِيْلِ الْقُرْآنِ فِي

और रहमत के ख़ज़ीनेदार और मंबए हिकमत और क़ाएदे ख़ैरो बरकत और मिस्ले क़ुआर्न हैं इताअत मे और

الطَّاعَةِ وَ وَاحِدِ الْاَوْصِيَآءِ فِي الْاِخْلَاصِ وَ الْعِبَادَةِ وَ حُجَّتِكَ الْعُلْيَا

औसिया मे से एक हैं इख़लास और इबादत मे और तेरी बुलंद हुज्जत है और बुलंद मिसाल हैं और बेहतरीन

وَ مَثَلِكَ الْاَعْلٰى وَ كَلِمَتِكَ الْحُسْنٰى الدَّاعِىْ اِلَيْكَ وَ الدَّآلِّ عَلَيْكَ

कलेमा हैं जो तेरी तरफ़ दावत देनेवाले हैं और तुझपर दलील हैं। जिनको तूने अपने बन्दों के लिए निशानी

الَّذِىْ نَصَبْتَهٗ عَلَمًا لِّعِبَادِكَ وَ مُتَرْجِمًا لِكِتَابِكَ وَ صَادِعًا بِاَمْرِكَ وَ

और अपनी किताब का मुतरजिम और अपने अम्र का आशकार करनेवाला अपने दीन का नासिर अपनी

نَاصِرًا لِّدِيْنِكَ وَ حُجَّةً عَلٰى خَلْقِكَ وَ نُوْرًا تُخْرَقُ بِهِ الظُّلَمُ وَ قُدْوَةً

मख़लूक़ पर हुज्जत बनाया है और ऐसा नूर बनाया है जिसके ज़रिए तारिकियाँ ख़त्म हो जाती हैं और ऐसा हादी

تُدْرَكُ بِهَا الْهِدَايَةُ وَ شَفِيْعًا تُنَالُ بِهِ الْجَنَّةُ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا اَخَذَ فِىْ

बनाया है जिन के ज़रिए हिदायत हास्लि होती है और ऐस शफ़ी बनाया है जिनके ज़रिए जन्नत हासिल की जाती

خُشُوْعِهٖ لَكَ حَظَّهٗ وَ اسْتَوْفٰى مِنْ خَشْيَتِكَ نَصِيْبَهٗ فَصَلِّ عَلَيْهِ

है। खुदाया जिस तरह उन्होने हासिल किया है अपने खुशू से अपना हिस्सा और हासिल किया है तेरे ख़ाफ़ से

اَضْعَافَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى وَلِيٍّ ارْتَضَيْتَ طَاعَتَهٗ وَ قَبِلْتَ خِدْمَتَهٗ وَ

अपना हिस्सा, तो तू दुरूद नाज़ल कर उनपर कई गुना दुरूद उससे जो तूने भेजा है किसी ऐसे वली पर जिसकी

بَلِّغْهُ مِنَّا تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا وَّ اٰتِنَا فِىْ مُوَالَاتِهٖ مِنْ لَّدُنْكَ فَضْلًا وَّ

ताअत को पसंद किया है और जिसकी ख़िदमत को क़ुबूल किया है और उनको पहुँचा दे मेरी तरफ़ से तहय्यत

اِحْسَانًا وَّ مَغْفِرَةً وَّ رِضْوَانًا اِنَّكَ ذُو الْمَنِّ الْقَدِيْمِ وَ الصَّفْحِ

व सलाम और हमको अता कर उनकी मोहब्बत मे अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल और एहसान और मग़फ़िरत और

الْجَمِيْل.

रिज़वान। बेशक तू क़दीम एहसानवाला और बेहतरीन माफ़ी वाला है। खुदाया तू रब है और मै पाला हुआ हूँ।

उसके बाद नमाज़े ज़ियारत पढ़े और सलाम के बाद यह दुआ आख़िर तक पढ़े जो पृष्ठ नं. ??? पर है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الرَّبُّ وَاَنَا الْمَرْبُوْبُ

दूसरी ज़ियारते मख़सूस इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.स.)

शेख़ सदूक़ ने फ़क़ीह में रिवायत की है के जब हज़रत की ज़ियारत करना चाहे तो पहले गुस्ल करे पाकीज़ा कपड़े पहने फिर यूँ ज़ियारत पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ الْاِمَامِ التَّقِيِّ النَّقِيِّ الرَّضِيِّ الْمَرْضِيِّ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद बिन अली (अ) पर जो इमाम, मुत्तक़ी, पाकीज़ा, पसंदीदए खुदा

وَ حُجَّتِكَ عَلٰى مَنْ فَوْقَ الْاَرْضِ وَ مَنْ تَحْتَ الثَّرٰى صَلَاةً كَثِيْرَةً

और ०मर्ज़ाए खुदा हैं और तेरी हुज्जत हैं हर उस शख़्स पर जो ज़मीन के ऊपर या ज़ेरे ख़ाक है ज़्यादा

نَامِيَةً زَاكِيَةً مُبَارَكَةً مُتَوَاصِلَةً مُتَرَادِفَةً مُتَوَاتِرَةً كَاَفْضَلِ مَا

सलवात बढ़नेवाली पाकीज़ा, मोबारक, मोसलसल, पै दर पै, मोतवातिर बेहतरीन सलवात जिसे

صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَوْلِيَآئِكَ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

तूने भेजा है अपने वलियों मे से किसी एक पर और सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा। सलाम आप

عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ

पर ऐ नूरे खुदा। सलाम आप पर ऐ हुज्जते खुदा। सलाम आप पर ऐ मोमिनो के इमाम और वारिसे

اَلْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثَ عِلْمِ النَّبِيِّيْنَ وَ سُلَالَةَ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ

इल्मे अंबिया और वसीयों की नस्ल। सलाम आप पर ऐ खुदा के नूर ज़मीन की तारीकियों में। मै

عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ اَتَيْتُكَ زَآئِرًا عَارِفًا بِحَقِّكَ

आप के पास ज़ियारत के लिए आया हूँ आप के हक़ की मारेफ़त और आप के दुश्मनो की अदावत

مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكَ فَاشْفَعْ لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ.

और आपके दोस्तों की मोहब्बत के साथ तो आप शिफ़ाअत कीजिए मेरे लिए अपने रब के पास।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे और बालाए सर चार रकत नमाज़ अदा करे।

दो रकत इमाम मूसा काज़िम (अ) के लिए और दो रकत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) के लिए।

और इमाम मूसा काज़िम (अ) के सरहाने नमाज़ न पढ़े के वह क़ुबूरे क़ुरैश के मुक़ाबिल है और उनको क़िबला क़रार देना सहीह नहीं है।

लेखक: शेख़ सदूक के इस कलाम से ज़ाहिर होता है के उस ज़माने में इमाम मूसा काज़िम (अ) की क़ब्र इमाम जवाद (अ) की क़ब्र से जुदा थी और दोनों के अलाहेदा गुंबज व दरवाज़े थे। और लोग एक जगह से दूसरी जगह बाहर आने के बाद जाते थे। और क़ुब्बाए इमाम जवाद (अ) में दाख़ल होते थे और उसकी तामीर अलग थी।

ज़ियारते मुशतरिक

दोनों इमामों की मुश्तरिक ज़ियारतें दो तरह की हैं।

पहली क़िस्म

वह है जो हर एक के लिए अलग अलग पढ़ी जा सकती है जैसा के शेख़े जलील जाफ़र बिन मोहम्मद क़ूलूवय क़ुम्मी ने कामेलुज़ ज़ियारात में इमाम अली नक़ी (अ.स.) से नक़्ल किया है के इस ज़ियारत को दोनों के लिए अलग अलग पढ़ सकते हो।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा। सलाम आप पर ऐ रहमते खुदा। सलाम आप पर ऐ नूरे खुदा ज़मीन

يَا نُورَ اللهِ فِي ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ بَدَا لِلّٰهِ فِي شَانِهِ

की तारकीयों मे। सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जिसके लिए खुदा ने इरादे को ज़ाहिर किया मै आप के

اَتَيْتُكَ زَائِرًا عَارِفًا بِحَقِّكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَائِكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَائِكَ

पास ज़ियारत के लिए आया हूँ आप के हक़ की मारेफ़त आप के दुश्मनों की अदावत और आपके

فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ رَبِّكَ يَا مَوْلَايَ

दोस्तों की मोहब्बत के साथ तो मेरी शिफ़ाअत कीजिए अपने रब के पास ऐ मेरे मौला।

यह ज़ियारत इंतेहाई मोतबर है और शेख़ सदूक़, शेख़ कुलैनी और शेख़े तूसी, सबने इख़्तेलाफ़े अलफाज़ के साथ इसका ज़िक्र किया है।

दूसरी क़िस्म

वह ज़ियारत है जो दोनो इमामों की एक साथ पढ़ी जा सकती है। जैसा के शेख़े मुफ़ीद व शहीद व मोहम्मद बिन मशहदी ने ज़िक्र किया है के ज़रीह के पास खड़े हो कर दोनों को इस तरह सलाम करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَلِيَّيِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا حُجَّتَيِ اللهِ السَّلَامُ

सलाम हो आप दोनो पर ऐ अल्लाह के वली सलाम हो आप दोनो पर ऐ अल्लाह की हुज्जत। सलाम हो आप दोनों

عَلَيْكُمَا يَا نُورَيِ اللهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ اَشْهَدُ اَنَّكُمَا قَدْ بَلَّغْتُمَا

पर ऐ अल्लाह के नूर ज़मीन की तारीकियों मे। मै गवाही देता हूँ के आप दोनो ने पहुँचा दिया उसको जिसके

عَنِ اللهِ مَا حَمَّلَكُمَا وَ حَفِظْتُمَا مَا اسْتُوْدِعْتُمَا وَ حَلَّلْتُمَا حَلَالَ اللهِ وَ

मुतहम्मिल हुए अल्लाह की तरफ़ से और आप दोनोने हिफ़ज़त की उस की जिसको वदूदियत मे दिया गया और

حَرَّمْتُمَا حَرَامَ اللهِ وَ اَقَمْتُمَا حُدُوْدَ اللهِ وَ تَلَوْتُمَا كِتَابَ اللهِ وَ صَبَرْتُمَا

आप ने हलाल रखा हलाले खुदा को और हरामे खुदा को हराम रखा और आप दोनो ने क़ाएम किया हुदूदे ख़दु

عَلَى الْاَذٰى فِيْ جَنْبِ اللهِ مُحْتَسِبِيْنِ حَتّٰى اَتٰيكُمَا الْيَقِيْنُ اَبْرَءُ اِلَى

को और आपने तिलवत की किताबे खुदा की और आप ने सब्र किया राहे खुदा मे अज़ीयत पर खुलूस के साथ

اللهِ مِنْ اَعْدَآئِكُمَا وَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ بِوِلَايَتِكُمَا اَتَيْتُكُمَا زَآئِرًا

यहाँ तक के मौत आ गई। मै बराअत करता हूँ अल्लाह की तरफ़ आप के दुश्मनो से और मै क़रीब होता हूँ अल्लाह

عَارِفًا بِحَقِّكُمَا مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكُمَا مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكُمَا

की तरफ़ आप की दोस्ती के ज़रिए। मै आप दोनो के पास आया हूँ ज़ियारत करने। आप के हक़ को पहचानते

مُسْتَبْصِرًا بِالْهُدَى الَّذِىْ اَنْتُمَا عَلَيْهِ عَارِفًا بِضَلَالَةِ مَنْ خَالَفَكُمَا

हुए। आपके दोस्तों का दोस्त और आपके दुश्मनों का दुश्मन बन कर और पहचानते हुए उस हिदायत को जिस

فَاشْفَعَا لِىْ عِنْدَ اللّٰهِ رَبِّكُمَا فَاِنَّ لَكُمَا عِنْدَ اللّٰهِ جَاهًا عَظِيْمًا وَ مَقَامًا

पर आप दोनो हैं और उसकी गुम्राही को पहचानते हुए जो आप दोनो का मुख़ालिफ़ हुआ तो आप दोनो शिफ़ाअत

مَّحْمُوْدًا.

करें मेरे लिए अपने रब के पास क्योंके आप के लिए खुदाके नज़दीक बेहतरीन मरतबा और पसंदीदा मकाम है।

उसके बाद तुरबते शरीफ़ का बोसा देकर दाहने रूख़सार को ख़ाक पर रखे और फिर बालाए सर जाकर इस तरह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا حُجَّتَيِ اللّٰهِ فِىْ اَرْضِهٖ وَ سَمَآئِهٖ عَبْدُ كُمَا وَ وَلِيُّكُمَا

सलाम आप दोनोपर ऐ अल्लाह की हुज्जत उसकी ज़मीन मे और उसके आसमान मे। आप का

زَآئِرُكُمَا مُتَقَرِّبٌ اِلَى اللّٰهِ بِزِيَارَتِكُمَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِىْ لِسَانَ صِدْقٍ

बन्दा और दोस्त व ज़ाएर, अल्लाह की तरफ़ क़ुरबत चाहते हुए आपकी ज़ियारत के लिए आया है।

فِىْ اَوْلِيَآئِكَ الْمُصْطَفَيْنَ وَ حَبِّبْ اِلَىَّ مَشَاهِدَهُمْ وَ اجْعَلْنِىْ مَعَهُمْ

खुदाया मेरे लिए सच्ची ज़ुबान क़रार दे दे अपने मुनताख़िब वलीयों मे और उनकी ज़ियारतगाह को

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

मेरे लिए महबूब बना दे और मुझको क़रार दे दे उन के साथ और आख़िरत मे ऐ सबसे ज़्यादा रहेम

इसके बाद हर इमाम के लिए दो रकत नमाज़े ज़ियारत अदा करे और जो चाहे दुआ करे।
लेखक: उस ज़माने में तक़य्या बहुत शदीद था इस लिए उन अइम्मा के लिए मुख़तसर तरीन ज़ियारतों की तालीम दी गई है के लोग ज़ालिमों के शर से महफ़ूज़ रहें।
लेहाज़ा अगर कोई व्यक्ति तवील ज़ियारत पढ़ना चाहे तो ज़ियारते जामेआ पढ़ सकता है जो बेहतरीन ज़ियारत है। खुसूसन एक ज़ियारते जामेआ जिसकी हदीस से ज़ाहिर होता है के उसे इमाम मूसा काज़िम (अ) से मज़ीद खुसूसियत हासिल है और इसका ज़िक्र बाद में होगा।
उसके बाद जब ज़ाएर इमाम के शहर से बाहर जाना चाहे तो उन दोनों हज़रात को इस तरह विदा करे जैसे शेख़ तूसी (र) ने तहज़ीब में ज़िक्र किया है के जब इमाम मूसा काज़िम (अ) को विदा करना चाहे तो क़ब्र के पास खड़े हो कर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا الْحَسَنِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

करनेवाले। सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबुल हसन और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। मै

اَسْتَوْدِعُكَ اللهَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكَ السَّلَامَ اٰمَنَّا بِاللهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ بِمَا

Dाप को खुदाके सुपूर्द करता हूँ और आप पर सलाम पढ़ता हूँ। हम अललाह व रसूल पर ईमान लाए

جِئْتَ بِهٖ وَ دَلَلْتَ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ اكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ.

और उस पर जिसे आप हज़रात लाए और जिस की रहनुमाई की खुदाया हमको गवाहों मे लिख ले।

इसी तरह इमामे मोहम्मद तक़ी (अ) को भी विदा करे।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللهِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा और अल्लाह की रहमत व बरकात हों मै आप को

اَسْتَوْدِعُكَ اللهَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكَ السَّلَامَ اٰمَنَّا بِاللهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ بِمَا

खुदा के सुपुर्द करता हूँ और मै आप पर सलाम भेजता हूँ। हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस के रसूल

جِئْتَ بِهٖ وَ دَلَلْتَ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ اكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ.

पर और उस पर जो आप लाए और जिस की रहनुमाई की। खुदाया हमको लिख ले गवाहों के साथ।

उसके बाद खुदा से सवाल करे के यह आख़री ज़ियारत न हो और दोबारा आने की तौफ़ीक़ मिले और फिर क़ब्र को बोसा देकर रूख़सत हो।

लेखक: इस मकाम पर मुनासिब है के मर्दे मोमिने सालेह मुत्तकी हाजी अली बग़दादी की हिकायत को नक़्ल कर दिया जाए जिसको हमारे उस्ताद ने जन्नतुल मावा और नजमुस साक़िब में नक़्ल किया है और नजमुस साक़ब में फ़रमाया है अगर इस किताब में सिर्फ़ यही एक मोतबर हिकायत होती जो अभी ज़मानए हाल ही में वाक़े हुई है तो उसकी शराफ़तो नफ़ासत के लिए काफ़ी थी। उसके बाद चंद मुक़द्देमात के बाद बयान किया है के हाजी अली बग़दादी से नक़्ल किया गया है के मेरे ज़िम्मे अस्सी तूमान माले इमाम जमा हो गए थे तो मैंने नजफ़े अशरफ़ जाकर बीस तूमान अलमुल हुदा शेख़ मुरतुज़ा को, बीस तुमान जनाब शेख़ मोहम्मद हुसैन काज़मी को और बीस तूमान शेख़ मुहम्म्द शुरूख़ी को दे दिए और बाक़ी बीस तूमान मेरे पास रह गए। जिसके बारे में खयाल था के वापस आकर शेख़ मोहम्मद हुसैन काज़मैनी आले यासीन को पेश करूंगा। मैं बग़दाद पलट कर आया तो मैनें चाहा के फ़ौरन इस कर्ज़

को अदा कर दिया जाए। गुरूवार के दिन हज़रात काज़मैन (अ) की ज़ियारत से मुशरर्फ़ हुआ और उसके बाद जनाब शेख़ की ख़िदमत में हाज़र हुआ और बकिया बीस तुमान में से कुछ हाज़र कर दिया। और बाक़ी के लिए वादा कर लिया के जिस को बेच कर अदा कर दूँगा। इसके बाद अस्र के समय बग़दाद वापसी का इरादा था। के जनाबे शेख़ ने फ़रमाया के मैं वहाँ ठहर जाऊँ। मैंने उज़्र किया के मुझे कारख़ाने के मज़दूरों की मज़दूरी देना है के हमारे यहाँ की रसम यह थी के हफ़्ते भर की मज़दूरी गुरूवार की शाम को दी जाती थी। चुनांचे मैं पलट आया। लेकिन तक़रीबन एक तेहाई रास्ता तै हो गया तो मैंने एक सय्यदे जलील को बग़दाद की तरफ़ से आते हुए देखा। क़रीब आकर उन्होंने सलाम किया और अपने हाथों को मुसाफ़ेहा और मोआनेक़ा के लिए बढ़ाया और फ़रमाया अहलन व सहलन। मुझे सीने से लगाकर मोआनेका किया और हम दोनों ने एक दूसरे को बोसा दिया।

वह सब्ज़ अमामा बांधे हुए थे और रूख़सारे मुबारक पर एक काला तिल था। फिर उन्होंने ठहर कर फ़रमाया हाजी अली ख़ैरियत है? कहाँ जा रहे हो? मैंने कहा हज़रत काज़मैन की ज़ियारत करके बग़दाद जा रहा हूँ। फ़रमाया के आज शबे जुमा है पलट चलो। मैंने कहा के मेरे पास गुंजाइश नहीं है। फ़रमाया के पलट चलो ताके मैं गवाही दूं के तुम मेरे जद अमीरूल मोमिनीन (अ) और मेरे दोस्तों में हो। और शेख़ भी शहादत दें के खुदा तआला ने फ़रमाया है के दो गवाह क़रार दो। यह इशारा था उस मतलब की तरफ़ जो मेरे दिल में था के मैं जनाबे शेख़ से गुज़ारिश करूंगा के मुझे एक तहरीर लिख दें के मैं अहलेबैत (अ) के चाहने वालों में हूँ ताके मैं उसको कफ़न में रखूँ। मैंने अर्ज़ की के आपको क्या ख़बर और आप कैसे गवाही देंगे। फ़रमाया के जिसका हक उस तक पहुँचा दिया जाए वह कैसे पहुँचाने वाले को न पहचानेगा? मैंने पूछा कैसा हक़? फ़रमाया के वही जो तुमने मेरे वकील को दिया है। मैंने पूछा आपका वकील कौन है? फ़रमाया शेख़ मोहम्मद हसन। मैंने पूछा वो आपके वकील हैं। फ़रमाया हाँ वह मेरे वकील हैं। और उन्होंने सय्यद मोहम्मद से कहा था के मेरे दिल में यह ख़याल हुआ के इस सिक़ा जलील ने मेरे नाम से बुलाया है। हालांके मैं उसे नहीं जानता हूँ। मगर फिर भी यह ख़याल के

शायद यह मुझे पहचानता है और मैं भूल गया हूँ। फिर मैंने अपने दिल में सोचा के शायद यह सय्यद सहमे सादात में कुछ चाहता है और मैं चाहता था के माले इमाम में से उसको दे दूँ। मैंने कहा ऐ सय्यद मेरे पास आपका कुछ हक़ बाक़ी रह गया था। मैंने इस मसले में जनाब शेख़ मोहम्मद हसन की तरफ़ रूजू किया ताके आपके हक़ को याने सादात के हक़ को उनकी इजाज़त से अदा कर दूँ। वह सय्यद मुसकुराए और फ़रमाया: हाँ तुमने मेरा बाज़ हक़ मेरे बाज़ वोकला की तरफ़ नजफ़ पहुँचा दिया है। मैंने अर्ज़ किया मैंने दे दिया तो क्या क़ुबूल हो गया? फ़रमाया के बेशक। मेरे दिल में आया के यह सय्यद ओलमाए आलाम को अपना वकील कहता है। यह बात मुझे बहुत बुरी मालूम हुई। तो मुझे ख़याल हुआ के ओलमा हक़्क़े सादात वसूल करने में इनके वकील हैं। इस लिए ज़हेन से बात ही निकल गई। उन्होंने फ़रमाया के चलो मेरे जद की ज़ियारत पढ़ो। मैं पलटा और उनका दाहना हाथ मेरे बाएं हाथ में था। जब रास्ते में चले देखा के दाहनी तरफ़ एक साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ नहर जारा r है और लीमू, संत्रे और अनार व अंगूर वग़ैरह के दरख़्त हमारे सरों पर साया फ़िगन थे।

जिन पर फल लदे हुए थे जबके उनमें से किसी चीज़ की फ़सल नहीं थी। मैंने पूछा के यह सब क्या हैं? फ़रमाया के जो व्यक्ति भी हमारे अजदाद की ज़ियारत करेगा उसके लिए यह सब रहता है। मैंने कहा के मैं एक सवाल करना चाहता हूँ। फ़रमाया पूछो। मैंने कहा के शेख़ अब्दुर रज़्ज़क मरहूम जो एक मर्दे मुदर्रिस थे एक दिन मैं उनके पास गया। देखा के वह कह रहे हैं के अगर कोई व्यक्ति दिनों मों रोज़ा रखे रातों को इबादत करे चालीस हज और चालीस उम्रे बजा लाए। सफ़ा व मरवा के दरमियान मर जाए और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के दोस्तों में न हो उसको कोई फ़ायदा नहीं। फ़रमाया वल्लाह सच कहा है। इसके बाद मैंने अपने रिश्तेदारों में एक व्यक्ति के बारे में पूछा: क्या वह अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के दोस्तों में है? फ़रमाया बेशक वह और जो भी तुमसे ताल्लुक रखता है। मैंने कहा हुज़ूर मेरे लिए एक मसला है। फ़रमाया पूछो। कहा के मजलिसें पढ़ने वाले यह बयान करते हैं के सुलैमान आमश एक व्यक्ति के पास गए और ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के बारे

में सवाल किया तो उसने कहा के बिदअत है। उसके बाद ख़्वाब में देखा के एक हौदज (महमिल) ज़मीनो आसमान के दरमियान है। पूछा के इस महमिल में कौन है? लोगों ने बताया के जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) और ख़दीजतुल कुबरा (स.अ.)। कहते हैं के कहाँ जा रहे हैं? बताया के ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए के आज शबे जुमा है। उसके बाद देखा के उस महमिल से कुछ रूक़े गिर रहे हैं जिमने लिखा है के: اَمَانٌ مِنَ النَّارِ لِزُوَّارِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ لَيْلَةِ الْجُمُعَةِ اَمَانٌ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ये जहन्नम की आग से अमान है उसके लिए जो शबे जुमा इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करे। ये रोज़े क़यामत जहन्नम की आग से अमान है। क्या यह हदीस सही है? फ़रमाया बेशक और यह कहकर आपकी आँखों से आँसू जारी हो गए। मैंने अर्ज़ किया के एक मसला और है। फ़रमाया पूछो। मैंने कहा १२६१ हिजरी में इमाम रज़ा (अ.स.) की ज़ियारत की और वहाँ अरबों में से एक सहराई अरब को देखा और उसकी ज़ियारत की और उस से पूछा के इमामे रज़ा (अ.स.) की ज़ियाफ़त कैसी है? तो उसने कहा आज पंद्रहवां दिन है। जब से मैंने अपने मौला का माल खाया है मुनकिरो नकीर मेरी क़ब्र में मेरे पास आएं और मेरा गोश्त हज़रत के खाने से रूवैदा हो गया यह सहीह है के इमाम रज़ा आते हैं और मुनकिरो नकीर से इंसान को बचा लेते हैं। कहा के बेशक मेरे जद सामने हैं। मैंने अर्ज़ की के छोटा सा मसला और है। फ़रमाया पूछो। मैंने कहा मेरी ज़ियारते इमामे रज़ा (अ.स.) मक़्बूल है? फरमाया इन्शाअल्लाह क़बूल है। मैंने कहा हुज़ूर एक मसला और है। फ़रमाया बताओ। मैंने कहा क्या हाजी मोहम्मद हुसैन बज़ाज़बाशी बिन मरहूम हाजी अहमद बज़ाज़बाशी की ज़ियारत क़ुबूल है जो मेरे साथ मशहद के रास्ते में थे। बंदे सालेह ने फ़रमाया हाँ. उनकी ज़ियारत क़ुबूल है। मैंने अर्ज़ किया एक मसला और है। फ़रमाया बिस्मिल्लाह। मैंने कहा फ़लां व्यक्ति जो बग़दाद का रहेनावाला है और जो हमारे साथ था क्या उसकी ज़ियारत भी क़बूल है? हज़रत ख़ामोश हो गए। मैंने अर्ज़ किया एक मसला और है। फ़रमाया बिस्मिल्लाह। मैंने कहा आप ने कुछ सुना या नहीं सुना? उसकी ज़ियारत क़ुबूल है या नहीं? आपने फिर जवाब नहीं दिया। हाजी मज़कूर ने नक़्ल किया है के चंद अफ़राद बग़दाद के सरमाया दार थे जो सफ़र

में मुसलसल लहवो लअब में मशग़ूल थे। और वह व्यक्ति भी उन्हीं में शामिल हो गया था। फिर हम चलते हुए एक जगह पर पहुँचें जहाँ तमाम तरफ़ बाग़ात थे और काज़मैन सामने था। और वह जगह जो सड़क के मुत्तसील है बाग़ात से दाहनी तरफ़ बग़दाद से रास्ता आता है। और वह बाग बाज़ सादात का था। जिसको हुकूमत ने शहर में दाखिल कर लिया और हम शहर के अहले तक़वा इस रास्ते से गुज़रने के लिए पहरेज़ करते थे। मैंने देखा के वो जनाब उसी रासते से जा रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया सय्यद यह माल बाज़ यतीम सादात का था। इस में तसररूफ जाएज़ नहीं है। फ़रमाया यह जगह हमारे जद अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और उनकी औलाद के लिए है जो उनके दोस्तों के लिए हलाल है। उस जगह दाहिने तरफ़ एक बाग़ था जो उस व्यक्ति की मिलकीयत था जिसको मिर्ज़ा हाजी कहते थे और वह अजम के मशहूर दौलतमंदों में था जो बग़दाद में साकिन था। मैंने कहा हुज़ूर क्या यह सही है के लोग कहते हैं के मिरज़ा हाजी के बाग़ की ज़मीन मिलकियते हज़रत मूसा बिन जाफ़र (अ.स.) है? फ़रमाया तुम्हें इस से क्या ताल्लुक़ और आपने जवाब नहीं दिया। जब हम नहरे दिजला के पास पहुँचे जो उस इलाके की सींचाई के वास्ते बनी थी और रास्ते से गुज़रती है। यहां से दो रास्ते हो जाते थे एक राहे सुलतान एक राहे सादात। हज़रत ने चाहा राहे सादात से जाएं। मैंने कहा आईये इस राहे सुलतान से चलें। फ़रमाया नहीं हम अपने रास्ते से जाएंगे। चंद कदम नहीं बढ़े थे के हमने अपने को सहने मुक़द्दस में कफ़शदारी के पास देखा। और कोई कूचाओ बाज़ार नज़र नहीं आया। हम दाखिल हुए बाबुल मुराद की तरफ़ से जो पाईंपा है और रवाक़े मुतहहर में नहीं ठहरे और इज़ने दुख़ूल भी नहीं पढ़ा बल्के अंदर दाख़िल हो गए और हरम के दरवाज़े पर खड़े होकर फ़रमाया: यह ज़ियारत पढ़ो। मैंने वाहा मैं पढ़ना नहीं जानात। फरमाया मैं तुम्हारे लिए पढ़ रहा हूँ और यह कहके शुरू किया ءَاَدْخُلُ يَااَللّٰهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ और हर इमाम को सलाम करते रहे। इमामे हसन असकरी (अ.स.) के सलाम के बाद फरमाया: हाजी अली अपने इमामे ज़माना को पहचानते हो। मैंने कहा बिल्कुल। कहा फिर सलाम करो मैंने कहा: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ عَلَيْكَ يَاحُجَّةَ اللّٰهِ يَاصَاحِبَ الزَّمَانِ يَابْنَ الْحَسَنِ आप मुस्कुराए। फ़रमाया

بَرَكَاتُه फिर हरम में दाखिल हुए ज़री को बोसा दिया। फ़रमाया के ज़ियारत पढ़ो। मैंने कहा पढ़ना नहीं जानता। फरमाया मैं तुम्हारे लिए पढ़ूँ? अर्ज़ किया बेशक। फ़रमाया कौनसी ज़ियारत पढ़ना चाहते हो? मैंने कहा जो ज़ियारत बेहतर हो। फ़रमाया ज़ियारते अमीनुल्लाह अफज़ल है। फिर उसके बाद आपने ज़ियारत पढ़ी: اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا اَمِيْنَيِ اللّٰهِ فِيْ اَرْضِهٖ وَحُجَّتَيْهِ عَلٰى عِبَادِهٖ इसी दरमियान हरम के चिराग़ रौशन हुए। मैने देखा के शमें जल रही हैं लेकिन हरम में दूसरा नूर सूरज के नूर की तरह दिखाई देता है जिसके आगे सारी शमें मांद पड़ गई लेकिन मुझ पर उस समय ऐसी ग़फ़लत तारी थी के मैं उन अहेम बातों की तरफ बिल्कुल मुतवज्जे नहीं हुआ। ज़ियारत से फ़ारिग़ होने के बाद पाईने पा से पुश्ते सर आए और मशरिक की तरफ खड़े हो गए। फ़रमाया क्या ज़ियारते इमामे हुसैन (अ.स.) पढ़ूं? मैंने कहा बेशक शबे जुमा है। आपने ज़ियारते वारेसा पढ़ी। इतने में मोअिज़्ज़न ने अज़ाने मग़रिब ख़त्म की। फ़रमाया के नमाज़े जमाअत पढ़ो। मस्जिद में पुश्ते सरे हरमे मुतहहर जहां जमात हो रही थी फ़ौरन गए और खड़े हो गए। इमामे जमाअत की दाहनी तरफ़ उसके बराबर में और मैं स॰फों में दाखिल हो गया। जब नमाज़ ख़त्म हुई तो मैंने फिर उनको न देखा। इसके बाद मैं बाहर आया। हरम में बहुत तलाश किया और चाहा के मुलाक़ात करूँ और कुछ पैसे दे दूँ और रात को अपने पास मेहमान रखूँ। इसके बाद समझ में आया के वह सय्यद कौन थे और गुज़श्ता आयातओ मोजिज़ात के बारे में सोचने लगा के उन्होंने मुझे नाम से पुकारा था। हालांके मैंने उनको कभी नहीं देखा था और उन्होंने कहा था के मेरे दोस्तों में से हैं। मैंने कहा के मैं शहादत देता हूँ। फिर नहर देखी दरख़्त देखे, ग़ैर मौसम के मेवे देखे जिससे मुझे यक़ीन हो गया के वह हज़रते महदी (अ.स.) थे ख़ास तौर से जब इज़्ने दुख़ूल में उन्होंने इमाम हसन अस्करी (अ.स.) के बाद ज़माने के इमाम की मारेफ़त के बारे मे सवाल किया और मुझ से फ़रमाया के तुम सलाम करो और मेरे सलाम पर तबस्सुम फ़रमा कर जवाब भी दिया तो मैं दोड़ कर कफ़शदारी में आया और उनके बारे में सवाल किया उसने कहा बाहर गए क्या यह सय्यद तुम्हारे दोस्त थे? मैंने कहा हाँ। पस हम मेहमानदार के घर आए और रात वहाँ गुज़ारी। जब सुबह हुई तो जनाब शेख़ मोहम्मद

हसन के पास गए और इस वाक़ये को बयान किया तो उन्होंने अपने होठों पर हाथ रखा और फ़रमाया के ख़बरदार इस राज़ को ज़ाहिर न करना और इस क़िस्से को बयान न करना। परवरदिगारे आलम ने तुम्हें तौफ़ीक़ दी है। चुनांचे मैंने किसी से इज़हार नहीं किया यहाँ तक के एक महीना गुज़र गया। एक दिन मैं हरमे मुतह्हर में था के मैंने एक सय्यदे शरीफ को देखा जो मेरे पास आए और फ़रमाया तुमने क्या देखा और उस क़िस्से की तरफ़ इशारा किया। मैंने कहा मैंने कुछ नहीं देखा। फिर उन्होंने उस शब्द की तक़रार की। मैंने इनकार किया तो वह मेरी नज़रों से ग़ायब हो गए। मैंने फिर उन्को नहीं देखा।

मतलबे दुव्वुम - ज़िक्रे मस्जिदे बोरासा और नमाज़े मस्जिदे बोरासा

वाज़ेह रहे के मस्जिदे बोरासा मशहूर और बा बरकत मस्जिद में है जो बग़दाद व काज़मैन के दरमियान ज़ाएरों के रास्ते पर है और बहुत से लोग बे एतेनाई की वजेह से उसके फ़ैज़ से महरूम रहते हैं। हालांके उसके बड़े फ़ज़ाएल हैं। छटी सदी के मोअर्रिख ने मोजमुल बुलदान में लिखा है के बोरासा बग़दाद के कर्ख के क़िबले की तरफ़ और बाबे महूल के जुनूब में एक मोहल्ला था और वहाँ एक मस्जिद जामे थी जहाँ शिआ नमाज़ पढ़ते थे। बाद में वह ख़राब हो गई और यह भी कहा है के ज़माने राज़ी बिल्लाह ख़लीफए अब्बासी से पहले शिआ उस मस्जिद में जमा होते थे और सहाबा को बुरा भला कहते थे। इस लिए राज़ी बिल्लाह ने हुक्म दिया और लोगों ने हमला कर के जिसको भी वहाँ पाया गिरफ़्तार कर लिया और मस्जिद को तोड़ कर उसको ज़मीन के बराबर कर दिया। शिओं ने इस बात की ख़बर बहुक्मे माकानी अमीरे बग़दाद तक पहुँचाई तो उसने दोबारा उसकी बिना का हुक्म दे दिया और उस फ़रमान के उनवान में राज़ी बिल्लाह का नाम लिख दिया। उसके बाद से यह मस्जिद मुसलसल महल्ले अक़ामे नमाज़ थी। और ४५० हिजरी के बाद से मोअत्तल हो गई।

वाज़ेह रहे के बोरासा बग़दाद की तामीर से पहले एक क़रया था जिसके बारे में लोगों का खयाल यह है के अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) वहाँ से उस वक़्त गुज़रे थे जब आप ख़वारिज से मुक़ाबले के लिए जा रहे थे। और आप ने यहाँ नमाज़ पढ़ी थी। और उस हम्माम में भी दाख़िल हुए थे जो उस क़रीए में था। और उस बोरासा की तरफ अबू शेअब बोरासी आबिद की निज़बत है जो पहले आदमी थे जो बोरासा में दाख़ल हुए और एक ममूली से मकान में मा्क़ीम हुए। और वहीं इबादते खुदा करते रहे यहाँ तक के उनके झोपड़े के पास से बड़े लोगों की एक लड़की का गुज़र हुआ जो महलों में पली हुई थी। जैसे ही उसकी नज़र अबू शोएब पर पड़ी और उनके हाल को देखा उसे यह हालत पसंद आई और अबू शोएब की जज़्ज़बियत ने अपनी तरफ़ मुतवज्जे कर लिया। यहाँ तक के वह उस मर्दे आबिदो ज़ाहिद के पास आई और कहने लगी के मैं चाहती हूँ के मैं आपकी ख़ादिम बन कर रहूँ। उन्होंने कहा के मुझे मंज़ूर है बशर्ते के इस हय्यत और इस लिबास को अलग कर दो। उसने क़बूल कर लिया और जो कुछ था सब छोड़ दिया और आबिदों का लिबास पहन कर वापस आई तो अबू शोएब ने उससे अक़्द कर लिया। जैसे ही वह औरत उस झोपड़े में दाख़िल हुई उसने देखा के अबू शुऐब ने ज़मीन की रतूबत से बचने के लिए चटाई का टुकडा बिछा लिया है। उसने कहा मैं यहाँ नहीं रह सकती हूँ जब तक के इस चटाई के टुकडे को दूर न फेंक दिया जाए इस लिए के मैंने आप ही से सुना है के ज़मीन फ़रयाद करती है के फ़रज़ंदे आदम तूने मेरे और अपने दरमियान आज हिजाब (परदा) क़ायम कर लिया है जबके कल मेरे ही शिकम में आना है। अबू शोऐब ने उस चटाई को दूर फेंक दिया और वह लड़की चंद साल तक उनके पास रही और दोनो ने बेहतरीन अंदाज़ से इबादत की। यहाँ तक के दोनों का इन्तेक़ाल हो गया।

लेखक: हमने किताबे हदीयतुज़ ज़ाएरीन में बहुत सी रिवायतें इस मस्जिदे शरीफ़ की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक नक़्ल की हैं। और यह बयान किया है के उन तमाम रिवायात से इस मस्जिद से चंद फ़ज़ाएल का अंदाज़ा होता है के उनमें से कोई एक भी किसी मस्जिद में पाई जाए तो लोगों को वहाँ जाना चाहिए ताके वहां दुआ और नमाज़ के फ़ैज़ को हासिल कर सकें और वह

फ़ज़ाएल यह हैं: (१) परवरदिगारे आलम का यह फ़ैसला के इस सरज़मीन पर कोई रईस अपने लशकर के साथ सिवाए पैग़ंबर और वसीए पैग़ंबर के नहीं आ सकता। (२) यह हज़रत मरयम का मकान है। (३) यह हज़रते ईसा की सरज़मीन है। (४) यहाँ जनाबे मरयम के लिए चश्मा जारी हुआ था। (५) यहाँ हज़रते अमीर (अ.स.) ने ब-एजाज़ चश्मा जारी किया था। (६) यहाँ एक सफ़ैद बाबरकत पत्थर है जिस पर जनाबे मरयम ने जनाबे ईसा (अ.स.) को रखा था। (७) आं हज़रत (अ.स.) ने उस पत्थर को बरामद कर के क़िबले की तरफ़ नस्ब कर दिया था और उसी की तरफ़ नमाज़ अदा की थी। (८) अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और आपके दोनो फ़रज़ंद इमाम हसने मुजतबा (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) ने इस जगह नमाज़ अदा की थी। (९) हज़रत ने यहाँ चार रोज़ तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया था के यह ज़मीन मुक़द्दस है। (१०) यहाँ बहुत से पैगंबरों ने बिलखुसूस जनाबे इब्राहीम (अ.स.) ने नमाज़ पढ़ी है। (११) यहाँ एक पैग़ंबर की क़ब्र है और शायद वह हज़रते यूशा हों के उनके बारे में हमारे उस्ताद शेख़ नूरी ने फ़रमाया है के उनकी क़ब्र काज़मैन के बाहर मस्जिदे बोरासा की तरफ़ है। (१२) इसी मकाम पर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के लिए आफ़ताब पलटा था मगर अफ़सोस के इन तमाम फ़ज़ाएलो मनाक़िब और मोजिज़ात के बावुजूद नहीं मालूम के हज़ारों ज़ाएरीन में से कोई एक शख़्स भी उस तरफ़ जाता हो। जबके वह रास्ते ही में है और बार बार उधर से गुज़रते हैं। और अगर कोई शख़्स जाकर देखता है के दरवाज़ा बंद है और उसको खुलवाने के लिए पैसा देना पड़ेगा तो चंद पैसे ख़र्च नहीं करता है। और उन अज़ीम फ़ोयूज़ो बरकात से महरूम रह जाता है हालांके कभी कभी बग़दाद की इमारतों को देखने के लिए या ज़ालिमों की इमारतों को देखने के लिए बेशुमार पैसे ख़र्च कर देता है। बल्के मन्हूस यहूदियों की सनतों का ख़रीदना ज़ियारत के लवाज़ेमात में तसव्वुर करता है।

तिसरी ज़ियारत - ज़ियारते नव्वाबे अरबा

याने जनाबे अबु अम्र उसमान बिन सईद असदी, जनाब अबू जाफ़र मोहम्मद

बिन उसमान, शेख़ अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह नौबख़्ती और शेख़ जलील अबुल हसन अली बिन मोहम्मद सैमूरी। वाज़ेह रहे के काज़मैन में क़याम के दौरान ज़ाएरीन की ज़िम्मेदारीयों में यह भी है के बग़दाद जाएं और हज़रत इमामे अस्र (अ) के उन चार नाएबों की ज़ियारत करें के उन में से हर एक अगर दूर दराज़ मकाम पर होता तो भी मोमेनीन को चाहिए था के दूर दराज़ का सफ़र कर के ज़हमतें बरदाश्त कर के आं हज़रात की ज़ियारत का शरफ हासिल करे के आइम्मा के तमाम असहाबे ख़ास के दरमियान उनकी बुज़ुर्गा और जलालतो क़द्र को कोई शख़्स नहीं पा सकता है। यह सत्तर साल तक इमाम और क़ौम के दरमियान सिफ़ारत के फ़राएज़ अंजाम देते रहे और उनके हाथों पर बेशुमार करामतों का ज़हूर हुआ है। बाज़ ओलमा उनकी इसमत के भी क़ाएल हैं और यह भी वाज़ेह रहे के जिस तरह यह हज़रात ज़िंदगी में इमाम और क़ौम के दरमियान वास्ता थे और उनके मनसबों में लोगों के खुतूत और पैग़ामात का हज़रत तक पहोचाया था। इसी तरह मरने के बाद भी यह शान बरक़रार है और उनके ज़रिए अरीज़े भेजे जाते हैं जैसा के अपने मकाम पर वाज़ेह किया जा चुका है।

बहर हाल उनके फ़ज़ाएलो मनाक़िब बयान से बालातर हैं और ज़ाएरीन की तरग़ीब के लिए इतना बयान ही काफ़ी है।

हज़रत की ज़ियारत का तरीका शेख़ तूसी ने तहज़ीब में और सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में बयान किया है और उसकी निसबत जनाब अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह की तरफ़ दी है के पहले सलाम करे रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) को उसके बाद अमीरुल मोअमेनीन (अ.स.), ख़दीजतुल कुबरा (स.अ.), फ़ातो ज़हरा (स.अ.), इमाम हसन (अ.स.), इमाम हुसैन (अ.स.) और तमाम अइम्मा (अ.स.) को हज़रत साहेबुज़ ज़मान (अ.त.फ.श.) तक। उसके बाद कहेः

इसके बाद यह कहे सलाम हो आप पर अय फलां (साहेबे क़ब्र) बिन फ़लां

اَشْهَدُ اَنَّكَ بَابُ الْمَوْلٰى اَدَّيْتَ عَنْهُ وَ اَدَّيْتَ اِلَيْهِ مَا

मै गवाही देता हूँ के आप बाबे मौला हैं आप ने उनकी तरफ़से पैग़ाम पहुँचाया और उन तक पैग़ाम पहुँचाया

خَالَفْتَهٗ وَ لَا خَالَفْتَ عَلَيْهِ فَقُمْتَ خَالِصًا وَ انْصَرَفْتَ

न आपने उन की मुख़ालेफ़त की और न उन के मुक़ाबले मे इख़्तेलाफ़ किया नेयाबत ख़ास्सा पर क़ाएम

سَابِقًا جِئْتُكَ عَارِفًا بِالْحَقِّ الَّذِىْ اَنْتَ عَلَيْهِ وَ اَنَّكَ مَا

रहे और वक़्त इन्सेराफ़ पेशे रौ रहे। मै आपके पास हक़ पहचान कर आया हूँ जिसपर आप रहे और आपने

خُنْتَ فِى التَّاْدِيَةِ وَ السِّفَارَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنْ بَابٍ

फ़रा०ज की अदाएगी मे कोताही नही की और सिफ़ारत मे भी कोताही नही की। सलाम आप पर कितने

مَّآ اَوْسَعَهٗ وَ مِنْ سَفِيْرٍ مَّآ اَمْنَكَ وَ مِنْ ثِقَةٍ مَّآ اَمْكَنَكَ

वसी दरवाज़े थे आप और कितने अमानत दार और सफ़ीर थे आप और कितने मौसक़ व मोतबर मकाम

اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ اخْتَصَّكَ بِنُوْرِهٖ حَتّٰى عَايَنْتَ الشَّخْصَ

पर फ़ाएज थे आप। मै गवाही देता हूँ के खुदा ने आप को अपने नूर से मख़सूस किया यहाँ तक के आप ने

فَاَدَّيْتَ عَنْهُ وَ اَدَّيْتَ اِلَيْهِ.

ज़ाते इमाम को देख लिया और उनकी तरफ़ से और उनकी तरफ़ पैग़ाम रेसानी करते रहे।

उसके बाद पलट कर दोबारा रसूले अक्रम (स) से इमामे अस्र (अ) तक तमाम मासूमीन (अ) को सलाम करे और कहेः

جِئْتُكَ مُخْلِصًا بِتَوْحِيْدِ اللهِ وَ مُوَالَاةِ اَوْلِيَآئِكَ وَ الْبَرَآئَةِ مِنْ

मै आपके पास आया अल्लाह की वहदानियत के सच्चे इक्रार के साथ व उसके वसीया की मोहब्बत के साथ

اَعْدَآئِهِمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ خَالَفُوْكَ يَاحُجَّةَ الْمَوْلٰى وَبِكَ اِلَيْهِمْ تَوَجَّهْتُ

और उनके दुश्मनो से बराअत के साथ और उनसे बराअत के साथ जिन्होंने आपकी मुख़ालेफ़त की ऐ मौला

وَبِهِمْ اِلَى اللهِ تَوَسَّلْتُ.

की हुज्जत और आपके ज़रिए उनकी तरफ़ तवज्जो की है और उनके ज़रिए अल्लाह की तरफ़ तवस्सुल है।

लेखक: बेहतर यह है के बग़दाद में शेख़ अजिल्ले आली मकाम सेक़तुल इसलाम मोहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी की ज़ियारत भी करे के अपने दौर में शिओं के शेख़ और रईस और फन्ने हदीस के मोतमिद तरीन इंसान थे। और आप की किताब काफ़ी शिओं की आँखों का नूर है। जिसे आप ने बीस साल की ज़ेहमत के बाद तालीफ़ किया है। और हक़ यह है के मज़हबे शिआ पर और बिल खुसूस ओलमाए आलाम पर अज़ीम एहसान किया है और आपकी अज़मतो जलालत की बिना पर इब्ने असीर ने आपको तीसरी सदी हिजरी का मुजद्दिद शिआ क़रार दिया है जबके हमारे मौला व आका हज़रत इमामे रज़ा (अ) को दूसरी सदी हिजरी का मुजद्दिद क़रार दिया है। और हमने किताबे हदिया में बहुत से ओलमा आलाम का ज़िक्र किया है। जो मशाहिदे मुक़द्दसा में दफ़्न किये गए हैं। जो व्यक्ति ख़्वाहिश मंद हो वह इस किताब की तरफ़ रूजू कर सकता है।

ज़ियारते जनाबे सलमान (रज़े.)

वाज़ेह रहे के ज़व्वार की ज़िम्मेदारियों में एक ज़िम्मेदारी मदाएन जाना भी है ताके बंदए सालेह जनाबे सलमाने मोहम्मदी की ज़ियारत करे जो ईमान के चार अरकान में शामिल हैं और उन्हें अहलेबैत (अ) में शामिल होने का शरफ़

हासिल है और उनके बारे में रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया है के:

سَلْمَانُ بَحْرٌ لَا يُنْزَفُ وَ كَنْزٌ لَا يَنْفَدُ سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ يَمْنَحُ

सलमान वो दरया हे जो खुश्क नही होता है वो ख़जाना है जो तमाम नही होता सलमान हम अहलेबैत मे से

الْحِكْمَةَ يُؤْتَى الْبُرْهَانَ.

है जो हिकमत बख़्शते हैं और बुरहान अता करते हैं ।

अमीरूल मोमेनीन (अ) ने आप को लुक़मान हकीम के बराबर बताया है। और इमाम सादिक़ (अ) ने लुक़मान से बेहतर क़रार दिया है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ) ने आप को मुतवस्सेमीन में शुमार किया है और रिवायात से मालूम होता है के हज़रत सलमान इसमे आज़म भी जानते थे। और उन मोहद्दसीन में थे जिन से फ़रिश्ते बातें किया करते थे। और ईमान के दस दरजात में आप दसवें दरजे पर फ़ाएज़ थे। और आपको ग़ैब और मुस्ता॰क्बिल के हवादिस का भी इल्म था। आप ने जन्नत के मेवे इसी दुनिया में नौश फ़रमाए हैं। और बेहिश्त आप की मुश्ताक़ और आशिक़ रही है। रसूले अक्रम (स) उनसे मोहब्बत करते थे। और खुदावंदे आलम ने आपको हुक्म दिया था के चार आदमियों से मोहब्बत करो, जिन में से एक सलमान भी हैं। उनके और उनके साथियों की मदह में आयतें भी नाज़ल हुई हैं। जिब्रईले अमीन पैग़ंबर (स) पर नाज़ल होते थे तो रसूले अक्रम (स) के पास परवरदिगार का यह पैग़ाम भी लाते थे ते सलमान को सलाम पहुँचा दें। उन्हें अमवात बलाया और अनसाब का इल्म अता करें।

उनके लिए पैग़ंबरे अक्रम (स) ने रात के वक़्त एक समय मोअय्यन कर दिया था। और रसूले अक्रम (स) और अमीरूल मोमिनीन (अ) ने उन्हें अपने मख़सूस ओलूम में से वह चीज़ें अता फ़रमाई थीं जिनको उनके अलावा कोई

भी तहम्मुल नहीं कर सकता था। यहाँ तक के वह उस मरतबे तक पहुँच गए के इमाम सादिक़ (अ) ने फ़रमाया

اَدْرَكَ سَلْمَانُ الْعِلْمَ الْاَوَّلَ وَ الْعِلْمَ الْآخِرَ وَهُوَ بَحْرٌ لَا يَنْزَحُ وَهُوَ

सलमान ने इल्मे अव्वल व आाख़िर को हासिल कर लिया और वो वो दरया है जो सूखता नही

مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ.

है वो हम अहलेबैत से है।

... के ज़ाएरीन के शौक व रग़बत के लिए सहाबा के दरमियान उनकी एक खुसूसियत में तअम्मुल करना काफ़ी है।
अमीरूल मोमिनीन (अ) एक शब में मदीने से मदाएन आए और आपने अपने दस्ते मुबारक से सलमान को ग़ुस्लो कफ़न दिया और मलाएका की स॰फों के साथ नमाज़े जमाज़ा अदा की और उसी शब मदीने वापस चले गए। क्या कहना उस शराफ़त का जो मवद्दत व मोहब्बते ख़ानदाने रिसालत को हासिल है और जो इंसान को उस अज़ीम मंज़ेलत तक पहुँचा देती है।

जनाबे सलमान की ज़ियारत का तरीक़ा

सय्यद इब्ने ताऊस ने मिसबाहुज़ ज़ाएर में आप की चार ज़ियारतें नक़्ल की हैं लेकिन हम यहाँ पर सिर्फ़ एक ही ज़ियारत नक़्ल कर रहे हैं। जिसको हदिया में भी नक़्ल किया है और जिसको शेख़ ने तहज़ीब में ज़िक्र किया है। लेहाज़ा जो व्यक्ति आपकी ज़ियारत करना चाहे वह उनकी क़ब्र के पास रू ब क़िबला खड़े हो कर कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ مُحَمَّدِ ابْنِ عَبْدِ اللّٰهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ

सलाम हो रसूले खुदा हजरत मोहम्मद ब्नि अब्दुल्लाह ख़ातमुल अंबिया पर, सलाम हो अमीरूल

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَسَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَئِمَّةِ

मोमिनीन सय्यदुल वसीईन पर, सलाम हो उन आईम्मए मासूमीन (अ) पर जो हादी हैं। सलाम हो

الْمَعْصُوْمِيْنَ الرَّاشِدِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَلٰئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ اَلسَّلَامُ

मलाएका पर जो मुक़र्रब हैं। सलाम हो आप पर ऐ रसूले खुदाए अमीन के साथी। सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ الْاَمِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اَمِيْرِ

अमारूल मोमिनीन (अ) के वली, सलाम आप पर ऐ मख़ज़ूने इस्रारे बुज़ुर्ग अहले ख़ैर, सलाम आप

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُوْدَعَ اَسْرَارِ السَّادَاتِ الْمَيَامِيْنَ

पर ऐ बाक़ीमान्दा नेकाने जहाँ जो गुज़र गए। सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह और अल्लाह की रहमत

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَقِيَّةَ اللّٰهِ مِنَ الْبَرَرَةِ الْمَاضِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

व बरकात हो। मै गवाही देता हूँ के आप ने खुदा की इताअत की जैसा के उसने आपको हुक्म दिया

اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَطَعْتَ اللّٰهَ كَمَآ اَمَرَكَ وَ

और आप ने रसूल का इत्तेबा किया जैसा उन्होंने अम्र किया और पैरवी की उन के ख़लीफ़ा की जैसा

اتَّبَعْتَ الرَّسُوْلَ كَمَا نَدَبَكَ وَ تَوَلَّيْتَ خَلِيْفَتَهٗ كَمَآ اَلْزَمَكَ وَ

के फ़र्ज़ क़रार दिया और मोहब्बत की और बुलाया ज़ुर्राrयत के एहतेमाम की तरफ़ जितना के आप

دَعَوْتَ اِلَى الْاِهْتِمَامِ بِذُرِّيَّتِهٖ كَمَا وَ قَفَكَ وَ عَلِمْتَ الْحَقَّ يَقِيْنًا وَّ

से मुमकिन हुआ और हक़ को यक़ीनी तौर पर जाना और आपने उस पर एतेम्मा किया जैसाके हुक्म

اعْتَمَدْتَّهٗ كَمَآ اَمَرَكَ اَشْهَدُ اَنَّكَ بَابُ وَصِيِّ الْمُصْطَفٰى وَ طَرِيْقُ

दिया गया और मै गवाही देता हूँ के आप वसीए मुसतफ़ा (स) का दरवाज़ा और हुज्जते खुदा हजरत

حُجَّةِ اللّٰهِ الْمُرْتَضٰى وَ اَمِيْنُ اللّٰهِ فِيْمَا اسْتُوْدِعْتَ مِنْ عُلُوْمِ

अलीए मुरतुज़ा का तरीक़ और अल्लाह के अमीन हैं उन उलूम असफ़ीया पर जो आप को वदीयत

الْاَصْفِيَآءِ اَشْهَدُ اَنَّكَ مِنْ اَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ النُّجَبَآءِ الْمُخْتَارِيْنَ

किए गए हैं। मै गवाही देता हूँ क आप उन अहलेबैते नबी मे से हैं जो नजीब हैं और जिनको नुसरत

لِنُصْرَةِ الْوَصِيِّ اَشْهَدُ اَنَّكَ صَاحِبُ الْعَاشِرَةِ وَ الْبَرَاهِيْنَ وَ الدَّلَآئِلِ

वसी के लिए इख़तेयर किया गया है। मै गवाही देता हूँ के आप दस दरजे के ईमान वाले और बुरहान

الْقَاهِرَةِ وَ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ آتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ

और दलीले मोहकम वाले हैं आप ने नमाज़ क़ाएम की ज़कात दी और अम्र बिल मारूफ़ किया और

نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ اَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ

नही अनिल मुनकर किया और अमानत को अदा किया और नसीहत की अल्लाह व रसूल के लिए

صَبَرْتَ عَلَى الْاَذٰى فِيْ جَنْبِهٖ حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ

और राहे दीन मे अज़ीयत पर सब्र किया यहाँ तक के आपको मौत आ गई। खुदा लानत करे उस पर

جَحَدَكَ حَقَّكَ وَ حَطَّ مِنْ قَدْرِكَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ آذَاكَ فِيْ مَوَالِيْكَ لَعَنَ

जो आप के हक़ का इन्कार करे और आप की मनिज़लत को गिराए। खुदा लानत करे उस पर जो

اللّٰهُ مَنْ اَعْنَتَكَ فِيْ اَهْلِ بَيْتِكَ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ لَاَّمَكَ فِيْ سَادَاتِكَ لَعَنَ

आप को अज़ीयत दे आप के दोस्तों के बारे मे। खुदा लानत करे उस पर जिसने आप को दोस्तीए

اللّٰهُ عَدُوَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ وَ

अहलेबैत के बारे मे सताया। खुदा लानत करे उसपर जिसने आपकी मलामत की बुज़ुर्गाने दीन से

ضَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَآ اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ

दास्ती पर। खुदा लानत करे दुश्मने आले मोहम्मद पर चाहे इन्सान मे हो या जिन मे अव्वलीन मे से

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ عَلَيْكَ

हो या आख़िरीन मे से और उनपर दर्दनाक अज़ाब मे इज़ाफ़ा करे। खुदा की रहमत हो आप पर ऐ अबू

يَا مَوْلَآ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى رُوْحِكَ الطَّيِّبَةِ وَ جَسَدِكَ

अब्दुल्लाह खुदा का दुरूद हो आप पर ऐ रसूले खुदा के साथी। अल्लह का दुरूद हो आप की पाकीज़ा

الطَّاهِرِ وَ اَلْحَقَنَا بِمَنِّهٖ وَ رَاْفَتِهٖ اِذَا تَوَفَّانَا بِكَ وَ بِمَحَلِّ السَّادَةِ

रूह पर और पाक जिस्म पर और अल्लाह हम को मुलहक़ करे अपने एहसान व करम से आप से जब

الْمَيَامِيْنِ وَ جَمَعَنَا مَعَهُمْ بِجِوَارِهِمْ فِيْ جَنَّاتِ النَّعِيْمِ صَلَّى اللّٰهُ

हम को मौत आए और बुज़ुर्गाने अहले ख़ैर व सआदत से और उन के साथ उनके जवार मे जमा करे

عَلَيْكَ يَآ اَبَا عَبْدِ اللهِ وَ صَلَّى اللهُ عَلٰٓى اِخْوَانِكَ الشِّيْعَةِ الْبَرَرَةِ مِنَ

जन्नते नईम मे। अल्लाह का दुरूद हो आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह और अल्लाह का दुरूद हो आप के नेक

السَّلَفِ الْمَيَامِيْنِ وَ اَدْخَلَ الرَّوْحَ وَ الرِّضْوَانَ عَلَى الْخَلَفِ مِنَ

शिया भाईयों पर गुज़र जानेवालों मे से जो साहेबे बुर्ज़ुग व ख़ैर थे, और आनेवाले मोमिनीन को निशात

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْحَقَنَا وَ اِيَّاهُمْ بِمَنْ تَوَلَّاهُ مِنَ الْعِتْرَةِ الطَّاهِرِيْنَ وَ

व खुशनूदी अता करे और हमको और उनको मुलहक़ करदे उन मुक़द्दस जातों से जिन से मोहब्बत

عَلَيْكَ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

की है पाकीज़ा इतरत मे से और आप पर और उनपर सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात हों।

उसके बाद सात बार सूरह क़द्र पढ़े और जो मुसतहब्बी नमाज़ चाहे अदा करे। लेखक: जब चाहे के सलमान की ज़ियारत से वापस हो तो विदा के लिए खड़ा हो और इस दुआए विदा को पढ़े जिसे सय्यद ने ज़ियारते चाहरूम के आख़र में नक़्ल किया है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَنْتَ بَابُ اللهِ الْمُؤْتٰى مِنْهُ وَ الْمَاْخُوْذُ

सलाम आप पर ऐ अबू अब्दुल्लाह आप खुदा का वो दरवाज़ा हैं जिस पर अया जाता है और जिससे इल्म लिया

عَنْهُ اَشْهَدُ اَنَّكَ قُلْتَ حَقًّا وَ نَطَقْتَ صِدْقًا وَ دَعَوْتَ اِلٰى مَوْلَاىَ وَ

जाता है। मै गवाही देता हूँ के आपने हक़ कहा और सच बोले और आपने मेरे मौला की तरफ़ लोगें को बुलाया

مَوْلَاكَ عَلَانِيَةً وَسِرًّا اَتَيْتُكَ زَآئِرًا وَحَاجَاتِيْ لَكَ مُسْتَوْدِعًا وَهَا

और अपने मौला की तरफ़ ज़ाहिरी तौर पर और म०ख़्फ़ी तौर पर। मै आप के पास ज़ाएर बन कर आया हूँ और

اَنَا ذَا مُوَدِّعُكَ اَسْتَوْدِعُكَ دِيْنِيْ وَاَمَانَتِيْ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِيْ وَجَوَامِعَ

मेरी हाजतें आप के पास वदीयत हैं और मै आप से रूख़सत हो रहा हूँ और मै आपको वदीयत करता हूँ अपना

اَمَلِيْ اِلٰى مُنْتَهٰى اَجَلِيْ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ وَصَلَّى

दीन और अपनी अमानत और ख़ातमए आमाल और तमाम उम्मीदें ज़िन्दगी के आख़िर तक़ की और सलाम

اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ الْاَخْيَارِ.

आप पर और खुदा की रहमत व बरकात हो और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद और उनकी आले नेक पर।

उसके बाद जिस क़द्र चाहे दुआ करे और फिर वापस पलट जाए।
लेखक: जो भी जनाबे सलमान की ज़ियारत के लिए जाए उसके लिए दो और ज़िम्मेदारीयां हैं।
ताक़े किस्र में दो रकत नमाज़ अदा करे के वह मुसल्लए अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) है।
अम्मार साबाती से रिवायत है के जब अमीरूल मोमिनीन (अ) मदाएन तशरीफ़ लाए और ऐवाने किस्र में वारिद हुऐ तो आपके साथ दल्फ़ बिन बहर भी थे। हज़रत ने वहाँ नमाज़ अदा की। और उसके बाद उठे और दल्फ़ से फ़रमाया मेरे साथ चलो। हज़रत के साथ साबातियों की एक जमाअत और भी थी। आपने किस्र के तमाम मनाज़ल का चक्कर लगाया और दल्फ़ से बराबर फ़रमाते रहे के किस्र वाले इस जगह इस तरह से रहते थे। दल्फ़ ने अर्ज़ की के क़सम खुदा की बात ऐसी ही है जो आप फ़रमा रहे हैं। फिर हज़रत (अ) ने तमाम मक़ामात की गरदिश फ़रमाई और दल्फ़ बराबर यही कहते रहे के आप तो इन मक़ामात से इस क़द्र बाख़बर हैं जैसे आप ही ने इसे बनाया हो।

रिवायत में है के जब हज़रत मदाएन से गुज़र रहे थे और आप ताक़े किस्र और उसकी ख़राबी का मुशाहेदा फ़र्मा रहे थे तो एक व्यक्ति ने अज़ राहे इब्रत यह शेर पढ़ा:

جَرَتِ الرِّيَاحُ عَلٰى رُسُوْمُ دِيَارِهِمْ ❊ فَكَاَنَّهُمْ كَانُوْا عَلٰى مِيْعَادٍ

हवाएँ चलती हैं उन की मनिज़लों के विराने से गोया के ये मोअय्यन मुद्दत के साथ थी।

तो हज़रत ने फ़रमाया: तुमने आयते कुरआन क्यों नहीं पढ़ी?

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا

कितने ज्यादा बाग़ों, चश्मों, और खेतां और मकाम गिरामी और नेमतों को जिन मे वो खुश थे

فِيْهَا فٰكِهِيْنَ كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ

छोड गए इसी तरह हमने उनका वारिस बनाया दूसरी क़ौमों को तो उनपर न आसमान रोया और

السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ

न ज़मीन और उन्हें मोहलत भी न मिली। बेशक ये वारिस थे।

इसके बाद फ़रमाया:

اِنَّ هٰؤُلَاءِ كَانُوْا وَارِثِيْنَ فَاَصْبَحُوْا مَوْرُوْثِيْنَ اِنَّ هٰؤُلَاءِ لَمْ يَشْكُرُوْا

पस वो मोरूस हो गए उन्होंने नेमत का शुक्र न अदा किया तो उनकी दुनिया छीन ली गई ना

النِّعْمَةَ فَسُلِبُوْا دُنْيَاهُمْ بِالْمَعْصِيَةِ اِيَّاكُمْ وَ كُفْرَ النِّعَمِ لَا تَحُلَّ

फ़रमानी की वज्ह से। ख़बरदार कुफ़राने नेमत से बचो के मुबादा तुम को ज़िल्लत का सामना

بِكُمُ النِّقَمُ

करना पड़े।

लेख़क: इस मन्ज़र को हकीम खाकानी ने इस तरह नज़्म किया है।

هان اي دل عبرت بين از ديده نظر كن هان　　ايوانِ مدائن را آئينه عبرت دان

پرويز كه بنهادي بر خوان ترّه زرّين　　زرَّين تره كو بر خوان رو كمْ تَرَكُوْا بر خوان

(२) ज़ियारत जनाबे हुज़ैफ़ा यमानी।
जो बुज़ुर्गाने असहाबे रसूल और ख़ासाने अमीरूल मोमिनीन (अ) में से थे और उनकी खुसूसियत यह थी के मुनाफ़क़ीन के नाम जानते थे। और अगर किसी नमाज़े जनाज़ा में हाज़र नहीं होते थे तो ख़लीफ़ा दुव्वम उसकी नमाज़ अदा नहीं करते थे। कई साल मदाएन में वाली रहे उसके बाद उन्हें माज़ूल कर दिया गया और सलमान को वहाँ का वाली बना दिया गया। जब सलमान का इन्तेक़ाल हो गया तो हुज़ैफ़ा दोबारा वाली बनाए गए। और अमीरूल मोमिनीन (अ) के दौरे ख़िलाफ़त तक वहीं रहे। इसके बाद हज़रत ने मदीने से अहले मदाएन के लिए फ़रमान भेजा जिस में अपनी ख़िलाफ़त और हुज़ैफ़ा के वहाँ वाली रहनेकी इत्तेला दी लेकिन जब हज़रत मदीने से असहाबे जमल के शर को रफ़ा करने के लिए बसरा की तरफ़ रवाना हुए तो अभी कूफ़े तक न पहुँचे थे के होज़ैफ़ा का इन्तेक़ाल हो गया और वह वहीं मदाएन में दफ़्न हो गए।
अबू हमज़ा सुमाली से रिवायत है के:
जब हुज़ैफ़ा का वक़्ते मौत आया तो अपने फ़रज़ंद को बुला कर चंद नसीहतें

फ़रमाईं के उन पर अमल करना। फ़रमाया देखो जो कुछ लोगों के हाथ में है उस से मायूस हो जाओ। के उसमें मालदारी और बेनियाज़ी है और ख़बरदार लोगों से हाजत तलब न करना के यह खुली हुई फ़क़ीरी है और हंमेशा ऐसी ज़िंदगी गुज़ारो के आज के दिन कल से बेहतर हो। और जब भी नमाज़ पढ़ो उसे आख़री नमाज़ समझ कर अदा करो। और कभी ऐसा काम न करो जिस की माफ़ी मांगना पड़े।

वाज़ेह रहे के जनाबे सलमान के हरम के पहलू में एक मस्जिदे जामे है जो इमाम हसन अस्करी (अ) की तरफ़ मनसूब है। या हज़रत ने उसे तामीर कराया है या उसमे नमाज़ अदा की है। लेहाज़ा किसी को उस मस्जिद में नमाज़े तहीय्यत से महरूम नहीं रहना चाहिए।

वर्ग - ९

फ़ज़ीलत व कैफ़यत ज़ियारते इमाम अली इब्ने मूसा रज़ा (अ)

वाज़ेह रहे के आपकी ज़ियारत के फ़ज़ाएल शुमार और बयान से बालातर हैं। लेकिन हम इस मकाम पर तबर्रूकन सिर्फ़ चंद रिवायात को नक़्ल कर रहे हैं।

(१) रसूले अक्रम (स) से मनक़ूल है के आप ने फ़रमाया के अनक़रीब मेरा एक टुक्डा ज़मीने खुरासान पर दफ़्न होगा। जो मोमिन उसकी ज़ियारत करेगा परवरदिगार बेहिश्त को उसके लिए वाजिब और जहन्नम की आग को हराम कर देगा। दूसरी मोतबर हदीस में हुज़ूर ने फ़रमाया के मेरा एक टुकडा खुरासान में दफ़्न होगा जो रंजीदा उसकी ज़ियारत करेगा परवरदिगार उसके रंजको ज़ाएल कर देगा और जो गुनेहगार ज़ियारत करेगा उसके गुनाहों को बख़्श देगा।

(२) सनदे मोतबर से मनक़ूल है के इमामे मूसा बिन जाफ़र ने फ़रमाया के जो व्यक्ति मेरे फ़रज़न्द अली की ज़ियारत करेगा अल्लाह के यहाँ उसको सत्तर हज्जे मक़लूब का सवाब मिलेगा। रावी ने हैरत से पूछा सत्तर हज? फ़रमाया बल्के सत्तर हज़ार। उसने कहा सत्तर हज़ार हज? फ़रमाया के

बहुत से हज तो मक़बूल भी नहीं होते मगर यह ज़ियारत बहर हाल मक़बूल है। जो व्यक्ति हज़रत की ज़ियारत करे या एक शब वहाँ क़याम करेगा वह ऐसा होगा जैसे अर्षे इलाही पर परवरदिगार की ज़ियारत की है। अर्ज़ की के जैसे परवरदिगार की ज़ियारत की है! फ़रमाया बेशक क़यामत के दिन अर्षे इलाही पर चार अफ़राद अव्वलीन के और चार आख़ेरीन के जगह पाएंगे। गुज़श्ता दौर के नूह व इब्राहीम और मूसा व ईसा और आख़री दौर के हज़रत मोहम्मद व अली व हसन व हुसैन (अ) और उसके बाद अर्ष के पाए से एक रस्सी खींच दी जाएगी और हमारे साथ हमारे आइम्मा के क़ुबूर के ज़ाएरीन बैठेंगे और यक़ीनन मेरे फ़रज़ंद अली की ज़ियारत करनेवालों का दर्जा तमाम लोगों से बुलंदतर होगा और उनके अताया भी हर एक से बेहतर होंगे।

(३) खुद इमामे रज़ा (अ) से रिवायत है के खुरासान में हमारे लिए एक जगह है। जहाँ एक दौर आएगा और मुसलसल मलाएका की र॰फ्तो आमद होगी के एक फ़ौज आती रहेगी और एक जाती रहेगी जब तक के सूरे इस्राफ़ील न फूंक दिया जाए। पूछा गया के यबना रसूलल्लाह वह जगह कहां है? फ़रमाया वह ज़मीन तूस है जो जन्नत के बाग़ात में से एक बाग़ है जो उस जगह मेरी ज़ियारत करेगा वैसे ही होगा जैसे रसूले अक्रम (स) की ज़ियारत की हो और परवरदिगार उस ज़ियारत के सिले में उसे हज़ार पसंदीदा हज और हज़ार मक़बूल उमरा का सवाब देगा और मैं और मेरे आबाओ अजदाद उसकी शफ़ाअत करेंगे।

(४) मुख़तलिफ़ असनादे सहीहा से अबू नस्र से मनक़ूल है के मैंने इमाम रज़ा (अ) का वह खत पढ़ा जिसमें आप ने अपने शिओं को पैग़ाम दिया था के मेरी एक ज़ियारत खुदा के नज़दीक हज़ार हज के बराबर है। मैंने इस हदीस को इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) के सामने पेश किया तो फ़रमाया के यक़ीनन बल्के हज़ार हज़ार (दस लाख) हज के बराबर है। अगर कोई व्यक्ति हज़रत की ज़ियारत मारेफ़त के साथ करे।

(५) दो सनदे मोतबर के साथ नक़्ल किया गया है के जो मेरी ज़ियारत करेगा मैं क़यामत के दिन तीन मौकों पर उसके पास आऊंगा ताके मैं उसे हौले

क़यामत से नजात दिला सकूँ। उस समय जब नेक अफ़राद का नामए आमाल दाहिने हाथ में होगा और बदअमलोंका नामे आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा और सिरात पर और मीज़ान पर।

(६) दूसरी मोतबर हदीस में फ़रमाया के अनक़रीब मैं ज़ुल्मो सितम के साथ ज़हरे दग़ा से शहीद किया जाऊंगा और हारून रशीद के पहलू में दफ़्न हूंगा और परवरदिगार मेरी क़ब्र को चाहने वालों की रःफ्तो आमद की मंज़ल बना देगा लेहाज़ा जो भी इस ग़ुर्बत में मेरी ज़ियारत कर लेगा उसके लिए मुझ पर लाज़म हो जाएगा के मैं क़यामत के दिन उसकी ज़ियारत करूं और मैं उस खुदा की कसम खाता हूँ जिसने पैग़ंबर को पैग़ंबर बनाया है और तमाम मख़लूक़ात पर मुन्तिख़ब क़रार दिया है के तुम शिओं में से जो भी मेरी क़ब्र के पास आकर दो रकत नमाज़ अदा करेगा वह इस बात का हक़दार होगा के उसके गुनाहों को क़यामत के दिन माफ़ कर दिया जाए। उस खुदा की क़सम जिस ने हमें मोहतरम बनाया है और हज़रत मोहम्मद (स) के बाद हमें इमामत और वसायत का शरफ़ दिया है के मेरी क़ब्र की ज़ियारत करनेवाले क़यामत के दिन तमाम गिरोहों से ज़्यादा मोहतरम होंगे और जो मोमिन भी मेरी ज़ियारत करेगा और उसके सर पर एक क़तरा बारिश का गिर जाएगा तो उसके जिस्म को आतिशे जहन्नम पर हराम कर दिया जाएगा।

(७) सनदे मोतबर के साथ मनक़ूल है के मोहम्मद बिन सलमान ने इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से दरयाफ़्त किया के जिस व्यक्ति ने अपना हज्जे वाजिब बा उनवाने हज्जे तमत्तो कर लिया है और मदीने जाकर ज़ियारते रसूले अक्रम (स) कर ली है। और फिर नजफ़ में ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ) कर ली और उनके हक़ को पहचानता भी है और जानता है के वह हुज्जते खुदा हैं और उनहीं के ज़रिए खुदा तक पहुँचा जा सकता है। उसके बाद हज़रत को सलाम कर के करबला गया है और इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत की है। और बग़दाद जाकर इमाम मूसा काज़िम (अ) की ज़ियारत की है और फिर अपने शहर पलट गया है। और उसके बाद खुदा ने इस क़द्र माल अता फ़रमा दिया है के दोबारा हज के लिए भी

जा सकता है तो उस व्यक्ति के लिए क्या बेहतर है? हज्जे वाजिब के बाद दोबारा हज के लिए जाए या खुरासान जाकर आपके वालिदे बुज़ुर्गवार की ज़ियारत करें? फ़रमाया मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार को सलाम करे। यही अफ़ज़ल है और यही बेहतर है के रजब के महीने में हो और हज के ज़माने में न हो के यह ख़लीफ़ा की तरफ़ से हमे और तुम्हें ताने देनेका बहाना हो जाएगा।

(८) शेख़ सदूक़ ने मन ला यहज़ोरोहुल फ़क़ीह में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से रिवायत की है के हज़रत ने फ़रमाया के तूस के दो पहाड़ों के दरमियान ज़मीन का एक टुकडा है जो जन्नत से उठाया गया है। जो यहाँ दाख़िल हो जाएगा वह रोज़े क़यामत आतिशे जहन्नम से महफ़ूज़ हो जाएगा।

(९) उन्हीं हज़रत से रिवायत है के मैं परवरदिगार की तरफ़ से हर उस शख़्स के लिए बेहिश्त का ज़ामिन हूँ जो मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार की तूस में ज़ियारत करे बशर्ते के उनके हक़ का आरिफ़ हो।

(१०) शेख़ सदूक़ (अ) ने ओयूने अख़बारे रेज़ा में रिवायत की है के एक मर्दे सालेह ने रसूले अक्रम (स) को ख़्वाब में देखा और अर्ज़ की के या रसूलल्लाह (स) आपके फ़रज़ंदों में से किस की ज़ियारत करूं। फ़रमाया के मेरे बाज़ फ़रज़ंदों को ज़हर दिया गया है और बाज़ को शहीद किया गया है। अर्ज़ की उनमें से किस की ज़ियारत करूँ? जब उनके मशाहिदे मुकद्देसा मुनातशिर हैं। फ़रमाया उसकी ज़ियारत करो जो तुमसे नज़दीक तर है। यानी तुम्हारी जगह उसकी क़ब्र से क़रीब तर है और वह अ॰र्जे गुरबत पर दफ़्न किया गया है। मैंने कहा आपकी मुराद क्या हज़रते रज़ा हैं? फ़रमाया सल्लल्लाहो अलैहे कहो। सल्लल्लाहो अलैहे कहो। सल्लल्लाहो अलैहे कहो।

लेखक: वसाएल व मुस्तदरक में मुख़तलिफ़ अबवाब हैं। मुख़तलिफ़ अबवाब के मशहदे इमाम रज़ा (अ) और मशाहिदे आइम्मा (अ) से बरकत हासिल करने के लिए और ज़ियारते इमाम रज़ा (अ) को ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) और जुमला आइम्मा (अ) की ज़ियारत के मुक़ाबले में इख़्तेयार करने के लिए बल्के हज्जे मुस्तहब और उमरए मुस्तहब पर मुक़द्दम करने के लिए मगर

क्योंकि इस किताब में इस से ज़्यादा की गुंजाईश नहीं है लेहाज़ा मैंने इन्हीं दस रिवायत पर इक्तेफ़ा कर ली है जो अशरए कामेला की हैसियत रखती हैं।

कैफ़यते ज़ियारते हज़रते इमामे रेज़ा (अ)

वाज़ेह रहे के हज़रत की चंद ज़ियारतें नक़्ल की गई हैं लेकिन मशहूर ज़ियारत वही है जो मोतबर किताबों में नक़्ल की गई हैं। और शेख़ ज़लीलुल क़द्र मोहम्मद बिन हसन बिन वलीद की तरफ़ मनसूब है जो शेख़ सदूक़ के उसतादों में से थे और मज़ारे इब्ने कूलूवय से मालूम होता है वे यह ज़ियारत आइम्मा (अ) से मरवी है और किताबे मन ला यहज़ोरोहुल फ़क़ीह के अनुसार इसकी कैफ़ियत यूँ है के जब क़ब्रे इमामे रज़ा (अ) की ज़ियारत का क़स्द करे तो घर से निकलने से पहले गुस्ल करे और गुस्ल के समय यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِي وَطَهِّرْ قَلْبِي وَاشْرَحْ لِي صَدْرِي وَاجْرِ عَلٰى لِسَانِي

खुदाया मुझको और मेरे दिल को पाक कर दे और मेरे सीने को कुशादा करदे और मेरी ज़ुबान पर अपनी मदह

مِدْحَتَكَ وَالثَّنَاءَ عَلَيْكَ فَإِنَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ اَللّٰهُمَّ

और अपनी सना जारी कर दे क्योंके कोई क़ुव्वत नही है मगर तेरे ज़रिए। खुदाया उसको वसीला पाकीज़ा

اجْعَلْهُ لِي طَهُورًا وَشِفَاءً

और शिफ़ा क़रार दे दे।

फिर घर से निकलते समय कहे:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ وَاِلَى اللهِ وَاِلَى ابْنِ رَسُوْلِ

खुदा के नाम से और ज़ाते खुदा से और अल्लाह की तरफ़ और फ़रज़ंदे रसूले खुदा की तरफ़ खुदा

اللهِ حَسْبِيَ اللهُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَاِلَيْكَ

मेरे लिए काफ़ी है मैने अल्लाह पर तवक्कुल किया। खुदाया तेरी तरफ़ मै मुतवज्ञे हूँ और तेरी जानिब

قَصَدْتُ وَمَا عِنْدَكَ اَرَدْتُ

मैने क़सद किया है और जो तेरे पास है उसका इरादा किया है।

उसके बाद जब बाहर निकले तो दरवाज़े पर खड़े हो कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ وَجَّهْتُ وَجْهِي وَعَلَيْكَ خَلَّفْتُ اَهْلِي وَمَالِي وَمَا

खुदाया मै ने तेरी जानिब रूख़ किया है और तेरे ऊपर छोड़ दिया है अपने अहलो अयाल और माल को और उसको

خَوَّلْتَنِي وَ بِكَ وَثِقْتُ فَلَا تُخَيِّبْنِي يَا مَنْ لَا يُخَيِّبُ مَنْ اَرَادَهُ وَلَا

जो तूने मुझ को दिया है और तुझ पर भरोसा किया है तू मुझको तहेदस्त न बना ऐ वो ज़ात जो तहेदस्त नही बनाति

يُضَيِّعُ مَنْ حَفِظَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاحْفَظْنِي

है उसको जो इरादा करे और जिसको अपनी हिफ़ाज़त मे रखता है ज़ाया नही करता है। दुरूद हो मोहम्मद व आले

بِحِفْظِكَ فَاِنَّهُ لَا يَضِيعُ مَنْ حَفِظْتَ

मोहम्मद पर और मेरी हिफ़ाज़त कर अपनी पनाह मे क्योंके वो बरबाद नही होता है जिस की तू हिफ़ाज़त करे।

उसके बाद जब इन्शाअल्लाह उस दयार तक पहुँच जाए तो जब भी ज़ियारत का इरादा करे पहले गुस्ल करे और गुस्ल के समय यह कहे:

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِي وَطَهِّرْ لِي قَلْبِي وَاشْرَحْ لِي صَدْرِي وَاجْرِ عَلٰى لِسَانِي

खुदाया मुझको पाक कर दे और मेरे दिल को पाक कर दे और मेरे सीने को कुशादा कर दे और

مِدْحَتَكَ وَمَحَبَّتَكَ وَالثَّنَاءَ عَلَيْكَ فَإِنَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ وَقَدْ عَلِمْتُ

मेरी ज़ुबान पर जारी कर दे अपनी मदह और अपनी मोहब्बत और अपनी तारीफ़ क्योंके कोई

اَنَّ قِوَامَ دِينِي التَّسْلِيمُ لِاَمْرِكَ وَالِاتِّبَاعُ لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ وَالشَّهَادَةُ

क़ुव्वत नही है मगर तेरी वजह से और मैने जान लिया है के दीन का क़वाम तेरे हुकुम को मान

عَلٰى جَمِيعِ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لِي شِفَاءً وَنُورًا إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

लेने और तेरे नबी की सुन्नत का इत्तेबा करने मे है और तेरी तमाम मख़लूक पर गवाही मे है।

قَدِيرٌ

खुदाया उस को क़रार दे मेरे लिए शिफ़ा और नूर बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

उसके बाद पाकीज़ा लिबास पहन कर पा बरेहना सुकूनो वक़ार के साथ यादे खुदा करते हुए आगे बढ़े। اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
आहिस्ता क़दम उठाते हुए जब रौज़ए मुक़द्दस में दाख़ल हो तो कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ اَشْهَدُ اَنْ

??? अल्लाह का दुरूद हो उनपर और उनकी आल पर। मै गवाही देता हूँ के सिवाए अल्लाह के कोई

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ

माबूद नही है। वो एक है कोई उसका शरीक नही है और मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दे

وَاَنَّ عَلِيًّا وَلِيُّ اللّٰهِ

और उसके रसूल हैं और ये के अली (अ) अल्लाह के वली हैं।

फिर ज़रीह के पास पुश्त ब ाक़िबला होकर क़ब्र का रूख़ कर के यूं कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही हे वो एक है कोई उसका शरीक नही है और मै गवाही

وَرَسُولُهٗ وَاَنَّهٗ سَيِّدُ الْاَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَاَنَّهٗ سَيِّدُ الْاَنْبِيَاءِ

देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं और वो अव्वलीन व आख़िरीन के सरदार हैं और वो अंबिया

وَالْمُرْسَلِينَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَنَبِيِّكَ

व मुरसलीन के सरदार हैं। खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद पर जो तेरे बन्दे, तेरे नबी और तेरी तमाम मख़लूक़

وَسَيِّدِ خَلْقِكَ اَجْمَعِينَ صَلَاةً لَا يَقْوٰى عَلٰى اِحْصَائِهَا غَيْرُكَ

के सरदार हैं ऐसी सलवात जिसको तेरे अलावा कोई एहसा न कर सके। खुदाया दुरूद नाज़ल क़र अमीरूल

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيِّ بْنِ اَبِي طَالِبٍ عَبْدِكَ وَاَخِي

मोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ) पर जो तेरे बन्दे तेरे रसूल के भाई हैं जिनको तूने अपने इल्म के लिए

رَسُوْلِكَ الَّذِی انْتَجَبْتَهُ بِعِلْمِكَ وَجَعَلْتَهُ هَادِيًا لِمَنْ شِئْتَ مِنْ

मुनतिख़ब किया है और जिनको तूने हादी बनाया है उसके लिए जिसके लिए तूने मख़लूक मे चाहा और

خَلْقِكَ وَالدَّلِيلَ عَلٰى مَنْ بَعَثْتَهُ بِرِسَالَاتِكَ وَدَيَّانَ الدِّينِ

दलील बनाया उसके लिए जिसको तूने अपने पैग़ाम के साथ मबऊस किया और अपनी अदालत से दीन

بِعَدْلِكَ وَفَصْلِ قَضَائِكَ بَيْنَ خَلْقِكَ وَالْمُهَيْمِنَ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهِ

का हाकिम बनाया और अपने फ़ैसले का जारी करनेवाला अपनी मख़लूक़ मे और उन सबपर गवाह बनाया

وَالسَّلَامُ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى فَاطِمَةَ بِنْتِ

और सलाम हो उनपर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। खुदाया दुरूद नाज़ल क़र फ़ातेमा (स) पर जो

نَبِيِّكَ وَزَوْجَةِ وَلِيِّكَ وَاُمِّ السِّبْطَيْنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ سَيِّدَیْ

तेरे नबी की बेटी और तेरे वली की ज़ौजा और सिबतैन हसन व हुसैन (अ) की माँ हैं जो जन्नत के जवानो

شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ الطُّهْرَةِ الطَّاهِرَةِ الْمُطَهَّرَةِ التَّقِيَّةِ النَّقِيَّةِ

के सरदार हैं पाक व पाकीज़ा और मुतह्हर हैं, मुत्तक़ी, मुकम्मल पाकीज़ा, राज़ी बररेज़ाए खुदा, मुकद्दस

الرَّضِيَّةِ الزَّكِيَّةِ سَيِّدَةِ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَجْمَعِينَ صَلَاةً لَا يَقْوٰى

और जन्नत की तमाम औरतों की सरदार हैं ऐसा दुरूद जिसके अहसा पर तेरे अलावा कोई क़ादिर न हो।

عَلٰى اِحْصَائِهَا غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ سِبْطَیْ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर हसनो हुसैन (अ) पर जो तेरे नबी के नवासे और जन्नत के जवानों के सरदार हैं जो

نَبِيِّكَ وَسَيِّدَیْ شَبَابِ اهْلِ الْجَنَّةِ الْقَائِمَيْنِ فِي خَلْقِكَ

तेरी मख़लूक़ मे क़याम दीन करनेवाले हैं और दलील हैं उनपर जिनको तूने पैग़ामों के साथ मबऊस किया

وَالدَّلِيلَيْنِ عَلٰى مَنْ بَعَثْتَ بِرِسَالَاتِكَ وَدَيَّانَيِ الدِّينِ بِعَدْلِكَ

है और दीन मे हाकीम हैं तेरी अदालत और मख़लूक मे फ़ैसला के जारी करनेवाले और इबादत गुजारों के

وَفَصْلَ قَضَائِكَ بَيْنَ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

सरदार हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा अली बिन हुसैन पर जो तेरी मख़लूक़ मे क़यामे दीन करने वाले हैं

عَبْدِكَ الْقَائِمِ فِي خَلْقِكَ وَالدَّلِيلِ عَلٰى مَنْ بَعَثْتَ بِرِسَالَاتِكَ

और दलील हैं उन पर जिनको तूने पैग़ामों के साथ मबऊस किया है और दीन मे हाकीम हैं तेरी अदालत

وَدَيَّانِ الدِّينِ بِعَدْلِكَ وَفَصْلِ قَضَائِكَ بَيْنَ خَلْقِكَ سَيِّدِ

और मख़लूक़ मे फ़ैसले के जारी करने वाले और इबादत गुज़ारों के सरदार हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

الْعَابِدِينَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَبْدِكَ وَخَلِيفَتِكَ فِي

मोहम्मद बिन अली (अ) पर जो तेरे बन्दे और तेरी ज़मीन पर तेरे ख़लीफ़ा हैं जो इल्मे आंबया को ज़ाहिर

ارْضِكَ بَاقِرِ عِلْمِ النَّبِيِّينَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ

करनेवाले हैं। खुदाया दुरूद नाज़लकर जाफ़र बिन सादिक़ (अ) पर जो तेरे बन्दे और तेरे दीन के वली और

الصَّادِقِ عَبْدِكَ وَوَلِيِّ دِينِكَ وَحُجَّتِكَ عَلٰى خَلْقِكَ اجْمَعِينَ

तेरी मख़लूक पर तेरी हुज्जत हैं जो सादिक़ और नेक हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मूसा बिन जाफ़र (अ) पर

الصَّادِقِ الْبَارِّ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُوسَى بْنِ جَعْفَرٍ عَبْدِكَ الصَّالِحِ

जो तेरे नेक बन्दे और तेरी ज़ुबान हैं तेरी मख़लूक हैं और तेरे हुकुम से बोलनेवाले और तेरी मख़लूक़ पर

وَلِسَانِكَ فِي خَلْقِكَ النَّاطِقِ بِحُكْمِكَ وَالْحُجَّةِ عَلٰى بَرِيَّتِكَ اَللّٰهُمَّ

तेरी हुज्जत हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल कर अली बिन मूसा रज़ा व मुतुर्ज़ा (अ) पर जो तेरे बन्दा और तेरे दीन

صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُوسَى الرِّضَا الْمُرْتَضٰى عَبْدِكَ وَوَلِيِّ دِينِكَ

के वली और तेरी अदालत के साथ कयामे दीन करनेवाले और तेरे दीन की तरफ़ बुलाने वाले और अपने

الْقَائِمِ بِعَدْلِكَ وَالدَّاعِي إِلٰى دِينِكَ وَدِينِ آبَائِهِ الصَّادِقِينَ صَلَاةً

आबाए सादेक़ीन के दीन की तरफ़ बुलानेवाले हैं। ऐसी सलवात जिस के एहसा पर तेरे अलावा कोई क़ादिर

لَا يَقْوٰى عَلٰى إِحْصَائِهَا غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ

न हो सके। खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद बिन अली (अ) पर जो तेरे बन्दे और तेरे वली हैं और तेरे

عَبْدِكَ وَوَلِيِّكَ الْقَائِمِ بِأَمْرِكَ وَالدَّاعِي إِلٰى سَبِيلِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

हुकुम के साथ क़याम करनेवाले और तेरे रासते की तरफ़ बुलानेवाले हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल कर अली

عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَوَلِيِّ دِينِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ

इबने मोहम्मद पर जो तेरे बन्दे और तेरे दीन के वली हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल कर अली इब्ने मोहम्मद पर जो

عَلِيٍّ الْعَامِلِ بِأَمْرِكَ الْقَائِمِ فِي خَلْقِكَ وَحُجَّتِكَ الْمُؤَدِّي عَنْ

तेरे बन्दे और तेरी दीन के वली हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा हसन बिन अली (अ) पर जो तेरे फरमान पर

نَبِيِّكَ وَشَاهِدِكَ عَلٰى خَلْقِكَ الْمَخْصُوصِ بِكَرَامَتِكَ الدَّاعِي إِلٰى

आमिल तेरी मख़लूक़ मे क़यामे दीन करनेवाले और तेरी हुज्जत हैं जो तेरे नबी की तरफ़ से पैग़ाम पहुँचाने

طَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

वाले हैं और तेरे गवाह हैं तेरी मख़लूक़ पर जो मख़सूस हैं तेरी करामत से और तेरी इताअत की तरफ़

عَلٰى حُجَّتِكَ وَوَلِيِّكَ الْقَائِمِ فِي خَلْقِكَ صَلَاةً تَامَّةً نَامِيَةً بَاقِيَةً

बुलानेवाले और तेरे रसूल की इताअत की तरफ़। तेरा दुरूद हो उन सब पर। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

تُعَجِّلُ بِهَا فَرَجَهُ وَتَنْصُرُهُ بِهَا وَتَجْعَلُنَا مَعَهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ

अपनी हुज्जत और अपने वली पर जो तेरी मख़लूक़ मे क़याम करेगें ऐसी सलवात जो मुकम्मल हो ज़्यादा हो

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَتَقَرَّبُ اِلَيْكَ بِمُحِبِّيْهِمْ وَاُوَالِي وَلِيَّهُمْ وَاُعَادِي عَدُوَّهُمْ

बक़ी हो जो उनके जोहूर मे ताजील का सबब हो और उसके ज़रिए तुझ से क़ुर्बत चाही और उनके दोस्तों को

فَارْزُقْنِي بِهِمْ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَاصْرِفْ عَنِّي بِهِمْ شَرَّ الدُّنْيَا

दोस्त और उनके दुश्मनो को दुश्मन रखा तू उनके वासते से मुझको दुनिया व आख़िरत की नेकी अता कर

وَالآخِرَةِ وَاهْوَالَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

और उनके वास्ते से दुनिया व आख़िरत की बुराई दूर कर दे और क़यामत के दिन के ख़ाफ़ को दुर कर दे।

इसके बाद सर के पास बैठ जाएं और यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा। सलाम आपपर ऐ हुज्जते खुदा। सलाम आपपर ऐ नूरे खुदा

نُورَ اللهِ فِي ظُلُمَاتِ الارْضِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمُودَ الدِّينِ اَلسَّلَامُ

ज़मीन की तारीकियों मे। सलाम आपपर ऐ दीन के सुतून, सलाम आपपर ऐ आदम सफ़ी

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ آدَمَ صَفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوحٍ نَبِيِّ اللهِ

अल्लाहके वारिस, सलाम आपपर ऐ नूह नबीए खुदा के वारिस, सलाम आप पर ऐ इब्राहीम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

ख़लील अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ इस्माईल ज़बीहअल्लाह के वारिस सलाम आप

اِسْمَاعِيلَ ذَبِيحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوسَىٰ كَلِيمِ اللهِ اَلسَّلَامُ

पर ऐ मूसा कलीम अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ ईसा रूहुल्लाह के वारिस, सलाम

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيسَىٰ رُوحِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ رَسُولِ

आप पर ऐ मोहम्मद रसूल अल्लाह के वारिस, सलाम आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन अली

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيٍّ وَلِيِّ اللهِ وَوَصِيِّ

(अ) वलीए खुदा और वसीए रसूल रब्बुल आलमीन के वारिस, सलाम आपपर ऐ फ़ातेमा

رَسُولِ رَبِّ الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ

ज़हरा (स) के वारिस, सलाम आपपर ऐ हसन व हुसैन (अ) सरदारे जवानाने अहले जन्नत

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ سَيِّدَيْ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ

के वारिस, सलाम आपपर ऐ अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबेदीन (अ) के वारिस, सलाम आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ زَيْنِ الْعَابِدِينَ اَلسَّلَامُ

पर ऐ मोहम्मद बिन अली के वारिस जो इल्मे अव्वलीन व आख़िरीन के ज़ाहिर करनेवाले

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ بَاقِرِ عِلْمِ الاَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ اَلسَّلَامُ

हैं, सलाम आप पर जाफ़र बिन मोहम्मद के वारिस जो सादिक़ और नेक हैं, सलाम आप पर

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ الصَّادِقِ الْبَارِّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ

ऐ मूसा बिन जाफ़र (अ) के वारिस, सलाम आप पर ऐ सिद्दीक़ व शहीद, सलाम आप पर

مُوسَىٰ بْنِ جَعْفَرٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الصِّدِّيقُ الشَّهِيدُ اَلسَّلَامُ

ऐ वसी, नेक, मुत्तक़ी, मै गवाही देता हूँ के आप ने नमाज़ क़ाएम की और ज़कात अदा की

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَارُّ التَّقِيُّ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَآتَيْتَ

अम्र बिल मारूफ़ किया और नही अनिल मुनकर किया और अल्लाह की इबादत की यहाँ

الزَّكَاةَ وَاَمَرْتَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَعَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا

तक के आप को मौत आ गई। सलाम आप पर ऐ अबुल हसन और अल्लाह की रहमत व

حَتَّىٰ اَتَاكَ الْيَقِينُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْحَسَنِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

बरकात हो।

उसके बाद ज़रीह से लिपट जाए और यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ صَمَدْتُ مِنْ اَرْضِي وَقَطَعْتُ الْبِلَادَ رَجَاءَ رَحْمَتِكَ

खुदाया मैने तेरा क़सद किया है अपनी सर ज़मीन से और तेरी रहमत की उम्मीद मे मुसाफ़ेरत को तै किया तू मुझको

فَلَا تُخَيِّبْنِي وَلَا تَرُدَّنِي بِغَيْرِ قَضَاءِ حَاجَتِي وَارْحَمْ تَقَلُّبِي عَلٰى قَبْرِ ابْنِ

नाउम्मीद न करना और मुझको वापस न करना बेग़ैर मेरी हाजत को पूरा किए हुए और रहेम फ़र्मा मेरे आने पर

اَخِي رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ بِاَبِي اَنْتَ وَاُمِّي يَا مَوْلَايَ اَتَيْتُكَ

अपने रसूल के भाई के फ़रज़ंद की क़ब्र पर, तेरी रहमत हो उनपर और उनकी आल पर। मेरे माँ बाप अप पर क़ुर्बान

زَائِرًا وَافِدًا عَائِذًا مِمَّا جَنَيْتُ عَلٰى نَفْسِي وَاحْتَطَبْتُ عَلٰى ظَهْرِي

हों ऐ मेरे मौला मै आपके पास ज़ियारत के लिए और जानने के लिए आय हूँ जो मैने अपने नफ़्स पर ख़यानत की है

فَكُنْ لِي شَافِعًا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَ فَقْرِي وَفَاقَتِي فَلَكَ عِنْدَ اللّٰهِ مَقَامٌ

और जो बार बपनी पीठ पर उठाया है तो मेरे लिए शिफ़ा करनेवाले हो जाईए। खुदा की बारगाह मे मेरे फ़क़रो फ़ाक़े

مَحْمُوْدٌ وَاَنْتَ عِنْدَهُ وَجِيْهٌ

के दिन के खुदा के नज़दीक आपके लिए इज़्ज़त का मकाम है और आप उस के नज़दीक इज़्ज़तदार हैं।

उसके बाद दाहने हाथ को बुलंद करे और बाएं हाथ को क़ब्र पर रख कर कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اتَقَرَّبُ اِلَیكَ بِحُبِّهِمْ وَبِوِلَایَتِهِمْ اتَوَلّٰی آخِرَهُمْ بِمَا

खुदाया मैने तेरी जानिब तक़र्रूब किया है उनकी मोहब्बत और उनकी विलायत के ज़रिए उनके आख़िर से भी

تَوَلَّیتُ بِهِ اوَّلَهُمْ وَابْرَاُ مِنْ كُلِّ وَلِیجَةٍ دُونَهُمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الَّذِینَ

मोहब्बत करता हूँ जिस तरह उनके अव्वल से करता हूँ और मै उनके अलावा तमाम वसीलों से बेज़ार हूँ। खुदाया

بَدَّلُوا نِعْمَتَكَ وَاتَّهَمُوا نَبِیَّكَ وَجَحَدُوا بِآیَاتِكَ وَسَخِرُوا بِاِمَامِكَ

उन पर लानत कर जिन्होंने तेरी नेमत को बदल दिया और तेरे नबी को मुत्तहम किया और तेरी आयातों का इन्कार

وَحَمَلُوا النَّاسَ عَلٰی اكْتَافِ آلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّی اتَقَرَّبُ اِلَیكَ

किया और तेरे इमाम का मज़ाक उड़ाय और लोगों को आले मोहम्मद के कॉधो पर लाद दिया। खुदाया मै तुझसे

بِاللَّعْنَةِ عَلَیهِمْ وَالْبَرَاءَةِ مِنْهُمْ فِی الدُّنْیَا وَالآخِرَةِ یَارَحْمٰنُ

क़रीब हूँ उन सबपर लानत के ज़रिए और उनसे बराअत के ज़रिए दुनिया व आख़िरत मे ऐ रहेम करनेवाले।

अब इसके बाद वापस होकर पाईने पा आए और कहे:

صَلَّی اللّٰهُ عَلَیكَ یَا اَبَا الْحَسَنِ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی رُوحِكَ وَبَدَنِكَ صَبَرْتَ

अल्लाह की रहमत हो आप पर ऐ अबुल हसन अल्लाह की रहमत हो आपकी रूह और आपके

وَانْتَ الصَّادِقُ الْمُصَدَّقُ قَتَلَ اللّٰهُ مَنْ قَتَلَكَ بِالاَیْدِی

जिस्म पर, आप ने सब्र किया, आप सादिक़ व मसदूक़ हैं। खुदा उसे क़त्ल करे जिसने आप को

وَالالْسُنِ

क़त्ल किया ज़ुबान से या हाथ से।

उसके बाद बेशुमार लानत करे उन लोगों पर जिन्होंने अमीरूल मोमिनीन, इमाम हसन (अ) और इमाम हुसैन (अ) और तमाम आले मोहम्मद को क़त्ल किया है।
उसके बाद पुश्ते क़ब्र से बालाए सर की तरफ़ जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे।
पहली रकत में हम्द के बाद सूरह यासीन और दूसरी रकत में सूरह रहमान और दुआ और तज़र्रोह की कोशिश करे और अपने लिए अपने वालेदैन के लिए और तमाम बिरादरे ईमानी के लिए दुआ करे।
और जिस क़द्र मुम्किन हो बालाए सर बैठे और वहाँ नमाज़ें अदा करे।
लेखक: यह ज़ियारत हज़रत की ज़ियारतों में बेहतरीन ज़ियारत है और फ़क़ीह, ओयून और कुतूबे अल्लामा मजलिसी में وَسَخِرُوابِإِمَامِكَ जो ज़ियारत के अंत में है दो मीम के साथ नक़्ल किया गया है।
याने खुदाया उन लोगों पर लनात फ़र्मा जिन्होंने तेरे इमाम का मज़ाक उड़ाया है।
लेकिन मिस्बाहुज़ ज़ाएर में وَسَخِرُوابِأَيَّامِكَ है। और यह भी दुरूस्त है।
बल्के शायद एक एतेबार से ऊला हो के रिवायात में अय्याम से मुराद खुद आइम्मए मासूमीन (अ) हैं।
जैसा के सक़र बिन अबी दल्फ़ की रिवायत में बाबे अव्वल की पाँचवीं फ़स्ल में गुज़र चुका है।
यह भी वाज़ेह रहे के क़ातेलाने आइम्मा पर किसी ज़बान में भी लानत की जाए बहर हाल कारे ख़ैर है। और अगर इस इबारत को पढ़े जो बाज़ दुआओं से नक़्ल की गई है तो ज़्यादा मुनासिब है:

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ وَقَتَلَةَ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ

खुदाया तू लानत कर अमीरूल मोमिनीन (अ) के क़ातिलों पर और हसन व हुसैन (अ) के

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَقَتَلَةَ اهْلِ بَيْتِ نَبِيِّكَ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ اعْدَاءَ آلِ

क़ातिलों पर और अपने नबी के अहलेबैत वे क़ातीलों पर। खुदाया लानत कर आले मोहम्मद के

مُحَمَّدٍ وَقَتَلَتَهُمْ وَزِدْهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ وَهَوَانًا فَوْقَ هَوَانٍ

दुश्मनों पर और उनके क़त्ल करने वालों पर और उनके अज़ाब मे ज़्यादती कर अज़ाब पर और

وَذُلًا فَوْقَ ذُلٍّ وَخِزْيًا فَوْقَ خِزْيٍ اَللّٰهُمَّ دُعَّهُمْ اِلٰى النَّارِ دَعًّا

ज़िल्लत पर ज़िल्लत ज़्यादा कर और बेइज़्ज़ती पर बेइज़्ज़ती ज़्यादा कर और रूसवाई पर रूसवाई

وَارْكِسْهُمْ فِي اِلِيمِ عَذَابِكَ رَكْسًا وَاحْشُرْهُمْ وَاتْبَاعَهُمْ اِلٰى

ज़्यादा कर। खुदाया उन्हें जहन्नम की तरफ़ तेज़ी से ले जा और दर्दनाक अज़ाब मे सरनुगूं फ़र्मा

جَهَنَّمَ زُمَرًا

और उन्हें और उनके ताबेदारों को जहन्नम मे महशूर कर।

तोहफ़तुज़ ज़ाएर में है के शेख़ मुफ़ीद ने ज़िक्र किया है के मुस्तहब है के ज़ियारते इमाम रज़ा (अ) के बाद यह पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اسْالُكَ يَا اللهُ الدَّائِمُ فِي مُلْكِهِ الْقَائِمُ فِي عِزِّهِ الْمُطَاعُ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ खुदा जो अपनी बादशाहत मे दाएम है जो अपनी इज़्ज़त मे क़ाएम

فِي سُلْطَانِهِ الْمُتَفَرِّدُ فِي كِبْرِيَائِهِ الْمُتَوَحِّدُ فِي دَيْمُومَةِ بَقَائِهِ

है और अपने हुकुम मे मुसतहक़े इताअत है जो मुनफरिद है अपनी किब्रेयाई मे, यकता है अपने बक़ाए

الْعَادِلُ فِي بَرِيَّتِهِ الْعَالِمُ فِي قَضِيَّتِهِ الْكَرِيمُ فِي تَاخِيرِ عُقُوبَتِهِ

अबदी मे जो आदील है अपनी मख़लूक़ मे जो क़ज़ा व क़दर का जाननेवाला है जो करीम है अपनी सज़ा

اِلٰهِي حَاجَاتِي مَصْرُوفَةٌ اِلَيْكَ وَآمَالِي مَوْقُوفَةٌ لَدَيْكَ وَكُلَّ مَا

की ताख़ीर मे। मेरे खुदा। मेरी हाजतें तेरी तरफ़ पलट आई हैं और मेरी उम्मीदे तेरी बारगाह मे लगी है और

وَفَّقْتَنِي مِنْ خَيْرٍ فَانْتَ دَلِيلِي عَلَيْهِ وَطَرِيقِي اِلَيْهِ يَا قَدِيرًا لَا

जब तक तूने मुझको तौफ़ीक़ दी ख़ैर की तो तू ही मेरा रहनुमा है उस पर और मेरा रास्ता है उसकी तरफ़ ऐ

تَؤُودُهُ الْمَطَالِبُ يَا مَلِيًّا يَلْجَأُ اِلَيْهِ كُلُّ رَاغِبٍ مَا زِلْتُ مَصْحُوبًا

साहेबे क़ुदरत जिसको मतालिब आज़ा०rज नही करते ऐ साहेबे इख़तेयर जिसकी तरफ़ हर रग़बत वाला

مِنْكَ بِالنِّعَمِ جَارِيًا عَلٰى عَادَاتِ الاِحْسَانِ وَالْكَرَمِ اسْالُكَ

पनाह लेता है। मै तेरी नेमतों के साथ हमेशा हूँ। मुझ पर एहसान व करम और अलताफ़ बराबर जारी है।

بِالْقُدْرَةِ النَّافِذَةِ فِي جَمِيعِ الاشْيَاءِ وَقَضَائِكَ الْمُبْرَمِ الَّذِي

मै तुझ से सवाल करता हूँ उस क़ुदरत के वास्ते से जो तमाम चीजों मे नाफ़िज़ है और तेरे मोहकम फ़ैसले

تَحْجُبُهُ بِايْسَرِ الدُّعَاءِ وَبِالنَّظْرَةِ الَّتِي نَظَرْتَ بِهَا اِلَى الْجِبَالِ

के वास्ते से जिसको आसान दुआ भी रोक देती है और उस निगाहके वास्ते से जिससे तूने पहाडों की तरफ़

فَتَشَامَخَتْ وَاِلَى الاَرَضِينَ فَتَسَطَّحَتْ وَاِلَى السَّمَاوَاتِ

निगाह की तो उसे बुलंद बना दिया और ज़मीनों की तरफ़ डाला तो मुसतहकम बना दिया और आसमानों

فَارْتَفَعَتْ وَاِلَى الْبِحَارِ فَتَفَجَّرَتْ يَا مَنْ جَلَّ عَنْ ادَوَاتِ لَحَظَاتِ

की तरफ़ तो उसे बुलंद कर दिया और दरयाओं की तरफ़ डाला तो उसे जारी करदिया। ऐ वो ज़ात जो बुलंद

الْبَشَرِ وَلَطُفَ عَنْ دَقَائِقِ خَطَرَاتِ الْفِكَرِ لَا تُحْمَدُ يَا سَيِّدِى اِلَّا

है इन्सानो की निगाहों के वसाएल से और जो लतीफ़तर है दक़ीक़ अफ़कार की रसाई से तेरी कोई हम्द नही

بِتَوْفِيقٍ مِنْكَ يَقْتَضِى حَمْدًا وَلَا تُشْكَرُ عَلَى اصْغَرِ مِنَّةٍ اِلَّا

कर सकता है। ऐ मेरे मालिक मगर तेरी तौफ़ीक़ के ज़रिए और वो भी दूसरे हम्द की मस्तौजब होगी और

اسْتَوْجَبْتَ بِهَا شُكْرًا فَمَتَى تُحْصَى نَعْمَاؤُكَ يَا اِلٰهِى وَتُجَازَى

नही शुक्र अदा किया जा सकता है छोटी सी नेमत पर मगर ये के उसपर शुक्र का इसतेहक़ाक़ होगा तो कैसे

آلَاؤُكَ يَا مَوْلَاىَ وَتُكَافَأُ صَنَائِعُكَ يَا سَيِّدِى وَمَنْ نِعَمِكَ يَحْمَدُ

तेरी नेमतों को गिना जा सकता है। ऐ मेरे खुदा और तेरी नेमतों का कब अहसा हो सकता है ऐ मेरे मौला

الْحَامِدُونَ وَمَنْ شُكْرِكَ يَشْكُرُ الشَّاكِرُونَ وَاَنْتَ الْمُعْتَمَدُ

और तेरी सिनतों का कब शुमार हो सकता है ऐ मेर मालिक और तेरी नेमत से हम्द करनेवाले हम्द करते

لِلذُّنُوبِ فِى عَفْوِكَ وَالنَّاشِرُ عَلَى الْخَاطِئِينَ جَنَاحَ سِتْرِكَ وَاَنْتَ

हैं और तेरे शुक्र से शुक्र करनेवाले शुक्र करते हैं और तूही मोतमिद है गुनाहों के लिए अपनी माफ़ी मे और

الْكَاشِفُ لِلضُّرِّ بِيَدِكَ فَكَمْ مِنْ سَيِّئَةٍ اخْفَاهَا حِلْمُكَ حَتّٰى

ख़ताकारों के लिए अपने छुपाने के बाज़ुओं का फैलानेवाला है और तू ही रंज व ग़म का दूर करनेवाला

دَخِلَتْ وَحَسَنَةٍ ضَاعَفَهَا فَضْلُكَ حَتّٰى عَظُمَتْ عَلَيْهَا مُجَازَاتُكَ

है अपने हाथ से। पस कितनी ही बुराईयों को तेरे हिल्म ने छुपा लिया है यहाँ तक के वो ख़त्म हो गई और

جَلَلْتَ اَنْ يُخَافَ مِنْكَ اِلَّا الْعَدْلُ وَانْ يُرْجٰى مِنْكَ اِلَّا الاِحْسَانُ

कितनी ही नेकियों को तेरे फ़ज़्ल ने बढ़या है यहाँ तक के तेरी जज़ा उसपर अज़ीम हो गई तू उससे अज़ीम

وَالْفَضْلُ فَامْنُنْ عَلَيَّ بِمَا اَوْجَبَهُ فَضْلُكَ وَلَا تَخْذُلْنِي بِمَا يَحْكُمُ بِهِ

है के तुझसे डरा जाए मगर ये के तेरे अद्ल से और तुझ से उम्मीद लगाई जाए मगर ये के एहसान की और

عَدْلُكَ سَيِّدِي لَوْ عَلِمَتِ الاَرْضُ بِذُنُوبِي لَسَاخَتْ بِي اَوِ الْجِبَالُ

फ़ज़्ल की तू मुझ पर एहसान कर उसका जिसका तेरे फ़ज़्लने तक़ाज़ा किया है और मुझको रूसवा न कर

لَهَدَّتْنِي اَوِ السَّمَاوَاتُ لَاخْتَطَفَتْنِي اَوِ الْبِحَارُ لَاغْرَقَتْنِي سَيِّدِي

उससे जिसका तेरे अद्ल ने फ़ैसला किया है। मेरे मालिक अगर मेरे गुनाह को ज़मीन जान लेती तो मुझको

سَيِّدِي سَيِّدِي مَوْلَايَ مَوْلَايَ قَدْ تَكَرَّرَ وُقُوفِي

धंसा देती या अगर पहाहों को मालूम हो जाता तो मेरे सर पर गिर पड़ते या आसमानो को मालूम होता तो

لِضِيَافَتِكَ فَلَا تَحْرِمْنِي مَا وَعَدْتَ الْمُتَعَرِّضِينَ لِمَسْاَلَتِكَ يَا

वो मुझको उड़ा लेते या अगर दरयाओं को मालूम होता तो वो मुझे डुबो देते। मेरे मालिक मेरे मालिक मेरे

مَعْرُوفَ الْعَارِفِينَ يَا مَعْبُودَ الْعَابِدِينَ يَا مَشْكُورَ الشَّاكِرِينَ يَا

मालिक मेरे मौला मेरे मौला मेरे मौला, कितनी बार महमानी मे मेरा क़याम हुआ है तो तू मुझको महरूमन

جَلِيسَ الذَّاكِرِينَ يَا مَحْمُودَ مَنْ حَمِدَهُ يَا مَوْجُودَ مَنْ طَلَبَهُ يَا

न कर उससे जिसवा तूने वादा किया है अपने से सवाल करनेवालों से ऐ आरि०फों के मारूफ़ ऐ आबिदों के

مَوْصُوفَ مَنْ وَحَّدَهُ يَا مَحْبُوبَ مَنْ احَبَّهُ يَا غَوْثَ مَنْ ارَادَهُ يَا

माबूद, ऐ शुक्र करनेवालों के मशकूर, ऐ ज़ाकिरों के हमनशीन, ऐ हम्द करनेवाला के महमूद, ऐ तलबगारों

مَقْصُودَ مَنْ انَابَ اِلَيْهِ يَا مَنْ لَا يَعْلَمُ الْغَيْبَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا

के मौजूद, ऐ उसके मौसूफ़ जो वहदानियत को बयान करे। ऐ महबूब उसके जो पसंद करे, ऐ फ़रयाद रस

يَصْرِفُ السُّوءَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يُدَبِّرُ الامْرَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يَغْفِرُ

उसके जो इरादा करे, ऐ मक़सूद उसके जो लौट कर आया, ऐ वो ज़ात जिसके अलावा कोई ग़ैब को नही

الذَّنْبَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يَخْلُقُ الْخَلْقَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يُنَزِّلُ الْغَيْثَ

जानता, ऐ वो ज़ात जिस के अलावा कोई बुराई को दूर नही करता, ऐ वो ज़ात जिसके अलावा कोई और

اِلَّا هُوَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِي يَا خَيْرَ الْغَافِرِينَ رَبِّ

तदबीरे उमूर नही करता, ऐ वो ज़ात जिस के अलावा कोई गुनाह को माफ़ नही करता है, ऐ वो ज़ात जिस

اِنِّي اسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ حَيَاءٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ رَجَاءٍ

के अलावा कोई ख़ल्क़ नही करता, ऐ वो ज़ात जिस के अलावा कोई बारिश नही नाज़ल करता दुरूद हो

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ اِنَابَةٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ رَغْبَةٍ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ को बख़्श दे ऐ बेहतरीन बख़्शनेवाले मेरे परवरदिगार मै तुझसे

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ رَهْبَةٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ طَاعَةٍ

इसतेग़फ़ार करता हूँ, शमाAदगी का इस्तेग़फ़ार मै तुझ से इस्तेग़फ़ार करता हूँ उम्मीदका इस्तेग़फ़ार, मै

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ اِيمَانٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ اِقْرَارٍ

तुझसे इस्तेग़फ़ार करता हूँ तौबा का इस्तेग़फ़ार और मै तुझसे इस्तेग़फ़ार करता हूँ रग़बत के साथ, मै तुझसे

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ اِخْلَاصٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ تَقْوىٰ

इस्तेग़फ़ार करता हूँ ख़ाफ़ का इस्तेग़फ़ार और मै तुझ से इस्तेग़फ़ार करता हूँ इताअत के साथ, मै तुझसे

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ تَوَكُّلٍ وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ ذِلَّةٍ

इस्तेग़फ़ार करता हूँ ईमान के साथ, मै तुझ से इस्तेग़फ़ार करता हूँ तक़वे के साथ, मै तुझसे इस्तेग़फ़ार करता

وَاسْتَغْفِرُكَ اسْتِغْفَارَ عَامِلٍ لَكَ هَارِبٍ مِنْكَ اِلَيْكَ فَصَلِّ عَلىٰ

हूँ तवक्कुल के साथ, मै तुझ से इस्तेग़फ़ार करता हूँ ज़िल्लत व मसकेनत के साथ, मै तुझसे इस्तेग़फ़ार करता

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَتُبْ عَلَيَّ وَعَلىٰ وَالِدَيَّ بِمَا تُبْتَ وَتَتُوبُ عَلىٰ

हूँ उस शख़्स का इस्तेग़फ़ार जो तेरे लिए काम मे मशग़ूल हुआ और तेरी तरफ़ भाग कर आया हो तू दुरूद

جَمِيعِ خَلْقِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا مَنْ يُسَمّٰى بِالْغَفُورِ الرَّحِيمِ يَا

नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी तौबा को और मेरे वालदैन की तौबा को क़ुबूल करले

مَنْ يُسَمَّىٰ بِالْغَفُورِ الرَّحِيمِ يَا مَنْ يُسَمَّىٰ بِالْغَفُورِ الرَّحِيمِ صَلِّ

और तमाम मख़लूक़ की तौबा को क़ुबूल फ़र्मा ले ऐ बेहतरीन रहेम करने वाले, ऐ वो ज़ात जिसका नाम

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاقْبَلْ تَوْبَتِي وَزَكِّ عَمَلِي وَاشْكُرْ سَعْيِي

ग़फ़ूरूर रहीम है दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी तौबा को क़ुबूल कर ले और मेरे अमल

وَارْحَمْ ضَرَاعَتِي وَلَا تَحْجُبْ صَوْتِي وَلَا تُخَيِّبْ مَسْأَلَتِي يَا غَوْثَ

को पाक करदे और मेरी कोशिश की जज़ा दे और मेरी ज़ारी पर रहेम फ़र्मा और न छिपा मेरी आवाज़ को

الْمُسْتَغِيثِينَ وَابْلِغْ اَئِمَّتِي سَلَامِي وَدُعَائِي وَشَفِّعْهُمْ فِي جَمِيعِ مَا

और मेरे सवाल को नाकाम न बना ऐ फ़रयाद करनेवालों के फ़रयादरस और मेरा सलाम और मेरी दुआ

سَأَلْتُكَ وَاوْصِلْ هَدِيَّتِي اِلَيْهِمْ كَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَزِدْهُمْ مِنْ

मेरे आईम्मा तक पहुँचा दे और उन्हें शिफ़ाअत करनेवाला बना दे जिसका मै तुझसे सवाल करूँ और मेरा

ذٰلِكَ مَا يَنْبَغِي لَكَ بِاَضْعَافٍ لَا يُحْصِيهَا غَيْرُكَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

हदया उन तक पहुँचा दे जैसा के उनके लिए हो और उनके लिए ज़्यादा करदे जो मुनासिब हो तेरे लिए कई

اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى اَطْيَبِ الْمُرْسَلِينَ مُحَمَّدٍ

गुना जिसको तेरे अलावा कोई अहसा न कर सके और नही है कोई क़ुव्वत व ताक़त मगर खुदाए बुलंद

وَآلِهِ الطَّاهِرِينَ

व अज़ीम से और खुदा दुरूद भेज अपने पाकीज़ातरीन रसूल मोहम्मद और उनकी पाकीज़ा आल पर।

लेख़क: अल्लामा मजलिसी ने बिहारूल अनवार में बाज़ क़दीम असहाब के तालीफ़ात से एक ज़ियारते इमाम रज़ा (अ) और नक़्ल की है। जिसे ज़ियारते जवादिया कहा जाता है और उसके अंत में यह है के नमाज़े ज़ियारत के बाद तसबीह पढ़े और उसको हज़रत की तरफ़ हदिया करे और फिर यह दुआ पढ़े:
اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُكَ یَا اللهُ الدَّائِمُ
बहर हाल जब भी मशहदे मुक़द्दस में इस ज़ियारत को पढ़े तो इस दुआ को तर्क न करे।

एक दूसरी ज़ियारत

जिसे इब्ने क़ूलूवय ने बाज़ आइम्मा से रिवायत की है के फ़रमाया के जब क़ब्रे इमाम रज़ा (अ) के पास जाओ तो यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَلِیِّ بۡنِ مُوسَی الرِّضَا الۡمُرۡتَضَی الۡاِمَامِ التَّقِیِّ

खुदाया दुरूद व रहमत नाज़ल फ़र्मा अली बिन मूसा रज़ा (अ) पर जो पसंदीदा और इमाम और

النَّقِیِّ وَحُجَّتِكَ عَلٰی مَنۡ فَوۡقَ الۡاَرۡضِ وَمَنۡ تَحۡتَ الثَّرَی الصِّدِّیقِ

पाकीज़ा मुत्तक़ी हैं और तेरी हुज्जत हैं ज़मीन पर और जो ज़मीन के निचे है उस पर और सिद्दीक़ व

الشَّهِیدِ صَلَاةً كَثِیرَةً تَامَّةً زَاكِیَةً مُتَوَاصِلَةً مُتَوَاتِرَةً مُتَرَادِفَةً

शहीद हैं बहुत ज़्यादा सलवात मुकम्मल और पाकीज़ा और बराबर और मुसलसल पै दर पै जैसा

كَاَفۡضَلِ مَا صَلَّیۡتَ عَلٰی اَحَدٍ مِنۡ اَوۡلِیَائِكَ

के बेहतरीन सलवात तूने भेजी है अपने दोस्तों मे से किसी एक पर।

तीसरी ज़ियारत

वह ज़ियारत है जिसको शेख़ मुफ़ीद (र) ने मुक़न्ना में नक़्ल किया है। और फ़रमाया है के गुस्ल करने के बाद और बेहतरीन लिबास पहन्ने के बाद हज़रत की क़ब्र के पास खड़े होकर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ وَابْنَ وَلِيِّهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और फ़रज़ंदे वलीए खुदा, सलाम हो आप पर ऐ हुज्जते खुदा और फ़रज़ंदे

وَابْنَ حُجَّتِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْهُدٰى وَالْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَرَحْمَةُ

हुज्जते खुदा, सलाम आप पर ए इमामे हिदायत और रिश्तए मोहकमे ईमान और अल्लाह की रहमत

اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَشْهَدُ اَنَّكَ مَضَيْتَ عَلٰى مَا مَضٰى عَلَيْهِ آبَاؤُكَ

व बरकात हो, मै गवाही देता हूँ के आप उस राह पर चलते रहे जिसपर आपके आबाए ताहेरीन चले

الطَّاهِرُونَ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمْ لَمْ تُؤْثِرْ عَمًى عَلٰى هُدًى وَلَمْ تَمِلْ

(Dल्लाह का दुरूद हो उनपर) आपने गुम्राही को हिदायत पर मुक़द्दम नही किया और हक़से बातिल की

مِنْ حَقٍّ اِلٰى بَاطِلٍ وَاَنَّكَ نَصَحْتَ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهِ وَاَدَّيْتَ الاَمَانَةَ

तरफ़ माएल नही हुए और आपने अल्लाह और उसके रसूल के लिए नसीहत की और अमानत को

فَجَزَاكَ اللهُ عَنِ الاِسْلَامِ وَاَهْلِهِ خَيْرَ الْجَزَاءِ اَتَيْتُكَ بِاَبِي وَاُمِّي زَائِرًا

अदा किया तो खुदा आप को जज़ा दे बेहतरीन जज़ा इस्लाम और अहले इसलाम की तरफ़ से। मेरे

عَارِفًا بِحَقِّكَ مُوَالِيًا لِاَوْلِيَائِكَ مُعَادِيًا لِاَعْدَائِكَ فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ

माँ बाप आपपर क़ुर्बान हों। मै आपकी ज़ियारत के लिए आया हूँ आपके हक़ को पहचानते हुए आप

رَبِّكَ

के दोस्तों का दोस्त और दुश्मनों का दुश्मन बनकर तो आप मेरी शिफ़ाअत करें अपने रब के पास।

उसके बाद अपने को क़ब्र से लिपटा दे। उसके बाद बोसा देकर दोनो रूख़सारों को क़ब्र पर रखे। उसके बाद सरहाने की तरफ़ आकर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللهِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा (और अल्लाह की रहमत व बरकात हो) मै

اشْهَدُ انَّكَ الاِمَامُ الْهَادِى وَالْوَلِيُّ الْمُرْشِدُ ابْرَاُ اِلٰى اللهِ مِنْ

गवाही देता हूँ के आप इमाम, हादी, वली और हिदायत करनेवाले हैं। मै आपके दुश्मनों से बरी हूँ

اعْدَائِكَ وَاتَقَرَّبُ اِلٰى اللهِ بِوِلَايَتِكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ

और आपकी विलायत के ज़रिए खुदा से क़रीब होता हूँ। अल्लाह की सलामती और रहमत और

وَبَرَكَاتُهُ

बरकतें हों।

उसके बाद दो रकत नमाज़े ज़ियारत अदा करे और उसके बाद जो चाहे नमाज़ पढ़े और जिस क़द्र चाहे दुआ करे।
लेख़क: इमाम रज़ा (अ) की ज़ियारत मख़सूस अय्याम व अवक़ात में बेपनाह

फ़ज़ीलत रखती है। खुसूसन माहे रजब में और तेईस ज़िलक़ाद और पच्चीस ज़िलकाद और छे रमज़ान को जैसा के इन महीनों के आमाल में ज़िक्र किया गया है और इसके अलावा वह दिन भी जो हज़रत (अ) से कोई खुसूसियत रखते हैं।

उसके बाद जब आपको विदा करना चाहे तो वह दुआ पढ़े जो रसूले अक्रम (स) के विदा में पढ़ी जाती है और यूँ कहे के

لَا جَعَلَهُ اللّٰهُ آخِرَ تَسْلِيمِي عَلَيْكَ

और अगर चाहे तो यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ

सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। खुदाया उसको मेरी आख़री

الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِي ابْنَ نَبِيِّكَ وَحُجَّتَكَ عَلٰى خَلْقِكَ وَاجْمَعْنِي وَإِيَّاهُ فِي

ज़ियारत का ज़माना न क़रार देना अपने नबी के फ़रज़ंद और अपनी मख़लूक़ पर अपनी हुज्जत की

جَنَّتِكَ وَاحْشُرْنِي مَعَهُ وَفِي حِزْبِهِ مَعَ الشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ

और मुझको और उन्हें जन्नत मे एक साथ क़रार देना और मुझको उनके सथ महशूर करना और उनके

أُولٰئِكَ رَفِيقًا وَاسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ وَاسْتَرْعِيكَ وَاقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ

गरोह मे शोहदा व सालेहीन के साथ के वो कितने बेहतरीन दोस्त हैं। मै आप को खुदा को सौंपता हूँ

آمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُولِ وَبِمَا جِئْتَ بِهِ وَدَلَلْتَ عَلَيْهِ فَاكْتُبْنَا مَعَ

और आप से तलबे रेयायत करता हूँ और आप पर सलाम पढ़ता हूँ। हम अल्लाह व रसूल पर ईमान

الشَّاهِدِينَ

लाए और उसपर जिसे आप लाए और जिसकी तरफ़ हिदायत की तो हमको गवाहों मे लिख लिजिए।

लेखकः इस जगह पर चंद मतालिब का ज़िक्र कर देना ज़्यादा मुनासिब है।

(१) सनदे मोतबर से इमाम अली नक़ी (अ.स.) से नक़्ल किया गया है जो व्यक्ति भी खुदा की बारगाह में कोई हाजत रखता हो वह हमारे जद इमाम रज़ा (अ.स.) की तूस शहर में इस प्रकार ज़ियारत करे के गुस्ल करने के बाद हज़रत के बालाए सर दो रकत नमाज़ अदा करे और क़ुनूत में अपनी हाजत तलब करे। अवश्य अल्लाह तआला उस दुआ को क़ुबूल करेगा अगर किसी गुनाह और क़ते रहम से मुताल्लिक़ नहीं है। यक़ीनन हज़रत की क़ब्र की जगह जन्नत के टुकड़ों में से एक टुकड़ा है। और जब भी कोई मोमिन उसकी ज़ियारत करता है परवरदिगार उसको आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर देता है और जन्नत में दाख़ल कर देता है।

(२) अल्लामा मजलिसी ने नक़्ल किया है शेख़ हुसैन बिन अब्दुस समद वालिदे शेख़ बहाई के हवाले से शेख़ अबू तय्यब हुसैन बिन अहमद फ़क़ीह राज़ी ने ज़िक्र किया है के जो व्यक्ति इमाम रज़ा (अ.स.) या दूसरे आइम्मा (अ.स.) की ज़ियारत करे और वहाँ नमाज़े जाफ़रे तय्यार अदा करे परवरदिगार हर रकत के बदले में उस व्यक्ति के बराबर सवाब देगा जो हज़ार हज और हज़ार उमरा कर चुका हो और उसको हर क़दम पर सौ हज, सौ उमरा और सौ ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब देगा और सौ नेकियां लिख कर सौ बुराईयों को महव कर देगा। नमाज़े जाफ़रे तय्यार का तरीक़ा आमाले रोज़े जुमा में गुज़र चुका है।

(३) मोहव्वल सजिस्तानी से रिवायत है के जब मामून ने इमाम रज़ा (अ.स.) को मदीने से खुरासान तलब किया तो आप क़ब्रे पैग़ंबर को विदा करने के लिए मस्जिद में दाख़िल हुऐ और मुसलसल क़ब्रे मुतहहर को रूख़सत करते रहे।

कभी बाहर निकल आते कभी वापस चले जाते। और हर बार आप के रोने की

आवाज़ बुलंद हो जाती। मैंने क़रीब जाकर सलाम अर्ज़ किया। आप ने सलाम का जवाब दिया। मैंने सफ़र की मुबारकबाद दी फ़रमाया मुझे देख लो के अब मैं अपने जद के जवार से जुदा हो रहा हूँ और उसी ग़ुर्बत में मेरा इन्तेक़ाल हो जाएगा और मैं हारून के पहलू में दफ़्न किया जाऊँगा। शेख़ यूसुफ़ बिन हाकिम शामी ने अद दोररून नज़ीम में फ़रमाया है के असहाबे इमाम रज़ा (अ.स.) की एक जमात ने रिवायत की है के आं हज़रत (अ.स.) ने फ़रमाया जब मैं मदीने से खुरासान आने लगा तो मैंने अपने अयाल को जमा कर के यह हुक्म दिया के मुझ पर गिरया करें ताके मैं उनकी आवाज़े गिरया सुन लूँ। और इसके बाद मैंने उनके दरमियान बारह हज़ार दीनार तक़सीम किये और मैंने कहा के मैं सफ़र से वापस नहीं आऊँगा। उसके बाद मैं अबू जाफ़र जवाद को लेकर मस्जिदे पैग़ंबर में गया और उनके हाथ को क़ब्रे अत्हर पर रख कर और क़ब्र से लिपटा कर चाहा के उन्हें पैग़ंबर की हिफ़ाज़त में दे दूँ और मैंने अपने तमाम वकीलों और ख़ादिमों को हुक्म दे दिया के उनकी बात को सुनें और उनकी इताअत करें और ख़बरदार मुख़ालेफ़त न करें के यह मेरे क़ायम मकाम हैं। सय्यद अब्दुल करीम बिन ताऊस ने रिवायत की है के जिस ज़माने में मामून ने हज़रत को मदीने से खुरासान तलब किया हज़रत मदीने से बसरे की तरफ़ चले और कूफ़ा नहीं गए और बसरे से कूफ़े के रास्ते बग़दाद की तरफ़ गए और वहाँ से क़ुम पहुँच गए।

अहले क़ुम ने आपका इस्तेक़बाल किया और आपस में इख़्तेलाफ़ किया के आपको कौन मेहमान बनाएगा। सबकी ख़्वाहिश थी के हज़रत उसी के घर पर वारिद हों। आपने फ़रमाया के मेरा ऊँट मामूर है। जहाँ बैठ जाएगा मैं वहीं ठहर जाऊँगा। चुनांचे आपका ऊँट एक दरवाज़े पर आकर बैठ गया जिसके साहेबे खाना ने रात को ख़्वाब में देखा था के इमाम रज़ा (अ.स.) कल मेहमान होनेवाले हैं। नतीजा यह हुआ के वह जगह अज़मत की मालिक हो गई और आजकल वहाँ मदरसा बना हुआ है।

शेख़ सदूक ने अपनी सनद से इसहाक बिन यह्या से नक़्ल किया है के इमामे रज़ा (अ.स.) निशापुर आए और चाहा के वहाँ से हरकत करें तो आपकी ख़िदमत में असहाबे हदीस जमा हुए और उन्होंने गुज़ारिश की के फ़रज़ंदे रसूल

आप यहाँ से जा रहे हैं लेहाज़ा हमारे लिए एक हदीस इर्शाद फ़रमाएं ताके इसतेफ़ादा करें। हज़रत अमारी में तशरीफ़ फ़र्मा थे। आप (अ.स.) ने सर बाहर निकाला और फ़रमाया:

मैंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार मूसा बिन जाफ़र (अ.स.) से और उन्होंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार जाफ़र बिन मोहम्मद (अ.स.) से और उन्होंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार मोहम्मद बिन अली (अ.स.) से और उन्होंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार अली बिन हुसैन (अ.स.) से और उन्होंने अपने वालिद हुसैन बिन अली (अ.स.) से और उन्हों ने अपने वालिद अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) से और उन्होंने पैग़ंबरे अक्रम (स.अ.व.व.) से और उन्होंने जिब्रईले अमीन (अ.स.) से सुना है के खुदावंदे आलम ने फ़रमाया है के ला इलाह इल्लल्लाह मेरा क़िला है। जो इस क़िले में दाख़िल होगा वह मेरे अज़ाब से महफ़ूज़ हो गया।

फिर नाक़े को आगे बढ़ाया उसके बाद बआवाज़े बुलंद फ़रमाया:

मगर उसकी शर्तें हैं और मैं उन शर्तों में से एक हूँ।

अबू सल्त कहते हैं इमाम रज़ा (अ.स.) राहे सुर्ख़ में पहुँचे। तो जिस समय मामून के यहाँ जा रहे थे लोगों ने अर्ज़ की के फरज़ंदे रसूल ज़ोहर का वक़्त हो गया है क्या नमाज़ नहीं पढ़ेंगे? आप ठहर गए और पानी तलब किया लोगों ने कहा के पानी तो नहीं है। आपने दस्ते मुबारक से ज़मीन को खोदा और वहाँ से एक चश्मा जारी हो गया जिस से सबने वुज़ू किया और उसके असरात आज तक बाक़ी हैं।

उसके बाद जब सनबाद में दाख़ल हुए तो एक पहाड़ से टेक लगा कर बैठ गए। तो जिसे लोग तराश कर देग वग़ैरह बनाते थे। फ़रमाया खुदावंदे आलम इस पहाड़ को मनफ़अत बख़्श बना दे और जो कुछ उसके बरतन में रखा जाए उसे बाबरकत बना दे।

फिर हुक्म दिया के इसी पहाड़ से आपके लिए देगें तय्यार की जाएं और आपका खाना उसी देग में पकाया जाए। जिसके बाद लोग देग तराशते रहे और बरकत हासिल करते रहे।

(४) मतलाउश शम्स के लेखक ने नक़्ल किया है के पच्चीस ज़िलहज १००६ हिजरी में शाह अब्बास अव्वल मशहदे मुक़द्दस में आया तो देखा के

हरमे मुतह्हर को अब्दुल मोमिन खाँ उज़बकी ने ग़ारत कर दिया है और सिवाए एक हुजरे के कुछ नहीं छोड़ा। सुना के वह अठ्ठाईस ज़िलहज को मशहद से हेरात गया और हेरात को फ़तह करने के बाद जब मशहद वापस आया तो एक माह क़याम कर के सहने मुक़द्दस की मरम्मत कराई। खुद्दामें हरमे मुबारक के साथ बेहतरीन बरताव किया और फिर इराक वापस आया और आखिर १००८ हिजरी में दोबारा मशहदे मुक़द्दस की ज़ियारत को गया और सर्दायां वहाँ गुज़ारी और हरम मुतह्हर की ख़िदमत करता रहा। रात को शमा का गुल झाडता था। उसके बारे में शेख़ बहाई ने फ़िल बदीह यह रूबाई लिखी थीं:

پیوستہ بود ملایك علیین　　پروانہ شمع روضہٴ خلد آیین
مقراض بہ احتیاط زن ای خادم　　ترسم ببری شپھر جبریل امین

(मलाएकए समावात मुसलसल शमअ-ए-रौज़-ए-मुबारक के परवाने बने हुए हैं। अय ख़ादिमें मौला कैंची को आहिस्ता चलाना कहीं ऐसा न हो के शह परे जिब्रईले अमीन क़ता हो जाएं)

और १००९ हिजरी में शाह अब्बास नज़र की बिना पर मश्हदे मुकद्दस की ज़ियारत के लिए हाज़र हुआ और २८ दिन में तवील मसाफ़त तय की। मशहदे मुक़द्दस पहुँचने के बाद सहने मुबारक को वुसअत दी और अलीशेर का ऐवान को जहाँ से दरगाहे रौज़ा-ए-मुबारक शुरू होता था और एक गोशे में था। और बदनुमा मालूम होता था। उसे दरमियान में क़रार देकर वह ऐवान जो उसके मुक़ाबले में दूसरी तरफ़ था, उसको भी बनाया और ग़रबी शहर से मशरक़ी दरवाज़े तक रास्ते बना दिए जो हर तरफ़ से उस सहेन तक पहुँचते हैं।

غلام شاہ مردان شاہ عباس　　شہ والا گھر خاقان امجد
بطوف مرقد شاہ خراسان　　پیادہ رفت با اخلاص بیحد
پیادہ رفت شد تاریخ رفتن　　ز اصفھان پیادہ تا بمشھد

शाहे मरदां का गुलाम शाह अब्बास जो वाला गौहर और ख़ाकाने बुज़ुर्ग है। वह तवाफ़े मरक़दे शाहे ख़ोरासान के लिए इख़लासे बेहद के साथ पैदल गया और पैदला ही जाना उसकी तारीख़ बन गया। यानी इसफ़हान प्यादा ता बा मशहद १००९।

फिर चश्मे और नहरें जारी कर के शहर तक पहुँचा दीं। एक नहर बीच ख़यावान से और एक बड़ा हौज़ रास्तए सहेन में बनाया जिसका पानी हौज़ से गुज़र कर मशरिकी सड़क की तरफ़ जाता था। और इस जदीद इमारत में मिरज़ा मोहम्मद रज़ा सदर अल किताब अली रज़ा अब्बासी और मोहम्मद रज़ा इमामी के हाथों से फ़तवे लिखे गए। और शाह अब्बास ही ने क़ुब्बा मुतह्हरा पर सोना चढ़ाया जैसा के क़ुब्बए मुतह्हरा की तहरीर में ज़ाहिर किया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مِنْ عَظَايِمِ تَوْفِيْقَاتِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ اَنْ

وَفَّقَ السُّلْطَانَ الْاَعْظَمِ مَوْلٰى مُلُوْكِ الْعَرَبِ وَ الْعَجَمِ صَاحِبُ

النَّسَبِ الطَّاهِرِ النَّبَوِيِّ وَ الْحَسَبِ الْبَاهِرِ الْعَلَوِيِّ تُرَابُ اَقْدَامِ

خُدَّامِ هٰذِهِ الْعَتَبَةِ الْمُطَهَّرَةِ اللَّاهُوْتِيَّةِ غُبَارُ نِعَالِ زُوَّارِ هٰذِهِ

الرَّوْضَةِ الْمُنَوَّرَةِ الْمَلَكُوْتِيَّةِ مُرَوِّجُ اٰثَارِ اَجْدَادِهِ الْمَعْصُوْمِيْنَ

السُّلْطَانُ بْنُ السُّلْطَانِ اَبُو الْمُظَفَّرِ شَاهْ عَبَّاسُ الْحُسَيْنِيِّ

اَلْمُوْسَوِیِّ الصَّفَوِیِّ بَهَادُرْخَانْ فَاسْتَسْعَدَ بِالْمَجِیْءِ مَا شِیًّا عَلٰی

قَدَمَیْهِ مِنْ دَارِ السَّلْطَنَةِ اِصْفَهَانَ اِلٰی زِیَارَةِ هٰذَا الْحَرَمِ الْاَشْرَفِ وَ

قَدْ تَشَرَّفَ بِزِیْنَةِ هٰذِهِ الْقُبَّةِ مِنْ خُلَّصِ مَالِهٖ فِیْ سَنَةِ اَلْفٍ وَ عَشَرَ وَ

تَمَّ فِیْ سَنَةِ اَلْفٍ وَ سِتَّ وَ عَشَرَ

(५) शेख़ तबरसी ने आलमुल वरा में बहुत से मोजिज़ात इमाम रज़ा (अ.स.) से नक़्ल करने के बाद लिखा है के शहादत के बाद से आज तक मशहदे मुक़द्दस से जिन बरकात करामात और अजाएब का मुशाहेदा किया जाता रहा है। और लोगों ने उसकी तसदीक़ की है और मुवाफ़िक़ सबने इसका इक़रार किया है वह हद व अहसा से बाहर हैं इसी मशहदे मुकद्दस में मादरज़ाद नाबीना को और मबरूस (कोड़ी) को शिफ़ा मिली है, दुआएं मुस्तेजाब हुई हैं हाजतें पूरी हुई हैं शदाएद ओ मसाएब बर तरफ़ हुए हैं और मैंने बहुत सी चीज़ों का खुद मुशाहेदा किया है जिसने किसी शको शुब्ह की गुंजाइश नहीं है।

शेख़ हुर्रे आमिली ने इस्बातुल होदात में शेख़ तबरसी के इस कलाम को नक़्ल करने के बाद फ़रमाया है के मोल्लिफ़े किताब मोहम्मद बिन अल हसन अल हुर कहता है के मैंने बहुत से मोजिज़ात को खुद देखा है और मुशाहेदा किया है जैसा के शेख़ तबरसी ने मुशाहेदा किया है और मुझे वैसे ही यक़ीन हासिल है जैसे उन्हें हासिल था। मैंने अपने ज़मानए मुजावेरते मशहदे मुक़द्दस में

जो तक़रीबन २६ साल है बहुत सी बातें इस सिलसिले में सुनी हैं जो हदे् तवातुर से बालातर हैं और मुझे याद नहीं है के मैंने इस जगह कोई दुआ की हो या खुदा से कोई हाजत तलब की हो और वह पूरी न हुई हो जिसकी तफ़सील की यहाँ गुंजाइश नहीं है। लेहाज़ा यही इजमाल काफ़ी है।

लेखक का कहना है के हर ज़माने में इस रौज़ए मुक़द्दसा से करामात का ज़हूर हुआ है के अब इसके बयान करने की ज़रूरत नहीं है। और हमने दूसरे वर्ग में आमाले शबे सत्तईस रजब में बाज़ चीज़ों की तरफ इशारा भी कर दिया है जो इस जगह के लिए मुनासिब है। लेकिन अब क्योंकि गुंजाइश नहीं है लेहाæजा इस मकाम पर बयान को ख़त्म कर रहा हूँ और जामी के चंद अशआर को हज़रत की शान में नक़्ल कर रहा हूँ।

سَلَامٌ عَلٰی اٰلِ طٰهٰ و یٰس سَلَامٌ عَلٰی آلِ خَیْرِ النَّبِیِّیْنَ

سَلَامٌ عَلٰی رَوْضَةٍ حَلَّ فِیْهَا اِمَامٌ یُبَاهِیْ بِهِ الْمُلْكُ وَ الدِّیْنُ

امام بحق شاه مطلق که آمد حریم درش قبله گاه سلاطین
वह इमामे बरहक शाहे मुतलक़ जिसकी बारगाह क़िबला गाहे सलातीन है

شهِ کاخ عرفان گل شاخ احسان در درج امکان مه برج تمکین
वह काख़े इरफ़ान का बादशाह और शाख़े एहसान का फूल और सदूक़े इमकान का गौहर और बुरजे तमकीन का चांद है।

علي بن موسیٰ الرضا خدایش رضا شد لقب چون رضا بودش آئین
अली बिन मूसा रज़ा के जिनका लक़ब रज़ा हुआ। इस लिए के रज़ा ही उनका आईन था।

زفضل و شرف بیني اورا جهاني اگر نبودت تیره چشم جهان نه بین
फ़ज़लो शरफ़ में वह एक आलिम हैं। अगर तुम्हारी आँखें अंधी न हों।

پي عطر روبند حورانِ جنّت غبار درش را بگیسوي مشگین

को अपने मुसुए मिशकीन में लगाती हैं। हूरानेजन्नतअपनेकोमोअत्तरकरनेकेलिएउनकेग़ुबारेदर।

برود امن از هر چه جز اوست برچين اگر خواهي آري بكف دامن او

तुम जाकर हर चीज़ से अपने दामन छुड़ा लो। अगर चाहते हो के उनका दामन हाथ में आ जाए।

इस ज़माने में हरमे इमाम रज़ा (अ.स.) में काफ़ी वुसअतें हो चुकी हैं और मुसलसल तामीरात का सिलसिला जारी है और हर साल लाखो æजाएरीन ज़ियारत का शरफ़ हासिल कर के आज भी करामाते रज़विया का मुशाहिदा करते हैं। - मुतरजिम

वर्ग - १०

सामर्राह के इमामों की ज़ियारत और आमाले सरदाबे मुतह्हर

इस सिलसिले में दो मक़ामात हैं।

इमाम अली नक़ी (अ.स.) और इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की ज़ियारत।

इन्शाअल्लाह जब सामर्राह की सर ज़मीन पर पहोंचे और दो मासूमों की ज़ियारत करना चाहें तो पहले गुस्ल करें। उसके बाद आदाबे दुख़ूले हरमे मुबारक को पेशे नज़र रखते हुए आहिस्ता आहिस्ता क़दम आगे बढ़ाएं। हरमे मुतह्हर के पास पहुँच कर उमूमी इज़्ने दुख़ूल पढ़े जो सही तरीन ज़ियारत है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَلِيَّيِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا حُجَّتَيِ اللهِ

सलाम आप दोनो पर ऐ अल्लाह के वली, सलाम आप दोनो पार ऐ हुज्जते खुदा, सलाम आप दोनो पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا نُوْرَيِ اللهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ السَّلَامُ

ज़मीन की तारीकियों मे नूरे खुदा, सलाम आप दोनो पर ऐ वो जिनके बारे मे खुदा ने इज़हारे राज़ किया।

عَلَيْكُمَا يَا مَنْ بَدَا اللهِ فِيْ شَأْنِكُمَا اَتَيْتُكُمَا زَآئِرًا عَارِفًا بِحَقِّكُمَا

मै आपके पास ज़ियारत के लिए आया हूँ आपके हक़ को पहचानते हुए आप के दुश्मनो का दुश्मन और

مُعَادِيًا لِاَعْدَآئِكُمَا مُوَالِيًا لِاَوْلِيَآئِكُمَا مُؤْمِنًا بِمَا اٰمَنْتُمَا بِهٖ

आप के दोस्तों का दोस्त बन कर जिस पर आप ईमान लाए उस पर ईमान लाते हुए जिस का आप ने

كَافِرًا بِمَا كَفَرْتُمَا بِهٖ مُحَقِّقًا لِّمَا حَقَّقْتُمَا مُبْطِلًا لِّمَا اَبْطَلْتُمَا اَسْئَلُ

इनकार किया उसका करते हुए जो आप के नज़दीक मोहक़्क़ाक है उसे हम भी मोहक़्क़ाक समझते हैं

اللهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمَا اَنْ يَّجْعَلَ حَظِّيْ مِنْ زِيَارَتِكُمَا الصَّلَاةَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

और जो आपके नज़दीक़ बातिल है उसे बातिल समझते हुए मै अपने और आप के रब खुदा से सवाल

وَّاٰلِهٖ وَاَنْ يَّرْزُقَنِيْ مُرَافَقَتَكُمَا فِي الْجِنَانِ مَعَ اٰبَآئِكُمَا الصَّالِحِيْنَ

करता हूँ के उस ज़ियारत के सवाब के लिए मोहम्मद और उनकी आल पर दुरूद क़रार दे और मुझको

وَ اَسْئَلُهٗ اَنْ يُّعْتِقَ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ وَ يَرْزُقَنِيْ شَفَاعَتَكُمَا وَ

आप की रिफ़ाक़त जन्नत मे मए आप के आबा सलेहान के अता करे और मै उस से सवाल करता हूँ के

مُصَاحَبَتَكُمَا وَ يُعَرِّفَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمَا وَ لَا يَسْلُبَنِيْ حُبَّكُمَا وَ

जहन्नम से गुलुख़लासी कर दे और मुझको आपकी शिफ़ाअत और मुसाहेबत दे और मेरे और आप के

حُبَّ اٰبَآئِكُمَا الصَّالِحِيْنَ وَ اَنْ لَّا يَجْعَلَهٗ اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ

दरमियान दोस्ती क़रार दे दे और मुझ से आप की मोहब्बत और आप के आबा सालेहीन की मोहब्बत को

زِيَارَتِكُمَا وَ يَحْشُرَنِيْ مَعَكُمَا فِي الْجَنَّةِ بِرَحْمَتِهٖ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ

सल्ब न करे और उसको आप की ज़ियारत का आख़री अहेद न क़रार दे और आपके साथ मुझको जन्नत

حُبَّهُمَا وَ تَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهِمَا اَللّٰهُمَّ الْعَنْ ظَالِمِيْٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ حَقَّهُمْ

मे अपनी रहमत के साथ महशूर करे। खुदाया मुझे उन दोनों की मोहब्बत अता कर और मुझे उनकी

وَ انْتَقِمْ مِنْهُمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْاَوَّلِيْنَ مِنْهُمْ وَ الْاٰخِرِيْنَ وَ

मिल्लत पर मौत दे। खुदाया आले मोहम्मद के हुक़ूक़ के ज़ालीमो पर लानतकर और उनसे इनतेक़ाम

ضَاعِفْ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ وَ ابْلِغْ بِهِمْ وَ بِاَشْيَاعِهِمْ وَ مُحِبِّيْهِمْ وَ

ले। खुदाया उन मे से जो पहले गुज़रे उनपर भी लानत कर और जो आख़िरीन मे हैं उनके अज़ाब मे

مُتَّبِعِيْهِمْ اَسْفَلَ دَرَكٍ مِّنَ الْجَحِيْمِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ज़्यादती कर और उन्हें उन के मानने वालों और दोस्तो और इत्त्बा करनेवालों के साथ जहन्नम के पस्त

اَللّٰهُمَّ عَجِّلْ فَرَجَ وَلِيِّكَ وَ ابْنِ وَلِيِّكَ وَ اجْعَلْ فَرَجَنَا مَعَ

तरीन तबक़े मे डाल दे। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। खुदाया अपने वली और फ़रज़ंद वलीके ज़ुहूर

فَرَجِهِمْ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

मे जल्दी कर और उनकी कुशादगी के साथ हमारे लिए कुशादगी क़रार दे ऐ सबसे ज़्यादा रहेमवाले।

उसके बाद जहां तक मुम्किन हो अपने वालेदैन और मोमिनीन के लिए दुआ करे।

अगर हो दो रकत नमाज़ अदा कर सके तो वह भी करे और अगर मुम्किन न हो तो मस्जिद में जाकर दो रकत नमाज़ अदा करे और जिस क़द्र चाहे दुआ करे इन्शाअल्लाह क़ुबूल होगी।

यह मस्जिद उन हज़रात के मकान के पास है और यह दोनो हज़रात वहीं नमाज़ अदा करते थे। लेखक का बयान है के यह ज़ियारत मुताबिके ज़ियारतें कामेलुज़ ज़ियारात है और शेख़ मोहम्मद बिन मशहदी, शेख़ मुफ़ीद, शहीद ने भी मज़ार में इस ज़ियारत को कुछ इख़्तेलाफ़ के साथ नक़्ल किया है।

فِي الْجَنَّةِ بِرَحْمَةِ

फ़रमाया के इसके बाद आगे बढ़कर अपने को क़ब्र पर गिरा दें और दोनों रूख़सारों को क़ब्र पर रख कर बोसा दें और इसके बाद सर उठाकर यह कहें:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حُبَّهُمْ وَ تَوَفَّنِیْ عَلٰی مِلَّتِهِمْ...

उसके बाद उन हज़रात ने फ़रमाया है के बालाए सर चार रकत नमाज़ अदा करे और इस नमाज़े ज़ियारत के बाद जिस क़द्र नमाज़ पढ़ना चाहे पढ़ सकता है।

वाज़ेह रहे के यह दोनों बुज़ुर्ग अपने ही घर में दफ़्न हुए हैं और उसमें एक दरावाज़ा था जिसको आप चाहने वालों के लिए खोल दिया करते थे और वह लोग क़ब्र के पास जाकर ज़ियारत करते थे और कभी बंद कर देते थे। तो जाली के पास क़ब्र के सामने खड़े हो कर ज़ियारत करते थे।

इस रिवायत के शुरू में यह है के गुस्ल करे और क़ब्र के पास पहुँच जाए अगर मुम्किन हो और अगर नहीं तो क़ब्र के सामने जाली के पास खड़े हो कर इशारा कर के सलाम करे और इसी तरह ज़ाएर नमाज़े ज़ियारत को भी मस्जिद में पढ़े।

उसके बाद जब चाहने वालों की हिम्मत से वह घर ख़त्म कर दिया गया और उसकी जगह पर क़ुब्बा व हरम और रवाक़ व एवान बन गया तो वह मस्जिद हरम में दाख़ल हो गई और आज मारूफ़ यह है के वो एवान मुत्तसील को सहने पुश्ते सरे इमाम है वह मुत्तसिल है इसी मस्जिद के रवाक़ से।

बहर हाल ज़व्वार इस एतेबार से मुत्मईन हो गए - बहर हाल अब दोनों बुज़ुर्गों की ज़ियारते मखमूसा और मुश्तरिक भी है जो मज़ार की किताबों में नक़्ल की गई है। अगर कोई देखना चाहे तो उसके नुसख़े बहुत हैं। और अगर किसी ज़ाएर के लिए मुम्किन हो तो मुनासिब है के ज़ियारते जामेआ कबीरा पढ़े जो इसके बाद नक़्ल की जाएगी। के ऐसे बला॰rग कलेमात का सुदूर है जिससे तमाम मरातिबे बंदगी व तज़र्रे का इज़हार और अज़मत व जलालते मासूम का इक़रार है इसी इमामे हादी से हुआ है।

सय्यद इब्ने ताऊस ने मिसबाहुज़ ज़ाएर में दोनों मासूमों में हर एक के लिए ज़ियारत में सलवात नक़्ल की है। और इसके बाद दुआएं भी नक़्ल की हैं जिनको यहाँ नक़्ल किया जा रहा है।

अगरचे लंबी हैं मगर इसके फ़वाएद बहुत हैं।

फ़रमाते हैं के सामर्राह पहुँचने के बाद गुस्ल करो और ग़ुस्ले ज़ियारत और पाकीज़ा लिबास पहनने के बाद आहिस्ता आहिस्ता चल कर हरमे मुबारक के दर पर पहुँचो और इजाज़त तलब करने के लिए कहो।

اَ اَدْخُلُ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ؟ اَ اَدْخُلُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ؟ اَ اَدْخُلُ يَا فَاطِمَةُ

क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अल्लाह के नबी क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अमीरल मोमिनीन (अ), क्या

الزَّهْرَآءُ سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ الْحَسَنَ بْنَ

मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ फ़ातेमा ज़हरा (स) आलमीन की औरतें की सरदार। क्या मै दाख़िल हो जाऊँ

عَلِيٍّ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ الْحُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ عَلِيَّ بْنَ

ऐ मौला हसन बिन अली (अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मौला हुसैन (अ) बिन अली (अ), क्या मै

الْحُسَيْنِ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَايَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ؟ اَ اَدْخُلُ يَآ مَوْلَايَ

दाख़िल हो जाऊँ ऐ मौला अली बिन हुसैन (अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला मोहम्मद बिन

جَعْفَرَ بْنَ مُحَمَّدٍ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ؟ اَ اَدْخُلُ يَا

अली (अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मौला जाफ़र बिन मोहम्मद (अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ

مَوْلَایَ عَلِيَّ بْنَ مُوْسٰى؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ؟ اَ اَدْخُلُ يَا

ऐ मौला मूसा बिन जाफ़र (अ), क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला अली बिन मूसा (अ), क्या मै

مَوْلَایَ يَا اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَوْلَایَ اَبَا مُحَمَّدٍ

दाख़ल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला मोहम्मद बिन अली (अ), क्या मै दाख़ल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला अबुल

الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ؟ اَ اَدْخُلُ يَا مَلَآئِكَةَ اللهِ الْمُوَكِّلِيْنَ بِهٰذَا الْحَرَمِ

हसन अली बिन मोहम्मद (अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ मेरे मौला अबू मोहम्मद हसन बिन अली

الشَّرِيْفِ.

(अ), क्या मै दाख़िल हो जाऊँ ऐ अल्लाह के मलाएका जो मोअय्यन हैं इस हरमे शरीफ़ के लिए।

उसके बाद दाख़ल हो और दाख़ल होते समय दाहिने पैर को आगे बढ़ाओ। ज़रीए इमामे अली हादी के पास पहुँच कर पुश्त ब क़िबला खड़े हो कर सौ बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहो और उसके बाद यूँ ज़ियारत पढ़ो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ الزَّكِيَّ الرَّاشِدَ النُّوْرَ

सलाम आप पर ऐ अबुल हसन अली बिन मोहम्मद ज़की व हिदायत करने वाले दरख़शंदा नूरे

الثَّاقِبَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

खुदा (और अल्लाह की रहमत व बरकात हो), सलाम आप पर ऐ बरगुज़ीदा खुदा, सलाम आप

عَلَيْكَ يَا سِرَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبْلَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اٰلَ

पर ऐ राज़े खुदा सलाम आप पर ऐ रिश्तए मोहकमे खुदा। सलाम आपपर ऐ आले खुदा। सलाम

اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفْوَةَ اللهِ

आप पर ऐ खुदा के मुनताख़िब। सलाम आप पर ऐ बन्दए ख़ास। सलाम आप पर ऐ खुदा के

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْنَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَقَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

अमीन। सलाम आप पर ऐ हक़े खुदा। सलाम आप पर ऐ हबीब खुदा। सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ الْاَنْوَارِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

नूरों के नूर। सलाम आप पर ऐ नेकों की ज़ीनत। सलाम आप पर ऐ ज़ुरिrयते खुबाने आलम।

يَا زَيْنَ الْاَبْرَارِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَلِيْلَ الْاَخْيَارِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ उन्सुर पाकाने जहाँ। सलाम आप पर ऐ हुज्ज़ते खुदा। सलाम आप पर ऐ

عُنْصُرَ الْاَطْهَارِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ الرَّحْمٰنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

रूकने ईमान। सलाम आप पर ऐ मोमिनीन के मौला। सलाम आप पर ऐ सलेहीन के वली।

رُكْنَ الْاِيْمَانِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ हिदायत की निशानी। सलाम आप पर ऐ कुद्स व तकवा के हलीफ़। सलाम

وَلِيَّ الصَّالِحِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلَمَ الْهُدٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ दीन के सुतून। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे ख़ातमुल मुरसलीन (स)। सलाम आपपर

حَلِيْفَ التُّقٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمُوْدَ الدِّيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ

ऐ फ़रज़ंदे सय्यदुल वसीईन। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे फ़तेमा ज़हरा (स) आलमीन की औरतों

خَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ

की सरदार। सलाम आप पर ऐ अमानतदार और वादा वफ़ा करनेवाले। सलाम आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا ابْنَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

पेशवा व पसंदीदा। सलाम आप पर ऐ ज़ाहिद व मुत्तक़ी। सलाम हो आप पर ऐ तमाम मख़लूक

الْاَمِيْنُ الْوَفِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَلَمُ الرَّضِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

पर खुदा की हुज्जत। सलाम आप पर ऐ क़ुआर्न की तिलावत करनेवाले। सलाम आप पर ऐ

اَيُّهَا الزَّاهِدُ التَّقِيُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْحُجَّةُ عَلَى الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ

हलाल को हराम से अलग करने वाले। सलाम आप पर ऐ वलीए नासेह। सलाम आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا التَّالِيْ لِلْقُرْاٰنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُبِيْنُ

ऐ तरा०rके वाजेह। सलाम आप पर ऐ दरख़शंदा सितारे। मै गवाही देता हूँ ऐ मेरे मौला ऐ

لِلْحَلَالِ مِنَ الْحَرَامِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَلِيُّ النَّاصِحُ اَلسَّلَامُ

अबुल हसन (अ) आप अल्लाह की हुज्जत हैं उसकी मख़लूक़ पर और उसके ख़लीफ़ा हैं उसकी

عَلَيْكَ اَيُّهَا الطَّرِيْقُ الْوَاضِحُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّجْمُ اللَّائِحُ

मख़लूक़ पर और उसके अमीन हैं उसके शहरों मे और उसके गवाह हैं उसके बन्दों पर। मै

اَشْهَدُ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا الْحَسَنِ اَنَّكَ حُجَّةُ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ وَ خَلِيْفَتُهٗ فِيْ

गवाही देता हूँ के आप कलमए तक़वा हैं और हिदायत का दरवाज़ा, रिश्तए मोहकम और

بَرِيَّتِهٖ وَ اَمِيْنُهٗ فِيْ بِلَادِهٖ وَ شَاهِدُهٗ عَلٰى عِبَادِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ كَلِمَةُ

ज़मीन पर रहनेवालों के लिए और ज़मीनके नीचेवालों के लिए खुदाकी हुज्जत हैं और मै गवाही

التَّقْوٰى وَ بَابُ الْهُدٰى وَ الْعُرْوَةُ الْوُثْقٰى وَ الْحُجَّةُ عَلٰى مَنْ فَوْقَ

देता हूँ के आप गुनाहों से पाक हैं। ऐबों से बरी हैं और करामते इलाही से मख़सूस और हुज्जते

الْاَرْضِ وَ مَنْ تَحْتَ الثَّرٰى وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ الْمُطَهَّرُ مِنَ الذُّنُوْبِ

खुदा का मरकज़ हैं और आपको कलेम तुल्लह अता किया गया है। आप वो रूकन हैं जिसकी

الْمُبَرَّءُ مِنَ الْعُيُوْبِ وَ الْمُخْتَصُّ بِكَرَامَةِ اللّٰهِ وَ الْمَحْبُوْءُ بِحُجَّةِ اللّٰهِ وَ

तरफ़ बन्दे पनाह लेते हैं और जिसके जरिए शहर ज़िन्दा किए जाते हैं और मै गवाही देता ह@ू

الْمَوْهُوْبُ لَهٗ كَلِمَةُ اللّٰهِ وَ الرُّكْنُ الَّذِيْ يَلْجَاُ اِلَيْهِ الْعِبَادُ وَ تَحْيٰى بِهِ

ऐ मेरे मौला के मै आप पर और आपके आबा व फ़रज़ंदाने पाकीज़ा पर यक़ीन रखता हूँ और

الْبِلَادُ وَ اَشْهَدُ يَا مَوْلَايَ اَنِّيْ بِكَ وَ بِاٰبَآئِكَ وَ اَبْنَآئِكَ مُوْقِنٌ مُّقِرٌّ وَّ

इक़रार करता हूँ और आप का तै हूँ ज़ात मे और अपने दीन की शरीयत मे और ख़ातमा अमल

لَكُمْ تَابِعٌ فِيْ ذَاتِ نَفْسِيْ وَ شَرَائِعِ دِيْنِيْ وَ خَاتِمَةِ عَمَلِيْ وَ مُنْقَلَبِيْ وَ

मे, हर हरकत मे और सकून मे और मै उसका दोस्त हूँ जो आपका दोस्त है और उसका दुश्मन

مَثْوَایَ وَ اَنِّیْ وَلِیٌّ لِّمَنْ وَالَاکُمْ وَ عَدُوٌّ لِّمَنْ عَادَاکُمْ مُؤْمِنٌ بِسِرِّکُمْ

हूँ जो आपका दुश्मन है आपके राज़ और ज़हीर पर ईमान रखने वाला और आपके अव्वल

وَعَلَانِیَتِکُمْ وَاَوَّلِکُمْ وَاٰخِرِکُمْ بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ وَ

और आख़िर पर ईमान रखनेवाला हूँ। मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों। सलाम आपपर और

رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ.

खुदा की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद ज़रीह को बोसा दें और दोनों रूख़सारों को ज़रीह पर रख दें और यूँ कहें:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ صَلِّ عَلٰی حُجَّتِکَ الْوَفِیِّ وَ وَلِیِّکَ

खुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और दुरूद भेज अपनी हुज्जते बावफ़ा पर और अपने वलीए

الزَّکِیِّ وَ اَمِیْنِکَ الْمُرْتَضٰی وَ صَفِیِّکَ الْهَادِیْ وَ صِرَاطِکَ

पकीज़ा पर और अपने पसंदीदा अमीन और अपने हादीए बरगुज़ीदा पर और अपने सेराते मुस्तक़ीम पर और

الْمُسْتَقِیْمِ وَ الْجَادَّةِ الْعُظْمٰی وَ الطَّرِیْقَةِ الْوُسْطٰی وَ نُوْرِ قُلُوْبِ

जादए अज़ीम पर और तरीक़ए वसी और वस्ता और क़ुलूबे मोमिनीन के नूर, मुत्तक़ीयों के वली और हम नशीन

الْمُؤْمِنِیْنَ وَ وَلِیِّ الْمُتَّقِیْنَ وَ صَاحِبِ الْمُخْلِصِیْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی

मुख़लेसाने खुदा पर खुदाया दुरूद नाज़ल कर हमारे सरदार मोहम्मद और उन के अहलेबैत पर और दुरूद भेज

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ الرَّاشِدِ

अली बिन मोहम्मद पर जो राहनुमा हैं और गुनाह से मासूम और नक़्स व ऐबसे पाक व मुनज़्ज़ और मख़लूक

الْمَعْصُوْمِ مِنَ الزَّلَلِ وَ الطَّاهِرِ مِنَ الْخَلَلِ وَ الْمُنْقَطِعِ اِلَيْكَ

से अलग हो कर तेरी जानिब हैं तमाम आरज़ू के साथ जो मुख़तलिफ़ तरह के फ़ितना मे घिरे हैं और आज़माइश

بِالْاَمَلِ الْمَبْلُوِّ بِالْفِتَنِ وَ الْمُخْتَبَرِ بِالْمِحَنِ وَ الْمُمْتَحَنِ بِحُسْنِ

करदा हैं तकला०rफों के साथ और जो इम्तेहान शुदा हैं बेहतरीन ज़हमात के साथ और मुसीबतों पर सब्र के

الْبَلْوٰى وَ صَبْرِ الشَّكْوٰى مُرْشِدِ عِبَادِكَ وَ بَرَكَةِ بِلَادِكَ وَ مَحَلِّ

साथ वो तेरे बन्दा के राहनुमा हैं और तेरे शहरों की बरकत तेरी रहमत का महेल और तेरी हिकमत के अमानत

رَحْمَتِكَ وَ مُسْتَوْدَعِ حِكْمَتِكَ وَ الْقَائِدِ اِلٰى جَنَّتِكَ الْعَالِمِ فِيْ

दार हैं। और तेरी जन्नत की तरफ़ ले जानेवाले हैं जो तेरी मख़लूक़ मे जाननेवाले और तेरी मख़लूक़ के हादी

بَرِيَّتِكَ وَ الْهَادِيْ فِيْ خَلِيْقَتِكَ الَّذِيْ ارْتَضَيْتَهٗ وَ انْتَجَبْتَهٗ وَ

हैं जिनको तूने पसंद किया है और मुन्ताख़िब किया है और इख़तेयार किया है अपने रसूल के मकाम के लिए

اخْتَرْتَهٗ لِمَقَامِ رَسُوْلِكَ فِيْ اُمَّتِهٖ وَ اَلْزَمْتَهٗ حِفْظَ شَرِيْعَتِهٖ فَاسْتَقَلَّ

उसकी उम्मत मे और जिनको तूने उनकी शरीयत की हिफ़ाज़त का ज़िम्मादार क़रार दिया है तो उन्होंने तनो

بِاَعْبَآءِ الْوَصِيَّةِ نَاهِضًا بِهَا وَ مُضْطَلِعًا بِحَمْلِهَا لَمْ يَعْثُرْ فِيْ مُشْكِلٍ

तन्हा वसीयत का बार उठाते हुए क़याम किया और उस बारे सनगीन को मुकम्मल तौर पर उठा लिया न किसी

وَّ لَا هَفَا فِيْ مُعْضِلٍ بَلْ كَشَفَ الْغُمَّةَ وَ سَدَّ الْفُرْجَةَ وَ اَدَّى

मुश्किल मे लगिज़श खाई और न सख़तगी मे राह से हटे बलके हर ग़ाम और मुश्किल को वाज़ेह कर दिया दूर

الْمُفْتَرَضَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا اَقْرَرْتَ نَاظِرَ نَبِيِّكَ بِهٖ فَرَقِّهٖ دَرَجَتَهٗ وَ

किया और राहे ख़लल को बंद कर दिया और फ़रा०rजे को अदा कर दिया। खुदाया तूने उन्हें जिस तरह खुनकीए

اَجْزِلْ لَدَيْكَ مَثُوْبَتَهٗ وَ صَلِّ عَلَيْهِ وَ بَلِّغْهُ مِنَّا تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا وَّ

चश्मे रसूल क़रार दिया है अब उनके दरजे को बुलंद कर और बुज़ुगतरीन सवाब उनको अपने पाससे अता कर

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ فِيْ مُوَالَاتِهٖ فَضْلًا وَّ اِحْسَانًا وَّ مَغْفِرَةً وَّ رِضْوَانًا اِنَّكَ

और उनपर दुरूद भेज और हमारी तरफ़ से सलाम व तहय्यत पहुँचा दे और हमको अपने पाससे उनकी दोस्ती

ذُوْ الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ.

के तुफ़ैल मे एहसान व फ़ज़्ल और बख़शिश और रिज़वान अता फ़र्मा दे बेशक तू अज़ीमतरीन फ़ज़्लवाला है।

उसके बाद नमाज़े ज़ियारत अदा करे और सलाम के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْقُدْرَةِ الْجَامِعَةِ وَ الرَّحْمَةِ الْوَاسِعَةِ وَ الْمِنَنِ

ऐ खुदा जामा क़ुदरतवाले और रहमत वासेवाले और मुसलसल एहसानवाले और मुतवातिर नेमातों के अता

الْمُتَتَابِعَةِ وَ الْاٰلَآءِ الْمُتَوَاتِرَةِ وَ الْاَيَادِى الْجَلِيْلَةِ وَ الْمَوَاهِبِ

करनेवाले अज़ीम ईनामवाले और ज़्यादा अता करनेवाले दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जो सादिक़

اَلْجَزِيْلَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ الصَّادِقِيْنَ وَ اَعْطِنِىْ سُؤْلِىْ وَ

हैं और तू मेरी हाजत रवाई कर मेरे मुत्तिफ़क़ मामले को जमा करदे मेरे परागंदा हालात को दुरूस्त कर दे मेरे

اجْمَعْ شَمْلِىْ وَلُمَّ شَعَثِىْ وَ زَكِّ عَمَلِىْ وَ لَا تُزِغْ قَلْبِىْ بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنِىْ وَ

अमल को पाकीज़ा कर दे और मेरे दिल मे हिदायत के बाद कजी न आने दे और मेरे क़दम मे लगिज़श न आने

لَا تُزِلَّ قَدَمِىْ وَ لَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةَ عَيْنٍ اَبَدًا وَّ لَا تُخَيِّبْ

दे। मुझे मेरे नफ़्स पर चश्म जदन के लिए भी न छोड़ना और मेरी शमा से मुझे पोशिदा कर और मेरे ऐब को

طَمَعِىْ وَ لَا تُبْدِ عَوْرَتِىْ وَ لَا تَهْتِكْ سِتْرِىْ وَ لَا تُوْحِشْنِىْ وَ لَا تُؤْيِسْنِىْ وَ

ज़ाहिर न कर और मेरी बुराई से पर्दा न उठा और मुझको वैहशत मे न रख और मुझको मायूस न कर और मेरे

كُنْ بِىْ رَؤُفًا رَحِيْمًا وَ اهْدِنِىْ وَ زَكِّنِىْ وَ طَهِّرْنِىْ وَ صَفِّنِىْ وَ اصْطَفِنِىْ وَ

लिए मेहेरबान हो जा और मेरी हिदायत कर और मुझको पाकीज़ा कर और पाक कर और मुझको साफ़ सुथरा

خَلِّصْنِىْ وَ اسْتَخْلِصْنِىْ وَ اصْنَعْنِىْ وَ اصْطَنِعْنِىْ وَ قَرِّبْنِىْ اِلَيْكَ وَ لَا

बना मुझको मुनताख़िब कर मुझे ख़ालिस बना और मुझको कामिल कर और मुझे नेक बना और मुझको अपने

تُبَاعِدْنِىْ مِنْكَ وَ الْطُفْ بِىْ وَ لَا تَجْفُنِىْ وَ اَكْرِمْنِىْ وَ لَا تُهِنِّىْ وَ مَآ

कामों के लिए बना ओर मुझको अपने से क़रीब कर ले और मुझको अपनेसे दूर न कर मुझ पर मेहेरबानी कर

اَسْئَلُكَ فَلَا تَحْرِمْنِىْ وَ مَا لَآ اَسْئَلُكَ فَاجْمَعْهُ لِىْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

मुझ पर जफ़ा न रवा रख और मुझको इज़्ज़त दे और जलील न कर। और जिसका मै सवाल करता हूँ उससे

الرَّاحِمِيْنَ وَ اَسْئَلُكَ بِحُرْمَةِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَ بِحُرْمَةِ نَبِيِّكَ

महरूम न कर और जिसका सवाल नही करता हूँ उसको भी अता कर अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम

مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ بِحُرْمَةِ اَهْلِ بَيْتِ رَسُوْلِكَ اَمِيْرِ

करनेवाले और मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरी करीम ज़ात की हुरमत के वास्ते से और तेरे नबी मोहम्मद (स) के

الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيٍّ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ عَلِيٍّ وَّ مُحَمَّدٍ وَّ جَعْفَرٍ وَّ مُوْسٰى

वास्ते से और तेरे रसूल के अहलेबैत (अ) की हुरमत के वास्ते से जो अमीरूल मोमिनीन (अ) और हसन और

وَ عَلِيٍّ وَّ مُحَمَّدٍ وَّ عَلِيٍّ وَّ الْحَسَنِ وَ الْخَلَفِ الْبَاقِيْ صَلَوَاتُكَ وَبَرَكَاتُكَ

हुसैन (अ) और अली (अ), मोहम्मद (अ) और जाफ़र और मूसा (अ), और अली (अ) और मोहम्मद और

عَلَيْهِمْ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَ تُعَجِّلَ فَرَجَ قَآئِمِهِمْ بِاَمْرِكَ وَ

अली और हसन और ख़लफे बाक़ी (इमाम अर्स) हैं (तेरा दुरूद और तेरी बरकात हो उनपर) के तू उन पर रहमत

تَنْصُرَهٗ وَ تَنْتَصِرَ بِهٖ لِدِيْنِكَ وَ تَجْعَلَنِيْ فِيْ جُمْلَةِ النَّاجِيْنَ بِهٖ وَ

नाज़ल फ़रमाए ओर उनके क़ाएम के ज़ुहूर मे अपने हुकुम से जल्दी करे ओर उनकी मदद करे और उनके ज़रिए

الْمُخْلِصِيْنَ فِيْ طَاعَتِهٖ وَ اَسْئَلُكَ بِحَقِّهِمْ لَمَّا اسْتَجَبْتَ لِيْ دَعْوَتِيْ

अपने दीन की मदद करे और मुझको नजात पानेवालों और इताअत मे खुलूस रखनेवालों मे क़रार दे और मै

وَ قَضَيْتَ لِيْ حَاجَتِيْ وَ اَعْطَيْتَنِيْ سُؤْلِيْ وَ كَفَيْتَنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ مِنْ اَمْرِ

तुझसे स्वाल करता हूँ उनके हक़के ज़रिए के मेरी दुआ को क़ुबूल कर और मेरी हाजत को पूरा कर और मेरे

دُنْيَایَ وَ اٰخِرَتِیْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ یَا نُوْرُ یَا بُرْهَانُ یَا مُنِیْرُ یَا مُبِیْنُ یَا

सवाल को अता कर और मेरे लिए काफ़ी होजा जो मेरे अहेम उमूर मे दुनिया व आख़ेरत मे ऐ सबसे ज़्यादा

رَبِّ اكْفِنِیْ شَرَّ الشُّرُوْرِ وَ اٰفَاتِ الدُّهُوْرِ وَ اَسْئَلُكَ النَّجَاةَ یَوْمَ

रहमकरने वाले, ऐ रौशनी, ऐ दलील ऐ रौशनी देनेवाले, ऐ ज़ाहिर करनेवाले, ऐ मेरे रब, मेरे लिए किफ़ालत फ़र्मा

یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ.

शरीरों के शर और ज़माने की आफ़तों से और मै सवाल करता हूँ तुझसे नजात का जिस दिन सूर फूंका जाए।

उसके बाद जो चाहे दुआ करे और बार बार इनको दोहराए:

یَا عُدَّتِیْ عِنْدَ الْعَدَدِ وَ یَا رَجَآئِیْ وَ الْمُعْتَمَدُ وَ یَا كَهْفِیْ وَ السَّنَدُ وَ یَا

ऐ खुदा जो मेरा जाख़िरा है जब बन्दे अपने जाख़िरे को शुमार करें और ऐ मेरी उम्मीद और एतेमाद

وَاحِدُ یَا اَحَدُ وَ یَا قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ مَنْ خَلَقْتَهٗ

गाह और ऐ मेरी पनाह और निगेहबान ऐ एक ऐ अकेले ऐ वो के तूने कहा है क़ुलहो अल्लाहो अहद, मै

مِنْ خَلْقِكَ وَ لَمْ تَجْعَلْ فِیْ خَلْقِكَ مِثْلَهُمْ اَحَدًا صَلِّ عَلٰی جَمَاعَتِهِمْ

तुझसे सवाल करता हूँ खुदाया उसके हक़ के वास्ते से जिस को तूने पैदा किया है और नही क़रार दिया

وَ افْعَلْ بِیْ كَذَا وَ كَذَا...

किसी को अपनी मख़लूक़ मे उनके मिस्ल तू दुरूद भेज उन सबपर और मेरे लिए ऐसा ऐसा कर।

इसके बाद अपनी हाजतों को बयान करे।
उन्हीं हज़रत से रिवायत है के मैंने खुदावंदे आलम से यह दुआ की है के जो इस दुआ को मेरे बाद मेरे रौज़े में पढ़े उसे महरूम और ना उम्मीद न करना।

हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ) की ज़ियारत

शेख़ ने सनदे मोतबर के साथ खुद आं हज़रत (अ) से रिवायत की है के मेरी क़ब्र सामर्राह में दोनो तरफ़ के लोगों के लिए बलाओं और अज़ाबे खुदा से नजात का ज़रिया है। मजलिसी अव्वल ने दोनों तरफ़ से मुराद शिआ और सुन्नी को लिया है। और फ़रमाया है के आं हज़रत की बरकतें दोस्त और दुश्मन दोनों के लिए हैं जैसा के क़ब्रे काज़मैन बग़दाद के लिए सबबे अमान है।
सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के जो व्यक्ति हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ) की ज़ियारत करना चाहे पहले तमाम वह आदाब बजा लाए जो इमाम अली नक़ी (अ) की ज़ियारत में बजा लाया था।
उसके बाद ज़रीह के पास खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ الْعَسْكَرِيَّ ابْنَ عَلِيٍّ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू मोहम्मद हसन बिन अली हादी महदी (अ) (और अल्लाह

الْهَادِيَ الْمُهْتَدِيَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ وَ

की रहमत बरकात हो) सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा और फ़रज़ंदे औलियाए खुदा, सलाम

ابْنَ اَوْلِيَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ ابْنَ حُجَجِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आपपर ऐ हुज्जते खुदा और फ़रज़ंदे हुज्जते खुदा सलाम आपपर ऐ मुन्ताख़िबे खुदा व फ़रज़ंदे

صَفِيَّ اللّٰهِ وَ ابْنَ اَصْفِيَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ اللّٰهِ وَ ابْنَ خُلَفَآئِهٖ

मुनताख़िबे खुदा सलाम आपपर ऐ ख़लीफ़ए खुदा और फ़रज़ंदे खुलफ़ए खुदा और पिदरे

وَ اَبَا خَلِيْفَتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

ख़लीफए खुदा, सलाम आपपर ऐ फ़रज़ंदे ख़ातमुल अंबिया, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे

يَا ابْنَ خَاتَمِ الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

सय्यदुल औसिया, सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे अमारूल मोमिनीन (अ) सलाम आपपर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدِ

फ़रज़ंदे सैय्यदुनिसा इल आलमीन सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे आईम्मए हादीन, सलाम आप

الْوَصِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ

पर ऐ फ़रज़ंदे औसिए राशेदीन, सलाम आप पर ऐ निगेहबाने अहलै तक़वा, सलाम आपपर ऐ

عَلَيْكَ يَا ابْنَ الْاَئِمَّةِ الْهَادِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ الْاَوْصِيَآءِ

कामयाब लोगों के इमाम, सलाम आप पर ऐ मोमिनों के सहारे, सलाम आप पर ऐ ग़म नाक

الرَّاشِدِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِصْمَةَ الْمُتَّقِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

दिलों की कुशादगी, सलाम आप पर ऐ बरगुज़ीदए खुदा अंबियाके वारिस, सलाम आप पर ऐ

اِمَامَ الْفَآئِزِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رُكْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

रसूले खुदा के वसी के इल्म के ख़ज़ीनेदार, सलाम आप पर ऐ हुक्मे खुदासे मख़लूक़ को दावत

فَرَجَ الْمَلْهُوْفِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْاَنْبِيَآءِ الْمُنْتَجَبِيْنَ

देने वाले, सलाम आपपर ऐ किताबे खुदा से कलाम करनेवाले, सलाम आप पर ऐ खुदाकी

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَازِنَ عِلْمِ وَصِيِّ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

हुजतों के हुज्जत। सलाम आप पर ऐ उम्मत के हादी सलाम आप पर ऐ वलीए नेमत सलाम

الدَّاعِيْ بِحُكْمِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّاطِقُ بِكِتَابِ اللهِ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ इल्म के ख़ज़ीनेदार, सलाम आप पर ऐ हिल्म का सफ़ीना, सलाम आप पर ऐ इमामे

عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ الْحُجَجِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا هَادِيَ الْاُمَمِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

मुन्ताज़िर के वालिदे बुर्ज़ुगवार जिसकी हुज्जत अक़्लमंदो के लिए ज़ाहिर है और जिसकी

يَا وَلِيَّ النِّعَمِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَيْبَةَ الْعِلْمِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

मारेफ़त याक़ीन की दुनिया मे साबित है, जो ज़ालिमों की निगाहों से ग़ाएब है और फ़ासि०कों

سَفِيْنَةَ الْحِلْمِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْاِمَامِ الْمُنْتَظَرِ الظَّاهِرَةِ

की हुकूमत से पोशिदा है जिसके ज़रिए हमारे रब ने दीने इस्लाम के अज़ सरे नौ वजूद का वादा

لِلْعَاقِلِ حُجَّتُهٗ وَ الثَّابِتَةِ فِي الْيَقِيْنِ مَعْرِفَتُهُ الْمُحْتَجَبِ عَنْ اَعْيُنِ

किया है बाद उसके के वो महव हो चुका होगा और क़ुआर्न को पस मुर्दगी के बाद सर सब्ज़

الظَّالِمِيْنَ وَ الْمُغَيَّبِ عَنْ دَوْلَةِ الْفَاسِقِيْنَ وَ الْمُعِيْدِ رَبُّنَا بِهٖ

बनाएगा। मै गवाही देता हूँ ऐ मेरे मौला के आपने नमाज़ क़ाएम की ज़कात अदा की और

اَلْاِسْلَامَ جَدِيْدًا بَعْدَ الْاِنْطِمَاسِ وَ الْقُرْاٰنَ غَضًّا بَعْدَ الْاِنْدِرَاسِ

अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर किया और अपने रब के रास्ते की तरफ़ दावत दी

اَشْهَدُ يَا مَوْلَايَ اَنَّكَ اَقَمْتَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ

हिकमत और मोएजए हसना के ज़रिए और खुलूस के साथ अल्लाह की इबादत की यहाँ तक

بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ دَعَوْتَ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ

के मौत का वक़्त आ गया। मै अल्लाह से सवाल करता हूँ उस शान के वास्ते से जो अल्लाह के

الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ عَبَدْتَ اللّٰهَ مُخْلِصًا حَتّٰى اَتٰيكَ الْيَقِيْنُ اَسْئَلُ

नज़दीक आप की है के वो मेरी ज़ियारत को क़ुबूल करले और मेरी कोशिश को क़ुबूल करले

اللّٰهَ بِالشَّاْنِ الَّذِىْ لَكُمْ عِنْدَهٗ اَنْ يَّتَقَبَّلَ زِيَارَتِىْ لَكُمْ وَ يَشْكُرَ سَعْيِىْ

और मेरी दुआ को क़ुबूल करले आप के ज़रिए और मुझको हक़ के मददगारों, पैरवीकरने

اِلَيْكُمْ وَ يَسْتَجِيْبَ دُعَآئِىْ بِكُمْ وَ يَجْعَلَنِىْ مِنْ اَنْصَارِ الْحَقِّ وَ اَتْبَاعِهٖ

वालों और शियों, उस के दोस्तों और मोहिब्बों मे क़रार दे। और सलाम आप पर और अल्लाह

وَ اَشْيَاعِهٖ وَ مَوَالِيْهِ وَ مُحِبِّيْهِ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद ज़रीह को बोसा दें और दोनो रूख़सारों को ज़रीह पर रखें और यह कहें:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मेरे सरदार मोहम्मद और उनके अहलेबैत (अ) पर और दुरूद भेज हसन

عَلِيِّ الْهَادِيْ اِلٰى دِيْنِكَ وَ الدَّاعِيْ اِلٰى سَبِيْلِكَ عَلَمِ الْهُدٰى وَ مَنَارِ

(अ) बिन अली पर जो हादीए दीन हैं और तेरी राह की तरफ़ दावत देने वाले हैं, हिदायत की निशानी

التُّقٰى وَ مَعْدِنِ الْحِجٰى وَ مَاْوَى النُّهٰى وَ غَيْثِ الْوَرٰى وَ سَحَابِ

और तक़वे का मिनारा और मादने ाख़िरदमंदी और महले अक़ले कामिल हैं, बाराने रहमत, सहाबे

الْحِكْمَةِ وَ بَحْرِ الْمَوْعِظَةِ وَ وَارِثِ الْاَئِمَّةِ وَ الشَّهِيْدِ عَلَى الْاُمَّةِ

हिकमत, मोएज़ा का दरिया और अल्लाह के वारिस हैं और उम्मत पर गवाह हैं, मासूम, हर ऐब से पाक,

الْمَعْصُوْمِ الْمُهَذَّبِ وَ الْفَاضِلِ الْمُقَرَّبِ وَ الْمُطَهَّرِ مِنَ الرِّجْسِ

फ़जल वले क़ुरबते खुदा वाले, रिज्स से पाक व पाक़ीजा हैं जिनको तूने वारिसे इल्मे किताब बनाया

الَّذِيْ وَرَّثْتَهٗ عِلْمَ الْكِتَابِ وَ اَلْهَمْتَهٗ فَصْلَ الْخِطَابِ وَ نَصَبْتَهٗ

है और हक़ व बातिल मे फ़ैस्ले की क़ुव्वत दी है और जिनको अहले ाक़िबला के लिए अमानत की

عَلَمًا لِاَهْلِ قِبْلَتِكَ وَ قَرَنْتَ طَاعَتَهٗ بِطَاعَتِكَ وَ فَرَضْتَ مَوَدَّتَهٗ

निशानी बनाया है जिनकी इताअत को अपनी इताअत से मिलाया है और जिनकी मवद्दत को तमाम

عَلٰى جَمِيْعِ خَلِيْفَتِكَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا اَنَابَ بِحُسْنِ الْاِخْلَاصِ فِيْ

मख़लूक़ पर फ़र्ज़ किया है खुदाया जिस तरह वो हुसने इख़लास के साथ तेरी तौहीद मे तेरी तरफ़ और

تَوْحِيْدِكَ وَ اَرْدٰى مَنْ خَاضَ فِيْ تَشْبِيْهِكَ وَ حَامٰى عَنْ اَهْلِ الْاِيْمَانِ

जो शिर्क मे गिरफ़तार थे उनसे अलग थलग रहे और तुझ पर ईमान लाने वालों की हिमायत की तो मेरे

بِكَ فَصَلِّ يَا رَبِّ عَلَيْهِ صَلٰوةً يَلْحَقُ بِهَا مَحَلَّ الْخَاشِعِيْنَ وَ يَعْلُوْ فِيْ

परवरदिगार तू दुरूद भेज उन पर ऐसा दुरूद जिससे उन्हें ख़ाशेईन के मरतबे से मिला दे और जन्नत मे

الْجَنَّةِ بِدَرَجَةِ جَدِّهٖ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ بَلِّغْهُ مِنَّا تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا وَّ

उन का दरजा उनके जद ख़ातिमुल अंबिय के दरजे से मिला दे और उनको हमारी जनिब से सलाम व

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ فِيْ مُوَالَاتِهٖ فَضْلًا وَّ اِحْسَانًا وَّ مَغْفِرَةً وَّ رِضْوَانًا اِنَّكَ

तहय्यत पहुँचा दे और हमको अपनी बारगाह से उनकी मोहब्बत के तुफ़ैल मे फ़ज़्ल व एहसान और

ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ وَّ مَنٍّ جَسِيْمٍ.

मग़िफ़रत व रिज़वान अता फ़र्मा, बेशक तू अज़ीम फ़ज़्लवाला और बेहतरीन अता वला है।

नमाज़े ज़ियारत बजा लाए और नमाज़ के बाद कहे:

يَا دَآئِمُ يَا دَيْمُوْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا كَاشِفَ الْكَرْبِ وَ الْهَمِّ وَ يَا

ऐ खुदाए दाएम व सरमद ऐ ज़िन्दा व पाइंदा अबदी ऐ ग़म व रजं के दूर करनेवाले ऐ अंदोह को ख़त्म करने

فَارِجَ الْغَمِّ وَ يَا بَاعِثَ الرُّسُلِ وَ يَا صَادِقَ الْوَعْدِ وَ يَا حَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا

वाले और ऐ रसूलों को भेजनेवाले ऐ वादे के सच्चे ऐ ज़िन्दा तेरे अलावा कोई माबूद नही है। मै तुझसे तवस्सुल

اَنْتَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّ وَصِيِّهٖ عَلِيِّ ابْنِ عَمِّهٖ وَ

करता हूँ तेरे हबीब मोहम्मद (स) के ज़रिए और उनके वसी अली (अ) के ज़रिए जो उनके चचाज़ाद भाइ,

صِهْرِهٖ عَلٰى ابْنَتِهِ الَّذِيْنَ خَتَمْتَ بِهِمَا الشَّرَايِعَ وَ فَتَحْتَ

दामाद और हमसरे दुख़तरे रसूल हैं के जिन दोनों के ज़रिए तूने तमाम शरायों को ख़त्म किया और जिनके

التَّاْوِيْلَ وَ الطَّلَائِعَ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا صَلَاةً يَّشْهَدُ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ وَ

ज़रिए ताविल और इसरार के अबवाब को खोल दिया है तू उन दोनो पर रहमत नाज़ल कर ऐसी जिसकी

الْآخِرُوْنَ وَ يَنْجُوْ بِهَا الْاَوْلِيَآءُ وَ الصَّالِحُوْنَ وَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ

गवाही अव्वलीन और आख़िरीन दें और जिस रहमत के ज़रिए औलिया और सालेहीन नजात हासिल करें

بِفَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ وَالِدَةِ الْاَئِمَّةِ الْمَهْدِيِّيْنَ وَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ

और मै तवस्सुल करता हूँ फ़ातेमा ज़हरा (स) के ज़रिए जो आईम्मए होदा की वालेदा हैं और आलमीन की

الْعَالَمِيْنَ الْمُشَفَّعَةِ فِيْ شِيْعَةِ اَوْلَادِهَا الطَّيِّبِيْنَ فَصَلِّ عَلَيْهَا

औरतों की सरदार हैं और शिफ़ाअत करनेवाली अपनी औलादे तय्यबीन शियों की तो खुदा तू उनपर दाएमी

صَلَاةً دَائِمَةً اَبَدَ الْآبِدِيْنَ وَ دَهْرَ الدَّاهِرِيْنَ وَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ

रहमत नाज़ल फ़र्मा हमेशा के लिए जिबतक के ज़माना बाक़ी रहे और मै मुतवस्सिल होता हूँ तेरी तरफ हसन

بِالْحَسَنِ الرَّضِيِّ الطَّاهِرِ الزَّكِيِّ وَ الْحُسَيْنِ الْمَظْلُوْمِ الْمَرْضِيِّ

(अ) के वसिले से जो पसंदीदा और पाक व पाकीज़ा हैं और हुसैने (अ) मज़लूम के वसीले से जो पसंदीदा

الْبَرِّ التَّقِيِّ سَيِّدَیْ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ الْاِمَامَيْنِ الْخَيِّرِيْنِ

नेक, मुत्तक़ी हैं और दोनो अहले जन्नत के जवानों के सरदार हैं जो इमामे नेक, पाक व पाकीज़ा, मुत्तक़ी व

الطَّيِّبِيْنِ التَّقِيَّيْنِ الطَّاهِرِيْنِ الشَّهِيْدَيْنِ الْمَظْلُوْمَيْنِ

परहेज़गार, पाकीज़ा, शहीद, मज़लूम और मक़तूल हैं तो तू रहमत निज़ल कर उन दोनों पर जबतक सूरज

الْمَقْتُوْلَيْنِ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا مَا طَلَعَتْ شَمْسٌ وَّ مَا غَرَبَتْ صَلٰوةً

चमके और डूबे मुसलसल पै दर पै रहमत और मै तेरी तरफ़ मुतवस्सिल होता हूँ अली बिन हुसैन (अ) के

مُّتَوَالِيَةً مُّتَتَالِيَةً وَّ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ سَيِّدِ

वसीले से जो आबिदों के सरदार हैं जो ज़ालिमों के ख़ाफ़से महजूब रहे और मेहम्मद बिन अली बाक़र (अ)

الْعَابِدِيْنَ الْمَحْجُوْبِ مِنْ خَوْفِ الظَّالِمِيْنَ وَ بِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ

के वसीले से जो पाक रौशन नूर हैं दोनो इमाम, सरदार, बरकतों की कुन्जी और तारीकियों मे चिराग़ हैं तू उन

الْبَاقِرِ الطَّاهِرِ النُّوْرِ الزَّاهِرِ الْاِمَامَيْنِ السَّيِّدَيْنِ مِفْتَاحَيِ

दोनोपर रहमत नाज़ल कर जबतक के रात तारीक रहें और जबतक दिन रौशन रहें ऐसी रहमत जो सुबह व

الْبَرَكَاتِ وَ مِصْبَاحَيِ الظُّلُمَاتِ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا مَا سَرٰى لَيْلٌ وَ

शाम बरक़रार रहे और मै तेरी तरफ़ तवस्सुल करता हूँ जाफ़र बिन मोहम्मद के वसिले से जो खुदा की तरफ़

مَا اَضَآءَ نَهَارٌ صَلَاةً تَغْدُوْ وَ تَرُوْحُ وَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِجَعْفَرِ بْنِ

से सादिक़ और इल्मे खुदा के बारे मे कलाम करने वाले हैं और मूसा बिन जाफ़र के वसिले से जो अब्दे सालेह

مُحَمَّدٍ الصَّادِقِ عَنِ اللّٰهِ وَ النَّاطِقِ فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ وَ بِمُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ

हैं और वसीए नासेह हैं दोनो इमाम और हादी व महदी बा वफ़ा और काफ़ी है उन दोनो पर रहमत नाज़ल कर

الْعَبْدِ الصَّالِحِ فِيْ نَفْسِهٖ وَ الْوَصِيِّ النَّاصِحِ الْاِمَامَيْنِ الْهَادِيَيْنِ

जब तक मलक तस्बीह करें और फ़ज़्ल हरकत करता रहे ऐ रहमत जो बढ़ने वाली ज़्यादा होने वाले, फ़ना

الْمَهْدِيَّيْنِ الْوَافِيَيْنِ الْكَافِيَيْنِ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا مَا سَبَّحَ لَكَ

न होने वाली हो और मै मुतवस्सिल होता हूँ तेरी तरफ़ अली बिन मूसा रज़ा (अ) और मोहम्मद बिन अली

مَلَكٌ وَّ تَحَرَّكَ لَكَ فَلَكٌ صَلَاةً تَنْمٰى وَ تَزِيْدُ وَ لَا تَفْنٰى وَ لَا تَبِيْدُ وَ

मुरतज़ा (अ) के वसीले से जो दोनो इमाम पाकीज़ा और बरगुज़ीदा हैं तू उन पर रहमत नाज़ल कर जब तक

اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَلِيِّ بْنِ مُوْسَى الرِّضَا وَ بِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى

सुबह रौशन है ऐसी सलवात जो उनको तेरे रिज़वान की तरफ़ बुलंद करे मक़ामे इल्लीन मे और मै मुतवस्सिल

الْاِمَامَيْنِ الْمُطَهَّرَيْنِ الْمُنْتَجَبَيْنِ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا مَا اَضَآءَ صُبْحٌ

होता हूँ तेरी तरफ़ अली बिन मोहम्मद राशिद और हसन बिन अली हादी (अ) के वसीले से जो दोनों क़ाएम

وَّ دَامَ صَلَاةً تُرَقِّيْهِمَا اِلٰى رِضْوَانِكَ فِي الْعِلِّيِّيْنَ مِنْ جِنَانِكَ وَ

करनेवाले हैं तेरे बन्दों के उमूर को और उन दोनो का इम्तेहान लिया जा चुका है ख़ाफ़नाक रंज के साथ और

اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ الرَّاشِدِ وَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ الْهَادِيْ

सब्र करनेवाले हैं हौलनाक तकलीफ़ो और फ़ितनों पर जो हक़ से माएल करनेवाले हैं तू उन दोनो पर दुरूद

الْقَآئِمَيْنِ بِاَمْرِ عِبَادِكَ الْمُخْتَبَرِيْنِ بِالْمِحَنِ الْهَآئِلَةِ وَ الصَّابِرِيْنِ

भेज साबिरां की जज़ा के मुक़ाबले मे और कामयाब होनेवालोंके सवाब के मुक़ाबले मे ऐसा दुरूद के उन

فِي الْاِحَنِ الْمَآئِلَةِ فَصَلِّ عَلَيْهِمَا كِفَآءَ اَجْرِ الصَّابِرِيْنَ وَ اِزَآءَ

दोने के लिए रफ़अत व बुलंदी मोहय्या करे और मै तेरी तरफ़ मुतवस्सिल हूँ ऐ मेरे रब अपने इमामे जमाना के

ثَوَابِ الْفَآئِزِيْنَ صَلٰوةً تُمَهِّدُ لَهُمَا الرِّفْعَةَ وَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ يَا رَبِّ

ज़रिए और अपने ज़माने के निगेहबाने हक़ के ज़रिए रोज़े मौऊद तक और शायद ख़ल्क व मशहूदे आलम

بِاِمَامِنَا وَ مُحَقِّقِ زَمَانِنَا الْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ وَ الشَّاهِدِ الْمَشْهُوْدِ وَ

और दरख़शाँ नूर और नूरानी और रौशनी के ज़रिए जो मदद किया गया है रोब के साथ और कामयाब है

النُّوْرِ الْاَزْهَرِ وَ الضِّيَآءِ الْاَنْوَرِ الْمَنْصُوْرِ بِالرُّعْبِ وَ الْمُظَفَّرِ

सआदत के साथ तो तू दुरूद भेज उन पर फलों के अदद के बराबर, दरख़तों के पत्तों के बराबर और रेग के

بِالسَّعَادَةِ فَصَلِّ عَلَيْهِ عَدَدَ الثَّمَرِ وَ اَوْرَاقِ الشَّجَرِ وَ اَجْزَآءِ الْمَدَرِ

अजज़ा के बराबर और इन्सान व हैवानात के बालों के अदद के बराबर और उसके अदद वे बराबर जिस को

وَ عَدَدَ الشَّعْرِ وَ الْوَبَرِ وَ عَدَدَ مَا اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ وَ اَحْصَاهُ

तेरे इल्म ने अहाता किया है और जिस का तेरी किताब ने एहसा किया है इतना दुरूद के जिस पर अव्वलीन

كِتَابُكَ صَلٰوةً يَّغْبِطُهٗ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ وَ الْاٰخِرُوْنَ اَللّٰهُمَّ وَ احْشُرْنَا

व आख़िरीन के लोग रश्क करें खुदाया हमको महशूर फ़र्मा उन्ही के गरोह मे और हमको बाक़ी रखना उनकी

فِي زُمْرَتِهٖ وَ احْفَظْنَا عَلٰى طَاعَتِهٖ وَ احْرُسْنَا بِدَوْلَتِهٖ وَ اَتْحِفْنَا

इताअत पर और हम को महफ़ूज़ रखना उनकी हुकूमत तक और हम को उनकी विलायत से बहरामंद फ़रमा

بِوِلَايَتِهٖ وَ انْصُرْنَا عَلٰى اَعْدَآئِنَا بِعِزَّتِهٖ وَ اجْعَلْنَا يَا رَبِّ مِنَ

और हमारी मदद फ़रमा हमारे दुश्मनों के मुक़ाबले मे उनकी इज़्ज़त के ज़रिए और हमको क़रार दे ऐ रब तौबा

التَّوَابِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّ اِبْلِيْسَ الْمُتَمَرِّدَ اللَّعِيْنَ

करनेवालों मे ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले खुदाया शैतान सरकश व लईन ने तुझसे मोहलत चाही तेरी

قَدِ اسْتَنْظَرَكَ لِاِغْوَآءِ خَلْقِكَ فَاَنْظَرْتَهٗ وَ اسْتَمْهَلَكَ لِاِضْلَالِ

मख़लूक को बहकाने के लिए तूने उस को मोहलत दे दी उसने तुझ से फ़ुरसत चही तेरे बन्दों को गुमराह करने

عَبِيْدِكَ فَاَمْهَلْتَهٗ بِسَابِقِ عِلْمِكَ فِيْهِ وَ قَدْ عَشَّشَ وَ كَثُرَتْ

के लिए तूने उस को फ़ुरसत दे दी उसके बारे मे अपने साबिक़ा इल्म की बिना पर चुनाँचे उसने आश्याना

جُنُوْدُهٗ وَ ازْدَحَمَتْ جُيُوْشُهٗ وَ انْتَشَرَتْ دُعَاتُهٗ فِيْ اَقْطَارِ الْاَرْضِ

बनाया व अपने लश्कर मे ज़्यादती की व अपनी फ़ौज को जमा किया व अपने दाईयों को फैला दिया ज़मीनके

فَاَضَلُّوْا عِبَادَكَ وَ اَفْسَدُوْا دِيْنَكَ وَ حَرَّفُوْا الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

हिस्सा मे, उन्होंने तेरे बन्दों को गुमराह किया व तेरे दीन को फ़ासिद किया व कलमए हक़को उसके मकाम

وَ جَعَلُوْا عِبَادَكَ شِيَعًا مُّتَفَرِّقِيْنَ وَ اَحْزَابًا مُّتَمَرِّدِيْنَ وَ قَدْ وَ

से तब्दील कर दिया व तेरे बन्दों को गुमराह किया व तेरे दीन को फ़ासिद किया व कलमए हक़ को उसके

عَدُوَّتَ نُقُوْضَ بُنْيَانِهٖ تَمْزِيْقَ شَأْنِهٖ فَاَهْلِكْ اَوْلَادَهٗ وَ جُيُوْشَهٗ وَ

मकाम से तबदील कर दिया व तेरे बन्दों को दीन मे मुतफ़र्रिक कर दिया और लोगों को हक़ से सरकश और

طَهِّرْ بِلَادَكَ مِنِ اخْتِرَاعَاتِهٖ وَ اخْتِلَافَاتِهٖ وَ اَرِحْ عِبَادَكَ مِنْ

हि०ज्बे मुख़ालेफ़त बना दिया हाँलाके तूने वादा किया उन शयातीन की बिनयादों के तोड़ने व उनकी हालत

مَّذَاهِبِهٖ وَ قِيَاسَاتِهٖ و اجْعَلْ دَآئِرَةَ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ وَ ابْسُطْ

के पामाल करने का तो तू उसकी औलाद को व फ़ौजको हलाक करदे व अपने शहरों को उसके एख़तेरा

عَدْلَكَ وَ اَظْهِرْ دِيْنَكَ وَ قَوِّ اَوْلِيَآئَكَ وَ اَوْهِنْ اَعْدَآئَكَ وَ اَوْرِثْ

व इख़तेलाफ़ से पाक कर व अपने बन्दों को राहत दे उसके तरीक़े और क़यास से और उन पर गरदिश बद

دِيَارَ اِبْلِيْسَ وَ دِيَارَ اَوْلِيَآئِهٖ اَوْلِيَآئَكَ وَ خَلِّدْهُمْ فِي الْجَحِيْمِ وَ

बख़ती क़रारदे और अपनी अदालत को फैला दे, अपने दीनको ग़ालिब करदे व अपने दोस्तों को क़वी कर

اَذِقْهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ وَ اجْعَلْ لَّعَآئِنَكَ الْمُسْتَوْدَعَةَ فِيْ

और दुश्मनो को कमज़ोर कर और इबलीस और उसके दोस्तों के दयार को अपने दोस्तों को विरासत मे अता

مَنَاحِسِ الْخِلْقَةِ وَ مَشَاوِيْهِ الْفِطْرَةِ دَآئِرَةً عَلَيْهِمْ وَ مُوَكَّلَةً

कर और उन्हें हजन्न मे हमेशा के लिए डाल दे और उन्हें दर्दनाक अज़ाब चखा दे और क़रार दे अपने लानतों

بِهِمْ وَ جَارِيَةً فِيْهِمْ كُلَّ مَسَآءٍ وَّ صَبَاحٍ وَّ غُدُوٍّ وَّ رَوَاحٍ رَبَّنَا

को जिनको मनहूस ख़िलकत व बदतरीन फ़ितरत मे महफ़ूज़ किया है उनपर मुवक्किल करदे और उनको मार

آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ

ज़िन्दगी मे हर सुबह और शाम, मेरे परवरदिगार हमको दुनिया मे नेकी दे और आख़िरत मे भी नेकी क़रार दे

النَّارِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और अपनी रहमत से हम को जहन्नम के अज़ाब से बचा ले ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले।

उसके बाद अपने लिए और बिरादराने ईमानी के लिए जो चाहे दुआ करे।
उसके बाद मालिके दुनिया व आख़िरत वालेदए इमामे अस्र (अ) जनाबे नरजिस (स) की ज़ियारत करे जिनकी क़ब्र ज़रीहे इमामे हसन अस्करी (अ) की पुश्त पर है।
आप की ज़ियारत इस तरह करे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهِ) الصَّادِقِ الْاَمِيْنِ

सलाम रसूले खुदा पर (अल्लाह का दुरूद हो उन पर और उन की आल पर) जो सादिक़ व अमीन हैं सलाम

اَلسَّلَامُ عَلٰى مَوْلَانَا اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَئِمَّةِ الطَّاهِرِيْنَ

हो हमारे मौला अमारूरल मोमिनीन (अ) पर, सलाम आईम्मए ताहेरीन (अ) पर जो हुज्जत हैं और बरकत

الْحُجَجِ الْمَيَامِيْنِ اَلسَّلَامُ عَلٰى وَالِدَةِ الْاِمَامِ وَ الْمُوْدَعَةِ اَسْرَارَ

वाले हैं, सलाम हो इमाम की मादरेगिरामा पर जो मक़ामे वदी॒यते अस्रार खुदाए अल्लाम और हामीले नूरे

الْمَلِكِ الْعَلَّامِ وَ الْحَامِلَةِ لِاَشْرَفِ الْاَنَامِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ

इशराफ़े अनाम हैं। सलाम आप पर ऐ सिद्दीक़ए मरज़ीया सलाम आप पर ऐ शबीहे मादरे मूसा और शबीहे

الصِّدِّيْقَةُ الْمَرْضِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا شَبِيْهَةَ اُمِّ مُوْسٰى وَ ابْنَةَ

दुख़तरे हवरीए ईसा। सलाम आप पर ऐ पाकीज़ा और मुत्तक़ीया। सलाम आप पर ऐ वो जिस से खुदा राज़ी

حَوَارِيِّ عِيْسٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا التَّقِيَّةُ النَّقِيَّةُ اَلسَّلَامُ

और जो खुदा से राज़ी। सलाम आप पर ऐ वो जिनके सिफ़ाते कमालिया का तज़केरा इनजील मे है और

عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الرَّضِيَّةُ الْمَرْضِيَّةُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الْمَنْعُوْتَةُ فِيْ

जिनका पैग़ाम रूहुल अमीन (जिब्रईल) ने पहुँचा और जिन से रिशते के बारे मे सय्यदुल मुर्सलीन हजरत

الْاِنْجِيْلِ الْمَخْطُوْبَةُ مِنْ رُوْحِ اللهِ الْاَمِيْنِ وَ مَنْ رَغِبَ فِيْ وُصْلَتِهَا

मोहम्मद ने रग़बत की और जिसका वुजूद मक़ामे अमानते इसरारे रब्बुल आलमीन रहा। सलाम आपपर

مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْمُسْتَوْدَعَةُ اَسْرَارَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

और आपके आबा पर जो हवारीने ईसा (अ) थे। सलाम आप पर और आप के शौहर और आपके फ़रज़ंद

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ وَ عَلٰى آبَائِكِ الْحَوَارِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ وَ عَلٰى

पर। सलाम आप पर और आप की रूह और आपके जिस्मे पाकीज़ा पर। मै गवाही देता हूँ के आपने

بَعْلِكِ وَ وَلَدِكِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ وَ عَلٰى رُوْحِكِ وَ بَدَنِكِ الطَّاهِرِ

बेहतरीन किफ़ालत की और अमानत को अदा किया और रज़ाए खुदा के लिए कोशिश की और ज़ाते खुदा

اَشْهَدُ اَنَّكِ اَحْسَنْتِ الْكَفَالَةَ وَ اَدَّيْتِ الْاَمَانَةَ وَ اجْتَهَدْتِ فِيْ

के बारे मे सब्र से काम लिया और राज़े खुदा की हिफ़ाजत की और वलीए खुदा को लिए रहीं और हुज्जते

مَرْضَاةِ اللّٰهِ وَ صَبَرْتِ فِيْ ذَاتِ اللّٰهِ وَ حَفِظْتِ سِرَّ اللّٰهِ وَ حَمَلْتِ وَلِيَّ اللّٰهِ

खुदा की हिफ़ाज़त मे कोशिश की और रग़बत रखी रसूलअल्लाह के फ़रज़ंदों से इत्तेसाल मे उन के हक़ को

وَبَالَغْتِ فِيْ حِفْظِ حُجَّةِ اللّٰهِ وَرَغِبْتِ فِيْ وُصْلَةِ اَبْنَآءِ رَسُوْلِ اللّٰهِ عَارِفَةً

पहचाँनते हुए उन की सदाक़त पर ईमान रखते हुए, उनकी मनज़ेलत का एतेराफ़ करते हुए। उन के उमूर मे

بِحَقِّهِمْ مُؤْمِنَةً بِصِدْقِهِمْ مُعْتَرِفَةً بِمَنْزِلَتِهِمْ مُسْتَبْصِرَةً بِاَمْرِهِمْ

बसीरतवाली रहीं। आप पर मेहेरबानी करती रहीं। उनकी ख़्वाहीश को मुक़द्दम रखा। मै गवाही देता हूँ के

مُشْفِقَةً عَلَيْهِمْ مُؤْثِرَةً هَوَاهُ. وَ اَشْهَدُ اَنَّكِ مَضَيْتِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ مِّنْ

आपने दुनियासे रेहलत की दर हाँलाके आप दीन मे बा बसीरत रहीं। सलेहीन की इक़तेदा करती रहीं। आप

اَمْرِكِ مُقْتَدِيَةً بِالصَّالِحِيْنَ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً تَقِيَّةً نَقِيَّةً زَكِيَّةً

खुदा से राज़ी रहीं, खुदा आपसे राज़ी रहा मुकम्मल तकवे के साथ और पाको पाकीज़ा रहीं। खुदा आपसे

فَرَضِيَ اللّٰهُ عَنْكِ وَ اَرْضَاكِ وَ جَعَلَ الْجَنَّةَ مَنْزِلَكِ وَ مَاْوٰيكِ فَلَقَدْ

राज़ी रहे और आपको राज़ी रखे और जन्नत को आपकी मनिज़ल और ठिकाना क़रार दे। आपको खुदाने

اَوْلَاكِ مِنَ الْخَيْرَاتِ مَآ اَوْلَاكِ وَ اَعْطَاكِ مِنَ الشَّرَفِ مَا بِهٖ

वो नेकी अता फ़रमाई जो हद्दे तसव्वुर से बाहर है और आपको वो शरफ़ अता किया है जिसने आप को

اَغْنَاكِ فَهَنَّاكِ اللّٰهُ بِمَا مَنَحَكِ مِنَ الْكَرَامَةِ وَ اَمْرَاكِ.

बेनियाज़ कर दिया तो आपको मुबारक हो खुदाकी वो बख़शिश जो उसने आपको करामत फ़रमाई

उसके बाद सर को आसमान की तरफ़ उठाकर यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ اعْتَمَدْتُ وَ رِضَاكَ طَلَبْتُ وَ بِاَوْلِيَآئِكَ اِلَيْكَ

खुदाया बस तुझपर ही मेरा एतेमाद है और तेरी ही मर्ज़ा का तालीब हूँ और तेरे औलिया से मै मुतवस्सील हूँ

تَوَسَّلْتُ وَ عَلٰى غُفْرَانِكَ وَ حِلْمِكَ اتَّكَلْتُ وَبِكَ اعْتَصَمْتُ وَبِقَبْرِ

और तेरी मग़फ़ेरत तेरे हिल्म पर तवक्कुल किया है और तेरी ही हिफ़ाज़त चाही है और तेरे वली की माँ की

اُمِّ وَلِيِّكَ لُذْتُ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ انْفَعْنِىْ بِزِيَارَتِهَا وَ

क़ब्र की पनाह ली है तो तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको बहरामंद फ़र्मा उनकी

ثَبِّتْنِىْ عَلٰى مَحَبَّتِهَا وَ لَا تَحْرِمْنِىْ شَفَاعَتَهَا وَ شَفَاعَةَ وَلَدِهَا عَجِّلَ

ज़ियारत से और उनकी मोहब्बत पर साबित क़दम रख और उनकी शिफ़ाअत से महरूम न फ़र्मा और उनके

اللّٰهُ فَرَجَهٗ وَ ارْزُقْنِىْ مُرَافَقَتَهَا وَ احْشُرْنِىْ مَعَهَا وَ مَعَ وَلَدِهَا كَمَا

फ़रज़ंद की शिफ़ाअत से और उनकी रिफ़ाक़त अता फ़र्मा और मुझे महशूर उनके और उनके फ़रज़ंद के साथ

وَفَّقْتَنِىْ لِزِيَارَةِ وَلَدِهَا وَ زِيَارَتِهَا. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِالْاَئِمَّةِ

जैसा के तूने तौफ़ीक़ दी है उनके फ़रज़ंद और उनकी ज़ियारत की। खुदाया मै तेरी तरफ़ मुतवज्ञे हूँ आइम्मए

الطَّاهِرِيْنَ وَ اَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِالْحُجَجِ الْمَيَامِيْنِ مِنْ آلِ طٰهٰ وَ يٰسٓ اَنْ

ताहेरीन (अ) के वसीले से और मै तेरी तरफ़ मुतवस्सिल हूँ उन हुज्जतों के वास्ते से जो बरकत वाले हैं जो

تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ آلِهِ الطَّیِّبِیْنَ وَ اَنْ تَجْعَلَنِیْ مِنَ الْمُطْمَئِنِّیْنَ

ताहा व यासीन की आल मे हैं के तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जो पाकीज़ा है और

الْفَآئِزِیْنَ الْفَرِحِیْنَ الْمُسْتَبْشِرِیْنَ الَّذِیْنَ فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا

मुझको क़रार दे इतमेनान वालों कामयाब होनेवालों खुश और बशारत याफ़ता लोगों मे, जिनके ऊपर न कोई

هُمْ یَحْزَنُوْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ قَبِلْتَ سَعْیَهٗ وَیَسَّرْتَ اَمْرَهٗ وَ كَشَفْتَ

ख़ाफ़ हो और न वो महज़ून हों। और मुझको क़रार दे उनमे जिनकी सई को तूने क़ुबूल किया हो और जिनके

ضُرَّهٗ وَ اٰمَنْتَ خَوْفَهٗ. اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ

अम्र को आसान किया हो और जिनकी तकली०फों को दूर किया हो और जिनके ख़ाफ़ को ख़त्म किया हो।

اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِیَارَتِیْ اِیَّاهَا وَ ارْزُقْنِیَ الْعَوْدَ

खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद के वासते तू दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उसको मेरी

اِلَیْهَا اَبَدًا مَّآ اَبْقَیْتَنِیْ وَ اِذَا تَوَفَّیْتَنِیْ فَاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَتِهَا وَ

आख़री ज़ियारत न क़रार दे और मुझको दोबारा आने की हमेशा तौफ़ीक़ करामत फ़र्मा जब तक तू मुझको

اَدْخِلْنِیْ فِیْ شَفَاعَةِ وَلَدِهَا وَ شَفَاعَتِهَا وَ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ

बाक़ी रखे और जब मुझको मौत भी दे तो मुझको उनके ज़ुमरे मे महशूर फ़रमा और मुझको दाख़ल फ़र्मा

لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ

उनकी और उनके फ़रज़ंद की शिफ़ाअत मे और मुझको बख़्श दे और मेरे वालेदैन को और मोमिनीन व

حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ وَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا سَادَاتِيْ وَ رَحْمَةُ

मोमिनात को और दुनिया मे नेकी और आख़िरत मे नेकी अता फ़र्मा और हमको अपनी रहमत से जहन्नम के

اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

अज़ाब से बचा ले और सलाम आप पर ऐ हमारे सरदार और अल्लाह की रहमत और उस की बरकात हो।

लेखक: इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत है के ज़ैदे शहहाम ने आप से पूछा के अगर कोई आप में से किसी की ज़ियारत करे तो उसका सवाब क्या है? तो फ़रमाया के वह रसूले अक्रम (स) की ज़ियारत करनेवाले की तरह है। और हम साबिक़ में भी वह रिवायत नक़्ल कर चुके हैं जो इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल हुई है के जो व्यक्ति भी इमामे वाजेबुत ताअह की ज़ियारत करेगा और वहां चार रकत नमाज़ अदा करेगा उसको हज और उमरा का सवाब मिलेगा। हदियतुज़ ज़ाएरीन में हमने जनाबे हकीमा दुख़तरे इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) के फ़ज़ाएल के ज़ैल में नक़्ल कर दिया है के उनकी क़ब्र इसी मकाम पर ज़रीहे अस्करीऐन के पास है। और यह भी कहा है के कुतुबे मज़ार में आपके लिए कोई ख़ास ज़ियारत नक़्ल नहीं हुई है लेकिन आप का मरतबा बहुत बुलंद है लेहाज़ा आपकी ज़ियारत उनहीं शब्दों में की जाए जिनसे औलादे आइम्मा की ज़ियारत की जाती है। या वह ज़ियारत पढ़ी जाए जो आपकी फुपी जनाबे फ़ातेमा बिन्ते मूसा बिन जाफ़र के लिए वारिद हुई है और वह यूँ है के क़िबले की तरफ़ मूँह कर के यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلٰى اٰدَمَ صَفْوَةِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى نُوْحٍ نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰٓى

सलाम हो आदम पर जो बरगुज़ीदए खुदा है। सलाम हो अल्लाह के नबी नूह पर। सलाम अल्लाह

اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُوْسٰى كَلِيْمِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلٰٓى

के ख़लील इब्राहीम (अ) पर। सलम अल्लाह के कलीम मूसा (अ) पर, सलाम रूहुल्लाह जनाबे

عِيْسٰى رُوْحَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ईसा पर, सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ अल्लाह की बेहतरीन मख़लूक, सलाम

خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ بْنَ

आप पर ऐ बरगुज़ीदए खुदा, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़ातमुल मुर्सलीन

عَبْدِ اللّٰهِ خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيَّ ابْنَ

सलाम आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ) रसूले खुदा के वसी, सलाम

اَبِيْ طَالِبٍ وَصِيَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ سَيِّدَةَ نِسَآءِ

आप पर ऐ फ़ातेमा (स) आलमीन की औरतों की सरदार, सलाम आप दोनो पर ऐ हर दो नवासए

الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا سِبْطَيِ الرَّحْمَةِ وَسَيِّدَيْ شَبَابِ اَهْلِ

रहमतुल आलमीन और जन्नत के जवानों के सरदार, सलाम आप पार ऐ अली बिन हुसैन (अ)

الْجَنَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ بْنَ الْحُسَيْنِ سَيِّدَ الْعَابِدِيْنَ وَ قُرَّةَ

आबिदों के सरदार और देखनेवालों की आँख की ठंडक, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अली

عَيْنِ النَّاظِرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ بَاقِرَ الْعِلْمِ بَعْدَ

इल्म के ज़ाहिर करनेवाले पैग़मबर के बाद, सलाम आप पर ऐ जाफ़र बिन मोहम्मद जो सादिक़,

النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَعْفَرَ بْنَ مُحَمَّدٍ الصَّادِقُ الْبَآرُّ الْاَمِيْنَ

नेक और अमीन हैं, सलाम आप पर ऐ मूसा (अ) बिन जाफ़र जो पाक व पाकीज़ा हैं, सलाम आप

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ الطَّاهِرَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

पर ऐ अली (अ) बिन मूसा रज़ा मुर्तुज़ा, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन तक़ी (अ), सलाम आप

عَلِيَّ بْنَ مُوْسَى الرِّضَا الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ التَّقِيَّ

पर ऐ अली बिन मोहम्मद तक़ी (अ) सालेह वअमीन सलाम आप पर ऐ हसन बिन अली (अ),

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ النَّقِيَّ النَّاصِحَ الْاَمِيْنَ اَلسَّلَامُ

सलाम उनके बद के वसी पर, खुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा अपने नूर व चिराग़ पर और अपने

عَلَيْكَ يَا حَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلَى الْوَصِيِّ مِنْ بَعْدِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

वली के वली पर और अपने वसी के वसी पर और अपनी मख़लूक पर अपनी हुज्जत पर, सलाम

عَلٰى نُوْرِكَ وَ سِرَاجِكَ وَ وَلِيِّ وَلِيِّكَ وَ وَصِيِّ وَصِيِّكَ وَ حُجَّتِكَ عَلٰى

आप पर ऐ दुख़्तरे रसूले खुदा, सलाम आप पर ऐ दुख़्तरे फ़ातेमा व ख़दीजा (स) सलाम आप पर

خَلْقِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ

ऐ दुख़्तरे अमीरूल मोमिनीन (अ) सलाम आप पर ऐ दुख़्तरे हसन व हुसैन (अ) सलाम आप पर

فَاطِمَةَ وَ خَدِيْجَةَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ

ऐ दुख़्तरे वलीए खुदा, सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा की बहेन, सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा

عَلَيْكِ يَا بِنْتَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ وَلِيِّ اللّٰهِ

की फुपी, सलाम आप पर ऐ दुख़्तरे मोहम्मद बिन अली तक़ी (अ) और अल्लाह की रहमत व

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا اُخْتَ وَلِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا عَمَّةَ وَلِيِّ اللهِ

बरकात हो। सलाम आप पर खुदा हमारे और आपके दरमियान जन्नत मे तअररूफ़ अता फ़रमाए

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ التَّقِي وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

और हमको आप के गरोह मे महशूर करे और हमको वारिद करे आपके नबी के हौज़ पर और

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ عَرَّفَ اللهُ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ فِي الْجَنَّةِ وَ حَشَرَنَا فِيْ

हमको आप के जद के जाम से सेराब करे अली बिन अबी तालिब के हाथ अल्लाह का दुरूद

زُمْرَتِكُمْ وَ اَوْرَدَنَا حَوْضَ نَبِيِّكُمْ وَ سَقَانَا بِكَاْسِ جَدِّكُمْ مِنْ يَّدِ

हो आप पर। मै अल्लाह से सवाल करता हूँ के वो हम को आपके बारे मे सरूर व खुशी अता

عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكُمْ اَسْئَلُ اللهَ اَنْ يُّرِيَنَا فِيْكُمْ

फ़रमाए और हमको और आपको जमा करे आप के जद हजरत मोहम्मद (स) के गरोह मे और

السُّرُوْرَ وَ الْفَرَجَ وَ اَنْ يَّجْمَعَنَا وَ اِيَّاكُمْ فِيْ زُمْرَةِ جَدِّكُمْ مُحَمَّدٍ صَلَّى

हमसे आपकी मारेफ़त को सल्ब न करे के वो वली व क़दीर है। मै अल्लाह की क़ुरबत चाहता हूँ।

اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اَنْ لَّا يَسْلُبَنَا مَعْرِفَتَكُمْ اِنَّهٗ وَلِيٌّ قَدِيْرٌ اَتَقَرَّبُ اِلَى

आपकी मोहब्बत के वसीलेसे और आप के दुश्मनो से बराअत के ज़रिए और अल्लाह की तरफ़

اللهِ بِحُبِّكُمْ وَ الْبَرَآئَةِ مِنْ اَعْدَآئِكُمْ وَ التَّسْلِيْمِ اِلَى اللهِ رَاضِيًّا بِهٖ

सर तसलीम ख़म करने के ज़रिए उससे राज़ी रहते हुए बेग़ैर इंकार व तकब्बुर के और इस यक़ीन

غَيْرَ مُنْكِرٍ وَّ لَا مُسْتَكْبِرٍ وَّ عَلٰى يَقِيْنٍ مَا اَتٰى بِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ بِهٖ رَاضٍ

पर जिसे मोहम्मद लाए थे और उससे राजी रहते हुए मै उसके ज़रिए आपकी रजा तलब करता

نَّطْلُبُ بِذٰلِكَ وَجْهَكَ يَا سَيِّدِىْ اَللّٰهُمَّ وَ رِضَاكَ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ يَا

हूँ। ऐ मेरे मालिक मै तेरी रज़ा और आख़िरत का घर चाहता हूँ। ऐ हकीमा आप मेरी शिफ़ाअत

حَكِيْمَةُ اشْفَعِىْ لِىْ فِى الْجَنَّةِ فَاِنَّ لَكِ عِنْدَ اللّٰهِ شَاْنًا مِّنَ الشَّاْنِ اَللّٰهُمَّ

फ़रमाए जन्नत के बारे मे क्योंके आपको मरतबा है खुदा के नज़दीक जो अज़ीम है। खुदा मै तुझसे

اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَخْتِمَ لِىْ بِالسَّعَادَةِ فَلَا تَسْلُبْ مِنِّىْ مَآ اَنَا فِيْهِ وَ لَا

सवाल करता हूँ के मेरी ज़िन्दगीका ख़ात्मा नेक हो तू मुझसे वो चीज न सल्ब कर जिसमे मै हूँ व

حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ. اَللّٰهُمَّ اسْتَجِبْ لَنَا وَ تَقَبَّلْهُ

कोई ताक़त नही मगर खुदाके वास्तेसे खुदा या मेरी दुआ क़ुबूल कर अपने करमो इज़्ज़तो रहमतो

بِكَرَمِكَ وَ عِزَّتِكَ وَ بِرَحْمَتِكَ وَ عَافِيَتِكَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ

आाफ़ि-यत के ज़रिए व खुदा का दुरूद हो मोहम्मद व उनकी तमाम आलपर व सलाम हो जो

اَجْمَعِيْنَ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

सलाम का ०हक़ है। ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

लेखख: मारूफ़ है के कब्रे अस्करीऐन के पास बहुत से सियादात उज़्ज़म की क़ब्रें भी हैं जिनमें से हुसैन बिन इमाम अली नक़ी (अ.स.) भी हैं जिनके तफ़सीली हालात तो नहीं मालूम लेकिन जैसा के ख़याल है के वह सय्यद

जलीलुल क़द्र और अज़ीमुश शान थे इस लिए के बाज़ रिवायात से यह मालूम होता है के इमाम हसन अस्करी (अ.स.) और उनके भाई हुसैन बिन अली को सिबतैन कहा जाता था जिनकी तशबीह इमाम हसन (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) से दी जाती थी।

रिवायत अबू तय्यब में है के इमामे अस्र (अ.स.) की आवाज़ हुसैन से मिलती जुलती थी।

शजरतुल औलिया तालीफ़े सय्यद फ़क़ीह मोहद्दिस हक़ी अर्दकानी यज़दी ने औलादे इमाम अली नक़ी (अ.स.) के ज़ैल में नक़्ल किया है के हज़रत के फ़रज़ंद हुसैन आबिदों और ज़ाहिदों में थे और अपने भाई की इमामत के मोतरिफ़ थे।

शायद कोई तलाश करनेवाला और भी कुछ हालात तलाश कर सके जो उनकी जलालत को मज़ीद वाज़ेह कर सकें।

इसके अलावा मालूम होना चाहिए के इमाम ज़ादा सय्यद मोहम्मद जो फ़रज़ंदे इमाम अली नक़ी (अ.स.) हैं उनका मज़ार भी बलद के क़रीब सामर्राह से एक मंज़ल पर मारूफ़ और मशहूर है जहाँ बराबर करामात का ज़ुहूर होता रहता है। लोग उनकी ज़ियारत से मुशरर्फ़ होते हैं और वहाँ नज़र और हदिया पेश करते हैं और हाजत तलब करते हैं। उस इलाके के अरब हंमेशा आपकी जलालत से ख़ौफ़ज़दा रहते हैं।

आपकी करामत इस क़द्र ज़्यादा है के यहाँ उनके ज़िक्र करने का महल नहीं है। आपकी जलालत के लिए यही काफ़ी है के आप में इमामत की सलाहियतो क़ाबलियत मौजूद थी और आप इमाम हादी (अ.स.) के बड़े बेटे थे जिनके इन्तेक़ाल पर इमाम हसन अस्करी (अ.स.) ने अपने गरेबान को चाक किया था।

और हमारे उसताद सिक़तुल इस्लाम नूरी उन बुज़ुर्गवार की ज़ियारत पर बड़ा अज़ीम एतेबार रखते थे और उनके रौज़े व ज़रीह की तामीर में काफ़ी कोशिश की थी। आपकी ज़रीह पर जो क़ुब्बा है, उस पर यह लिखा है:

هٰذَا مَرْقَدُ السَّيِّدِ الْجَلِيْلِ اَبِيْ جَعْفَرٍ مُحَمَّدِ بْنِ الْاِمَامِ اَبِي الْحَسَنِ

यह मरक़दे सय्यदे जलील अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अबुल हसन अली हादी है जो अज़ीमुश शान

عَلِيِّ الْهَادِيْ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَظِيْمُ الشَّانِ جَلِيْلُ الْقَدْرِ كَانَتِ

और जलीलुल क़द्र थे और लोगों को ख़याल था के अपने पिता के बाद आप ही इमाम होंगे। मगर

الشِّيْعَةُ تَزْعَمُ اَنَّهُ الْاِمَامُ بَعْدَ اَبِيْهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَلَمَّا تُوُفِّيَ

जब आपका इन्तेक़ाल हो गया तो आपके पिदरे बुज़ुर्गवार ने इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की

نَصَّ اَبُوْهُ عَلٰى اَخِيْهِ اَبِيْ مُحَمَّدٍ الزَّكِيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَ قَالَ لَهُ اَحْدِثْ

इमामत का एलान कर दिया और फ़रमाया के शुक्रे खुदा करो के परवरदिगारे आलम ने तुम्हारे

لِلّٰهِ شُكْرًا فَقَدْ اَحْدَثَ فِيْكَ اَمْرًا خَلَّفَهُ اَبُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ طِفْلًا وَ

बारे में इस अम्रे अज़ीम का एलान कर दिया है। आप के पिदरे बुज़ुर्गवार ने बचपन में आप को

قَدِمَ عَلَيْهِ فِيْ سَامِرَّآءِ مُشْتَدًّا وَ نَهَضَ اِلَى الرُّجُوْعِ اِلَى الْحِجَازِ وَلَمَّا

मदीने में छोड़ दिया था। इसके बाद जवानी में आप सामर्राह आ गए। उसके बाद जब हिजाज़

بَلَغَ بَلَدَ عَلٰى تِسْعَةِ فَرَاسِخَ مَرِضَ وَتُوُفِّيَ وَ مَشْهَدُهُ هُنَاكَ وَلَمَّا تُوُفِّيَ

वापसी का इरादा किया तो नौ फ़रसख़ पर मंज़ले बलद पहुँचने के बाद बीमार हुए और वहीं

شَقَّ اَبُوْ مُحَمَّدٌ عَلَيْهِ ثَوْبَهُ وَ قَالَ فِيْ جَوَابِ مَنْ عَابَهُ عَلَيْهِ قَدْ شَقَّ

इंतेक़ाल फ़रमाया और आपका रौज़ा वहीं है। आपकी वफ़ात पर इमाम हसन अस्करी (अ.स.) ने

مُوْسٰى عَلٰى اَخِيْهِ هٰرُوْنَ وَ كَانَتْ وَفَاتُهٗ فِيْ حُدُوْدِ اِثْنَيْنِ وَ خَمْسِيْنَ

अपने गरेबान को चाक किया और जब लोगों ने एतेराज़ किया तो फ़रमाया के मूसा ने भी हारून

بَعْدَ الْمِأَتَيْنِ.

के इंतेक़ाल पर ऐसा ही किया था। आपका इंतेक़ाल सन २५३ हिजरी के क़रीब हुआ।

मुख़्तसर यह के जब इमाम अली नक़ी व इमाम अस्करी (अ.स.) को विदा करना चाहे तो क़ब्रे मुतहहर के पास खड़ा हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَلِيَّيِ اللّٰهِ اَسْتَوْدِعُكُمَا اللّٰهَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكُمَا

सलाम आप दोनो पर ऐ अल्लाह के वली। मै आप दोनो को खुदा को सौपँता हूँ और आप दोनो पर सलाम

السَّلَامُ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ بِمَا جِئْتُمَا بِهٖ وَ دَلَلْتُمَا عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ

भेजता हूँ हम अल्लाह व रसूल पर ईमान लाए और उसपर जो आप लाए और जिसकी आपने हिदायत

اكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِيْ

की खुदाया हमको गवाहों मे लिख दे। खुदाया इसको हमारी आख़री ज़ियारत न क़रार दे और हमको

اِيَّاهُمَا وَ ارْزُقْنِيَ الْعَوْدَ اِلَيْهِمَا وَ احْشُرْنِيْ مَعَهُمَا وَ مَعَ آبَائِهِمَا

तौफ़ीक़ अता कर बार बार यहाँ आने की और हमको महशूर कर उन दोनो के साथ और उनके आबाए

الطَّاهِرِيْنَ وَ الْقَآئِمِ الْحُجَّةِ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمَآ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ताहेरीन के साथ और उनकी ज़ुर्rयत मे क़ाएम हुज्जत के साथ। ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले।

दूसरा मक़ाम - पाक सरदाब के आदाब और हज़रत बक़ीयतुल्लाह (अ.त.फ.श.) की ज़ियारत

ज़ियारत से पहले ज़रूरत है के उस अम्र की वज़ाहत कर ली जाए जो किताबे हदिया में किताबे तहिया से नक़्ल की गई है और वह यह है के यह पाक सरदाब उन सज्जनों के घर में था।

और वहाँ दाख़िल होने का रास्ता नई तामीर और हरम और क़ुब्बे बन्ने से पहले सरहाने की तरफ़ क़ब्रे जनाबे नरजिस था और शायद इस समय रवाक़ में हो के वहीं से लोग नीचे जाते थे और वहाँ एक दालान तामीर था।

जब वहाँ से गुज़रते थे तो दरे सरदाबे ग़ैबत तक पहुँच जाते थे जिस पर आज कल आईना कारी हो गई और क़िबले की तरफ़ सहेन में रास्ता भी बन गया है और वह दरवाज़ा जो दरमियाने सरदाब से खुलता था वहाँ फ़िल हाल एक मेहराबी शक्ल का दरवाज़ा बना हुआ है।

उस ज़माने में तीनों आइम्मा (अ) के बारे में तमाम आमाल एक ही हरम में होते थे।

इस लिए शहीदे अव्वल ने ज़ियारते अस्करीऐन के बाद ही ज़ियारते सरदाब का ज़िक्र किया उसके बाद ज़ियारते नरिजस ख़ातून (स) का ज़िक्र किया है। तक़रीबन एक सौ साल से ज़्यादा का अरसा हुआ के अहमद खाँ दुमबली ने बड़ी रकम ख़र्च कर के दोनो आइम्मा (अ) के हरम को वैसे बना दिया जैसे आज है।

और उनको अलग कर के रौज़ा व रवाक़ व क़ुब्बा बना दिया और पाक सरदाब के लिए अलग सहेन और एवान बना दिया जिसके लिए अलग रास्ता है।

और उसकी सीड़ियां और दहलीज़ भी है।

एक सरदाब मुस्ताक़िल औरतों के लिए जैसा के आज-कल देखा जा सकता है।

अब पहला रास्ता उसकी सीड़ियां और दरवाज़ा बंद हो गया है और उसकी कोई निशानी भी नहीं है।

लेहाज़ा बाज़ आदाब का अब महल ही ख़त्म हो गया है।

लेकिन ज़ियारते असल सरदाबे शरीफ़ में कोई तग़य्युर नहीं हुआ।
अब जहाँ तक इज़्ने दुख़ूल का ताल्लुक़ है तमाम ज़ियारात को देखने के बाद और ओलमा की तसरीहात को देखने के बाद हर मासूम के हरम में इन आदाब की रिआयत ज़रूरी है और बगैर इज़्न के दाख़ल होना सही नहीं है।
इसके बाद हम ज़ियारत का तरीक़ा शुरू करते हैं।
वाज़ेह रहे के इज़्ने दुख़ूले ख़ास सरदाबे मुतहहर वही ज़ियारत जो अभी बाद में आने वाली है और जिसका आगाज़ अस्सलामो अलैक या ख़लीफ़तल्लाह से होता है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ اللهِ

उसको सरदाब के दरवाज़े पर खड़े हो कर दाख़ले से पहले पढ़े।
दूसरा इज़्ने दुख़ूल जिसको सय्यद इब्ने ताऊस ने ज़िक्र किया है तो तक़रीबन इसी से मिलता जुलता है और उसको ज़ियारत के वर्ग-२ में नक़्ल किया जा चुका है।
एक इज़्ने दुख़ूल जिसको अल्लामा मजलिसी ने क़दीम नुस्ख़े से नक़्ल किया है जिसकी इब्तेदा अल्लाहुम्म इन्न हाज़ेही बुकअतुन तहरतहा व अख़वतुन तर्रफतहा है के हमने इन सबको भी इज़्ने दुख़ूले अमूमी में नक़्ल कर दिया है।

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذِهٖ بُقْعَةٌ طَهَّرْتَهَا وَ عَقْوَةٌ شَرَّفْتَهَا...

बहर हाल इन कलेमात से इजाज़त लेने के बाद आगे बढ़े और पाक सरदाब में दाख़िल हो कर आं हज़रत (अ) की ज़ियारत करे। जिस प्रकार खुद हज़रत ने दस्तूर दिया है।
शेख़े जलील अहमद बिन अबू तालिब तबरसी ने अपनी किताबे शरीफ़ एहतेजाज में यह रिवायत नक़्ल की है के इमामे अस्र (अ) की तरफ़ से मोहम्मद हमीदी के पास ख़त आया जिसमे सवालात के जवाबात के बाद लिखा था:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لَا لِاَمْرِهٖ تَعْقِلُوْنَ وَ لَا مِنْ اَوْلِيَآئِهٖ

ब नामे खुदा रहमानो रहीम तुम लोग न उसके अम्र को समझते हो और न उसके औलिया

تَقْبَلُوْنَ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِى النُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ اَلسَّلَامُ

से क़बूल करते हो। यह अल्लाह की हिकमते बालेग़ा है मगर लोगों को डरना भी फ़ायदा नहीं

عَلَيْنَا وَ عَلٰى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ.

पहोंचाता है। सलाम हो हम पर और अल्लाह के सालेह बंदों पर।

बहर हाल जब कभी चाहो के हमारे ज़रिए खुदा की तरफ़ या हमारी तरफ़ तवज्जोह करो तो वैसे कहो जैसे परवरदिगार ने फ़रमाया है।

سَلَامٌ عَلٰى آلِ يٰسٓ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا دَاعِىَ اللهِ وَ رَبَّانِيَّ اٰيَاتِهٖ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आले यासीन पर, सलाम आप पर ऐ अल्लाह की तरफ़ से उसकी तरफ़ बुलाने वाले और

عَلَيْكَ يَا بَابَ اللهِ وَ دَيَّانَ دِيْنِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ اللهِ وَ نَاصِرَ

उसकी आयातों के मज़हर, सलाम आप पर ऐ बाबे खुदा और हाफ़ज़े दीने खुदा, सलाम आप पर ऐ

حَقِّهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ دَلِيْلَا اِرَادَتِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

खुदा के ख़लीफ़ा और उसके हक के नासिर, सलाम आप पर ऐ हुज्ज़ते खुदा और रहनुमाए बंदेगाने

تَالِىَ كِتَابِ اللهِ وَ تَرْجُمَانَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ فِىْ اٰنَآءِ لَيْلِكَ وَ اَطْرَافِ

खुदा। सलाम आप पर ऐ किताबे खुदा की तिलावत करनेवाले और उसके तरजुमान, सलाम आप पर

نَهَارِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَقِيَّةَ اللهِ فِىْ اَرْضِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ऐ बक़ीयतुल्लाह उसकी ज़मीन मे, सलाम आप पर ऐ अहदो पैमाने खुदा खुदा ने वो अहेद लिया और

مِيْثَاقَ اللهِ الَّذِىْ اَخَذَهٗ وَ وَكَّدَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَعْدَ اللهِ الَّذِىْ

मोहकम व मवक्केदा किया, सलाम आप पर ऐ वादाए खुदा जिसकी उसने ज़मानत ली, सलाम आप पर

ضَمِنَهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَلَمُ الْمَنْصُوْبُ وَ الْعِلْمُ الْمَصْبُوْبُ

ऐ अद्ल के परचम के फैलानेवाले और इल्मे मुस्तहकम और पनाहगाहे मख़लूक और रहमत वासेआ

وَ الْغَوْثُ وَ الرَّحْمَةُ الْوَاسِعَةُ وَعْدًا غَيْرَ مَكْذُوْبٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

और वादए खुदा जिस मे कोई किज़्ब नही है, सलाम आप पर जब आप क़याम फ़रमाते हैं, सलाम आप

حِيْنَ تَقُوْمُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تَقْعُدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تَقْرَءُ

पर जब आप क़ऊद फ़र्माते हैं, सलाम आप पर जब आप क़िरात व तफ़सीर करते हैं। सलाम आप

وَ تُبَيِّنُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تُصَلِّىْ وَ تَقْنُتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ

पर जब आप नमाज़ व क़ुनूत पढ़ते हैं। सलाम आप पर जब आप रूकूअ व सजदा करते हैं। सलाम

تَرْكَعُ وَ تَسْجُدُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تُهَلِّلُ وَ تُكَبِّرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आप पर जब आप तहलील व तकबीर कहते हैं। सलाम आप पर जब आप हम्द व इस्तेग़फ़ार करते

حِيْنَ تَحْمَدُ وَ تَسْتَغْفِرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تُصْبِحُ وَ تُمْسِىْ اَلسَّلَامُ

हैं। सलाम आप पर जब आप सुबह व शाम करते है। सलमा आप पर रात मे जब वो तारीक होती

عَلَيْكَ فِى اللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى وَ النَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

है और दिन मे जब वो रौशन होता है, सलाम आप पर ऐ इमामे महफ़ूज़, सलाम आप पर ऐ तमाम

اَلْاِمَامُ الْمَاْمُوْنُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُقَدَّمُ الْمَاْمُوْلُ اَلسَّلَامُ

आलम से मुक़द्दम और उम्मीदे मख़लूक, सलाम आप पर सलाम की तमाम किस्मों के साथ मै आपको

عَلَيْكَ بِجَوَامِعِ السَّلَامِ اُشْهِدُكَ يَا مَوْلَایَ اَنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا

गवाह बनाता हूँ। ऐ मेरे मौला के मै गवाही देता हूँ@ के खुदा के अलावा कोई माबूद नही है, वो एक

اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ لَا حَبِيْبَ اِلَّا هُوَ

है, उसका कोई शरीक नही है और मोहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं कोई हबीब नही है उनके और

وَ اَهْلُهٗ وَ اُشْهِدُكَ يَا مَوْلَایَ اَنَّ عَلِيًّا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ حُجَّتُهٗ وَ الْحَسَنَ

उनके अहलेबैत (अ) के अलावा और मै आप को गवाह बनाता हूँ ऐ मेरे मौला के अली (अ) अमीरूल

حُجَّتُهٗ وَ الْحُسَيْنَ حُجَّتُهٗ وَ عَلِيَّ ابْنَ الْحُسَيْنِ حُجَّتُهٗ وَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ حُجَّتُهٗ

मोमिनीन (अ) उस की हुज्जत हैं और हसन (अ) उसकी हुज्जत हैं और हुसैन उस की हुज्जत हैं और अली

وَ جَعْفَرَ بْنَ مُحَمَّدٍ حُجَّتُهٗ وَ مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ حُجَّتُهٗ وَ عَلِيَّ بْنَ مُوْسٰى

बिन हुसैन (अ) उसकी हुज्जत हैं और मोहम्मद बिन ली उसकी हुज्जत हैं और जाफ़र बिन मोहम्मद उसकी

حُجَّتُهٗ وَ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ حُجَّتُهٗ وَ عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ حُجَّتُهٗ وَ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ

हुज्जत हैं और मुसा बिन जाफ़र उसकी हुज्जत हैं और हसन बिन अली उसकी हुज्जत हैं और मै गवाही देता

حُجَّتُهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ حُجَّةُ اللّٰهِ اَنْتُمُ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ اَنَّ رَجْعَتَكُمْ

हूँ केआप खुदा की हुज्जत हैं आप अव्वल व आख़िर हैं आपकी रजअत हक़ है उसमे कोई शक नही है

حَقٌّ لَا رَيْبَ فِيْهَا يَوْمَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ

जिस दिन किसी को उसका ईमान फ़ाएदा न देगा अगर उससे क़ब्ल ईमन न लाया हो और अपने ईमान से

قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْ اِيْمَانِهَا خَيْرًا وَ اَنَّ الْمَوْتَ حَقٌّ وَ اَنَّ نَاكِرًا وَ

नेकी को हासिल न किया हो और ये के मौत हक़ है और मुनकिर व नकीर हक़ हैं और मै गवाही देता हूँ

نَكِيْرًا حَقٌّ وَ اَشْهَدُ اَنَّ النَّشْرَ حَقٌّ وَ الْبَعْثَ حَقٌّ وَ اَنَّ الصِّرَاطَ حَقٌّ

के रोज़े नश्र व क़यामत हक़ है और मुर्दों का उठाया जाना हक़ है और सिरात हक़ है और मिरसाद हक है

وَ الْمِرْصَادَ حَقٌّ وَ الْمِيْزَانَ حَقٌّ وَ الْحَشْرَ حَقٌّ وَ الْحِسَابَ حَقٌّ وَ الْجَنَّةَ

और मीज़ान हक़ है और हर्श हक़ है और हिसाब हक़ है और जन्नत हक़ है और जहन्नम हक़ है और वादा

حَقٌّ وَ النَّارَ حَقٌّ وَ الْوَعْدَ وَ الْوَعِيْدَ بِهِمَا حَقٌّ يَا مَوْلَايَ شَقِيَ مَنْ

व वईद हक़ है। ऐ मेरे मौला वो बदबख़्त है जिसने आपसे मुख़ालेफ़त की और वो सईद है जिसने आप

خَالَفَكُمْ وَ سَعِدَ مَنْ اَطَاعَكُمْ فَاَشْهَدُ عَلٰى مَا اَشْهَدْتُكَ عَلَيْهِ وَ

की इताअत की। आप गवाह हो जाएं उसपर जिसपर मैने आपको गवाह बनाया है। मै आपका दोस्त

اَنَا وَلِيٌّ لَكَ بَرِيْءٌ مِنْ عَدُوِّكَ فَالْحَقُّ مَا رَضِيْتُمُوْهُ وَ الْبَاطِلُ مَا

और आपके दुश्मनो से बरी हूँ हक़ वही है जिसको आपने पसंद किया है और बातिल वो है जिससे आप

اَسْخَطْتُمُوْهُ وَ الْمَعْرُوْفُ يَا اَمَرْتُمْ بِهٖ وَ الْمُنْكَرُ مَا نَهَيْتُمْ عَنْهُ

नाराज़ हुए। मारूफ़ वो है जिसका आप ने हुकुम दिया और मुन्कर वो है जिससे आपने मना किया।

فَنَفْسِیْ مُؤْمِنَةٌ بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ بِاَمِیْرِ

मेरा नफ़्स उस खुदा पर ईमान लाया है जो अकेला और ला शरीक है और उसके रसुल और अमीरूल

الْمُؤْمِنِیْنَ وَبِكُمْ یَامَوْلَایَ اَوَّلِكُمْ وَاٰخِرِكُمْ وَنُصْرَتِیْ مُعَدَّةٌ لَكُمْ وَ

मोमिनीन (अ) और आपके अव्वल व आख़िर सब पर ईमान लाया है ऐ मेरे मौला आप के लिए मेरी

مَوَدَّتِیْ خَالِصَةٌ لَكُمْ اٰمِیْنَ اٰمِیْنَ.

मदद हाज़र है और मेरी मोहब्बत ख़ालिस है। खुदाया हमारी दुआ को क़ुबूल फ़र्मा। क़ुबूल फरमा।

उसके बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ رَحْمَتِكَ وَ كَلِمَةِ نُوْرِكَ

खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद पर जो मेरे सीना को नूर ईमान से और

وَ اَنْ تَمْلَاَ قَلْبِیْ نُوْرَ الْیَقِیْنِ وَ صَدْرِیْ نُوْرَا الْاِیْمَانِ وَ فِكْرِیْ

मेरी फ़िक्र को यकीन के नूर से और मेरे इरादे को इल्म के नूर से और मेरी क़ुव्वत को नूरे अमल से और

نُوْرَالنِّیَّاتِ وَ عَزْمِیْ نُوْرَ الْعِلْمِ وَ قُوَّتِیْ نُوْرَ الْعَمَلِ وَ لِسَانِیْ

मेरी ज़ुबान को नूरे सदाक़त से और मेरे दीन को नूरे बसीरत से और मेरी अँखों को नूरे बसीरत से और

نُوْرَالصِّدْقِ وَ دِیْنِیْ نُوْرَ الْبَصَآئِرِ مِنْ عِنْدِكَ وَ بَصَرِیْ نُوْرَ

मेरे काम को नूरे हिकमत से और मेरी मोहब्बत को मोहम्मद व आले मोहम्मद की विलायत के नूर से

الضِّيَآءِ وَ سَمْعِيْ نُوْرَ الْحِكْمَةِ وَ مَوَدَّتِيْ نُوْرَ الْمُوَالَاةِ لِمُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ

मामूर कर दे यहाँ तक के जब मै तुझ से मुलाक़ात करूँ तो तेरा अहदो मिसाक़ पूरा कर चुका होऊँ ताके

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ حَتّٰى اَلْقَاكَ وَ قَدْ وَفَيْتُ بِعَهْدِكَ وَ مِيْثَاقِكَ

तू मुझको अपनी रहमत से ढाँक ले ऐ वली और ऐ सतुदा सिफाते खुदा दुरूद भेज मोहम्मद पर जो तेरी

فَتُغَشِّيَنِيْ رَحْمَتُكَ يَا وَلِيُّ يَا حَمِيْدُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ حُجَّتِكَ فِيْ

ज़मीन पर तेरी हुज्जत है और तेरे शहरों मे तेरे ख़लीफ़ा हैं और तेरी राह की तरफ़ बुलाने वाले हैं और

اَرْضِكَ وَ خَلِيْفَتِكَ فِيْ بِلَادِكَ وَ الدَّاعِيْ اِلٰى سَبِيْلِكَ وَ الْقَآئِمِ

तेरे अद्ल क साथ क़याम करनेवाले हैं और तेरे अम्र के लिए लोगों को उभारनेवाले हैं मोमीनों के वली

بِقِسْطِكَ وَ النَّآئِرِ بِاَمْرِكَ وَلِيِّ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ بَوَارِ الْكَافِرِيْنَ وَ مُجَلِّي

और काफ़िरों को ख़त्म करनेवाले ज़ुलमत को रौशनी देनेवाले और हक़ को मुनव्वर करनेवाले हिकमत

الظُّلْمَةِ وَ مُنِيْرِ الْحَقِّ وَ النَّاطِقِ بِالْحِكْمَةِ وَ الصِّدْقِ وَ كَلِمَتِكَ

और सदाक़त के साथ कलाम करने वाले और तेरे कलमए ताम्मा हैं तेरी ज़मीन मे, बंदए ख़लिस हैं,

التَّآمَّةِ فِيْ اَرْضِكَ الْمُرْتَقِبِ الْخَآئِفِ وَ الْوَلِيِّ النَّاصِحِ سَفِيْنَةِ

मराक़िबे फ़रमाने खुदा मे ख़ाएफ़ और वलीए नासेह हैं, नजात का सफ़ीना हैं और हिदायत की निशानी हैं

النَّجَاةِ وَ عَلَمِ الْهُدٰى وَ نُوْرِ اَبْصَارِ الْوَرٰى وَ خَيْرِ مَنْ تَقَمَّصَ وَ

और मख़लूक की निगाहों का नूर हैं और बेहतरीन वो इंसान हैं जिन्होने क़मीज़ व रिदा पहनी, वो अंधेपन

ارْتَدٰى وَ مُجَلِّى الْعَمٰى الَّذِىْ يَمْلَأُ الْاَرْضَ عَدْلًا وَّ قِسْطًا كَمَا

को रौशनी देने वाले जो ज़मीन को अदालत व इन्साफ़ से भर देंगे जबके वो ज़ुल्म व जौर से भरी होगी।

مُلِئَتْ ظُلْمًا وَّ جَوْرًا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा अपने वला पर जिनकी इताअत को तूने फ़र्ज़

وَلِيِّكَ وَ ابْنِ اَوْلِيَآئِكَ الَّذِيْنَ فَرَضْتَ طَاعَتَهُمْ وَ اَوْجَبْتَ

किया है और जिनके हक़ को वाजिब किया है और जिन के हक़ को वाजिब किया है और जिन से गंदगी

حَقَّهُمْ وَ اَذْهَبْتَ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ طَهَّرْتَهُمْ تَطْهِيْرًا اَللّٰهُمَّ

को दूर रखा है और जिनको पाक रखा है जो पाक रखने का हक़ था। खुदाया उनकी नुसरत फ़र्मा और

انْصُرْهُ وَ انْتَصِرْ بِهٖ لِدِيْنِكَ وَ انْصُرْ بِهٖ اَوْلِيَآئَكَ وَ اَوْلِيَآئَهٗ وَ

उनके ज़रिए अपने दीन की नुसरत कर और उनके ज़रिए अपने दोस्तों और उस के दोस्तों और शीयों

شِيْعَتَهٗ وَ اَنْصَارَهٗ وَ اجْعَلْنَا مِنْهُمْ اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ شَرِّ كُلِّ بَاغٍ

और मददगारों की मदद फ़र्मा और हमको उन्हीं मे से क़रार देदे। खुदाया उनको हर बाग़ी और सरकश

وَّ طَاغٍ وَّ مِنْ شَرِّ جَمِيْعِ خَلْقِكَ وَ احْفَظْهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ

के शर से महफ़ूज़ फ़र्मा व तमाम मख़लूक़ के शरसे व उनकी हिफ़ाज़त कर दाहिने बाएं आगे पीछे व हर

وَ عَنْ يَّمِيْنِهٖ وَ عَنْ شِمَالِهٖ وَ احْرُسْهُ وَ امْنَعْهُ مِنْ اَنْ يُّوْصَلَ اِلَيْهِ

जानिब से व उनको महफ़ूज़ रख व रोकदे उनसे के उन तक कोई बुराई पहुँच सके व उनकी हिफ़ाज़त से

بِسُوْٓءٍ وَّ احْفَظْ فِيْهِ رَسُوْلَكَ وَ اٰلَ رَسُوْلِكَ وَ اَظْهِرْ بِهِ الْعَدْلَ وَ

अपने रसूल व आले रसुल की हिफ़ाज़त कर व उनके ज़रिए अद्ल को क़ाएम कर व उनकी ताईद कर

اَيِّدْهُ بِالنَّصْرِ وَ انْصُرْ نَاصِرِيْهِ وَ اخْذُلْ خَاذِلِيْهِ وَ اقْصِمْ قَاصِمِيْهِ

नुसरत के ज़रिए व उनके नासिरों की मदद कर व ज़लील कर उनको रूसवा करनेवालों को और उनके

وَ اقْصِمْ بِهٖ جَبَابِرَةَ الْكُفْرِ وَ اقْتُلْ بِهِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنَافِقِيْنَ وَ

दुश्मनों की कमर तोड़ दे और उनके ज़रिए काफ़िर जाबिरों की कमर तोड़ दे व उनके ज़रिए कुफ़्फ़ार व

جَمِيْعَ الْمُلْحِدِيْنَ حَيْثُ كَانُوْا مِنْ مَّشَارِقِ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبِهَا

मुनाफ़क़ीन व तमाम मुलहेदान को क़त्ल करदे जहाँ भी हों। ज़मीन के मशरिक मे या मग़ारिब मे खुशकी

بَرِّهَا وَ بَحْرِهَا وَ امْلَأْ بِهِ الْاَرْضَ عَدْلًا وَّ اَظْهِرْ بِهٖ دِيْنَ نَبِيِّكَ صَلَّى

मे या तरी मे और उनके ज़रिए ज़मीन को अदालत से भर दे और उनके ज़रिए अपने नबी के दीन को

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اجْعَلْنِيْ اَللّٰهُمَّ مِنْ اَنْصَارِهٖ وَ اَعْوَانِهٖ وَ اَتْبَاعِهٖ وَ

ग़ालिब बना (अल्लाह का दुरूद हो उन पर व उन की आल पर) और मुझको खुदाया उनके नासिरों,

شِيْعَتِهٖ وَ اَرِنِيْ فِيْٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ مَا يَاْمُلُوْنَ وَ فِيْ

मददगारां और इत्तेबा करने वालों और शियों मे क़रार दे और मुझको दिखा दे वो चीज आले मोहम्मद

عَدُوِّهِمْ مَا يَحْذَرُوْنَ اِلٰهَ الْحَقِّ اٰمِيْنَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَآ

के बारे जिस की वो उम्मीद रखते हैं और उनके दुश्मनो के बारे मे वो चीज जिससे वो डरते हैं ऐ खुदाए

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

बरहक ये दुआ क़ुबूल करले ऐ साहेबे जलालत व इक़रार ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

दूसरे

जो ओलमा की मोतबर किताबों से मनक़ूल है के हरम के दरवाज़े पर खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ اللهِ وَ خَلِيْفَةَ اٰبَآئِهِ الْمَهْدِيِّيْنَ

सलाम आप पर ऐ ख़लिफ़ए खुदा और अपने हिदायत याफ़ता आबा के ख़लीफ़ा। सलाम आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَصِيَّ الْاَوْصِيَآءِ الْمَاضِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

गुज़श्ता औसिया के वसी। सलाम आप पर ऐ रब्बुल आलमीन के राज़ के महफ़ूज़ करने वाले। सलाम

يَا حَافِظَ اَسْرَارِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَقِيَّةَ اللهِ مِنَ

आप पर ऐ खुदा के ख़ास व बरगुज़ीदा बन्दा मे बक़ीय तुल्लह। सलाम आप पर ऐ रौशन नूरों के फ़रजंद।

الصَّفْوَةِ الْمُنْتَجَبِيْنَ. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ الْاَنْوَارِ الزَّاهِرَةِ

सलाम आप पर ऐ रौशन श०ख्सीयतों के फ़रज़ंद। सलाम आप पर ऐ इतरते ताहेरा के फ़रज़ंद। सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ الْاَعْلَامِ الْبَاهِرَةِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ

आप पर ऐ उलूमे नब्वी के मादन। सलाम आप पर अल्लाह के बाबे करम जिसके अलावा किसी और से

الْعِتْرَةِ الطَّاهِرَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَعْدِنَ الْعُلُوْمِ النَّبَوِيَّةِ.

नही आया जाता। सलाम आप पर ऐ राहे खुदा के जो इस के अलावा किसी और राह पर चला वो हलाक

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَابَ اللهِ الَّذِىْ لَا يُؤْتٰى اِلَّا مِنْهُ اَلسَّلَامُ

हो गया। सलाम आप पर ऐ शजरए तूबा और सिद्रतुल मुन्तहा के नूरे निगाह। सलाम आप पर ऐ खुदा के

عَلَيْكَ يَا سَبِيْلَ اللهِ الَّذِىْ مَنْ سَلَكَ غَيْرَهٗ هَلَكَ اَلسَّلَامُ

वो नूर जिसे बुझाया नही जा सकता। सलाम आप पर ऐ खुदा की हुज्जत जिसको छिपाया नही जा सकता।

عَلَيْكَ يَا نَاظِرَ شَجَرَةِ طُوبٰى وَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

सलाम आप पर ऐ खुदा की हुज्जत सब पर जो आसमान मे और ज़मीन मे हैं। सलाम आप पर उस शख़्स का

نُوْرَ اللهِ الَّذِىْ لَا يُطْفٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ الَّتِىْ لَا تَخْفٰى

सलाम जिसने आप को इस तरह पहचाना जैसा के खुदा ने पहचनवाया और आप की तौसिफ की उन बाज

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ عَلٰى مَنْ فِى الْاَرْضِ وَ السَّمَآءِ

सिफ़ात वे साथ जिन के आप अहेल हैं और उनसे बुलंदतर हैं। मै गवाही देता हूँ के आप हुज्जत हैं उनपर जो

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ سَلَامَ مَنْ عَرَفَكَ بِمَا عَرَّفَكَ بِهِ اللهُ وَ نَعَتَكَ

गुज़र गए और जो बाक़ी हैं और बेशक आपका गोराह ग़ालिब है और आपके दोस्त ही कामयाब हैं और

بِبَعْضِ نُعُوْتِكَ الَّتِىْ اَنْتَ اَهْلُهَا وَ فَوْقَهَا. اَشْهَدُ اَنَّكَ الْحُجَّةُ

आप के दुश्मन घाटे मे हैं और आप हर इल्म के ख़ज़ीनादार हैं और हर बन्द के खोलनेवाले हैं और हर हक़

عَلٰى مَنْ مَّضٰى وَ مَنْ بَقِىَ وَ اَنَّ حِزْبَكَ هُمُ الْغَالِبُوْنَ وَ اَوْلِيَآئَكَ

को साबित करनेवाले और हर बातिल के मिटाने वाले हैं। मैने आपको पसंद किया है ऐ मौला इमाम, हादी,

هُمُ الْفَآئِزُوْنَ وَ اَعْدَآئَكَ هُمُ الْخَاسِرُوْنَ وَ اَنَّكَ خَازِنُ كُلِّ

वली और मुर्शिद के तौर पर। मै आपका कोई बदल नही चाहता हूँ अैर आप के अलावा किसी को वली

عِلْمٍ وَّ فَاتِقُ كُلِّ رَتْقٍ وَّ مُحَقِّقُ كُلِّ حَقٍّ وَّ مُبْطِلُ كُلِّ بَاطِلٍ

नही बनाता हूँ। मै गवाही देता हूँ के आप वो हक़े साबित हैं जिसमे कोई ऐब नही है और आपके बारे मे खुदा

رَضِيْتُكَ يَا مَوْلَايَ اِمَامًا وَ هَادِيًا وَّ وَلِيًّا وَّ مُرْشِدًا لَا اَبْتَغِيْ بِكَ

का वादा बरहक़ है मै तूले ग़ैबत और बाद मुद्दत की वजह से उसमे कोई शक नही रखता और न हैरतज़दा

بَدَلًا وَ لَا اَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِكَ وَلِيًّا. اَشْهَدُ اَنَّكَ الْحَقُّ الثَّابِتُ

होता हूँ उन लोगोंके साथ जो आप से बेख़बर हैं और नही पहचाँते हैं बल्के हमेशा मोत्वक़ा व मुन्तिज़र

الَّذِيْ لَا عَيْبَ فِيْهِ وَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ فِيْكَ حَقٌّ لَّا اَرْتَابُ لِطُوْلِ

आपकी सलतनत के दिनों का हूँ और आप ही वो शाफ़े हैं जिस से कोई निज़ा नही की जा सकती है और

الْغَيْبَةِ وَ بُعْدِ الْاَمَدِ وَ لَا اَتَحَيَّرُ مَعَ مَنْ جَهِلَكَ وَ جَهِلَ بِكَ

आपही वो वली हैं जिन से कोई मुक़ाबला नही कर सकता है। अल्लाह ने आपको ज़ख़ीरा बनाया है दीन की

مُنْتَظِرٌ مُّتَوَقِّعٌ لِاَيَّامِكَ وَ اَنْتَ الشَّافِعُ الَّذِيْ لَا تُنَازَعُ وَ الْوَلِيُّ

मदद के लिए और मोमिनों के ग़लबे व इ०ज़्०ज्त के लिए और इंकार करनेवाले सरकश से इंतेक़ाम के

الَّذِيْ لَا تُدَافَعُ ذَخَرَكَ اللّٰهُ لِنُصْرَةِ الدِّيْنِ وَ اِعْزَازِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

लिए। मै गवाही देता हूँ के आपकी मोहब्बत के ज़रिए आमाल क़ुबूल किए जाते हैं और अफआल पाको

الْاِنْتِقَامِ مِنَ الْجَاحِدِيْنَ الْمَارِقِيْنَ. اَشْهَدُ اَنَّ بِوَلَايَتِكَ

पाकीज़ा होते हैं और नेकियाँ बढ़ जाती हैं और बुराईयाँ ख़त्म हो जाती हैं। तो जो शख़्स आपकी विलायत के

تُقْبَلُ الْاَعْمَالُ وَ تُزَكَّى الْاَفْعَالُ وَ تُضَاعَفُ الْحَسَنَاتُ فَمَنْ

साथ आए और आपकी इमामतका एतेराफ़ करे उस वे आमाल क़ुबूल किए जाएगें और उस के अक़वाल

جَآءَ بِوِلَايَتِكَ وَ اعْتَرَفَ بِاِمَامَتِكَ قُبِلَتْ اَعْمَالُهٗ وَ صُدِّقَتْ

सच माने जाएगें उस की नेकियाँ बढ़ा दी जाएँगी। उस की बुराइयाँ महव करदी जाएगी और जो आप की

اَقْوَالُهٗ وَ تَضَاعَفَتْ حَسَنَاتُهٗ وَ مُحِيَتْ سَيِّئَاتُهٗ وَ مَنْ عَدَلَ

मोहब्बत से पलट गया और आप की मारेफ़त से जाहिल रहा और आपके मुक़ाबले मे किसी दूसरे को

عَنْ وِلَايَتِكَ وَ جَهِلَ مَعْرِفَتَكَ وَ اسْتَبْدَلَ بِكَ غَيْرَكَ كَبَّهُ اللّٰهُ

बतौर बदल चाहा खुदा उसको औंधे मूँह जहन्नम मे डाल देगा और उस के किसी अमल को क़ुबूल नही

عَلٰى مِنْخَرِهٖ فِي النَّارِ وَلَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا. اُشْهِدُ

करेगा और मिज़ाने हिसाब मे उसके अमल की कोई क़ीमत न होगा। मै अल्लाह को और उसके मलाएका

اللّٰهَ وَ اُشْهِدُكَ يَا مَوْلَايَ بِهٰذَا ظَاهِرُهٗ كَبَاطِنِهٖ وَ سِرُّهٗ

को गवाह बनता हूँ और ऐ मेरे मौला आपको गवाह बनाता हूँ इस बात पर जिसका ज़ाहिर बातिन की तरह

كَعَلَانِيَتِهٖ وَ اَنْتَ الشَّاهِدُ عَلٰى ذٰلِكَ وَ هُوَ عَهْدِيْ اِلَيْكَ وَ

है और उसका राज़ ज़ाहिर की तरह है अैर आप भी उसपर गवाह हैं और ये मेरा अहेद है आप की तरफ़

مِيثَاقِيْ لَدَيْكَ اِذْ اَنْتَ نِظَامُ الدِّيْنِ وَ يَعْسُوْبُ الْمُتَّقِيْنَ وَ عِزُّ

और मेरा वादा है आपकी बारगह मे क्योंके आप निज़ामे दीन और पेशवाए मुत्तक़ीन हैं और मावेहेदीन की

الْمُوَحِّدِيْنَ وَ بِذٰلِكَ اَمَرَنِيْ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ. فَلَوْ تَطَاوَلَتِ

इज़्ज़त हैं और इस बातका आलमीन के पालनेवाले खुदाने मुझको हुक्म दिय है पस अगर राज़गार तूलानी

الدُّهُوْرُ وَ تَمَادَتِ الْاَعْمَارُ لَمْ اَزْدَدْ فِيْكَ اِلَّا يَقِيْنًا وَ لَكَ اِلَّا

हो जाएं, उमरें बढ़ जाएं तो भी आपके ग़ैबत के बारे मे कुछ ज़्यादती न होगी मगर यक़ीन की और आप से

حُبًّا وَّ عَلَيْكَ اِلَّا مُتَّكَلًا وَّ مُعْتَمَدًا وَّ لِظُهُوْرِكَ اِلَّا مُتَوَقَّعًا وَّ

मोहब्बत की और आपपर तवककुल व एतेमाद की और आपके ज़ुहूर की तव०व०को व इन्तेज़ार की

مُنْتَظَرًا وَّ لِجِهَادِيْ بَيْنَ يَدَيْكَ مُتَرَقَّبًا فَاَبْذُلُ نَفْسِيْ وَ مَالِيْ وَ

और आपकी माईयत मे दुश्मनों से जिहाद की उम्मीद की। पस मै अपनी जन, माल, औलाद और अहेल

وَلَدِيْ وَ اَهْلِيْ وَ جَمِيْعَ مَا خَوَّلَنِيْ رَبِّيْ بَيْنَ يَدَيْكَ وَ التَّصَرُّفَ بَيْنَ

और तमाम उन चीज़ों को जो मै रखता हूँ फ़िदा करने पर आमादा हूँ आपके हुज़ूर मे और आपके अमरो

اَمْرِكَ وَ نَهْيِكَ يَا مَوْلَايَ فَاِنْ اَدْرَكْتُ اَيَّامَكَ الزَّاهِرَةَ وَ

नही के तसर्रूफ़ मे देता हूँ मेरे मौला अगर मैने मुक़द्दर से आपके दरख़शाँ दिनों और आपके परचमहाए

اَعْلَامَكَ الْبَاهِرَةَ فَهَا اَنَا ذَا عَبْدُكَ مُتَصَرِّفٌ بَيْنَ اَمْرِكَ وَ

नुमायाँ को पा लिया तो मै आपका मुती व फ़र्मा बरदार बन्दा होऊंगा और आपके अमरो नही का ताबेदार

نَهْيِكَ اَرْجُوْ بِهِ الشَّهَادَةَ بَيْنَ يَدَيْكَ وَ الْفَوْزَ لَدَيْكَ. مَوْلَایَ

होऊंगा जिस के ज़रिए आप के हुज़ूर मे शहादत की उम्मीद लगाए होऊंगा ओर आपके पास कामयाबी की

فَاِنْ اَدْرَكَنِی الْمَوْتُ قَبْلَ ظُهُوْرِكَ فَاِنِّیْ اَتَوَسَّلُ بِكَ وَ بِاٰبَآئِكَ

तव०व०को रखूंगा ऐ मेरे मौला अगर मुझको मौत आ गई आप के ज़ुहूर से क़ब्ल तो मै आप के तवस्सुल

الطَّاهِرِيْنَ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى وَ اَسْاَلُهٗ اَنْ يُّصَلِّیَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

और आपके आबा ताहेरीन के तवस्सुल से खुदा से सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले

وَّ اَنْ يَّجْعَلَ لِیْ كَرَّةً فِیْ ظُهُوْرِكَ وَ رَجْعَةً فِیْ اَيَّامِكَ لِاَبْلُغَ مِنْ

मोहम्मद पर और हमको आपकी इताअत से अपनी मुराद को पालें और आपके दुश्मनों से अपाने दिलको

طَاعَتِكَ مُرَادِیْ وَ اَشْفِیَ مِنْ اَعْدَآئِكَ فُؤَادِیْ. مَوْلَایَ وَقَفْتُ

ठंठा करें। मेरे मौला मै आपकी ज़ियारत मे ख़ताकार शर्मिंदा और रब्बुल आलमीन के अज़ाब से ख़ाएफ़

فِیْ زِيَارَتِكَ مَوْقِفَ الْخَاطِئِيْنَ النَّادِمِيْنَ الْخَآئِفِيْنَ مِنْ

लोगों की तरह खड़ा हूँ और मैने आपकी शिफ़ाअत पर एतेमाद किया और आप की शिफ़ाअत व मोहब्बत

عِقَابِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ قَدِ اتَّكَلْتُ عَلٰى شَفَاعَتِكَ وَ رَجَوْتُ

की उम्मीद लगाए हूँ के मेरे गुनाह को महव करदे और मेरे ओयूब को छिपा ले और मेरी लगिज़शों को

بِمُوَالَاتِكَ وَ شَفَاعَتِكَ مَحْوَ ذُنُوْبِیْ وَ سَتْرَ عُيُوْبِیْ وَ مَغْفِرَةَ زَلَلِیْ

बख़्श दे ऐ मेरे मौला अपने दोस्त की आरज़ुओं को पूरा कीजिए और अल्लाह से सवाल कीजिए उस की

فَكُنْ لِّوَلِيِّكَ يَا مَوْلَايَ عِنْدَ تَحْقِيْقِ اَمَلِهٖ وَ اَسْئَلُ اللّٰهَ غُفْرَانَ

ख़ताओं की बख़शिश के लिए के वो आपके हब्लुस मतीन से मुताल्लिक़ हो गया है और आपकी मोहब्बत से

زَلَلِهٖ فَقَدْ تَعَلَّقَ بِحَبْلِكَ وَ تَمَسَّكَ بِوِلَايَتِكَ وَ تَبَرَّاَ مِنْ اَعْدَآئِكَ.

मुतमस्सिक है और आप के दुश्मनों से बरी है। खुदाया रहमत नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَنْجِزْ لِوَلِيِّكَ مَا وَعَدْتَهٗ اَللّٰهُمَّ

और अपने वली के लिए पूरा कर दे जिस का तूने वादा किया है। खुदाया उसके कलमे को ज़ाहिर करदे

اَظْهِرْ كَلِمَتَهٗ وَ اَعْلِ دَعْوَتَهٗ وَ انْصُرْهُ عَلٰى عَدُوِّهٖ وَ عَدُوِّكَ يَا رَبَّ

और उसके आवाज़े दावत को बुलंद कर और उसके और अपने दुश्मन के मुक़ाबले मे उसकी मदद कर ऐ

الْعَالَمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَظْهِرْ كَلِمَتَكَ

रब्बुल आलमीन। खुदाया रहमत नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और अपने कलमे ताम्मा को

التَّآمَّةَ وَ مُغَيِّبَكَ فِيْ اَرْضِكَ الْخَآئِفَ الْمُتَرَقِّبَ اَللّٰهُمَّ انْصُرْهُ

ज़ाहिर करदे जिसको तूने ये ज़मीन पर दुश्मनो के ख़ाफ़ से छिपा रखा है। खुदाया उस की मदद कर ग़लबा

نَصْرًا عَزِيْزًا وَّ افْتَحْ لَهٗ فَتْحًا يَّسِيْرًا. اَللّٰهُمَّ وَ اَعِزَّ بِهِ الدِّيْنَ بَعْدَ

अता करनेवाली मदद से और उसको मुकम्मल फ़तेह आसानी से अता कर। खुदाया उसके ज़रिएसे दीन

الْخُمُوْلِ وَ اَطْلِعْ بِهِ الْحَقَّ بَعْدَ الْاُفُوْلِ وَ اجْلِ بِهِ الظُّلْمَةَ وَ

को ग़लबा दे गुमनामी के बाद और उसके ज़रिए हक़ को ताले कर डूबने के बाद और उसके ज़रिए से

اَكْشِفْ بِهِ الْغُمَّةَ اَللّٰهُمَّ وَ اٰمِنْ بِهِ الْبِلَادَ وَ اهْدِ بِهِ الْعِبَادَ

ज़ुल्मत को नुरा अता कर और उसकर ज़रिए मुश्किलात को दूर फ़रमा। खुदाया और उसके ज़रिए शहरों

اَللّٰهُمَّ امْلَأْ بِهِ الْاَرْضَ عَدْلًا وَّ قِسْطًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَّ

को अमन अता कर और बन्दा ंकी हिदायत कर। खुदाया उसके ज़रिए ज़मीन को अद्ल व इन्साफ़ से भर

جَوْرًا اِنَّكَ سَمِيْعٌ مُّجِيْبٌ. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ ائْذَنْ

दे जबके वो ज़ुल्मो जौर से भर चुकी हो। बेशक तू सुन्नेवाला और क़ुबूल करनेवाला है। स्लाम आप पर ऐ

لِوَلِيِّكَ فِي الدُّخُوْلِ اِلٰى حَرَمِكَ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَ عَلٰى

वलीए खुदा आप अपने दोस्त को अपने हरम मे दाखिल होनेकी एजाज़त दे दें। अल्लह की रहमत हो आपपर

اٰبَآئِكَ الطَّاهِرِيْنَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

और आपके आबाए ताहेरान पर और खुदा की रहमत व बरकात हो।

उसके बाद ग़ैबत के सरदाब के पास जाकर दोनों दरों के दरमियान दरवाज़े के बाज़ुओं को पकड़ कर इजाज़त तलब करते हुए आगे बढ़े; कहे:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

खुदाके नामसे जो बहुत मेहेरबान व रहमवाला है।

सुकून और हुज़ूरे क़ल्ब के साथ नीचे जाकर दो रकत नमाज़ सरदाब में अदा करे उसके बाद कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لِلّٰهِ الْحَمْدُ اَلْحَمْدُ

खुदा बड़ा है, खुदा बड़ा है, खुदा बड़ा है, कोई माबूद नही सिवाए अल्लाह के और अल्लाह बड़ा है और अल्लाह के

لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ عَرَّفَنَا اَوْلِیَآئَهٗ وَ اَعْدَآئَهٗ وَ وَفَّقَنَا لِزِیَارَةِ

लिए हम्द है। हम्द उस खुदा के लिए जिसने हमारी हिदायत की इस मनिज़ल के लिए और हमको अपने दोस्त

اَئِمَّتِنَا وَ لَمْ تَجْعَلْنَا مِنَ الْمُعَانِدِیْنَ النَّاصِبِیْنَ وَ لَا مِنَ الْغُلَاةِ

व दुश्मन पहचनवा दिए और हमको हमारे आईम्मा की ज़ियारत की तौफ़ीक़ अता की और हमको दुश्मनों और

الْمُفَوِّضِیْنَ وَ لَا مِنَ الْمُرْتَابِیْنَ الْمُقَصِّرِیْنَ. اَلسَّلَامُ عَلٰی وَلِیِّ

नासिबियों मे नही क़रार दिया और न ग़ालियों और मुफ़व्वेज़ा मे और न शक करनेवालों और मुक़सेरीन मे।

اللّٰهِ وَ ابْنِ اَوْلِیَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَی الْمُدَّخَرِ لِكَرَامَةِ اَوْلِیَآءِ اللّٰهِ وَ

सलाम हो वलीए खुदा और फ़रज़ंदे वलीए खुदा पर। सलाम हो उस ज़ात पर जिसको खुदाने अपने दोस्तों की

بَوَارِ اَعْدَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَی النُّوْرِ الَّذِیْ اَرَادَ اَهْلُ الْكُفْرِ

इ०ज्०ज्त अफ़ज़ाई और दुश्मनों की हिदायत के लिए ज़ख़ीरा किया है। सलाम हो उस नूर पर जिसको काफ़रों

اِطْفَآئَهٗ فَاَبَی اللّٰهُ اِلَّا اَنْ یُّتِمَّ نُوْرَهٗ بِكُرْهِهِمْ وَ اَیَّدَهٗ بِالْحَیٰوةِ

ने बुझाने का इरादा किया था तो खुदाने इंकार कर दिया मगर ये के वो अपने नूर को मुकम्मल करदे उनकी ना

حَتّٰی یُظْهِرَ عَلٰی یَدِهِ الْحَقَّ بِزَعْمِهِمْ. اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ اصْطَفَاكَ

पसंददीदगी के बावजूद और उसकी ताईद की ज़िंदगी के ज़रिए यहाँ तक के उन्हीं के हाथ पर हक को ग़ालीब

صَغِيْرًا وَّ اَكْمَلَ لَكَ عُلُوْمَهٗ كَبِيْرًا وَّ اَنَّكَ حَيٌّ لَّا تَمُوْتُ حَتّٰى

करेगा दुश्मनों के अलर०ग्म। मै गवाही देता हूँ के खुदाने आपको बचपन मे ही मुन्ताख़िब कर लिया और आप

تُبْطِلَ الْجِبْتَ وَ الطَّاغُوْتَ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَ عَلٰى خُدَّامِهٖ وَ

के लिए अपने उलूम को मनिज़ले कमाल तक पहुँचा दिया बुज़ुर्गा मे और आप ज़िंदा हैं और आपको मौत नही

اَعْوَانِهٖ عَلٰى غَيْبَتِهٖ وَ نَأْيِهٖ وَ اسْتُرْهُ سَتْرًا عَزِيْزًا وَّ اجْعَلْ لَهٗ

आएगी यहाँ तक के बुतों और झूठे माबूदा ंको ख़त्म कर दें। खुदाया रहमत नाज़ल फ़र्मा उनपर और उनके

مَعْقِلًا حَرِيْزًا وَّ اشْدُدِ اللّٰهُمَّ وَطْاَتَكَ عَلٰى مُعَانِدِيْهِ وَ احْرُسْ

ाख़िदमत गुज़ारा ंऔर मददगारों पर उनकी ग़ैबत मे और दूरी मे और उनको पर्दए इज़्ज़त मे छुपा ले और उनके

مَوَالِيَهٗ وَ زَآئِرِيْهِ. اَللّٰهُمَّ كَمَا جَعَلْتَ قَلْبِيْ بِذِكْرِهٖ مَعْمُوْرًا

लिए महफ़ूज़ जाए पनाह क़रार दे दे और खुदाया अपने हमले को उनके दुश्मनों के मुक़ाबले मे सख़्त बनादे

فَاجْعَلْ سِلَاحِيْ دُوْنَ نُصْرَتِهٖ مَشْهُوْدًا وَّ اِنْ حَالَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ

और उनके दोस्तों की हिफ़ाज़त फ़र्मा और उनके ज़ाएरीन की खुदाया जिस तरह तूने मेरे दिलको उनके ज़िक्र

لِقَآئِهِ الْمَوْتُ الَّذِيْ جَعَلْتَهٗ عَلٰى عِبَادِكَ حَتْمًا وَّ اَقْدَرْتَ بِهٖ عَلٰى

से मामूर किया है तो उसी तरह मेरे असलहों को उनकी नुसरत के लिए बे नियाम करदे और अगर मेरी और

خَلِيْقَتِكَ رَغْمًا فَاَحْيِنِيْ عِنْدَ ظُهُوْرِهٖ خَارِجًا مِّنْ حُفْرَتِيْ

उनकी मुलाक़ात के दरमियान मौत हाएल हो जाए जिसको तूने अपने बन्दों के लिए हत्मी बना दिया है और

مُؤْتَزِرًا بِكَفَنِيْ حَتّٰى اُجَاهِدَ بَيْنَ يَدَيْهِ فِي الصَّفِّ الَّذِيْ اَثْنَيْتَ

जिसको तूने अपनी मख़लूक़ पर मुक़र्रर कर दिया है तो तू मुझको निकाल ले उनके ज़ाहिर होने के वक़्त मेरी

عَلَيْهِمْ فِيْ كِتَابِكَ فَقُلْتَ كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ اَللّٰهُمَّ

क़ब्र से कफ़न को लिबास बनाए हुए ताके मै उनके सामने जिहाद कर सकूँ उस सफ़ मे जिनकी तूने अपनी

طَالَ الْاِنْتِظَارُ وَ شَمِتَ بِنَا الْفُجَّارُ وَ صَعُبَ عَلَيْنَا الْاِنْتِصَارُ

किताब मे तारीफ़ की है और तूने कहा है के वो सीसा पिलाई हुई दिवार हैं। खुदाया हमारा इन्तेज़ार तूलानी हो

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا وَجْهَ وَلِيِّكَ الْمَيْمُوْنَ فِيْ حَيَاتِنَا وَ بَعْدَ الْمَنُوْنِ

गया और फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोग हम पर शमात्त करने लगे और हमारे लिए दुश्मन से इन्तेक़ाम लेना मुश्किल

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدِيْنُ لَكَ بِالرَّجْعَةِ بَيْنَ يَدَيْ صَاحِبِ هٰذِهِ الْبُقْعَةِ

हो गया खुदाया हम को हमारी ज़िन्दगी मे अपने वली के रूए मुबारक को दिखा दे और मौतके बाद भी।

اَلْغَوْثَ الْغَوْثَ الْغَوْثَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ قَطَعْتُ فِيْ وُصْلَتِكَ

खुदाया मै रजअत पर ईमान रखता हूँ उस साहेबे क़ब्र के हुज़ूर मे मेरी फ़रयाद रसी कीजिए ऐ साहेबज़्ज़मान

الْخُلاَّنَ وَ هَجَرْتُ لِزِيَارَتِكَ الْاَوْطَانَ وَ اَخْفَيْتُ اَمْرِيْ عَنْ

मै ने आपकी देस्ती की राम मे तमाम दोस्तों से क़तए ताल्लुक़ कर लिया और आपकी ज़ियारत के लिए वतन

اَهْلِ الْبُلْدَانِ لِتَكُوْنَ شَفِيْعًا لِيْ عِنْدَ رَبِّكَ وَ رَبِّيْ وَاِلٰى اٰبَآئِكَ وَ

से हिजरत की और अपने अम्र को वतन वालों से छुपाया ताके आप मेरे सफ़ी हो जाएं मेरे और अपने रब के

مَوَالِيَّ فِيْ حُسْنِ التَّوْفِيْقِ لِيْ وَ اِسْبَاغِ النِّعْمَةِ عَلَيَّ وَ سَوْقِ

नज़दीक और अपने आबा के नज़दीक मेरे लिए हुसने तौफ़ीक़ के सिलसिले मे और नेमतों के मुकम्मल तौर

الْاِحْسَانِ اِلَيَّ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ اَصْحَابِ الْحَقِّ

पर मिलने के लिए और मेरी तरफ़ बराबर एहसान के ज़ारिए होने के लिए। खुदाया रहमत नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद

وَ قَادَةِ الْخَلْقِ وَ اسْتَجِبْ مِنِّيْ مَا دَعَوْتُكَ وَ اَعْطِنِيْ مَا لَمْ اَنْطِقْ

व आले मोहम्मद पर जो हक़ वाले और मख़लूक के क़ाएद हैं और मेरी दुआ को क़ुबूल फ़र्मा ले और मुझको

بِهٖ فِيْ دُعَآئِيْ مِنْ صَلَاحِ دِيْنِيْ وَ دُنْيَايَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّ صَلَّى

वो भी अता कर दे जिसको मै अपनी दुआ मे नही कह सकता हूँ जो मेरी दुनिया और दीन की इसलाह के लिए

اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ.

हो बेशक तू सतूदए सिफ़ात व बुज़ुर्ग है (और अल्लाह की रहमत हो मोहम्मद और उन की आले पाक पर)।

उसके बाद सुफ़्फ़ा में दाख़ल हो कर दो रकत नमाज़ पढ़े और यह कहे:

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ الزَّائِرُ فِيْ فِنَآءِ وَلِيِّكَ الْمَزُوْرِ الَّذِيْ فَرَضْتَ

खुदाया तेरा बंदा ज़ियारत के लिए तेरे वली की बारगाह मे खड़ा है जिस वली की इताअत को तूने

طَاعَتَهٗ عَلَى الْعَبِيْدِ الْاَحْرَارِ وَ اَنْقَذْتَ بِهٖ اَوْلِيَآئَكَ مِنَ النَّارِ

तमाम ग़ुलामो और आज़ादों पर वाजिब किया है और जिस के ज़रिए से तूने नजात दी है अपने दोस्तों

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا زِيَارَةً مَقْبُولَةً ذَاتَ دُعَآءٍ مُسْتَجَابٍ مِنْ

को अज़ाबे जहन्नम से खुदाया इस ज़ियारत को शरफ़े क़ुबूलियत अता फ़र्मा दे और इस दुआ को

مُصَدِّقٍ بِوَلِيِّكَ غَيْرِ مُرْتَابٍ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ بِهٖ

मुस्तेजाब बना दे ये उस की दुआ है जो तेरे वली के बग़ैर किसी शक व शुबा के तसदीक़ करनेवाला है।

وَلَا بِزِيَارَتِهٖ وَلَا تَقْطَعْ اَثَرِیْ مِنْ مَّشْهَدِهٖ وَزِيَارَةِ اَبِيْهِ وَجَدِّهٖ.

खुदाया इस आमद व ज़ियारत को आख़री न क़रार देना और मेरे आसार को उनके मशहद और उनके

اَللّٰهُمَّ اَخْلُفْ عَلَیَّ نَفَقَتِیْ وَ انْفَعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ فِیْ دُيْنَایَ وَ

आबा व अजदाद की ज़ियारत से क़ता न करना। खुदाया जो मैने इस राह मे ख़र्च किया है उसकी जज़ा

اٰخِرَتِیْ لِیْ وَلِاِخْوَانِیْ وَ اَبَوَیَّ وَ جَمِيْعِ عِتْرَتِیْ اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ اَيُّهَا

दे और जो तूने मुझको दुनिया व आख़िरत मे रिज़्क़ दिया है उसमे फ़ाएदा दे मेरे लिए और मेरे भाईयों

الْاِمَامُ الَّذِیْ يَفُوْزُ بِهِ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ يَهْلِكُ عَلٰی يَدَيْهِ

और मेरे वालेदैन और मेरी औलाद के लिए। मै खुदा के सुर्पुद करता हूँ आप को ऐ मेरे इमाम जिन

الْكَافِرُوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ يَا مَوْلَایَ يَا مُحَمَّدَ بْنَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ

के ज़रिए से मोमिनीन कामयाब होंगे और जिनके हाथ काफ़िर व कज़्ज़ब हलाक होंग। ऐ मेरे मौला ऐ

جِئْتُكَ زَآئِرًا لَّكَ وَ لِاَبِيْكَ وَ جَدِّكَ مُتَيَقِّنًا الْفَوْزَ بِكُمْ

फ़रज़ंदे हसन बिन अली (अ) मै आपके पास ज़ियारत के लिए और आपके बाप दादा की ज़ियारत के

مُعْتَقِدًا اِمَامَتَكُمْ. اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ هٰذِهِ الشَّهَادَةَ وَ الزِّيَارَةَ لِيْ

लिए आया इस यक़ीन के साथ के कामयाबी आपके साथ है आप की इमामत पर एतेक़ाद रखते हुए।

عِنْدَكَ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَ بَلِّغْنِيْ بَلَاغَ الصَّالِحِيْنَ وَ اَنْفَعْنِيْ بِحُبِّهِمْ يَا

खुदाया इस गवाही और ज़ियारत को अपने पास दफ़्तरे इल्लीन मे लिख लें और मुझको सलेहीन के

رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

मरतबे तक पहुँचा दें और मुझको उनकी मोहब्बत का फ़ाएदा अता कर ऐ रब्बुल आलमीन।

दूसरी ज़ियारत

वह ज़ियारत जिसको सय्यद इब्ने ताऊस ने नक़्ल किया है और इस तरह है:

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحَقِّ الْجَدِيْدِ وَ الْعَالِمِ الَّذِيْ عِلْمُهٗ لَا يَبِيْدُ السَّلَامُ

सलाम हो इमामे हक़्क़े मुजद्दिद पर और उस आलम पर जिस का इल्म बे हददो बे नेहायत है।

عَلٰى مُحْيِي الْمُؤْمِنِيْنَ وَ مُبِيْرِ الْكَافِرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَهْدِيِّ الْاُمَمِ وَ

सलाम हो अहले ईमान के ज़िंदा करनेवाले और काफ़रों के हलाक करने वाले पर। सलाम हो

جَامِعِ الْكَلِمِ اَلسَّلَامُ عَلٰى خَلَفِ السَّلَفِ وَ صَاحِبِ الشَّرَفِ

उम्मतों के महदी पर और जामे तमाम कलमाते वही पर। सलाम हो जानशीने औसिया और

اَلسَّلَامُ عَلٰى حُجَّةِ الْمَعْبُوْدِ وَ كَلِمَةِ الْمَحْمُوْدِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُعِزِّ

साहेबे शरफ़ पर। सलाम हो हुज्जते माबूद और कलमए महमूद पर। सलाम हो वारिसे अंबिया

اَلْاَوْلِيَآءِ وَ مُذِلِّ الْاَعْدَآءِ اَلسَّلَامُ عَلٰى وَارِثِ الْاَنْبِيَآءِ وَ خَاتَمِ

और ख़ातिमुल औसिया पर। सलाम हो क़ाएमे मुन्तिज़र पर और बादशाहे आदिल पर जो मशहूर

الْاَوْصِيَآءِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْقَآئِمِ الْمُنْتَظَرِ وَ الْعَدْلِ الْمُشْتَهَرِ

है। सलाम हो ख़ि@ंची हुई तलवार पर और चमकने वाले चाँद पर और नूरे दरखशाँ पर। सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَى السَّيْفِ الشَّاهِرِ وَ الْقَمَرِ الزَّاهِرِ وَ النُّوْرِ الْبَاهِرِ

हो तारिकी के सूरज पर और ईमान के माहे तमाम पर। सलाम हो अहले आलम की बहार पर

اَلسَّلَامُ عَلٰى شَمْسِ الظَّلَامِ وَبَدْرِ التَّمَامِ اَلسَّلَامُ عَلٰى رَبِيْعِ الْاَنَامِ

और राज़गार की ताज़गी पर। सलाम हो साहेबे शमशीर और सरों को शिगाफ़ता करनेवाले पर।

وَ نَضْرَةِ الْاَيَّامِ اَلسَّلَامُ عَلٰى صَاحِبِ الصَّمْصَامِ وَ فَلَّاقِ الْهَامِ

सलाम हो दीन मासूर और किताबे रक़म शुदा पर। सलाम हो अल्लाह के बिक़या पर उस के शहरों

اَلسَّلَامُ عَلَى الدِّيْنِ الْمَاْثُوْرِ وَ الْكِتَابِ الْمَسْطُوْرِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

मे और उसकी हुज्जत पर उसके बंदो मे जिसकी जानिब तमाम अंबिया की मिरास मुन्तहा होती

بَقِيَّةِ اللّٰهِ فِيْ بِلَادِهٖ وَ حُجَّتِهٖ عَلٰى عِبَادِهِ الْمُنْتَهٰى اِلَيْهِ مَوَارِيْثُ

है और जिसके पास तमाम बरगुज़ीदा अफ़राद के आसार मौजूद हैं जो राज़े हक़ का अमीन है

الْاَنْبِيَآءِ وَلَدَيْهِ مَوْجُوْدَةٌ اٰثَارُ الْاَصْفِيَآءِ اَلْمُؤْتَمَنِ عَلَى السِّرِّ وَ الْوَلِيِّ

और खुदाकी तरफ़ से वलीए अम्र है। सलाम हो उस महदी पर जिसके ज़रिए खुदा ने वादा किया

لِلْاَمْرِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمَهْدِيِّ الَّذِیْ وَعَدَ اللّٰهُ عَزَّ وَ جَلَّ بِهِ الْاُمَمَ اَنْ

है तमाम उम्मतों से के वो उन्हें जमा करेगा और उन की परागंदगी को दूर करेगा और उसके

يَّجْمَعَ بِهِ الْكَلِمَ وَ يَلُمَّ بِهِ الشَّعْثَ وَ يَمْلَاَ بِهِ الْاَرْضَ قِسْطًا وَّ عَدْلًا وَّ

ज़रिए ज़मीन को अद्ल व इन्साफ़ से भर देगा और उसको क़ुदरत अता करेगा और उसके ज़रिए

يُمَكِّنَ لَهٗ وَ يُنْجِزَ بِهٖ وَعْدَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَشْهَدُ يَا مَوْلَایَ اَنَّكَ وَ الْاَئِمَّةَ

मोमिनीन का वादा पूरा करेगा। मै गवाही देता हूँ ऐ मेरे मौला आप और आपके आबाए ताहेरीन मे

مِنْ اٰبَآئِكَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَئِمَّتِیْ وَ مَوَالِیَّ فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ يَوْمَ

जो आइम्मा हैं सब मरे इमाम और मेरे आक़ा हैं दुनिया की ज़िन्दगी मे और उस दिन जब गवाहीयाँ

يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ اَسْئَلُكَ يَا مَوْلَایَ اَنْ تَسْئَلَ اللّٰهَ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰی فِیْ

क़ाएम होंगी मै आप से सवाल करता हूँ ऐ मेरे मौला के खुदा तबारक व तआला से सवाल करें

صَلَاحِ شَاْنِیْ وَ قَضَآءِ حَوَآئِجِیْ وَ غُفْرَانِ ذُنُوْبِیْ وَ الْاَخْذِ بِيَدِیْ فِیْ

मेरी हालत की इसलाह और मेरी हाजत के पूरा होने और मेरी गुनाह की मग़फ़िरत की और दुनिया

دِيْنِیْ وَ دُنْيَایَ وَ اٰخِرَتِیْ لِیْ وَ لِاِخْوَانِیَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ اِنَّهٗ

व दीन और आख़िरत के उमूर मे मेरी दस्तगीरी करने की और मेरे भाईयों और बहनों के लिए जो

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ.

मोमिन हैं और मोमिनात हैं सबके लिए। बेशक वो बख़्शनेवाला रहेम करनेवाला है।

उसके बाद नमाज़े ज़ियारत बजा लाए जैसा के इसके पहले ज़िक्र किया गया है। याने बारह रकत नमाज़ और हर दो रकत के बाद सलाम पढ़े और तसबीहे ज़हरा (स) पढ़ कर नमाज़ को इमाम के लिए हदया करे। और इसके बाद यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى حُجَّتِكَ فِيْ اَرْضِكَ وَ خَلِيْفَتِكَ فِيْ بِلَادِكَ الدَّاعِيْ

खुदाया दुरूद व रहमत भेज अपनी हुज्जत पर अपनी ज़मीन मे और अपने ख़लीफ़ा पर अपने शहरों मे जो तेरी

اِلٰى سَبِيْلِكَ وَ الْقَآئِمِ بِقِسْطِكَ وَ الْفَآئِزِ بِاَمْرِكَ وَلِيِّ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

राह की जानिब दावत देनेवाला है। और तेरे अद्ल के साथ क़याम करने वाला है। और तेरे अम्र के साथ

مُبِيْرِ الْكَافِرِيْنَ وَ مُجَلِّي الظُّلْمَةِ وَ مُنِيْرِ الْحَقِّ وَ الصَّادِعِ بِالْحِكْمَةِ

कामयाब होनेवाला है मोमिनों का दोस्त और काफ़रों का हलाक करनेवाला है और तारीकी का रौशन करने

وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ الصِّدْقِ وَ كَلِمَتِكَ وَ عَيْبَتِكَ وَ عَيْنِكَ فِيْ

वाला और राहे हक़ का जली करने वाला है और हिकमत और मौएज़ए हसना और सदाक़त के साथ आवाज़

اَرْضِكَ الْمُتَرَقِّبِ الْخَآئِفِ الْوَلِيِّ النَّاصِحِ سَفِيْنَةِ النَّجَاةِ وَ عَلَمِ

लगानेवाला और तेरा कलेमा और तेरी ज़मीन मे तेरा मख़ज़न है बराबर निगराँ, ख़ाएफ़ व तरसाँ वलीए नासेह

الْهُدٰى وَ نُوْرِ اَبْصَارِ الْوَرٰى وَ خَيْرِ مَنْ تَقَمَّصَ وَ ارْتَدٰى وَ الْوِتْرِ

और सिफ़नए नजात है और हिदायत का परचम है और मख़लूक की निगाहों का नूर है और उस सब लोगों

الْمَوْتُوْرِ وَ مُفَرِّجِ الْكَرْبِ وَ مُزِيْلِ الْهَمِّ وَ كَاشِفِ الْبَلْوٰى

मे बेहतरीन है जो कमा०rज और रिदा पहन्ते हैं। व मुनतिक़म व खैरख्वा मज़लूमाने आलम है और ग़म का

صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ وَ عَلٰى اٰبَآئِهِ الْاَئِمَّةِ الْهَادِيْنَ وَ الْقَادَةِ

दूर करने वाला और परेशानी का ज़ाएल करनेवाला है और मुसीबतों का ख़त्म करने वाला है। अल्लाह का

الْمَيَامِيْنَ مَا طَلَعَتْ كَوَاكِبُ الْاَسْحَارِ وَ اَوْرَقَتِ الْاَشْجَارُ وَ

दुरूद व रहमत हो उनपर और उनके आबा पर जो आईम्मा हैं हादी और पेशवा बा बरकत हैं जब तक सहेर

اَيْنَعَتِ الْاَثْمَارُ وَ اخْتَلَفَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ وَ غَرَّدَتِ الْاَطْيَارُ

के सितारे तुलू करें और दरख़्तों मे पत्ते रहें और फल तैयार होते रहें और रात और दिन तबदील होते रहें और

اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِحُبِّهٖ وَ احْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ وَ تَحْتَ لِوَائِهٖ اِلٰهَ الْحَقِّ

परिंदे चहचहाते रहें। खुदाया हमको उनकी मोहब्बत के ज़रिए फ़ाएदा दे और हमको उनके गरोह मे महशूर

آمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

कर और उनके अलम के नीचे। ऐ खुदाए बरहक ऐ आलमीन के परवरदिगार इस दुआ को क़ुबूल कर ले।

सलवात बराए इमामे अस्र (अ.त.फ.श.)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ صَلِّ عَلٰى وَلِيِّ الْحَسَنِ وَ

खुदाया दुरूदो रहमत नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद और उनके अहलेबैत पर और दुरूद नाज़ल फ़र्मा जानशीने हसन और

وَصِيِّهٖ وَ وَارِثِهِ الْقَآئِمِ بِاَمْرِكَ وَ الْغَآئِبِ فِيْ خَلْقِكَ وَ

उनके वसी और वारिस पर जो तेरे अम्र के साथ क़याम करनेवाले और तेरी मख़लूक मे ग़ाएब और तेरी इजाज़त व

الْمُنْتَظِرِ لِاِذْنِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَ قَرِّبْ بُعْدَهٗ وَ اَنْجِزْ وَعْدَهٗ

हुक्म के मुन्तिज़र हैं। खुदाया उनपर दुरूद नाज़ल फ़र्मा और उनकी दूरी को क़रीब करदे और उनके वादे को पूरा

وَ اَوْفِ عَهْدَهٗ وَ اكْشِفْ عَنْ بَاْسِهٖ حِجَابَ الْغَيْبَةِ وَ اَظْهِرْ

कर और उनके अहद को वफ़ा कर और हिजाबे ग़ैबत को उन से हटा ले और उनके ज़ुहूर के ज़रिए दफ़तरे रंज व

بِظُهُوْرِهٖ صَحَآئِفَ الْمِحْنَةِ وَ قَدِّمْ اَمَامَهُ الرُّعْبَ وَ ثَبِّتْ بِهِ

मुसीबत को ज़ाएल करदे और उनके आगे आगे रोब व दबदबे को क़रार देदे और उनके ज़रिए क़ल्ब को साबित

الْقَلْبَ وَ اَقِمْ بِهِ الْحَرْبَ وَ اَيِّدْهُ بِجُنْدٍ مِّنَ الْمَلَآئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ

रख और उन के ज़रिए जंग को क़ाएम कर और उनकी ताईद कर मलाएका के गरोह के साथ जिन पर निशाने

وَ سَلِّطْهُ عَلٰٓى اَعْدَآءِ دِيْنِكَ اَجْمَعِيْنَ وَ اَلْهِمْهُ اَنْ لَّا يَدَعَ مِنْهُمْ

क़ुदरते इलाही हो और उनको अपने दीन के तमाम दुश्मनों पर मुसल्लत कर व उनको इल्हाम करके दुश्मनो का

رُكْنًا اِلَّا هَدَّهٗ وَ لَا هَامًا اِلَّا قَدَّهٗ وَ لَا كَيْدًا اِلَّا رَدَّهٗ وَ لَا فَاسِقًا

कोई रूक्न न रह जाए मगर ये के उसको वो गिरावे व न कोई रईस रह जाए मगर ये के उसको नाबूद करदे व न कोई

اِلَّا حَدَّهٗ وَ لَا فِرْعَوْنَ اِلَّا اَهْلَكَهٗ وَ لَا سِتْرًا اِلَّا هَتَكَهٗ وَ لَا عَلَمًا

मक्र मगर उसको लौटा दे व न कोई फ़ासिक मगर उस को सज़ा दे व ना कोई फ़िरआzन मगर उसको हलाक करदे

اِلَّا نَكَّسَهٗ وَ لَا سُلْطَانًا اِلَّا كَسَبَهٗ وَ لَا رُمْحًا اِلَّا قَصَفَهٗ وَ لَا

व न कोई पर्दा मगर उस को चाक करदे व न कोई निशान मगर उसको सरनिगू करदे व न कोई सलतनत मगर ये

مِطْرَدًا اِلَّا خَرَقَهٗ وَلَا جُنْدًا اِلَّا فَرَّقَهٗ وَلَا مِنْبَرًا اِلَّا اَحْرَقَهٗ وَ

के उसको तसररूफ़ मे लाए व न कोई नेजा मगर उसको तोड दे व न कोई ज़ुल्म मगर उसको पारा पारा करदे व न

لَا سَيْفًا اِلَّا كَسَرَهٗ وَلَا صَنَمًا اِلَّا رَضَّهٗ وَلَا دَمًا اِلَّا اَرَاقَهٗ وَلَا

कोई लश्कर मगर ये के उसको मुतफ़रि०री्क करदे व न कोई मिंबर मगर उसको जला दे व न कोई तलवार मगर

جَوْرًا اِلَّا اَبَادَهٗ وَلَا حِصْنًا اِلَّا هَدَمَهٗ وَلَا بَابًا اِلَّا رَدَمَهٗ وَلَا

उसको तोड़ दे व न कोई बुत मगर उसको ख़त्म करदे व न कोई ख़ून मगर ये वे उसको बहा दे व न ज़ुल्म मगर ये

قَصْرًا اِلَّا خَرَّبَهٗ وَلَا مَسْكَنًا اِلَّا فَتَّشَهٗ وَلَا سَهْلًا اِلَّا اَوْطَئَهٗ وَ

के उसको नाबूद करदे व न ाक़िला मगर ये के उसको मुनहदिम करदे व न दरवाज़ा मगर ये के उस को बन्द कर दे

لَا جَبَلًا اِلَّا صَعِدَهٗ وَلَا كَنْزًا اِلَّا اَخْرَجَهٗ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ

न महल पर उसको तबाह कर न मनिज़ल पर उसकी तलाशी ले न हमवार ज़मीन पर उसको तहते क़दम करले न

الرَّاحِمِيْنَ.

पहाड़ पर उसके ऊपर चढ़ जाए न ख़जाना पर उसको निकाल ले अपनी रहमत से ऐ सबसे ज्यादा रहेम करनेवाले।

लेख़क: शेख़ मुफ़ीद ने ज़ियारते साबिक़ को नक़्ल करने के बाद जिसका आगाज़ इस तरह हुआ था:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है कोई माबूद नही सिवा अल्लाह के...

फ़रमाया है के दूसरी रिवायत में यूँ नक़्ल किया गया है के सरदाबे मुक़द्दस में दाख़िल होने के बाद यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحَقِّ الْجَدِيْدِ

उसके बाद यह ज़ियारत नक़्ल की है। नमाज़े ज़ियारत तक और फिर फ़रमाया है के इसके बाद बारह रकत नमाज़ दो दो रकत करके पढ़े और उसके बाद वह दुआ पढ़े जो खुद हज़रत से नक़्ल की गई है:

اَللّٰهُمَّ عَظُمَ الْبَلَآءُ وَ بَرِحَ الْخَفَآءُ وَ انْكَشَفَ الْغِطَآءُ وَ انْقَطَعَ

खुदाया मुसीबते अज़ीम हो गईं व मेरी बेचारगी फ़ाश होगी और पर्दा उठ गया और ज़मीन तंग हो गई

الرَّجَآءُ وَ ضَاقَتِ الْاَرْضُ وَ مُنِعَتِ السَّمَآءُ وَ اَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَ

और आसमान ने रहमत को रोक लिया और ऐ मेरे रब तेरी बारगाह मे फ़रयाद है और तुझ ही पर

اِلَيْكَ الْمُشْتَكٰى وَ عَلَيْكَ الْمُعَوَّلُ فِي الشِّدَّةِ وَ الرَّخَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

एतेमाद है सख़्ती और आसानी मे। खुदाया रहमत नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद और उनकी आल पर जिन

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الَّذِيْنَ فَرَضْتَ عَلَيْنَا طَاعَتَهُمْ فَعَرَّفْتَنَا بِذٰلِكَ

की इताअत को तूने हम पर फ़र्ज़ क़रार दिया है और उसके ज़रिए उनकी मनिज़लत को पहचनवा

مَنْزِلَتَهُمْ فَرَّجْ عَنَّا بِحَقِّهِمْ فَرَجًا عَاجِلًا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ

दिया है के उन्ही के हक़ के वास्ते से हमको कुशादगी अता कर जल्दी चश्मे जदन मे या उससे भी

مِنْ ذٰلِكَ يَا مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ يَا مُحَمَّدُ انْصُرَانِيْ فَاِنَّكُمَا نَاصِرَايَ وَ

क़ब्ल ऐ मोहम्मद ऐ अली ऐ अली ऐ मोहम्मद मेरी मदद कीजिए के आप दोनो मेरे मददगार हैं और

اُكْفِيَانِيْ فَاِنَّكُمَا كَافِيَايَ يَا مَوْلَايَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ الْغَوْثَ

मेरी किफ़ालत करें के आप दोनो काफ़ी हैं। ऐ मेरे मौला ऐ साहेबज़मान मेरी फ़रयाद को पहुँचें,

الْغَوْثَ الْغَوْثَ اَدْرِكْنِيْ اَدْرِكْنِيْ اَدْرِكْنِيْ.

फ़रयाद को पहुँचें, फ़रयाद को पहुँचें, मेरी मदद कीजिए, मेरी मदद कीजिए, मेरी मदद कीजिए।

यह वह दुआ-ए-शरीफ़ है जिसके लिए मुनासिब है के मुसलसल और हर जगह इसे पढ़ा जाए। और पहले वर्ग में भी हम थोड़े इख़्तेलाफ़ के साथ इस दुआ का ज़िक्र कर चुके हैं।

तीसरी ज़ियारत

वह ज़ियारत है जिसे सय्यद इब्ने ताऊस ने नक़्ल किया है और फ़रमाया है के दो रकत नमाज़ पढ़े और उसके बाद कहे:

سَلَامُ اللهِ الْكَامِلُ التَّامُّ الشَّامِلُ الْعَامُّ...

जिस ज़ियारत को हम बाबे अव्वल की फ़सले हफ़्तुम ब उनवाने इस्तेग़ासा "कलमे तय्यब" से नक़्ल कर चुके हैं।

लेखक का बयान है के सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में एक फ़स्ल आमाले सरदाब की नक़्ल की है जिसमें छे ज़ियारात नक़्ल की हैं। और उसके बाद फ़रमाया है के इसी फ़स्ल से मुताल्लिक़ दुआ-ए-नुदबा भी है। और वह ज़ियारत जो इमामे ज़माना (अ) की रोज़ाना सुबह की नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है के वह सातवीं ज़ियारत शुमार होती है और वह दुआ-ए-अहद है। जिस की तिलावत का ज़मानए ग़ैबत में हुक्म दिया गया है। और वह दुआ उस समय पढ़ी जाती है जब हरमे शरीफ़ से निकलना चाहते हैं। उसके बाद उन्होंने उन चारों मसाएल को नक़्ल किया है और हम भी उन्हीं की इत्तेबा में इस मकाम पर उन चारों बातों को नक़्ल कर रहे हैं।

पहला अम्र: दुआ नुदबा

जिसको चारों ईदों में पढ़ना मुस्तहब है। ईदे फ़ित्र, ईदे क़ुरबान, ईदे ग़दीर और रोज़े जुमा। वह दुआ यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ نَبِيِّهٖ وَ اٰلِهٖ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो आलमीन का परवरदिगार हे और खुदा रहमत नाज़ल करे हमारे सरदार और

وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى مَا جَرٰى بِهٖ قَضَآئُكَ فِيْ

पैग़ंबर हज़रत मोहम्मद (स) और उन की आल पर और उन पर सलाम हो। खुदाया तेरी हम्द उन तमाम फ़ैसलों

اَوْلِيَآئِكَ الَّذِيْنَ اسْتَخْلَصْتَهُمْ لِنَفْسِكَ وَ دِيْنِكَ اِذِ اخْتَرْتَ

पर जो तेरे औलीया के बारे मे जारी होते हैं। जिन को तूने अपने लिए ख़ालिस और मुन्ताख़िब क़रार दिया है और

لَهُمْ جَزِيْلَ مَا عِنْدَكَ مِنَ النَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ الَّذِيْ لَا زَوَالَ لَهٗ

अपने दीन के लिए चुन लिया है जब के तूने उन के लिए उन बेहतरीन और दाएमी नेमतों को इख़्तेयार किया है

وَ اَلَا اضْمِحْلَالَ بَعْدَ اَنْ شَرَطْتَ عَلَيْهِمُ الزُّهْدَ فِيْ دَرَجَاتِ هٰذِهِ

जो तेरी बारगाह मे हैं और उनके लिए कोई ज़वाल और इ०ज्मेहलाल नही है उसके बाद के तूने उन से उन

الدُّنْيَا الدَّنِيَّةِ وَ زُخْرُفِهَا وَ زِبْرِجِهَا فَشَرَطُوْا لَكَ ذٰلِكَ وَ عَلِمْتَ

दुनियाए दनीr के दरजात मे और उसकी आराईश व ज़ेबाईश के सिलसिलए ज़ोहद की शर्त कर ली और उन्होंने

مِنْهُمُ الْوَفَآءَ بِهٖ فَقَبِلْتَهُمْ وَ قَرَّبْتَهُمْ وَ قَدَّمْتَ لَهُمُ الذِّكْرَ

तुझ से इस बात का वादा कर लिया और तुझे मालूम था के वो अपने वादे को वफ़ा करेगें तो तू ने उन्हें क़ुबूल

الْعَلِيَّ وَ الثَّنَآءَ الْجَلِيَّ وَ اَهْبَطْتَ عَلَيْهِمْ مَلٰٓئِكَتَكَ وَ كَرَّمْتَهُمْ

कर लिया और अपने से क़रीब तर बना लिया और उनके लिए बुलंद तरीन ज़िक्र और वाजेह तारीफ़ को पेश

بِوَحْيِكَ وَ رَفَدْتَهُمْ بِعِلْمِكَ وَ جَعَلْتَهُمُ الذَّرِيْعَةَ اِلَيْكَ

कर दिया और उनके यहाँ अपने मलाएको को उतार दिया और उन्हें अपनी वही के ज़रिए मोहतरम बना दिया।

وَالْوَسِيْلَةَ اِلٰى رِضْوَانِكَ فَبَعْضٌ اَسْكَنْتَهٗ جَنَّتَكَ اِلٰى اَنْ

और अपने इल्म से नवाज़ दिया और उन्हें अपनी बारगह के लिए और अपनी रज़ा के लिए वसीला क़रार दे

اَخْرَجْتَهٗ مِنْهَا وَبَعْضٌ حَمَلْتَهٗ فِيْ فُلْكِكَ وَ نَجَّيْتَهٗ وَمَنْ اٰمَنَ مَعَهٗ

दिया। उन मे से बाज को अपनी जन्नत मे साकिन बनाया और फिर उन्हें वहाँ से रूख़सत कर के दुनिया मे भेज

مِنَ الْهَلَكَتِ بِرَحْمَتِكَ وَ بَعْضٌ اِتَّخَذْتَهٗ لِنَفْسِكَ خَلِيْلاً وَ

दिया। और बाज़ को अपनी कश्ती मे सवार कर के उन्हें और उनके साथियों को हलाकत से अपनी रहमत के

سَئَلَكَ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ فَاَجَبْتَهٗ وَ جَعَلْتَ ذٰلِكَ عَلِيًّا

ज़रिए नजात दे दी और बाज़ को अपने लिए ख़लील बना लिया और उन्होंने आख़री दौर मे सदाक़त की ज़ुबान

وَ بَعْضٌ كَلَّمْتَهٗ مِنْ شَجَرَةٍ تَكْلِيْمًا وَ جَعَلْتَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ رِدْئًا وَّ

का सवाल किया तो तू ने उनकी दुआ को क़ुबूल कर लिया और उन के लिए उन के भाई को पुश्त पनाह और

وَزِيْرًا وَبَعْضٌ اَوْلَدْتَهٗ مِنْ غَيْرِ اَبٍ وَ اٰتَيْتَهُ الْبَيِّنَاتِ وَ اَيَّدْتَهٗ

बोझ हटाने वला क़रार दे दिया और बाज़ को बग़ैर बाप क पैदा कर दिया। और उन्हे वज़ेह निशानियाँ अता कर

بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَ كُلٌّ شَرَعْتَ لَهٗ شَرِيْعَةً وَ نَهَجْتَ لَهٗ مِنْهَاجًا وَ

दीं और रूहुल कुदस के ज़रिए उन की ताईद कर दी और हर एक के लिए एक शरीयत और एक तरीक़ए हयात

تَخَيَّرْتَ لَهٗ اَوْصِيَآءَ مُسْتَحْفِظًا بَعْدَ مُسْتَحْفِظٍ مِنْ مُدَّةٍ اِلٰى مُدَّةٍ

मुक़र्रर कर दिया और उनके लिए औलिया मुन-ताख़िब किया जो एक के बाद एक दीन के मोहाफ़ज़ बने एक

اِقَامَةً لِدِيْنِكَ وَ حُجَّةً عَلٰى عِبَادِكَ وَلِئَلَّا يَزُوْلَ الْحَقُّ عَنْ مَقَرِّهٖ وَ

मुद्दत से दूसरी मुद्दत तक अपने दीन को क़ाएम करने और अपने बन्दों पर अपनी हुज्जत तमाम करने के लिए और

يَغْلِبَ الْبَاطِلُ عَلٰى اَهْلِهٖ وَ لَا يَقُوْلُ اَحَدٌ لَوْلَا اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا

इस लिए के हक़ अपने मरकज़ से हटने न पाए और बातिल अहले हक़ पर ग़ालिब न आने पाएं और कोई शख़्स

رَسُوْلاً مُّنْذِرًا وَ اَقَمْتَ لَنَا عَلَمًا هَادِيًا فَنَتَّبِعَ اٰيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ

ये न कहने पाए क तू ने हमारी तरफ़ डराने वाला रसूल क्यों न भेज दिया और हमारे लिए निशाने हिदायत क्यों न

اَنْ نَذِلَّ وَ نَخْزٰى اِلٰى اَنِ انْتَهَيْتَ بِالْاَمْرِ اِلٰى حَبِيْبِكَ وَ نَجِيْبِكَ

क़ाएम कर दिए के हम ज़लील व रूसवा होने से पहले तेरी आयतों का इत्तेबा कर लेते यहाँ तक के तेरे अम्र का

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فَكَانَ كَمَا انْتَجَبْتَهٗ سَيِّدَ مَنْ خَلَقْتَهٗ

सिलसिला तेरे हबीब तेरे शरीफ़ बंदे मोहम्मदे मुसतफ़ा (स) तक पहुँच गया। खुदा उन पर और उन की आल पर

وَ صَفْوَةً مِنَ اصْطَفَيْتَهٗ وَ اَفْضَلَ مَنِ اجْتَبَيْتَهٗ وَ اَكْرَمَ مَنِ

रहमत नाज़ल करे। वे वैसे ही शरीफ़ थे जैसे तूने उन्हें बनाया था तमाम मख़लूक़ात वे सरदार और तमाम

اعْتَمَدْتَهٗ قَدَّمْتَهٗ عَلٰى اَنْبِيَآئِكَ وَ بَعَثْتَهٗ اِلَى الثَّقَلَيْنِ مِنْ

मुनतिख़ब बन्दों मे मुनताख़िब और ताम चुने हुए बन्दों से अफ़ज़ल और तमाम मोतबर अफ़राद मे मुकररम व

عِبَادِكَ وَ اَوْطَاْتَهٗ مَشَارِقَكَ وَ مَغَارِبَكَ وَ سَخَّرْتَ لَهُ الْبُرَاقَ وَ

मेहतरम तूने उन्हें तमाम अंबिया पर मुक़द्दम क़रार दिया और उन्हें तमाम इन्स व जिन की तरफ़ मबऊस किया

عَرَجْتَ بِرُوْحِهٖ اِلٰى سَمَآئِكَ وَ اَوْدَعْتَهٗ عِلْمَ مَا كَانَ وَ مَا يَكُوْنُ

और उनके लिए तमाम मशरिक़ व मग़रिब को हमवार कर दिया और बुर्राक को मुस०ख़्बर कर दिया और उन्हें

اِلَى انْقِضَآءِ خَلْقِكَ ثُمَّ نَصَرْتَهٗ بِالرُّعْبِ وَ حَفَفْتَهٗ بِجِبْرَئِيْلَ وَ

अपने आसमान की बुलंदियों तक ले गया और तमाम माज़ी और मुसत्क़बिल के उलूम का ख़ज़ानादार बना दिया

مِيْكَائِيْلَ وَالْمُسَوَّمِيْنَ مِنْ مَّلٰٓئِكَتِكَ وَ وَعَدْتَهٗ اَنْ تُظْهِرَ دِيْنَهٗ

और दुनिया के ख़ात्मे तक उसके बाद रोब व ख़ाफ़ के ज़रिए उनकी मददकी और जिब्रईल व मिकाईल और उन

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ وَ ذٰلِكَ بَعْدَ اَنْ بَوَّاْتَهٗ

तमाम फ़रिश्तों के ज़रिए महफ़ूज़ बना दिया जिनपर तेरी नुमाएंदगी की निशानियाँ थी और तूने उनसे वादा किया

مُبَوَّءَ صِدْقٍ مِنْ اَهْلِهٖ وَ جَعَلْتَ لَهٗ وَ لَهُمْ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ

के उनके दीन को तमाम अदयान पर ग़ालिब बनाएगा चाहे मश्रेकीन को कितना ही नागवार गुज़रे और ये सब

لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَّ هُدًى لِّلْعَالَمِيْنَ فِيْهِ اٰيَاتٌ

उस वक़्त हुआ जब तूने उन्हें सदाक़त के मरकज़ पर मुसतक़र कर दिया और उनके लिए और उनके अहेल के

بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ اِبْرَاهِيْمَ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا وَ قُلْتَ اِنَّمَا يُرِيْدُ

लिए उस पहले घर को क़रार दिया जिसे तमाम इन्सानों के लिए बनाया गया है और जो मक्के मे है और बाबरकत

اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا

और आलमीन के लिए हिदायत है उसमे खुली हुई निशानियाँ और मक़ामे इब्राहीम है और जो उसमे दाख़िल हो

ثُمَّ جَعَلْتَ اَجْرَ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ مَوَدَّتَهُمْ فِيْ كِتَابِكَ

जाए वो महफ़ूज़ हो जाता है और तूने एलान कर दिया है ऐ अहलेबैल अल्लाह का इरादा बस ये है के तुमसे हर

فَقُلْتَ قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى وَ قُلْتَ

बुराई को दूर रखे और उन्हे इस तरह पाक वा पाकीज़ा क़रार दे जो पाकीज़गी का हक़ है उस के बाद तूने मरकज़े

مَا سَئَلْتُكُمْ مِنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ وَ قُلْتَ مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ

रहमत मोहम्मद व आले मोहम्मद का अज्र अपनी किताब मे उनकी मवद्दत को क़रार दे कर एलान कर दिया ऐ

اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلاً فَكَانُوْا هُمُ السَّبِيْلَ

पैग़म्बर कह दो के मै तूमसे कोई अज्र नही मांगता अलावा इस के के मेरे क़राबतदारों से मोहब्बत करो और तूने

اِلَيْكَ وَ الْمَسْلَكَ اِلٰى رِضْوَانِكَ فَلَمَّا انْقَضَتْ اَيَّامُهٗ اَقَامَ وَلِيُّهٗ

कह दिया के मैने जो अज्र माँगा है वो तुम्हारे ही फ़ाएदे के लिए है और कह दिया के मै तुमसे कोई अज्र नही चाहता

عَلِيَّ بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ صَلَوٰتُكَ عَلَيْهِمَا وَ اٰلِهِمَا هَادِيًا اِذْ كَانَ هُوَ

मगर वो शख़्स के जो अल्लाह की तरफ़ रास्ता इख़तेयर करना चाहता है। तो ये सब तेरी बारगाह के लिए राहे

الْمُنْذِرَ وَ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ فَقَالَ وَالْمَلَاءُ اَمَامَهٗ مَنْ كُنْتُ

हिदायत और तेरी रज़ा के लिए बेहतरीन मसलक बन गए फिर जब उनके दिन तमाम हो गए तो उन्होनें अपने

مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَ آلِ مَنْ وَالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ

वली अली इब्ने अबी तालिब (अ) को क़ौम का हादी मुक़र्रर कर दिया इस लिए खुद अज़ाबे इलाही से डराने वाले

وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهٗ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهٗ وَ قَالَ مَنْ كُنْتُ اَنَا نَبِيَّهٗ

थे और हर क़ौम के लिए एक हादी है। उन्होंने मजमए आम के सामने एलान कर दिया जिस का मै मौला हूँ उसका

فَعَلِيٌّ اَمِيْرُهٗ وَ قَالَ اَنَا وَ عَلِيٌّ مِّنْ شَجَرَةٍ وَاحِدَةٍ وَ سَائِرُ النَّاسِ

ये अली भी मौला हैं। खुदाया जो उसे दोस्त रखे उसे दोस्त रख और जो उसे दुश्मन करे उसे दुश्मन रख और जो

مِنْ شَجَرَةٍ شَتّٰى وَ اَحَلَّهٗ مَحَلَّ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى فَقَالَ لَهٗ اَنْتَ

उसकी मदद करे उस की मदद कर और जो उस को छोड़ दे उसे नज़र अंदाज़ कर और रसूल ने एलान किया के

مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى اِلَّا اَنَّهٗ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ وَ زَوَّجَهٗ

जिस का मै नबी हूँ उस के अली अमीर हैं और फ़रमाया के मै और अली एक ही शजर से हैं और तमाम लोग

ابْنَتَهٗ سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ وَ اَحَلَّ لَهٗ مِنْ مَسْجِدِهٖ مَا حَلَّ لَهٗ

मुख़तलिफ़ शजरों से हैं और अली को मूसा के लिए हारून की मनज़ेलत पर क़रार दिया और उनसे कहा के तुम

وَ سَدَّ الْاَبْوَابَ اِلَّا بَابَهٗ ثُمَّ اَوْدَعَهٗ عِلْمَهٗ وَ حِكْمَتَهٗ فَقَالَ : اَنَا

मेरे लिए वैसे ही हो जैसे मूसा के लिए हारून थे सिर्फ़ मेरे बाद नबी न होगा और फिर अपनी बेटी सरदारे निसाए

مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَ عَلِيٌّ بَابُهَا فَمَنْ اَرَادَ الْمَدِيْنَةَ وَ الْحِكْمَةَ فَلْيَاْتِهَا

आलमीन का उन से अक़्द कर दिया और उन के लिए मस्जिद मे वो सब हलाल कर दिया जो उनके लिए हलाल

مِنْ بَابِهَا ثُمَّ قَالَ اَنْتَ اَخِيْ وَ وَصِيِّيْ وَ وَارِثِيْ لَحْمُكَ مِنْ لَحْمِيْ وَ

था और सब दरवाज़े बंद कर दिए सिवाए उनके दरवाज़े के और एलान किया के मै शहरे इल्म हूँ और अली

دَمُكَ مِنْ دَمِيْ وَ سِلْمُكَ سِلْمِيْ وَ حَرْبُكَ حَرْبِيْ وَ الْاِيْمَانُ مُخَالِطٌ

उसका दरवाज़ा हैं तो जो शहर मे दाख़िल होना चाहे उसे दरवाज़े पर आना चाहिए फिर फ़रमाया वे या अली तुम

لَحْمَكَ وَ دَمَكَ كَمَا خَالَطَ لَحْمِيْ وَدَمِيْ وَ اَنْتَ غَدًا عَلَى الْحَوْضِ

मेरे भाई, वसी और वारिस हो। तुम्हारा गोश्त मेरे गोश्त से तुम्हारा ख़ून मेरे ख़ून से है तुम्हारी सुलह मेरी सुलह है

خَلِيْفَتِيْ وَ اَنْتَ تَقْضِيْ دَيْنِيْ وَ تُنْجِزُ عِدَاتِيْ وَ شِيْعَتُكَ عَلٰى

और तुम्हारी जंग मेरी जंग है और ईमान तुम्हारे गोश्त और ख़ून मे इस तरह पैवस्त है जिस तरह मेरे गोश्त और

مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ مُبْيَضَّةً وُجُوْهُهُمْ حَوْلِيْ فِي الْجَنَّةِ وَ هُمْ جِيْرَانِيْ وَ

ख़ून मे है और तुम कल हौज़े कौसर पर मेरे जानशीन होगे और तुम मेरे कर्ज़ को अदा करोगे और मेरे वादों को

لَوْلَا اَنْتَ يَا عَلِيُّ لَمْ يُعْرَفِ الْمُؤْمِنُوْنَ بَعْدِيْ وَ كَانَ بَعْدَهٗ هُدًى

पूरा करोगे और तुम्हारे शिया नूर के मिंबरों पर होगें उनके चेहरे ताबनाक होगें वे मेरे गरोह जन्नत मे मेरे हमसाया

مِّنَ الضَّلَالِ وَ نُوْرًا مِّنَ الْعَمٰى وَ حَبْلَ اللّٰهِ الْمَتِيْنَ وَ صِرَاطَهُ

होंगे और ऐ अली अगर तुम न होते तो मेरे बाद मोमिनीन की शिफ़ाअत भी न हो सकती और वो पैग़ंबर के बाद

الْمُسْتَقِيْمَ وَلَا يُسْبَقُ بِقَرَابَةٍ فِيْ رَحِمٍ وَلَا بِسَابِقَةٍ فِيْ دِيْنٍ وَلَا

गुम्राही मे हिदायत और तारीकी मे नूरूल्लाह की मज़बूत रिसमाने हिदायत और उसका सीधा रास्ता थे। उन से

يُلْحَقُ فِيْ مَنْقَبَةٍ مِنْ مَنَاقِبِهٖ يَحْذُوْ حَذْوَ الرَّسُوْلِ صَلَّى اللّٰهُ

कोई आगे नही बढ़ सकता न रिश्तेदारी की क़ुरबत मे और न दीन के सवाबिक़ मे और कोई उनको उन के

عَلَيْهِمَا وَاٰلِهِمَا وَيُقَاتِلُ عَلَى التَّاْوِيْلِ وَلَا تَاْخُذُهٗ فِي اللّٰهِ لَوْمَتُ

मनाक़िब मे पा भी नही सकता है वो हर अम्र मे रसूले अक्रम के न०वशे क़दम पर थे उन दोनो और उन की

لَآئِمٍ قَدْ وَتَرَ فِيْهِ صَنَادِيْدَ الْعَرَبِ وَ قَتَلَ اَبْطَالَهُمْ وَ نَاوَشَ

औलाद पर रहमत नाज़ल करे और वो तावीले क़ुआर्न पर इस शानसे जिहाद करते थे अल्लाह की राह मे किसी

ذُؤْبَانَهُمْ فَاَوْدَعَ قُلُوْبَهُمْ اَحْقَادًا بَدْرِيَّةً وَّ خَيْبَرِيَّةً وَّ حُنَيْنِيَّةً

मलामत करने वाले की मलामत की परवा नही थी। उन्होने इस राह मे अरब के सरदारों को ज़ेर किया उनके

وَ غَيْرَ هُنَّ فَاَضَبَّتْ عَلٰى عَدَاوَتِهٖ وَ اَكَبَّتْ عَلٰى مُنَابَذَتِهٖ حَتّٰى

बहादूरों को क़त्ल किया उन के भेड़ियों को फ़ना कर दिया तो उनके दिलों मे बद्र और ख़ैबर और हुनैन वग़ैरा के

قَتَلَ النَّاكِثِيْنَ وَ الْقَاسِطِيْنَ وَ الْمَارِقِيْنَ وَ لَمَّا قَضٰى نَحْبَهٗ وَ

कीने ज़ख़ीरा हो गए और उन्होंने उन की अदावत पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया और उनसे मुक़ाबले पर सर जोड़ कर

قَتَلَهٗ اَشْقَى الْاٰخِرِيْنَ يَتْبَعُ اَشْقَى الْاَوَّلِيْنَ لَمْ يُمْتَثَلْ اَمْرُ

मुत्तहिद हो गए। यहाँ तक के बैअत तोड़ने वाले दुश्मनाने इसलाम और दीन से निकल जाने वालों को क़त्ल कर

رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فِي الْهَادِيْنَ بَعْدَ الْهَادِيْنَ وَ

दिया और जब अपनी मुद्दते हयात पूरी कर ली और उन्हें दौरे आख़िर के बदतरीन इन्सान ने क़त्ल कर दिया दौरे

الْاُمَّةُ مُصِرَّةٌ عَلٰى مَقْتِهٖ مُجْتَمِعَةٌ عَلٰى قَطِيْعَةِ رَحِمِهٖ وَاِقْصَآءِ وُلْدِهٖ

क़दीम के बदतरीन इन्सान का ताबे था तो फिर रसूले अक्रम के हुकुम की हिदायत करनेवालों के बारे मे एक के

اِلَّا الْقَلِيْلَ مِمَّنْ وَفٰى لِرِعَايَةِ الْحَقِّ فِيْهِمْ فَقُتِلَ مَنْ قُتِلَ وَ سُبِيَ

बाद एक मुख़ालेफ़त होती रही और उम्मत उनकी नाराज़गी पर मुसिर और उनसे ताल्लुक़ात क़ता करलेने और

مَنْ سُبِيَ وَ اُقْصِيَ مَنْ اُقْصِيَ وَ جَرَى الْقَضَآءُ لَهُمْ بِمَا يُرْجٰى لَهٗ

उनकी औलाद को दूर करदेने पर मुत्तिफ़क़ रही अलावा उन चन्द अफ़राद के जिन्होंने आले रसूल के बारे मे हक़

حُسْنُ الْمَثُوْبَةِ اِذْ كَانَتِ الْاَرْضُ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَشَآءُ مِنْ

की रियायत के लिए वफ़ादारी से काम लिया तो जो क़त्ल किए गए वो क़त्ल कर दिए गए और जो ग़िरफ़्तार

عِبَادِهٖ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ وَ سُبْحَانَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا

किए गए वो ग़िरफ़्तार कर लिए गए। और जो दरबदर कर दिए गए और उनके हक़ मे फ़ैसलए इलाही इस तरह

لَمَفْعُوْلاً وَ لَنْ يُّخْلِفَ اللهُ وَعْدَهٗ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ فَعَلَى

जारी हुआ जिसमे बेहतरीन सवाब की उम्मीद की जाती है। इस लिए के ज़मीन अल्लाह की है वो अपने बंदो मे

الْاَطَائِبِ مِنْ اَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ وَ عَلِيٍّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِمَا وَ اٰلِهِمَا

जिसको चाहता है उसका वारिस क़रारदेता है और आख़ेरत सिर्फ़ साहेबाने तक़वा के लिए है और हमारा रब पाक

فَلْيَبْكِ الْبَاكُوْنَ وَ اِيَّاهُمْ فَلْيَنْدُبِ النَّادِبُوْنَ وَ لِمِثْلِهِمْ

व बेनियाज़ है। उस का वादा बहरहाल पूरा होने वाला है वो हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नही करता और वो

فَلْتُذْرِفِ الدُّمُوْعُ وَ الْيَصْرُخِ الصَّارِخُوْنَ وَ يَضِجَّ الضَّآجُّوْنَ وَ

साहेबे इज़्ज़त और साहेबे हिकमत है तो अब हज़रत मोहम्मद (स) व अली (अ) के अहलेबैत व पाकीज़ा किरदार

يَعِجَّ الْعَآجُّوْنَ اَيْنَ الْحَسَنُ اَيْنَ الْحُسَيْنُ اَيْنَ اَبْنَآءُ الْحُسَيْنِ؟

अफ़राद (खुदा उन दोनो और उनकी औलाद पर रहमत करे) पर रोने वालों को रोना चाहिए और उन्हीं पर नुदबा

صَالِحٌ بَعْدَ صَالِحٍ وَ صَادِقٌ بَعْدَ صَادِقٍ اَيْنَ السَّبِيْلُ بَعْدَ

करनेवालो को नुदबा करना चाहिए और उन्हीं जैसे अफ़राद के मसाएब पर आँसू बहाना चाहिए और फ़रयाद

السَّبِيْلِ؟ اَيْنَ الْخِيَرَةُ بَعْدَ الْخِيَرَةِ؟ اَيْنَ الشُّمُوْسُ الطَّالِعَةُ؟ اَيْنَ

करने वालों को फ़रयाद करना चाहिए और नाला व शैवन कने वालों को नाला व शैवान और शोरे गिरया बुदंल

الْاَقْمَارُ الْمُنِيْرَةُ؟ اَيْنَ الْاَنْجُمُ الزَّاهِرَةُ؟ اَيْنَ اَعْلَامُ الدِّيْنِ وَ

करना चाहिए। कहाँ हैं हसन (अ) व कहाँ हैं हुसैन कहाँ हैं औलदे हुसैन नेक किरदार के बाद नेक किरदार सादिक़

قَوَاعِدُ الْعِلْمِ؟ اَيْنَ بَقِيَّةُ اللهِ الَّتِيْ لَا تَخْلُوْ مِنَ الْعِتْرَةِ الْهَادِيَةِ؟

के बाद सादिक़ कहाँ हैं राहे हिदायत के बाद दूसरा राहे हिदायत कहाँ हैं एक मुन्ताख़िब के बाद दूसरा मुन्ताख़िब

اَيْنَ الْمُعَدُّ لِقَطْعِ دَابِرِ الظَّلَمَةِ؟ اَيْنَ الْمُنْتَظَرُ لِاِقَامَةِ الْاَمْتِ وَ

राज़गार कहाँ हैं तुलू करते हुए आफ़ताब कहाँ हैं चमकते हुए माहताब, कहाँ हैं रौशन सितारे, कहाँ हैं दीन के

الْعِوَجَ؛ اَيْنَ الْمُرْتَجٰى لِاِزَالَةِ الْجَوْرِ وَ الْعُدْوَانِ؛ اَيْنَ الْمُدَّخَرُ

लहराते परचम व अलम के मुसतहकम सुतून, कहाँ है वो बक़ी यतुल्लाह जिससे हिदायत करने वाली इतरते

لِتَجْدِيْدِ الْفَرَائِضِ وَالسُّنَنِ؛ اَيْنَ الْمُتَخَيَّرُ لِاِعَادَةِ الْمِلَّةِ وَ

पैग़ंबर से दुनिया ख़ाली नही हो सकती, कहाँ है वो जिसे सिलसिलए ज़ुल्मको क़ता करनेके लिए मोहय्या किया

الشَّرِيْعَةِ ؛ اَيْنَ الْمُؤَمَّلُ لِاِحْيَآءِ الْكِتَابِ وَ حُدُوْدِهٖ؛ اَيْنَ مُحْيِىْ

गया, कहाँ है जिसका कजी और इंहेराफ़ को दुरूस्त वरने के लिए इनतेज़ार होरहा है, कहाँ है वो जिससे ज़ुल्म व

مَعَالِمِ الدِّيْنِ وَ اَهْلِهٖ؛ اَيْنَ قَاصِمُ شَوْكَةِ الْمُعْتَدِيْنَ؛ اَيْنَ هَادِمُ

तअद्दी का ज़ाएल करनेकी उम्मीदें वाबसता हैं। कहाँ है वो जिसे फ़राएज़ व सुनन की तजदीदके लिए ज़ख़ीरा

اَبْنِيَّةِ الشِّرْكِ وَ النِّفَاقِ؛ اَيْنَ مُبِيْدُ اَهْلِ الْفُسُوْقِ وَ الْعِصْيَانِ

किया गया है। कहाँ है वो जिसे मज़ाहिब और शरीयत को दोबारा मनज़रे आम पर लाने के लिए मुनताख़िब किया

وَ الطُّغْيَانِ؛ اَيْنَ حَاصِدُ فُرُوْعِ الْغَيِّ وَ الشِّقَاقِ؛ اَيْنَ طَامِسُ

गया। कहाँ है वो जिससे किताब और खुदा और उसके हुदूद की ज़िंदगी की उम्मीदें वाबसता हैं। कहाँ है दीन और

اٰثَارِ الزَّيْغِ وَ الْاَهْوَآءِ؛ اَيْنَ قَاطِعُ حَبَآئِلِ الْكِذْبِ وَ الْاِفْتِرَاءِ؛

अहले दीन के आसार का ज़िन्दा करने वाला, कहाँ है अहले सितम की शौकत ख़त्म करनेवाला, कहाँ है शिर्क

اَيْنَ مُبِيْدُ الْعُتَاةِ وَ الْمَرَدَةِ؛ اَيْنَ مُسْتَاْصِلُ اَهْلِ الْعِنَادِ وَ

व निफ़ाक़ को मुनहदीम करनेवाला, कहाँ है फ़िस्क व मासियत को तबाह करनेवाला, कहाँ है गुम्राही की शाखों

التَّضْلِيْلِ وَالْاِلْحَادِ؛ اَيْنَ مَعِزُّ الْاَوْلِيَآءِ وَ مُذِلُّ الْاَعْدَاءِ؛ اَيْنَ

का काटनेवाला, कहाँ है इनहेराफ़ और ख़्वाहिशात के आसर को महव करनेवाला, कहाँ है कज़्ज़ब परदाज़ियों

جَامِعُ الْكَلِمَةِ عَلَى التَّقْوٰى؛ اَيْنَ بَابُ اللهِ الَّذِىْ مِنْهُ يُؤْتٰى؛ اَيْنَ

की रस्सीयों को काटने वाला, कहाँ है शरकशों और बाग़ियों को हलाक करने वाला कहाँ है इनाद इलहाद गुम्राही

وَجْهُ اللهِ الَّذِىْ اِلَيْهِ يَتَوَجَّهُ الْاَوْلِيَآءُ؛ اَيْنَ السَّبَبُ الْمُتَّصِلُ

के ज़िम्मादारों को जड़ से उखाड़ कर फेंक देनेवाला, कहाँ है दोसतौं को इज़्ज़त देनेवाला और दुश्मनों को ज़लील

بَيْنَ الْاَرْضِ وَ السَّمَآءِ؛ اَيْنَ صَاحِبُ يَوْمِ الْفَتْحِ وَ نَاشِرُ رَايَةِ

करने वाला, कहाँ है तमाम कलेमात को तक़वे पर जमा करने वाला, कहाँ है वो दरवाज़ए फ़ज्ले खुदा जिस से

الْهُدٰى؛ اَيْنَ مُؤَلِّفُ شَمْلِ الصَّلَاحِ وَ الرِّضَا؛ اَيْنَ الطَّالِبُ

उस की बारगाह मे हाज़िर हुआ जाता है, कहा है वो जो अल्लाह जिस की तरफ़ उस के दोस्त मुतवज्ञे होते हैं , कहाँ

بِذُحُوْلِ الْاَنْبِيَآءِ وَ اَبْنَآءِ الْاَنْبِيَآءِ؛ اَيْنَ الطَّالِبُ بِدَمِ

है वो सिलसिला जो ज़मीन व आसमान का इत्तेसाल क़एम करनेवाला है, कहाँ है वो जो राज़े फ़तह का मालिक

الْمَقْتُوْلِ بِكَرْبَلَاءَ؛ اَيْنَ الْمَنْصُوْرُ عَلٰى مَنِ اعْتَدٰى عَلَيْهِ

है और परचमे हिदायत का लहराने वाला है, कहाँ है वो जो नेकी और रज़ा के मुनतशिर अजज़ा को जमा

وَافْتَرٰى؛ اَيْنَ الْمُضْطَرُّ الَّذِىْ يُجَابُ اِذَا دَعَا؛ اَيْنَ صَدْرُ الْخَلَايِقِ

करनेवाला है, कहाँ है अंबिया और औलीयए अंबिया के ख़ूने नाहक़ का बदला लेनेवाला, कहाँ है शहीदे करबला

ذُوالْبِرِّ وَ التَّقْوٰی؛ اَیْنَ ابْنُ النَّبِیِّ الْمُصْطَفٰی؛ وَابْنُ عَلِیٍّ

के ख़ूने नाहक़ का मुतालबा करनेवाला, कहाँ है वो जिस की हर ज़ुल्म और इफ़तेरा करने वाले के मुक़ाबले मे

قف الْمُرْتَضٰی؛ وَ ابْنُ خَدِیْجَةَ الْغَرَّآءِ؛ وَابْنُ فَاطِمَةَ الْکُبْرٰی؛ بِاَبِیْ

मदद की जानेवाली है, कहाँ है वो मुज़तरिब जिसकी दुआ मुस्तेजाब होनेवाली है वो जब भी दुआ करे, कहा है

اَنْتَ وَ اُمِّیْ وَ نَفْسِیْ لَکَ الْوِقَآءُ وَ الْحِمٰی یَابْنَ السَّادَةِ الْمُقَرَّبِیْنَ

सारी मख़लूक़ात का सरबराह साहेबे सलाह व तक़वा कहाँ है रसूले मुसतफ़ा का फ़रजंद और अलीए मुतुर्ज़ा का

یَابْنَ النُّجَبَآءِ الْاَکْرَمِیْنَ یَابْنَ الْهُدَاةِ الْمَهْدِیِّیْنَ یَابْنَ الْخِیَرَةِ

दिलबर और ख़दीजा का नूरे नज़र और फ़ातेमा कुबरा का लख़्ते जिगर तुझ पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान और मेरा नफ़्स

الْمُهَذَّبِیْنَ یَابْنَ الْغَطَارِفَةِ الْاَنْجَبِیْنَ یَابْنَ الْاَطَائِبِ الْمُطَهَّرِیْنَ

तेरे लिए सिपर और मुहाफ़िज़ है ऐ मुक़र्ररब सरदारों के फ़रज़ंद ऐ मुकररम अशराफ़ के फ़रज़ंद ऐ हिदायत

یَابْنَ الْخَضَارِمَةِ الْمُنْتَجَبِیْنَ یَابْنَ الْقَمَاقِمَةِ الْاَکْرَمِیْنَ یَابْنَ

याफ़ता हिदायत करनेवालों के फ़रज़ंद ऐ मोहज़्ज़ब और पाकीज़ा ख़िसाल मुन्तिख़ब अफ़राद के फ़रज़ंद ऐ

الْبُدُوْرِ الْمُنِیْرَةِ یَابْنَ السُّرُجِ الْمُضِیْئَةِ یَابْنَ الشُّهُبِ الثَّاقِبَةِ

शरीफ़तरीन बुज़ुर्गों के फ़रज़ंद, ऐ पाकीज़ा और तय्यब हज़रात के फरज़ंद ऐ मुन्ताख़िब राज़गार सरदारों के फ़रज़ंद

یَابْنَ الْاَنْجُمِ الزَّاهِرَةِ یَابْنَ السُّبُلِ الْوَاضِحَةِ یَابْنَ الْاَعْلَامِ

ऐ मुकररम और मोहतरम हिदायत के मिनारों के फ़रज़ंद ऐ चमकते हुए माहताबों के फ़रज़ंद ऐ रौशन चिरागों के

اَللَّائِحَةِ يَابْنَ الْعُلُوْمِ الْكَامِلَةِ يَابْنَ السُّنَنِ الْمَشْهُوْرَةِ يَابْنَ

फ़रज़ंद ऐ ज़व देते हुए शहाबों के फ़रज़ंद ऐ ताबनाक सितारों के फ़रज़ंद ऐ वाज़ेह राह हाए हिदायत के फ़रज़ंद, ऐ

الْمَعَالِمِ الْمَأْثُوْرَةِ يَابْنَ الْمُعْجِزَاتِ الْمَوْجُوْدَةِ يَابْنَ الدَّلَائِلِ

रौशन परचम हाए दीन के फ़रज़ंद, ऐ कामिल उलूम के फ़रज़ंद ऐ मशहूर सुनन के फ़रज़ंद, ऐ मासूर आसारे दीन

الْمَشْهُوْدَةِ يَابْنَ الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيْمِ يَابْنَ النَّبَاءِ الْعَظِيْمِ

के फ़रज़ंद, ऐ मौजूद मोजेज़ात के फ़रज़ंद ऐ वजेह दलाएल के फ़रज़ंद ऐ सिराते मुस्तक़ीम के फ़रज़ंद ऐ नबाए

يَابْنَ مَنْ هُوَ فِيْ اُمِّ الْكِتَابِ لَدَى اللهِ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ يَابْنَ الْآيَاتِ وَ

अज़ीम के फ़रज़ंद, ऐ उस के फ़रज़ंद जो किताबे खुदा मे खुदा के नज़दीक अली और हकीम है। ऐ आयात व

الْبَيِّنَاتِ يَابْنَ الدَّلَائِلِ الظَّاهِرَاتِ يَابْنَ الْبَرَاهِيْنِ الْوَاضِحَاتِ

बय्यनात के फ़रज़ंद। ऐ ज़ाहिर और रौशन दलाएल के फ़रज़ंद, ऐ वजेह और ज़ाहिर बुरहानों के फ़रज़ंद ऐ कामिल

الْبَاهِرَاتِ يَابْنَ الْحُجَجِ الْبَالِغَاتِ يَابْنَ النِّعَمِ السَّابِغَاتِ يَابْنَ

दलीलों के फ़रज़ंद, ऐ वसी तरीन नेमतों के फ़रज़ंद, ऐ ताहा व मोहकमात के फ़रज़ंद, ऐ यासीन और ज़ारेयात के

طٰهٰ وَ الْمُحْكَمَاتِ يَابْنَ يٰسٓ وَ الذَّارِيَاتِ يَابْنَ الطُّوْرِ وَ الْعَادِيَاتِ

फ़रज़ंद ऐ तूर और आदयात के फ़रज़ंद ऐ उसके फ़रज़ंद जो क़ुरबे खुदा मे इस क़द्र बढ़ा के दो कमानों का या

يَابْنَ مَنْ دَنٰى فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى دُنُوًّا وَ اقْتِرَابًا

उससे कम फ़ासला रह गया और वो खुदाए अली आला से क़रीब तर होता चला गया ऐ काश मुझे मालूम होता

مِّنَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى لَيْتَ شِعْرِىْ اَيْنَ اسْتَقَرَّتْ بِكَ النَّوٰى بَلْ

के तेरा मुसतक़र और मरकज़ दूरी ने कहाँ पाया है और किस ज़मीन ने तुझे बसा रखा है मक़ामे रज़वा है या कोई

اَىُّ اَرْضٍ تُقِلُّكَ اَوْ ثَرٰى اَبِرَضْوَى اَوْ غَيْرِهَا اَمْ ذِىْ طُوٰى عَزِيْزٌ

ख़ित्ते अरज़ य मक़ामे तुवा है मेरे लिए ये बहुत सख़्त है के सारी दुनिया को देखूँ और तू नज़र न आए और तेरी

عَلَىَّ اَنْ اَرَى الْخَلْقَ وَلَا تُرٰى وَلَا اَسْمَعُ لَكَ حَسِيْسًا وَّلَا نَجْوٰى

आवाज़ सुनूँ ना तेरी गुफ़तगु। मेरे लिए ये बहुत सख़्त है के बलाएं एहाता किए रहें और तुझ तक न मेरी फ़रयाद

عَزِيْزٌ عَلَىَّ اَنْ تُحِيْطَ بِكَ دُوْنِىَ الْبَلْوٰى وَلَا يَنَالُكَ مِنِّىْ ضَجِيْجٌ وَلَا

पहुँचे और न शिकायत मेरी जान क़ुर्बान तू ऐसा ग़ाएब है जो किसी समय मुझसे अलग नही हुआ मेरी जान क़ुर्बान

شَكْوٰى بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ مُّغَيَّبٍ لَمْ يَخْلُ مِنَّا بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ

तू ऐसा बईद है जो कभी हमसे दूर नही हुआ मेरी जान क़ुर्बान तू हर मुश्ताक़की आरज़ू है मोमिन मर्द या औरत

نَازِحٍ مَا نَزَحَ عَنَّا بِنَفْسِىْ اَنْتَ اُمْنِيَّةُ شَآئِقٍ يَتَمَنّٰى مِنْ مُؤْمِنٍ

जिसने तुझे याद किया व तुझसे इ०ज्हारे मोहब्बत किया। मेरी जान क़ुर्बान तुझ इज़्ज़त के पासबान पर जिसकी

وَ مُؤْمِنَةٍ ذَكَرٰى فَحَنَّا بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ عَقِيْدِ عِزٍّ لَا يُسَامٰى

बराबरी नही हो सकती मेरी जान क़ुर्बान तुझ बुज़ुर्गा के बुनयादी हिस्सेदार पर जिसका मुक़ाबला मुमकिन नही

بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ اَثِيْلِ مَجْدٍ لَا يُجَارٰى بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ تِلَادِ

मेरी जान क़ुर्बान तुझ नेमतों के क़दीम तरीन मरकज़ पर जिसकी मोमानियत नही हो सकती मेरी जान क़ुर्बान तुझ

نِعَمٍ لَا تُضَاهٰى بِنَفْسِىْ اَنْتَ مِنْ نَصِيْفِ شَرَفٍ لَا يُسَاوٰى اِلٰى

शरफ़ के बराबर के शरीक पर जिसकी कोई बराबरी नही कर सकता मेरे मौला कब तक मै आपके बारे मे हैरानो

مَتٰى اَحَارُ فِيْكَ يَا مَوْلَاىَ؟ وَاِلٰى مَتٰى وَ اَىُّ خِطَابٍ اَصِفُ فِيْكَ وَ

सर गरदॉ रहूँगा व किसी अंजानसे तेरे बारे मे ख़िताब करूँगा व कैसे राज़ो नियाज़ करूँगा मेरे लिए ये बड़ी सख़्त

اَىُّ نَجْوٰى؟ عَزِيْزٌ عَلَىَّ اَنْ اُجَابَ دُوْنَكَ وَ اُنَاغٰى عَزِيْزٌ عَلَىَّ اَنْ

बात है के सबका जवाब सुनूँ और तेरा जवाब न सुनूँ। ये बड़ी सख़्त मनिज़ल है के मै गिरया करूँ और दुनिया

اَبْكِيَكَ وَ يَخْذُلَكَ الْوَرٰى عَزِيْزٌ عَلَىَّ اَنْ يَجْرِىَ عَلَيْكَ دُوْنَهُمْ مَا

तुझे नज़र अंदाज़ कर दे। मेरे लिए ये बड़ी सख़्त बात है के सारे हालातो मसाएब सि०पर् तुझपर ही गुज़रते रहें।

جَرٰى هَلْ مِنْ مُعِيْنٍ فَاُطِيْلَ مَعَهُ الْعَوِيْلَ وَ الْبُكَاءَ؟ هَلْ مِنْ

क्या कोई फ़रयादी है जिसकी तन्हाई मे उसकी मसाअदत करूँ क्या कोई और आँख है जिस मे ख़सो ख़ाशाक हूँ

جَزُوْعٍ فَاُسَاعِدَ جَزَعَهٗ اِذَا خَلَا؟ هَلْ قَذِيَتْ عَيْنٌ فَسَاعَدَتْهَا

तो मै उसका बेचैनी मे साथ दे सकूँ, क्या फ़रज़ंदे रसूल क्या कोई रासता है जो तेरी मनिज़ल तक पहुँचा सके और

عَيْنِىْ عَلَى الْقَذٰى؟ هَلْ اِلَيْكَ يَابْنَ اَحْمَدَ سَبِيْلٌ فَتُلْقٰى؟ هَلْ

क्या हमारा आजका दिन अपने कल से मुत्तसिल होगा के हम उस के इस्तेफ़ादा कर सकें आाख़िर हम कब

يَتَّصِلُ يَوْمُنَا مِنْكَ بِعِدَةٍ فَنَحْظٰى؟ مَتٰى نَرِدُ مَنَاهِلَكَ الرَّوِيَّةَ

आपके सेराब करने वाले चश्मों पर वारिद होगें और कब आबे शीरीं से सेराब होगें के अब प्यास का अरसा बहुत

فَنَرْوٰی؛ مَتٰی نَنْتَقِعُ مِنْ عَذْبِ مَآئِكَ فَقَدْ طَالَ الصَّدٰی؛ مَتٰی

तवील हो गया है आाख़िर कब हमारी सुबह व शाम आपकी ख़िदमत मे होगी के हम अपनी आँखों को ठंडा कर

نُغَادِيْكَ وَنُرَاوِحُكَ فَنُقِرُّ عَيْنًا؛ مَتٰی تَرَانَا وَنَرَاكَ وَقَدْ نَشَرْتَ

सकें कब आप हमें और हम आपको देखेंगें के आप नुस्रते इलाही के परचम को लहरा रहे हैं कब आप देखेंगे के

لِوَآءَ النَّصْرِ تُرٰی؛ اَتَرَانَا نَحُفُّ بِكَ وَاَنْتَ تَاُمُّ الْمَلَاَ وَقَدْ مَلَاْتَ

हम आप के गिर्द हाज़िर हैं और आप क़ौम की क़यादत कर रहे हा और ज़मीन को अद्ल व इनसाफ़ से भर दिया

الْاَرْضَ عَدْلاً وَاَذَقْتَ اَعْدَآئَكَ هَوَانًا وَعِقَابًا وَاَبَرْتَ الْعُتَاةَ وَ

हो और दुश्मनों को ज़िल्लत और अज़ाब का मज़ा चखा दिया हो और सरकशों और हक़ के मुनकिरों को हलाक

جَحَدَةِ الْحَقِّ وَ قَطَعْتَ دَابِرَ الْمُتَكَبِّرِيْنَ وَ اجْتَثَثْتَ اُصُوْلَ

कर दिया हो और मग़रूरों के सिलसिले को क़ता कर दिया हो और ज़ालिमों की जड़ों को उखाड़ दिया हो और

الظَّالِمِيْنَ وَ نَحْنُ نَقُوْلُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ

हम कह रहे हों के सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब्बुल आलमीन है खुदाया तू रन्ज व ग़म और बलाओं को

كَشَّافُ كُرَبِ وَالْبَلْوٰی وَاِلَيْكَ اَسْتَعْدِیْ فَعِنْدَكَ الْعَدْوٰی وَ

दूर करनेवाला है और तुझसे फ़रयाद करते हैं के तेरे पास मदद का सारा सामान है और तू आख़िरत और दुनिया

اَنْتَ رَبُّ الْاٰخِرَةِ وَ الدُّنْيَا فَاَغِثْ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ

दोनो का मालिक है तो ऐ फ़रयाद करने वालों की फ़रयाद रसी करनेवाले अपने मुसीबत ज़दा बन्दे की मदद कर

عُبَيْدَكَ الْمُبْتَلٰى وَ اَرِهِ سَيِّدَهٗ يَا شَدِيْدَ الْقُوٰى وَاَزِلْ عَنْهُ بِهِ

और ऐ मुस्तहकम ताक़तवाले उस के मौला की ज़ियारत क़रा दे और उसके रंज व ग़ाम और दर्द व तकलीफ़ को

الْاَسٰى وَ الْجَوٰى وَ بَرِّدْ غَلِيْلَهٗ يَا مَنْ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى وَ مَنْ

ज़ाएल कर दे और उसकी तश्नगी को रफ़ा करदे ऐ वो खुदा जो अर्श का हाकिम है और जिस की तरफ़ सबकी

اِلَيْهِ الرُّجْعٰى وَالْمُنْتَهٰى اَللّٰهُمَّ وَ نَحْنُ عَبِيْدُكَ التَّائِقُوْنَ اِلٰى

बाज़गश्त और इन्तेहा है खुदाया हम तेरे बन्दे हैं तेरे वली की ज़ियारत के मुश्ताक जो तुझे और तेरे नबी को याद

وَلِيِّكَ الْمُذَكِّرِ بِكَ وَبِنَبِيِّكَ خَلَقْتَهٗ لَنَا عِصْمَةً وَّمَلَاذًا وَ اَقَمْتَهٗ

दिलानेवाला है और जिस को तूने हमारे लिए पनाहगाह और सहारा बताया है और हमारे लिए क़याम का ज़रिया

لَنَا قِوَامًا وَ مَعَاذًا وَ جَعَلْتَهٗ لِلْمُؤْمِنِيْنَ مِنَّا اِمَامًا فَبَلِّغْهُ مِنَّا

और पनाह का सहारा बना कर क़ाएम किया और हम मे साहेबाने ईमान के लिए इमाम बनाया तो अब हमारी

تَحِيَّةً وَّ سَلَامًا وَ زِدْنَا بِذٰلِكَ يَا رَبِّ اِكْرَامًا وَاجْعَلْ مُسْتَقَرَّهٗ

तरफ़से तहय्यत और सलाम पहुँचा दे और इस तरह हमारे एज़ाज़ मे इज़ाफ़ा फ़रमा और उनके मरकज़ को हमारा

لَنَا مُسْتَقَرًّا وَ مُقَامًا وَ اَتْمِمْ نِعْمَتَكَ بِتَقْدِيْمِكَ اِيَّاهُ اَمَامَنَا

मरकज़ और हमारी मनिज़ल क़रार दे और अपनी नेमत को उस तरह मुकम्मल कर दे के उन्हें हमारे सामने

حَتّٰى تُوْرِدَنَا جِنَانَكَ وَ مُرَافَقَةِ الشُّهَدَآءِ مِنْ خُلَصَآئِكَ اَللّٰهُمَّ

मनज़रे आम पर ला यहाँ तक के हमें अपनी जन्नत मे वारिद कर दे और अपने मुख़लिस शहीदों की रिफ़ाक़त

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ جَدِّهٖ وَ رَسُوْلِكَ

नसीब कर खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल कर और सलवात नाज़ल फ़र्मा हज़रत मोहम्मद

السَّيِّدِ الْاَكْبَرِ وَعَلٰى اَبِيْهِ السَّيِّدِ الْاَصْغَرِ وَ جَدَّتِهِ الصِّدِّيْقَةِ

(स) पर जो उनके जद और तेरे रसूल सरदारे अकबर हैं और उनके पिता पर जो सरदारे असग़र हैं और उनकी

الْكُبْرٰى فَاطِمَةَ بِنْتِ مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى مَنِ اصْطَفَيْتَ مِنْ اٰبَآئِهٖ

जदाए माजेदा जो सिद्दीक़ए कुबरए फ़ातेमा बिन्ते मोहम्मह हैं और जिनको भी तूने उनके नेक किरदार आबाओ

الْبَرَرَةِ وَ عَلَيْهِ اَفْضَلَ وَ اَكْمَلَ وَ اَتَمَّ وَ اَدْوَمَ وَ اَكْثَرَ وَ اَوْفَرَ مَا

अजदाद मे मुनताख़िब क़रार दिया है और खुद उन पर भी बेहतरीन मुकम्मल तरीन ताम व तमाम दाएम व क़ाएम

صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَصْفِيَآئِكَ وَ خِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ صَلِّ

और कसीर व वाफ़र सलवात जो तूने किसी मुन्तिख़ब मु०ख्तार और चुने हुए बन्दे पर नाज़ल की है और उनपर

عَلَيْهِ صَلٰوةً لَا غَايَةَ لِعَدَدِهَا وَلَا نِهَايَةَ لِمَدَدِهَا وَ لَا نَفَادَ

वो रहमत नाज़ल कर जिसके अदद की हद नही है और जिसकी मुद्दत की इन्नतेहा नही है और जिस की वुसअत

لِاَمَدِهَا اَللّٰهُمَّ وَ اَقِمْ بِهِ الْحَقَّ وَ اَدْحِضْ بِهِ الْبَاطِلَ وَ اَدِلَّ بِهٖ

का ख़ात्मा नही है खुदाया उनके ज़रिए हक़ को क़ाएम कर और बातिल को फ़ना कर दे। अपने दोस्तों को बुलंदी

اَوْلِيَآئَكَ وَ اَذْلِلْ بِهٖ اَعْدَآئَكَ وَصَلِّ اللّٰهُمَّ بَيْنَنَا وَبَيْنَهٗ وُصْلَةً

अता फ़र्मा और अपने दुश्मनो को ज़लील व रूस्वा कर और हमारे और उनके दरमीयान इस तरह का राबेता

تُؤَدِّیْ اِلٰی مُرَافَقَتِ سَلَفِہٖ وَاجْعَلْنَا مِمَّنْ یَّاْخُذُ بِحُجْزَتِہِمْ وَ

क़ाएम करदे के उसके नतीजे मे हमे उनके बुज़ुर्गों की रिफ़ाक़त हासिल हो और हमें उन लोगों मे क़रार दे जो

یَمْکُثُ فِیْ ظِلِّہِمْ وَ اَعِنَّا عَلٰی تَاْدِیَۃِ حُقُوْقِہٖ اِلَیْہِ وَالْاِجْتِہَادِ فِیْ

उनके दामन से वाबस्ता हों और उनके साए मे पनाह ले सकें और हमारी मदद कर के हम उनके हुक़ूक़ को अदा

طَاعَتِہٖ وَاجْتِنَابِ مَعْصِیَتِہٖ وَامْنُنْ عَلَیْنَا بِرِضَاہُ وَ ھَبْ لَنَا

कर सकें और उनकी इताअत की कोशिश करें और उनकी नाफ़रमानी से परहेज़ करें और हम पर ये एहसान कर

رَاْفَتَہٗ وَرَحْمَتَہٗ وَدُعَآئَہٗ وَخَیْرَہٗ مَا نَنَالُ بِہٖ سَعَۃً مِّنْ رَحْمَتِکَ وَ

के उन की रज़ा हासिल हो जाए और हमे उनकी महेरबानी व रहमत और दुआ और ख़ैर अता फ़र्मा के जिस से

فَوْزًا عِنْدَکَ وَاجْعَلْ صَلٰوتَنَا بِہٖ مَقْبُوْلَۃً وَ ذُنُوْبَنَا بِہٖ مَغْفُوْرَۃً

हम तेरी वसीह रहमतों को हासिल कर सकें तेरे नज़दीक कामयाब हो सकें और हमारी नमाज़ को उनके ज़रिए

وَدُعَآئَنَا بِہٖ مُسْتَجَابًا وَاجْعَلْ اَرْزَاقَنَا بِہٖ مَبْسُوْطَۃً وَھُمُوْمَنَا

मक़बूल बनादे और हमारे गुनाहों को बख़श दे और हमारी दुआको मुस्तेजाब क़रार दे और हमारे रिज़्क़ को

بِہٖ مَکْفِیَّۃً وَ حَوَآئِجَنَا بِہٖ مَقْضِیَّۃً وَ اَقْبِلْ اِلَیْنَا بِوَجْھِکَ

वुसअत अता फ़र्मा और हमारे रंज व गम मे हमारी किफ़ायत फ़र्मा और हमारी हाजतों को पूरी फ़र्मा और हमारी

الْکَرِیْمِ وَاقْبَلْ تَقَرُّبَنَا اِلَیْکَ وَانْظُرْ اِلَیْنَا نَظْرَۃً رَحِیْمَۃً

तरफ़ अपने साहेबे करम चेहरे से तवज्जो फ़र्मा और हमारे तक़र्रूब को क़ुबूल फ़र्मा और हमारी तरफ़ ऐसी नज़रे

نَسْتَكْمِلُ بِهَا الْكَرَامَةِ عِنْدَكَ ثُمَّ لَا تَصْرِفْهَا عَنَّا بِجُوْدِكَ

करम फ़र्मा जिसके ज़रिए हम तेरी बारगाह मे इज़्ज़त की तकमील कर सकें और उसके बाद अपने जुदो करम के

وَاسْقِنَا مِنْ حَوْضِ جَدِّهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ بِكَأْسِهٖ وَبِيَدِهٖ رَيًّا

रूख़ को हमारी तरफ़ से मोड़ना और हमे उनके जद के जामे कौसर और उनके दस्ते करम से मुकम्मल तौर पर

رَوِيًّا هَنِيْئًا سَآئِغًا لَا ظَمْأَ بَعْدَهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

सेराब फ़र्मा जिसके बाद फिर तश्नगी न पैदा हो ऐ सब से ज़्यादा रहमो करम करनेवाले।

फिर नमाज़े ज़ियारत बजा लाए जिस तरह से गुज़री और जो चाहे दुआ करे इन्शाअल्लाह तआला पूरी होगी।

दूसरा अम्र

वह ज़ियारत है जिसके ज़रीए रोज़ाना इमाम साहेबुज़ ज़माना (अ) की ज़ियारत की जाती है और वह ज़ियारत यह है:

اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ مَوْلَايَ صَاحِبَ الزَّمَانِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِ عَنْ جَمِيْعِ

ऐ खुदा हमारे साहेबज़्ज़मान सलवातुल्लाह पर दुरूद नाज़ल कर तमाम मोमिनीन व मोमिनात की

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ فِيْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبِهَا وَ بَرِّهَا وَ

तरफ़ से जो ज़मीन वे मश्रिक़ और मग़ारिब मे हैं और खुश्की मे और दरया मे, पहाड़ मे और बयाबान

بَحْرِهَا وَ سَهْلِهَا وَ جَبَلِهَا حَيِّهِمْ وَ مَيِّتِهِمْ وَ عَنْ وَالِدَيَّ وَ وُلْدِيْ وَ

मे ज़िन्दा हैं या मुर्दा और मेरे वालेदैन की तरफ़ से और मेरी तरफ़ से ऐसी सलवात जो अर्शे खुदा के

عَنِّیْ مِنَ الصَّلَوَاتِ وَ التَّحِیَّاتِ زِنَةَ عَرْشِ اللّٰهِ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ وَ

वज़्न के बराबर और कलेमाते खुदा की मिक़दार के बराबर हों और खुदा की रज़ामंदी की इन्तेहा

مُنْتَهٰى رِضَاهُ وَ عَدَدَ مَا اَحْصَاهُ كِتَابُهٗ وَ اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُهٗ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ

हां और उस अदद के बराबर जिसका एहसा न हो और रोज़ाना अहेद व अक़्द व बैयत का जो मेरी

اُجَدِّدُ لَهٗ فِیْ هٰذَا الْیَوْمِ وَ فِیْ كُلِّ یَوْمٍ عَهْدًا وَ عَقْدًا وَ بَیْعَةً فِیْ رَقَبَتِیْ

गर्दन मे है। खुदाया जिस तरह तूने मुझको शरफ़े ज़ियारत से नवाज़ा है और इस फ़ज़ीलतर ज़ियरत

اَللّٰهُمَّ كَمَا شَرَّفْتَنِیْ بِهٰذَا التَّشْرِیْفِ وَ فَضَّلْتَنِیْ بِهٰذِهِ الْفَضِیْلَةِ وَ

से शरफ़याब किया है और उस नेमत से मख़सूस किया है तो तू दुरूद भेज मेरे मौला और मेरे

خَصَصْتَنِیْ بِهٰذِهِ النِّعْمَةِ فَصَلِّ عَلٰى مَوْلَایَ وَ سَیِّدِیْ صَاحِبِ

सरदार साहेबज़्ज़मान पर और मुझको क़रार दे उनके दोस्तों और इत्तेबा करनेवालों और मदाफेअत

الزَّمَانِ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ اَنْصَارِهٖ وَ اَشْیَاعِهٖ وَ الذَّابِّیْنَ عَنْهُ وَ اجْعَلْنِیْ

करनेवालों मे और मुझको क़रार दे उनमे जो उन की रकाबमे शहीद हों इताअत करते हुए बेग़ैर

مِنَ الْمُسْتَشْهَدِیْنَ بَیْنَ یَدَیْهِ طَائِعًا غَیْرَ مُكْرَهٍ فِی الصَّفِّ الَّذِیْ

किसी जब्र वे उस सफ़ मे जिस सफ़ वालों की तूने अपनी किताब मे तौसीफ़ की है और तूने कहा है

نَعَتَّ اَهْلَهٗ فِیْ كِتَابِكَ فَقُلْتَ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْیَانٌ مَرْصُوْصٌ عَلٰى

के वो स०फें सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह हैं तेरी इताअत और तेरे रसूल (स) की इताअत पर

طَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِكَ وَآلِهٖ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ بَيْعَةٌ

और उसकी आल की इताअत पर (उन सबपर सलाम हो) खुदाया ये बैअत है उनकी मेरी गर्दन मे

لَهٗ فِيْ عُنُقِيْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

रोज़े क़यामत तक के लिए।

लेख़क: अल्लामा मजलिसी ने बिहारूल अनवार में फ़रमाया है के मैंने बाज़ क़दीम किताबों में देखा है के इस ज़ियारत के बाद दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर मारे और गोया के हज़रत की बयअत करे। वाज़ेह रहे के हमने आमाले सरदाबे मुक़द्दस में चार ज़ियारतें नक़्ल की हैं और यह ज़ियारत हमारी किताब की पाँचवीं ज़ियारत है। और वर्ग-२ में ज़िक्रे ज़ियारते होजजे ताहेरा में हफ़्ते के दिनों की ज़ियारत में हज़रत की एक और ज़ियारत नक़्ल की गई है जो जुमे के दिन पढ़ी जाती है।

तीसरा अम्र - दुआ-ए-अहद

जो इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति इस अहद को चालीस सुब्ह पढ़ेगा वह हमारे क़ायम के अन्सार में होगा और अगर ज़हूर से पहले मर जाएगा तो खुदा उसको क़ब्र से निकालेगा ताके हज़रत की ख़िदमत में रहे और परवरदिगार हर शब्द के मुक़ाबलें में हज़ार हसनात अता फ़रमाएगा और गुनाहों को माफ़ करेगा। वह अहद यह है:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النُّوْرِ الْعَظِيْمِ وَرَبَّ الْكُرْسِيِّ الرَّفِيْعِ وَرَبَّ الْبَحْرِ

खुदाया ऐ रब नूरे अज़ीम और ऐ रब्बे कुर्सा बुलंद (रहमते वासे वाले) और खुदावन्दे दरयाए बे पायाने एहसा

الْمَسْجُوْرِ وَمُنْزِلَ التَّوْرٰيةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالزَّبُوْرِ وَرَبَّ الظِّلِّ

और तौरेत व इनजील और ज़बूर के नाज़ल करनेवाले और ऐ परवरदिगारे साया व आफ़ताब और क़ुआर्न

وَالْحَرُوْرِ وَمُنْزِلَ الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَرَبَّ الْمَلٰئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ

अज़ीम के नाज़ल करनेवाले और परवरदिारे मलाएकऐ मुक़र्रेबीन और अंबिया व मुर्सलीन खुदाया मै तुझ

وَالْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ

से सवाल करता हूँ तेरी करीम ज़ात के वास्ते से और तेरे रौशन नूरे जमाल के वास्ते से और तेरी क़दीम

وَبِنُوْرِ وَجْهِكَ الْمُنِيْرِ وَبِمُلْكِكَ الْقَدِيْمِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَسْئَلُكَ

बादशाहत के वास्ते से ऐ ज़िन्दा ऐ पाईन्दा मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे नाम के वास्ते से जिससे आसमान

بِاسْمِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ بِهِ السَّمٰوَاتُ وَالْاَرْضُوْنَ وَبِاسْمِكَ الَّذِيْ

व ज़मीन चमक रहे हैं और तेरे नाम के वास्ते से जिसके ज़रिए से अव्वलीन व अख़िरीन ने सलाह पाई है। ऐ

يَصْلَحُ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ يَا حَيًّا قَبْلَ كُلِّ حَيٍّ وَيَا حَيًّا بَعْدَ

हर ज़िन्दा से पहले ज़िन्दा और ऐ हर ज़िन्दा के बाद ज़िन्दा रहनेवाले, ऐ ज़िन्दा जिस वक़्त कोई ज़िन्दा न था,

كُلِّ حَيٍّ وَيَا حَيًّا حِيْنَ لَا حَيَّ يَا مُحْيِيَ الْمَوْتٰى وَمُمِيْتَ الْاَحْيَآءِ يَا حَيُّ لَا

ऐ मुर्दा को ज़िन्दगी देनेवाले और मौला, इमाम, हादी, महदी और तेरे अम्र के साथ क़याम करनेवाले (अल्लाह

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ مَوْلَانَا الْاِمَامَ الْهَادِيَ الْمَهْدِيَّ الْقَآئِمَ

का दुरूद हो उनपर और उनके आबाए ताहेरीन पर) तमाम मोमिनीन और मोमिनात की तरफ़ से जो ज़मीन

بِاَمْرِكَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰبَآئِهِ الطَّاهِرِيْنَ عَنْ جَمِيْعِ

के मश्रिक़ व मग़रिब सहरा व कोह और खुश्की और तरी मे हैं और मेरी तरफ़ से और मेरे वालेदैन की तरफ़

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ فِيْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَمَغَارِبِهَا سَهْلِهَا

से ऐसी सलवात जो अर्शे खुदा के वज़्न के बराबर और उसके रौशनाई कलेमात के बराबर और जिसको

وَجَبَلِهَا وَبَرِّهَا وَبَحْرِهَا وَعَنِّيْ وَعَنْ وَالِدَيَّ مِنَ الصَّلَوَاتِ زِنَةَ

उसके इल्म ने एहसा किया है और उसकी किताब ने एहाता किया है। खुदाया मै तजदीद करता हूँ आज के

عَرْشِ اللهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ وَمَا اَحْصَاهُ عِلْمُهٗ وَاَحَاطَ بِهٖ كِتَابُهٗ

दिन की सुबह और जितने दिनो मै ज़िन्दा रहुँ अपने अहदो अक़द व बैअत की जो मेरी गर्दन मे है। मै उस

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُجَدِّدُ لَهٗ فِيْ صَبِيْحَةِ يَوْمِيْ هٰذَا وَمَا عِشْتُ مِنْ اَيَّامِيْ

बैअत से न पलटूँगा और अबद तक उसपर साबित क़दम रहूँगा। खुदाया मुझको क़रार दे उनके अन्सार और

عَهْدًا وَعَقْدًا وَبَيْعَةً لَهٗ فِيْ عُنُقِيْ لَا اَحُوْلُ عَنْهَا وَلَا اَزُوْلُ اَبَدًا

उनके आवान और उनसे दिफ़ा करनेवालों और उनकी जानिब तेजी से बढ़नेवालों मे उनकी हाजत को पूरा

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنْ اَنْصَارِهٖ وَاَعْوَانِهٖ وَالذَّابِّيْنَ عَنْهُ

करने के लिए और उनके इम्तेसाल अम्र करनेवालों और उनके हामियों और उनके इरादा की तरफ़ सबक़त

وَالْمُسَارِعِيْنَ اِلَيْهِ فِيْ قَضَآءِ حَوَآئِجِهٖ وَالْمُمْتَثِلِيْنَ لِاَوَامِرِهٖ

करनेवालों और उनके सामने दरजए शहादत हासिल करनेवालों मे। खुदाया अगर मेरे और उनके दरमियान

وَالْمُحَامِيْنَ عَنْهُ وَالسَّابِقِيْنَ اِلٰى اِرَادَتِهٖ وَالْمُسْتَشْهِدِيْنَ بَيْنَ

मौत हाएल हो जाए जिसको तूने अपने बन्दो के लिए हत्मी व यकानी क़रार दिया है तो तू मुझको क़ब्र से

يَدَيْهِ اَللّٰهُمَّ اِنْ حَالَ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُ الْمَوْتُ الَّذِيْ جَعَلْتَهُ عَلٰى

निकाल इस तरह से के अपने कफ़न को ओढ़े हुए हूँ और तलवार को नियाम से खिँचे हुए हूँ और नेज़े को

عِبَادِكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا فَاَخْرِجْنِيْ مِنْ قَبْرِيْ مُؤْتَزِرًا كَفَنِيْ شَاهِرًا

उठाए हूँ और पुकारने वाले की आवाज़ पर लब्बैक कहता हुआ होऊं शहर व दयार किसी मकाम पर। खुदाया

سَيْفِيْ مُجَرِّدًا قَنَاتِيْ مُلَبِّيًا دَعْوَةَ الدَّاعِيْ فِي الْحَاضِرِ وَالْبَادِيْ

मुझको दिखा दे तलअते ज़ेबाए रशीद और चेहरए मुबारके महमूद को और मेरी आँख मे उनके दीदार का

اَللّٰهُمَّ اَرِنِي الطَّلْعَةَ الرَّشِيْدَةَ وَالْغُرَّةَ الْحَمِيْدَةَ وَاكْحُلْ نَاظِرِيْ

सुरमा लगा दे और उनके ज़ुहूर मे जल्दी कर और उनके ज़ुहूर मे आसानी फ़र्मा और उनके रास्ते को वुसअत

بِنَظْرَةٍ مِّنِّيْ اِلَيْهِ وَعَجِّلْ فَرَجَهُ وَسَهِّلْ مَخْرَجَهُ وَ اَوْسِعْ مَنْهَجَهُ

अता कर और मुझको उनके रास्ते पर चला दे और उनके अम्र को नाफ़ज़ कर और उनकी पुश्त को क़वी

وَاسْلُكْ بِيْ مَحَجَّتَهُ وَاَنْفِذْ اَمْرَهُ وَاشْدُدْ اَزْرَهُ وَاعْمُرِ اللّٰهُمَّ بِهِ

कर और ऐ खुदा उनके वजूद से अपने शहरों को मअमुर फ़र्मा और उनके ज़रिए अपने बन्दों को ज़िन्दगी

بِلَادَكَ وَاَحْيِ بِهِ عِبَادَكَ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ ظَهَرَ الْفَسَادُ

अता कर के तूने फ़र्माया है और तेरा क़ौल बरहक़ है के फ़साद ज़ाहिर हो गया है ज़मीन मे और दरया मे उसके

فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ فَاَظْهِرِ اللّٰهُمَّ لَنَا

वजह से जो लोगों ने करतूत किए हैं तो खुदाया तू ज़ाहिर करदे हमारे लिए अपने वली को और अपने नबी

وَلِيَّكَ وَابْنَ بِنْتِ نَبِيِّكَ الْمُسَمّٰى بِاسْمِ رَسُوْلِكَ حَتّٰى لَا يَظْفَرَ

की बेटी के फ़रज़ंद को जिसका नाम तेरे रसूल का नाम है यहाँ तक़ के वो हर बातिल पर कामयाबी हासिल

بِشَيْءٍ مِّنَ الْبَاطِلِ اِلَّا مَزَّقَهٗ وَيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُحَقِّقَهٗ وَاجْعَلْهُ اللّٰهُمَّ

करले और हक़ को साबित करदे और मोहि०व०क बना दे और खुदाया उनको क़रार दे अपने मज़लूम

مَفْزَعًا لِمَظْلُوْمِ عِبَادِكَ وَ نَاصِرًا لِمَنْ لَا يَجِدُ لَهٗ نَاصِرًا غَيْرَكَ

बंदो के लिए फ़रयाद रस और उन लोगों का नासिर जो तेरे अलावा किसी को नासिर नही पाते हैं और उनको

وَمُجَدِّدًا لِمَا عُطِّلَ مِنْ اَحْكَامِ كِتَابِكَ وَ مُشَيِّدًا لِمَا وَرَدَ مِنْ

मोजदद बना दे अपनी किताब के उन अहकाम का जो मोत्तिलकर दिए गए और इस्तेहकाम व बुलंदी अता

اَعْلَامِ دِيْنِكَ وَسُنَنِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَاجْعَلْهُ اللّٰهُمَّ

करनेवला शाएरे दीन और सुन्नते पैग़ंबर का (अल्लाह का दुरूद हो उनपर और उनकी आल पर) और क़रार दे

مِمَّنْ حَصَّنْتَهٗ مِنْ بَأْسِ الْمُعْتَدِيْنَ اَللّٰهُمَّ وَسُرَّ نَبِيَّكَ مُحَمَّدًا صَلَّى

खुदाया उनको उन लोगों मे जिनकी तूने दुश्मनो की सख़्तीयों से हिफ़ाज़त की है। खुदाया तू खुश कर दे अपने

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ بِرُؤْيَتِهٖ وَمَنْ تَبِعَهٗ عَلٰى دَعْوَتِهٖ وَارْحَمِ اسْتِكَانَتَنَا

नबी मोहम्मद (स) को उन हज़रत के दीदार के ज़रिए व उनको जिन्होंने उनका इत्तेबा किया उनकी दावत पर

بَعْدَهٗ اَللّٰهُمَّ اكْشِفْ هٰذِهِ الْغُمَّةَ عَنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بِحُضُوْرِهٖ وَعَجِّلْ

व हमारी ग़ुरबत पर उनके बाद रहम फ़रमाया। खुदाया उस उम्मत के ग़ाम को दूर कर दे इमाम ज़माना (अ)

لَنَا ظُهُوْرَهٗ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا وَّنَرٰيهُ قَرِيْبًا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

के हुज़ूर के ज़रिए व हमारे लिए उन के ज़ुहूर मे जल्दी कर क्योंके मुख़ालिफ़ ज़ुहूर को बईद समझते हैं व हम

الرَّاحِمِيْنَ.

उसको क़रीब जानते हैं। अपनी रहमत के ज़रिए ऐ सबसे बड़े रहम करनेवाले।

उसके बाद तीन बार दाहनी रान पर हाथ मारे और हर बार कहे:

اَلْعَجَلَ الْعَجَلَ يَا مَوْلَایَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ.

जल्दी कीजिए जल्दी कीजिए ऐ मेरे मौला, ऐ साहेबज़मान।

चौथा अम्र

सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के जब हज़रत के हरम से रूख़सत होना चाहे तो सरदाबे मुबारक की तरफ़ पलट कर आए और जिस क़द्र चाहे नमाज़ अदा करे। और उसके बाद रू ब क़िबला खड़े होकर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ ادْفَعْ عَنْ وَلِيِّكَ

जिसको हमने आाख़िर तक ज़िक्र किया है। और फ़रमाया है के इसके बाद खुदा से दुआएं करे और खुशबख़्त होकर पलट आए।

शेख़ ने मिस्बाह में इस दुआ को आमाले रोज़े जुमा में इमाम रज़ा (अ) से नक़्ल किया है और हम भी इस दुआ को उसी तरीके से नक़्ल कर रहे हैं।

اَللّٰهُمَّ ادْفَعْ عَنْ وَلِيِّكَ وَخَلِيْفَتِكَ وَ حُجَّتِكَ عَلٰى خَلْقِكَ وَ

खुदाया तू हर बला को दूर करदे अपने वली और अपने ख़लीफ़ा और अपनी मख़लूक़ पर अपनी हुज्जत से और

لِسَانِكَ الْمُعَبِّرِ عَنْكَ النَّاطِقِ بِحِكْمَتِكَ وَ عَيْنِكَ النَّاظِرَةِ

अपनी ज़ुबान से जो तेरी तरफ़ से तरजुमानी करती है और तेरी हिकमत के साथ गोया होती है और अपनी उस

بِإِذْنِكَ وَ شَاهِدِكَ عَلٰى عِبَادِكَ الْجَحَاجَ الْمُجَاهِدِ الْعَآئِذِ

आँख से जो तेरी इजाज़त से देखती है और तेरे बन्दों पर तेरी गवाह है। वो जो बुर्ज़ुग तरीन मुजाहिद हैं जो तेरी

بِكَ الْعَابِدِ عِنْدَكَ وَ اَعِذْهُ مِنْ شَرِّ جَمِيْعِ مَا خَلَقْتَ وَ بَرَاْتَ وَ

पनाह मे हैं और तेरे नज़दीक आबिद हैं और उसको बचा ले उन लोगों की बुराईयों से जिनको तूने पैदा किया है

اَنْشَاْتَ وَ صَوَّرْتَ وَ احْفَظْهُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ وَ عَنْ

और ख़ल्क़ किया है और ईजाद किया है और सूरत दी है और उनको महफ़ूज़ रख उनके सामने से पसेपुश्त से,

يَّمِيْنِهٖ وَ عَنْ شِمَالِهٖ وَ مِنْ فَوْقِهٖ وَ مِنْ تَحْتِهٖ بِحِفْظِكَ الَّذِىْ لَا

दाहिनी जानिब से और बाई जानिब से और ऊपर से और नीचे से अपनी हिफ़ाज़त के ज़रिए। के जाया नही होता

يُضَيَّعُ مَنْ حَفِظْتَهٗ بِهٖ وَ احْفَظْ فِيْهِ رَسُوْلَكَ وَ اٰبَآئَهٗ اَئِمَّتَكَ وَ

है वो जिसकी तूने हिफ़ाज़त की है उसके ज़रिए और महफ़ूज़ कर उनके ज़रिए अपने रसूल को और उनके आबा

دَعَآئِمَ دِيْنِكَ وَ اجْعَلْهُ فِىْ وَدِيْعَتِكَ الَّتِىْ لَا تَضِيْعُ وَ فِىْ جِوَارِكَ

को जो तेरे इमाम हैं और अपने दीन के सुतून को और उनको क़रार दे अपनी अमानत मे जो ज़ाया नही होती है

الَّذِىْ لَا يُخْفَرُ وَ فِىْ مَنْعِكَ وَ عِزِّكَ الَّذِىْ لَا يُقْهَرُ وَ اٰمِنْهُ بِاَمَانِكَ

और अपने पड़ोस मे जो कभी कमज़ोर नही होता है और अपने मोहीत क़ुव्वत व इज़्ज़त मे जो कभी मकहूर नही

الْوَثِيْقَ الَّذِىْ لَا يَخْذُلُ مَنْ اٰمَنْتَهٗ بِهٖ وَ اجْعَلْهُ فِىْ كَنَفِكَ الَّذِىْ

होता और उसको महफ़ूज़ कर अपने मौसीक़ अमान के साथ जिसका अमान दिया हुआ कभी रूसवा नही होता

لَا يُرَامُ مَنْ كَانَ فِيْهِ وَ انْصُرْهُ بِنَصْرِكَ الْعَزِيْزِ وَ اَيِّدْهُ بِجُنْدِكَ

है और उनको क़रार दे अपनी हिफ़ाज़त मे के जो उसमे आ जाता है ख़तरा मे नही रहता है और उनकी मदद कर

الْغَالِبِ وَ قَوِّهٖ بِقُوَّتِكَ وَ اَرْدِفْهُ بِمَلَآئِكَتِكَ وَ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَ

अपनी ग़ालिब मदद के साथ और उनकी ताईद कर अपने ग़ालिब लश्कर के ज़रिए और उनको क़ुव्वत दे अपनी

عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَ اَلْبِسْهُ دِرْعَكَ الْحَصِيْنَةَ وَ حُفَّهٗ بِالْمَلَآئِكَةِ

क़ुव्वत से और अपने मलाएका को उनका रदफ़ बना और जो उनसे मोहब्बत करे तू भी उनसे मोहब्बत कर और

حَفًّا اَللّٰهُمَّ اشْعَبْ بِهِ الصَّدْعَ وَ ارْتُقْ بِهِ الْفَتْقَ وَ اَمِتْ بِهِ

जो उनका दुश्मन हो तू भी उनका दुश्मन हो और उनको जोशने हिफ़ाज़त पिनहा दे और उन के गिर्द मलाएका

الْجَوْرَ وَ اَظْهِرْ بِهِ الْعَدْلَ وَ زَيِّنْ بِطُوْلِ بَقَآئِهِ الْاَرْضَ وَ اَيِّدْهُ

की फ़ौज क़रार दे। खुदाया उनके ज़रिए तफ़र्रेक़े को जमा कर दे व उनके ज़रिए से रखनेको बन्द कर व ज़ुल्म व

بِالنَّصْرِ وَ انْصُرْهُ بِالرُّعْبِ وَ قَوِّ نَاصِرِيْهِ وَ اخْذُلْ خَاذِلِيْهِ وَ دَمْدِمْ

जौरको मिटा दे व अदल को ज़ाहिर कर व उनके तवील बक़ासे ज़मीन को ज़ीनत दे व उनकी ताईद फ़र्मा मदद

مَنْ نَصَبَ لَهٗ وَ دَمِّرْ مَنْ غَشَّهٗ وَ اقْتُلْ بِهٖ جَبَابِرَةَ الْكُفْرِ وَ عُمُدَهٗ

के ज़रिए व उनकी मदद कर रोब के ज़रिए और उनके मददगारों को क़ुव्वत दे व उनको रूस्वा करनेवालों को

शेख़ का बयान है के यूनुस बिन अब्दुर रहमान ने रिवायत की है के इमामे रज़ा (अ) ने हुक्म फ़रमाया के साहेबे अम्र (अ) के लिए यह दुआ पढ़ी जाए:

وَ دَعَآئِمَهٗ وَ اقْصِمْ بِهٖ رُءُوْسَ الضَّلَالَةِ وَ شَارِعَةَ الْبِدَعِ وَ

रूस्वा कर व जो उनकी दुश्मनी मे क़याम करें उन्हें हलाक कर व उनके साथ मकर करनेवालों को ख़त्म कर व

مُمِيْتَةَ السُّنَّةِ وَ مُقَوِّيَةَ الْبَاطِلِ وَ ذَلِّلْ بِهِ الْجَبَّارِيْنَ وَ اَبِرْ بِهٖ

उनके ज़रिए काफ़िर ज़ालिमों को व उनके सरदारों व सुतूनों को क़त्ल कर व उनके ज़रिए गुम्राहों के सर तोड़ दे

الْكَافِرِيْنَ وَ جَمِيْعَ الْمُلْحِدِيْنَ فِيْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبِهَا وَ

व बिदअत इजाद करनेवालों को ख़त्म कर व सुन्नत को मिटानेवालों व बातिल को ताक़तवर बनाने वालों को

بَرِّهَا وَ بَحْرِهَا وَ سَهْلِهَا وَ جَبَلِهَا حَتّٰى لَا تَدَعَ مِنْهُمْ دَيَّارًا وَ لَا

ख़त्म कर व उनके ज़रिए जाबिरों को ज़लील कर व उनके ज़रिए काफ़िरों को व तमाम मुलहिदों को जो ज़मीन

تُبْقِيَ لَهُمْ اٰثَارًا اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ مِنْهُمْ بِلَادَكَ وَ اشْفِ مِنْهُمْ

के मश्रिकों और मग़रिबों मे या खुश्की व दरया मे या सहरा और पहाड़ मे हैं जड़ से ख़त्मकर यहाँ तकके उनमे

عِبَادَكَ وَ اَعِزَّ بِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَحْيِ بِهٖ سُنَنَ الْمُرْسَلِيْنَ وَ دَارِسَ

से किसी का कोई दयार न बाक़ी रहे व उनकी कोई अलामत न बचे। खुदाया उन ज़ालीमों से अपने शहरों को

حُكْمِ النَّبِيِّيْنَ وَ جَدِّدْ بِهٖ مَا امْتَحٰى مِنْ دِيْنِكَ وَ بُدِّلَ مِنْ

पाक कर व अपने बंदां को खुशकर व आँहज़रत के ज़रिए मोमिनीन को इज़्ज़त दे व उनके जरिए मुर्सलीन की

حُكْمِكَ حَتّٰى تُعِيْدَ دِيْنَكَ بِهٖ وَ عَلٰى يَدَيْهِ جَدِيْدًا غَضًّا مَحْضًا

सुन्नत को ज़िन्दा कर व नबीयों के उन अहकाम को जो मिट गए उनके ज़रिए तजदीदकर अपने दीन को जो

صَحِيْحًا لَا عِوَجَ فِيْهِ وَ لَا بِدْعَةَ مَعَهٗ وَ حَتّٰى تُنِيْرَ بِعَدْلِهٖ ظُلَمَ

महव हो रहा है व उन अहकाम की जो तब्दील कर दिए गए यहाँ तक के तू उनके ज़रिए अपने दीनको वापस ला

الْجَوْرِ وَ تُطْفِئَ بِهٖ نِيْرَانَ الْكُفْرِ وَ تُوْضِحَ بِهٖ مَعَاقِدَ الْحَقِّ وَ

उनके हाथों पर तरो ताज़ा पर जिसमे कोई कजी न हो व उसके साथ कोई बिदअत न हो और यहाँ तक के उनके

مَجْهُوْلَ الْعَدْلِ فَاِنَّهٗ عَبْدُكَ الَّذِىْ اسْتَخْلَصْتَهٗ لِنَفْسِكَ وَ

अद्ल के ज़रिए ज़ुल्म की तारीकियों को रौशन कर व उनके ज़रिए कुफ़रकी आगको बुझा व उनके ज़रिए हक़के

اصْطَفَيْتَهٗ عَلٰى غَيْبِكَ وَ عَصَمْتَهٗ مِنَ الذُّنُوْبِ وَ بَرَّأْتَهٗ مِنَ

पैमान को आशकारा कर व अद्ल को जो ना मालूम हो गया है मशहूर कर इस लिए वो तेरा बन्दा है जिसको

الْعُيُوْبِ وَ طَهَّرْتَهٗ مِنَ الرِّجْسِ وَ سَلَّمْتَهٗ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ

तूने ख़ालिस रखा है अपने लिए उसको तूने मुन्ताख़िब किया है अपने ग़ैब के लिए और उस को मासूम बनाया है

فَاِنَّا نَشْهَدُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَوْمَ حُلُوْلِ الطَّآمَّةِ اَنَّهٗ لَمْ يُذْنِبْ

गुनाहों से और उसको दूर रखा है ओयूब से और उसको पाक रखा हे गन्दगी से और उसको बचाया है नापाकी

ذَنْبًا وَّ لَا اَتٰى حُوْبًا وَّ لَمْ يَرْتَكِبْ مَعْصِيَةً وَّ لَمْ يُضَيِّعْ لَكَ طَاعَةً

से। हम उस के लिए गवाही देगें क़यामत के राज़ और राज़े वरूदे मैदाने महशर के उसने कोई गुनाह नही किया

وَّ لَمۡ يَهۡتِكۡ لَكَ حُرۡمَةً وَّ لَمۡ يُبَدِّلۡ لَكَ فَرِيۡضَةً وَّ لَمۡ يُغَيِّرۡ لَكَ

और कोई जुर्म नही किया और किसी मासियत का इर्तेकाब नही किया और तेरी इताअत को ज़ाया नही किया

شَرِيۡعَةً وَّ اَنَّهُ الۡهَادِىۡ الۡمُهۡتَدِىۡ الطَّاهِرُ التَّقِىُّ النَّقِىُّ الرَّضِىُّ

और तेरी हतके हुरमत नही की और तेरे फ़रा०rजेको नही बदला, तेरी शरीअत मे तब्दीली नही की और येके

الزَّكِىُّ اَللّٰهُمَّ اَعۡطِهٖ فِىۡ نَفۡسِهٖ وَ اَهۡلِهٖ وَ وُلۡدِهٖ وَ ذُرِّيَّتِهٖ وَ اُمَّتِهٖ وَ

वो हादी, रहबर, पाक, मुत्तक़ी, ताहिर, राज़ी बरगुज़ीदए खुदा, पाकीज़ा है। खुदाया उनको और उनके अहेल मे

جَمِيۡعِ رَعِيَّتِهٖ مَا تُقِرُّ بِهٖ عَيۡنَهٗ وَ تَسُرُّ بِهٖ نَفۡسَهٗ وَ تَجۡمَعُ لَهٗ مُلۡكَ

उनकी औलाद और उनकी ज़ुररीयत और उनकी उम्मत मे और उनकी तमाम रेआया मे वो अता कर जिस

الۡمُمۡلَكَاتِ كُلِّهَا قَرِيۡبِهَا وَ بَعِيۡدِهَا وَ عَزِيۡزِهَا وَ ذَلِيۡلِهَا حَتّٰى

से उनकी आँख ठंडी हो जाए और तू उसके ज़रिए उनको खुश कर व उनके लिए तमाम बादशाहत वालों की

يُجۡرِىَ حُكۡمَهٗ عَلٰى كُلِّ حُكۡمٍ وَّ تَغۡلِبَ بِحَقِّهٖ كُلَّ بَاطِلٍ اَللّٰهُمَّ

बादशाहत जमा कर चाहे वो क़रीब हों या बईद, इज़्ज़तदार हों या ज़लील, यहाँ तकके तू उनके हुकुम को तमाम

اسۡلُكۡ بِنَا عَلٰى يَدَيۡهِ مِنۡهَاجَ الۡهُدٰى وَ الۡمَحَجَّةَ الۡعُظۡمٰى وَ

अहकाम पर जारी कर व उनके हक़ को हर बातिल पर ग़ालीब कर। खुदाया तू हम को उनके हाथों पर राहे

الطَّرِيۡقَةَ الۡوُسۡطٰى الَّتِىۡ يَرۡجِعُ اِلَيۡهَا الۡغَالِىۡ وَ يَلۡحَقُ بِهَا التَّالِىۡ وَ

हिदायत पर ले चल व अज़ी- मुश्शान राहे शरीयत व दरमि-यानी तरिक़े पर जिसकी तरफ़ हर ख़ाली लौट आता

قَوِّنَا عَلٰى طَاعَتِهٖ وَ ثَبِّتْنَا عَلٰى مُشَايَعَتِهٖ وَ امْنُنْ عَلَيْنَا

है व जिस से हर पीछे रह जाने वाला मुलहक़ होता है व हमको उन की इताअत की क़ुव्वत दे व हमको उनके

بِمُتَابَعَتِهٖ وَ اجْعَلْنَا فِيْ حِزْبِهِ الْقَوَّامِيْنَ بِاَمْرِهِ الصَّابِرِيْنَ مَعَهُ

इत्तेबा पर साबित क़दम रख व हमपर उनके इत्तेबा के ज़रिए एहसान कर और हमको उन के गरोह मे क़रार दे जो

الطَّالِبِيْنَ رِضَاكَ بِمُنَاصَحَتِهٖ حَتّٰى تَحْشُرَنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْ

उसके अमर के क़ाएम करनेवाले, उनके साथ सब्र करनेवाले और तेरी रज़ा के तलबगारों मे हूँ उनकी नसियत

اَنْصَارِهٖ وَ اَعْوَانِهٖ وَ مُقَوِّيَةِ سُلْطَانِهٖ اَللّٰهُمَّ وَ اجْعَلْ ذٰلِكَ لَنَا

से यहाँ तक के तू हमको राज़े क़यामत उन के अनसारो आवान और उन की बादशाहत को तक़वीयत देनेवालों

خَالِصًا مِّنْ كُلِّ شَكٍّ وَّ شُبْهَةٍ وَّ رِيَآءٍ وَّ سُمْعَةٍ حَتّٰى لَا نَعْتَمِدَ بِهٖ

मे महशुर फ़र्मा। खुदाया उस को हमारे हर शक व शुबा और दिखावे और सुनाने से ख़ालिस बना दे ताके हम

غَيْرَكَ وَ لَا نَطْلُبَ بِهٖ اِلَّا وَجْهَكَ وَ حَتّٰى تُحِلَّنَا مَحَلَّهٗ وَ تَجْعَلَنَا فِيْ

उनके वसीले से तेरे अलावा किसी और पर एतेमाद न करें और उनके ज़रिए से सिवाए तेरी ज़ात के किसी का

الْجَنَّةِ مَعَهٗ وَ اَعِذْنَا مِنَ السَّاْمَةِ وَ الْكَسَلِ وَ الْفَتْرَةِ وَ اجْعَلْنَا

क़सद न करें और तू हमको उनके मकाम मे वारिद कर दे और हमको उनके साथ जन्नत मे क़रार दे और हमको

مِمَّنْ تَنْتَصِرُ بِهٖ لِدِيْنِكَ وَ تُعِزُّ بِهٖ نَصْرَ وَلِيِّكَ وَ لَا تَسْتَبْدِلْ بِنَا

खुश्की, कसालत और इताअत मे सुस्ती से पनाह दे और हमको उनमे क़रार दे जिनके ज़रिएसे तू अपने दीन की

غَيْرَنَا فَاِنَّ اسْتِبْدَالَكَ بِنَا غَيْرَنَا عَلَيْكَ يَسِيْرٌ وَّ هُوَ عَلَيْنَا

मदद करता है और जिनके जरिए तू अपने वली की नुसरत को इज़्ज़त दार बनाता है और तू हमारी जगह किसी

كَثِيْرٌ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى وُلَاةِ عَهْدِهٖ وَ الْاَئِمَّةِ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ بَلِّغْهُمْ

और को न रखता के तेरे लिए हमारा बदल आसान है लेकिन हमारे लिए ये बात बहुत बड़ी है। खुदाया दुरूद

اٰمَالَهُمْ وَزِدْ فِيْ اٰجَالِهِمْ وَاَعِزَّ نَصْرَهُمْ وَتَمِّمْ لَهُمْ مَا اَسْنَدْتَ

भेज अपने औलिया अहेद पर और उनके बादके इअम्मा पर और उनको उनकी तमन्नाओं तक पहुँचा दे और

اِلَيْهِمْ مِنْ اَمْرِكَ لَهُمْ وَ ثَبِّتْ دَعَآئِمَهُمْ وَ اجْعَلْنَا لَهُمْ اَعْوَانًا

उनकी उमरों मे इज़ाफ़ा फ़रमा और उनको इज़्ज़तदार नुसरत अता कर और उनके लिए पूरा करदे जिस अम्र

وَّ عَلٰى دِيْنِكَ اَنْصَارًا فَاِنَّهُمْ مَعَادِنُ كَلِمَاتِكَ وَ خُزَّانُ عِلْمِكَ وَ

को तूने उनकी तरफ़ निस्बत दी है और उनके अरकान को मुस्तहकम करदे और हमको उनके आवान और

اَرْكَانُ تَوْحِيْدِكَ وَ دَعَآئِمُ دِيْنِكَ وَ وُلَاةُ اَمْرِكَ وَ خَالِصَتُكَ

अपने दीनके अनसार मे क़रार दे इस लिए के वो तेरे कलेमात के मादन और तेरे इल्म के ख़ज़ीनादार और तेरी

مِنْ عِبَادِكَ وَ صَفْوَتُكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ اَوْلِيَآؤُكَ وَ سَلَآئِلُ

तौहीद के रूक्न और तेरे दीन के सुतून हैं और तेरे वलीए अम्र और तेरे बन्दों मे ख़ालिस और तेरी मख़लूक़ मे

اَوْلِيَآئِكَ وَ صَفْوَةُ اَوْلَادِ نَبِيِّكَ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ

मुनताख़िब हैं और तेरे वली हैं और तेरे वली की नस्ल हैं और तेरे नबी की औलाद मे बरगुज़ीदा हैं और सलाम

رَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

हो उन पर और उन सब पर और खुदाकी रहमत व बरकात हों।

भाग

ज़ियाराते जामेआ और वह दुआ जो ज़ियारत के बाद पढ़ी जाती है और वह सलवात जो आइम्मए मासूमीन (अ) से मुताल्लिक़ है।
इस सिलसिले में चंद मक़ामात हैं:

पहला मकाम

ज़ियारते जामेआ जिसके ज़रिए हर इमाम की ज़ियारत की जा सकती है: और यह बहुत हैं। हम केवल चंद ज़ियारतों का ज़िक्र कर रहे हैं।

पहली ज़ियारत

शेख़ सदूक़ (र) ने किताबे मन ला यहæजोरोहुल पा॰क़ीह में इमाम रज़ा (अ) से रिवायत की है के हज़रत से पूछा गया के इमामे काज़िम (अ) की क़ब्र पर हाज़री के बारे में तो आप ने फ़रमाया के क़ब्र के अतराफ़ की मस्जिद में नमाज़ पढ़ो और यह बात काफ़ी है के हर इमाम की ज़ियारत पर या मुख़तिलफ़ मज़ाराते शरा॰rफा पर या मरक़दे अंबिया व औसिया पर यूँ ज़ियारत पढ़ो:

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَوْلِيَآءِ اللهِ وَ اَصْفِيَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى اُمَنَآءِ اللهِ وَ

सलाम अल्लाह के वलीयों और बरगुज़ीदा बंदों पर, सलाम अल्लाह के अमीनों और महबूब बंदों

اَحِبَّآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَنْصَارِ اللّٰهِ وَ خُلَفَآئِهٖ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَحَآلِّ

पर, सलाम दीने खुदा के मददगारों और उसके जानिसारों पर, सलाम हो उन दिलों पर जो मारेफ़ते

مَعْرِفَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مَسَاكِنِ ذِكْرِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰى مُظْهِرِىْ

खुदा का मकाम हैं सलाम जिक्रे खुदाकी मनिज़लों पर, सलाम खुदाके अम्र व नही के आशकार

اَمْرِ اللّٰهِ وَ نَهْيِهٖ اَلسَّلَامُ عَلَى الدُّعَاةِ اِلَى اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَى

करनेवालों पर, सलाम अल्लाह की जानिब बुलाने वालों पर, सलाम मिर्ज़ए खुदा पर साबित क़दम

الْمُسْتَقِرِّيْنَ فِىْ مَرْضَاتِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَى الْمُخْلِصِيْنَ فِىْ طَاعَةِ اللّٰهِ

रहने वालों पर, सलाम इताअते खुदा मे ख़ालिस रहनेवालों पर, सलाम खुदा की जानिब से मख़लूक़

اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَدِلَّآءِ عَلَى اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَى الَّذِيْنَ مَنْ وَالَاهُمْ فَقَدْ

के रहबरों पर, सलाम उनपर जिन्हाने उनसे मोहब्बत की तो उन्होंने गोया अल्लाह से मोहब्बत की

وَالَى اللّٰهَ وَ مَنْ عَادَاهُمْ فَقَدْ عَادَى اللّٰهَ وَ مَنْ عَرَفَهُمْ فَقَدْ عَرَفَ

और जिसने उनसे दुश्मनी रखी तो गोया अल्लाह से दुश्मनी रखी, जो उनसे वाबसता हो गया वो

اللّٰهَ وَ مَنْ جَهِلَهُمْ فَقَدْ جَهِلَ اللّٰهَ وَ مَنِ اعْتَصَمَ بِهِمْ فَقَدِ اعْتَصَمَ

खुदासे वाबसता हुआ और जो उनसे अलैहदा हुआ वो खुदासे अलैहदा हुआ। और मै खुदा को

بِاللّٰهِ وَ مَنْ تَخَلّٰى مِنْهُمْ فَقَدْ تَخَلّٰى مِنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَاُشْهِدُ اللّٰهَ اَنِّىْ

गवाह बनाता हूँ के मेरी सुलह है उस से जिस से आप ने सुलह की और जंग है उससे जिससे आप ने

سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمْتُمْ وَ حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتُمْ مُؤْمِنٌ بِسِرِّكُمْ

जंग की। मै आप के ज़ाहिर व बातिन पर ईमान लाने वाला हूँ और अपने तमाम कामों को आपकी

وَعَلَانِيَتِكُمْ مُفَوِّضٌ فِيْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ اِلَيْكُمْ لَعَنَ اللّٰهُ عَدُوَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

जानिब तफ़वीज़ करता हूँ। खुदा लानत करे आले मोहम्मद के दुश्मनों पर चाहे जिन्न मे हों या इन्सान

مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَ اَبْرَءُ اِلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِهٖ.

मे और मै बरी उनसे अल्लाह की तरफ़ और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर।

यह ज़ियारत काफ़ी, तहज़ीब और कामेलुज़ ज़ियारात में नक़्ल हुई है और उन तमाम किताबों में ज़ियारत के बाद यह लिखा हुआ है के यह ज़ियारत के शब्द हर मकाम पर काफ़ी हैं।

मुनासिब है के बाकस्रत मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ) पर सलवात पढ़े और एक एक का नाम लेकर सलवात पढ़े और उनके दुश्मनों से बेज़ारी का इज़हार करे। उसके बाद अपने और मोमिनीन के लिए जो दुआ चाहे वह इख़्तेयार करे।

ब ज़ाहिर ऐसा मालूम होता है के यह आख़री तुकड़ा हदीस का जुज़ है और अगर यह मोहद्देसीन का कलाम है और उन बुज़ुर्गों ने रिवायात से ऐसा ही समझा है के यह ज़ियारत हर मकाम के लिए काफ़ी है।

जैसा इब्तेदाए हदीस से मालूम होता है और इस बात से भी के इसको ज़ियारते जामेआ में नक़्ल किया है और ज़ियारत के शब्द भी जामेअ हैं और किसी मासूम से मख़सूस नहीं हैं तो नफ़स उसके ज़ियारते जामेआ होने और उसके तमाम मक़ामात पर पढ़े जाने से मुतमईन है। यहाँ तक के बाज़ ओलमा ने जनाबे यूनुस की क़ब्र पर भी इसी ज़ियारत को नक़्ल किया है।

और चूँके इस ज़ियारत के ज़ैल में हर एक फ़र्द बिल खुसूस सलवात का भी ज़िक्र किया है।

लेहाज़ा अगर वह सलवात पढ़े जो अबुल हसन इस्फ़हानी की तरफ़ मनसूब है और जिसका ज़िक्र आमाले रोज़े जुमा में हो चुका है तो ज़्यादा मुनासिब है।
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।
खुदाया मुहम्मद (स) पर रहमत ना॰ज़िल कर, जो मुरसलीन के सरदार और आख़री नबी हैं।

दूसरी ज़ियारत

शेख़ सदूक (र) ने पा॰क़ीह व ओयून में मूसा बिन अब्दुल्लाह नख़ई से रिवायत की है के मैंने इमाम अली नक़ी (अ) से अर्ज़ किया के फ़रज़ंदे रसूल मुझे वह ज़ियारत तालीम फ़रवमाएं जो मुकम्मल हो और आप में से किसी की भी ज़ियारत करना चाहूँ तो उसी ज़ियारत को पढ़ लूं। फ़रमाया जब हरम के पास पहोंचो तो कलमए शहादतैन पढ़ो।

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

मै गवाही देता हूँ के खुदा के अलावा कोई माबूद नही है वो एक है और उसका कोई शरीक नही है

وَرَسُوْلُهٗ

और मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके बन्दा और रसूल है।

उसके बाद गुस्ल कर के हरम में दाख़िल हो व क़ब्र को देखने के बाद ठहर कर तीस बार कहे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

उसके बाद दो क़दम आगे बढ़कर फिर ठहरो और तीस बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहो। फिर क़ब्रे पाक के पास पहुँच कर चालिस बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहो ताके सौ तकबीरें मुकम्मल हो जाएं।
और शायद बक़ौल मजलिसी अव्वल इस तकबीर की यह वजह हो के अकसर

तबीयतें ग़ुलूव की तरफ़ माएल होती हैं। कहीं ऐसा न हो के इस ज़ियारत की इबारतों को दखे कर ग़ुलूव में मुब्तेला हो जाएं या परवरदिगार की बुज़ुर्गा से ग़ाफिल हो जाएं या कोई और ग़लत तसव्वुर पैदा हो जाए। लेहाज़ा पहले उसकी किब्राई का एहसास पैदा करे उसके बाद यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ بَيْتِ النُّبُوَّةِ وَ مَوْضِعَ الرِّسَالَةِ وَ

सलाम आप पर ऐ नबुव्वत के अहलेबैत और रिसालत के मकाम और मनिज़ले मलाएका और मक़ामे वही

مُخْتَلَفَ الْمَلَآئِكَةِ وَ مَهْبِطَ الْوَحْيِ وَ مَعْدِنَ الرَّحْمَةِ وَ خُزَّانَ

और रहमत के मादन और इल्म के ख़ज़ीने दार और हिल्म के इन्तेहाई मकाम और करम के उसूल और उम्मतों

الْعِلْمِ وَ مُنْتَهَى الْحِلْمِ وَ اُصُوْلَ الْكَرَمِ وَ قَادَةَ الْاُمَمِ وَ اَوْلِيَآءَ

के क़ाएद और औलियाए नेमत और अरकाने अबरार और नेकों के मनिज़ले एतेमाद, और बन्दो के क़ाएद

النِّعَمِ وَ عَنَاصِرَ الْاَبْرَارِ وَ دَعَآئِمَ الْاَخْيَارِ وَسَاسَةَ الْعِبَادِ وَ

और शहरों के अरकान और ईमान के दरवाज़े और रहमान के अमीन और नबीयों के फ़रज़ंद और मुर्सलीन

اَرْكَانَ الْبِلَادِ وَ اَبْوَابَ الْاِيْمَانِ وَ اُمَنَآءَ الرَّحْمٰنِ وَ سُلَالَةَ

के बरगुज़ीदा और रब्बुल आलमीन के नेक बन्दों की इतरत (और अल्लाह की रहमत व बरकात) सलाम हो

النَّبِيِّيْنَ وَ صِفْوَةَ الْمُرْسَلِيْنَ وَ عِتْرَةَ خِيَرَةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ

हिदायत के आईम्मा पर और तारीकियों के चिराग़ पर और तक़वे की निशानियों पर और बुज़ुर्ग अक़लमंदों

رَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَئِمَّةِ الْهُدٰى وَمَصَابِيْحِ الدُّجٰى

पर और साहेबाने अक्द पर और मख़लूक आलम की पनाह और अंबीय के वारिसों पर और मिस्ल बुज़ुर्ग

وَ اَعْلَامِ التُّقٰى وَ ذَوِى النُّهٰى وَ اُولِى الْحِجٰى وَ كَهْفِ الْوَرٰى وَ

इलाही पर और दावते हसना पर और अल्लाह की हुज्जतों पर दुनिया व आख़िरत के लोगों पर और अल्लाह की

وَرَثَةِ الْاَنْبِيَآءِ وَ الْمَثَلِ الْاَعْلٰى وَ الدَّعْوَةِ الْحُسْنٰى وَ حُجَجِ اللهِ

रहमत व बरकात हों। सलाम अल्लाह की मारेफ़त के मक़ामात और बरकाते खुदा की मनिज़लों और हिकमते

عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰى وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

खुदा के माविन और राज़े खुदा के मुहाफ़िज़ों और किताबे खुदा के हामिलों और नबीए खुदा के वसीयों और

عَلٰى مَحَالِّ مَعْرِفَةِ اللهِ وَ مَسَاكِنِ بَرَكَةِ اللهِ وَ مَعَادِنِ حِكْمَةِ اللهِ

रसूल अल्लाह (अ) की ज़ुररीयत पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हो। सलाम अल्लाह की तरफ़ दावत

وَ حَفَظَةِ سِرِّ اللهِ وَ حَمَلَةِ كِتَابِ اللهِ وَ اَوْصِيَآءِ نَبِيِّ اللهِ وَ ذُرِّيَّةِ

देनेवालों पर और मज़्लाए खुदा की तरफ़ रहनुमाई करने वालों पर और अम्रे खुदा पर साबित क़दम रहनेवालों

رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

पर और मोहब्बते खुदा मे मुकम्मल लोगों पर और तौहीदे खुदा के मुख़लिसीन अैर अल्लाह के अम्र व नही क

عَلَى الدُّعَاةِ اِلَى اللهِ وَ الْاَدِلَّآءِ عَلٰى مَرْضَاتِ اللهِ وَ الْمُسْتَقِرِّيْنَ

ज़ाहिर करने वालों और उसके बा इज़्ज़त बन्दों पर जो उसके हुक्म पर सबक़त नही करते और जो उस के

فِيْ اَمْرِ اللّٰهِ وَ التَّآمِّيْنَ فِيْ مَحَبَّةِ اللّٰهِ وَ الْمُخْلِصِيْنَ فِيْ تَوْحِيْدِ اللّٰهِ وَ

हुकुम पर अमल करते रहते हैं और अल्लाह की रहमत व बरकात हों। सलाम उन आईम्मा पर जो दाई, क़ाएद

الْمُظْهِرِيْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ وَ نَهْيِهٖ وَ عِبَادِهِ الْمُكْرَمِيْنَ الَّذِيْنَ لَا

और हादी, सरदार, हाकिम, हामी और अहले ज़िक्र और उलुल अम्र और बक़ीयतुल्लाह और ख़ैरूल्लाह और

يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

खुदा के गरोह, उसके इल्म के सनदूक़ और उसकी हुज्जत और उसके सिरात और उसके नूर और उस के

اَلسَّلَامُ عَلَى الْاَئِمَّةِ الدُّعَاةِ وَ الْقَادَةِ الْهُدَاةِ وَ السَّادَةِ الْوُلَاةِ وَ

बुरहान हैं और अल्लाह की रहमत व बरकात हों। मै गवाही देता हूँ के खुदाके अलावा कोई माबूद नही है वो

الذَّادَةِ الْحُمَاةِ وَ اَهْلِ الذِّكْرِ وَ اُولِى الْاَمْرِ وَ بَقِيَّةِ اللّٰهِ وَ خِيَرَتِهٖ وَ

एक है उसका कोई शरीक नही है जैसाके खुदाने अपने लिए खुद गवाही दी है और उसके लिए मलाएका और

حِزْبِهٖ وَ عَيْبَةِ عِلْمِهٖ وَ حُجَّتِهٖ وَ صِرَاطِهٖ وَ نُوْرِهٖ وَ بُرْهَانِهٖ وَ رَحْمَةُ

उसकी मख़लूक मे से इल्मवालों ने गवाही दी है के कोई माबूद नही है सिवाए खुदा के, वो ग़ालीब हिकमतवाला

اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ كَمَا

है, और मै गवाही देता हूँ के मोहम्मद उसके मुनतिख़ब बन्दे और उसके पसंददीदा रसूल हैं जिनको उसने भेजा

شَهِدَ اللّٰهُ لِنَفْسِهٖ وَ شَهِدَتْ لَهٗ مَلَآئِكَتُهٗ وَ اُولُوا الْعِلْمِ مِنْ

है हिदायत के साथ और दीने हक़ के साथ के उसके दीन को तमाम दीनो पर ग़ालिब कर दें चाहे मुश्रिक नापसंद

خَلْقِهٖ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

करें और मै गवाही देता हूँ के आप सब आईम्मए हादी और महदी और मासूम, मुकर्रम, मुक़ररब, मुत्तक़ी और

الْمُنْتَجَبُ وَ رَسُوْلُهُ الْمُرْتَضٰى اَرْسَلَهُ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ

सादिक़ हैं अल्लाह के मुती,उसके अम्र के क़ाएम करनेवाले उसके इरादे पर आमिल और उसकी करामत से

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكُمُ

फ़ाएज़ हैं उसने आपको अपने इल्म से मुस्तफ़ा किया है और अपने इल्मे ग़ैब के लिए आपको पस्ादं किया है

الْاَئِمَّةُ الرَّاشِدُوْنَ الْمَهْدِيُّوْنَ الْمَعْصُوْمُوْنَ الْمُكَرَّمُوْنَ

और आपको अपने राज़ के लिए इख़्तेयार किया है और अपनी क़ुदरत से मुन्ताख़िब किया है और आपको

الْمُقَرَّبُوْنَ الْمُتَّقُوْنَ الصَّادِقُوْنَ الْمُصْطَفَوْنَ الْمُطِيْعُوْنَ لِلّٰهِ

इज़्ज़त दी है अपनी हिदायत से और आपको अपनी दलील से मख़सूस किया है और अपने नूर से बरगुज़ीदा

الْقَوَّامُوْنَ بِاَمْرِهٖ الْعَامِلُوْنَ بِاِرَادَتِهٖ الْفَائِزُوْنَ بِكَرَامَتِهٖ

किया है और आपकी मदद की है अपनी रूह से और आप से राज़ी हुआ अपनी ज़मीन मे ख़लीफ़ा बना कर

اِصْطَفَاكُمْ بِعِلْمِهٖ وَ ارْتَضَاكُمْ لِغَيْبِهٖ وَاخْتَارَكُمْ لِسِرِّهٖ

और मख़लूक पर हुज्जत बना कर और अपने दीन का मददगार बनाकर और अपने राज़ का मोहाफ़ज़ और इल्म

وَاجْتَبَاكُمْ بِقُدْرَتِهٖ وَاَعَزَّكُمْ بِهُدَاهُ وَخَصَّكُمْ بِبُرْهَانِهٖ

का ख़ज़ीनादार और अपनी हिकमत का अमीन बना कर और अपनी वही का तरजुमान और तौहीद का रूक्न

وَانْتَجَبَكُمْ لِنُوْرِهٖ وَاَيَّدَكُمْ بِرُوْحِهٖ وَرَضِيَكُمْ خُلَفَآءَ فِيْ اَرْضِهٖ

और अपनी मख़लूक़ पर गवाह बना कर और अपने बन्दों के लिए रहनुमा और अपने शहरों मे अलामते रौशन

وَ حُجَجًا عَلٰى بَرِيَّتِهٖ وَاَنْصَارًا لِدِيْنِهٖ وَ حَفَظَةً لِسِرِّهٖ وَخَزَنَةً لِّعِلْمِهٖ

और अपने सिरात के लिए रहनुमा बना कर आपको खुदा ने लगिज़शों से मासूम और फ़ितनों से महफ़ूज़ और

وَ مُسْتَوْدَعًا لِحِكْمَتِهٖ وَ تَرَاجِمَةً لِوَحْيِهٖ وَاَرْكَانًا لِتَوْحِيْدِهٖ وَ

नजासात से पाक व पाकीज़ा बनाया है और आप से रिज्स को दूर रखा है और आप को वैसा पाक व पाकीज़ा

شُهَدَآءَ عَلٰى خَلْقِهٖ وَ اَعْلَامًا لِعِبَادِهٖ وَ مَنَارًا فِيْ بِلَادِهٖ وَ اَدِلَّآءَ

रखा है जो पाकीज़गी का हक़ है पस आपने खुदाकी जलालत को अज़मत के साथ याद किया उसकी शाने

عَلٰى صِرَاطِهٖ عَصَمَكُمُ اللّٰهُ مِنَ الزَّلَلِ وَ اٰمَنَكُمْ مِنَ الْفِتَنِ وَ

किब्रेयाई को देखा व उसके करम व मज्द को पहचाना व उसके जिक्र को दवाम दिया व उसके अहेद पर

طَهَّرَكُمْ مِنَ الدَّنَسِ وَ اَذْهَبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ وَ طَهَّرَكُمْ

साबितक़दम रहे व उसकी इताअत की गिरह को मुस्तहकम बाँधा व राहे खुदा की नसीहत की ज़ाहिर मे और

تَطْهِيْرًا فَعَظَّمْتُمْ جَلَالَهٗ وَ اَكْبَرْتُمْ شَانَهٗ وَ مَجَّدْتُمْ كَرَمَهٗ وَ

मख़फ़ी तरीक़े से व आपने राहे खुदा की तरफ़ बुलाया अहकामात और मोएज़ा हसना के साथ व आपने अपने

اَدَمْتُمْ ذِكْرَهٗ وَ وَكَّدْتُمْ مِيْثَاقَهٗ وَاَحْكَمْتُمْ عَقْدَ طَاعَتِهٖ وَ

नफ़्स को सर्फ कर दिया उसकी मर्ज़ा की राह मे व आपने सब्र किया हर उस मुसीबत पर जो राहे खुदा मे पहुँची

نَصَحْتُمْ لَهٗ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ وَ دَعَوْتُمْ اِلٰى سَبِيْلِهٖ بِالْحِكْمَةِ

व आपने नमाज़ क़ाएम की व ज़कात को अदा किया व अम्र बिल मारूफ़ किया व नही अनिल मुनकर किया

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ بَذَلْتُمْ اَنْفُسَكُمْ فِيْ مَرْضَاتِهٖ وَ صَبَرْتُمْ

व राहे खुदा मे ऐसा जिहाद किया जो हक़्क़े जिहाद है यहाँ तक़ के आपने खुदाकी दावत को ज़ाहिर कर दिया

عَلٰى مَا اَصَابَكُمْ فِيْ جَنْبِهٖ وَاَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَ

और फ़राएज़ को वाजेह कर दिया व हुदूद को क़ाएम किया व उसके अहकाम की शरीयातों को फैलाया और

اَمَرْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَيْتُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدْتُمْ فِي اللّٰهِ

उसकी सन्तों को राएज किया और उस बारेमे आप रज़ाए परवरदिगार तक पहुँच गए और क़ज़ा के सामने सर

حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰى اَعْلَنْتُمْ دَعْوَتَهٗ وَ بَيَّنْتُمْ فَرَآئِضَهٗ وَ اَقَمْتُمْ

तसलीमे ख़म कर दिया और आपने तसदीक़ की गुज़रे हुए रसुलों की। पस जो आपके तरिक़े से बहेक गया

حُدُوْدَهٗ وَ نَشَرْتُمْ شَرَائِعَ اَحْكَامِهٖ وَ سَنَنْتُمْ سُنَّتَهٗ وَ صِرْتُمْ فِيْ

वो दीने खुदा से ख़ारिज और जो आपके अम्र का पाबन्द रहा वो आप से मुलहक़ हो गया और आपके हक़ मे

ذٰلِكَ مِنْهُ اِلَى الرِّضَا وَ سَلَّمْتُمْ لَهُ الْقَضَآءَ و صَدَّقْتُمْ مِنْ

तकसीर करनेवाला मिट जानेवाला है और हक़ आपके साथ आपके दरमियान और आपसे और आप। तरफ़

رُسُلِهٖ مَنْ مَضٰى فَالرَّاغِبُ عَنْكُمْ مَارِقٌ وَاللَّازِمُ لَكُمْ لَاحِقٌ

है और आप अहले हक़ व मादने हक़ हैं और मीरासे नबुव्वत आपके पास है और मख़लूक़ का लौटना आपकी

وَالْمُقَصِّرُ فِيْ حَقِّكُمْ زَاهِقٌ وَالْحَقُّ مَعَكُمْ وَ فِيْكُمْ وَ مِنْكُمْ وَ

तरफ़ है और उनका हिसाब आपके जिम्मे है और फ़स्लुल ख़िताब (हक़ व बातिल का फ़ैसला) आप के पास

اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ اَهْلُهٗ وَمَعْدِنُهٗ وَمِيْرَاثُ النُّبُوَّةِ عِنْدَكُمْ وَاِيَابُ

है और अल्लाह की आयतें आपके पास हैं और अल्लाह का अज़ाएम आपके पास है उसका नूरो बुरहान आपके

الْخَلْقِ اِلَيْكُمْ وَ حِسَابُهُمْ عَلَيْكُمْ وَ فَصْلُ الْخِطَابِ عِنْدَكُمْ وَ

पास है और उसका अम्र आप की तरफ़ है जिसने आपसे मोहब्बत की उसने खुदा से मोहब्बत की और जिसने

اٰيَاتُ اللّٰهِ لَدَيْكُمْ وَ عَزَآئِمُهٗ فِيْكُمْ وَ نُوْرُهٗ وَ بُرْهَانُهٗ عِنْدَكُمْ

आप से दुश्मनी की उसने खुदासे दुश्मनी की और जिसने आप को चाहा उसने खुदा को चाहा और जिसने आप

وَاَمْرُهٗ اِلَيْكُمْ مَنْ وَالَاكُمْ فَقَدْ وَالَى اللّٰهَ وَمَنْ عَادَاكُمْ فَقَدْ

से वाबसतगी इख़तियार की। आप सिराते मुस्तक़ीमे खुदा हैं और इस दारे फ़ना वे गवाह हैं और दारे बक़ा के

عَادَ اللّٰهَ وَ مَنْ اَحَبَّكُمْ فَقَدْ اَحَبَّ اللّٰهَ وَ مَنْ اَبْغَضَكُمْ فَقَدْ

शिफ़ाअत करनेवाले हैं और रहमत सरमदी और आयते मख़ज़ूना और अमानते महफ़ूज़ हैं और वो दरवाज़ा

اَبْغَضَ اللّٰهَ وَ مَنِ اعْتَصَمَ بِكُمْ فَقَدِ اعْتَصَمَ بِاللّٰهِ وَ الصِّرَاطُ

हैं जिसके ज़रिए लोगों का इम्तेहान लिया जाता है जो आप के पास आ गया उसने नजात पा ली व जो न आया

الْاَقْوَمُ وَ شُهَدَآءُ دَارِ الْفَنَآءِ وَ شُفَعَآءُ دَارِ الْبَقَآءِ وَ الرَّحْمَةُ

हलाक हो गया। आप खुदा की तरफ़ बुलाते हैं व उसीकी तरफ़ रहनुमाई करते है व उसी पर ईमान रखते हैं व

الْمَوْصُوْلَةُ وَ الْاٰيَةُ الْمَخْزُوْنَةُ وَالْاَمَانَةُ الْمَحْفُوْظَةُ وَ الْبَابُ

उसीके सामने सर तसलीमे ख़म करते हैं व उसी वे अम्र पर अमल करते हैं व उसी के रासते की तरफ हिदायत

الْمُبْتَلٰى بِهِ النَّاسُ مَنْ اَتٰيكُمْ نَجٰى وَ مَنْ لَمْ يَاْتِكُمْ هَلَكَ اِلَى

करते हैं व उसीके कलाम से हुकुम करते हैं। वो नेकबख़्त है जिसने आपसे मोहब्बत की व वो हलाक हो गया

اللّٰهِ تَدْعُوْنَ وَ عَلَيْهِ تَدُلُّوْنَ وَ بِهٖ تُؤْمِنُوْنَ وَ لَهٗ تُسَلِّمُوْنَ وَ بِاَمْرِهٖ

जिसने दुश्मनी की व वो नुक़सान मे रहा जिसने इन्कार किया व गुम्राह हुआ जिसने आपसे जुदाई की व जो

تَعْمَلُوْنَ وَ اِلٰى سَبِيْلِهٖ تُرْشِدُوْنَ وَ بِقَوْلِهٖ تَحْكُمُوْنَ سَعَدَ مَنْ وَ

मुतमस्सिक हुआ कामयाब हो गया व जिसने पनाह ली आप की वो महफ़ूज़ हो गया व सालिम हुआ व जिसने

الَاكُمْ وَ هَلَكَ مَنْ عَادَاكُمْ وَ خَابَ مَنْ جَحَدَكُمْ وَ ضَلَّ مَنْ

आपकी तसदीक़ की हिदायत पाई व जिसने आपसे राबेता इस्तेवार किया व जिसने इत्तेबा किया आपका तो

فَارَقَكُمْ وَ فَازَ مَنْ تَمَسَّكَ بِكُمْ وَ اَمِنَ مَنْ لَجَاَ اِلَيْكُمْ وَ سَلِمَ

जन्नत उसकी मनिज़ल है वजिसने मुख़ालेफ़त की जहन्नम उसका ठिकाना है व जिसने आपका इन्कार किया

مَنْ صَدَّقَكُمْ وَ هُدِيَ مَنِ اعْتَصَمَ بِكُمْ مَنِ اتَّبَعَكُمْ فَالْجَنَّةُ

वे काफ़र है और जिसने आप से जंग की वो मुश्रिक है और जिसने आप के हुकुम को रद किया वो जहन्नम के

مَاْوٰاهُ وَ مَنْ خَالَفَكُمْ فَالنَّارُ مَثْوَاهُ وَ مَنْ جَحَدَكُمْ كَافِرٌ وَ مَنْ

पस्त तबके मे है। मै गवाही देता हूँ के ये मकाम हमेशाँ आपके लिए साबिक़ मे और ला हक़ मे रहा है और

حَارَبَكُمْ مُشْرِكٌ وَمَنْ رَدَّ عَلَيْكُمْ فِيْ اَسْفَلِ دَرَكٍ مِنَ الْجَحِيْمِ

आपकी रूहें और आपके नूर और आपकी तीनत एक है और पाकीज़गी और तहारत मे बऐना एक दूसरे की

اَشْهَدُ اَنَّ هٰذَا سَابِقٌ لَكُمْ فِيْمَا مَضٰى وَ جَارٍ لَكُمْ فِيْمَا بَقِيَ وَ اَنَّ

तरह हैं। खुदाने आपको नूर की सूरत मे पैदा किया। पस आप को एतेराफ़े अर्श मे क़रार दिया यहाँ तक के

اَرْوَاحَكُمْ وَ نُوْرَكُمْ وَ طِيْنَتَكُمْ وَاحِدَةٌ طَابَتْ وَ طَهُرَتْ

उसने आपके ज़रिए हम पर एहसान किया। पस आपको क़रार दिया ऐसे घर मे जिसकी बुलंदी का हुक्म दिया

بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ خَلَقَكُمُ اللّٰهُ اَنْوَارًا فَجَعَلَكُمْ بِعَرْشِهٖ مُحْدِقِيْنَ

गया है और जिसमे उस का तज़केरा होता रहता है और हमारे दुरूद को आप पर और उस मोहब्बत को जिस

حَتّٰى مَنَّ عَلَيْنَا بِكُمْ فَجَعَلَكُمْ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ

से हम को मख़सूस किया है क़रार दिया है हमारी फ़ितरत की नेकी और हमारे नफ़्स की पाकीज़गी के लिए

يُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَ جَعَلَ صَلٰوتَنَا عَلَيْكُمْ وَ مَا خَصَّنَا بِهٖ مِنْ

और हमारा तज़किये के लिए और हमारे गुनाहों के कफ़्फ़ारे के लिए। पस हम खुदा के नज़दीक आपकी

وِلَايَتِكُمْ طِيْبًا لِخَلْقِنَا وَ طَهَارَةً لِاَنْفُسِنَا وَ تَزْكِيَةً لَنَا وَ

फ़ज़ीलतों के तसलीम करनेवाले और आपकी तसदीक के लिए मशहूर हो गए। पस खुदाने आपको अहले

كَفَّارَةً لِذُنُوْبِنَا فَكُنَّا عِنْدَهٗ مُسَلِّمِيْنَ بِفَضْلِكُمْ وَ مَعْرُوْفِيْنَ

करामत का शरीफ़तरीन मकाम और मुक़ररेबीन की आला मनिज़ल और मुसर्लान का बुलंदतरीन दरजा अता

بِتَصْدِيْقِنَا اِيَّاكُمْ فَبَلَغَ اللّٰهُ بِكُمْ اَشْرَفَ مَحَلِّ الْمُكَرَّمِيْنَ وَ

किया के उस दरजा तक कोई बाद मे न पहुँच सका और उससे बुलंद मरतबे तक किसी के लिए राह नही है

اَعْلٰى مَنَازِلِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَرْفَعَ دَرَجَاتِ الْمُرْسَلِيْنَ حَيْثُ لَا

और उस तक कोई पहले भी नही पहुँचा और उस मकाम के पाने का कोई लालच भी नही करता है, यहाँ तक

يَلْحَقُهٗ لَاحِقٌ وَ لَا يَفُوْقُهٗ فَائِقٌ وَ لَا يَسْبِقُهٗ سَابِقٌ وَ لَا يَطْمَعُ فِيْ

के कोई मलके मुक़र्रब नही बाक़ी रहा और न नबीए मुर्सल और न सिद्दीक़ और न शहीद और न आलिम और

اِدْرَاكِهٖ طَامِعٌ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَ لَا نَبِيٌّ مُرْسَلٌ وَ لَا

न जाहिल न पस्त और न बुलंद और न मोमिने सालेह और न फ़ाजिर बद बख़्त और न सरकश जाबिर और

صِدِّيْقٌ وَ لَا شَهِيْدٌ وَ لَا عَالِمٌ وَ لَا جَاهِلٌ وَ لَا دَنِيٌّ وَ لَا فَاضِلٌ وَ

ना फ़रमान शैतान और न कोई मख़लूक उनके दरमियान मगर ये के खुदा ने उनको आपके अम्र की जलालत

لَا مُؤْمِنٌ صَالِحٌ وَ لَا فَاجِرٌ طَالِحٌ وَ لَا جَبَّارٌ عَنِيْدٌ وَ لَا شَيْطَانٌ

और आप की अज़मते कद्र और आपकी जलालते शान और आपके नूरे तमाम और नेक मकाम और आपके

مَرِيْدٌ وَ لَا خَلْقٌ فِيْمَا بَيْنَ ذٰلِكَ شَهِيْدٌ اِلَّا عَرَّفَهُمْ جَلَالَةَ اَمْرِكُمْ

मकाम वे सिबात और शराफ़ते मरतबा और मनिज़लत और आपकी करामत को जो न०ज्दे खुदा है और

وَ عَظِيْمَ خَطَرِكُمْ وَ كِبَرَ شَاْنِكُمْ وَتَمَامَ نُوْرِكُمْ وَ صِدْقَ

आपका बारगाहे खुदा मे इख़्तेसास को और आपके क़ुरबे मनिज़लत को पहचनवा न दिया हो। मेरे माँ बाप

مَقَاعِدِكُمْ وَ ثَبَاتَ مَقَامِكُمْ وَ شَرَفَ مَحَلِّكُمْ وَ مَنْزِلَتِكُمْ

आप पर क़ुर्बान हों और मेरे अहलो माल और ख़ानदानवाले क़ुर्बान हों। मै खुदा को और आपको गवाह बनाता

عِنْدَهُ وَ كَرَامَتَكُمْ عَلَيْهِ وَ خَاصَّتَكُمْ لَدَيْهِ وَ قُرْبَ مَنْزِلَتِكُمْ

हूँ के मै आप पर ईमान रखता हूँ और जिस पर आप ईमान लाए उस पर भी ईमान है। आपके दुश्मनों का और

مِنْهُ بِأَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ وَ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ وَ اُسْرَتِيْ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ

जिस से आपने इन्कार किया उसका मुनकर हूँ। आपकी जलालते शान और आपके मुख़ालिफ़ की गुमराही

اُشْهِدُكُمْ اَنِّيْ مُؤْمِنٌ بِكُمْ وَ بِمَا اٰمَنْتُمْ بِهٖ كَافِرٌ بِعَدُوِّكُمْ وَ بِمَا

का मोतरिफ़ हूँ। आपका और आपके दोस्तों का दोस्त हूँ और आपके दुश्मनों का दुश्मन हूँ और उनसे अदावत

كَفَرْتُمْ بِهٖ مُسْتَبْصِرٌ بِشَانِكُمْ وَ بِضَلَالَةِ مَنْ خَالَفَكُمْ مُوَالٍ

रखता हूँ। उस से मेरी सुलह है जिस से आपकी सुलह है और जिससे आपकी जंग है उससे मेरी जंग है जिसको

لَكُمْ وَلِاَوْلِيَآئِكُمْ مُبْغِضٌ لِاَعْدَآئِكُمْ وَ مُعَادٍ لَهُمْ سِلْمٌ لِمَنْ

आप ने हक़ समझा है हमने भी हक़ जाना है आपके इल्म का हामिल हूँ और आपके अहदे विलायत से

سَالَمَكُمْ وَ حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ مُحَقِّقٌ لِمَا حَقَّقْتُمْ مُبْطِلٌ لِمَا

वाबसता हूँ, आप का मोतरिफ़ हूँ आप की वापसी पर ईमान रखता हूँ आपकी रजअत की तसदीक़ करने वाला

اَبْطَلْتُمْ مُطِيْعٌ لَكُمْ عَارِفٌ بِحَقِّكُمْ مُقِرٌّ بِفَضْلِكُمْ مُحْتَمِلٌ

हूँ। आपके अम्र का मुन्तिज़र हूँ आपकी हुकूमत के लिए चश्मे बराह हूँ आपके क़ौल का क़ुबूल करनेवाला

لِعِلْمِكُمْ مُحْتَجِبٌ بِذِمَّتِكُمْ مُعْتَرِفٌ بِكُمْ مُؤْمِنٌ بِاِيَابِكُمْ

हूँ। आपके अम्र पर आमिल हूँ, आपकी बारगाह मे पनाह चाहनेवाला हूँ, आपका ज़ाएर हूँ आपकी क़ब्र की

مُصَدِّقٌ بِرَجْعَتِكُمْ مُنْتَظِرٌ لِاَمْرِكُمْ مُرْتَقِبٌ لِدَوْلَتِكُمْ

पनाह मे हूँ, अल्लाह की बारगाह मे आपके ज़रिए शिफ़ाअत चाहता हूँ और आप के ज़रिए उसकी बारगाह से

اٰخِذٌ بِقَوْلِكُمْ عَامِلٌ بِاَمْرِكُمْ مُسْتَجِيْرٌ بِكُمْ زَائِرٌ لَكُمْ لَائِذٌ

तक़र्रूब का तलबगार हूँ और आपको अपनी तलब और हाजत और इरादा के आगे करनेवाला हूँ। तमाम

عَائِذٌ بِقُبُوْرِكُمْ مُسْتَشْفِعٌ اِلَى اللهِ عَزَّ وَ جَلَّ بِكُمْ وَ مُتَقَرِّبٌ

हालात और तमाम उमूर मे। आपके ज़ाहिर व बातिन पर ईमान लानेवाला हूँ और गएब व हाज़र पर ईमान

بِكُمْ اِلَيْهِ وَ مُقَدِّمُكُمْ اَمَامَ طَلِبَتِيْ وَ حَوَآئِجِيْ وَاِرَادَتِيْ فِيْ كُلِّ

रखता हूँ और अव्वल व आख़िर पर ईमान लानेवाला हूँ और तमाम के तमाम उमूर को आपकी जानिब सुपुर्द

اَحْوَالِيْ وَ اُمُوْرِيْ مُؤْمِنٌ بِسِرِّكُمْ وَ عَلَانِيَتِكُمْ وَ شَاهِدِكُمْ وَ

करनेवाला हूँ और आपके साथ उसमे सर तसलीम ख़म करनेवाला हूँ और मेरा दिल आपके लिए झुका हुआ

غَآئِبِكُمْ وَ اَوَّلِكُمْ وَ اٰخِرِكُمْ وَ مُفَوِّضٌ فِيْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ اِلَيْكُمْ وَ

है और मेरी राए आप के ताबे है और मेरी मदद आप के लिए हाज़र है यहाँ तक के आप के ज़रिए खुदा अपने

مُسَلِّمٌ فِيْهِ مَعَكُمْ وَ قَلْبِيْ لَكُمْ مُسَلِّمٌ وَ رَاْيِيْ لَكُمْ تَبَعٌ وَ نُصْرَ

दीन को ज़िंदा करे और आपको अपने दिनों मे वापस लाए और आपको ग़ालिब कर दे अपनी अदालत के

تِيْ لَكُمْ مُعَدَّةٌ حَتّٰى يُحْيِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى دِيْنَهٗ بِكُمْ وَ يَرُدَّ كُمْ فِيْ اَيَّامِهٖ

लिए और आप को क़ुदरत अता करे अपनी ज़मीन मे तो हम आप के साथ हैं न के आप के ग़ैर के साथ। मै

وَ يُظْهِرَ كُمْ لِعَدْلِهٖ وَ يُمَكِّنَكُمْ فِيْ اَرْضِهٖ فَمَعَكُمْ مَعَكُمْ لَا مَعَ

आप पर ईमान लाया और आप के आख़री फ़र्द से उसी तरह दोस्ती की जिस तरह पहले फ़र्द से और आप के

غَيْرِ كُمْ اٰمَنْتُ بِكُمْ وَ تَوَلَّيْتُ اٰخِرَ كُمْ بِمَا تَوَلَّيْتُ بِهٖ اَوَّلَكُمْ وَ

दुश्मनों से बराअत कर के अल्लाह की तरफ़ आ गया और जिब्त व ताग़ूत और शैयातीन और उन के गरोहों से

بَرِئْتُ اِلَى اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ اَعْدَآئِكُمْ وَ مِنَ الْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ

जो आप पर ज़ुल्म करनेवाले हैं और आपके हक़ के मुनकिर हैं और आपकी विलायत से ख़ारिज हैं और

وَ الشَّيَاطِيْنِ وَ حِزْبِهِمُ الظَّالِمِيْنَ لَكُمْ وَ الْجَاحِدِيْنَ لِحَقِّكُمْ وَ

आपकी विरासत के ग़ासिब हैं और आपके बारे मे शक करनेवाले हैं, आपसे मुनहरिफ़ हैं और मै बरी हूँ

الْمَارِقِيْنَ مِنْ وِلَايَتِكُمْ وَ الْغَاصِبِيْنَ لِاِرْثِكُمْ وَ الشَّاكِّيْنَ

आपके अलावा तमाम वसीयों से व आपके अलावा तमाम पेशवाओं से व उन इमामों से जो जहन्नम की

فِيْكُمُ الْمُنْحَرِفِيْنَ عَنْكُمْ وَ مِنْ كُلِّ وَ لِيْجَةٍ دُوْنَكُمْ وَ كُلِّ

जानिब दावत देते हैं, पस खुदा वन्दे आलम मुझको साबित क़दम रखे जबतक मै जिन्दा रहूँ आपकी विलायत

مُطَاعٍ سِوَاكُمْ وَ مِنَ الْاَئِمَّةِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ فَثَبَّتَنِيْ

और आपकी मोहब्बत और आपके दीन पर और मुझको तौफ़ीक़ इनायत करे आपकी इताअत की और

اللّٰهُ اَبَدًا مَا حَيِيْتُ عَلٰى مُوَالَاتِكُمْ وَ مَحَبَّتِكُمْ وَ دِيْنِكُمْ وَ

मुझको आपकी शिफ़ाअत का रिज़्क़ दे और मुझको आपके अच्छे दोस्तों मे क़रार दे जो उसका इत्तेबा

وَفَّقَنِىْ لِطَاعَتِكُمْ وَ رَزَقَنِىْ شَفَاعَتَكُمْ وَ جَعَلَنِىْ مِنْ خِيَارِ

करनेवाले हों जिनकी तरफ़ आपने बुलाया और मुझको क़रार दे उनमे से जो आपके आसार के साथ रहे और

مَوَالِيْكُمُ التَّابِعِيْنَ لِمَا دَعَوْتُمْ اِلَيْهِ وَ جَعَلَنِىْ مِمَّنْ يَقْتَصُّ

आप की राह पर चले और आपकी हिदायत से हिदायत हासिल की और क़यामत मे आपके साथ महशूर होगें

اٰثَارَكُمْ وَ يَسْلُكُ سَبِيْلَكُمْ وَ يَهْتَدِىْ بِهُدٰيكُمْ وَ يَحْشُرُ فِىْ

और आपकी रजत मे दुनिया मे आएगें और आपकी हुकूमत मे सलतनत करेगें और शरफ़े आाफ़ियत मे रहेगें

زُمْرَتِكُمْ وَ يَكِرُّ فِىْ رَجْعَتِكُمْ وَ يُمَلَّكُ فِىْ دَوْلَتِكُمْ وَ يُشَرَّفُ فِىْ

व आपकी बादशाहत मे बा एकतेदार रहेगें और जिनकी आँख ठंडी होगी आपके दीदार से, मेरे माँ बाप आप

عَافِيَتِكُمْ وَ يُمَكَّنُ فِىْ اَيَّامِكُمْ وَ تَقِرُّ عَيْنُهٗ غَدًا بِرُؤْيَتِكُمْ بِاَبِىْ

पर क़ुर्बान हों और मेरे अहल व माल सब, यक़ीनन जिसने अल्लाह का इरादा किया उसने आपसे शुरू किया

اَنْتُمْ وَ اُمِّىْ وَ نَفْسِىْ وَ اَهْلِىْ وَ مَالِىْ مَنْ اَرَادَ اللّٰهَ بَدَءَ بِكُمْ وَ مَنْ

व जिसने अल्लाह को एक जाना उसने आपकी तालीम को क़ुबूल किया व जिसने खुदा का क़सद किया वो

وَحَّدَهٗ قَبِلَ عَنْكُمْ وَ مَنْ قَصَدَهٗ تَوَجَّهَ بِكُمْ مَوَالِىَّ لَا اُحْصِىْ

आप वे ज़रिए मुतवज्ञे हुआ। ऐ हमारे पेश्वा आपकी तारीफ़ का एहसा नही हो सकता और मै मदह मे आपकी

ثَنَآئَكُمْ وَلَا اَبْلُغُ مِنَ الْمَدْحِ كُنْهَكُمْ وَمِنَ الْوَصْفِ قَدْرَكُمْ وَ

हक़ीक़त तक़ नही पहुँच सकता और न तौसिफ़ करने मे आपकी क़द्रो मनिज़लत तक व आप नेकीयों के नूर

اَنْتُمْ نُوْرُ الْاَخْيَارِ وَهُدَاةُ الْاَبْرَارِ وَحُجَجُ الْجَبَّارِ بِكُمْ فَتَحَ اللّٰهُ

और नेकीयों के हादी व खुदाए जब्बारकी हुज्जत हैं। आप ही के ज़रिए खुदाने आलम को शुरू किया व आपही

وَبِكُمْ يَخْتِمُ اللّٰهُ وَبِكُمْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَبِكُمْ يُمْسِكُ السَّمَآءَ

पार ख़त्म करेगा और आप की वज्ह से बारिश नाज़ल करता है व आपकी वजह से आसमान को रोके हुए है

اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ وَبِكُمْ يُنَفِّسُ الْهَمَّ وَيَكْشِفُ

के वो ज़मीन पर गिर न पडे मगर उसकी इजाज़तसे व आप ही की वजह से ग़म दूर होता है और तकलीफ़

الضُّرَّ وَعِنْدَكُمْ مَا نَزَلَتْ بِهٖ رُسُلُهٗ وَهَبَطَتْ بِهٖ مَلَآئِكَتُهٗ وَاِلٰى

ख़त्म होती है और आपके पास वो सब कुछ है जिसे खुदा के नुमाएंदा लाए हैं या मलाएका लेकर नाज़ल हुए

جَدِّكُمْ

हैं और आपके जद की तरफ़ से मिला है।

अगर अमीरूल मोमिनीन (अ) की ज़ियारत हो तो جَدِّكَ **के बजाए** وَاِلٰى اَخِيْكَ **कहे।**

بُعِثَ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ اَتَاكُمُ اللّٰهُ مَا لَمْ يُؤْتَ اَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِيْنَ

रूहुल अमीन नाज़ल हुए। खुदा ने आपको वो मकाम अता किया जो आलमीन मे से किसी को नही अता

طَاْطَاَ كُلُّ شَرِيْفٍ لِشَرَفِكُمْ وَ بَخَعَ كُلُّ مُتَكَبِّرٍ لِطَاعَتِكُمْ وَ

किया हर शरीफ़ ने आपके शरफ़ के सामने गरदन झुका दी और हर मुतकब्बिर ने आपकी इताअत के आगे

خَضَعَ كُلُّ جَبَّارٍ لِفَضْلِكُمْ وَ ذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لَكُمْ وَ اَشْرَقَتِ

सर झुका दिया और हर जाबिर ने आप के फ़ज़्ल के सामने सर ख़म कर दिया और हर चीज़ आपके लिए

الْاَرْضُ بِنُوْرِكُمْ وَ فَازَ الْفَائِزُوْنَ بِوِلَايَتِكُمْ بِكُمْ يُسْلَكُ اِلَى

फ़रूतन हो गई और ज़मीन चमकी आपके नूर से और कामयाब होने वाले कामयाब हुए आपकी विलायत

الرِّضْوَانِ وَ عَلٰى مَنْ جَحَدَ وِلَايَتَكُمْ غَضَبُ الرَّحْمٰنِ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ

से। आपके ज़रिए मर्ज़ाए खुदा तक पहुँचा जाता है और जिसने आपकी विलायत से इन्कार किया उसपर

اُمِّيْ وَ نَفْسِيْ وَ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ ذِكْرُكُمْ فِي الذَّاكِرِيْنَ وَ اَسْمَآؤُكُمْ

अल्लाह का ग़ज़ब है मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों और नफ़्स व अहेल और माल सब क़ुर्बान हों। आप का जिक ज़िक्र

فِي الْاَسْمَآءِ وَ اَجْسَادُكُمْ فِي الْاَجْسَادِ وَ اَرْوَاحُكُمْ فِي الْاَرْوَاحِ وَ

करनेवालों मे है और आपका नाम नामी तमाम नामों मे है और आप का जसदे पाक तमाम जिस्मों मे है आप

اَنْفُسُكُمْ فِي النُّفُوْسِ وَ اٰثَارُكُمْ فِي الْاٰثَارِ وَ قُبُوْرُكُمْ فِي الْقُبُوْرِ

की रूह पाक तमाम रूहों मे है और आपका नफ़्स तमाम नफ़सों मे है और आपके आसार तमाम आसार मे

فَمَا اَحْلٰى اَسْمَآئَكُمْ وَ اَكْرَمَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَعْظَمَ شَاْنَكُمْ وَ اَجَلَّ

हैं और आपकी क़बरें तमाम क़बरों मे हैं। तो आपका नाम कितना शिरीं और आपका नफ़्स कितना करीम

خَطَرَكُمْ وَ اَوْفٰى عَهْدَكُمْ وَ اَصْدَقَ وَعْدَكُمْ كَلَامُكُمْ نُوْرٌ وَ

और आपकी शान कितनी अज़ीम और आपकी क़द्रो मनज़ेलत कितनी जलील और आपका अहेद कितना

اَمْرُكُمْ رُشْدٌ وَ وَصِيَّتُكُمُ التَّقْوٰى وَ فِعْلُكُمُ الْخَيْرُ وَ عَادَتُكُمُ

वफ़ा से मुत्तसिल व आपका वादा कितना सच्चा है। आप का कलाम नूर हे और आप का अमर हिदायत है

الْاِحْسَانُ وَ سَجِيَّتُكُمُ الْكَرَمُ وَ شَاْنُكُمُ الْحَقُّ وَ الصِّدْقُ وَ

और आप की वसीयत त०क्का है और आप का फेल ख़ैर है आप की आदत एहसान है और आप की फ़ितरत

الرِّفْقُ وَ قَوْلُكُمْ حُكْمٌ وَ حَتْمٌ وَ رَاْيُكُمْ عِلْمٌ وَ حِلْمٌ وَ حَزْمٌ

करम है और आप की हालत हक़ो सदाक़त और महेरबानी है और आपका क़ौले हुकूमे हत्मी है और आप

اِنْ ذُكِرَ الْخَيْرُ كُنْتُمْ اَوَّلَهٗ وَ اَصْلَهٗ وَ فَرْعَهٗ وَ مَعْدِنَهٗ وَ مَاْوَاهُ وَ

की राए इल्म और बुर्दबारी और दूरअन्देशी है। अगर ख़ैर का तज़केरा किया जाए तो आप उसकी इब्तेदाए

مُنْتَهَاهُ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ وَ نَفْسِيْ كَيْفَ اَصِفُ حُسْنَ ثَنَآئِكُمْ وَ

अस्ल और फुरूह और मादन और मरकज़ व मुनतहा हैं। मेरे माँ बाप और मेरी जान आप पर क़ुर्बान, मै क्यो

اُحْصِيْ جَمِيْلَ بَلَآئِكُمْ وَ بِكُمْ اَخْرَجَنَا اللّٰهُ مِنَ الذُّلِّ وَ فَرَّجَ

कर आप की बेहतरीन तारीफ़ कर सकता हूँ और शुयूने जमीला का एहसा कर सकता हूँ दर हाँलाके आपकी

عَنَّا غَمَرَاتِ الْكُرُوْبِ وَ اَنْقَذَنَا مِنْ شَفَا جُرُفِ الْهَلَكَاتِ وَ مِنَ

वजह से अल्लाह ने हमको ज़िल्लत से निकाला और हम को ग़मो की शिद्दत से दूर रखा और हमको नजात दी

النَّارِ بِاَبِیْ اَنْتُمْ وَ اُمِّیْ وَ نَفْسِیْ بِمُوَالَاتِکُمْ عَلَّمَنَا اللّٰہُ مَعَالِمَ

हलाकतों की वादी और जहन्नम की आग से। मेरे माँ बाप और मेरी जान आप पर क़ुर्बान। आपकी विलायत

دِیْنِنَا وَ اَصْلَحَ مَا کَانَ فَسَدَ مِنْ دُنْیَانَا وَ بِمُوَالَاتِکُمْ تَمَّتِ

के ज़रिए अल्लाह ने हमको हक़ाएक़े दीन को सिखाया और इसलाह की हमारी दुनिया वे फ़ासिद उमूर की और

الْکَلِمَۃُ وَ عَظُمَتِ النِّعْمَۃُ وَ ائْتَلَفَتِ الْفُرْقَۃُ وَ بِمُوَالَاتِکُمْ

आपकी विलायत के ज़रिए हमारा कलेमा मुकम्मल हुआ और नेमत अज़ीम हुई और परागंदगी मे इज्तेमा

تُقْبَلُ الطَّاعَۃُ الْمُفْتَرَضَۃُ وَلَکُمُ الْمَوَدَّۃُ الْوَاجِبَۃُ وَ الدَّرَجَاتُ

आया और आपकी विलायतके ज़रिए वाजिब इताअत क़ुबूल की जाती है और आपके लिए वाजिब मावद्दत

الرَّفِیْعَۃُ وَ الْمَقَامُ الْمَحْمُوْدُ وَ الْمَکَانُ الْمَعْلُوْمُ عِنْدَ اللّٰہِ

और दरजात राफ़आ और मक़ामे महमुद और खुदा के नज़दीक मालूम जगह है और अज़ीम जाह व जलाल

عَزَوَجَلَّ وَ الْجَاہُ الْعَظِیْمُ وَ الشَّاْنُ الْکَبِیْرُ وَ الشَّفَاعَۃُ

और बड़ी शान और मक़बूल शिफ़ाअत है मेरे परवरदिगार हम ईमान लाए उस पर जो तूने नाज़ल किया और

الْمَقْبُوْلَۃُ رَبَّنَا اٰمَنَّا بِمَا اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاکْتُبْنَا

हमने रसूल का इत्तेबा किया तो हमको गवाहों मे लिखदे हमारे परवरदिगार। हमारे दिलों को हिदायत देने के

مَعَ الشَّاھِدِیْنَ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ ھَدَیْتَنَا وَ ھَبْ لَنَا

बाद टेहडा न होने देना और हमको अता करना अपने पास से रहमत के तू ही रहमत का अता करनेवाला है।

مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ سُبْحَانَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعْدُ

हमारा रब पाको पाकीज़ा है हमारे रब का वादा हतमन पूरा होने वाला है। ऐ खुदा के वली मेरे और खुदा के

رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا يَا وَلِيَّ اللهِ اِنَّ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ذُنُوْبًا لَا يَاْتِيْ

दरमियान वो गुनाह हैं जो सिवाए आपकी रज़ामंदी के महव नही हो सकते तो उस ज़ात के हक़ का वासता

عَلَيْهَا اِلَّا رِضَاكُمْ فَبِحَقِّ مَنِ ائْتَمَنَكُمْ عَلٰى سِرِّهٖ وَاسْتَرْعَاكُمْ

जिसने आपको अपने राज़ का अमीन बनाया और बन्दों के उमूर का सरपरसत बनाया और आपकी इताअत

اَمْرَ خَلْقِهٖ وَ قَرَنَ طَاعَتَكُمْ بِطَاعَتِهٖ لَمَّا اسْتَوْهَبْتُمْ ذُنُوْبِيْ وَ

को अपनी इताअत से मिला दिया के आप मेरे गुनाहों के लिए बख़शिश तलब करें और आप मेरे शफ़ी हो

كُنْتُمْ شُفَعَآئِيْ فَاِنِّيْ لَكُمْ مُطِيْعٌ مَنْ اَطَاعَكُمْ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ

जाए मै दिलसे आपका मुती हूँ और जिसने आपकी इताअत की उसने खुदा की इताअत की और जिसने

وَ مَنْ عَصَاكُمْ فَقَدْ عَصَى اللهَ وَ مَنْ اَحَبَّكُمْ فَقَدْ اَحَبَّ اللهَ وَ

०आपकी नाफ़रमानी की उसने खुदा की नाफ़रमानी की और जिसने आपसे मोहब्बत की उसने खुदा से

مَنْ اَبْغَضَكُمْ فَقَدْ اَبْغَضَ اللهَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ لَوْ وَجَدْتُ شُفَعَآءَ

मोहब्बत की और जिसने आपसे बु०ग़्ज़ रखा उसने खुदा से बु०ग़्ज़ रखा खुदाया अगर मै मोहम्मद और उनके

اَقْرَبَ اِلَيْكَ مِنْ مُّحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهِ الْاَخْيَارِ الْاَئِمَّةِ الْاَبْرَارِ

अहलेबैत (अ) अतहार, आईम्मए अबरार से ज़्यादा क़रीब शफ़ीअ पा लेता तो उन्हीं को शफ़ीअ क़रार देता

لَجَعَلْتُهُمْ شُفَعَآئِیْ فَبِحَقِّهِمُ الَّذِیْ اَوْجَبْتَ لَهُمْ عَلَیْكَ

अब उनके उस हक़ का वासता दे कर जिसको तूने अपने ऊपर लाज़म किया है मै तुझसे सवाल करता हूँ

اَسْئَلُكَ اَنْ تُدْخِلَنِیْ فِیْ جُمْلَةِ الْعَارِفِیْنَ بِهِمْ وَ بِحَقِّهِمْ وَ فِیْ

के मुझको उनके पहचानने वालों मे क़रार दे और उनके हक़ के पहचानने वालों मे और उनके गरोहो मे जो

زُمْرَةِ الْمَرْحُوْمِیْنَ بِشَفَاعَتِهِمْ اِنَّكَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ

उनकी शिफ़ाअत से रहमत पा चुके हैं। बेशक तू सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाला है और अल्लाह का दुरूद हो

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهِ الطَّاهِرِیْنَ وَ سَلَّمَ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا وَ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ

मोहम्मद और उनकी आले पाक पर और ज़्यादा सलाम हो और हमारे लिए खुदा काफ़ी है और वही बेहतरीन

نِعْمَ الْوَكِیْلُ

वकील है।

लेखक: इस ज़ियारत को शेख़ ने तहæजीब में नक़्ल किया है और इसके बाद एक दुआए विदा नक़्ल की है जिसको इख़्तेसार की बिना पर हमने तर्क कर दिया है।

यह ज़ियारत बक़ौले अल्लामा मजलिसी ब एतेबारे इबारत व सनद व फ़साहत व बलाग़त बेहतरीन ज़ियारत है।

और अल्लामा मजलिसी के वालिद ने शरहे पा़क़ीह में फ़रमाया है के यह ज़ियारत अहसन व अकबर ज़ियारत है और जब तक अतबात आलेयात में रहा आइम्मा की यही ज़ियारत पढ़ता रहा। हमारे उसताद ने नजमुस साक़िब में एक हिकायत नक्ल की है जिससे मालूम होतै है के इस ज़ियारत की पाबंदी ज़रूरी है। और इस से ग़फ़लत नहीं होनी चाहिए।

हिकायत यह है के जनाबे मोहतरम मर्दे मुत्तकी नेक किरदार सय्यद अहमद बिन सय्यद हाशिम बिन सय्यद हसन मूसवी रश्ती एक ताजिर थे।
सत्तरह साल पहले नजफ़ में मुशर्रफ हुए। आलिम रब्बनी बुæजुर्गवार जनाब शेख़ अली रश्ती (त) जिनका ज़िक्र आईंदा होने वाला है के साथ फ़कीर के ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ ले आए और जाते समय शेख़ ने सय्यदे मोहतरम के हुसने किरदार और उनकी नेकी के बारे में इशारा किया और फ़रमाया के उनका एक अजीब ाक़िस्सा है लेकिन चूँके इस समय बयान का इम्कान नहीं था लेहाज़ा चंद दिनों के बाद जब मुलाक़ात हुई तो उन्होंने फ़रमाया के वह सय्यद चले गए। और उसके बाद क़िस्से को तफ़सील के साथ बयान किया और मुझे बेहद अफ़सोह हुआ के मैंने इस क़िस्से को खुद उन से क्यों न सुना। अगरचे शेख़ मरहूम की शान इस से बुलंदतर है के वह नक़्ल करने में किसी तरह की ख़यानत करें। उस समय तो चंद माह पहले तक यह मतलब मेरे दिल में रहा यहाँ तक के उस साल माहे जमादिउस सानेयह में जब नजफ़े अशरफ़ से वापस हुआ तो काज़मैन में मैंने उन सय्यदे बुज़ुर्ग से मुलाक़ात की जो सामर्रह से वापस आए थे और अजम की तरफ़ जा रहे थे। और जो हालात मैंने सुने थे उनके बारे में दरयाफ़्त किया। उन्होंने क़िस्से को इस प्रकार नक़्ल किया के १२८० हिजरी में हज्जे बैतुल्लाह के इरादे से रश्त से तबरेज़ आया और हाजी सफ़र अली ताजिर तबरेज़ी के घर में क़याम किया। चूँके कोई काफ़ला नहीं था लेहाज़ा मैं परेशान था। यहाँ तक के हाजी जब्बार जलूदार इस्फ़हानी ने सामान उठाया और तराबूज़्न की तरफ़ चलने लगे। मैंने भी उनके साथ सवारी किराए पर ली और चल पड़ा। पहली मंज़ल पर पहोंचा तो तीन आदमी और हाजी सफ़र अली के आमादा करने पर मेरे साथ हो गए। एक आदमी मुल्ला बाक़र तबरेज़ी जो ओलमा के दरमियान मशहूर थे और एक सय्यद हुसैन ताजिर तबरेज़ी और एक हाजी अली नाम के ख़िदमत गुज़ार थे। हम सब साथ रवाना हुए। यहाँ तक के मंज़ले अरज़नातुर रोम पहुँचे और वहाँ से इरादा तराबुज़्न का था के एक मंज़ल पर उन दोनो शहरों के दरमियान हाजी जब्बार जलुदार मेरे पास आए और कहा के जो मंज़ल इसके बाद है वह क़द्रे ख़तरनाक है। लेहाज़ा सामान फौरन लाद लीजिए ताके क़ाफ़ेले के साथ

चलें क्योंकि आम तौर से हम लोग क़ाफ़ेले से अलग अलग रहते थे। हमने भी ढाई या तीन घंटे सुबह से पहले क़ाफ़ेले के साथ हरकत कर दी। आधा या तीन चौथाई फ़रसख़ अपने जगह से दूर हुए थे तो फ़िज़ा तारीक हो गई और बर्फ़बारी शुरू हो गई और तमाम साथियों ने अपने सर को ढांप लिया और मुझ से भी तेज़ चलने लगे।

मैं भी उन्हीं के साथ चल पæड़ा जो मेरे लिए मुम्किन नहीं था। यहाँ तक के वह सब निकल गए और मैं तन्हा रह गया तो घोड़े से उतर कर मैं रास्ते के किनारे बैठ गया और इन्तेहाई परेशान था के मेरे साथ तक़रीबन छे सौ तूमान भी थे। काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र के बाद मैंने यह तय किया के इसी मकाम पर सुबह तक रहेंगे और जिस मंज़ल से आए हैं वहीं वापस हो जाएंगे और वहाँ से चंद अफ़राद को साथ लेकर क़ाफ़ेले से मुलहक़ हो जाएंगे। उस समय मैंने अपने को एक बाग़ के सामने देखा के उस बाग में एक बाग़बान था जो हाथ में बेलचा लिए हुए था। और दरख़तों पर मारकर बर्फ़ को गिरा रहा था। वह मेरे करीब आया और पूछा के तुम कौन हो? मैंने कहा के मेरे साथी चले गए मैं अकेला रह गया हूँ और रास्ता नहीं मालूम है। उन्होंने फ़ारसी में फ़रमाया के नाफ़लए-शब पढ़ो ताके रास्ता मिल जाए। मैं नाफेला पढ़ने लगा जब इस्से फ़ारिग़ हुआ तो उन्होंने फ़रमाया के अभी तक गए नहीं? मैंने कहा मुझे रास्ता नहीं मालूम है। फ़रमाया जामेआ पढ़ो, मुझे जामेआ याद नहीं था और अभी तक याद नहीं है हालांके मुकर्रर ज़ियाराते अतबाते आलियात से मुशरर्फ़ हुआ हूँ। वह अपनी जगह से उÇ और तमाम जामेआ को अव्वल से आाख़िर तक हाफ़ेज़े से पढ़ा और फिर फ़रमाया के तुम अभी तक नहीं गए? मुझे बेइख़्तेयार रोना आ गया। मैंने कहा के रास्ता नहीं जानता। फ़रमाया ज़ियारते आशूरा पढ़ो। मुझे ज़ियारते आशूरा भी याद नहीं थी और अभी तक याद नहीं है। लेकिन मैं उÇा और मशग़ूले ज़ियारते आशूरा हो गया। यहाँ तक के तमाम सलाम, लअन और दुआ-ए-अलक़मा पढ़ लिया। फिर मैंने देखा के वह आए और फ़रमाया के अभी तक नहीं गए? मैंने कहा के अब मैं सुबह तक रहूँगा। फ़रमाया के मैं तुम्हें अभी क़ाफ़ेले तक पहुँचाए देता हूँ। यह कह कर एक खच्चर पर सवार हुऐ और बेलचे को कांधे पर रखा और फ़रमाया के मेरे साथ

तुम भी सवार हो जाओ। मैं सवार हुआ उसकी लगाम को खींचा तो वह न चला। तो फ़रमाया, के लाओ लगाम तुम मुझे दे दो मैंने दे दी। उन्होंने बेलचे को बाएं कांधे पर रखा और दाहने हाथ से उसकी लगाम को खींचा और वह चल पढ़ा और निहायत सुकून के साथ चलने लगा। उन्होंने अपने हाथ को मेरे ज़ानू पर रखा और फ़रमाया के तुम नाफ़ेल-ए-शब क्यों नहीं पढ़ते हो? नाफ़ेला पढ़ो, नाफ़ेला पढ़ा। नाफ़ेला पढ़ो। फिर फ़रमाया आशूरा क्यों नहीं पढ़ते हो? आशूरा पढ़ो, आशूरा, आशूरा। उसके बाद फ़रमाया के जामेआ क्यों नहीं पढ़ते हो?

जामेआ पढ़ो, जामेआ, जामेआ। और रास्ता तै करते समय भी वह दायरे की शक्ल में चल रहे थे के एक बार मुड़े और फ़रमाया के यह हैं तुम्हारे साथी। जो एक नहर के किनारे ठहरे हुए हैं और नमाज़े सुबह के लिए वुज़ू में मशग़ूल हैं। मैं उस खच्चर से उतरा और अपने घोड़े पर सवार होने लगा तो वह अपने काबू में न आया जिसके बाद खुद वह पैदल हो गए और उन्होंने अपने बेलचे को बरफ़ में गाड़ दिया और मुझ को सवार किया। और घोड़े के सर को साथियों की तरफ मोड़ दिया। मुझे उस समय ख़याल आया के यह व्यक्ति कौन था जो फ़ारसी बोल रहा था हालांके इस इलाके में तुरकी के अलावा कोई ज़बान और ईसाई के अलावा कोई मज़हब नहीं है। फिर इस तेज़ी से उन्होंने साथियों तक कैसे पहुँचा दिया? मैंने जब मुड़ कर देका तो कोई नज़र न आया और कहीं दूर दूर आसार दिखाई नहीं दिये और मैं अपने साथियों से मुलहक़ हो गया।

तीसरी ज़ियारत

वह ज़ियारत है जो अल्लामा मजलिसी ने तोहफ़तुज़ ज़ाएर में आठवीं ज़ियारते जामेआ क़रार दी है और फ़रमाया है के यह वह ज़ियारत है जो सय्यद इब्ने ताऊस ने दुआ हाए अरफ़ा के दरमियान इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल की है जो हर समय और हर जगह पढ़ी जा सकती है। खुसूसन रोज़े अरफ़ा। ज़ियारत यह है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ

सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा सलाम आप पर ऐ नबीए खुदा, सलाम आप पर ऐ बेहतरीन मख़लूक़े खुदा और

عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ مِنْ خَلْقِهِ وَامِينَهُ عَلٰى وَحْيِهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

खुदा की वही के अमानत दार, सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अमीरल मोमिनीन (अ), सलाम आपपर ऐ मेरे

مَوْلَايَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ اَنْتَ حُجَّةُ اللهِ

मौला आप खुदा की हुज्जत हैं उसकी मख़लूक पर ओर उसके इल्म का दरवाज़ा हैं और उसके नबी के वसी हैं

عَلٰى خَلْقِهِ وَبَابُ عِلْمِهِ وَوَصِيُّ نَبِيِّهِ وَالْخَلِيفَةُ مِنْ بَعْدِهِ فِي اُمَّتِهِ

और उनके बाद ख़लीफ़ा हैं उनकी उम्मत मे, खुदा लानत करे उन पर जिन्होंने आप का हक़ ग़ज़्ब किया और

لَعَنَ اللهُ اُمَّةً غَصَبَتْكَ حَقَّكَ وَقَعَدَتْ مَقْعَدَكَ اَنَا بَرِيءٌ مِنْهُمْ

आप की जगह पर ज़बरदस्ती क़बज़ा किया। मै उनसे बरी हूँ और उनके चाहने वालों से भी, सलाम आप पर

وَمِنْ شِيعَتِهِمْ اِلَيْكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ الْبَتُولُ اَلسَّلَامُ

ऐ फ़ातेमा ज़हरा (स) बतूल, सलाम आप पर ऐ अलमीन की औरतों की ज़ीनत सलाम आप पर ऐ आलमीन

عَلَيْكِ يَا زَيْنَ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُولَ اللهِ

के परवरदिगार के रसूल की बेटी अल्लाह की रहमत हो आप पर और उनपर सलाम आप पर ऐ मादरे हसन व

رَبِّ الْعَالَمِينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكِ وَعَلَيْهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا اُمَّ الْحَسَنِ

हुसैन (अ)। अल्लाह की लानत हो उस उम्मत पर जिसने आप का हक़ ग़ज़्ब किया और आप को रोका उस से

وَالْحُسَيْنِ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً غَصَبَتْكِ حَقَّكِ وَمَنَعَتْكِ مَا جَعَلَهُ اللهُ لَكِ

जिसे खुदा ने आप के लिए हलाल क़रार दिया था। मै उन से और उन के गरोह से बेज़ार हो कर आप के पास

حَلَالًا انَا بَرِیءٌ اِلَيْكِ مِنْهُمْ وَمِنْ شِيعَتِهِمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

आया हूँ, सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू मोहम्मद हसन ज़की (अ) सलाम आप पर ऐ मेरे मौला। अल्लाह

مَوْلَایَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنُ الزَّكِیُّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ لَعَنَ اللهُ

की लानत हो उस उम्मत पर जिस ने आप को क़त्ल किया और आप के सिलसिले मे बैअत व मशायत

اُمَّةً قَتَلَتْكَ وَبَايَعَتْ فِی امْرِكَ وَشَايَعَتْ انَا بَرِیءٌ اِلَيْكَ مِنْهُمْ

(माविया) की। मै आप की तरफ़ बरी हूँ उन से और उन के चाहनेवालों से, सलाम आप पर ऐ मेरे आक़ा ऐ

وَمِنْ شِيعَتِهِمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ الْحُسَيْنُ بْنَ

अबू अब्दुल्लाह हुसैन फ़रज़ंदे अली; अल्लाह की रहमत हो आप पर और आप के वालिद पर और आपके

عَلِیٍّ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَعَلٰی اَبِيكَ وَجَدِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّیٰ اللهُ عَلَيْهِ

दादा मोहम्मद पर दुरूदे खुदा हो उनपर और उनकी आल पर, खुदा की लानत हो उस उम्मत पर जिसने

وَآلِهِ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً اسْتَحَلَّتْ دَمَكَ وَلَعَنَ اللهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ

आप के क़त्ल को हलाल जाना और अल्लाह की लानत हो उस उम्मत पर जिस ने आप को क़त्ल किया और

وَاسْتَبَاحَتْ حَرِيمَكَ وَلَعَنَ اللهُ اشْيَاعَهُمْ وَاَتْبَاعَهُمْ وَلَعَنَ اللهُ

आपके हरम की हुरमत को मुबाह समझा और खुदा की लानत हो उनके गरोह और उनके माननेवालों पर

الْمُمَهِّدِينَ لَهُمْ بِالتَّمْكِينِ مِنْ قِتَالِكُمْ اَنَا بَرِیءٌ اِلَى اللهِ وَاِلَيْكَ

और खुदा की लानत हो उनपर जिन्होंने आप के कल के लिए बिसाते क़त्ल बिछाई। मै अल्लाह की तरफ़

مِنْهُمْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ عَلِيَّ بْنَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ

बरी और आप की तरफ़ भी उन सब से, सलाम आप पर ऐ मेरे अक़ा ऐ अबू मोहम्मद अली बिन हुसैन (अ),

عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ

सलाम आप पर ऐ अबू जाफ़र (अ) मोहम्मद बिन अली (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू अब्दुल्लाह

يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ جَعْفَرُ بْنَ مُحَمَّدٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا الْحَسَنِ

जाफ़र बिन मोहम्मद (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मौला अबुल हसन मूसा बिन जाफ़र (अ), सलाम आप पर

مُوسَىٰ بْنَ جَعْفَرٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ

ऐ मेरे मौला ऐ अबुल हसन अली बिन मूसा (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबू जाफ़र मोहम्मद बिन

مُوسَىٰ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ

अली (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबुल हसन अली बिन मोहम्मद (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मैला

عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ

ऐ अबू मोहम्मद हसन बिन अली (अ), सलाम आप पर ऐ मेरे मौला ऐ अबुल क़ासिम मोहम्मद बिन अली

يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنُ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا الْقَاسِمِ

हसन (अ) साहेबुज़्ज़मान अल्लाह की रहमत हो आप पर और आपकी पाक व पकीज़ा तय्यब व ताहिर इत्रत

مُحَمَّدُ بْنَ الْحَسَنِ صَاحِبَ الزَّمَانِ صَلَّىٰ اللهُ عَلَيْكَ وَعَلٰى عِتْرَتِكَ

पर ऐ हमारे इमामों। आप हमारे शिफ़ाअत करने वाले हो जाएं गुनाहों के महव करने और ख़ताओं के ख़त्म

الطَّاهِرَةِ الطَّيِّبَةِ يَا مَوَالِيَّ كُونُوا شُفَعَائِي فِي حَطِّ وِزْرِي وَخَطَايَايَ

करने मे मै ईमान लाया खुदा पर और जो आप की तरफ़ नाज़ल किया गया और मै आप के आख़री फ़र्द से

آمَنْتُ بِاللهِ وَبِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَاتَوَالَىٰ آخِرَكُمْ بِمَا اتَوَالَىٰ اوَّلَكُمْ

भी उसी तरह मोहब्बत करता हूँ जिस तरह पहले फ़र्द से और मै बरी हूँ ज्बित व ताग़ूत और लात व उज़्ज़ से

وَبَرِئْتُ مِنَ الْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَاللاَّتِ وَالْعُزَّىٰ يَا مَوَالِيَّ انَا سِلْمٌ

ऐ मेरे इमामों मेरी सुलह उस से है जिस से आप की सुलह है और उस से जंग है जिस से आप की जंग है और

لِمَنْ سَالَمَكُمْ وَحَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ وَعَدُوٌّ لِمَنْ عَادَاكُمْ وَوَلِيٌّ

दुश्मनी उस से जिस से आप की अदावत है और मै दोस्त हूँ उसका जिस से आप की दोस्ती है क़यामत तक

لِمَنْ وَالَاكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَلَعَنَ اللهُ ظَالِمِيكُمْ وَغَاصِبِيكُمْ

और खुदा की लानत हो ज़ुल्म करनेवालों पर और आपके हुक़ूक़ के ग़ज़्ब करनेवालों पर और अल्लाह की

وَلَعَنَ اللهُ اشْيَاعَهُمْ وَاتْبَاعَهُمْ وَاهْلَ مَذْهَبِهِمْ وَابْرَأُ إِلَى اللهِ

लानत हो उनके साथीयों और उनका इत्तेबा करनेवालों और उनके मज़हबवालों पर और मै बरी हूँ अल्लाह

وَإِلَيْكُمْ مِنْهُمْ

की तरफ़ और आप की तरफ़ उन सब से

चौथी ज़ियारत

यह ज़ियारत अमीरूल मोमिनीन (अ) की ज़ियारत के ज़ैल में नक्ल हो चुकी जिसको हमने दूसरी ज़ियारत क़रार दिया है। ज़ियारते मारूफ़ ब अमीनुल्लाह जिसका आग़ाज़ यूँ होता है:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِينَ اللّٰهِ فِي اَرْضِهِ وَحُجَّتَهُ عَلٰى عِبَادِهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ

सलाम आप पर ऐ अल्लाह की ज़मीन मे उस के अमीन और उस के बन्दां पर उस की हुज्जत। मै

جَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهِ...

गवाही देता हूँ के आपने राहे खुदा मे जिहाद किया।

पाँचवीं ज़ियारत

ज़ियारत इस जुमले से शुरू होती है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي اَشْهَدَنَا مَشْهَدَ اَوْلِيَائِهِ فِي رَجَبٍ وَاَوْجَبَ عَلَيْنَا مِنْ حَقِّهِمْ مَا قَدْ وَجَبَ...

जिसका ज़िक्र आमाले माहे रजब में हो चुका है।
गोया के इस किताब में पाँच ज़ियाराते जामेआ हैं और यही काफ़ी हैं।

दूसरा मकाम

वह दुआएं जो आइम्मए मासमूमीन (अ) की ज़ियारतों के बाद पढ़ी जाती हैं। सय्यद इब्ने ताऊस ने फ़रमाया है के मुस्तहब है के ज़ियाराते आइम्मा (अ) के बाद इस दोआ को पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَتْ ذُنُوبِي قَدْ اَخْلَقَتْ وَجْهِي عِنْدَكَ وَحَجَبَتْ دُعَائِي

खुदाया अगर मेरे गुनहों ने मेरे चेहरे को तेरे नज़दीक फ़रसूदा कर दिया है और मेरी दुआको तुझ तक पहुँचने से

عَنْكَ وَحَالَتْ بَيْنِي وَبَيْنَكَ فَاسْاَلُكَ اَنْ تُقْبِلَ عَلَيَّ بِوَجْهِكَ

रोक दिया है और मेरे और तेरे दरमियान हाएल हो गए हैं तो मै तुझ से सवाल करता हूँ के अपनी निगाहे करम

الْكَرِيمِ وَتَنْشُرَ عَلَيَّ رَحْمَتَكَ وَتُنَزِّلَ عَلَيَّ بَرَكَاتِكَ وَاِنْ كَانَتْ

मेरी तरफ़ मोड़ दे और मेरे ऊपर अपनी रहमत को फैला दे और मुझ पर अपनी बरकतें नाज़ल फ़र्मा दे और अगर

قَدْ مَنَعَتْ اَنْ تَرْفَعَ لِي اِلَيْكَ صَوتًا اوْ تَغْفِرَ لِي ذَنْبًا اوْ تَتَجَاوَزَ

मेरे गुनाह उस से रोक रहे हैं के मेरी आवाज़ तुझ तक बुलंद हो या तू मेरे गुनाहों को बख़श दे या मेरी हलाक

عَنْ خَطِيئَةٍ مُهْلِكَةٍ فَهَا انَا ذَا مُسْتَجِيرٌ بِكَرَمِ وَجْهِكَ وَعِزِّ

करनेवाली ख़ताओं से दर गुज़र फ़रमाए तो मै पनाह चाहनेवाला हूँ तेरी करीम ज़ात और तेरी इज़्ज़त व जलाल

جَلَالِكَ مُتَوَسِّلٌ اِلَيْكَ مُتَقَرِّبٌ اِلَيْكَ بِاَحَبِّ خَلْقِكَ اِلَيْكَ

का और तुझ से तवससुल करने वाला हूँ और तुझसे क़रबत चाहनेवाला हूँ तेरी महबूब तरीन मख़लूक़ का

وَاكْرَمِهِمْ عَلَيْكَ وَاوْلَاهُمْ بِكَ وَاطْوَعِهِمْ لَكَ وَاعْظَمِهِمْ

और तेरी महबुब तरीन मख़लूक के ज़रिए और तेरे बेहतरीन बन्दे के ज़रिए और तेरे ज़्यादा इताअत गुज़ारबन्दे

مَنْزِلَةً وَمَكَانًا عِنْدَكَ مُحَمَّدٍ وَعِتْرَتِهِ الطَّاهِرِينَ الاَئِمَّةِ الْهُدَاةِ

और अज़ीम मंज़लत रखनेवाले बन्दे के ज़रिए यानी हज़रत मोहम्मद (स) और उनकी पाकीज़ा इतरत के ज़रिए

الْمَهْدِيِّينَ الَّذِينَ فَرَضْتَ عَلٰى خَلْقِكَ طَاعَتَهُمْ وَامَرْتَ

जो इमाम और हादी हैं और महदी हैं जिन की इताअत को तूने अपनी मख़लूक़ पर फ़र्ज़ किया है और जिनकी

بِمَوَدَّتِهِمْ وَجَعَلْتَهُمْ وُلَاةَ الْاَمْرِ مِنْ بَعْدِ رَسُوْلِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

मोहब्बत का तूने हम को हुकुम दिया है और अपने रसूल के बाद जिन को वलीए अम्र क़रार दिया है (अल्लाह

وَآلِهِ يَا مُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ وَيَا مُعِزَّ الْمُؤْمِنِينَ بَلَغَ مَجْهُودِي

का दुरूद हो उन पर और उनकी आल पर) ऐ हर सर शक़ी जाबिर को ज़लील करनेवाले और ऐ मोमिनों को

فَهَبْ لِي نَفْسِيَ السَّاعَةَ وَرَحْمَةً مِنْكَ تَمُنُّ بِهَا عَلَيَّ يَا اَرْحَمَ

इज़्ज़त देने वाले मेरी मश०व०कत इन्तेहा को पहुँच चुकी है लेहाज़ा मुझको अपनी रहमते ख़ास इनायत फ़र्मा

الرَّاحِمِينَ

इसी वक़्त और अपनी तरफ़ से रहमत व राफ़ात के ज़रिए एहसन कर दे ऐ सब से बड़े रहम करने वाले।

इसके बाद ज़रीह को बोसा देकर दोनों रूख़सारों को ज़रीह पर रखे और यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا مَشْهَدٌ لَا يَرْجُو مَنْ فَاتَتْهُ فِيهِ رَحْمَتُكَ اَنْ يَنَالَهَا

ऐ खुदा ये मशहदे शरीफ़ वो मकाम है के जो इस मे तेरी रहमत को न पा सके वो इस के अलावा कहीं और

فِي غَيْرِهِ وَلَا اَحَدٌ اَشْقَى مِنْ اَمْرِءٍ قَصَدَهُ مُؤَمِّلًا فَآبَ عَنْهُ خَائِبًا

रहमत की उम्माद नही कर सकता है और न उस से ज़्यादा बद बख़्त कोई शख़्स हो सकता है जो उस बारगाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ الْاِيَابِ وَخَيْبَةِ الْمُنْقَلَبِ

का क़स्द करे और महरूम वापास हो जाए। खुदाया मै तेरी पनाह चाहता हूँ बदतरीन बाज़गश्त से और ना

وَالْمُنَاقَشَةِ عِنْدَ الْحِسَابِ وَحَاشَاكَ يَا رَبِّ اَنْ تَقْرِنَ طَاعَةَ

काम लौटने से और हिसाब कार सख़्तगीरी से ऐ मेरे परवरदिगार तेरे करम से ऐसा नही हो सकता के जब तू

وَلِيِّكَ بِطَاعَتِكَ وَمُوَالَاتَهُ بِمُوَالَاتِكَ وَمَعْصِيَتَهُ بِمَعْصِيَتِكَ

अपने वली की इताअत को अपनी इताअत से मिला दे और उसकी मोहब्बत को अपनी मोहब्बत से मिला दे

ثُمَّ تُؤَيِّسُ زَائِرَهُ وَالْمُتَحَمِّلَ مِنْ بُعْدِ الْبِلَادِ اِلٰى قَبْرِهِ وَعِزَّتِكَ

और उसकी मासियत को अपनी मासियत क़रार दे दे और फिर उसके ज़ाएर को मायूस करदे और दूर दूर के

يَا رَبِّ لَا يَنْعَقِدُ عَلٰى ذٰلِكَ ضَمِيرِى اِذْ كَانَتِ الْقُلُوبُ اِلَيْكَ

शहरों से तकलीफ़ उठा कर उसके क़ब्र की ज़ियारत करने वाले को मायूस कर दे और तेरी इज़्ज़त की क़सम ऐ

بِالْجَمِيلِ تُشِيرُ

परवरदिगार मेरा दिल उसको क़ुबूल नही करता है इस लिए दिल तेरी जानिब हमेशा नेकीयों का इशारा करते हैं।

उसके बाद नमाज़े ज़ियारत पढ़े और जब वापस होना चाहे तो यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ بَيْتِ النُّبُوَّةِ وَمَعْدِنَ الرِّسَالَةِ سَلَامَ

सलाम आप पर ऐ अहलेबैते (अ) नबुवत और मादने रिसालत, विदा करनेवाले का सलाम न के

مُوَدِّعٍ لَا سَئِمٍ وَلَا قَالٍ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

ख़सता हाल और बेज़ार का सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात हों आप पर।

शेख़ मुफ़ीद (र) ने भी इस दुआ को नक़्ल किया लेकिन...

بِالْجَمِيلِ تُشِيرُ

के बाद फ़रमाया है के यह पढ़ो:

يَا وَلِيَّ اللهِ إِنَّ بَيْنِي وَبَيْنَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ذُنُوبًا لَا يَأْتِي عَلَيْهَا إِلَّا رِضَاكَ

ऐ खुदा के वली बेशक मेरे और खुदाए के दरमियान वो गुनाह हैं जिन को सिवाए तेरी रज़ामंदी के कोई चीज़ ख़त्म

فَبِحَقِّ مَنِ ائْتَمَنَكَ عَلَى سِرِّهِ وَاسْتَرْعَاكَ أَمْرَ خَلْقِهِ وَقَرَنَ

नही कर सकती तो आपको क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को अमीन बनाया है अपने राज़ का और मख़लूक़

طَاعَتَكَ بِطَاعَتِهِ وَمُوَالَاتَكَ بِمُوَالَاتِهِ تَوَلَّ صَلَاحَ حَالِي مَعَ اللهِ

के अम्र को आपकी तरबियत व रियायत मे रखा है और आपकी इताअतको अपनी इताअत से मिला दिया है और

عَزَّ وَجَلَّ وَاجْعَلْ حَظِّي مِنْ زِيَارَتِكَ تَخْلِيطِي بِخَالِصِي زُوَّارِكَ

अपनी मोहब्बत को आपकी मोहब्बत से मिला दिया है। आप मेरी हालत की इसलाह के जिम्मेदार हो जाएं। खुदाकी

الَّذِينَ تَسْأَلُ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ فِي عِتْقِ رِقَابِهِمْ وَتَرْغَبُ إِلَيْهِ فِي حُسْنِ

बार-गाह मे और मेरा सवाब अपनी ज़ियारतमे क़रार दीजिए के मै आपके मुख़लिस जाएरों मे हूँ जिनका आज़ादी के

ثَوَابِهِمْ وَهَا أَنَا الْيَوْمَ بِقَبْرِكَ لَائِذٌ وَبِحُسْنِ دِفَاعِكَ عَنِّي عَائِذٌ

बारे मे आप खुदा से सवाल करते हैं और जिनके अच्छे सवाब के लिए खुदा की जानिब राग़िब होते हैं तो मै आज

فَتَلَافَنِي يَا مَوْلَايَ وَأَدْرِكْنِي وَاسْأَلِ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ فِي أَمْرِي فَإِنَّ

ही के राज़ आप की क़ब्र की पनाह मे हूँ और आप के हुस्ने दिफ़ा के साथ पनाह का तलबगार हूँ तो ऐ मेरे मौला आप

لَكَ عِنْدَ اللهِ مَقَامًا كَرِيمًا وَجَاهًا عَظِيمًا صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ

मेरे काम की तलाफ़ी और तदारूक फ़रमाएं और अल्लाह से मेरे बारे मे सवाल करें यक़ीनन खुदा वन्दे आलम के

تَسْلِيمًا

नज़दीक आप का मकाम व मरतबा अज़ीम है। आप पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो जो हक़ सलाम है।

लेखक का कहना है के बेहतर यह है के ज़ाएर जब चाहे के मशाहिदे मुशरेफ़ा में दुआ करे या हर दुआ करनेवाला कहीं भी किसी मक़सद के लिए दुआ करे तो अपनी दुआ से पहले वुजूदे मुक़द्दसे इमामे अस्र (अ) की सलामती के लिए दुआ करे जो इन्तेहाई अहम मसअला है और उसके बेशुमार फ़ज़ाएल हैं। जिनके बयान करने की यहाँ गुंजाइश नहीं है।
शेख़े मरहूम ने नजमुस साक़ब के दसवें वर्ग में इस बात को तफ़सील के साथ ज़िक्र किया और इस मकाम पर बाज़ मख़सूस ज़ियारतों का भी ज़िक्र किया है। जो चाहे वहां रूजू कर सकता है। मुख़्तसर दुआ वही है जो शबे तेईस रमज़ान के आमाल में आख़री अशरे की दुआओं के ज़ैल में ज़िक्र हो चुकी है। और हमने आदाबे ज़ियारते हुसैन (अ) के ज़ैल में भी एक दुआ ज़िक्र की है जो तमाम मशाहिदे मुशर्रफ़ा में भी पढ़ी जा सकती है।

तीसरा मकाम - सलवाते मासूमीन (अ)

शेख तूसी ने मिस्बाह में आमाले रोज़े जुमा में फ़रमाया है के:
हम से असहाब की एक जमाअत ने अबू मुफ़ज़्ज़ल शैबानी के हवाले से नक़्ल किया है के उन्होंने इसको खुद हज़रत अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह बिन आबिद बदालिया से नक़्ल किया है के मैंने अपने मौला इमाम हसन अस्करी (अ) से उनके घर सामर्राह में २५५ हिजरी में सवाल किया के मुझे हर्फ हर्फ पैग़ंबर और औसियाए पैग़ंबर की सलवात का तरीक़ा लिखवा दें। और उसके लिए मैं अपने साथ एक बड़ा काग़ज़ लेकर गया तो आं हज़रत (अ) ने अपनी ज़बाने

मुबारक से मुझे बगैर किसी किताब को देखे हुए इस तरह लिखवा दिया:

रसूले अक्रम पर सलवात

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا حَمَلَ وَحْيَكَ وَبَلَّغَ رِسَالَاتِكَ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद पर जिस तरह के उन्होंने वही का बार उठाया और तेरे पैग़ंबर

وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا اَحَلَّ حَلَالَكَ وَحَرَّمَ حَرَامَكَ وَعَلَّمَ

को पहुँचाया और दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद पर जैसा के उन्हों ने तेरे हलाल को हलाल रखा और

كِتَابَكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا اَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَدَعَا

तेरे हराम को हराम रखा और तेरी किताब की तालीम दी और दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद (स)

اِلٰى دِينِكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا صَدَّقَ بِوَعْدِكَ وَاشْفَقَ مِنْ

पर के उन्होनें नमाज़ को क़ाएम किया और ज़कात को अदा किया और तेरे दीन की तरफ़ दावत

وَعِيدِكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا غَفَرْتَ بِهِ الذُّنُوبَ وَسَتَرْتَ

दी और दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद पर के तेरे वादे की तसदीक़ की व तेरे वईद से डराया व दुरूद

بِهِ الْعُيُوبَ وَفَرَّجْتَ بِهِ الْكُرُوبَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا

नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद पर के उनके वासतेसे गुनाहों को तूने बख़्श दिया व उनके वास्तेसे ऐबोंको

دَفَعْتَ بِهِ الشَّقَاءَ وَ كَشَفْتَ بِهِ الْغَمَّاءَ وَاَجَبْتَ بِهِ الدُّعَاءَ

छुपाया व उनके वास्ते से ग़मों को दूर किया व दुरूद नाज़ल के मोहम्मद पर के तूने उनके वास्ते से

وَنَجَّيْتَ بِهِ مِنَ الْبَلَاءِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا رَحِمْتَ بِهِ الْعِبَادَ

बदबख़्ती को दूर किया व ग़मो को ख़त्म किया व दुआओं को क़ुबूल किया व बला से नजात दी

وَاحْيَيْتَ بِهِ الْبِلَادَ وَقَصَمْتَ بِهِ الْجَبَابِرَةَ وَاَهْلَكْتَ بِهِ

व दुरूद नाज़ल के मोहम्मद पर के उनके वास्ते से बन्दा पर रहम किया व शहरोंको ज़िन्दा किया

الْفَرَاعِنَةَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا اضْعَفْتَ بِهِ الامْوَالَ

व जाबिरों की कमर तोड़ दी व फ़िरऔनों को हलाक किया व दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद (स) पर

وَاحْرَزْتَ بِهِ مِنَ الاهْوَالِ وَكَسَرْتَ بِهِ الاصْنَامَ وَرَحِمْتَ بِهِ

जिस तरह उनके ज़रिए तूने मालोंको ज़्यादा किया व उम्मतको होलनाक हादसात से नजात दी व

الانَامَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا بَعَثْتَهُ بِخَيْرِ الادْيَانِ وَاعْزَزْتَ بِهِ

बुतों को तोड़ दिया व मख़लूक़ पर तूने उनके ज़रिए रहम किया व दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद पर

الإِيمَانَ وَتَبَّرْتَ بِهِ الاوْثَانَ وَعَظَّمْتَ بِهِ الْبَيْتَ الْحَرَامَ

जिस तरह के तूने उनको भेजा है बेहतरीन दीन के साथ व उनके ज़रिए तूने ईमान को इज़्ज़त दी व

وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاهْلِ بَيْتِهِ الطَّاهِرِينَ الاخْيَارِ وَسَلِّمْ

बुतों को हलाक किया है और बैतुल हराम (काबा) को अज़मत अता की और दुरूद नाज़ल कर

تَسْلِيمًا

मोहम्मद और उनके पाकीज़ा नेक अहलेबैत पर और सलाम भेज जो सलाम भेजने का हक़ है।

सलवात बर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيِّ بْنِ ابِي طَالِبٍ اخِي نَبِيِّكَ

खुदाया दुरूद नाज़िल फ़र्मा अमीरूल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ) पर जो तेरे नबी के भाई और उसके वली,

وَوَلِيِّهِ وَصَفِيِّهِ وَوَزِيرِهِ وَمُسْتَوْدَعِ عِلْمِهِ وَمَوْضِعِ سِرِّهِ وَبَابِ

वसी और उसके वज़ीर और उसके अलम के अमानतदार हैं और उसके राज़ की मनिज़ल, उस की हिकमत का दरवाज़ा,

حِكْمَتِهِ وَالنَّاطِقِ بِحُجَّتِهِ وَالدَّاعِى اِلٰى شَرِيعَتِهِ وَخَلِيفَتِهِ فِي

और उस की हुज्जत के साथ कलाम करने वाले और उसकी शरीयत की जानिब बुलाने वाले और उन की उम्मत में उन के

اُمَّتِهِ وَمُفَرِّجِ الْكُرَبِ عَنْ وَجْهِهِ قَاصِمِ الْكَفَرَةِ وَمُرْغِمِ الْفَجَرَةِ

ख़लीफ़ा और उन के ग़म के दूर करने वाले काफ़रों को ख़त्म करने वाले और फ़ाजिरों की नाक रगड़नेवाले, जिनको तूने

الَّذِى جَعَلْتَهُ مِنْ نَبِيِّكَ بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسٰى اَللّٰهُمَّ وَالِ

अपने नबी के लिए ऐसा क़रार दिया जो मनाज़िल हारून की मूसा से थी। खुदाया तू उसको दोस्त रख जो उन को दोस्त

مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهُ

रखे और उसे दुश्मन रख जो उससे दुश्मनी करे, उसकी मदद कर जो उनकी मदद करे और उसे रूसवा कर जो उन्हें छोड़

وَالْعَنْ مَنْ نَصَبَ لَهُ مِنَ الْاَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَصَلِّ عَلَيْهِ افْضَلَ

दे और उसपर लानत कर जो अव्वलीन व आख़िरीन मे उन से दुश्मनी करे और खुद उन पर बेहतरीन दुरूद नाज़िल फ़र्मा

مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ اَوْصِيَاءِ اَنْبِيَائِكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

जो तूने अपने अंबिया के औसिया मे से किसी एक पर नाज़ल किया है, ऐ तमाम जहानों के पालनेवाले।

सलवात बर जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स):

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الصِّدِّيقَةِ فَاطِمَةَ الزَّكِيَّةِ حَبِيبَةِ حَبِيبِكَ وَنَبِيِّكَ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा सिद्दीक़ा फ़ातेमा जकिया पर जो तेरे हबीब और तेरे नबी की महबूब दुख़तर हैं और

وَاُمِّ اَحِبَّائِكَ وَاَصْفِيَائِكَ الَّتِي انْتَجَبْتَهَا وَفَضَّلْتَهَا وَاخْتَرْتَهَا عَلٰى

तेरे महबूब और बरगुज़ीदा अफ़राद की मादरे गिरामी हैं जिनको तूने मुन्ताख़िब किया है और फ़ज़ीलत दी है

نِسَاءِ الْعَالَمِينَ اَللّٰهُمَّ كُنِ الطَّالِبَ لَهَا مِمَّنْ ظَلَمَهَا وَاسْتَخَفَّ

और इख़तेयर किया है तमाम जहानों की औरतों पर। खुदाया तू दाद ख्वाह हो जा उनके लिए उस से जिस

بِحَقِّهَا وَكُنِ الثَّائِرَ اللهُمَّ بِدَمِ اَوْلَادِهَا اَللّٰهُمَّ وَكَمَا جَعَلْتَهَا اُمَّ

ने उन पर ज़ुल्म किया और उनके हक़ को हलका समझा और तू इन्तेक़ाम लेने वाला हो जा ऐ खुदा उनकी

اَئِمَّةِ الْهُدٰى وَحَلِيلَةَ صَاحِبِ اللِّوَاءِ وَالْكَرِيمَةَ عِنْدَ الْمَلَإِ الْاَعْلٰى

औलाद के ख़ून का। खुदाया जिस तरह तूने उनको आइम्मए होदा की मादरे गिरामी और साहेबे लिवा हज़रत

فَصَلِّ عَلَيْهَا وَعَلٰى اُمِّهَا صَلَاةً تُكَرِّمُ بِهَا وَجْهَ اَبِيهَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ

अली की हमसर और मल्लाए आला मे मुकर्रम क़रार दिया है तो तू उन पर दुरूद नाज़ल फ़र्मा और उनकी मादरे

عَلَيْهِ وَآلِهِ وَتُقِرُّ بِهَا اَعْيُنَ ذُرِّيَّتِهَا وَابْلِغْهُمْ عَنِّي فِي هٰذِهِ السَّاعَةِ

गिरामी ख़दीजा पर ऐसा दुरूद जिससे तूने मोहम्मद (स) को मुकर्रम फ़रमाया है और उनकी ज़ुर्रियत की आँख

اَفْضَلَ التَّحِيَّةِ وَالسَّلَامِ

को ठंडी किया है और उनको पहुँचा दे इसी वक़्त मेरी तरफ़ से बेहतरीन सलाम व तहय्यत।

सलवात बर हसनो हुसैन (अ):

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ عَبْدَيْكَ وَوَلِيَّيْكَ وَابْنَيْ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा हसन व हुसैन (अ) पर जो तेरे बन्दे और तेरे वली और तेरे रसूल के फ़रज़ंद और

رَسُوْلِكَ وَسِبْطَيِ الرَّحْمَةِ وَسَيِّدَيْ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَفْضَلَ

सिबतैने रहमत और जन्नत के जवानों के सरदार हैं। बेहतरीन दुरूद जो तूने नबिया और रसूलों की औलाद

مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ اَوْلَادِ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ

मे से किसी एक पर नाज़ल किया है। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा हसन (अ) पर जो नबीयों के सरदार के

صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ ابْنِ سَيِّدِ النَّبِيِّيْنَ وَوَصِيِّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

फ़रज़ंद और अमीरूल मोमिनीन (अ) के वसी हैं। सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। सलाम आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ سَيِّدِ

ऐ सय्यदुल औसिया के फ़रज़ंद। मै गवाही देता हूँ के आप फ़रज़ंदे अमीरूल मेमिनीन (अ) हैं, अमीने खुदा

الْوَصِيِّيْنَ اشْهَدُ انَّكَ يَا بْنَ امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ امِينُ اللهِ وَابْنُ

और फ़रज़ंदे अमीने खुदा हैं। आपने मज़लूमि्यत की ज़िन्दगी गुज़ारी और शहीद हाकर दुनिया से गए। और

امِينِهِ عِشْتَ رَشِيدًا مَظْلُومًا وَمَضَيْتَ شَهِيدًا وَاشْهَدُ انَّكَ

मै गवाही देता हूँ के आप इमाम, पाकीज़ा हादी, महदी हैं। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा उनपर और उनकी रूह

الإِمَامُ الزَّكِيُّ الْهَادِى الْمَهْدِيُّ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَبَلِّغْ رُوحَهُ

व जिस्म तक मेरी तरफ़से उसी वक़्त मे पहुँचा दे बेहतरीन सलाम व तहय्यत। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

وَجَسَدَهُ عَنِّى فِي هٰذِهِ السَّاعَةِ افْضَلَ التَّحِيَّةِ وَالسَّلَامِ اَللّٰهُمَّ

हुसैन बिन अली (अ) पर जो मज़लूम शहीद हैं। काफ़िरों के ज़रिए क़त्ल होनेवाले और फ़ाजिरों के ज़रिए

صَلِّ عَلَى الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ الْمَظْلُومِ الشَّهِيدِ قَتِيلِ الْكَفَرَةِ

शहीद होने वाले हैं। सलाम आपपर ऐ अबू अब्दुल्लाह सलाम आप पर ऐ फ़रज़ंदे रसूले खुदा। सलाम आप

وَطَرِيحِ الْفَجَرَةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

पर ऐ फ़रज़ंदे अमीरूल मोमिनीन (अ) मै गवाही देता हूँ यक़ीन के साथ के आप अमीने खुदा और फ़रज़ंदे

بْنَ رَسُولِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ امِيرِ الْمُؤْمِنِينَ اشْهَدُ

अमीने खुदा हैं। आपको मज़लूम हालत मे क़त्ल किया गया और शहीद हो कर आप दुनिया से गए और

مُوقِنًا انَّكَ امِينُ اللهِ وَابْنُ امِينِهِ قُتِلْتَ مَظْلُومًا وَمَضَيْتَ

मै गवाही देता हूँ के खुदावन्दे आलम आपके ख़ून का बदला लेने वाला है और पूरा करनेवाला है उस को

شَهِيدًا وَاشْهَدُ انَّ اللهَ تَعَالَىٰ الطَّالِبُ بِثَارِكَ وَمُنْجِزٌ مَا

जो आप से नुसरत का वादा किया है व आपके दुश्मनो की हलाकत व आपकी दावत के ग़ालिब होने का।

وَعَدَكَ مِنَ النَّصْرِ وَالتَّاْيِيدِ فِي هَلَاكِ عَدُوِّكَ وَاِظْهَارِ دَعْوَتِكَ

व मै गवाहा देता हूँ के आपने वादए खुदा को पूरा किया व राहे खुदामे जिहाद किया व खुलूस के साथ खुदा

وَاشْهَدُ انَّكَ وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللهِ وَجَاهَدْتَ فِي سَبِيلِ اللهِ

की इबादत की यहाँ तक के आपको मौत आ गई। खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिस ने आपको कतल

وَعَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا حَتَّىٰ اتَاكَ الْيَقِينُ لَعَنَ اللهُ اُمَّةً قَتَلَتْكَ

किया। खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने आप को छोड़ दिया। खुदा लानत करे उस उम्मत पर जिसने

وَلَعَنَ اللهُ اُمَّةً خَذَلَتْكَ وَلَعَنَ اللهُ اُمَّةً الَّبَتْ عَلَيْكَ وَابْرَاُ اِلَىٰ

आपके खिलाफ़ लब्बैक कही व मै बरी हूँ अल्लाह की तरफ़ उस से जिस ने आप को झुठलाया और आप के

اللهِ تَعَالَىٰ مِمَّنْ كَذَّبَكَ وَاسْتَخَفَّ بِحَقِّكَ وَاسْتَحَلَّ دَمَكَ بِاَبِي

हक़ को हलका जाना और आपके ख़ूनको हलाल समझा। मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों ऐ अबू अब्दुल्लाह।

انْتَ وَاُمِّي يَا ابَا عَبْدِ اللهِ لَعَنَ اللهُ قَاتِلَكَ وَلَعَنَ اللهُ خَاذِلَكَ

खुदा आपके क़ातिल पर लानत करे, खुदा आपको रूसवा करने वाले पर लानत करे और खुदा की लानत

وَلَعَنَ اللهُ مَنْ سَمِعَ وَاعِيَتَكَ فَلَمْ يُجِبْكَ وَلَمْ يَنْصُرْكَ وَلَعَنَ

हो उस पर जिसने आपकी सदाए इस्तेग़ासा को सूना और लब्बैक न कही और आपकी मदद नही की और

اللّٰهُ مَنْ سَبَىٰ نِسَاءَكَ انَا اِلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ بَرِىءٌ وَمِمَّنْ وَالَاهُمْ

खुदा की लानत हो उस पर जिस ने आप के हरम को ०कैद किया। मे खुदा की तरफ़ बरी हूँ उन सब से और

وَمَالَاهُمْ وَاعَانَهُمْ عَلَيْهِ وَاشْهَدُ انَّكَ وَالاِئِمَّةَ مِنْ وُلْدِكَ

उन से जो मोहब्बत करे उन से और उन की मदद करे उस काम पर और मै गवाही देता हूँ के आप और

كَلِمَةُ التَّقْوَىٰ وَبَابُ الْهُدَىٰ وَالْعُرْوَةُ الْوُثْقَىٰ وَالْحُجَّةُ عَلَىٰ اهْلِ

आपकी औलाद मे आइम्मा सब कलमए तक़वा, बाबे हिदायत और उरवा वुसक़ा और हुज्जत हैं दुनिया

الدُّنْيَا وَاشْهَدُ انِّي بِكُمْ مُؤْمِنٌ وَبِمَنْزِلَتِكُمْ مُوقِنٌ وَلَكُمْ تَابِعٌ

वालों पर और मै गवाही देता हूँ के मै आप पर ईमान रखता हूँ और आप के मरतबे पर यक़ीन रखता हूँ और

بِذَاتِ نَفْسِى وَشَرَائِعِ دِينِى وَخَوَاتِيمِ عَمَلِى وَمُنْقَلَبِى وَمَثْوَاىَ

आप का तैं हूँ अपने नफ़्स की ज़ात के साथ ओर अपने दीन की शरीयत के साथ और अपने ख़ात्मे अमल

فِى دُنْيَاىَ وَآخِرَتِى

के साथ और दुनिया और आख़िरत मे अनजामे कार वे साथ।

सलवात बर अली इब्नुल हुसैन (अ):

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ سَيِّدِ الْعَابِدِينَ الَّذِى

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा अली बिन हुसैन (अ) पर जो आबेदीन के सरदार हैं। जिन्हें तूने ख़ालिस किया

اسْتَخْلَصْتَهُ لِنَفْسِكَ وَجَعَلْتَ مِنْهُ اِئِمَّةَ الْهُدٰى الَّذِينَ يَهْدُونَ

है अपने लिए और जिनकी जुररीयत मे तूने हिदायत के इमाम क़रार दिए हैं जो हक की हिदायत करते हैं

بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ اخْتَرْتَهُ لِنَفْسِكَ وَطَهَّرْتَهُ مِنَ الرِّجْسِ

और उसी के ज़रिए फ़ैसला करते हैं तूने उनको अपने लिए इख़्तेयार किया है और उनको गन्दगी से पाक

وَاصْطَفَيْتَهُ وَجَعَلْتَهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ اَفْضَلَ مَا

रखा है और मुनताख़िब किया है और हादी व महदी क़रार दिया है। खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा उनपर वो

صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ ذُرِّيَّةِ اَنْبِيَاءِكَ حَتّٰى تَبْلُغَ بِهِ مَا تَقَرُّ بِهِ

बेहतरीन दुरूद जो तूने अपने नबीयों मे से किसी की ज़ुररीयत पर नाज़ल किया है ताके उस दुरूद से दुनिया

عَيْنُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اِنَّكَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

व आख़ेरत मे उनकी आँख ठंडी हो जाए बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।

सलवात बर हज़रत मोहम्मद बिन अली (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ بَاقِرِ الْعِلْمِ وَاِمَامِ الْهُدٰى وَقَائِدِ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद बिन अली (अ) पर जो इल्म के शिगाफ़ता करने वाले और हिदायत के

اَهْلِ التَّقْوٰى وَالْمُنْتَجَبِ مِنْ عِبَادِكَ اَللّٰهُمَّ وَكَمَا جَعَلْتَهُ

इमाम और मुत्तक़ीयों के रहनुमा और तेरे बन्दों मे मुन्तिख़ब हैं। खुदाया जिस तरह तूने उन को बन्दां के लिए

عَلَمًا لِعِبَادِكَ وَمَنَارًا لِبِلَادِكَ وَمُسْتَوْدَعًا لِحِكْمَتِكَ وَمُتَرْجِمًا

परचम और शहरों के लिए मीनारए हिदायत और अपनी हिकमत का अमीन और अपनी वही का तरजुमान

لِوَحْيِكَ وَاَمَرْتَ بِطَاعَتِهِ وَحَذَّرْتَ عَنْ مَعْصِيَتِهِ فَصَلِّ عَلَيْهِ يَا

बनाया है और उनकी इताअत का हुकूम दिया है उनकी नाफ़रमानी से डराया है तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा उन

رَبِّ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ ذُرِّيَّةِ اَنْبِيَاءِكَ وَاَصْفِيَاءِكَ

पर ऐ परवरदिगार बेहतरीन दुरूद जो तूने अपने नबियों मे से किसी एक की ज़ुररीयत पर नाज़ल की है और

وَرُسُلِكَ وَاُمَنَائِكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ

अपने मुन्तिख़ब और रसूल और अमीन की जुर्राrयत मे से किसी एक पर ऐ आलमीन के पालने वाले।

सलवात बर जाफ़र बिन मोहम्मद (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ الصَّادِقِ خَازِنِ الْعِلْمِ الدَّاعِى

खुदाया दुरूद नाज़ल कर जाफ़र बिन मोहम्मद पर जो सादिक़ हैं व इल्मके ख़ज़ीने दार हैं तेरी जानिब हक़के

اِلَيْكَ بِالْحَقِّ النُّورِ الْمُبِينِ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا جَعَلْتَهُ مَعْدِنَ كَلَامِكَ

साथ दावत देनेवाले व नूरे मुबीन के साथ। खुदाया जिस तरह तूने उनको अपने कलाम का मादन और वही

وَوَحْيِكَ وَخَازِنَ عِلْمِكَ وَلِسَانَ تَوْحِيدِكَ وَوَلِيَّ اَمْرِكَ

का मादन और अपने इल्मका ख़ाज़िनादार और अपनी तौहीद की ज़ुबान और अपने अम्र का वली और

وَمُسْتَحْفَظَ دِينِكَ فَصَلِّ عَلَيْهِ افْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى احَدٍ مِنْ

अपने दीन का मोहाफ़ज़ बनाया है तू उनपर दुरूद नाज़ल कर बेहतरीन दुरूद जो तूने अपने बरगुज़ीदा बन्दों

اصْفِيَائِكَ وَحُجَجِكَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

और हुज्जतों मे से किसी एक पर नाज़ल किया है। बेशक तू पसंदीदा हस्ती और साहेबे बुज़ुर्ग है।

सलवात बर मूसा बिन जाफ़र (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الامِينِ الْمُؤْتَمَنِ مُوسَىٰ بْنِ جَعْفَرٍ الْبَرِّ الْوَفِيِّ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा इमाम, अमीन व मोतमिद ख़ल्क मूसा बिन जाफ़र (अ) पर जो नेक, वफा शेआर

الطَّاهِرِ الزَّكِيِّ النُّورِ الْمُبِينِ الْمُجْتَهِدِ الْمُحْتَسِبِ الصَّابِرِ عَلٰى

पाकीज़ा, मोहज़्ज़ब और नूरे मुबीन हैं, कोशिश करने वाले तेरे हिसाब मे और तेरी राह मे तकला०rफों पर

الاذَىٰ فِيكَ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا بَلَّغَ عَنْ آبَائِهِ مَا اسْتُوْدِعَ مِنْ امْرِكَ

सब्र करने वाले हैं। खुदाया जिस तरह उन्होनें अपने आबा की तरफ़ से जो उनके पास तेरा अम्र और नही

وَنَهْيِكَ وَحَمَلَ عَلَى الْمَحَجَّةَ وَكَابَدَ اهْلَ الْعِزَّةِ وَالشِّدَّةِ فِيمَا كَانَ

वदीअत था पहुँचाया और तेरी राह मे तेरे बन्दों को आमादा किया और अहले किब्र व गरूर के सख़्तगीर

يَلْقَىٰ مِنْ جُهَّالِ قَوْمِهِ رَبِّ فَصَلِّ عَلَيْهِ افْضَلَ وَاكْمَلَ مَا

बरताव का मुक़ाबला किया जो उनकी जाहिल क़ौम की तरफ़ से उनके साथ होता था तो मेरे परवरदिगार

صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِمَّنْ اَطَاعَكَ وَنَصَحَ لِعِبَادِكَ اِنَّكَ غَفُوْرٌ

दुरूद नाज़ल फ़र्मा उन पर बेहतरीन कामील तरीन दुरूद जो तूने अपने किसी बन्दे पर नाज़ल किया है

رَحِيْمٌ

जिस ने तेरी इताअत की और तेरे बन्दों की नसीहत की के तू बख़्शनेवाला और महेरबान है।

सलवात बर अली बिन मूसा (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُوسَى الَّذِى ارْتَضَيْتَهُ وَرَضَّيْتَ بِهِ مَنْ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा अली बिन मूसा (अ) पर जिन को तूने पसंद किया और जिन से तूने अपनी

شِئْتَ مِنْ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا جَعَلْتَهُ حُجَّةً عَلٰى خَلْقِكَ وَقَائِمًا

मख़लुक मे से जिसको चाहा राज़ी कर दिया। खुदाया जिस तरह तूने उनको अपनी मख़लूक़ पर हुज्जत

بِاَمْرِكَ وَنَاصِرًا لِدِيْنِكَ وَشَاهِدًا عَلٰى عِبَادِكَ وَ كَمَا نَصَحَ لَهُمْ

क़रार दिया और अपने अम्र का क़ाएम करनेवाला और अपने दीन का नासिर और अपने बन्दों पर गवाह

فِى السِّرِ وَالْعَلَانِيَةِ وَدَعَا اِلٰى سَبِيْلِكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ

बनाया है और जिस तरह के उन्होंने बन्दों को नसीहत की ज़ाहिर व बातिन मे और दावत दी तेरी राह की

الْحَسَنَةِ فَصَلِّ عَلَيْهِ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ اَوْلِيَائِكَ

तरफ़ हिकमत और मौज़ए हसना के ज़रिए तो तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा उन पर बेहतरीन दुरूद जो तूने अपने

وَخِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ اِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيمٌ

वलीयों और अपने नेक बन्दों मे से किसी एक पर नाज़ल किया है। बेशक तू जवाद व करीम है।

सलवात बर मोहम्मद बिन अली (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ مُوسَى عَلَمِ التُّقَى وَنُورِ الْهُدَى

खुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद बिन अली बिन मूसा (अ) पर जो तक़वा की निशानी और हिदायत का

وَمَعْدِنِ الْوَفَاءِ وَفَرْعِ الاَزْكِيَاءِ وَخَلِيفَةِ الاَوْصِيَاءِ وَاَمِينِكَ

नूर वफ़ा का मादन और पाकीज़ा लोगों की शाख़ और वसीयों के ख़लीफ़ा और तेरी वही के अमीन हैं।

عَلٰى وَحْيِكَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَيْتَ بِهِ مِنَ الضَّلَالَةِ وَاسْتَنْقَذْتَ

खुदाया जिस तरह तूने उनके ज़रिए हिदायत की गुम्राही से ओर उन के ज़रिए तूने नजात दी हैरानी से और

بِهِ مِنَ الْحَيْرَةِ وَارْشَدْتَ بِهِ مِنِ اهْتَدَى وَزَكَّيْتَ بِهِ مَنْ تَزَكَّى

उनके ज़रिए तूने हिदायत की जिसको लाएक़े हिदायत पाया और उन के ज़रिए पाकीज़ा नफ़्स बनाया

فَصَلِّ عَلَيْهِ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ اَوْلِيَائِكَ وَبَقِيَّةِ

जिसको लाएके तज़कीया पाया तो दुरूद नाज़ल फ़र्मा उन पर बेहतरीन दुरूद जो तूने अपने वलीयों और

اَوْصِيَائِكَ اِنَّكَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

बक़ीयतुल्लाह वसियों मे से किसी एक पर नाज़ल किया है बेशक, तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।

सलवात बर अली बिन मोहम्मद (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ وَصِيِّ الْاَوْصِيَاءِ وَاِمَامِ الْاَتْقِيَاءِ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा अली बिन मोहम्मद (अ) पर जो वसियों के वसी और मुत्तक़ीयों के इमाम

وَخَلَفِ اَئِمَّةِ الدِّيْنِ وَالْحُجَّةِ عَلَى الْخَلَائِقِ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ كَمَا

और अईम्मए दीन के ख़लफ़ सालेह और तमाम मख़लूक़ात पर हुज्जत हैं। खुदाया जिस तरह तूने उनको

جَعَلْتَهُ نُوْرًا يَسْتَضِيْءُ بِهِ الْمُؤْمِنُوْنَ فَبَشَّرَ بِالْجَزِيْلِ مِنْ ثَوَابِكَ

नूर बनाया जिससे मोमिनीन रौशनी हासिल करते हैं और उन्होनें मख़लूक़ात को तेरे कसीर सवाब की

وَاَنْذَرَ بِالْاَلِيْمِ مِنْ عِقَابِكَ وَحَذَّرَ بَاْسَكَ وَذَكَّرَ بِاٰيَاتِكَ وَاَحَلَّ

बशारत दी है और तेरे दर्दनाक अज़ाब से डराया ओर सख़्ती से तहज़ीर की और तेरी आयतों को याद

حَلَالَكَ وَحَرَّمَ حَرَامَكَ وَبَيَّنَ شَرَائِعَكَ وَفَرَائِضَكَ وَحَضَّ عَلٰى

दिलाया और तेरे हलाल को हलाल और तेरे हराम को हराम रखा और तेरी शरीयतों और फ़राएज़ को

عِبَادَتِكَ وَاَمَرَ بِطَاعَتِكَ وَنَهٰى عَنْ مَعْصِيَتِكَ فَصَلِّ عَلَيْهِ

वाज़ेह किया और तेरी इबादत पर उभारा और तेरी इताअत का हुकुम दिया और तेरी मासियत से रोका

اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ اَوْلِيَائِكَ وَذُرِّيَّةِ اَنْبِيَائِكَ يَا اِلٰهَ

तो तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा उनपर बेहतरीन दुरूद जो तूने नाज़ल किया है अपने वलियों मे से किसी एक पर

الْعَالَمِينَ

और अपने नबीयों की ज़ुररीयत मे से किसी एक पर ऐ आलमीन के माबूद।

इस सलवात के रावी अबू मोहम्मद यमनी का बयान है के जब इमाम अस्करी (अ) अपने पिदरे बुज़ुर्गवार पर सलवात से फ़ारिग़ हुए और खुद अपने बारे में सलवात की बारी आई तो आप ख़ामोश हो गए। मैंने अर्ज़ की हुज़ूर बाक़ी हज़रात पर सलवात का तरीक़ा भी इरशाद फ़रमाएं। फ़रमाया के अगर यह दीन की निशानियों में न होता और खुदा ने हमको यह हुक्म न दिया होता के हर शै को उसके अहल तक पहुँचा दें तो मैं वाक़ेअन यह चाहता था के ख़ामोश हो जाऊँ। मगर क्योंकि दीन की ज़िम्मेदारी है लेहाज़ा लिखो:

सलवात बर हसन बिन अली बिन मोहम्मद (अ)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ الْبَرِّ التَّقِيِّ الصَّادِقِ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा हसन बिन अली बिन मोहम्मद पर जो नेक मुत्तक़ी और सादिक़

الْوَفِيِّ النُّورِ الْمُضِيءِ خَازِنِ عِلْمِكَ وَالْمُذَكِّرِ بِتَوْحِيدِكَ وَوَلِيِّ

वफ़ाशेआर, नूरे दरख़शाँ, तेरे इल्म के ख़ज़ीनादार और तेरी तौहीद के याद दिलाने वाले और तेरे

امْرِكَ وَخَلَفِ ائِمَّةِ الدِّينَ الْهُدَاةِ الرَّاشِدِينَ وَالْحُجَّةِ عَلَى اهْلِ

वलीए अम्र, आइम्मए दीन के ख़लफे सालेह, हादी और महदी और दुनियावालों पर तेरी हुज्जत

الدُّنْيَا فَصَلِّ عَلَيْهِ يَا رَبِّ افْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلَى احَدٍ مِنْ

हैं तू उन पर दुरूद नाज़ल फ़रमा ऐ परवरदिगार बेहतरीन दुरूद जो तूने भेजा है अपने मुन्ताख़िब

اصْفِيَائِكَ وَحُجَجِكَ وَاوْلَادِ رُسُلِكَ يَا اِلٰهَ الْعَالَمِينَ

बन्दो मे से और हुज्जतों मे से और अपने रसूल की औलाद मे से किसी एक पर।

सलवात बर वलिए अम्र मुन्तज़र (अ.त.फ.श.)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى وَلِيِّكَ وَابْنِ اَوْلِيَائِكَ الَّذِينَ فَرَضْتَ طَاعَتَهُمْ

खुदाया तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा अपने वली पर और औलिया के फ़रज़ंद पर जिन की इताअत को तूने फ़र्ज़ किया

وَاَوْجَبْتَ حَقَّهُمْ وَاَذْهَبْتَ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهَّرْتَهُمْ تَطْهِيرًا

है और जिनके हक़ को वाजिब किया है और जिस से गंदगी को दूर रखा है और जिनको पाक रखा है जो पाक

اَللّٰهُمَّ انْصُرْهُ وَانْتَصِرْ بِهِ لِدِينِكَ وَانْصُرْ بِهِ اَوْلِيَاءَكَ وَاَوْلِيَاءَهُ

रखनेका हक़ है। खुदाया उन की मदद कर और उनके ज़रिए अपने दीन की मदद कर और उनके ज़रिए अपने

وَشِيعَتَهُ وَانْصَارَهُ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ اَللّٰهُمَّ اعِذْهُ مِنْ شَرِّ كُلِّ

दोस्तों और उनके दोस्तों, शियों और नासिरों की मदद कर और हमको उन्हीं मे से क़रार दे। खुदाया उनको

بَاغٍ وَطَاغٍ وَمِنْ شَرِّ جَمِيعِ خَلْقِكَ وَاحْفَظْهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ

अपनी पनाह मे रख हर बग़ावत करनेवाले सरकश के शर से और अपनी तमाम मख़लूक के शर से और

خَلْفِهِ وَعَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ وَاحْرُسْهُ وَامْنَعْهُ مِنْ اَنْ يُوصَلَ

उनको महफ़ूज़ कर उनके सामने और उनके पिछे और उनके दाहिने और उनके बाए@ से और इस बात को

اِلَيْهِ بِسُوءٍ وَاحْفَظْ فِيهِ رَسُولَكَ وَآلَ رَسُولِكَ وَاظْهِرْ بِهِ الْعَدْلَ

रोक दे के उनकी तरफ़ कोई बुराई पहुँचे और उनके ज़रिए अपने रसूल और आले रसूल के हक़ को महफ़ूज़

وَاَيِّدْهُ بِالنَّصْرِ وَانْصُرْ نَاصِرِيهِ وَاخْذُلْ خَاذِلِيهِ وَاقْصِمْ بِهِ

फ़रमा और उनके ज़रिए अदल को ग़ालिब कर दे और उनकी ताईद कर मदद के ज़रिए और उन के मददगारों

جَبَابِرَةَ الْكُفْرِ وَاقْتُلْ بِهِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَجَمِيعَ

की मदद कर और उनको रूस्वा करनेवालों को रूस्वा कर ओर उन के ज़रिए काफ़िर सरकशों की कमर

الْمُلْحِدِينَ حَيْثُ كَانُوا مِنْ مَشَارِقِ الارْضِ وَمَغَارِبِهَا وَبَرِّهَا

तोड़ दे और उनके ज़रिए काफ़िरों, मुनाफ़०का ंव तमाम मुनकिरीन को क़त्ल कर दे, चाहे जहाँ भी हों ज़मीन

وَبَحْرِهَا وَامْلَا بِهِ الارْضَ عَدْلًا وَاظْهِرْ بِهِ دِينَ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ

के मश्रिक़ मे या मग़रिब मे और खुश्की मे या तरी मे और उनके ज़रिए अद्ल से ज़मीन को भर दे ओर उन

السَّلَامُ وَاجْعَلْنِي اللهُمَّ مِنْ انْصَارِهِ وَاعْوَانِهِ وَاتْبَاعِهِ

के ज़रिए अपने नबी (स) के दीन को ग़ालिब बना दे और खुदाया मुझको उनके नासिरां ओर मददगारों और

وَشِيعَتِهِ وَارِنِي فِي آلِ مُحَمَّدٍ مَا يَامُلُونَ وَفِي عَدُوِّهِمْ مَا يَحْذَرُونَ

ताबईन और शीयों मे क़रार दे और मुझ को दिखा दे आले मोहम्मद के बारे मे वो च़ीज जिसकी वो उम्मीद

اِلٰهَ الْحَقِّ آمِينَ

करते हैं और दुश्मनां मे वो जिससे दुश्मन डरते हैं। ऐ खुदाए बरहक मेरी दुआ क़ुबूल कर।

ख़ातेमा

ज़ियारते अंबिया-ए-उज़्ज़म और ज़ियारते इमामज़ादगान आली मकाम और ज़ियारते क़ुबूरे मोमिनीन; इस मकाम पर तीन मतालिब हैं:

पहला मतलब - ज़ियारते पैग़ंबराने अक्रम (स) के बारे में।

वाज़ेह रहे के अंबिया-ए-केराम की ताज़ीम व तक्रीम अक़लन भी ज़रूरी है और शरअन भी। और हमारे अक़ीदे में अंबिया के दरमियान कोई तफ़रेक़ा नहीं है। उनकी ज़ियारत बेहतरीन पसंदीदा अमल है। और ओलमा ने उसके इस्तेहबाब की सराहत फ़रमाई है। अंबिया की तादाद अगरचे बहुत ज़्यादा है लेकिन उनकी जानी पहचानी ख़बरें बहुत कम हैं। इस समय जो हमारे पेशे नज़र है उनमें चंद ख़बरें हैं। जनाबे आदम व जनाबे नूह (अ) जो मरक़दे मुनव्वरे अमीरूल मोमिनीन (अ) में दफ़्न हैं। जनाबे इब्राहीम (अ) जो शहरे क़ुद्स में बैतुल मुक़द्दस के पास मदफ़ून हैं। और उनके जवार में जनाबे सारा जो उनकी पत्नी हैं। और जनाबे इसहाक़ व याक़ूब व यूसुफ़ (अ) भी मदफ़ून हैं। और हज़रते इसमाईल और उनकी मादरे गिरामी मस्जिदुल हराम में हिŷो इस्माईल में मदफ़ून हैं और वहाँ दीगर अंबिया की कबरें भी हैं।

हज़रते इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ) से मनक़ूल है के रूक्न व मकाम के दरमियान की जगह क़ुबूरे अंबिया से भरी हुई है।

इमाम सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के रूकने यमानी और हजरे असवद के दरमियान ७० पैग़ंबर मदफ़ून हैं।

और बैतुल मिक़्दस में भी कुछ पैग़ंबरों की कबरें हैं। हज़रत दाऊद व सुलैमान (अ) की क़ब्रें वहाँ के लोगों के नज़दीक मशहूर हैं।

जनाबे ज़करिया की क़ब्र हलब में मारूफ हैं।

जनाबे यूनुस का मज़ार कूफ़े में नहर के किनारे मारूफ़ और मशहूर है।

जनाबे हूद व सालेह (अ) की क़ब्र नजफ़े अशरफ में वादीउस सलाम मे हैं और

जनाबे ज़ुल्किफ्ल शत्ते फ़ुरात के किनारे कूफ़े के क़रीब चंद फ़रसख़ पर हैं।
शहरे मोसिल में जनाबे इद्रीस पैग़ंबर की क़ब्र है।
शहर के बाहर क़ब्रे जनाबे शीस है।
सूश में दानियाल पैग़ंबर की क़ब्र है और मस्जिदे बोरासा के क़रीब जनाबे यूशा की क़ब्र है जो फ़िलहाल मालूम नहीं है।
इन हज़रात की ज़ियारात के बारे में रिवायात में कोई मख़सूस ज़ियारत बज़ाहिर वारिद नहीं हुई है।
सिवाए ज़ियारते आदम व नूह के जिसका ज़िक्र ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ) के ज़ैल में हो चुका है।
लेकिन वह ज़ियारते जामेआ जिसको हमने पहली ज़ियारत क़रार दिया है उससे मालूम होता है के अंबिया (अ) के बारे में भी यह ज़ियारत पढ़ी जा सकती है।
उसका शहिद यह है के शेख़ जलील मोहम्मद बिन मशहदी ने मज़ार में और सय्यद बिन ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में और दीगर ओलमा ने कूफ़ा में दाख़िल होने के आदाब में इसी ज़ियारत को जनाबे यूनुस (अ) के लिए नक़्ल किया है और एहतेमाल यह है के यह बयान इसी कुल्लीया की बुनियाद पर हो जो रिवायात से मालूम होता है।
बहर हाल अगर कोई मरक़दे अंबिया में ज़ियारते जामेआ को पढ़े तो निहायत मुनासिब काम है।
चूंके यह इस ज़ियारत से पहले ज़िक्र हो चुकी है लेहाज़ा दोबारा नक़्ल करने की ज़रूरत नहीं है। लोग इसी ज़ियारत को रूजू कर सकते हैं और उसके फ़ैज़ से बहरावर हो सकते हैं।

दूसरा मतलब - ज़ियारते इमाम ज़ादगान व शाहज़ादगाने ख़ानदाने नबुव्वत

जिन की क़ब्रे महल-ए-फ़ोयूज़ व बरकात और मक़ामे नुज़ूले रहमत व इनायाते इलाही हैं। ओलमाए आलाम ने तसरीह फ़रमाई है के इनकी कब्रों की ज़ियारत

मुस्तहब है और अलहम्दो लिल्लाह के शिओं के मुतअद्दिद शहरों में उनकी कबरें मौजूद हैं। बल्के करियों सहराओं और पहाड़ों पर भी उनकी क़बरें अजिज़ों के लिए पनाहगाह, कमज़ोरों और मज़लूमों के लिए मलजा व मावा हैं। और मुर्दा दिलोंकी ज़िन्दगी का बाएस हैं और ता क़यामत रहेंगी और उनसे करामात भी ज़ाहिर होते रहेंगे। लेकिन वाज़ेह रहे के जिस इमाम ज़ादे के फोयूज़ व बरकात के करामात को हासिल करने के लिए इंसान इतमिनाने क़ल्ब के साथ सफ़र की ज़हमतें बरदाश्त कर सकता है। इसके लिए दो चीज़ों को बाक़ायदा तय कर लेने के बाद इनके मज़ारात का इरादा करना चाहिए।

सबसे पहले उनकी जलालते क़द्र और अज़मत को पहचान ले के वह शराफ़ते नसब के अलावा किन अज़मतों के मालिक हैं जिसका तज़केरह कुतुबे अहादीस व अनसाब व तारीख़ में मौजूद हैं। यह मालूम होना चाहिए के यह क़ब्र इसी जलील की है और उसकी तरफ निसबत सही है और ज़ाहिर है के इन दोनों बातों का जमा होना बहुत कम होगा। हमने किताबे हदियतुज़ ज़ाएर में चंद हज़रात की तरफ़ इशारा कर दिया और नफ़सतस मसदूर और मुन्तहीउल आमाल में हज़रत मोहसिन बिन हुसैन की तरफ़ इशारा कर दिया। मगर चूंके इस मकाम पर ज़्यादा गुंजाइश नहीं है। लेहाज़ा फ़क़त दो शख़सियतों का तज़केरा किया जा रहा है।

हज़रत फ़ातेमा मासूमा बिन्ते इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ) जिनको मासूमा कुम कहा जाता है और उनकी क़ब्रे शरीफ़ शहरे कुम में मारूफ़ व मशहूर है। इसमें कुब्बा (गुंबद), ज़रीह, सहन, खुद्दाम और बहुत से मौकेफ़ात हैं। यह अहले इल्म के लिए रोशनी-ए-चश्म और आम इंसानों के लिए पनाहगाह है। हर साल दूर दराज़ इलाकों से मोमिनीन के कारख़ाने ज़हमते सफर बरदाश्त करके आप के फ़ोयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीद होते रहते हैं।

आपकी जलालत के बारे में शेख़ सदूक़ ने सनदे हसन मिस्ल सहीह के साथ साद बिन यसार से रिवायत की है के इमाम रज़ा से फ़ातेमा बिन्ते मूसा बिन जाफ़र के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया के जो उनकी ज़ियारत करे तो उसके लिए जन्नत है और दूसरी मोतबर सनद से इमामे रज़ा (अ) के फ़रज़ंद इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से नक़्ल किया गया है के जो शख़्स मेरी

फुपी की कुम में ज़ियारत करे उसके लिए जन्नत है।

जनाबे मासूमा कुम के फ़ज़ाएल की ज़ियारत का तरीक़ा

अल्लामा मजलिसी ने बाज़ कुतूबे ज़ियारात से नक़्ल किया है के अली बिन इब्राहीम ने अपने वालिद के हवाले से साद अशअरी कुम्मी से इमाम रज़ा (अ) की रिवायत नक़्ल की है। आपने फ़रमाया के साद तुम्हारे पास हमारी एक क़ब्र है।

मैंने अर्ज़ की मेरी जान कुरबान क्या क़ब्रे मासूमा दुख़तरे जनाब मूसा के बारे में फ़रमा रहे हैं?

फ़रमाया बेशक जो उनके हक़ को पहचान कर उनकी ज़ियारत करे उसके लिए जन्नत है।

लेहाज़ा जब भी आप उनकी क़ब्र के पास पहुँचे। बालाए सर रू ब क़िबला खड़े होकर चौंतीस बार कहे: اَللّٰہُ اَکْبَرُ ३३ बार سُبْحَانَ اللّٰہِ और ३३ बार اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहें।

उसके बाद यूँ ज़ियारत पढ़ें:

اَلسَّلَامُ عَلٰی اٰدَمَ صَفْوَةِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی نُوْحٍ نَبِیِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی

सलाम हो आदम पर जो बरगुज़ीदए खुदा हैं। सलाम हो नूह पर जो अल्लाह के नबी हैं। सलाम

اِبْرَاهِیْمَ خَلِیْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی مُوْسٰی کَلِیْمِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلٰی

इब्राहीम पर जो ख़लीले खुदा हैं। सलाम मूसा (अ) पर जो कलीम अल्लाह हैं। सलाम ईसा (अ)

عِیْسٰی رُوْحِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا

पर जो रूहुल्लाह हैं। सलाम आप पर ऐ रसूले खुदा। सलाम आप पर ऐ मख़लूक़ाते खुदा मे

خَيْرَ خَلْقِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفِيَّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ

सबसे बेहतर। सलाम आपपर ऐ खुदा के बरगुज़ीदा, सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह

ابْنَ عَبْدِ اللهِ خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

ख़ातमुल अंबिया, सलाम आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ) रसूले

عَلِيَّ ابْنَ اَبِيْ طَالِبٍ وَصِيَّ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ سَيِّدَةَ

खुदा के वसी, सलाम आप पर ऐ फ़ातेमा (स) आलमीन की औरतों की सरदार। सलाम आप

نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا سِبْطَيْ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَ سَيِّدَيْ

दोनो पर ऐ नबीए रहमत के नवासे और जन्नत के जवानों के सरदार। सलाम आप पर ऐ अली

شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ ابْنَ الْحُسَيْنِ سَيِّدَ

बिन हुसैन (अ) इबादत गुज़ारों के सरदार और अहले बसीरत के लिए खुन्कीए चश्म। सलाम

الْعَابِدِيْنَ وَ قُرَّةَ عَيْنِ النَّاظِرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ

आप पर ऐ मोहम्मद बिन अली (अ) ईल्म के शिगाफ़ता करनेवाले नबी के बाद। सलाम आप पर

بَاقِرَ الْعِلْمِ بَعْدَ النَّبِيِّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَعْفَرَ بْنَ مُحَمَّدٍ الصَّادِقَ

ऐ जाफ़र बिन मोहम्मद सादिक़ (अ) नेक और अमीन। सलाम आप पर ऐ मूसा बिन जाफ़र (अ)

الْبَآرَّ الْاَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ الطَّاهِرَ الطُّهْرَ

जो पाक और पाकीज़ा हैं सलाम आप पर ऐ अली बिन मूसा रज़ा मुरतुज़ा (अ), सलाम आप पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ بْنَ مُوْسَى الرِّضَا الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

ऐ मोहम्मद बिन अली तक़ी (अ)। सलाम आप पर ऐ अली बिन मोहम्मद नक़ी नसीहत करनेवाले

مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ التَّقِيَّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ النَّقِيَّ النَّاصِحَ

और अमीन। सलाम आप पर ऐ हसन बिन अली (अ)। सलाम उनके बाद उनके वसी पर।

الْاَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ اَلسَّلَامُ عَلَى الْوَصِيِّ مِنْ

खुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा अपने नूर अपने चिराग़ और अपने वली के वली और अपने वसी के

بَعْدِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نُوْرِكَ وَسِرَاجِكَ وَوَلِيِّ وَلِيِّكَ وَوَصِيِّ وَصِيِّكَ

वसी और अपनी मख़लूक पर अपनी हुज्जत पर। सलाम आप पर ऐ दुख़तरे रसूले खुदा। सलाम

وَحُجَّتِكَ عَلٰى خَلْقِكَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

आप पर ऐ दुख़तरे फ़ातेमा व ख़दीजा (स)। सलाम आप पर ऐ दुख़तरे हसन व हुसैन (अ)।

عَلَيْكِ يَا بِنْتَ فَاطِمَةَ وَ خَدِيْجَةَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ اَمِيْرِ

सलाम आप पर ऐ दुख़तरे वलीए खुदा। सलाम आप पर ऐ वलीए खुदा की बहेन, सलाम आप

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ

पर ऐ वलीए खुदा की फुपी, सलाम आप पर ऐ दुख़तरे मूसा बिन जाफ़र (अ) अल्लाह की रहमत व

عَلَيْكِ يَا بِنْتَ وَلِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا اُخْتَ وَلِيِّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ

बरकत हो। सलाम आप पर खुदा हमारे और आप के दरमियान शनासाई को बरक़रार रखे और

عَلَيْكِ يَا عَمَّةَ وَلِيِّ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ وَ

हम को आप के ज़ुमरे मे महशूर करे और हमको अपने नबी के हौज़ पर वादि करे और हमको

رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ عَرَّفَ اللهُ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ فِي

आप के जद के जाम से अली बिन अबी तालिब के हाथ से सेराब करे और आप पर अल्लाह का

الْجَنَّةِ وَ حَشَرَنَا فِيْ زُمْرَتِكُمْ وَ اَوْرَدَنَا حَوْضَ نَبِيِّكُمْ وَ سَقَانَا

दुरूद हो मै खुदा से सवाल करता हूँ के वो हम को आप लोगों के बारे मे खुशी और आसानी

بِكَاْسِ جَدِّ كُمْ مِّنْ يَّدِ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكُمْ

दिखला दे और हक को और आपको जमा करे आप के जद मोहम्मद (स) के ज़ुमरे मे ओर हमसे

اَسْئَلُ اللهَ اَنْ يُّرِيَنَا فِيْكُمُ السُّرُوْرَ وَالْفَرَجَ وَاَنْ يَّجْمَعَنَا وَاِيَّاكُمْ

न सल्ब कर ले आपकी मारेफत को बेशक वो सल्तनत और क़ुदरत वाला है। मै अल्लाह से क़रीब

فِيْ زُمْرَةِ جَدِّ كُمْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ اَنْ لَا يَسْلُبَنَا

होता हूँ आप की मोहब्बत और आप के दुश्मनों से बराएत के ज़रिए और अल्लाह की तरफ़ सर

مَعْرِفَتَكُمْ اِنَّهٗ وَلِيٌّ قَدِيْرٌ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ بِحُبِّكُمْ وَالْبَرَآئَةِ مِنْ

तसलीम ख़म किए हुए उस पर राज़ी रहते हुए बग़ैर इन्कार और तकब्बुर के और उसके यक़ीन

اَعْدَآئِكُمْ وَ التَّسْلِيْمِ اِلَى اللهِ رَاضِيًا بِهٖ غَيْرَ مُنْكِرٍ وَلَا مُسْتَكْبِرٍ

पर जो हज़रत मोहम्मद लाए और उस से राज़ी रहते हुए। मै तलब करता हूँ उस के ज़रिए आप

وَ عَلٰى يَقِيْنٍ مَا اَتٰى بِهٖ مُحَمَّدٌ وَ بِهٖ رَاضٍ نَطْلُبُ بِذٰلِكَ وَجْهَكَ يَا

की ज़ात को ऐ मेरे सरदार, ऐ खुदा तेरी मर्ज़ा और आख़िरत की सआदत को तलब करता हूँ, ऐ

سَيِّدِيْ اَللّٰهُمَّ وَرِضَاكَ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ يَا فَاطِمَةُ اشْفَعِيْ لِيْ فِي الْجَنَّةِ

फ़ातेमा आप मेरी शिफ़ाअत कीजिए जन्नत के लिए के आप की खुदा के नज़दीक शान है। खुदाया

فَاِنَّ لَكِ عِنْدَ اللّٰهِ شَاْنًا مِّنَ الشَّاْنِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَخْتِمَ لِيْ

मे तुझ से सवाल करता हूँ के मेरा ख़ात्मा सआदत पर हो पस तू सलब न कर मुझ से वो जिस मे

بِالسَّعَادَةِ فَلَا تَسْلُبْ مِنِّيْ مَا اَنَا فِيْهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

हूँ और कोई क़ुव्वत व ताक़त नही है मगर बुलंद व अज़ीम खुदा के लिए। खुदाया हमारी दुआओं

الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ اسْتَجِبْ لَنَا وَ تَقَبَّلْهُ بِكَرَمِكَ وَ عِزَّتِكَ وَبِرَحْمَتِكَ

को क़ुबूल और मुस्तेजाब फ़र्मा अपने करम, अपनी इज़्ज़त ओर अपनी रहमत और आफ़ियत

وَ عَافِيَتِكَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا يَا اَرْحَمَ

के वास्ते से और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद ओर उनकी तमाम आल पर और सलाम भेज जो

الرَّاحِمِيْنَ.

सलाम का हक़ है ऐ सबसे ज़्यादा रहम करनेवाले।

इमाम ज़ादा अब्दुल अज़ीम हसनी

इमाम ज़ादाए लाज़मुत ताज़ीम हज़रत अब्दुल अज़ीम जिनका नसबे शरीफ़ चार वास्तों से इमामे सिब्ते अकबर हज़रत इमामे हसने मुजतबा (अ) तक पहुँच जाता है।

अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल्लाह बिन अली बिन हुसैन बिन ज़ैद बिन हसन बिन अली इब्ने अबी तालिब (अ)। आप की क़ब्रे शरीफ़ शहरे रय में मशहुरो मारूफ़ और मलजए अवामो ख़वास है। आपकी बुलंदीए मकाम और जलालते शान अज़हर मिनश शम्स है। अलावा उसके आप ख़ानदाने ख़ातेमुन नबीईन में हैं। और आपका शुमार अकाबिरे मोहद्देसीन व ओलमा व ज़ोहाद व हुफ़्फ़ाज़ व साहेबाने तक़वा में होता है। आप इमामे हादी व इमामे जवाद (अ) के असहाब में थे। और उन हज़रात के साथ कमाले तवस्सुल व तक़र्रुब रखते थे।

उनसे बहुत सी रिवायात भी नक़्ल की है और आप ही वह हैं जिन्होंने अपने पूरे दीन को इमाम हादी (अ) के सामने पेश किया था और हज़रत ने उसकी तसदीक़ करते हुए फ़रमाया था के अबुल क़ासिम खुदा की क़सम यही वह दीन है जिसको खुदा ने बंदों के लिए पसंद किया है और इसी पर साबित क़दम रहना अल्लाह तुम्हें दुनिया व आख़रत में क़ौले साबित के साथ सिबात इनायत फ़रमाए। साहब बिन एबाद ने आपके हालात में एक मुख़्तसर रिसाला भी लिखा है। जिसको हमारे उसताद सिक़तुल इसलाम नूरी ने ख़ातमए मुस्तदरक में नक़्ल कर दिया है।

उस किताब में और रिजाले शेखे नज्जाशी में है के हज़रत अब्दुल अज़ीम ने अपने ज़माने के बादशहान के ख़ाफ़ से फ़रार इख़्तेयार किया और शहरों में गर्दाश करते रहे। यहाँ तक के मक़ामे रय में पहुँचे और अपने को सारबानो में मख़फ़ी कर लिया और रिवायते नज्जाशी की बिना पर एक मर्दे शिआ के मकान के तैख़ाने में सिक़तुल मवाली में क़याम फ़रमाया जहाँ मुसलसल इबादते खुदा करते रहते। दिनों को रोज़ा रखते रातों को नमाज़ें पढ़ते और ख़ामोशी से बाहर निकलते थे और एक क़ब्र की ज़ियारत करते थे जो आज

उनकी क़ब्र के सामने है और फ़रमाया करते थे के यह फ़रज़ंदाने इमामे मूसा (अ) में से एक बुज़ुर्ग की क़ब्र है। वहीं पर रहा करते थे और सिर्फ़ एक दो अफ़राद को आपके हालात की इत्तेला थी। यहाँ तक के रय के अकसर लोगों ने आपको पहचान लिया।

शिओं में से एक व्यक्ति ने हज़रते पैग़ंबर (स) को ख़्वाब में देखा के हमारी औलाद में से एक शख़्स को सिक़तुल मवाली से उठाया जाएगा और वहीं दफ्न कर दिया जाएगा। एक सेब के पेड़ के पास अब्दुल जब्बार बिन अब्दुल वहहाब के बाग़ में और उसके बाद उस जगह की तरफ़ इशारा फ़रमाया जहाँ आज भी यह क़ब्र मौजूद है। इस व्यक्ति ने जाकर उस पेड़ और उस जगह को बाग़ के मालिक से ख़रीद लिया और जब उसने पूछा के तुम क्यों ख़रीद रहे हो तो उसने अपने ख़्वाब को नक़्ल किया जिसके बाद बाग के मालिक ने कहा मैंने भी ऐसा ही ख़्वाब देखा।

और मैंने इस जगह को और इस बाग़ को व॰क्फ कर दिया है। इस सय्यद जलीलुल क़द्र और तमाम शिओं के लिए के वहाँ अपने मुर्दों को दफ्न करें। उसके बाद हज़रत अब्दुल अज़ीम बीमार हुए और मालिक की बारगाह में पहुँच गए। जब गुस्ल देने के लिए लिबास को उतारा गया तो देखा गया के आपकी जेब में एक रूका है जिसमें आपने अपने नसब को यूँ लिखा था: मैं अबुल क़ासिम अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल्लाह बिन अली बिन हसन बिन ज़ैद बिन इमाम हसन बिन अली इब्ने अबी तालिब (अ) हूँ। साहब बिन उबाद ने आपके इल्म के बारे में यह लिखा है के अबु तुराब रोयानी ने रिवायत की है के मैंने अबू हम्माद राज़ी से सुना है के वह कह रहे थे के मैं इमाम अली नक़ी (अ) की ख़िदमत में सामराह में वारिद हुआ और मैंने हज़रत से कुछ मसाएले हरामो हलाल दरयाफ़्त किये तो आपने मेरे मसाएल के जवाबाद दिए और जब मैंने हज़रत को अलविदा कह कर निकलना चाहा तो आप ने फ़रमाया के तुम्हारे लिए अगर कोई मसअला मुश्किल हो तो उसे अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल्लाह हसनी से दरयाफ़्त कर लेना और मेरा सलाम पहुँचा देना।

मोहि॰व॰ाकक़ दामाद ने किताबे ख़ाशय में फ़रमाया है के ज़ियारते अब्दुल अज़ीम के बारे में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं और यह भी वारिद हुआ है के

इसकी जज़ा यह है के आप के ज़ाएर के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। शेख़ शहीदे सानी ने अपने हवाशी इसी रिवायत के खुलासे को बाज़ ओलमा-ए-अनसाब से नक़्ल किया है। और इब्ने बाबवय और अमीन क़ूलूवय ने मोतबर सनद से रिवायत की है के एक शख़्स अहले रय में से इमाम अली नक़ी (अ) की ख़िदमत में हाज़र हुआ। आपने उस से पूछा के तुम कहाँ थे? उसने कहा मैं ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) के लिए गया हुआ था। फ़रमाया के अगर तुम क़ब्रे हज़रते अब्दुल अज़ीम की ज़ियारत कर लेते तो तुम को वही सवाब मिल जाता जो ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) का था।

लेखक के अनुसार ओलमा ने इस बुज़ुर्गवार के लिए कोइ ज़ियारत नक़्ल नहीं की है मगर यह के फ़ख़रूल मोहक़्क़ेक़ीन आक़ाए जमालुद्दीन ने मज़ार में फ़रमाया है के उन बुज़ुर्गवार की ज़ियारत इस प्रकार है:

اَلسَّلاَمُ عَلٰی آدَمَ صِفْوَةِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلٰی نُوْحٍ نَّبِیِّ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلٰی

सलाम आदम (अ) पर जो बरगुज़ीदा खुदा हैं। सलाम नूह अल्लाह के नबी पर। सलाम इब्राहीम

اِبْرَاهِیْمَ خَلِیْلِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلٰی مُوْسٰی کَلِیْمِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلٰی

(अ) ख़लीले खुदा पर। सलाम मूसा कलीम अल्लाह पर। सलाम ईसा रूहुल्लाह पर। सलाम

عِیْسٰی رُوْحِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا

आप पर ऐ रसूले खुदा। सलाम आप पर ऐ अल्लाह की बेहतरीन मख़लूक। सलाम आप पर ऐ

خَیْرَ خَلْقِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا صَفِیَّ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا مُحَمَّدَ

बरगुज़ीदए खुदा। सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़ातमुल अंबिया। सलाम आप पर

ابْنَ عَبْدِ اللهِ خَاتَمَ النَّبِیِّیْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ

ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) अली बिन अबी तालिब (अ) रसूले खुदा के वसी। सलाम आप पर ऐ

عَلِيَّ ابْنَ اَبِيْ طَالِبٍ وَصِيَّ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ سَيِّدَةَ

फ़ातेमा (स) आलमीन की औरतो की सारदार। सलाम आप दोनो पर ऐ पैग़ंबरे रहमत के नवासे

نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا سِبْطَيْ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَ سَيِّدَيْ

और जन्नत के जवानों के सरदारों। सलाम आप पर ऐ अली बिन हुसैन (अ) आबिदों के सरदार

شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ ابْنَ الْحُسَيْنِ سَيِّدَ

और अहले बसीरत के खुन्कीए चश्म। सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अली (अ) इल्म के

الْعَابِدِيْنَ وَ قُرَّةَ عَيْنِ النَّاظِرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ ابْنَ عَلِيٍّ

शिगाफ़ता करने वाले नबी के बाद। सलाम आप पर ऐ जाफ़र बिन मोहम्मद (अ) जो सादिक़, नेक

بَاقِرَ الْعِلْمِ بَعْدَ النَّبِيِّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَعْفَرَ ابْنَ مُحَمَّدٍ الصَّادِقَ

और अमीन हैं। सलाम आप पर ऐ मूसा बिन जाफ़र (अ) जो पाक व पाकीज़ा हैं। सलाम आप पर

الْبَارَّ الْاَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُوْسَى ابْنَ جَعْفَرٍ الطَّاهِرَ الطُّهْرَ

ऐ अली बिन मूसा रज़ा मुतुर्ज़ा (अ)। सलाम आप पर ऐ मोहम्मद बिन अली तक़ी (अ)। सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ ابْنَ مُوْسَى الرِّضَا الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

आप पर ऐ अली बिन मोहम्मद नक़ी (अ) जो नसीहत करने वाले अमीन हैं। सलाम आप पर ऐ

يَا مُحَمَّدَ ابْنَ عَلِيٍّ التَّقِيَّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ ابْنَ مُحَمَّدٍ النَّقِيَّ النَّاصِحَ

हसन बिन अली (अ)। सलाम उनके बाद उनके वसी पर। खुदाया दुरूद नाज़ल कर अपने नूर व

اَلْاَمِیْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا حَسَنَ ابْنَ عَلِیٍّ اَلسَّلاَمُ عَلَی الْوَصِیِّ مِنْ

चिराग़ और अपने वली के वली और वसी के वसी और मख़लूकात पर अपनी हुज्जत पर। सलाम

بَعْدِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی نُوْرِكَ وَ سِرَاجِكَ وَ وَلِیِّ وَلِیِّكَ وَ وَصِیِّ وَصِیِّكَ

आप पर ऐ सरदार पाकीज़ा व पक व सफ़ी। सलाम आप पर ऐ पाकीज़ा सरदारो के फ़रज़ंद।

وَ حُجَّتِكَ عَلٰی خَلْقِكَ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ اَیُّهَا السَّیِّدُ الزَّكِیُّ وَ الطَّاهِرُ

सलाम आपपर ऐ नेक मुन्ताख़िब लोगों के फ़रज़ंद। सलाम रसूले खुदा और रसूले खुदा की

اَلصَّفِیُّ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَابْنَ السَّادَةِ الْاَطْهَارِ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَابْنَ

जुरियत पर ओर अल्लाह की रहमत व बरकात हों। सलाम उन नेक बन्दे पर जो मुती हैं आलमीन

اَلْمُصْطَفَیْنَ الْاَخْیَارِ اَلسَّلاَمُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ عَلٰی ذُرِّیَّةِ رَسُوْلِ

के परवरदिगार के व उसके रसूल ओर अमीरूल मोमिनीन का। सलाम आप पर ऐ अबुल

اللّٰهِ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلاَمُ عَلَی الْعَبْدِ الصَّالِحِ الْمُطِیْعِ لِلّٰهِ

क़ासिम फ़रज़ंदे नवासए रसूल, इमामे हसने मुजतेबा (अ), सलाम आप पर ऐ वो ज़ात जिसकी

رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِاَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا اَبَا

ज़ियारत मे सय्यदुश् शोहदा की ज़ियारत के सवाब की उम्मीद की जाती है। सलाम आप पर खुदा

اَلْقَاسِمِ بْنَ السِّبْطِ الْمُنْتَجَبِ الْمُجْتَبٰی اَلسَّلاَمُ عَلَیْكَ یَا مَنْ

हमारे और आपके दरमियान जन्नात मे शनासाई को बाक़ी रखे और हम को आप के ज़ुमरे मे

بِزِيَارَتِهٖ ثَوَابُ زِيَارَةِ سَيِّدِ الشُّهَدَآءِ يُرْ تَجٰى السَّلَامُ عَلَيْكَ عَرَّفَ

महशुर करे और हम को वारिद करे आप के नबी के हौज़ पर और हम को सेराब करे आपके जद

اللّٰهُ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ فِي الْجَنَّةِ وَحَشَرَنَا فِيْ زُمْرَتِكُمْ وَأَوْرَدَنَا حَوْضَ

के जामसे अली बिन अबी तालिब (अ) के हाथ से (खुदा का दुरूद हो आप सब पर) मै अल्लाह से

نَبِيِّكُمْ وَسَقَانَا بِكَاْسِ جَدِّ كُمْ مِنْ يَّدِ عَلِيِّ ابْنَ اَبِيْ طَالِبٍ صَلَوَاتُ

सवाल करता हूँ के वो हमको आपके बारे मे सरूर और कुशादगी दिखा दे ओर हमको और आप

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ أَسْاَلُ اللّٰه اَنْ يُّرِيَنَا فِيْكُمُ السُّرُوْرَ وَ الْفَرَجَ وَ اَنْ

को जमा कर दे आप के जद मोहम्मद (स) के जुमरे मे और हमसे आपकी मारेफत को सल्ब न

يَّجْمَعَنَا وَ اِيَّا كُمْ فِيْ زُمْرَةِ جَدِّ كُمْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكُمْ وَ اَنْ لاَّ

करे बेशक वो सल्तनत वाला और क़ुदरत वाला है। मै अल्लाह की तरफ क़रीब होता हूँ आप की

يَسْلُبَنَا مَعْرِفَتَكُمْ اِنَّهٗ وَلِيٌّ قَدِيْرٌ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ بِحُبِّكُمْ وَالْبَرَآئَةِ

मोहब्बत के ज़रिए ओर आपके दुश्मनों के बराएत के ज़रिए और खुदा के हुकूम को रज़ामंदी से

مِنْ اَعْدَائِكُمْ وَ التَّسْلِيْمِ اِلَى اللّٰهِ رَاضِيًا بِهٖ غَيْرَ مُنْكِرٍ وَّ لاَ

तसलीम करते हुए न के इन्कार व तकब्बुर से और उस अम्र के यक़ीन पर जिसको रसूल लाए

مُسْتَكْبِرٍ وَّ عَلٰى يَقِيْنِ مَآ اَتٰى بِهٖ مُحَمَّدٌ وَ بِهٖ رَاضٍ نَطْلُبُ بِذَالِكَ

थे। हम उसके ज़रिए तलब करते हैं ऐ मेरे सरदार खुदा की मर्ज़ा को और आख़िरत की सआदत

وَجْهَكَ يَا سَيِّدِيْ اَللّٰهُمَّ وَ رِضَاكَ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ يَا سَيِّدِيْ وَابْنَ

को ऐ मेरे सरदार और मेरे सरदार के फ़रज़ंद मेरे लिए शिफ़ाअत कीजिए जन्नत की इस लिए के

سَيِّدِيْ اشْفَعْ لِيْ فِي الْجَنَّةِ فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللهِ شَأْنًا مِنَ الشَّانِ اَللّٰهُمَّ

आपका मरतबा है खुदा के नज़दीक। खुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ के मेरा ख़ात्मा सादतमंदी

اِنِّيْ اَسْاَلُكَ اَنْ تَخْتِمَ لِيْ بِالسَّعَادَةِ فَلَا تَسْلُبْ مِنِّيْ مَا اَنَا فِيْهِ وَ لَا

पर हो और तू मुझ से वो चीज सलब न करना जिसमे हूँ और कोई क़ुव्वत व ताक़त नही है मगर

حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ اسْتَجِبْ لَنَا وَ تَقَبَّلْهُ

खुदाए बुलंद व अज़ीम की तरफ़ से। खुदाया हमारी दुआ को मुस्तेज़ाब व क़ुबूल करले अपने

بِكَرَمِكَ وَ عِزَّتِكَ وَ بِرَحْمَتِكَ وَ عَافِيَتِكَ وَ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ

करम, इज़्ज़त ओर रहमत व आफ़ियत से और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद और और उनकी

اَجْمَعِيْنَ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

तमाम आल पर और सलाम हो जो सलाम का हक़ है ऐ सबसे ज़्यादा रहम करनेवाले।

इसके बाद मोहक़्क़ाक़े मज़कूर ने फ़रमाया है के बाज़ रिवायात में यह है के इमामज़ादा हज़रत अब्दुल अज़ीम रय में क़याम के दौरान अपने घर से ख़ामोशी के साथ बाहर निकलते थे और उस क़ब्र की ज़ियारत करते थे जो आपकी क़ब्र के सामने है और फ़रमाते थे के यह औलादे मूसा इब्ने जाफ़र (अ.स.) में हैं।

और इस समय जो वहाँ से वह इमामज़ादा हमज़ा फ़रज़ंदे इमाम मूसा काज़िम

(अ) की तरफ़ मनसूब है और शायद यह वही क़ब्र है जिसकी हज़रत अब्दुल अज़ीम ज़ियारत फ़रमाते थे। लेहाज़ा उनकी ज़ियारत भी करनी चाहिए। इसके लिए इस ज़ियारत को पढ़ सकते हैं। अंतर केवल यह है के ???अस्सलामो अलय्क या अबल क़ासिमा या उसके बाद के वाक्यों को नहीं पढ़ना चाहिए।
वाज़ेह रहे के इमाम ज़ादा हमज़ा के सहेन में शेख़े जलील क़ुदवतुल मुफ़स्सेरीन जमालुद्दीन अबुल फ़तूह हुसैन बिन अली खुज़ाई साहेबे तफ़सीरे मशहूर की क़ब्र भी है। लेहाज़ा उनकी भी ज़ियारत करनी चाहिए।
और उसी इलाके में जनाब शेख़ सदूक़ (र) रईसुल मोहद्देसीन की क़ब्र है जो इब्ने बाबवय के नाम से जाने जाते हैं। और उनकी क़ब्र शहज़ादे अब्दुल अज़ीम के क़रीब है। लेहाज़ा उस से भी ग़फ़लत नहीं करनी चाहिए।

तीसरा मतलब - ज़ियारते क़ुबूरे मोमिनीन

शेख़े सिक़तुल जलील जाफ़र बिन क़ूलूवय क़ुम्मी ने अम्र बिन उसमान राज़ी से रिवायत की है के मैंने हज़रत इमाम मूसा बिन जाफ़र से सुना के अगर कोई व्यक्ति हमारी ज़ियारत न कर सके तो हमारे दोस्तों में नेक किरदार लोगों की ज़ियारत करे ताके उसको हमारी ज़ियारत का सवाब मिल जाए। और अगर कोई हमारे साथ नेकी न कर सके तो हमारे नेक किरदार दोस्तों के साथ नेकी करे। ताके उसके लिए हमारे साथ नेकी करने का सवाब लिखा जा सके।
अलावा इसके बसनद-ए-सहीह रिवायत की गई है के हज़रत मोहम्मद बिन अहमद बिन यहया अशअरी से के मैं मंज़ले फ़ीद जो मक्के के रास्ते में है अली बिन बिलाल के साथ रवाना हुआ और हज़रत मोहम्मद बिन इसमाईल बिन बज़ीअ की क़ब्र की तरफ़ से गुज़रा तो अली बिन बिलाल ने मुझ से कहा के इस साहेबे क़ब्र ने मुझ से रिवायत की है के इमाम रज़ा (अ) ने फ़रमाया है के जो व्यक्ति किसी मोमिन भाई की क़ब्र के पास आकर क़ब्र पर हाथ रखे और सात बार सूरह इन्न अन्ज़ल्नाहो पढ़ें तो वह रोज़े क़यामत के हौल से महफ़ूज़ रहेगा।

और एक दूसरी रिवायत का भी तक़रीबन यही मज़मून है। बस यह के उसके रू ब क़िबला होने का भी ज़िक्र है।
लेखक: क़यामत के दिन के हौल से महफ़ूज़ रहने का ज़िक्र जो रिवायत में है मुम्किन है वह ज़ियारत पढ़ने वाले के लिए हो और एहतेमाल है के साहेबे क़ब्र के लिए हो जैसा के इस रिवायत से ताईद होती है जो इसके बाद सरयद इब्ने ताऊस से नक़्ल की गई है।
कामेलुज़ ज़ियारात में सनदे मोतबर से मनक़ूल है के अब्दुर रहमान बिन अबी अब्दुल्लाह ने इमाम सादिक़ (अ) से पूछा के मैं किस तरह अपने हाथों को मुसलमानों की क़ब्रों पर रखूँ। तो हज़रत ने अपने हाथों से ज़मीन की तरफ़ इशारा किया और ज़मीन पर हाथ रखा। जबके आप रू ब क़िबला थे।
अलावा इसके सनदे सही के साथ मरवी है के अब्दुल्लाह बिन सिनान ने इमाम सादिक़ (अ) से पूछा के अहले क़ुबूर को किस प्रकार सलाम किया जाए? तो आप (अ) ने फ़रमाया के:

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ اَنْتُمْ لَنَا

सलाम हो तुम पर ऐ अहलो यार मोमिनीन व मुसलेमीन तूम हम पर सबक़त ले गए और हम भी

فَرَطٌ وَنَحْنُ اَنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاَحِقُونَ

इन्शा अल्लाह तुम से मुलहक़ होने वाले हैं।

इमाम हुसैन (अ) से रिवायत है के जो भी क़ब्रस्तान में दाख़िल हो यूँ कहे परवरदिगार उसे आदम से लेकर क़यामत त्राक के तमाम मख़लूक़ात के बराबर सवाब इनायत फरमाएगा।:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الْاَرْوَاحِ الْفَانِيَةِ وَالْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ

खुदाया ऐ परवरदिगार उन रूहों के जो आलम फ़ना से आलमे बक़ा की तरफ़ चली गई व कोहना

النَّخِرَةِ الَّتِي خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ ادْخِلْ عَلَيْهِمْ

जिस्मा के रब व बोसिदा हि·यों के रब पर जो दुनियासे चली गई व वो तेरे ऊपर ईमान रखनेवाली

رَوْحًا مِنْكَ وَسَلَامًا مِنِّي

थी उनके ऊपर मेरी तरफ़से निशात व सुरूर नाज़ल फ़र्मा।

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति क़ब्रस्तान में दाख़ल हो यूँ कहे, परवरदिगारे आलम इन शब्दों के बदले में पचास साल की इबादत का सवाब लिख देगा और पचास साल के उसके और उसके वालेदैन के गुनाहों को माफ़ कर देगा:

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِنْ اَهْلِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَا اَهْلَ لَا اِلٰهَ

सलाम हो ला इलाहा इल्लल्लाह कहनेवालों पर ला इलाहा इल्लल्लाह कहनेवालों का। ऐ ला इलाहा

اِلَّا اللّٰهُ بِحَقِّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ كَيْفَ وَجَدْتُمْ قَوْلَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِنْ لَا

इल्लल्लाह कहने वालों बेहक लाइलाहा इल्लल्लाह बताओ तुम ने कैसा पाया क़ौल लाइलाहा इल्लल्लाह

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ بِحَقِّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اغْفِرْ لِمَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا

को लाइलाहा इल्लल्लाह कहनेवालों की तरफ़ से ऐ लाइलाहा इल्लल्लह बेहक ला इलाहा इल्लललह तू

اللّٰهُ وَاحْشُرْنَا فِي زُمْرَةِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللّٰهِ عَلِيٌّ

बख़्शदे उसको जो लाइलाहा इल्लललाह कहे और हमको उनके ज़ुमरे मे महशूर कर जो ला इलाह

وَلِيُّ اللهِ

इल्ललाह मोहम्मद रसूलअल्लाह अली वलीअल्लाह कहने वाले हैं।

दूसरी रिवायत में वारिद हुआ है के क़ब्रस्तान में पढ़ी जाने वाली सबसे बेहतरीन बात यह है के इंसान वहाँ से गुज़रते हुए ठहरे और यह कहे:

اَللّٰهُمَّ وَلِّهِمْ مَا تَوَلَّوْا وَاحْشُرْهُمْ مَعَ مَنْ اَحَبُّوا

परवरदिगार उन्हें उधर पलटा दे जिधर पलटना चाहें और उन के साथ महशुर कर जिन से मोहब्बत करें।

सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में फ़रमाया है के जब ज़ियारते मोमिनीन का क़स्द करे तो मुनासिब है के जुमेरात के दिन जाए। वरना जिस समय भी जाए ज़ियारत का तरीक़ा यह होगा के क़िबले की तरफ़ मुड़ कर अपने हाथ को क़ब्र पर रख कर यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ غُرْبَتَهُ وَصِلْ وَحْدَتَهُ وَآنِسْ وَحْشَتَهُ وَآمِنْ رَوْعَتَهُ

खुदाया उसकी ग़ुरबत पर रहम कर व उसकी तनहाई को मिलादे व उसकी वैहशत का अनीस हो व उसके

وَاسْكِنْ اِلَيْهِ مِنْ رَحْمَتِكَ رَحْمَةً يَسْتَغْنِي بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

ख़ाफ़ को अमन मे बदलदे ओर उस की तरफ़ अपनी रहमत को क़रार दे ऐसी रहमत जिसके ज़रिए तेरे अलावा

وَاَلْحِقْهُ بِمَنْ كَانَ يَتَوَلَّاهُ

की रहमत से मुसतग़ाना हो जाए और उसको मुलहक़ करदे उस शख़्स से जिससे वो मोहब्बत करता था।

उसके बाद सात बार सूरह क़द्र पढ़े।
इसके अलावा ज़ियारते अमवात और उसके सवाब के बारे में दूसरी हदीस फ़ुज़ैल से नक़्ल की गई है के जो भी सूरह क़द्र सात बार मोमिन की क़ब्र पर पढ़ेगा परवरदिगार उसकी क़ब्र की तरफ़ एक फ़रिश्ते को भेजेगा जो मालिक की इबादत करता रहे और उसका सवाब उस मरनेवाले के लिए लिखता रहे। और जब क़ब्र से बाहर आए तो क़यामत के हौलनाक मनाज़ल में से किसी मंज़ल से न गुज़रे मगर यह के परवरदिगार उस हौल को बरतरफ़ कर दे और जन्नत में दाख़िल कर दे इसी फ़रिश्ते की बीना पर। और सात बार सूरह क़द्र के साथ सूरह हम्द, सूरह नास, सूरह फ़लक़, सूरह अहद और आयतल कुर्सी को तीन तीन बार पढ़े।
इसके अलावा ज़ियारते अमवात के बारे में एक रिवायत मोहम्मद बिन मुस्लिम से है के मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) की ख़िदमत में अर्ज़ किया के क्या मुर्दों की ज़ियारत की जाए तो फ़रमाया के बेशक।
मैंने कहा क्या वह हमारी इस ज़ियारत से बाख़बर होंगे?
फ़रमाया .यक़ीनन क़सम बाखुदा वह लोग जानते भी हैं और खुश भी होते हैं और मानूस भी होते हैं। मैंने पूछा के उनकी ज़ियारत का समय क्या कहा जाए? फ़रमाया यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ جَافِ الاَرْضَ عَنْ جُنُوبِهِمْ وَصَاعِدْ اِلَيْكَ اَرْوَاحَهُمْ

खुदाया ज़मीन को उनके पहलुओं से कुशादाकर दे और अपनी तरफ़ बुलंद कर दे उन की रूहों को ओर अपनी

وَزِدْهُمْ مِنْكَ رِضْوَانًا وَاسْكِنْ اِلَيْهِمْ مِنْ رَحْمَتِكَ مَا تَصِلُ بِهِ

तरफ़ से उनको अपनी मरज़ी अता कर और उनको अपनी रहमत ताके उनकी तनहाई को और उनकी वैहशत

وَحْدَتَهُمْ وَتُؤْنِسُ وَحْشَتَهُمْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

मे मोनिस हो जा, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

सय्यद ने फ़रमाया है के जिस समय इसांन क़ब्रस्तान में क़ुबूरे मोमिनीन के दरमियान रहे तो ग्यारह बार सूरह अहद पढ़े और उसका सवाब अमवात को हदिया कर दे। रिवायत में वारिद हुआ है के परवरदिगार उसे उन तमाम मुर्दों के बराबर सवाब देता है जो इस क़ब्रस्तान में हैं।

कामेलुज़ ज़ियारात में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के आपने फ़रमाया के अगर तुलूए आफ़्ताब से पहले मुर्दों की ज़ियारत करो तो वह सुन भी लेते हैं और जवाब भी देते हैं और अगर तुलूए आफ़्ताब के बाद ज़ियारत करो तो सुन लेते हैं मगर जवाब नहीं देते हैं।

दावाते रावंदी में एक हदीस है जो रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से मनक़ूल है के रात में ज़ियारते अमवात मकरूह है के आप ने हज़रते अबूज़र से फ़रमाया: रात के समय मुर्दों की ज़ियारत न किया करो।

मजमुए शेख़े शहीद में रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से नक़्ल किया गया है के कोई व्यक्ति किसी क़ब्र के पास अगर तीन बार यह वाक्य कहता है

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ انْ لَا تُعَذِّبَ هٰذَا

ऐ अल्लाह मै तुझसे विनती करता हूँ मुहम्मद व आले मुहम्मद के हक़ से के इस मय्यत पर अज़ाब

الْمَيِّتَ

न करना।

तो परवरदिगार खुद उससे भी रोज़े कयामत अज़ाब को दूर कर देता है।

जामेउल अख़बार से नक़्ल किया गया है के बाज़ असहाब से नक़्ल किया गया है के बाज़ असहाब ने रसूले अक्रम (स) के हवाले से बयान किया के हज़रत ने फ़रमाया के अपने मुर्दों के वास्ते हदिया भेजो।

हमने पूछा मुर्दों का हदिया क्या है? फ़रमाया सदक़ा और दुआ के अरवाहें मोमिनीन जुमे को आसमाने दुनिया पर अपने घरों के सामने तक आती हैं और इन्तेहाई दर्दनाक आवाज़ के साथ आवाज़ देती हैं: ऐ मेरे घरवालों, ऐ मेरी

औलाद, ऐ मेरे माँ बाप। ऐ मेरे अक़रबा। मेरे हाल पर मेहेरबानी करो उन अमवाल से जो मेरे हाथों में थे। आज उनका हिसाब हमारे ज़िम्मे है और उसका नफ़ा दूसरों के वास्ते है। और उसके बाद अपने अक़रबा को आवाज़ देते हैं के हम पर एक दिरहम एक टुकड़ा रोटी या एक कपड़े के ज़रिए मेहेरबानी करो के परवरदिगार तुम्हें लिबासे बेहिश्त इनायत करेगा।

यह कहकर रसूले अक्रम (स) ने गिरया फ़रमाया और हम सब भी रोने लगे। और आप शिद्दते गिरया की बिना पर कुछ न फ़रमा सके। उसके बाद फ़रमाया के यह तुम्हारे बिरादराने दीनी हैं जो पेवंदे ख़ाक हो गए हैं। सुरूर ओ नेमत की ज़िंदगी गुज़ारने के बाद। अब अपने वास्ते अज़ाबो हलाकत को देख कर फ़रयाद कर रहे हैं और कहते हैं वाय हो हमारे हाल पर काश जो हमारे पास था उसको हमने खुद ही इतात व रेज़ा की राह में सर्फ़ कर दिया होता ताके आज तुम्हारे मोहताज न होते और यह कह कर हसरतो परेशानी के साथ वापस चले जाते हैं। और फिर आवाज़ देते हैं ऐ अहले ख़ाना अपने मुर्दों का सदका जलदी भेजो।

उन्हीं हज़रत से रिवायत है के आपने फ़रमाया के जो सदका मुर्दे के वास्ते दिया जाता है उसे एक मलक तबके नूर में रख कर ले जाता है और सातवें आसमान तक पहुँच जाता है और उसके बाद उसे क़ब्र तक पहुँचाया जाता है। और मलक आवाज़ देता है के

सलाम हो तुम पर ऐ अहले क़ुबूर। यह तुम्हारे घर वालों ने तुम्हारे वास्ते हदिया भेजा है। तो वह मुर्दा उसके बाद उसे लेकर अपनी क़ब्र में चला जाता है और उसके नतीजे में उसकी क़ब्र में वुसअत पैदा हो जाती है। फ़रमाया आगाह रहो जो भी किसी मुर्दे पर सदक़े के ज़रिए मेहेरबानी करेगा परवरदिगार के यहाँ उसका अज्र कोहे ओहद के बराबर है और क़यामत के दिन वह सायाए अर्शे इलाही में रहेगा जिस दिन सिवाए खुदा के और किसी का साथ न होगा। याद रखो के उसी सदक़े से ज़िन्दा व मुर्दा, दोनों को नजात हासिल होती है। और यह भी रिवायत है के अमीरे खुरासान को ख़्वाब में देखा गया जो कह रहा था के मेरे वास्ते वही भेज दो जो अपने कुत्तों के सामने डाल दिया करते हो। मैं फ़िलहाल उसका भी मोहताज हूँ। वाज़ेह रहे के ज़ियारते क़ुबूरे मोमिनीन

में बेपनाह सवाब है और अलावा उन फ़वाएद के जो उस पर मुरत्तब होते हैं बाएसे इब्रत व आगाही और बाएसे ज़ोहद और रग़बते आख़रत भी है।
जब इंसान को ज़्यादा गम या ज़्यादा खुशी हो तो उसे क़ब्रसतान की तरफ़ जाना चाहिए के आक़ल वही है जो क़ब्रस्तान से इब्रत हासिल करे ताके उसके दिल से दुनिया की लज़्ज़त निकल जाए और दुनिया और सामाने दुनिया का शहद उसे तल्ख़ नज़र आए और वह फ़िक्र करे इस दुनिया की फ़ना और इसके हालात के तग़य्युर में और याद करे के अनक़रीब वह भी उन्हीं मुर्दों में शामिल होनेवाला है और उसके हाथ भी आमाल कोताह होनेवाले हैं और वह भी दूसरों के लिए बाएसे इब्रत बननेवाला है।

शेख निज़ामी ने यह बेहतरीन अशआर कहे हैं

زنده دلي در صف افرسردگان		رفت بهمسائيگي مردگان
حرف فنا خواند زهر لوح پاك		روحِ بقا جست زهر روح پاك
كارشناسي يي تفتيش حال		كرد از اد بر سرراهي سوال
كاين همه از زنده رميدن چرا است		رخت سوي مرده كشيدن چرا است
گفت پليدان بمغاك اندرند		پاك نهادن ته خاك اندرند
مرده دلانند بروي زمين		بهرچه بامرده شوم همنشين

همدمي مرده دهد مردگی		صحبت افسرده دل افسردگی
زیرگل آنان که پراگنده اند		گرچه تین مرده بدل زنده اند
مرده دلی بود مراپیش از این		بسته هر چون و چراپیش از این
زنده شدم از نظر پاکشان		آب حیاتست مرا خاکشان

رُوِیَ اَنَّهٗ اَوْحَی اللّٰهُ تعَالٰی اِلٰی عِیْسٰی یَا عِیسٰی، هَبْ لِی مِنْ عَیْنَیْكَ

रवायत हुई है के खुदावन्दे आलम ने ईसा (अ) की तरफ़ वही की ऐ ईसा (अ) अपनी आँख से आँसू की रवानी

الدُّمُوعَ وَمِنْ قَلْبِكَ الْخُشُوعَ وَاكْحِلْ عَیْنَیْكَ بِمَیْلِ الْحُزْنِ اِذَا

मुझे दो और अपने दिल के ख़शू को मेरे हवाले करो ओर अपनी दोनो आँखो मे हुज़्न व मलाल का सुरमा

ضَحِكَ الْبَطَّالُونَ وَقُمْ عَلٰی قُبُورِ الْاَمْوَاتِ فَنَادِهِمْ بِالصَّوْتِ الرَّفِیعِ

लगाओ जब बेहूदा लोग हसंते हों और मय्यतों की क़ब्रों पर खडे हो और उन को बा आवाज़े बुलंद पुकारो

لَعَلَّكَ تَاْخُذُ مَوْعِظَتَكَ مِنْهُمْ وَقُلْ: اِنِّی لَاحِقٌ بِهِمْ فِی اللَّاحِقِینَ.

शायद तुम मवाएज़ा हासिल कर सको उनसे और कहो के मै भी उनसे मिलनेवाला हूँ मिलनेवालों के साथ।